ॐ

जैन व्रत विधि संग्रह

(108 व्रत)

(1) अष्टान्हिका व्रत विधि

अष्टान्हिकाव्रतं कार्त्तिकफाल्गुनाषाढमासेषु अष्टमीमारभ्य पूर्णिमान्तं भवतीति। वृद्धावधिकतया भवत्येव, मध्यतिथिह्रासे सप्तमीतो व्रतं कार्यं भवतीति; तद्यथा सप्तम्यामुपवासोऽष्टम्यां पारणा नवम्यां काञ्जिकं दशम्यामवमौदार्यमित्येको मार्गः सुगमः सूचितः जघन्यापेक्षया तदादिदिनमारभ्य। पूर्णिमान्तं कार्यः षष्ठोपवासः पद्मदेववाक्यसमादरैः भव्यपुण्डरीकैः अन्यथाक्रियमाणे सति व्रतविधिर्नश्येत्। एवं सावधिकानि व्रतानि समाप्तानि।

अर्थ—अष्टान्हिका व्रत कार्त्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ मासों के शुक्ल पक्षों में अष्टमी से पूर्णिमा तक किया जाता है। तिथि-वृद्धि हो जाने पर एक दिन अधिक करना पड़ता है। व्रत के दिनों के मध्य में तिथि ह्रास होने पर एक दिन पहले से व्रत करना होता है। जैसे मध्य में तिथि ह्रास होने से सप्तमी को उपवास, अष्टमी को पारणा, नवमी को कांजी-छाछ, दशमी को ऊनोदर, एकादशी को उपवास, द्वादशी को पारणा, त्रयोदशी को नीरस, चतुर्दशी को उपवास एवं शक्ति होने पर पूर्णिमा को उपवास, शक्ति के अभाव में ऊनोदर तथा प्रतिपदा को पारणा करनी चाहिए। यह सरल और जघन्य विधि अष्टान्हिका व्रत की है। व्रत की उत्कृष्ट विधि यह है कि अष्टमी से षष्ठोपवास अर्थात् अष्टमी, नवमी का उपवास, दशमी को पारणा, एकादशी और द्वादशी को उपवास, त्रयोदशी को पारणा एवं चतुर्दशी और पूर्णिमा को उपवास और प्रतिपदा को पारणा करनी चाहिए। श्री पद्मप्रभदेव के वचनों का आदर करने वाले भव्य जीवों को उक्त विधि से व्रत करना चाहिए।

इस प्रकार बताई हुई विधि से जो व्रत नहीं करते हैं, उनकी व्रतविधि दूषित हो जाती है और व्रत का फल नहीं मिलता।

विवेचन—कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष में अष्टमी से पूर्णिमा तक आठ दिन यह व्रत किया जाता है। सप्तमी के दिन व्रत की धारणा करनी होती है। प्रथम ही श्री जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक, पूजन सम्पन्न किया जाता है, तत्पश्चात् गुरु के पास, यदि गुरु न हों तो जिनबिम्ब के सम्मुख निम्न संकल्प को पढ़कर व्रत ग्रहण किया जाता है।

व्रत ग्रहण करने का संकल्प—

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य ब्रह्मणो मते मासानां मासोत्तमे मासे आषाढमासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ.....वासरे..........जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे.....प्रदेशे.......नगरे एतत् अवसर्पिणीकालावसान-

चतुर्दशप्राभृतमानिमानितसकललोकव्यवहारे श्रीगौतमस्वामिश्रेणिकमहामण्डलेश्वरसमाचरित-सन्मार्गावशेषे......वीरनिर्वाणसंवत्सरे अष्टमहाप्रातिहार्यादिशोभितश्रीमदर्हत्परमेश्वरप्रतिमासन्निधौ अहम् अष्टान्हिकाव्रतस्य संकल्पं करिष्ये। अस्य व्रतस्य समाप्तिपर्यन्तं मे सावद्यत्यागः गृहस्थाश्रमजन्यारम्भपरिग्रहादीनामपि त्यागः।

सप्तमी तिथि से प्रतिपदा तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना आवश्यक होता है, भूमि पर शयन, संचित पदार्थों का त्याग, अष्टमी को उपवास, रात्रि को जागरण आदि क्रियाएँ की जाती हैं।

अष्टमी तिथि को दिन में नंदीश्वर द्वीप का मण्डल माँडकर अष्टद्रव्यों से पूजा की जाती है। पूजा-पाठ के अनन्तर नंदीश्वर व्रत की कथा पढ़नी चाहिए। '**ॐ ह्रीं नन्दीश्वरसंज्ञाय नमः**' इस मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिए। नवमी को '**ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूतिसंज्ञाय नमः**' इस महामंत्र का जाप, दशमी को '**ॐ ह्रीं त्रिलोकसारसंज्ञाय नमः**' मंत्र का जाप, एकादशी को '**ॐ ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः**' मंत्र का जाप, द्वादशी को '**ॐ ह्रीं पञ्चमहालक्षणसंज्ञाय नमः**' मंत्र का जाप, त्रयोदशी को '**ॐ ह्रीं स्वर्गसोपानसंज्ञाय नमः**' मंत्र का जाप, चतुर्दशी को '**ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय नमः**' मंत्र का जाप एवं पूर्णमासी को '**ॐ ह्रीं इन्द्रध्वजसंज्ञाय नमः**' मंत्र का जाप करना चाहिए।

व्रत का समुच्चय मंत्र– **ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः।**

व्रत की धारणा और समाप्ति के दिन णमोकार मंत्र का जाप करना चाहिए। व्रत समाप्ति के दिन निम्न संकल्प पढ़कर सुपाड़ी-पैसा या नारियल-पैसा चढ़ाकर भगवान को नमस्कार कर घर आना चाहिए–

'ॐ आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे शुभे श्रावणमासे कृष्णपक्षे अद्य प्रतिपदायां श्रीमदर्हत्प्रतिमासन्निधौ पूर्वं यद्व्रतं गृहीतं तस्य परिसमाप्तिं करिष्ये–अहम्। प्रमादाज्ञानवशात् व्रते जायमानदोषाः शान्तिमुपयान्ति-ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्रचरणेषु–आनन्दभक्तिः सदास्तु, समाधिमरणं भवतु, पापविनाशनं भवतु-ॐ ह्रीं असि आ उ सा नमः। सर्वशांतिर्भवतु स्वाहा।

(2) रविव्रत विधि एवं कथा

आदित्यव्रते पार्श्वनाथार्कसंज्ञके आषाढमासे शुक्लपक्षे तत्प्रथमादित्यमारभ्य नवसु अर्कदिनेषु व्रतं कार्यं नववर्षं यावत्। प्रथमवर्षे नवोपवासः, द्वितीयवर्षे नवैकाशनाः, तृतीयवर्षे नवकाञ्जिकाः, चतुर्थवर्षे नवरूक्षाः, पञ्चमवर्षे नवनीरसाः, षष्ठवर्षे नवालवणाः, सप्तमवर्षे नवागोरसाः, अष्टमवर्षे नवोनोदराः, नवमवर्षे अलवणा ऊनोदराः नव। एवमेकाशीतिः कार्याः। व्रतदिने श्रीपार्श्वनाथस्याभिषेकं कार्यं पूजनं च। समाप्तावुद्यापनं च कार्यम्, ये भव्या इदं रविव्रतं विधिपूर्वकं कुर्वन्ति तेषां कण्ठे मुक्तिकामिनी कण्ठरत्नमाला पतिष्यति।

अर्थ–रविव्रत में आषाढ़ मास शुक्ल पक्ष में प्रथम रविवार पार्श्वनाथ संज्ञक होता है, इससे आरंभ कर नौ रविवार तक व्रत करना चाहिए। यह व्रत नौ वर्ष तक किया जाता है। प्रथम वर्ष में नौ रविवारों को उपवास, द्वितीय वर्ष में नौ रविवारों को एकाशन, तृतीय वर्ष में नव रविवारों को काञ्जी– छाछ या छाछ से बने महेरी आदि पदार्थ लेकर एकाशन, चतुर्थ वर्ष में नव रविवारों को बिना घी का रूक्ष भोजन, पंचम वर्ष में नौ रविवारों को नीरस भोजन, षष्ठ वर्ष में नौ रविवारों को बिना नमक का अलोना भोजन, सप्तम वर्ष में नौ रविवारों को बिना दूध, दही और घृत का भोजन, अष्टम वर्ष में नौ रविवारों को ऊनोदर एवं नवम वर्ष में नौ रविवारों को बिना नमक के नौ ऊनोदर किये जाते हैं। इस प्रकार 81 व्रत– दिन होते हैं। व्रत के दिन श्रीपार्श्वनाथ भगवान का अभिषेक और पूजन किया जाता है। जो विधिपूर्वक रविव्रत का पालन करते हैं,उनके गले में मोक्षलक्ष्मी के गले का हार पड़ता है। व्रत पूरा होने पर उद्यापन करना चाहिए।

रविव्रत की यह शास्त्रीय विधि है किन्तु वर्तमान में पूरे 9 वर्ष तक इसमें मात्र अलोना भोजन का एकाशन या उपवास करने की परम्परा भी दिगम्बर जैन समाज में पाई जाती है।

रविव्रत का फल

सुतं वन्ध्या समाप्नोति दरिद्रो लभते धनम्।
मूढः श्रुतमवाप्नोति रोगी मुञ्चति व्याधितः।।

अर्थ– रविवार का व्रत करने से वन्ध्या स्त्री पुत्र प्राप्त करती है, दरिद्री व्यक्ति धन प्राप्त करता है, मूर्ख व्यक्ति शास्त्रज्ञान एवं रोगी व्यक्ति व्याधि से छुटकारा प्राप्त कर लेता है।

कथा– काशी देश की बनारस नगरी का राजा महीपाल अत्यंत प्रजावत्सल और न्यायी था। उसी नगर में मतिसागर नाम का एक सेठ और गुणसुन्दरी नाम की उसकी स्त्री थी। इस सेठ के पूर्व पुण्योदय से उत्तमोत्तम गुणवान तथा रूपवान सात पुत्र उत्पन्न हुए।

उनमें छः का तो विवाह हो गया था, केवल लघु पुत्र गुणधर कुँवारे थे, सो गुणधर किसी दिन वन में क्रीड़ा करते विचर रहे थे तो उनको गुणसागर मुनि के दर्शन हो गये। वहाँ मुनिराज का आगमन सुनकर और भी बहुत लोग वन्दनार्थ वन में आये थे, वह सब स्तुति वंदना करके यथास्थान बैठे। श्री मुनिराज उनको धर्मवृद्धि कहकर अहिंसादि धर्म का उपदेश करने लगे।

जब उपदेश हो चुका तब साहूकार की स्त्री गुणसुन्दरी बोली– स्वामी! मुझे कोई व्रत दीजिए। तब मुनिराज ने उसे पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत का उपदेश दिया और सम्यक्त्व का स्वरूप समझाया और पीछे कहा-बेटी! तू आदित्यवार का व्रत कर, सुन, इस व्रत की विधि इस प्रकार है कि आषाढ़ मास में शुक्ल पक्ष में अंतिम रविवार (अन्य ग्रंथानुसार अंतिम रविवार है) से लेकर नव रविवारों तक यह व्रत करना चाहिए।

प्रत्येक रविवार के दिन उपवास करना या बिना नमक (मीठा) के अलोना भोजन एक बार (एकासना) करना, पार्श्वनाथ भगवान की पूजा अभिषेक करना। घर के सब आरंभ का त्यागकर विषय और कषाय भावों को दूर करना, ब्रह्मचर्य से रहना, रात्रि जागरण-भजनादि करना और '**ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः**' इस मंत्र की 108 बार जाप करना।

नवधाभक्ति कर मुनिराज को भोजन कराना और नववर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करना। सो नव-नव उपकरण मंदिरों में चढ़ाना, नव शास्त्र लिखवाना, नव श्रावकों को भोजन कराना, नव-नव फल श्रावकों को बांटना, समवसरण का पाठ पढ़ना, पूजन विधान करना आदि।

इस प्रकार गुणसुंदरी व्रत लेकर घर आई और सब कथा घर के लोगों को कह सुनाई तो घरवालों ने सुनकर इस व्रत की बहुत निंदा की। इसलिए उसी दिन से उस घर में दरिद्रता का वास हो गया। सब लोग भूखों मरने लगे, तब सेठ के सातों पुत्र सलाह करके परदेश को निकले। सो साकेत (अयोध्या) नगरी में जिनदत्त सेठ के घर जाकर नौकरी करने लगे और सेठ-सेठानी बनारस ही में रहे।

कुछ काल के पश्चात् बनारस में कोई अवधिज्ञानी मुनि पधारे, सो दरिद्रता से पीड़ित सेठ-सेठानी भी वंदना को गये और दीन भाव से पूछने लगे-हे नाथ! क्या कारण है कि हम लोग ऐसे रंक हो गये? तब मुनिराज ने कहा– तुमने मुनिप्रदत्त रविवारव्रत की निंदा की है इससे यह दशा हुई है।

यदि तुम पुनः श्रद्धा सहित इस व्रत को करो तो तुम्हारी खोई हुई सम्पत्ति तुम्हें फिर मिलेगी। सेठ-सेठानी ने मुनि को नमस्कार करके पुनः रविवार व्रत किया और श्रद्धा सहित पालन किया जिससे उनको फिर से धन-धान्यादि की अच्छी प्राप्ति होने लगी।

परन्तु इनके सातों पुत्र साकेतपुरी में कठिन मजदूरी करके पेट पालते थे तब एक दिन लघु भ्राता गुणधर वन में घास काटने को गया था, सो शीघ्रता से गट्ठा बांधकर घर चला आया और हंसिया (दरांत) वहीं भूल

आया। घर आकर उसने भावज से भोजन माँगा। तब वह बोली–

लालजी! तुम हंसिया भूल आये हो, सो जल्दी जाकर ले आओ पीछे भोजन करना, अन्यथा हंसिया कोई ले जायेगा तो सब काम अटक जायेगा। बिना द्रव्य नया दांतड़ा कैसे आयेगा? यह सुनकर गुणधार तुरंत ही पुनः वन में गया सो देखा कि हंसिया पर बड़ा भारी साँप लिपट रहा है।

यह देखकर वह बहुत दुःखी हुआ कि दांतड़ा बिना लिये तो भोजन नहीं मिलेगा और दांतड़ा मिलना कठिन हो गया है तब वह विनीत भाव से सर्वज्ञ वीतराग प्रभु की स्तुति करने लगा सो उसके एकाग्रचित्त होकर स्तुति करने के कारण धरणेन्द्र का आसन हिला, उसने समझा कि अमुक स्थानों में पार्श्वनाथ जिनेन्द्र के भक्त को कष्ट हो रहा है।

तब करुणा करके पद्मावती देवी को आज्ञा की कि तुम जाकर प्रभुभक्त गुणधार का दुःख निवारण करो। यह सुनकर पद्मावती देवी तुरंत वहाँ पहुँची और गुणधार से बोली–

हे पुत्र! तुम भय मत करो। यह सोने का दांतड़ा और रत्न का हार तथा रत्नमई पार्श्वनाथ प्रभु का बिंब भी ले जाओ, सो भक्तिभाव से पूजा करना, इससे तुम्हारा दुःख शोक दूर होगा।

गुणधार, देवी द्वारा प्रदत्त द्रव्य और जिनबिंब लेकर घर आया सो प्रथम तो उनके भाई ये देखकर डरे, कि कहीं यह चुराकर तो नहीं लाया है, क्योंकि ऐसा कौन सा पाप है जो भूखा नहीं करता है, परन्तु पीछे गुणधार के मुख से सब वृत्तांत सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे।

इस प्रकार दिनों-दिन उनका कष्ट दूर होने लगा और थोड़े ही दिनों में वे बहुत धनी हो गये। पश्चात् उन्होंने एक बड़ा मंदिर बनवाया, प्रतिष्ठा कराई, चतुर्विध संघ को चारों प्रकार का यथायोग्य दान दिया और बड़ी प्रभावना की।

जब यह सब वार्ता राजा ने सुनी, तब उन्होंने गुणधार को बुलाकर सब वृत्तांत पूछा और अत्यन्त प्रसन्न हो अपनी परम सुन्दरी कन्या गुणधार को ब्याह दी तथा बहुत सा दान दहेज दिया। इस प्रकार बहुत वर्षों तक वे सातों भाई राज्यमान्य होकर सानंद वहीं रहे, पश्चात् माता-पिता का स्मरण करके अपने घर आये और माता-पिता से मिले। पश्चात् बहुत काल तक मनुष्योचित सुख भोगकर सन्यासपूर्वक मरणकर यथायोग्य स्वर्गादि गति को प्राप्त हुए और गुणधार उससे तीसरे भव में मोक्ष गये।

इस प्रकार व्रत के प्रभाव से मतिसागर सेठ का दरिद्र दूर हुआ और उत्तमोत्तम सुख भोगकर उत्तम-उत्तम गतियों को प्राप्त हुए। जो और भव्यजीव श्रद्धा सहित नौ वर्ष विधिपूर्वक इस व्रत का पालन करेंगे,वे उत्तम गति पावेंगे।

(3) सुखचिन्तामणि व्रत का स्वरूप

उच्यते, सुखचिन्तामणौ चतुर्दशी चतुर्दशकं, एकादश्येकादशकं, अष्टम्यष्टकं, पंचमी पंचकं, तृतीया त्रिकमेवमुपवासाः एकचत्वारिंशत्। न कृष्णपक्षशुक्लपक्षगतो नियमः, केवलां तिथिं नियम्य भवन्तीति उपवासाः। अस्य व्रतस्य पञ्चभावनाः भवन्ति, प्रत्येकभावनयामभिषेको भवति।

अर्थ– सुखचिन्तामणि व्रत में चतुर्दशियों में चौदह उपवास, एकादशियों के ग्यारह उपवास, अष्टमियों के आठ, पंचमियों के पाँच उपवास, तृतीयाओं के तीन उपवास, इस प्रकार कुल 41 उपवास करना चाहिए। इस व्रत में कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष का कुछ भी नियम नहीं है, केवल तिथि का नियम है। उपवास के दिन व्रत की विधेय तिथि का होना आवश्यक है। इस व्रत की पाँच भावना होती हैं, प्रत्येक भावना में एक अभिषेक

किया जाता है। अभिप्राय यह है कि चौदह चतुर्दशियों के व्रत के पश्चात् एक भावना, ग्यारह एकादशियों के व्रत के पश्चात् एक भावना, आठ अष्टमियों के व्रत के बाद एक भावना, पाँच पंचमियों के व्रत के पश्चात् एक भावना एवं तीन तृतीयाओं के व्रत के पश्चात् एक भावना करनी होती है। प्रत्येक भावना के दिन भगवान का अभिषेक करना होता है।

विवेचन– सुखचिंतामणि व्रत के लिए केवल तिथियों का विधान है। यह व्रत तृतीया, पंचमी, अष्टमी, एकादशी और चतुर्दशी को किया जाता है। प्रथम इस व्रत का प्रारंभ चतुर्दशी से करते हैं, लगातार चौदह चतुर्दशी अर्थात् सात महीने की चतुर्दशियों में चतुर्दशीव्रत पूरा होता है। साथ ही चतुर्दशी व्रत के तीन उपवास हो जाने पर एकादशी व्रत प्रारंभ होता है। जिस एकादशी से व्रत आरंभ किया जाता है, उस दिन भगवान का अभिषेक करते हैं तथा व्रत की भावना भाते हैं। तीन चतुर्दशियों के व्रत के उपरांत एकादशी और चतुर्दशी दोनों व्रत अपनी-अपनी तिथि में साथ-साथ में किये जाते हैं।

तीन एकादशी व्रत हो जाने के पश्चात् अष्टमी व्रत प्रारंभ किया जाता है। जिस दिन अष्टमी व्रत प्रारंभ करते हैं, उस दिन भगवान का अभिषेक समारोहपूर्वक करते हैं। यह सदा स्मरण रखना होगा कि प्रत्येक व्रत के प्रारंभ में अभिषेक 108 कलशों से किया जाता है। तीन अष्टमी व्रत हो जाने के उपरांत पंचमी व्रत प्रारंभ करते हैं, इसके प्रारंभ करने की विधि पूर्ववत् ही है। चतुर्दशी, एकादशी, अष्टमी और पंचमी ये व्रत एक साथ चलते हैं। दो पंचमी व्रतों के हो जाने पर तृतीया व्रत आरंभ होता है, इस दिन भी वृहद् अभिषेक, पूजन-पाठ आदि धार्मिक कृत्य किये जाते हैं। ये सभी व्रत तीन पक्ष तक अर्थात् तीन तृतीया व्रतों के संपूर्ण होने तक साथ-साथ चलते हैं। तृतीया के दिन ही इन व्रतों की समाप्ति होती है। इस दिन वृहद् अभिषेक समारोहपूर्वक करना चाहिए। उपवास के दिनों में ''**ॐ ह्रीं सर्वदुरितविनाशनाय श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नमः।**' इस मंत्र का जाप प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल करना चाहिए। सुखचिंतामणि व्रत निश्चित तिथि में ही सम्पन्न किया जाता है। यदि व्रत की तिथि आगे-पीछे के दिनों में होती है तो व्रत आगे-पीछे किया जाता है। यह व्रत चिंतामणिरत्न के समान सभी प्रकार के सुखों को देने वाला है। भावना के दिन चिंतामणि भगवान पार्श्वनाथ की पूजा विशेष रूप से की जाती है तथा '**ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिकराय श्री पार्श्वनाथाय नमः**' इस मंत्र का जाप किया जाता है।

इस व्रत में 14 चतुर्दशी, 11 एकादशी, 8 अष्टमी, 5 पंचमी एवं 3 तृतीया ऐसे 41 व्रत करने होते हैं। यहाँ पर कार्तिक से व्रत प्रारंभ करने पर क्रम से चार्ट दिया जा रहा है। यदि अन्य किसी माह से प्रारंभ करें तो उस माह से चार्ट बना लेवें।

विधि– कार्तिक से वैशाख तक करना है।

1. **कार्तिक कृष्णा 14**
2. **कार्तिक शुक्ला 14**
3. **मगसिर कृष्णा 14**
4. **मगसिर शुक्ला 11, 14**
5. **पौष कृष्णा 11, 14**
6. **पौष शुक्ला 11, 14**
7. **माघ कृष्णा 8, 11, 14**
8. **माघ शुक्ला 8, 11, 14**
9. **फाल्गुन कृष्णा 8, 11, 14**
10. **फाल्गुन शुक्ला 5, 8, 11, 14**
11. **चैत्र कृष्णा 5, 8, 11, 14**
12. **चैत्र शुक्ला 3, 5, 8, 11, 14**
13. **वैशाख कृष्णा 3, 5, 8, 11, 14**
14. **वैशाख शुक्ला 3, 5, 8, 11, 14**

इस व्रत को किसी भी माह से शुरू कर सकते हैं।

(4) षोडशकारण व्रत

मेघमालाषोडशकारणञ्चैतद्द्वयं समानं प्रतिपद्दिनमेव द्वयोरारम्भं मुख्यतया करणीयम्। एतावान् विशेषः षोडशकारणे तु आश्विनकृष्णा प्रतिपदा एव पूर्णाभिषेकाय गृहीता भवति, इति नियमः। कृष्णपंचमी तु नाम्न एव प्रसिद्धा।

अर्थ– मेघमाला और षोडशकारण व्रत दोनों ही समान हैं। दोनों का आरंभ भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदा से होता है परन्तु षोडशकारण व्रत में इतनी विशेषता है कि इसमें पूर्णाभिषेक आश्विन-कृष्णा प्रतिपदा को होता है, ऐसा नियम है। कृष्णा पंचमी तो नाम से ही प्रसिद्ध है।

जम्बूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के मगध (बिहार) प्रांत में राजगृही नगर है। वहाँ के राजा हेमप्रभ और रानी विजयावती थी। इस राजा के यहाँ महाशर्मा नामक नौकर था और उनकी स्त्री का नाम प्रियंवदा था। इस प्रियंवदा के गर्भ से कालभैरवी नामक एक अत्यन्त कुरुपी कन्या उत्पन्न हुई कि जिसे देखकर माता-पितादि सभी स्वजनों तक को घृणा होती थी।

एक दिन मतिसागर नामक चारणमुनि आकाशमार्ग से गमन करते हुए उसी नगर में आये, तो उस महाशर्मा ने अत्यन्त भक्ति सहित श्री मुनि को पड़गाह कर विधिपूर्वक आहार दिया और उनसे धर्मोपदेश सुना। पश्चात् जुगल कर जोड़कर विनययुक्त हो पूछा-हे नाथ! यह मेरी कालभैरवी नाम की कन्या किस पापकर्म के उदय से ऐसी कुरुपी और कुलक्षणी उत्पन्न हुई है, सो कृपाकर कहिए? तब अवधिज्ञान के धारी श्री मुनिराज कहने लगे, वत्स! सुनो-

उज्जैन नगरी में एक महिपाल नाम का राजा और उसकी वेगावती नाम की रानी थी। इस रानी से विशालाक्षी नाम की एक अत्यन्त सुन्दर रूपवान कन्या थी, जो कि बहुत रूपवान होने के कारण बहुत अभिमानिनी थी और इसी रूप के मद में उसने एक भी सद्गुण न सीखा। यथार्थ है– अहंकारी (मानी) नरों को विद्या नहीं आती है।

एक दिन वह कन्या अपनी चित्रसारी में बैठी हुई दर्पण में अपना मुख देख रही थी कि इतने में ज्ञानसूर्य नाम के महातपस्वी श्री मुनिराज उसके घर से आहार लेकर बाहर निकले, सो इस अज्ञान कन्या ने रूप के मद से मुनि को देखकर खिड़की से मुनि के ऊपर थूक दिया और बहुत हर्षित हुई।

परन्तु पृथ्वी के समान क्षमावान श्री मुनिराज तो अपनी नीची दृष्टि किये हुए ही चले गये। यह देखकर राजपुरोहित इस कन्या का उन्मत्तपना देख उस पर बहुत क्रोधित हुआ और तुरंत ही प्रासुक जल से श्री मुनिराज का शरीर प्रक्षालन करके बहुत भक्ति से वैयावृत्य कर स्तुति की। यह देखकर वह कन्या बहुत लज्जित हुई और अपने किये हुए नीच कृत्य पर पश्चाताप करके श्री मुनि के पास गई और नमस्कार करके अपने अपराध की क्षमा मांगी। श्री मुनिराज ने उसको धर्मलाभ कहकर उपदेश दिया। पश्चात् वह कन्या वहाँ से मरकर तेरे घर यह काल भैरवी नाम की कन्या हुई है। इसने जो पूर्वजन्म में मुनि की निंदा व उपसर्ग करके जो घोर पाप किया है उसी के फल से यह ऐसी कुरुपा हुई है, क्योंकि पूर्व संचित कर्मों का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं होता है इसलिए अब इसे समभावों से भोगना ही कर्तव्य है और आगे को ऐसे कर्म न बंधे ऐसा समीचीन उपाय करना योग्य है। अब पुनः वह महाशर्मा बोला– हे प्रभो! आप ही कृपाकर कोई ऐसा उपाय बताइये कि जिससे वह कन्या अब इस दुःख से छूटकर सम्यक् सुखों को प्राप्त होवे तब श्री मुनिराज बोले– वत्स! सुनो–

संसार में मनुष्यों के लिए कोई भी कार्य असाध्य नहीं है, सो भला यह कितना सा दुःख है? जिनधर्म के सेवन से तो अनादिकाल से लगे हुए जन्म-मरणादि दुःख भी छूटकर सच्चे मोक्षसुख की प्राप्ति होती है और दुःखों से छूटने की तो बात ही क्या है? वे तो सहज ही में छूट जाते हैं। इसलिए यदि यह कन्या षोडशकारण भावना भावे और व्रत पाले, तो अल्पकाल में ही स्त्रीलिंग छेदकर मोक्ष-सुख को पावेगी। तब वह महाशर्मा बोला– हे स्वामी! इस व्रत की कौन-कौन भावनाएं और विधि क्या है? सो कृपाकर कहिए। तब मुनिराज ने इन जिज्ञासुओं

को निम्न प्रकार षोडशकारण व्रत का स्वरूप और विधि बताई।

इन 16 भावनाओं को यदि केवली-श्रुतकेवली के पादमूल के निकट अन्तःकरण से चिन्तवन की जाये तथा तदनुसार प्रवर्तन किया जाये तो इनका फल तीर्थंकर नाम कर्म के आश्रव का कारण है। आचार्य महाराज **व्रत की विधि कहते हैं–**

भादों, माघ और चैत्र वदी एकम् से कुंवार, फाल्गुन और वैशाख वदी एकम् तक (एक वर्ष में तीन बार) पूरे एक-एक मास तक यह व्रत करना चाहिए।

इन दिनों तेला-बेला आदि उपवास करें अथवा नीरस वा एक, दो, तीन आदि रस त्यागकर ऊनोदरपूर्वक अतिथि या दीन दुःखी नर या पशुओं को भोजनादि दान देकर एकभुक्त करें। अंजन, मंजन, वस्त्रालंकार विशेष धारण न करे, शीलव्रत (ब्रह्मचर्य) रखे, नित्य षोडशकारण भावना भावे और यंत्र बनाकर पूजाभिषेक करे, त्रिकाल सामायिक करे और **(ॐ ह्रीं दर्शन-विशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, उपाध्यायभक्ति (बहुश्रुतभक्ति), प्रवचनभक्ति आवश्यकापरिहाणि, मार्ग प्रभावना, प्रवचनवात्सल्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः)।**

इस महामंत्र का दिन में तीन बार 108 बार जाप करे। इस प्रकार इस व्रत को उत्कृष्ट सोलह वर्ष, मध्यम 5 अथवा दो वर्ष और जघन्य 1 वर्ष करके यथाशक्ति उद्यापन करे अर्थात् सोलह-सोलह उपकरण श्री मंदिरजी में भेंट दे और शास्त्र व विद्यादान करे, शास्त्र भण्डार खोले, सरस्वती मंदिर बनावे, पवित्र जिनधर्म का उपदेश करे और करावे इत्यादि यदि द्रव्य खर्च करने की शक्ति न हो तो व्रत द्विगुणित करे।

इस प्रकार ऋषिराज के मुख से व्रत की विधि सुनकर कालभैरवी नाम की उस ब्राह्मण कन्या ने षोडशकारण व्रत स्वीकार करके उत्कृष्ट रीति से पालन किया, भावना भायी और विधिपूर्वक उद्यापन किया, पीछे वह आयु के अंत में समाधिमरण द्वारा स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें (अच्युत) स्वर्ग में देव हुई। वहाँ से बाईस सागर आयु पूर्ण कर वह देव जम्बूद्वीप के विदेहक्षेत्र संबंधी अमरावती देश के गंधर्व नगर में राजा श्रीमंदिर की रानी महादेवी के सीमंधर नाम का तीर्थंकर पुत्र हुआ सो योग्य अवस्था को प्राप्त होकर राज्योचित सुख भोग जिनेश्वरी दीक्षा ली और घोर तपश्चरण कर केवलज्ञान प्राप्त करके बहुत जीवों को धर्मोपदेश दिया तथा आयु के अंत में समस्त अघाति कर्मों का भी नाश कर निर्वाण पद प्राप्त किया।

इस प्रकार इस व्रत को धारण करने से कालभैरवी नाम की ब्राह्मण कन्या ने सुर-नर भवों के सुखों को भोगकर अक्षय अविनाशी स्वाधीन मोक्षसुख को प्राप्त कर लिया, तो जो अन्य भव्यजीव इस व्रत को पालन करेंगे उनको भी अवश्य ही उत्तम फल की प्राप्ति होवेगी।

(5) मेघमाला व्रत विधि

मेघमाला व्रत भादों बदी प्रतिपदा से लेकर आश्विन वदी प्रतिपदा तक 31 दिन तक किया जाता है। व्रत के प्रारंभ करने के दिन ही जिनालय के आँगन में सिंहासन स्थापित करें अथवा कलश को संस्कृत कर उसके ऊपर थाल रखकर, थाल में जिनबिम्ब स्थापित कर महाभिषेक और पूजन करे। श्वेत वस्त्र पहने, श्वेत ही चन्दोवा बांधे, मेघधारा के समान 1008 कलशों से भगवान का अभिषेक करे। पूजापाठ के पश्चात् '**ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः**' इस मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिए।

मेघमाला व्रत में सात उपवास कुल किये जाते हैं और 24 दिन एकाशन करना होता है। तीनों प्रतिपदाओं के तीन उपवास, दोनों अष्टमियों के दो उपवास एवं दोनों चतुर्दशियों के दो उपवास इस प्रकार कुल सात उपवास किये जाते हैं। इस व्रत को पाँच वर्ष तक पालन करने के पश्चात् उद्यापन कर दिया जाता है। इस व्रत की समाप्ति

प्रतिवर्ष आश्विन कृष्णा प्रतिपदा को होती है। सोलहकारण का व्रत भी प्रतिपदा को समाप्त किया जाता है, परन्तु इतनी विशेषता है कि सोलहकारण का संयम और शील आश्विन कृष्णा प्रतिपदा तक पालन करना पड़ता है तथा पंचमी को ही इस व्रत की पूर्ण समाप्ति समझी जाती है। यद्यपि पूर्ण अभिषेक प्रतिपदा को ही हो जाता है, परन्तु नाममात्र के लिए पंचमी तक संयम का पालन करना पड़ता है।

मेघमाला व्रत कथा—वत्सदेश की कौशाम्बीपुरी में जब राजा भूपाल राज्य करते थे तब वहाँ पर एक वत्सराज नाम का श्रेष्ठी (सेठ) और उसकी पद्मश्री नाम की सेठानी रहती थी। पूर्वकृत अशुभ कर्म के उदय से उस सेठ के घर में दरिद्रता का वास रहा करता था इस पर भी इसके सोलह (16) पुत्र और बारह (12) कन्याएँ थीं।

गरीबी की अवस्था में इतने बालकों का लालन-पालन करना और गृहस्थी का खर्च चलाना कैसा कठिन हो जाता है, इसका अनुभव उन्हीं को होता है जिन्हें कभी ऐसा प्रसंग आया हो या जिन्होंने अपने आसपास रहने वाले दीन दुखियों की ओर कभी अपनी दृष्टि डाली हो। परम स्नेह करने वाले माता-पिता ही ऐसे समय में अपने प्यारे बालकों को अनुचित और कठोर शब्दों में केवल सम्बोधन ही नहीं करने लगते हैं किन्तु उन्हें बिना मूल्य या मूल्य में बेच तक देते हैं।

प्राणों से प्यारी संतान कि जिसके लिए संसार के अनेकानेक मनुष्य लालायित रहते हैं और अनेक यंत्र-मंत्रादि कराया करते हैं। हाय! उस दरिद्रावस्था में वह भी भाररूप हो पड़ती है। वत्सराज सेठ इसी चिंता में चिंतित रहता था।

जब ये बालक क्षुधातुर होकर माता से भोजन मांगते तो माता कठोरता से कह देती-जाओ मरो, लंघन करो, चाहे भीख मांगो तुम्हारे लिए मैं कहाँ से भोजन दे दूँ? यहाँ क्या रखा है जो दे दूँ? सो वे नन्हें बालक झिड़की खाकर जब पिताजी के पास जाते, तब वहाँ से निराशा ही पल्ले पड़ती। हाय, उस समय का करुण क्रन्दन किसके हृदय को विदीर्ण नहीं कर देता है!

एक दिन भाग्योदय से एक चारणऋद्धिधारी मुनि वहाँ आये। उन्हें देखकर वत्सराज सेठ ने भक्तिसहित पड़गाहा और घर में जो रुखा सूखा भोजन शुद्धता से तैयार किया गया था, सो भक्ति सहित मुनिराज को दिया।

मुनिराज उस भक्तिपूर्वक दिये हुए स्वाद सहित भोजन को लेकर वन की ओर चले गये। तत्पश्चात् सेठ भी भोजन करके जहाँ श्री मुनिराज पधारे, वहाँ खोजते-खोजते पहुँचा और भक्तिपूर्वक वंदना करके बैठा। श्री गुरु ने इसे सम्यक्त्वादि धर्म का उपदेश दिया।

पश्चात् सेठ ने पूछा—हे दयानिधि! मेरे दरिद्रता होने का कारण क्या है? और अब यह कैसे दूर हो सकती है?

तब श्री गुरु बोले—हे वत्स, सुनो! कौशल देश की अयोध्या नगरी में देवदत्त नामक सेठ की देवदत्ता नाम की सेठानी रहती थी। वह धन कण और रूप लावण्य से संयुक्त तो थी परन्तु कृपण होने के कारण दान धर्म में धन लगाना तो दूर ही रहे किन्तु उल्टा दूसरे का धन हरण करने को तत्पर रहती थी।

एक दिन कहीं से एक गृहत्यागी ब्रह्मचारी जो अत्यन्त हीन शरीर था, सो भोजन के निमित्त उसके घर आ गये। उसे देख सेठानी ने अनेक दुर्वचन कहकर निकाल दिया। वह कृपणा कहने लगी—अरे जा जा, यहाँ से निकल, यहाँ तो घर के बच्चे भूखों मर रहे हैं, फिर दान कहाँ से करें? जो चाहे सो यहाँ ही चला आता है।

इतने ही में उसका स्वामी सेठ भी आ गया और उसने अपनी स्त्री की हाँ में हाँ मिला दी। निदान कुछेक दिनों में वही हुआ, जैसी मनसा वैसी दशा हो गई। अर्थात् उसका सब धन चला गया और वे यथार्थ में भूखों मरने लगे। अति तीव्र पाप का फल कभी-कभी प्रत्यक्ष ही दिख जाता है।

वे सेठ-सेठानी आर्त ध्यान से मरे सो एक ब्राह्मण के घर महिष (भैंस) के पुत्र (पाडा-पाडी) हुए। सो वहाँ भी भूख प्यास की वेदना से पीड़ित हो पानी पीने के लिए एक सरोवर में घुसे थे कि कीच (कादव) में फंस गये और जब तड़फड़ाकर मरणोन्मुख हो रहे थे, उसी दयालु श्रावक ने आकर उन्हें णमोकार मंत्र सुनाया और मिष्ट शब्दों में सम्बोधन किया।

सो वे पाडा-पाडी वहाँ से मरकर णमोकार मंत्र के प्रभाव से तुम मनुष्य भव को प्राप्त हुए, परन्तु पूर्व संचित पापकर्मों का शेषाँश रह जाने से अब तक दरिद्रता ने तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ा है।

हे वत्स! यह दान न देने और यति आदि महात्माओं से घृणा करने का फल है। इसलिए प्रत्येक गृहस्थ को सदैव यथाशक्ति दान धर्म में अवश्य ही प्रवर्तना चाहिए।

अब तुम सत्यार्थ देव अर्हंत, गुरु निर्ग्रंथ और दयामयी धर्म में श्रद्धान करो और श्रद्धापूर्वक मेघमाला व्रत का पालन करो तो सब प्रकार से इस लोक और परलोक संबंधी सुखों को प्राप्त होंगे।

यह व्रत भादो बदी प्रतिपदा से लेकर आश्विन बदी प्रतिपदा तक प्रति वर्ष एक-एक मास करके पाँच वर्ष तक किया जाता है अर्थात् भादों बदी प्रतिपदा से आसोज बदी प्रतिपदा तक (एक मास) श्री जिनालय के आंगन में (चौक में) सिंहासनादि स्थापन करे और उस पर श्री जिनबिम्ब स्थापन करके महाभिषेक और पूजन नित्य प्रति करे, श्वेत वस्त्र पहिने, श्वेत ही चंदोवा बंधावे, मेघ धारा के समान 1008 कलशों से महाभिषेक करके पश्चात् पूजा करे।

पाँच परमेष्ठी की 108 बार जाप करे पश्चात् संगीतपूर्वक जागरण भजन इत्यादि करे। भूमिशयन व ब्रह्मचर्य व्रत पालन करे। यथाशक्ति चारों प्रकार दान देवे, हिंसादि पंच पापों का त्याग करे तथा एक मास पर्यन्त ब्रह्मचर्यपूर्वक एक भुक्त उपवास, बेला, तेला आदि शक्ति प्रमाण करे। निरन्तर षट्रसीव्रत पाले अर्थात् नित्य एक रस छोड़कर भोजन करे।

इस प्रकार जब पाँच वर्ष पूर्ण हो जावें तब शक्ति प्रमाण भाव सहित उद्यापन करे अर्थात् पाँच जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा करावे, पाँच महान ग्रंथ लिखावे, पाँच प्रकार पकवान बनाकर श्रावकों के पाँच घर देवे। पाँच-पाँच घण्टा, झालर, चंदोवा, चमर, छत्र, अछार आदि उपकरण देवे। पाँच श्रावकों (विद्यार्थियों) को भोजन करावे, सरस्वतीभवन बनावे, पाठशाला चलावे इत्यादि और अनेकों प्रभावना बढ़ाने वाले कार्य करे।

इस प्रकार व्रत की विधि सुनकर सेठ-सेठानी ने श्रद्धापूर्वक इस व्रत को पालन किया, सो व्रत के प्रभाव से उनका सब दारिद्र्य दूर हो गया और वे स्त्री-पुरुष सुख से काल व्यतीत करते हुए आयु के अंत में संयासपूर्वक मरण कर दूसरे स्वर्ग में देव हुए।

फिर वहाँ से चयकर वे पोदनपुर में विजयभद्र नाम के राजा और विजयावती नाम की रानी हुई, सो पूर्व पुण्य के प्रभाव से धन, धान्य, पुत्र-पौत्रादि सम्पत्ति के अधिकारी हुए।

आयु के अंतिम भाग (वृद्धावस्था) में दोनों राजा और रानी अपने पुत्र को राज्य का अधिकार देकर आप जैनेश्वरी दीक्षा ले तप करने लगे सो तप के प्रभाव से आयु पूर्णकर राजा तो सर्वार्थसिद्धि विमान में अहमिन्द्र हुआ और रानी भी स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुईं वहाँ से चयकर वे दोनों प्राणी मोक्षपद प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार मेघमाला व्रत के प्रभाव से देवदत्त और देवदत्ता नाम के कृपण सेठ और सेठानी भी मोक्ष पद पावेंगे सो यदि और नरनारी श्रद्धा सहित यह व्रत पालें तो अवश्य उत्तम फल पावेंगे।

(6) जिनमुखावलोकन व्रत विधि

किं नाम जिनमुखावलोकनं व्रतम्? को विधिः? जिनमुखदर्शनानन्तरमाहारो यस्मिन् तज्जिनमुखावलोकनं नामैतत् निरवधि व्रतम्। इदं व्रतं भाद्रपदमासे करणीयम्, प्रोषधोपवासानन्तरं पारणा पुनः प्रोषधोपवासः, एवमेव प्रकारेण मासान्तपर्यन्तमिति।

अर्थ— जिनमुखावलोकन व्रत किसे कहते हैं? इसकी विधि क्या है? आचार्य उत्तर देते हैं कि प्रातःकाल जिनेन्द्रमुख देखने के अनन्तर आहार ग्रहण करना जिनमुखावलोकन व्रत है। यह निरवधि व्रत होता है। यह व्रत भाद्रपद मास में किया जाता है। प्रथम प्रोषधोपवास, अनन्तर पारणा, पुनः प्रोषधोपवास पश्चात् पारणा, इसी प्रकार मासान्त तक उपवास और पारणा करते रहना चाहिए।

विवेचन-जिनमुखावलोकन व्रत के संबंध में दो मान्यताएँ प्रचलित हैं। प्रथम मान्यता इसे एक वर्ष पर्यन्त करने की है और दूसरी मान्यता एक मास तक करने की। प्रथम मान्यता के अनुसार यह व्रत भाद्रपद मास से आरंभ होकर श्रावण मास में पूरा होता है और द्वितीय मान्यता के अनुसार भाद्रपद मास की कृष्ण प्रतिपदा से आरंभ होकर इस मास की पूर्णिमा को समाप्त हो जाता है। एक वर्ष तक करने का विधान करने वालों के मत से वर्ष में कुल 36 उपवास और एक मास का विधान मानने वालों के मत से एक मास में 15 उपवास करने चाहिए।

प्रथम मान्यता बतलाती है कि भाद्रपद मास की प्रतिपदा को पहला उपवास करना चाहिए। पश्चात् इस मास में किन्हीं भी दो तिथियों को दो उपवास करने चाहिए। परन्तु इस बात का ध्यान सदा रखना होगा कि प्रत्येक मास में कृष्णपक्ष में दो उपवास और शुक्लपक्ष में एक उपवास करना पड़ता है। इस व्रत के लिए कोई तिथि निर्धारित नहीं की गई है। यह किसी भी तिथि को सम्पन्न किया जा सकता है। प्रथम मान्यता के अनुसार उपवास के दिन रातभर जागरण करते हुए प्रातःकाल श्री जिनेन्द्र प्रभु के मुख का अवलोकन करना चाहिए। रात को '**ॐ अर्हद्भ्यो नमः**' मंत्र का जाप करना चाहिए। जिन दिनों में उपवास नहीं करना है, उन दिनों में उपर्युक्त मंत्र का एक जाप अवश्य करना चाहिए। उपवास के दिन पंचाणुव्रतों का पालन करना, विशेष रूप से ब्रह्मचर्य धारण करना तथा पूजन- सामायिक करना आवश्यक है। जिस समय जिनमुखावलोकन किया जाता है, उस समय व्रत करने वाला भगवान के समक्ष दोनों घुटने पृथ्वी पर टेककर घुटनों के बल बैठ जाता है अथवा सुखासन लगाकर बैठता है। व्रती को भगवान के समक्ष बैठते हुए निम्न मंत्रों का उच्चारण करना चाहिए।

'**ॐ त्रैलोक्यवशंकराय केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने नमः। 'ॐ संसारपरिभ्रमणविनाशनाय अभीष्टफलप्रदानाय धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथस्वामिने नमः। 'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा नमः सर्वसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**' इन तीनों मंत्रों का उच्चारण करते हुए अंतिम मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिए। प्रोषधोपवास के दिन भी अंतिम मंत्र का तीनों संध्याओं में जाप करना चाहिए। उपवास के दूसरे दिन पारणा करते समय भोज्य वस्तुओं की संख्या निर्धारित कर लेनी चाहिए।

दूसरी मान्यता के अनुसार भी उपवास के दिन '**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असि आ उ सा नमः सर्वसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**' इस मंत्र का तीनों संध्याओं में जाप करना चाहिए। अन्य दिनों में दिन में एक बार इस मंत्र का जाप किया जाता है। जिनेन्द्र भगवान के दर्शन के अनन्तर अन्य कार्यों का प्रारंभ करना चाहिए। जिनमुखावलोकन व्रत निरवधि कहलाता है क्योंकि दोनों ही मान्यताओं में इस व्रत के लिए कोई तिथि निश्चित नहीं की गई है। आचार्य ने यहाँ पर दूसरी मान्यता को प्रधानता दी है।

(7) श्रुतस्कंध व्रत

विधि– भादों मास में भादों कृष्णा प्रतिपदा से लेकर आश्विन कृष्णा प्रतिपदा तक यह व्रत किया जाता है। इसमें एक महिने में उत्कृष्ट 16 उपवास, मध्यम 10 और जघन्य 8 उपवास करें। पारणा के दिन यथाशक्ति नीरस या एक- दो आदि रस छोड़कर एक बार भोजन (एकाशन) करें। 16 उपवास करने में प्रतिपदा से एक उपवास, एक पारणा ऐसे आश्विन कृ. प्रतिपदा तक 16 उपवास होंगे। ऐसे ही 10 उपवास में कृष्णपक्ष में दूज, पंचमी, अष्टमी, दशमी और चौदश तथा शुक्लपक्ष में भी 2,5,8,10 और 14 को उपवास करें। 8 उपवास में भी दो पंचमी, 2 अष्टमी, 2 दशमी और 2 चौदस ऐसे 8 उपवास करें। अथवा शक्ति अनुसार जैसे भी हो, वैसे ये उपवास करें।

प्रतिदिन जिनमंदिर में श्रुतस्कंध मंडल बनाकर श्रुतस्कंध विधान पूजन करें। इस व्रत में प्रतिदिन निम्नमंत्र का जाप्य करें–

''ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्यो नमः।''

यह व्रत बारह वर्ष तक करें अथवा पांच वर्ष करें। व्रत पूर्ण कर उद्यापन करें। मंदिर में 12-12 उपकरण– घंटा, पूजा के बर्तन, छत्र, चंवर, चंदोवा, चौकी, वेष्टन आदि भेंट करें। शास्त्र छपाकर मंदिर में रखें और मुनि-आर्यिकाओं को तथा श्रावकों को भी शास्त्र भेंट करें। सरस्वती भवन का निर्माण कर श्रुतदेवी की प्रतिमा या श्रुतस्कंध यंत्र स्थापित करें। जिनवाणी के उपदेश आदि द्वारा जैनधर्म की प्रभावना करें। इस प्रकार इस व्रत के प्रभाव से भव्यों को श्रुतज्ञान की वृद्धि होती है और अगले भव में श्रुतकेवली होकर वे परंपरा से केवलज्ञान की प्राप्ति कर लेते हैं।

व्रत की कथा– जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखंड में अंग देश में पटना नगर है। उस नगर के राजा चंद्ररुचि की चन्द्रप्रभा रानी के श्रुतशालिनी नाम की एक कन्या थी। इसे आर्यिका जिनमती के पास विद्याध्ययन के लिए रखा गया। थोड़े ही दिनों में वह कन्या सर्वविद्या में निपुण हो गई। एक दिन श्रुतशालिनी ने एक चौकी पर श्रुतस्कंध मंडल बनाया। इसे देखकर आर्यिका जिनमती ने प्रसन्न होकर कन्या को विद्या में निष्णात समझकर राजा के यहाँ वापस भेज दिया।

एक दिन उद्यान में पधारे वर्द्धमान मुनिराज की वंदना करके राजा ने पूछा– भगवन्! मेरी कन्या को इतने गुण और सुंदर रूप किस पुण्य से मिले हैं? मुनिराज ने कहा– राजन्! इसी जंबूद्वीप के पूर्वविदेह में पुष्कलावती देश में पुण्डरीकिणी नगरी है। वहाँ के राजा गुणभद्र और रानी गुणवती दोनों एक समय सपरिवार श्री सीमंधर भगवान की वंदना को गये। यथायोग्य भक्ति, पूजा करके मनुष्य के कोठे में बैठ गये। पुनः दिव्य उपदेश सुनने के बाद श्रुतस्कंधव्रत का स्वरूप पूछा– तब गणधर देव ने कहा– जिनेन्द्रदेव की दिव्यध्वनि निरक्षरी वाणी है, यह अनंत भव्यों के हितार्थ होती है। भगवान की दिव्यध्वनि को वहाँ पर बैठे सभी भव्य अपनी-अपनी भाषा में समझ लेते हैं। भगवान की वाणी सात सौ अठारह भाषा में खिरती है। इसे सुनकर चार ज्ञान के धारी गणधरदेव द्वादशांगरूप में गूंथ लेते हैं।

द्वादशांग के नाम–1. आचारांग 2. सूत्रकृतांग 3. स्थानांग 4. समवायांग 5. व्याख्याप्रज्ञप्ति 6. ज्ञातृकथांग 7. उपासकाध्ययनांग 8. अंतकृत्दशांग 9. अनुत्तरौपपादिकदशांग 10. प्रश्नव्याकरणांग 11. सूत्रविपाकांग और 12. दृष्टिवादांग।

फिर इन्हीं के आधार से अनेक मुनिगण ग्रंथ रचना करते हैं। यह जिनेन्द्रवाणी समस्त लोक-अलोक के स्वरूप को और त्रिकालवर्ती पदार्थों को प्रदर्शित करने वाली है। समस्त प्राणियों का हित करने वाली है, मिथ्यामतों को दूरकर पूर्वापर विरोधी दोषों से रहित सच्चे धर्म का उपदेश देने वाली है।

अनेक प्रकार से उपदेश देकर श्रीगणधरदेव ने उन्हें श्रुतस्कंध व्रत की विधि बतलाई। राजा गुणभद्र और रानी गुणवती ने इस व्रत को वहीं समवसरण में गणधर गुरु से ग्रहण किया। पुनः विधिवत् इस व्रत को करके अंत में समाधिपूर्वक मरण कर अच्युत स्वर्ग में इन्द्र-इन्द्राणी हुए।

वहाँ से चयकर वह गुणवती रानी का जीव यहाँ तुम्हारी श्रुतशालिनी नाम की कन्या हुई है। इस प्रकार गुरुमुख से अपने भवांतर सुनकर उस कन्या ने पुनः श्रुतस्कंध व्रत धारण किया। पश्चात् चारित्र के प्रभाव से अंत में समाधिमरण कर स्त्रीलिंग छेदकर इन्द्रपद प्राप्त कर लिया।

कालांतर में इस श्रुतशालिनी के जीव पश्चिम विदेह के कुमुदवती देश के अशोक नगर में राजा पद्मनाभ की रानी जितपद्मा के ''नयंधर'' नाम के तीर्थंकर हुए हैं। ये कामदेव और चक्रवर्ती भी हुए हैं। नयंधर तीर्थंकर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर शुक्लध्यान के द्वारा कर्मों को नष्ट कर केवली हो गये, तब देवों ने समवसरण की रचना कर दी। इन्होंने अनेक देशों में विहार कर भव्यजीवों को धर्मामृत से तर्पित कर अंत में अघातिकर्मों का नाश करके मोक्षपद प्राप्त कर लिया है। इस प्रकार जो नर-नारी भावसहित इस व्रत का पालन करेंगे, वे अवश्य ही श्रुतज्ञान को पूर्ण कर केवलज्ञान को प्राप्त करेंगे।

(8) श्री चन्दनषष्ठी व्रत कथा

देव नमूँ अरहन्त नित, वीतराग विज्ञान।
चन्दनषष्ठी व्रत कथा, कहूँ स्वपर हित जान।।

काशी देश में बनारस नाम का प्रसिद्ध नगर है। जिसको तेइसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान ने अपने जन्म धारण करने से पवित्र किया था। उसी नगर में किसी समय एक सूरसेन नाम का राजा राज करता था। उसकी रानी का नाम पद्मिनी था।

एक दिन वह राजा सभा में बैठा था कि वनपाल ने आकर छः ऋतुओं के फल-फूल लाकर राजा को भेंट किये। राजा इस शुभ भेंट से केवली भगवान का शुभागमन जानकर स्वजन और पुरजन सहित वंदना को गया और भक्तिपूर्वक प्रदक्षिणा करके नमस्कार करके बैठ गया।

श्री मुनिराज ने प्रथम ही मुनिधर्म का वर्णन करके पश्चात् श्रावक धर्म का वर्णन किया। उसमें भी सबसे प्रथम सब धर्मों का मूल सम्यग्दर्शन का उपदेश दिया कि-वस्तु स्वरूप का यथार्थ श्रद्धान हुए बिना सब ज्ञान और चारित्र निष्फल है और वह वस्तुस्वरूप का श्रद्धान सत्यार्थ देव (अर्हन्त) सत्यार्थ गुरु (निर्ग्रन्थ और) दयामयी (जिन प्रणीत) धर्म से ही होता है।

अतएव प्रथम ही इनका परीक्षापूर्वक श्रद्धान होना आवश्यक है तत्पश्चात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और परिग्रहत्याग ये पाँच व्रत एकदेश पालन करे तथा इन्हीं के यथोचित पालनार्थ सप्तशीलों (तीन गुणव्रत व चार शिक्षाव्रतों) का भी पालन करें, इत्यादि उपदेश दिया, तब राजा ने हाथ जोड़कर पूछा-हे प्रभु! रानी के प्रति मेरा अधिक स्नेह होने का क्या कारण है? यह सुनकर श्री गुरुदेव ने कहा–

राजा! सुनो, अवन्ती देश में एक उज्जैन नाम का नगर है, वहाँ वीरसेन नाम का राजा और रानी उसकी वीरमती थी। इसी नगर में जिनदत्त नामक एक सेठ थे, उसकी जयावती नामक सेठानी से ईश्वरचन्द्र नाम का पुत्र भी था जो कि अपने मामा की पुत्री चंदना से पाणिग्रहण कर सुख से कालक्षेप करता था।

एक समय सेठ जिनदत्त और सेठानी जयावती कुछ कारण पाकर दिगम्बरी दीक्षा ग्रहण कर मुनि-आर्यिका हो गये और तप के माहात्म्य से अपनी-अपनी आयु पूर्णकर स्वर्ग में देव-देवी हुए और पिता का पद प्राप्त करके ईश्वरचंद सेठ भी चंदना सहित सुख से रहने लगा।

एक दिन अतिमुक्तक नाम के मुनिराज मासोपवास के अनन्तर नगर में पारणा निमित्त आये सो ईश्वरचन्द्र ने भक्ति सहित मुनि को पड़गाह कर अपनी स्त्री से कहा कि श्रीगुरु को आहार देओ। तब चन्दना बोली–

स्वामी! मैं ऋतुवती हूँ, कैसे आहार दूँ? ईश्वरचन्द ने कहा कि गुपचुप रहो, हल्ला मत करो, गुरुजी मासोपवासी हैं इसलिए शीघ्र पारणा कराओ।

चंदना ने पति के वचनानुसार मुनिराज को आहार दे दिया सो श्री मुनिराज तो आहार करके वन में चले गये और यहाँ तीन ही दिन पश्चात् इस गुप्त पाप का उदय होने से पति-पत्नी दोनों के शरीर में गलित कुष्ट हो गया सो अत्यन्त दुःखी हुए और कष्ट से दिन बिताने लगे।

एक दिन भाग्योदय से श्रीभद्र मुनिराज संघ सहित उद्यान में पधारे, सो नगर के लोग वंदना को गये और ईश्वरचन्द्र भी अपनी भार्यासह वंदना को गया, सो भक्तिपूर्वक नमस्कार कर बैठा और धर्मोपदेश सुना, पश्चात् पूछने लगा–

हे दीनदयाल! हमारे यहाँ कौन पाप का उदय आया है कि जिससे यह विथा उत्पन्न हुई है। तब मुनिराज ने कहा-तुमने गुप्त कपट कर पात्रदान के लोभ से अतिमुक्तक स्वामी को ऋतुवती होने की अवस्था में भी आहारपान व मन, वचन, काय शुद्ध है, कहकर आहार दिया अर्थात् तुमने अपवित्रता को भी पवित्र कहकर चारित्र का अपमान किया है सो इसी पाप के कारण से यह असातावेदनीय कर्म का उदय आया है।

यह सुनकर उक्त दम्पत्ति (सेठ-सेठानी) ने अपने अज्ञान कृत्य पर बहुत पश्चाताप किया और पूछा–

प्रभु! अब कोई उपाय इस पाप से मुक्त होने का बताइये, तब श्री गुरु ने कहा– हे भद्र! सुनो-भादों वदी षष्ठी (गुजराती श्रावण कृ. 6) को चारों प्रकार के आहार का त्याग करके उपवास धारण करो तथा जिनालय में जाकर पंचामृत से अभिषेक पूजन करो, अर्थात् छः प्रकार के उत्तम और प्रासुक फलों सहित अष्टद्रव्य से छः अष्टक चढ़ावो, अर्थात् छः पूजा करो। एक सौ आठ (108) बार णमोकार मंत्र का फलों व फूलों द्वारा जाप करो, चारों संघ को चार प्रकार का दान देवो।

इस प्रकार व्रत करो। तीनों काल सामायिक, व्रत, अभिषेक, पूजन करो, घर के आरंभ व विषयकषायों का उपवास के दिन और रात्रिभर आठ प्रहर तथा धारणा-पारणा के दिन 4 प्रहर, ऐसे सोलह प्रहरों तक त्याग करो।

इस प्रकार छः वर्ष तक यह व्रत करो। पश्चात् उद्यापन करो अर्थात् जहाँ जिनमंदिर न हो, वहाँ छः जिनालय बनवाओ, छहः जिनबिम्ब पधरावो, छः जिनमंदिर का जीर्णोद्धार करावो, छः शास्त्रों का प्रकाशन करो, छः छः सब प्रकार के उपकरण मंदिर में चढ़ाओ, छात्रों को भोजन करावो, चार प्रकार के (आहार, औषधि, शास्त्र और अभयदान) दान देवो।

इस प्रकार दंपत्ति ने व्रत की विधि सुनकर मुनिराज की साक्षीपूर्वक व्रत ग्रहण करके विधि सहित पालन किया। कुछ दिन में अशुभ कर्म की निर्जरा होने से उनका शरीर बिल्कुल निरोग हो गया और आयु के अन्त में संन्यास मरण करके वे दम्पत्ति स्वर्ग में रत्नचूल और रत्नमाला नामक देव-देवी हुए, सो बहुत काल तक सुख भोगते और नंदीश्वर आदि अकृत्रिम चैत्यालयों की पूजा-वंदना करते कालक्षेप करते रहे।

अन्त में आयु पूर्णकर वहाँ से चयकर तुम राजा हुए हो और वह रत्नमाला देवी तुम्हारी पट्टरानी पद्मिनी हुई हैं। सो यह तुम दोनों का पूर्वभवों का संबंध होने से ही प्रेम विशेष हुआ है। यह वार्ता सुनकर राजा को भवभोगों से वैराग्य उत्पन्न हुआ सो उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देकर आपने दीक्षा ले ली और घोर तपश्चरण किया और तप के प्रभाव से थोड़े ही काल में केवलज्ञान प्राप्त करके वे सिद्धपद को प्राप्त हुए, और रानी पद्मिनी ने भी दीक्षा ली, सो वह भी तप के प्रभाव से स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ, वहाँ से चयकर मनुष्य भव लेकर मोक्षपद प्राप्त करेगा।

इस प्रकार ईश्वरदत्त सेठ और चंदना ने इस चंदनषष्ठी व्रत के प्रभाव से नर-सुर के सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया और जो नर-नारी यह व्रत पालेंगे, वे भी अवश्य उत्तम पद पावेंगे।

(9) दशलक्षण व्रत विधि

दशलक्षणिकव्रते भाद्रपदमासे शुक्ले श्रीपंचमीदिने प्रोषधः कार्यः, सर्वगृहारम्भं परित्यज्य जिनालये गत्वा पूजार्चनादिकञ्च कार्यम्। चतुर्विंशतिकां प्रतिमां समारोप्य जिनास्पदे दशलाक्षणिकं यन्त्रं तदग्रे ध्रियते, ततश्च स्नपनं कुर्यात्, भव्यः मोक्षाभिलाषी अष्टधापूजनद्रव्यैः जिनं पूजयेत्। पंचमीदिनमारभ्य चतुर्दशीपर्यन्तं व्रतं कार्यम्, ब्रह्मचर्यविधिनास्थातव्यम्। इदं व्रतं दशवर्षपर्यन्तं करणीयम्, ततश्चोद्यापनं कुर्यात्। अथवा दशोपवासाः कार्याः। अथवा पंचमीचतुर्दश्योरुपवासद्वयं शेषमेकाशनमिति केषाञ्चिन्मतम्, तत्तु शक्तिहीनतयाङ्गीकृतं न तु परमो मार्गः।

अर्थ– दशलक्षण व्रत भाद्रपद मास में शुक्लपक्ष की पंचमी से आरंभ किया जाता है। पंचमी तिथि को प्रोषध करना चाहिए तथा समस्त गृहारम्भ का त्यागकर जिनमंदिर में जाकर, पूजन-अर्चन, अभिषेक आदि धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न करनी चाहिए। अभिषेक के लिए चौबीस भगवान की प्रतिमाओं को स्थापन कर उनके आगे दशलक्षण यंत्र स्थापित करना चाहिए। पश्चात् अभिषेक क्रिया सम्पन्न करनी चाहिए। मोक्षाभिलाषी भव्य अष्ट

द्रव्यों से भगवान जिनेन्द्र का पूजन करता है। यह व्रत भादों सुदी पंचमी से भादों सुदी चतुर्दशी तक किया जाता है। दसों दिन ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता है।

इस व्रत को दस वर्ष तक पालन किया जाता है, पश्चात् उद्यापन कर दिया जाता है। इस व्रत की उत्कृष्ट विधि तो यही है कि दस उपवास लगातार अर्थात् पंचमी से लेकर चतुर्दशी तक दस उपवास करना चाहिए अथवा पंचमी और चतुर्दशी का उपवास तथा शेष दिनों में एकाशन करना चाहिए, परन्तु यह व्रत विधि शक्तिहीनों के लिए बतायी गई है, यह परममार्ग नहीं है।

विवेचन-दशलक्षण व्रत भादों, माघ और चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में पंचमी से चतुर्दशी तक किया जाता है। परन्तु प्रचलित रूप में केवल भाद्रपद मास ही ग्रहण किया गया है। दशलक्षण व्रत के दस दिनों में त्रिकाल सामायिक, वंदना और प्रतिक्रमण आदि क्रियाओं को सम्पन्न करना चाहिए। व्रतारंभ के दिन से लेकर व्रत समाप्ति तक जिनेन्द्र भगवान के अभिषेक के साथ दशलक्षण यंत्र का भी अभिषेक किया जाता है। नित्य नैमित्तिक पूजाओं के अनन्तर दशलक्षण पूजा की जाती है। पंचमी, षष्ठी, सप्तमी आदि दश तिथियों में क्रम से प्रत्येक तिथि को दशों धर्म के मंत्र का क्रम से जाप करना चाहिए। समस्त दिन स्वाध्याय, पूजन, सामायिक आदि कार्यों में व्यतीत करे, रात्रि जागरण करे और समस्त विकथाओं का त्याग कर आत्मचिंतन में लीन रहे। दसों दिन यथाशक्ति प्रोषध, बेला, तेला, एकाशन, ऊनोदर एवं रसपरित्याग करने चाहिए। स्वादिष्ट भोजन का त्याग करे तथा स्वच्छ और सादे वस्त्र धारण करने चाहिए। इस व्रत का पालन दस वर्ष तक किया जाता है।

कथा—धातकीखण्ड द्वीप के पूर्वविदेह क्षेत्र में विशाल नाम का एक नगर है। वहाँ का प्रियंकर नाम का राजा अत्यंत नीतिनिपुण और प्रजावत्सल था। रानी का नाम प्रियंकरा था, और इसके गर्भ से उत्पन्न हुई कन्या का नाम मृगांकलेखा था।

इसी राजा के मंत्री का नाम मतिशेखर था। इस मंत्री के उसकी शशिप्रभा स्त्री के गर्भ से कमलसेना नाम की कन्या थी।

इसी नगर के गुणशेखर नामक एक सेठ के यहाँ उसकी शीलप्रभा नाम की सेठानी से एक कन्या मदनवेगा नाम की हुई थी और लक्षभट नामक ब्राह्मण के घर चन्द्रभागा भार्या से रोहिणी नाम की कन्या हुई थी।

ये चारों (मृगांकलेखा, कमलसेना, मदनवेगा और रोहिणी) कन्याएं अत्यंत रूपवान, गुणवान तथा बुद्धिमान थी। वे सदैव धर्माचरण में सावधान रहती थीं। एक समय बसंत ऋतु में ये चारों कन्याएँ अपने-अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर वनक्रीड़ा के लिए निकलीं, सो भ्रमण करती-करती कुछ दूर निकल गईं। जबकि ये वन की स्वाभाविक शोभा को देखकर आल्हादित हो रही थीं कि उसी समय उनकी दृष्टि उस वन में विराजमान श्री महामुनिराज पर पड़ी और वे विनयपूर्वक उनको नमस्कार करके वहाँ बैठ गईं और धर्मोपदेश सुनने लगीं। पश्चात् मुनि तथा श्रावकों का द्विविध प्रकार उपदेश सुनकर वे चारों कन्याएँ हाथ जोड़कर पूछने लगीं– हे नाथ! यह तो हमने सुना, अब दया करके हमको ऐसा मार्ग बताइये कि जिससे इस पराधीन स्त्री पर्याय तथा जन्म-मरणादि के दुःखों से छुटकारा मिले। तब श्री गुरु बोले– बालिकाओं! सुनो–

यह जीव अनादिकाल से मोहभाव को प्राप्त हुए विपरीत आचरण करके ज्ञानावरणादि अष्टकर्मों को बांधता है और फिर पराधीन हुवा संसार में नाना प्रकार के दुःख भोगता है। सुख यथार्थ में कहीं बाहर से नहीं आता है, न कोई भिन्न पदार्थ ही हैं, किन्तु वह (सुख) अपने निकट ही आत्मा में, अपने ही आत्मा का स्वभाव है, सो जब तीव्र उदय होता है, उस समय यह जीव अपने उत्तमक्षमादि गुणों को (जो यथार्थ में सुख-शांति स्वरूप ही हैं) भूलकर इनसे विपरीत क्रोधादि भावों को प्राप्त होता है और इस प्रकार स्व पर की हिंसा करता है। सो कदाचित् यह अपने स्वरूप का विचार करके अपने चित्त को उत्तमक्षमादि गुणों से रंजित करे, तो निःसंदेह इस भव और परभव में सुख भोगकर परमपद (मोक्ष) को प्राप्त कर सकता है। स्त्री पर्याय से छुटना तो कठिन ही क्या है? इसलिए पुत्रियों! तुम मन, वचन, काय से इस उत्तम दशलक्षण रूप धर्म को धारण करके यथाशक्ति व्रत पालो, तो निःसंदेह मनवांछित (उत्तम) फल पाओगी।

भगवान ने 'उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्यागाकिंचन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः' अर्थात् उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम सत्य, उत्तम शौच, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य, इस प्रकार ये धर्म के दश लक्षण बताये हैं। ये वास्तव में आत्मा के ही निजभाव है। जो क्रोधादि से ढक रहे हैं।

उत्तम क्षमा, क्रोध के उपशम या क्षय होने से प्रगट होती है। इसी प्रकार उत्तम मार्दव मान के उपशम, क्षयोपशम व क्षय से होता है। उत्तम आर्जव, माया के नाश होने से होता है। सत्य, मिथ्यात्व (मोह) के नाश से होता है। शौच, लोभ के नाश से होता है। संयम, विषयानुराग कम व नाश होने से होता है। तप, इच्छाओं को रोकने (मन वश करने) से होता है। त्याग, ममत्व (राग) भाव कम या नाश करने से होता है। आकिंचन्य, निस्पृहता से उत्पन्न होता है और ब्रह्मचर्य काम विकार तथा उनके कारणों को छोड़ने से उत्पन्न होता है। इस प्रकार ये दशों धर्म अपने प्रति घातक दोषों के क्षय होने से प्रगट हो जाते हैं।

(1) क्षमावान् प्राणी कदापि किसी जीव से वैर विरोध नहीं करता है और न किसी को बुरा-भला कहता है। किन्तु दूसरों के द्वारा अपने ऊपर लगाये हुए दोषों को सुनकर अथवा आये हुए उपद्रवों पर भी विचलित चित्त नहीं होता है और उन दुःख देने वाले जीवों पर उल्टा करुणाभाव करके क्षमा देता है तथा अपने द्वारा किये हुए अपराधों की क्षमा मांग लेता है। इस प्रकार यह क्षमावान पुरुष सदा निर्बैर हुआ, अपना जीवन सुख-शांतिमय बनाता है।

(2) इसी प्रकार मार्दव धर्मधारी नर के क्षमा तो होती है किन्तु जाति, कुल, ऐश्वर्य, विद्या, तप और रूपादि समस्त प्रकार के मदों के नाश होने से विनयभाव प्रगट होता है अर्थात् वह प्राणी अपने से बड़ों में भक्ति व विनयभाव रखता है और छोटे में करुणा व नम्रता रखता है, सबसे यथायोग्य मिष्ट वचन बोलता है और कभी भी किसी से कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं करता है। इसी से यह मिष्टभाषी विनयी पुरुष सर्वप्रिय होता है और किसी से द्वेष न होने से सानंद जीवन यात्रा करता है।

(3) आर्जव धर्मधारी पुरुष, क्षमा और मार्दव धर्मपूर्वक ही आर्जवधर्म (सरलता) को धारण करता है। इसके जो कुछ बात मन में होती है, सो ही वचन से कहता है और कही हुई बात को पूरी करता है। इस प्रकार यह सरल परिणाम पुरुष निष्कपट होने के कारण निश्चिंत तथा सुखी होता है।

(4) सत्यवान पुरुष सदैव जो बात जैसी है, अथवा वह जैसी उसे जानता समझता है, वैसी ही कहता है, अन्यथा नहीं कहता, कहे हुए वचनों को नहीं बदलता और न कभी किसी को हानि व दुःख पहुँचाने वाले वचन बोलता है। वह तो सदैव अपने वचनों पर दृढ़ रहता है। इसके उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव ये तीनों धर्म अवश्य ही होते हैं। यह पुरुष अन्यथा प्रलापी न होने से विश्वासपात्र होता है और संसार में सन्मान व सुख को प्राप्त होता है।

(5) शौचवान नर उपर्युक्त चारों धर्मों को पालता हुआ अपनी आत्मा को लोभ से बचाता है और जो पदार्थ न्यायपूर्वक उद्योग करने से उसके क्षयोपशम के अनुसार उसे प्राप्त होते हैं वह उसमें संतोष करता है और कभी स्वप्न में भी परधन हरण करने के भाव इनके नहीं होते हैं। यदि अशुभ कर्म के उदय से इसे किसी प्रकार का भी घाटा हो जाये अथवा और किसी प्रकार से द्रव्य चला जाये, तो भी यह दुखी नहीं होता और अपने कर्मों का विपाक समझकर धैर्य धारण करता है, परन्तु अपने घाटे की पूर्ति के लिए कभी किसी दूसरे को हानि पहुँचाने की चेष्टा नहीं करता है। इसको तृष्णा न होने के कारण सदा आनंद में रहता है और इसलिए कभी किसी से ठगाया भी नहीं जाता है।

(6) संयमी पुरुष भी उक्त पाँचों व्रतों को पालता हुआ अपनी इन्द्रियों को उनके विषयों से रोकता है। ऐसी अवस्था में इसे कोई पदार्थ इष्ट व अनिष्ट प्रतीत नहीं होते हैं। क्योंकि विषयानुरागता के ही कारण अपने ग्रहण योग्य पदार्थ इष्ट और आरोचक व ग्रहण न करने योग्य अनिष्ट माने जाते हैं, सो इष्टानिष्ट कल्पना न रहने के कारण उनमें हेयोपादेय कल्पना भी नहीं रहती है, तब समभाव होता है। इसी से यह समरसी आनंद को प्राप्त करता है।

(7) तपस्वी पुरुष इन्द्रियों को वश करता हुआ भी मन को पूर्ण रीति से वश करता है और उसे यत्र तत्र दौड़ने से रोकता है। किसी प्रकार की इच्छा उत्पन्न नहीं होने देता है। जब इच्छा ही नहीं रहती तो आकुलता किस बात की? यह अपने ऊपर आने वाले सब प्रकार के उपसर्गों को धीरतापूर्वक सहन करने में उद्यमी व समर्थ होता

है। वास्तव में ऐसा कोई भी सुर-नर व पशु संसार में नहीं जन्मा है, जो इस परम तपस्वी को उसके ध्यान से किंचित्मात्र भी डिगा सके। इसलिए ही इस महापुरुष के एकाग्रचिंतानिरोध रूप धर्म व शुक्लध्यान होता है जिससे यह अनादि से लगे हुए कठिन कर्मों का अल्प समय में नाश करके सच्चे सुखों का अनुभव करता है।

(8) त्यागी पुरुष के उक्त सातों व्रत तो होते ही हैं किन्तु उस पुरुष का आत्मा बहुत उदार हो जाता है। यह अपने आत्मा से रागद्वेषादि भावों को दूर करने तथा स्वपर उपकार के निमित्त आहारादि चारों दान देता है और दान देकर अपने आपको धन्य व स्वसम्पत्ति को सफल हुई समझता है। यह कदापि स्वप्न में भी अपनी ख्याति व यश नहीं चाहता और न दान देकर उसे स्मरण रखता है अथवा न कभी किसी पर प्रगट ही करता है। वास्तव में दान देकर भूल जाना ही दानी का स्वभाव होता है। इससे यह पुरुष सदा प्रसन्नचित्त रहता है और मृत्यु का समय उपस्थित होने पर भी निराकुल रहता है। इसका चित्त धनादि में फंसकर आर्त-रौद्ररूप कभी नहीं होता है और उसका आत्मा सद्गति को प्राप्त होता है।

(9) आकिंचन्य– बाह्य-आभ्यंतर समस्त प्रकार के परिग्रहों से ममत्व भावों को छोड़ देने वाला पुरुष सदैव निर्भय रहता है, उसे न कुछ सम्हालना और न रक्षा करनी पड़ती है। यहाँ तक कि वह अपने शरीर तक से निस्पृह रहता है, तब ऐसे महापुरुष को कौन पदार्थ आकुलित कर सकता है, क्योंकि वह अपनी आत्मा के सिवाय समस्त परभावों या विभावों को हेय अर्थात् त्याज्य समझता है। इसी से कुछ भी ममत्व शेष नहीं रह जाता और समय-समय असंख्यात व अनन्तगुणी कर्मों की निर्जरा होती रहती है इसी से यह सुखी रहता है।

(10) ब्रह्मचर्यधारी महाबलवान योद्धा सदैव उक्त नव व्रतों को धारण करता हुआ, निरंतर अपनी आत्मा में ही रमण करता है वह बाह्य स्त्री आदि से विरक्त होता है उसकी दृष्टि में सब जीव संसार में एक समान प्रतीत होते हैं और स्त्री, पुरुष व नपुंसकादि का भेद कर्म की उपाधि जानता है। यह सोचता है कि यह देह हाड, मांस, मल, मूत्र, रुधिर, पीव आदि रागी जीवों को सुहावना सा लगता है। यदि वह चाम की चादर हटा दी जाये अथवा वृद्धावस्था आ जाये तो फिर इसकी ओर देखने को भी जी न चाहे इत्यादि, ऐसे घृणित शरीर में क्रीड़ा करना क्या है? मानो विष्टा (मल) के क्रीड़ावत् उसमें अपने आपको फंसाकर चतुर्गति के दुःखों में डालता है। इस प्रकार यह सुभट काम के दुर्जय किले को तोड़कर अपने अनंत सुखमई आत्मा में ही विहार करता है। ऐसे महापुरुषों का आदर सब जगह होता है और तब कोई भी कार्य संसार में ऐसा नहीं रह जाता है कि जिसे वह अखण्ड ब्रह्मचारी न कर सके। तात्पर्य वह सब कुछ करने को समर्थ होता है।

इस प्रकार इन दश धर्मों का संक्षिप्त स्वरूप कहा सो तुमको निरन्तर इन धर्मों को अपनी शक्ति अनुसार धारण करना चाहिए। अब इस दशलक्षण व्रत की विधि कहते हैं–

भादों, माघ और चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में पंचमी से चतुर्दशी तक 10 दिन पर्यंत व्रत किया जाता है। दशों दिन त्रिकाल सामायिक, प्रतिक्रमण, वंदना, पूजन, अभिषेक, स्तवन, स्वाध्याय तथा धर्मचर्चा आदि कर और क्रम से पंचमी को "**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमक्षमाधर्मांङ्गाय नमः**" इस मंत्र का 108 बार एक-एक समय, इस प्रकार दिन में 324 बार तीन काल सामायिक के समय जाप्य करे और इस उत्तम क्षमा गुण की प्राप्ति के लिए भावना भावे तथा उसके स्वरूप का बारम्बार चिन्तवन करे। इसी प्रकार–

षष्ठी को "**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तममार्दवधर्मांङ्गाय नमः**"

सप्तमी को "**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमआर्जवधर्मांङ्गाय नमः**"

अष्टमी को "**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमसत्यधर्मांङ्गाय नमः**"

नवमी को "**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमशौचधर्मांङ्गाय नमः**"

दशमी को "**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमसंयमधर्मांङ्गाय नमः**"

एकादशी को "**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमतपोधर्मांङ्गाय नमः**"

द्वादशी को "**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमत्यागधर्मांङ्गाय नमः**"

त्रयोदशी को "**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमआकिंचन्यधर्मांङ्गाय नमः**"

चतुर्दशी को "**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांङ्गाय नमः**"

इत्यादि मंत्रों का जाप करके भावना भावे।

समस्त दिन स्वाध्याय पूजादि धर्मकार्यों में बिताये, रात्रि को जागरण भजन करे, सब प्रकार के राग-द्वेष व क्रोधादि कषाय तथा इन्द्रिय विषयों को बढ़ाने वाली विकथाओं का तथा व्यापारादि समस्त प्रकार के आरंभों का सर्वथा त्याग करे।

दसों दिन यथाशक्ति प्रोषध (उपवास), बेला, तेला आदि करे अथवा ऐसी शक्ति न हो तो एकाशन, ऊनोदर तथा रस त्याग करके करे, परन्तु कामोत्तेजक, सचिक्कण, मिष्ट-गरिष्ठ (भारी) और स्वादिष्ट भोजनों का त्याग करे तथा अपना शरीर स्वच्छ खादी के कपड़ों से ही ढ़के। बढ़िया वस्त्रालंकार न धारण करे और रेशम, ऊन तथा फैन्सी परदेशी व मिलों के बने वस्त्र तो छुए भी नहीं, क्योंकि वे अनंत जीवों के घात से बनते हैं और कामादिक विकारों को बढ़ाने वाले होते हैं।

इस कारण यह व्रत दश वर्ष तक पालन करने के पश्चात् उत्साह सहित उद्यापन करे अर्थात् छत्र, चमर आदि मंगल द्रव्य, जपमाला, कलश, वस्त्रादि धर्मोपकरण प्रत्येक दश-दश श्रीमंदिर जी में पधाराना चाहिए तथा पूजा, विधानादि महोत्सव करना चाहिए, दुखित, भुखितों को भोजनादि दान देना चाहिए।

वाचनालय, विद्यालय, छात्रालय, औषधालय, अनाथालय, पुस्तकालय तथा दीन प्राणीरक्षक संस्थाएं आदि स्थापित करना चाहिए। इस प्रकार द्रव्य खर्च करने में असमर्थ हो तो शक्ति प्रमाण प्रभावनांग को बढ़ाने वाला उत्सव करे अथवा सर्वथा असमर्थ हो तो द्विगुणित वर्षों प्रमाण (20 वर्ष) व्रत करे। इस व्रत का फल स्वर्ग तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है।

यह उपदेश व व्रत की विधि सुन उन चारों कन्याओं ने मुनिराज की साक्षीपूर्वक इस व्रत को स्वीकार किया और निज घरों को गईं। पश्चात् दश वर्ष तक उन्होंने यथाशक्ति व्रत पालन कर उद्यापन किया सो उत्तमक्षमादि धर्मों का अभ्यास हो जाने से उन चारों कन्याओं का जीवन सुख और शांतिमय हो गया। वे चारों कन्याएं इस प्रकार सर्व स्त्री समाज में मान्य हो गईं। पश्चात् वे अपनी आयु पूर्ण कर अंत समय समाधिमरण करके महाशुक्र नामक दशवें स्वर्ग में अमरगिरि, अमरचूल, देवप्रभु और पद्मसारथी नामक महर्द्धिक देव हुए।

वहाँ पर अनेक प्रकार के सुख भोगते हुए अकृत्रिम जिनचैत्यालयों की भक्ति-वंदना करते हुए अपनी आयु पूर्ण कर वहाँ से चले, सो जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में मालवा प्रांत के उज्जैन नगर में मूलभद्र राजा के घर लक्ष्मीमती नाम की रानी के गर्भ से पूर्णकुमार, देवकुमार, गुणचन्द्र और पद्मकुमार नाम के रूपवान व गुणवान पुत्र हुए और भले प्रकार बाल्यकाल व्यतीत करके कुमारकाल में सब प्रकार की विद्याओं में निपुण हुए। पश्चात् इन चारों का ब्याह नन्दननगर के राजा इण तथा उनकी पत्नी तिलकसुन्दरी के गर्भ से उत्पन्न कलावती, ब्राह्मी, इन्दुगात्री और कंकू नाम की चार अत्यंत रूपवान तथा गुणवान कन्याओं के साथ हुआ और ये दम्पत्ति प्रेमपूर्वक कालक्षेप करने लगे।

एक दिन राजा मूलभद्र ने आकाश में बादलों को बिखरे देखकर संसार के विनाशीक स्वरूप का चिन्तवन किया और द्वादशानुप्रेक्षा भायी। पश्चात् ज्येष्ठ पुत्र को राज्यभार सौंपकर आप परम दिगम्बर मुनि हो गये। इन चारों पुत्रों ने यथायोग्य प्रजा का पालन व मनुष्योचित भोग भोगकर कोई एक कारण पाकर जिनेश्वरी दीक्षा ली और महान तपश्चरण करके केवलज्ञान को प्राप्त हो, अनेक देशों में विहार करके धर्मोपदेश दिया। फिर शेष अघातिया कर्मों का भी नाशकर आयु के अंत में योग निरोध करके परमपद (मोक्ष) को प्राप्त हो गये।

इस प्रकार उक्त चारों कन्याओं ने विधिपूर्वक इस व्रत को धारण करके स्त्रीलिंग छेदकर स्वर्ग तथा मनुष्यगति के सुख भोगकर मोक्षपद प्राप्त किया। इसी प्रकार जो और भव्य जीव मन, वचन, काय से इस व्रत को पालन करेंगे वे भी उत्तमोत्तम सुखों को प्राप्त होंगे।

(10) श्री त्रिलोक तीज व्रत

वन्दों श्री जिनदेव पद, वन्दूं गुरु चरणार।
वन्दूँ माता सरस्वती, कथा कहूँ हितकार।।

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र संबंधी कुरुजांगल देश में हस्तिनापुर नामक एक अति रमणीक नगर है। वहाँ का राजा कामदुक और रानी कमललोचना थी और उनके विशाखदत्त नाम का पुत्र था। उस राजा के वरदत्त नामक एक मंत्री था, जिसकी विशालाक्षी पत्नी से विजयसुन्दरी नामक एक कन्या बहुत सुन्दर थी, जिसका पाणिग्रहण राजपुत्र विशाखदत्त ने किया था। कितनेक दिन बाद राजा कामदुक की मृत्यु होने पर युवराज विशाखदत्त राजा हुआ।

एक दिन राजा अपने पिता के वियोग से व्याकुल हो उदास बैठा था कि उसी समय उस ओर विहार करते हुए श्री ज्ञानसागर नाम के मुनिवर पधारे। राजा ने उनको भक्तिपूर्वक नमस्कार करके उच्चासन दिया, तब मुनिश्री ने धर्मवृद्धि कह आशीष दी और इस प्रकार संबोधन करने लगे–

राजा! सुनो, यह काल (मृत्यु), सुर (देव) नर, पशु आदि किसी को भी नहीं छोड़ता है। संसार में जो उत्पन्न होता है सो नियम से नष्ट होता है। ऐसी विनाशीक वस्तु के संयोग-वियोग में हर्ष-विषाद ही क्या? यह तो पक्षियों के समान रैन (रात्री) बसेरा है। जहाज में देश-देशान्तर के अनेक लोग आ मिलते हैं, परन्तु अवधि पूरी होने पर सब अपने-अपने देश को चले जाते हैं।

इसी प्रकार ये जीव एक कुल (वंश-परिवार) में अनेक गतियों से आ-आकर एकत्रित होते हैं और अपनी-अपनी आयु पूर्ण कर संचित कर्मानुसार यथायोग्य गतियों में चले जाते हैं। किसी की यह सामर्थ्य नहीं कि क्षणमात्र भी आयु को बढ़ा सके। यदि ऐसा होता तो बड़े-बड़े तीर्थंकर, चक्रवर्ती आदि पुरुषों को क्यों कोई मरने देता? मृत्यु से यद्यपि वियोगजनित दुःख अवश्य ही मोह के वश मालूम होता है, तथापि उपकार भी बहुत होता है। यदि मृत्यु नहीं होती तो रोगी रोग से मुक्त न होता, संसारी कभी सिद्ध न हो सकता, जो जिस दशा में होता, उसी में रह जाता। इसलिए यह मृत्यु उपकारी भी है, ऐसा समझकर शोक तजो। इस शोक से (आर्तध्यान से) अशुभ कर्मों का बंध होता है जिससे अनेकों जन्मांतरों तक रोना पड़ता है। रोना बहुत दुःखदाई है।

मुनिवर के उपदेश से राजा को कुछ धैर्य बंधा। वे शोक तजकर प्रजापालन में तत्पर हुए और मुनिराज भी विहार कर गये।

एक दिन रानी ने संयमभूषण आर्यिका के दर्शन करके पूछा– माताजी! मेरे योग्य कोई व्रत बताइये, जिससे मेरी चिंता दूर होवे और जन्म सुधरे तब आर्यिका जी ने कहा– तुम त्रैलोक्य तीज व्रत करो। भादों सुदी 3 को उपवास करके चौबीस तीर्थंकरों के 72 कोठे का मंडल मांडकर तीन चौबीसी पूजा विधान करो और तीनों काल 108 जाप (ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्कालसंबंधिचतुर्विंशतितीर्थङ्करेभ्यो नमः) जपो, रात्रि को जागरण करके भजन व धर्मध्यान में काल बितावो। इस प्रकार तीन वर्ष तक यह व्रत कर पीछे उद्यापन करो, अथवा द्विगुणित करो। इसे दूसरे लोग रोट तीज भी कहते हैं।

उद्यापन करने के समय तीन चौबीसी का मण्डल मांडकर बड़ा विधान पूजन करना चाहिए और प्रत्येक प्रकार के उपकरण तीन तीन श्री मंदिर जी में भेंट कर चर्तुसंघ को चार प्रकार का दान देवो। शास्त्र छपाकर बांटो। इस प्रकार रानी ने व्रत की विधि सुनकर विधिपूर्वक इसे धारण किया। पश्चात् आयु के अंत में समाधिमरण करके सोलहवें स्वर्ग में स्त्रीलिंग छेदकर देव हुई। वहाँ नाना प्रकार के देवोचित सुख भोगे तथा अकृत्रिम जिन चैत्यालयों की वंदना आदि करते हुए यथासाध्य धर्मध्यान में समय बिताया।

पश्चात् वहाँ से चयकर मगधदेश के कंचनपुर नगर में राजा पिंगल और रानी कमललोचना के सुमंगल नाम का अति रूपवान तथा गुणवान पुत्र हुआ। सो वह राजपुत्र एक दिन अपने मित्रों सहित वनक्रीड़ा को गया था कि वहाँ पर परम दिगम्बर मुनि को देखकर उसे मोह उत्पन्न हो गया, सो मुनि की वंदना करके उनके निकट बैठा और पूछने लगा– हे प्रभो! आपको देखकर मुझे मोह क्यों उत्पन्न हुआ?

तब श्री गुरु कहने लगे– वत्स! सुन, यह जीव अनादिकाल से मोहादि कर्मों से लिप्त हो रहा है और क्या जाने इसके किस-किस समय के बांधे हुए कौन-कौन कर्म उदय में आते हैं जिनके कारण यह प्राणी कभी हर्ष व कभी विषाद को प्राप्त होता है।

इस समय जो तुझे मोह हुआ है इसका कारण यह है कि इसके तीसरे भव में तू हस्तिनापुर के राजा विशाखदत्त की भार्या विजयसुन्दरी नाम की रानी थी, सो तुझे संयमभूषण आर्यिका ने सम्बोधन करके त्रैलोक्य तीज का व्रत दिया था, जिसके प्रभाव से तू स्त्रीलिंग छेदकर स्वर्ग में देव हुआ और वहाँ से चयकर यहाँ राजा पिंगल के सुमंगल नाम का पुत्र हुआ है और वह संयमभूषण आर्यिका का जीव वहाँ से समाधिमरण करके स्वर्ग में देव हुआ।

वहाँ से चयकर यहाँ मैं मनुष्य हुआ हूँ, सो कोई कारण पाकर दीक्षा लेकर विहार करता हुआ यहाँ आया हूँ इसलिए तुझे पूर्व स्नेह के कारण यह मोह हुआ है।

हे वत्स! यह मोह महादुःख का देने वाला त्यागने योग्य है। यह सुनकर सुमंगल को वैराग्य उत्पन्न हुआ और उसने इस संसार को विडम्बनारूप जानकर तत्काल जैनेश्वरी दीक्षा धारण की और कितने काल तक घोर तपश्चरण करके केवलज्ञान को प्राप्त होकर मोक्षपद प्राप्त किया।

इस प्रकार विजयसुन्दरी रानी ने त्रैलोक्य तीज व्रत को पालन कर देवों और मनुष्यों के उत्तम सुखों को भोगकर निर्वाण पद प्राप्त किया। सो यदि और भी भव्य जीव श्रद्धा सहित यह व्रत पालें तो वे भी ऐसी उत्तम गति को प्राप्त होवेंगे।

विजयसुन्दरी व्रत किया, तीज त्रिलोक महान।
सुरनर के सुख भोगकर, 'दीप' लहा निर्वाण।।1।।

(11) पुष्पाञ्जलि व्रत विधि

पुष्पाञ्जलिस्तु भाद्रपदशुक्लां पञ्चमीमारभ्य शुक्लानवमीपर्यन्तं यथाशक्ति पञ्चोपवासाः भवन्ति।।

अर्थ– पुष्पांजलिव्रत भाद्रपद शुक्ला पंचमी से नवमी पर्यन्त किया जाता है। इसमें पाँच उपवास अपनी शक्ति के अनुसार किये जाते हैं।

विवेचन– भादों सुदी पंचमी से नवमी तक पाँच दिन पंचमेरु की स्थापना करके चौबीस तीर्थंकरों की पूजा करनी चाहिए। अभिषेक भी प्रतिदिन किया जाता है। पाँच अष्टक और पाँच जयमाल पढ़ी जाती हैं। '**ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयेभ्यो नमः**' मंत्र का प्रतिदिन तीन बार जाप किया जाता है। यदि शक्ति हो तो पाँचों उपवास, अन्यथा पञ्चमी को उपवास, शेष चार दिन रस त्याग कर एकाशन करना चाहिए। रात्रि जागरण विषय-कषायों को अल्प करने का प्रयत्न एवं आरंभ-परिग्रह का त्याग करने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। विकथाओं को कहने और सुनने का त्याग भी इस व्रत के पालने वाले को करना आवश्यक है। इस व्रत का पालन पाँच वर्ष तक करना चाहिए, तत्पश्चात् उद्यापन करके व्रत की समाप्ति कर दी जाती है।

व्रत की विशेष विधि और व्रत का फल

पुष्पांजलिव्रतं पञ्चदिनपर्यंतं करणीयम्। तत्र केतकीकुसुमादिभिः चतुर्विंशतिविकसितसुगंधितसुमनोभिश्चतुर्विंशतिजिनान् पूजयेत्। यथोक्तकुसुमाभावे पूजयेत् पीततन्दुलैः। पञ्चवर्षानन्तरं उद्यापनं कार्यम्। केवलज्ञानसम्प्राप्तिरेतस्य परमं फलम्। तिथिक्षये वा तिथिवृद्धौ पूर्वोक्त एव क्रमः स्मर्तव्यः। पुष्पाञ्जलिव्रते पंचमीषष्ठ्योरुपवासः सप्तम्यां पारणा अष्टमीनवम्योरुपवासः दशम्यां पारणा, एकान्तरेण तु तिथिक्षये चादिदिने गृहीते पारणाद्वयं मध्ये कार्यम्; पञ्चम्यामष्टम्यां च षष्ठ्यामष्टम्यां वा यथैकान्तरं स्यात्तथा कार्यम्; एतत् पुष्पांजलिव्रतं कर्मरोगहरं मुक्तिप्रदं च पारम्पर्येण भवति।

अर्थ– पुष्पांजलि व्रत को पाँच दिन तक करना चाहिए। इस व्रत में केतकी, बेला, चम्पा आदि विकसित और सुगंधित पुष्पों से चौबीस भगवान की पूजा करनी चाहिए। यदि वास्तविक पुष्प न हों या वास्तविक पुष्पों से पूजन करना उपयुक्त न समझें तो पीले चावलों से भगवान की पूजा करनी चाहिए। पाँच वर्ष के पश्चात् व्रत का उद्यापन कर देना होता है। इस व्रत का फल केवलज्ञान की प्राप्ति होना बताया गया है अर्थात् विधिपूर्वक पुष्पांजलि व्रत के पालने से केवलज्ञान की प्राप्ति होती है। तिथिक्षय या तिथिवृद्धि होने पर पूर्वोक्त क्रम ही अवगत करना चाहिए। तिथिक्षय में एक दिन पहले से और तिथिवृद्धि में एक दिन अधिक व्रत किया जाता है। पुष्पांजलि व्रत में पंचमी और षष्ठी इन दोनों दिनों का उपवास, सप्तमी को पारणा, अष्टमी और नवमी का उपवास तथा दशमी को पारणा की जाती है। एकान्तर उपवास करने वाले को अर्थात् एक दिन उपवास दूसरे दिन पारणा, पुनः उपवास तत्पश्चात् पारणा इस क्रम से उपवास करने वाले को तिथिक्षय होने पर एक दिन पहले से व्रत करने के कारण मध्य में दो पारणाएँ करनी चाहिए। पंचमी और अष्टमी की पारणा अथवा षष्ठी और अष्टमी की पारणा की जाती है। एकान्तर उपवास और पारणा का क्रम चल सके, ऐसा करना चाहिए। यह पुष्पांजलि व्रत कर्मरूपी रोग को दूर करने वाला, लौकिक अभ्युदय का प्रदाता एवं परम्परा से मोक्षलक्ष्मी को प्रदान करने वाला है।

विवेचन– पुष्पांजलि व्रत की विधि पहले लिखी जा चुकी है। आचार्य ने यहाँ पर कुछ विशेष बातें इस व्रत के संबंध में बतलायी हैं। पुष्पांजलि शब्द का अर्थ है कि पुष्पों का समुदाय अर्थात् सुगंधित, विकसित और कीटाणु रहित पुष्पों से जिनेन्द्र भगवान की पूजा इस व्रत वाले को करनी चाहिए। पहले व्रत विधि में लिखे गये जाप को भी पुष्पों से ही करना चाहिए। यदि पुष्प चढ़ाने से एतराज हो तो पीले चावलों से पूजन तथा लवंगों से जाप करना चाहिए। पाँचों दिन पूजन और जाप करना आवश्यक है। इस व्रत का बड़ा भारी माहात्म्य बताया गया है विधिपूर्वक इसके पालने से केवलज्ञान की प्राप्ति परम्परा से होती है, कर्मरोग दूर होता है तथा नाना प्रकार के लौकिक ऐश्वर्य, धन-धान्यादि विभूतियाँ प्राप्त होती हैं। इसकी गणना काम्य व्रतों में इसीलिए की गई है कि इस व्रत को विधिपूर्वक पालकर कोई भी व्यक्ति अपनी लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की कामनाओं को पूर्ण कर सकता है।

(12) श्री आकाशपंचमी व्रत कथा

आर्यखण्ड के सोरठ देश में तिलकपुर नाम का एक विशाल नगर था। वहाँ महीपाल नाम का राजा और विचक्षणा नामक रानी थी। उसी नगर में भद्रशाल नाम का व्यापारी रहता था उसकी नन्दा नाम की स्त्री से विशाला नाम की पुत्री उत्पन्न हुई।

यद्यपि वह कन्या अत्यन्त रूपवान थी, तथापि इसके मुख पर सफेद कोढ़ हो जाने से सारी सुन्दरता नष्ट हो गई थी। इसलिए उसके माता-पिता तथा वह कन्या स्वयं भी रोया करती थी, परन्तु कर्मों से क्या वश है? निदान माता के उपदेश से पुत्री धर्मध्यान में रत रहने लगी, जिससे कुछ दुःख कम हुआ।

एक दिन एक वैद्य आया और उसने सिद्धचक्र की आराधना करके औषधि दी जिससे उस कन्या का रोग दूर हो गया। तब उस भद्रशाल ने अपनी कन्या उसी वैद्य को ब्याह दी। पश्चात् वह पिंगल वैद्य इस विशाला नाम की वणिक पुत्री के साथ कितने ही दिन पीछे देशाटन करता हुआ, चित्तौड़गढ़ की ओर आया, वहाँ पर भीलों ने उसे मारकर सब धन लूट लिया।

निदान विशाला वहाँ से पति और द्रव्य रहित हुई नगर के जिनालय में गई और जिनराज के दर्शन करके वहाँ तिष्ठे हुए श्री गुरु को नमस्कार करके बोली– प्रभु! मैं अनाथनी हूँ, मेरा सर्वस्व खो गया, पति भी मारा गया और द्रव्य भी लूट गया। अब मुझे कुछ भी नहीं सूझता है कि क्या करूँ, कृपाकर कुछ कल्याण का मार्ग बताइये।

तब मुनिराज ने कहा-बेटी सुनो, यह जीव सदैव अपने ही पूर्वकृत कर्मों का शुभाशुभ फल भोगता है। तू प्रथम जन्म में इसी नगर में वेश्या थी। तू रूपवान तो थी ही, परन्तु गायन विद्या में भी निपुण थी।

एक समय सोमदत्त नाम के मुनिराज यहाँ आये। यह सुनकर नगर के लोग वंदना को गये और बहुत उत्साह से उत्सव किया सो जैसे सूर्य का प्रकाश उल्लू को अच्छा नहीं लगता, उसी प्रकार कुछ मिथ्यात्वी विधर्मी लोगों ने मुनि से वाद-विवाद किया और अन्त में हारकर वेश्या (तुझे ही) को मुनि के पास ठगने के लिए (भ्रष्ट करने को) भेजा तो तूने पूर्ण स्त्री चरित्र फैलाया, सब प्रकार रिझाया, शरीर का आलिंगन भी किया, परन्तु जैसे सूर्य पर धूल फेंकने से सूर्य का कुछ बिगड़ता ही नहीं किन्तु फेंकने वाले ही का उल्टा बिगाड़ होता है उसी प्रकार मुनिराज तो अचल मेरुवत् स्थिर रहे और तू हार मानकर लौट आई।

इससे इन मिथ्यात्वी अधर्मियों को बड़ा दुःख हुआ और तुझे भी बहुत पश्चाताप हुआ। अन्त में तुझे कोढ़ हो गया सो दुःखित अवस्था में मरकर तू चौथे नर्क गई। वहाँ से आकर तू यहाँ वणिक के घर पुत्री हुई है। यहाँ भी तुझे सफेद कोढ़ हुआ था। सो पिंगल वैद्य ने तुझे अच्छा किया और उसी से तेरा पाणिग्रहण भी हुआ था।

पश्चात् पूर्व पाप के उदय से चोरों ने उसे मार डाला और तू उससे बचकर यहाँ तक आई है। अब यदि तू कुछ धर्माचरण धारण करेगी, तो शीघ्र ही इस पाप से छूटेगी इसलिए सबसे प्रथम तू सम्यग्दर्शन को स्वीकार कर अर्थात् श्री अर्हन्त देव, निर्ग्रन्थ गुरु और दयामयी जिन भगवान के कहे हुए धर्मशास्त्र के सिवाय अन्य मिथ्या देव, गुरु और धर्म को छोड़ जीवादिक सात तत्त्वों का श्रद्धान कर और सम्यग्दर्शन के निःशंकित आदि आठ अंगों का पालन करके उसके 25 मल दोषों का त्याग कर, तब निर्मल सम्यग्दर्शन सधेगा। इस प्रकार सम्यक्त्वपूर्वक श्रावक के अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और परिग्रह परिमाण आदि 12 व्रत को पालन करते हुए आकाशपंचमी व्रत को भी पालन कर।

यह व्रत भादों सुदी 5 को किया जाता है। इस दिन चार प्रकार का आहार त्यागकर उपवास धारण करे और अष्ट प्रकार के द्रव्य से श्रीजिनालय में जाकर भगवान का अभिषेकपूर्वक पूजन करे। पश्चात् रात्रि के समय खुले मैदान में या छत (अगासी) पर बैठकर भजनपूर्वक जागरण करे तथा वहाँ भी सिंहासन रखकर श्री चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमा स्थापन करे और प्रत्येक प्रहर में अभिषेक करके पूजन करे और यदि उस समय उस स्थान पर वर्षा आदि के कारण कितने ही उपसर्ग आवें तो सब सहन करे परन्तु स्थान को न छोड़े।

तीनों समय महामंत्र नवकार के 108 जाप करे। इस प्रकार 5 वर्ष तक करे। जब व्रत पूरा हो जावे तो उत्साह सहित उद्यापन करे।

परम्परा में भगवान सुमतिनाथ की पूजा एवं जाप्य करते हैं – **ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय नमः।**

छत्र, चमर, सिंहासन, तोरण, पूजन के बर्तन आदि प्रत्येक 5 (पांच) नग मंदिर में भेंट करे और कम से कम पांच शास्त्र पधरावे। चार प्रकार के संघ को चारों प्रकार का दान देवे और भी विशेष प्रभावना करे। इस प्रकार विशाला कन्या ने श्रद्धापूर्वक बारह व्रत स्वीकार किये और इस आकाशपंचमी व्रत को भी विधि सहित पालन किया। पश्चात् समाधिमरण कर वह चौथे स्वर्ग में मणिभद्र नाम का देव हुआ।

वहाँ उसने देवाँगनाओं सहित क्रीड़ा करते हुए अनेक तीर्थों के दर्शन, पूजा, वंदना तथा समवसरण आदि की वंदना की। इस प्रकार सात सागर की आयु पूर्ण कर उज्जैन नगर में प्रियंगुसुन्दर नामक राजा के यहाँ तारामती नामक रानी से सदानंद नामक पुत्र हुआ, सो कितने काल राज्योचित सुख भोगे।

पश्चात् एक दिन नगर के बाहर वन में मुनिराज के दर्शन कर और उनके मुख से संसार से पार उतारने वाला धर्म का उपदेश सुनकर उसने वैराग्य को प्राप्त होकर जिनदीक्षा अंगीकार की और शुक्लध्यान के बल से केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्षपद प्राप्त किया।

इस प्रकार विशाला नाम की वणिक कन्या ने व्रत के प्रभाव से स्वर्ग और मोक्षपद प्राप्त किया, तो यदि श्रद्धा सहित अन्य जीव यह व्रत पालेंगे तो क्यों न उत्तम सुखों को प्राप्त होवेंगे? अवश्य होंगे।

(13) निर्दोष सप्तमी व्रत का स्वरूप

निर्दोष सप्तमी व्रत भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को करना चाहिए। इस व्रत में षष्ठी तिथि से संयम ग्रहण करना चाहिए। इस व्रत की समस्त विधि मुकुटसप्तमी के ही समान है, अंतर इतना है कि इसमें रात भी जागरणपूर्वक व्यतीत की जाती है अथवा रात के पिछले प्रहर में अल्प निद्रा लेनी चाहिए। **'ॐ ह्रीं सर्वविघ्ननिवारकाय श्री शांतिनाथस्वामिने नमः स्वाहा'** इस मंत्र का जाप करना होगा। कषाय, राग-द्वेष-मोह आदि विकारों का भी त्याग करना अनिवार्य है, इस व्रत को इस प्रकार करना चाहिए जिससे किसी भी प्रकार का दोष नहीं लगे। आत्मपरिणामों को निर्मल और विशुद्ध रखने का प्रयास करना चाहिए। इस व्रत की अवधि भी सात वर्ष है, पश्चात् उद्यापन कर छोड़ देना चाहिए।

कथा—मगध देश के पाटली पुत्र (पटना) नगर में पृथ्वीराज राजा राज्य करता था। उसकी रानी का नाम मदनावती था। उसी नगर में अर्हदास नाम का एक सेठ रहता था जिसकी लक्ष्मीमती नाम की स्त्री थी और दूसरा सेठ धनपति जिसकी स्त्री का नाम नंदनी था, नंदनी सेठानी के मुरारी नाम का एक पुत्र था, सो सांप के काटने से मर गया इसलिए नंदनी तथा उसके घर के लोग अत्यंत करुणाजनक विलाप करते थे अर्थात् सब ही शोक में निमग्न थे।

नंदनी तो बहुत शोकाकुल रहती थी। उसे ज्यों-ज्यों समझाया जाता था त्यों-त्यों अधिकाधिक शोक करती थी। एक दिन नंदनी के रुदन (जिसमें पुत्र के गुणगान करती हुई रोती थी) को सुनकर लक्ष्मीमती सेठानी ने समझा कि नंदनी के घर गायन हो रहा है, तब वह सोचने लगी कि नंदनी के घर तो कोई मंगल कार्य नहीं है अर्थात् ब्याह व पुत्र जन्मादि उत्सव तो कुछ भी नहीं है तब किस कारण गायन हो रहा है? अच्छा चलकर पूछूं तो सही, क्या बात है?

ऐसा विचार कर लक्ष्मीमती सहज स्वभाव से हँसती हुई नंदनी के घर गई और नंदनी से हँसते हुए पूछा—ऐ बहिन! तुम्हारे घर कोई मंगल कार्य है ऐसा तो सुना ही नहीं गया, तब यह गायन किसलिए होता रहता है, कृपया बताओ।

तब नंदनी गुस्सा करके बोली— अरी बाई! तुझे हँसी की पड़ी है और मुझ पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा है, मेरा कुल का दीपक प्यारा, आँखों का तारा पुत्र सर्प के काटने से मर गया है, इसी से मेरी नींद और भूख प्यास सब चली गई है, मुझे संसार में अंधेरा लगता है।

दुःखियों ने दुःख रोया, सुखियों ने हँस दिया। मुझे रोना आता है और तुझे हँसना। जा जा! अपने घर। एक दिन तुझे भी अतुल दुःख आवेगा, तब जानेगी कि दूसरे का दुःख कैसा होता है?

इस पर लक्ष्मीमती अपने घर चली गई और नंदनी ने उससे निःकारण वैर करके सांप मँगाया, और एक घड़े में रखकर लक्ष्मीमती के घर भिजवा दिया और कहला दिया कि इस घड़े में सुंदर हार रखा है सो तुम पहनो।

नंदनी का अभिप्राय था कि जब लक्ष्मीमती घड़े में हाथ डालेगी तो सांप इसे काटेगा और वह दुःखियों की हँसी करने का फल पावेगी।

जब दासी लक्ष्मीमती के घर वह विषैला सांप का घड़ा लेकर गई और यथायोग्य सुश्रूषा के वचन कहकर घड़ा भेंट कर दिया, तब लक्ष्मीमती ने दासी को पारितोषिक देकर विदा किया और अपने घड़े को उघाड़कर उसमें से हार निकालकर पहन लिया। (लक्ष्मीमती के पुण्य के प्रभाव से सांप का हार हो गया है) और हर्ष सहित जिनालय की वंदना निमित्त गई। सो मदनावती रानी ने उसे देख लिया और राजा से लक्ष्मीमती जैसा हार मंगा देने के लिये हठ करने लगी।

इस पर राजा ने अर्हदास सेठ को बुलाकर कहा— हे सेठ! जैसा हार तुम्हारी सेठानी का है, वैसा ही रानी के लिए बनवा दो, और जो द्रव्य लगे भंडार से ले जाओ। अब अर्हदास श्रेष्ठी ने सेठानी से लेकर वही हार राजा को दिया, सो राजा के हाथ पहुँचते ही हार का पुनः सर्प हो गया।

इस प्रकार वह सांप अर्हदास के हाथ में हार और राजा के हाथ में सांप हो जाता था। यह देखकर राजा और सभाजन सभी आश्चर्ययुक्त हो हार का वृत्तांत पूछने लगे परंतु सेठ कुछ भी कारण न बता सका।

भाग्योदय से वहाँ मुनि संघ आया सो राजा और प्रजा सभी वंदना को गये। वंदना कर धर्मोपदेश सुना और अंत में राजा ने वह हार और सांप वाली आश्चर्य की बात पूछी, तब मुनिराज ने कहा– हे राजा! इस सेठ ने पूर्व भव में निर्दोष सप्तमी का व्रत किया है, उसी के पुण्य फल से यह सांप का हार बन जाता है।

और तो बात ही क्या है, इस व्रत के फल से स्वर्ग और अनुक्रम से मोक्षपद भी प्राप्त होता है, और इस व्रत की विधि इस प्रकार है, सो सुनो–

भादों सुदी सप्तमी को आवश्यक वस्त्रादि परिग्रह रख शेष समस्त आरंभ व परिग्रह का त्याग करके श्री जिनमंदिर में जावे और प्रभु का अभिषेक आरंभ करे अर्थात् वहाँ पर दूध का कुण्ड भरकर उसमें प्रतिमा स्थापित करे और पंचामृत का अभिषेक करने के पश्चात् अष्टद्रव्य से भाव सहित पूजन करे और स्वाध्याय करे।

इस प्रकार धर्मध्यान में समय बितावे। पश्चात् दूसरे दिन हर्षोत्सव सहित जिनदेव का पूजन-अर्चन करके अतिथि को भोजन कराकर और दीन-दुःखियों को यथावश्यक दान देकर आप भोजन करे। इस प्रकार सात वर्ष तक यह व्रत करके पश्चात् विधिपूर्वक उद्यापन करे और यदि उद्यापन की शक्ति न हो, तो दूने वर्षों तक व्रत करे।

उद्यापन इस प्रकार करे– बारह प्रकार का पकवान और बारह प्रकार के फल तथा मेवा श्रावकों को बाँटे। बारह-बारह कलश, झारी, चन्दोवा आदि समस्त उपकरण जिनमंदिर में चढ़ावे। बारह शास्त्र लिखाकर पधरावे और चतुर्विध दान करे।

राजा ने यह सब व्रत विधान सुनकर स्वशक्ति अनुसार श्रद्धा सहित इस व्रत को पालन किया और अंत में आयु पूर्ण कर (समाधिमरण कर) सातवें स्वर्ग में देव हुआ और भी जो भव्य जीव श्रद्धा सहित इस व्रत को पालेंगे तो वे भी उत्तमोत्तम सुखों को प्राप्त होंगे।

(14) सुगंधदशमी व्रत

जम्बूद्वीप के विजयार्थ पर्वत की उत्तरश्रेणी में शिवमंदिर नाम का एक नगर है। वहाँ का राजा प्रियंकर और रानी मनोरमा थी सो वे अपने धन, यौवन आदि के ऐश्वर्य में मदोन्मत्त हुए जीवन के दिन पूरे करते थे। धर्म किसे कहते हैं, वह उन्हें मालूम भी न था।

एक समय सुगुप्त नाम के मुनिराज कृश शरीर दिगम्बर मुद्रायुक्त आहार के निमित्त बस्ती में आये, उन्हें देखकर रानी ने अत्यंत घृणापूर्वक उनकी निंदा की और पान की पीक मुनि पर थूंक दी। सो मुनि तो अन्तराय होने के कारण बिना आहार लिए ही पीछे वन में चले गये और कर्मों की विचित्रता पर विचार कर समभाव धारण कर ध्यान में निमग्न हो गये।

परन्तु थोड़े दिन पश्चात् रानी मरकर गधी हुई, फिर सूकरी हुई, फिर कूकरी हुई, फिर वहाँ से मरकर मगध देश के बसंततिलका नगर में विजयसेन राजा की रानी चित्रलेखा की दुर्गन्धा नाम की कन्या हुई। सो इसके शरीर से अत्यन्त दुर्गन्ध निकला करती थी।

एक समय राजा अपनी सभा में बैठा था कि धनपाल ने आकर समाचार दिया कि हे राजन्! आपके नगर के वन में सागरसेन नाम के मुनिराज चतुर्विध संघ सहित पधारे हैं।

यह समाचार सुनकर राजा प्रजा सहित वन्दना को गया और भक्तिपूर्वक नतमस्तक हो राजा ने स्तुति, वंदना की। पश्चात् मुनि तथा श्रावक के धर्मों के उपदेश सुनकर सबने यथाशक्ति व्रतादिक लिये। किसी ने सम्यक्त्व ही अंगीकार किया। इस प्रकार उपदेश सुनने के अनन्तर राजा ने नम्रतापूर्वक पूछा–

हे मुनिराज! यह मेरी कन्या दुर्गन्धा किसी पाप के उदय से ऐसी हुई है सो कृपाकर कहिए। तब श्री गुरु ने उसके पूर्व भवों का समस्त वृत्तांत मुनि की निंदादिक कह सुनाया, जिसको सुनकर राजा और कन्या सभी को पश्चाताप हुआ। निदान राजा ने पूछा– प्रभो! इस पाप से छूटने का कौन सा उपाय है? तब श्री गुरु ने कहा–

समस्त धर्मों का मूल सम्यग्दर्शन है, सो अर्हन्तदेव, निर्ग्रन्थ गुरु और जिनभाषित धर्म में श्रद्धा करके उनके सिवाय अन्य रागी-द्वेषी देव-भेषी गुरु, हिंसामय धर्म का परित्याग, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और परिग्रह प्रमाण इन पाँच व्रतों को अंगीकार करे और सुगंधा दशमी का व्रत पालन करे जिससे अशुभ कर्म का क्षय होवे।

इस व्रत की विधि इस प्रकार है–**कि भादों सुदी दशमी के दिन चारों प्रकार के आहारों को त्यागकर समस्त गृहारम्भ का त्याग करे और परिग्रह का भी प्रमाणकर जिनालय में जाकर श्री जिनेन्द्रदेव की भाव सहित अभिषेकपूर्वक पूजा करे।** सामायिक स्वाध्याय करे। धर्म कथा के सिवाय अन्य विकथाओं का त्याग करे, रात्रि में भजनपूर्वक जागरण करे। पश्चात् दूसरे दिन चौबीस तीर्थंकरों की अभिषेकपूर्वक पूजा करके अतिथियों (मुनि व श्रावक) को भोजन कराकर आप पारणा करे। चारों प्रकार के दान देवे। इस प्रकार दश वर्ष तक यह व्रत पालन कर पश्चात् उद्यापन करे।

अर्थात् चमर, छत्र, घण्टा, झारी, ध्वजा आदि दश-दश उपकरण जिनमंदिरों में भेंट देवे और दश प्रकार के श्रीफल आदि फल दश घर के श्रावकों को बांटे। यदि उद्यापन की शक्ति न होवे, तो दूना व्रत करे।

उत्तम व्रत उपवास करने से, मध्यम कांजी आहार और जघन्य एकाशन करने से होता है।

इस व्रत के दिन श्री शीतलनाथ भगवान की पूजा करें एवं ''**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शीतलनाथ जिनेंद्राय नमः**'' मंत्र का जाप्य करें।

इस प्रकार राजा प्रजा सबने व्रत की विधि सुनकर अनुमोदना की और स्वस्थान को गये। दुर्गन्धा कन्या ने मन, वचन-काय से सम्यक्त्वपूर्वक व्रत को पालन किया। एक समय दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान के कल्याणक के समय देव तथा इन्द्रों का आगमन देखकर उस दुर्गन्धा कन्या ने निदान किया कि मेरा जन्म स्वर्ग में होवे, सो निदान के प्रभाव से यह राजकन्या स्वर्ग में अप्सरा हुई और उसका पिता राजा मरकर दसवें स्वर्ग में देव हुआ।

यह दुर्गन्धा कन्या अप्सरा के भव से आकर मगध देश के पृथ्वीतिलक नगर में राजा महिपाल की रानी मदनसुन्दरी के मदनावती नाम की कन्या हुई, सो अत्यन्त रूपवान और सुगंधित शरीर हुई और कौशाम्बी नगरी के राजा अरिनंदन के पुत्र पुरुषोत्तम के साथ इस मदनावती का ब्याह हुआ। इस प्रकार वे दम्पत्ति सुखपूर्वक कालक्षेप करने लगे।

एक समय वन में सुगुप्ताचार्य नाम के आचार्य संघ सहित आये सो वह राजकुमार पुरुषोत्तम अपनी स्त्री सहित वंदना को गया तथा और भी नगर के लोग वंदना को गये सो स्तुति, नमस्कार आदि करने के अनन्तर श्रीगुरु के मुख से जीवादि तत्त्वों का उपदेश सुना। पश्चात् पुरुषोत्तम ने कहा-

हे स्वामी! मेरी यह मदनावती स्त्री किस कारण से ऐसी रूपवान और अति सुगंधित शरीर है? तब श्री गुरु ने मदनावती के पूर्व भवांतर कहे और सुगंधदशमी के व्रत का माहात्म्य बताया तो पुरुषोत्तम और मदनावती दोनों अपने भवांतर की कथा सुनकर संसार, देह भोगों से विरक्त हो दीक्षा लेकर तपश्चरण करने लगे।

इस प्रकार तपश्चरण के प्रभाव से मदनावती स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें स्वर्ग में देव हुई। वहाँ बाईस सागर सुख से आयु पूर्ण करके अंत समय चयकर मगध देश के वसुंधा नगरी में मकरकेतु राजा के यहाँ देवी पट्टरानी के कनककेतु नाम का सुन्दर गुणवान पुत्र हुआ।

पिता के दीक्षा ले लेने पर कितने काल राज्य करके वह भी अपने मकरध्वज पुत्र को राज्य दे दीक्षा लेकर तपश्चरण करके और देश-विदेशों में विहार करके अनेक जीवों को धर्म के मार्ग में लगाने लगे। इस प्रकार कितने काल कनककेतु मुनिनाथ को केवलज्ञान हुआ और बहुत काल तक उपदेशरूपी अमृत की वृष्टि करके शेष अघाति कर्मों का नाशकर परम पद मोक्ष को प्राप्त हुए।

इस प्रकार सुगंधदशमी का व्रत पालकर दुर्गन्धा भी अनुक्रम से मोक्ष को प्राप्त हुई तो भव्य जीव यदि यह व्रत पालें तो अवश्य ही उत्तमोत्तम सुखों को पावें।

(15) अनन्त चौदश व्रत विधि

अनन्तव्रते तु एकादश्यामुपवासः द्वादश्यामेकभक्तं त्रयोदश्यां काञ्जिकं चतुर्दश्यामुपवासस्तदभावे यथा शक्तिस्तथा कार्यम्। दिनहानिवृद्धौ स एव क्रमः स्मर्त्तव्यः।

अर्थ—अनन्त व्रत में भाद्रपद शुक्ला एकादशी को उपवास, द्वादशी को एकाशन, त्रयोदशी को कांजी– छाछ अथवा छाछ में जौ, बाजरा के आटे को मिलाकर महेरी– एक प्रकार की कढ़ी बनाकर लेना और चतुर्दशी को उपवास करना चाहिए। यदि इस विधि के अनुसार व्रत पालन करने की शक्ति न हो तो शक्ति के अनुसार व्रत करना चाहिए। तिथि-हानि या तिथि-वृद्धि होने पर पूर्वोक्त क्रम ही अवगत करना चाहिए अर्थात् तिथि-हानि में एक दिन पहले से और तिथि- वृद्धि में एक दिन अधिक व्रत करना होता है।

विवेचन—अनन्तव्रत भादों सुदी एकादशी से आरंभ किया जाता है। प्रथम एकादशी को उपवास कर द्वादशी को एकाशन करे अर्थात् मौन सहित स्वाद रहित प्रासुक भोजन ग्रहण करे, सात प्रकार के गृहस्थों के अन्तराय का पालन करे। त्रयोदशी को जिनाभिषेक, पूजन-पाठ के पश्चात् छाछ या छाछ में जौ, बाजरा के आटे से बनाई गई महेरी–एक प्रकार की कढ़ी का आहार ले। चतुर्दशी के दिन प्रोषध करे तथा सोना, चाँदी या रेशम-सूत का अनन्त बनाये, जिसमें चौदह गाँठ लगाये।

प्रथम गाँठ पर ऋषभनाथ से लेकर अनन्तनाथ तक चौदह तीर्थंकरों के नामों का उच्चारण, दूसरी गाँठ पर सिद्धपरमेष्ठी के चौदह[1] गुणों का चिन्तन, तीसरी पर उन चौदह मुनियों का नामोच्चारण जो मति-श्रुत-अवधिज्ञान के धारी हुए हैं, चौथी पर अर्हन्त भगवान के चौदह देवकृत अतिशयों का चिन्तन, पाँचवीं पर जिनवाणी के चौदह पूर्वों का चिन्तन, छठवीं पर चौदह गुणस्थानों का चिन्तन, सातवीं पर चौदह मार्गणाओं का स्वरूप, आठवीं पर चौदह जीवसमासों का स्वरूप, नौवीं पर गंगादि चौदह नदियों का उच्चारण, दसवीं पर चौदह राजू प्रमाण ऊँचे लोक का स्वरूप, ग्यारहवीं पर चक्रवर्ती के चौदह रत्नों[2] का, बारहवीं पर चौदह स्वरों का, तेरहवीं पर चौदह तिथियों का एवं चौदहवीं गाँठ पर आभ्यन्तर चौदह प्रकार के परिग्रह से रहित मुनियों का चिन्तन करना चाहिए। इस प्रकार अनन्त का निर्माण करना चाहिए।

पूजा करने की विधि यह है कि शुद्ध कोरा घड़ा लेकर उसका प्रक्षाल करना चाहिए। पश्चात् उस घड़े पर चंदन, केशर आदि सुगंधित वस्तुओं का लेप करना तथा उसके भीतर सोना, चाँदी या ताँबे के सिक्के रखकर सफेद वस्त्र से ढक देना चाहिए। घड़े पर पुष्पमालाएँ डालकर उसके ऊपर थाली प्रक्षाल करके रख देनी चाहिए। थाली में अनन्त व्रत का माड़ना और यंत्र लिखना, पश्चात् चौबीसी एवं पूर्वोक्त विधि से गाँठ दिया हुआ अनन्त विराजमान करना होता है। अनन्त का अभिषेक कर चंदनकेशर का लेप किया जाता है। पश्चात् आदिनाथ से लेकर अनन्तनाथ तक चौदह भगवानों की स्थापना यंत्र पर की जाती है। अष्ट द्रव्य से पूजा करने के उपरांत **'ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनन्तकेवलिने नमः'** इस मंत्र को 108 बार पढ़कर पुष्प चढ़ाना चाहिए अथवा पुष्पों से जाप करना चाहिए। पश्चात् **'ॐ झ्रीं क्ष्वीं हं स अमृतवाहिने नमः', अनेन मंत्रेण सुरभिमुद्रां धृत्वा उत्तमगन्धोदकप्रोक्षणं कुर्यात्'** अर्थात् **'ॐ झ्रीं क्ष्वीं हं स अमृतवाहिने नमः'** इस मंत्र को तीन बार पढ़कर सुरभि मुद्रा द्वारा सुगंधित जल से अनन्त का सिंचन करना चाहिए। अनन्तर चौदहों भगवानों की पूजा करनी चाहिए।

'ॐ ह्रीं अनन्ततीर्थंकराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उसा नमः सर्वशांतिं तुष्टिं सौभाग्यमायुरारोग्यैश्वर्यमष्ट-सिद्धिं कुरु कुरु सर्वविघ्नविनाशनं कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्र से प्रत्येक भगवान की पूजा के अनन्तर अर्घ्य

1. तपसिद्धि, विनयसिद्धि, संयमसिद्धि, चारित्रसिद्धि, श्रुताभ्यास, निश्चयात्मक भाव, ज्ञान, बल, दर्शन, वीर्य, सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व, अव्याबाधत्व।

2. गृहपति, सेनापति, शिल्पी, पुरोहित, स्त्री, हाथी, घोड़ा, चक्र, असि (तलवार), छत्र, दण्ड, मणि, चर्म, कांकिणी। कांकिणी रत्न की विशेषता यह होती है कि इससे कठोर से कठोर वस्तु पर भी लिखा जा सकता है, इससे सूर्य के प्रकाश से भी तेज प्रकाश निकलता है।

चढ़ाना चाहिए। **'ॐ ह्रीं हं स अनन्तकेवलीभगवान् धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा'** इस मंत्र को पढ़कर अनन्त पर चढ़ाये हुए पुष्पों की आशिका एवं **'ॐ ह्रीं अर्हन्नमः सर्वकर्मबंधनविमुक्ताय नमः स्वाहा'** इस मंत्र को पढ़कर शांति जल की आशिका लेनी चाहिए। इस व्रत में **'ॐ ह्रीं अर्हं हं स अनन्तकेवलिने नमः'** मंत्र का जाप करना चाहिए। पूर्णिमा को पूजन के पश्चात् अनन्त को गले या भुजा में धारण करे।

कथा—इसी जम्बूद्वीप के आर्यखण्डों में कौशल देश है। उसमें अयोध्या नगरी के पास पद्मखण्ड नाम का ग्राम था। उस ग्राम में सोमशर्मा नाम का एक अति दरिद्र ब्राह्मण अपनी सोमा नाम की स्त्री और बहुत सी पुत्रियों सहित रहता था। वह (ब्राह्मण) विद्याहीन और दरिद्र होने के कारण भिक्षा मांगकर उदर पोषण करता था, तो भी भरपेट खाने को नहीं पाता था।

तब एक दिन अपनी स्त्री की सम्मति से उसने सहकुटुम्ब प्रस्थान किया तो चलते समय मार्ग में शुभ शकुन हुए अर्थात् सौभाग्यवती स्त्रियाँ सन्मुख मिलीं। कुछ और आगे चला तो क्या देखता है कि हजारों नर-नारी किसी स्थान को जा रहे हैं, पूछने से विदित हुआ कि वे सब अनन्तनाथ भगवान के समवसरण में वंदना के लिए जा रहे हैं।

यह जानकर यह ब्राह्मण भी उनके पीछे हो लिया और समवसरण में गया। वहाँ प्रभु की वंदना कर तीन प्रदक्षिणा दी और नर कोठे में यथास्थान जा बैठा, जहाँ समवसरण में दिव्यध्वनि सुनकर उसे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हुई।

पश्चात् चारित्र का कथन सुनकर उसने जुआ, माँस, मद्य, वेश्यासेवन, शिकार, चोरी और परस्त्रीसेवन ये सात व्यसन त्याग किये। पंच उदुम्बर और तीन मकार त्याग ये अष्ट मूलगुण भी धारण किये। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और अतिशय लाभ इन पंच पापों का एकदेश त्यागरूप अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत भी ग्रहण किये। इस प्रकार सम्यक्त्व सहित बारह व्रत लिए। पश्चात् कहने लगा—

हे नाथ! मेरी दरिद्रता किस प्रकार से मिटे सो कृपा करके कहिए।

तब भगवान ने उसे अनन्त चौदस का व्रत करने को कहा। इस व्रत की विधि इस प्रकार है कि भादों सुदी 11 का उपवास कर 12 और 13 को एकाशन करे अर्थात् एकाशन से मौन सहित स्वादरहित प्रासुक भोजन करे, सात प्रकार गृहस्थों के अन्तराय पाले, पश्चात् चतुर्दशी के दिन उपवास करे तथा चारों दिन ब्रह्मचर्य रखे, भूमि पर शयन करे, व्यापार आदि गृहारंभ न करे। मोहादि रागद्वेष तथा क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्यादिक कषायों को छोड़े, सोना, चाँदी या रेशम, सूत आदि का अनन्त बनाकर, इसमें प्रत्येक गाँठ पर 14 गुणों का चिन्तवन करके 14 गांठ लगाना।

प्रथम गाँठ पर ऋषभनाथ भगवान से अनन्तनाथ भगवान तक 14 तीर्थंकरों के नाम उच्चारण करे।

दूसरी गाँठ पर सिद्ध परमेष्ठी के 14 गुण चिन्तवन करे। तीसरी पर 14 मुनि जो मति, श्रुत, अवधिज्ञान युक्त हो गये हैं उनके नाम उच्चारण करे।

चौथी पर केवली भगवान के 14 अतिशय केवलज्ञान कृत स्मरण करे। पाँचवी पर जिनवाणी में जो 14 पूर्व हैं उनका चिन्तवन करे।

छठवीं पर चौदह गुणस्थानों का विचार करे। सातवीं पर चौदह मार्गणाओं का स्वरूप विचारे।

आठवीं पर 14 जीवसमासों का विचार करे, नवमीं पर गंगादि 14 नदियों का नामोच्चारण करे। दशवीं पर तीन लोक जो 14 राजू प्रमाण ऊँचा है उसका विचार करे।

ग्यारहवीं पर चक्रवर्ती के चौदह रत्नों का चिन्तवन करे। बारहवीं पर 14 स्वर (अक्षर) का चिन्तवन करे। तेरहवीं पर चौदह तिथियों का विचार करे। चौदहवीं गाँठ पर मुनि के मुख्य 14 दोष टालकर जो आहार लेते हैं, उनका विचार करे। इस प्रकार 14 गाँठ लगाकर मेरु के ऊपर स्थापित प्रतिमा के सन्मुख इस अनन्त को रखकर अभिषेक करे। अनन्त प्रभु की पूजन करे फिर नीचे लिखा मंत्र 108 बार जपे—

मंत्र—(1) ॐ ह्रीं अर्हं हं स अनन्तकेवलिने नमः।

मंत्र—(2) ॐ नमोऽर्हते भगवते अणंताणंतसिज्झधम्मे भगवदो महाविज्जा-महाविज्जा अणंताणंतकेवलिए अणंतकेवलणाणे अणंतकेवलदंसणे अणुपुज्जवासणे अणंते अणंतागमकेवली स्वाहा।

इस प्रकार चारों दिन अभिषेक, जप और जागरण, भजन, पूजनादि करे। फिर पूनम के दिन उस अनन्त को दाहिनी भुजा पर या गले में बांधे।

पश्चात् उत्तम, मध्यम या जघन्य पात्रों में से जो समय पर मिल सकें उन्हें आहार आदि दान देकर आप पारणा करे। इस प्रकार 14 वर्ष तक करे। पश्चात् उद्यापन करे, तब 14 प्रकार के उपकरण मंदिर में देवे जैसे-शास्त्र, चमर, छत्र, चौकी आदि। चार प्रकार संघों को आमंत्रण करके धर्म की प्रभावना करे। यदि उद्यापन की शक्ति न होवे तो दूना व्रत करे।

इस प्रकार श्रीमुख से व्रत की विधि और उत्तम फल सुनकर उन ब्राह्मण ने स्त्री सहित यह व्रत लिया तथा और भी बहुत लोगों ने यह व्रत लिया।

पश्चात् नमस्कार करके वह ब्राह्मण अपने ग्राम में आया और भाव सहित 14 वर्ष व्रत को विधियुक्त पालन करके उद्यापन किया। इससे दिनोंदिन उसकी बढ़ती होने लगी। इसके साथ रहने से और भी बहुत लोग धर्म-मार्ग में लग गये क्योंकि लोग जब उसकी इस प्रकार बढ़ती देखकर उससे इसका कारण पूछते तो वह अनन्त व्रत आदि व्रतों की महिमा और जिनभाषित धर्म के स्वरूप का कथन कह सुनाता। इससे बहुत लोगों की श्रद्धा उस पर हो जाती और वे उसे गुरु मानने लगते।

इस प्रकार वह ब्राह्मण भले प्रकार सांसारिक सुखों को भोगकर अन्त में सन्यास मरण कर स्वर्ग में देव हुआ। उसकी स्त्री भी समाधि से मरकर उसी स्वर्ग में उसकी देवी हुई। वहाँ अपनी पूर्व-पर्याय का अवधि से विचारकर धर्मध्यान सेवन करके वहाँ से चये, सो वह ब्राह्मण का जीव अनन्तवीर्य नाम का राजा हुआ और ब्राह्मणी उसकी पट्टरानी हुई।

ये दोनों दीक्षा लेकर अनन्तवीर्य तो इसी भव से मोक्ष को प्राप्त हुए और श्रीमती स्त्रीलिंग छेदकर अच्युत स्वर्ग में देव हुई। वहाँ से चयकर मध्यलोक में मनुष्य भव धारण कर संयम ले मोक्ष जावेगी।

इस प्रकार एक दरिद्र ब्राह्मणी अनन्त व्रत पालकर सद्गति को पाकर उत्तमोत्तम गति को प्राप्त हुई। यदि अन्य भव्य जीव यह व्रत पालेंगे तो वे भी सद्गति पावेंगे।

(16) रत्नत्रय व्रत विधि

रत्नत्रयं तु भाद्रपदचैत्रमाघशुक्लपक्षे च द्वादश्यां धारणं चैकभक्तं च त्रयोदश्यादिपूर्णिमान्तमष्टमं कार्यम्, तदभावे यथाशक्ति काञ्जिकादिकं, दिनवृद्धौ, तदधिकतया कार्यम्, दिनहानौ तु पूर्वदिनमारभ्य तदन्तं कार्यमिति पूर्वक्रमो ज्ञेयः।

अर्थ– रत्नत्रय व्रत भाद्रपद, चैत्र और माघ मास में किया जाता है। इन महीनों के शुक्लपक्ष में द्वादशी तिथि को व्रत धारण करना चाहिए तथा एकाशन करना चाहिए। त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा का उपवास करना, तीन दिन का उपवास करने की शक्ति न हो तो कांजी आदि लेना चाहिए। रत्नत्रय व्रत के दिनों में किसी तिथि की वृद्धि हो तो एक दिन अधिक व्रत करना एवं एक तिथि की हानि होने पर एक दिन पहले से लेकर व्रत समाप्ति पर्यंत उपवास करना चाहिए। यहाँ पर भी तिथि हानि और तिथि वृद्धि में पूर्व क्रम ही समझना चाहिए।

विवेचन– रत्नत्रय व्रत के लिए सर्वप्रथम द्वादशी को शुद्ध भाव से स्नानादि क्रिया करके स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर जिनेन्द्र भगवान का पूजन-अभिषेक करे। द्वादशी को इस व्रत की धारणा और प्रतिपदा को पारणा होती है। अतः द्वादशी को एकाशन के पश्चात् चारों प्रकार के आहार का त्याग कर, विकथा और कषायों का त्याग करे। त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा को प्रोषध तथा प्रतिपदा को जिनाभिषेकादि के अनन्तर किसी अतिथि या किसी

दुःखित-बुभुक्षित को भोजन कराकर एक बार आहार ग्रहण करे। अपने घर में ही अथवा चैत्यालय में जिनबिम्ब के निकट रत्नत्रय यंत्र की भी स्थापना करे।

द्वादशी से लेकर प्रतिपदा तक पाँचों ही दिनों को विशेषरूप से धर्मध्यानपूर्वक व्यतीत करें। प्रतिदिन त्रैकालिक सामायिक और रत्नत्रय विधान करना चाहिए। प्रतिदिन प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल में '**ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः**' इस मंत्र का जाप करना चाहिए। इस व्रत को 13 वर्ष तक पालने के उपरांत उद्यापन कर देना चाहिए। यह व्रत की उत्कृष्ट विधि है, इतनी शक्ति न हो तो बेला करे तथा आठ वर्ष व्रत करके उद्यापन कर देना चाहिए। यह व्रत की मध्यम विधि है। यदि इस मध्यम विधि को सम्पन्न करने की भी शक्ति न हो तो त्रयोदशी और पूर्णिमा को एकाशन एवं चतुर्दशी को प्रोषध करना चाहिए। यह जघन्य विधि है, इस विधि से किये गये व्रत का तीन या पाँच वर्ष के बाद उद्यापन कर देना चाहिए। इस व्रत में पाँच दिन तक शीलव्रत का पालन करना आवश्यक है।

कथा—जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में कक्ष नाम का एक देश और वीतशोकपुर नाम का एक नगर है। वहाँ एक अत्यन्त पुण्यवान वैश्रवण नाम का राजा रहता था, जो कि पुत्रवत् अपनी प्रजा का पालन करता था।

एक दिन वह (वैश्रवण) राजा बसंत ऋतु में क्रीड़ा के निमित्त उद्यान में यत्र-तत्र सानंद विचर रहा था कि इतने ही में उसकी दृष्टि एक शिला पर विराजमान ध्यानस्थ श्री मुनिराज पर पड़ी। सो तुरंत ही हर्षित होकर वह राजा श्री मुनिराज के समीप आया और विनययुक्त नमस्कार करके बैठ गया। श्री मुनिराज जब ध्यान कर चुके तो उन्होंने धर्मवृद्धि कहकर आशीर्वाद दिया और इस प्रकार धर्मोपदेश देने लगे—

यह जीव अनादिकाल से मोहकर्मवश मिथ्या श्रद्धान, ज्ञान और आचरण करता हुआ पुनः-पुनः कर्मबंध करता और संसार में जन्म-मरणादि अनेक प्रकार दुःखों को भोगता है इसलिए जब तक इस रत्नत्रय (जो कि आत्मा का निज स्वभाव है) की प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक यह (जीव) दुःखों से छूटकर निराकुलता स्वरूप सच्चे सुख व शांति की प्राप्ति नहीं हो सकती, जो कि वास्तव में इस जीव को हितकारी है। इसलिए भगवान ने ''सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः'' अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को मोक्षमार्ग कहा है और सच्चा सुख मोक्ष अवस्था ही में मिलता है, इसलिए मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति करना मुमुक्षु जीवों का परम कर्तव्य है।

(1) पुद्‌गलादि परद्रव्यों से भिन्न निज स्वरूप का श्रद्धान (स्वानुभव) तथा उसके कारणस्वरूप सप्त तत्त्वों और सत्यार्थ देव, गुरु व शास्त्र का श्रद्धान होना सो सम्यग्दर्शन है। यह सम्यग्दर्शन अष्ट अंग सहित और 25 मल दोष रहित धारण करना चाहिए अर्थात् जिन भगवान के कहे हुए वचनों में शंका नहीं करना, संसार के विषयों की अभिलाषा न करना, मुनि आदि साधर्मियों के मलिन शरीर को देखकर ग्लानि न करना, धर्मगुरु के सत्यार्थ तत्त्वों की यथार्थ पहचान करना अर्थात् कुगुरु (रागीद्वेषी भेषी परिग्रही साधु गृहस्थ) कुदेव (रागीद्वेषी भयंकर देव) कुधर्म (हिंसापोषक क्रियाओं) की प्रशंसा भी न करना, धर्म पर लगते हुए मिथ्या आक्षेपों को दूर करना और अपनी बड़ाई व परनिंदा का त्याग करना, सम्यक् श्रद्धान और चारित्र से डिगते हुए प्राणियों को धर्मोपदेश तथा द्रव्यादि देकर किसी प्रकार स्थिर करना और धर्म और धर्मात्माओं में निष्कपट भाव से प्रेम करना और सर्वोपरि सर्व हितकारी श्री दिगम्बर जैनाचार्यों द्वारा बताये हुए श्री पवित्र जिनधर्म का यथार्थ प्रभाव सर्वोपरि प्रकट कर देना ये ही अष्ट अंग हैं।

इनसे विपरीत शंकादि आठ दोष, 1. जाति 2. कुल 3. बल 4. ऐश्वर्य 5. धन 6. रूप 7. विद्या और 8. तप इन आठ के आश्रित हो गर्व करना सो आठ मद, कुगुरु, कुदेव, कुधर्म और कुगुरु सेवक, कुदेव आराधक और कुधर्म धारक, ये छः अनायतन और देवमूढ़ता, लोकमूढ़ता पाखण्ड मूढ़ता इस प्रकार ये पच्चीस सम्यक्त्व के दूषण हैं। इससे सम्यक्त्व का एकदेश घात होता है इसलिए इन्हें त्याग देना चाहिए।

(2) पदार्थों के यथार्थ स्वरूप को संशय, विपर्यय व अनध्यवसाय आदि दोषों से रहित जानना सो सम्यग्ज्ञान है।

(3) आत्मा की निज परिणति (जो वीतराग रूप है) में ही रमण करता है अर्थात् रागद्वेषादि विभाव भावों, क्रोधादि कषायों से आत्मा को अलग करने व बचाने के लिए व्रत, संयम, तपादिक करना सो सम्यक्चारित्र है। इस प्रकार इस रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग को समझकर और उसे स्वशक्ति अनुसार धारण करके जो कोई भव्यजीव बाह्य तपाचरण धारण करता है वही सच्चे (मोक्ष) सुख को प्राप्त होता है।

इस प्रकार रत्नत्रय का स्वरूप कहकर अब बाह्य व्रत पालने की विधि कहते हैं–

भादो, माघ और चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में, तेरस, चौदस और पूनम इस प्रकार तीन दिन यह व्रत किया जाता है और 12 को व्रत की धारणा तथा प्रतिपदा को पारणा किया जाता है अर्थात् 12 को श्री जिन भगवान की पूजनाभिषेक करके एकाशन (एकभुक्त) करे और फिर मध्यान्हकाल की सामायिक करके उसी समय से चारों प्रकार के (खाद्य, स्वाद्य, लेह्य और पेय) आहार तथा विकथाओं और सब प्रकार के आरंभों का त्याग करें। इस प्रकार तेरस, चौदस और पूनम तीन प्रोषध दिन (प्रोषध उपवास) करे और प्रतिपदा (पड़वा) को श्री जिनदेव के अभिषेक पूजन के अनन्तर सामायिक करके तथा किसी अतिथि वा दुःखित–भूखित को भोजन कराकर भोजन करे, इस दिन भी एकभुक्त ही करना चाहिए।

इन व्रतों के पाँचों दिनों में समस्त सावद्य (पाप बढ़ाने वाले) आरंभ और विशेष परिग्रह का त्याग करके अपना समय सामायिक, पूजा, स्वाध्यायादि धर्मध्यान में बितावे। इस प्रकार यह व्रत 12 वर्ष तक करके पश्चात् उद्यापन करे और यदि उद्यापन की शक्ति न होवे तो दूना व्रत करे, यह उत्कृष्ट व्रत की विधि है।

यदि इतनी भी शक्ति न होवे तो बेला करे या कांजी आहार करे तथा आठ वर्ष करके उद्यापन करे यह मध्यम विधि है और जो इतनी शक्ति न होवे तो एकासना करके करे और तीन ही वर्ष या पाँच वर्ष तक करके उद्यापन करे, यह जघन्य विधि है। सो स्वशक्ति अनुसार व्रत धारण कर पालन करे। नित्य प्रतिदिन में त्रिकाल सामायिक तथा रत्नत्रय पूजन विधान करे और तीन बार इस व्रत का जाप्य जपे अर्थात् '**ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः**', इस मंत्र की 108 बार जाप जपे, तब एक जाप्य होती है।

इस प्रकार व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे अर्थात् श्री जिनमंदिर में जाकर महोत्सव करे। छत्र, चमर, झारी, कलश, दर्पण, पंखा, ध्वजा और ठमनी आदि मंगल द्रव्य चढ़ावे, चन्दोवा बंधावे और कम से कम तीन शास्त्र मंदिर में पधरावे, प्रतिष्ठा करे, उद्यापन के हर्ष में विद्यादान करे, पाठशाला, छात्रावास, अनाथालय, पुस्तकालय आदि संस्थाएं ध्रौव्यरूप से स्थापित करे और निरन्तर रत्नत्रय की भावना भाता रहे।

इस प्रकार श्री मुनिराज ने राजा वैश्रवण को उपदेश दिया सो राजा ने सुनकर श्रद्धापूर्वक इस व्रत को यथाविधि पालन कर किया, पूर्ण अवधि होने पर उत्साह सहित उद्यापन किया।

पश्चात् एक दिन वह राजा एक बहुत बड़े बड़ के वृक्ष को जड़ से उखड़ा हुआ देखकर वैराग्य को प्राप्त हुआ और दीक्षा लेकर अंत समय समाधिमरण कर अपराजित नामक विमान में अहमिन्द्र हुआ और फिर वहाँ से चयकर मिथिलापुरी में महाराजा कुंभराय के यहाँ, सुप्रभावती रानी के गर्भ से मल्लिनाथ तीर्थंकर हुए सो पंचकल्याणक को प्राप्त होकर अनेक भव्य जीवों को मोक्षमार्ग में लगाकर आप परम धाम (मोक्ष) को प्राप्त हुए।

इस प्रकार वैश्रवण राजा ने व्रत पालन कर स्वर्ग के, मनुष्यों के सुख को प्राप्त कर मोक्षपद प्राप्त किया और सदा के लिए जन्म-मरणादि दुखों से छुटकारा पाकर अविनाशी स्वाधीन सुखों को प्राप्त हुए। इसलिए जो नर-नारी मन, वचन, काय से इस व्रत की भावना भाते हैं अर्थात् रत्नत्रय को धारण करते हैं, वे भी राजा वैश्रवण के समान स्वर्गादि मोक्षसुख को प्राप्त होते हैं।

(17) मुकुटसप्तमी व्रत का स्वरूप

मुकुटसप्तमी तु श्रावणशुक्लसप्तम्येव ग्राह्या, नान्या तस्याम् आदिनाथस्य वा पार्श्वनाथस्य मुनिसुव्रतस्य च पूजां विधाय कण्ठे मालारोपः। शीर्षमुकुटश्च कथितभागमे।

मुकुट सप्तमी व्रत

अर्थ—श्रावणशुक्ला सप्तमी को ही मुकुट सप्तमी कहा जाता है, अन्य किसी महीने की सप्तमी का नाम मुकुट सप्तमी नहीं है। इसमें आदिनाथ अथवा पार्श्वनाथ और मुनिसुव्रतनाथ का पूजन कर जयमाला को भगवान का आशीर्वाद समझकर गले में धारण करना चाहिए। इस व्रत को आगम में शीर्षमुकुट सप्तमी व्रत भी कहा गया है।

विवेचन—आगम में श्रावण शुक्ला सप्तमी और भाद्रपद शुक्ला सप्तमी इन दोनों तिथियों के व्रत का विधान मिलता है। श्रावण शुक्ला सप्तमी तिथि के व्रत को **मुकुटसप्तमी या शीर्षमुकुट सप्तमी** कहा गया है। इस तिथि को व्रत करने वाले को षष्ठी तिथि से ही संयम ग्रहण करना चाहिए। षष्ठी तिथि को प्रातःकाल भगवान की पूजा, अभिषेक करके एकाशन करना चाहिए, मध्याह्नकाल के सामायिक के पश्चात् भगवान की प्रतिमा या गुरु के सामने जाकर संयमपूर्वक व्रत करने का संकल्प करना चाहिए।चारों प्रकार के आहार का त्याग सोलह प्रहर के लिए भोजन के समय ही कर देना चाहिए।

सप्तमी को प्रातःकाल सामायिक करने के पश्चात् नित्यक्रियाओं से निवृत्त होकर पूजा-पाठ, स्वाध्याय, अभिषेक आदि क्रियाओं को करना चाहिए। पार्श्वनाथ और मुनिसुव्रतनाथ की पूजा करने के उपरांत जयमाला (फूलमाला) को अपने गले में धारण करना चाहिए। मध्याह्न में पुनः सामायिक करना चाहिए। अपराह्न में चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। संध्याकाल में सामायिक, आत्मचिंतन और देवदर्शन आदि क्रियाओं को सम्पन्न करना चाहिए। तीनों बार की सामायिक क्रियाओं के अनंतर ''**ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय नमः, ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथाय नमः**'' इन दोनों मंत्रों का जाप करना आवश्यक है। इस प्रकार मंत्र का रात में भी एक जाप करना चाहिए। अष्टमी को पूजन, अभिषेक और स्वाध्याय के अनंतर उपर्युक्त मंत्रों का जाप कर एकाशन करना चाहिए। इस प्रकार सात वर्षों तक मुकुटसप्तमी व्रत किया जाता है, पश्चात् उद्यापन कर व्रत की समाप्ति करनी चाहिए।

कथा– जम्बूद्वीप के कुरुजांगल देश में हस्तिनापुर नगर है। वहाँ के राजा विजयसेन की रानी विजयावती से मुकुटशेखरी और विधिशेखरी नाम की दो कन्याएँ थीं। इन दोनों बहनों में परस्पर ऐसी प्रीति थी कि एक दूसरी के बिना क्षण भर भी नहीं रह सकती थीं। निदान राजा ने ये दोनों कन्याएँ अयोध्या के राजपुत्र त्रिलोकमणि को ब्याह दी।

एक दिन बुद्धिसागर और सुबुद्धिसागर नाम के दो चारणऋषि आहार के निमित्त नगर में आये। सो राजा ने उन्हें विधिपूर्वक पड़गाहकर आहार दिया और धर्मोपदेश श्रवण करने के अनंतर राजा ने पूछा-हे नाथ! मेरी इन दोनों पुत्रियों में परस्पर इतना विशेष प्रेम होने का कारण क्या है?

तब श्री ऋषिराज बोले– इसी नगर में धनदत्त नामक एक सेठ था, उनके जिनवती नाम की एक कन्या थी और वहीं एक माली की वनमती कन्या भी थी सो इन दोनों कन्याओं ने मुनि के द्वारा धर्मोपदेश सुनकर मुकुटसप्तमी व्रत ग्रहण किया था। एक समय ये दोनों कन्याएँ उद्यान में खेल रही थीं (मनोरंजन कर रही थीं) कि इन्हें सर्प ने काट खाया सो नवकार मंत्र का आराधन करके देवी हुईं और वहाँ से चयकर तुम्हारी पुत्री हुई हैं। सो इनका यह स्नेह भवांतर से चला आ रहा है। इस प्रकार भवांतर की कथा सुनकर दोनों कन्याओं ने प्रथम श्रावक के पंच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत इस प्रकार बारह व्रत लिए और पुनः मुकुटसप्तमी व्रत धारण किया। सो प्रतिवर्ष श्रावण सुदी सप्तमी को प्रोषध करतीं और '**ॐ ह्रीं श्री वृषभतीर्थंकरेभ्यो नमः**' इस मंत्र का जाप्य करतीं तथा अष्टद्रव्य से श्री जिनालय में जाकर भाव सहित जिनेन्द्र देव की पूजा करती थीं।

इस प्रकार यह व्रत उन्होंने सात वर्ष तक विधिपूर्वक किया पश्चात् विधिपूर्वक उद्यापन करके सात-सात उपकरण जिनालय में भेंट किये। इस प्रकार उन्होंने व्रत पूर्ण किया और अंत में समाधिमरण करके सोलहवें स्वर्ग में स्त्रीलिंग छेदकर इंद्र और प्रतीन्द्र हुईं। वहाँ पर देवोचित सुख भोगे और धर्मध्यान में विशेष समय बिताया।

पश्चात् वहाँ से चयकर ये दोनों इन्द्र-प्रतीन्द्र मनुष्य होकर कर्म काट कर मोक्ष जावेंगे। इस प्रकार सेठ जी तथा माली की कन्याओं ने व्रत (मुकुटसप्तमी) पालकर स्वर्गों के अपूर्व सुख भोगे। अब वहाँ से चयकर मनुष्य हो मोक्ष जावेंगे। धन्य है! जो और भव्य जीव, भाव सहित यह व्रत धारण करें, तो वे भी इसी प्रकार सुखों को प्राप्त होवेंगे।

(18) सप्तपरमस्थान व्रत विधि

सज्जातिः सद्गार्हस्थ्यं पारिव्राज्यं सुरेन्द्रता।
साम्राज्यं परमार्हन्त्यं परिनिर्वाणमित्यपि।।

सज्जाति, सद्गार्हस्थ्य, पारिव्राज्य, सुरेन्द्रता, साम्राज्य, आर्हन्त्य और निर्वाण ये सात परम– सर्वोत्तम स्थान माने गये हैं। माता-पिता के वंश परम्परा की शुद्धि सज्जाति है। श्रावकाचार क्रियायुक्त श्रावक सद्गृहस्थ है। रत्नत्रय की पूर्ति हेतु जैनेश्वरी दीक्षा लेना पारिव्राज्य स्थान है। पंडितमरण से समाधिपूर्वक मरण कर देवेन्द्र होना सुरेन्द्रत्व परम स्थान है। वहाँ से च्युत होकर चक्रवर्ती के वैभव को प्राप्त करना साम्राज्य स्थान है। तीर्थंकर पद को प्राप्त करना आर्हन्त्य स्थान है। अनंतर संपूर्ण कर्मों से छूटकर सिद्धपद प्राप्त कर लेना निर्वाण परम स्थान है।

यह व्रत श्रावण सुदी प्रतिपदा से श्रावण सुदी सप्तमी तक किया जाता है। व्रत के दिन अभिषेक, जाप्य, कथा श्रवण, दान आदि कार्यों को करना चाहिए। सातों दिन एक ही वस्तु का सेवन किया जाता है। विधिवत् व्रत करने के उपरांत उद्यापन किया जाता है।

इस व्रत का फल उत्तम जाति, ऐश्वर्य, गार्हस्थ्य, उत्तम तप, इन्द्र पद, चक्रवर्ती पद, अर्हंत पद की प्राप्ति होती है। संसार में निर्वाण ही श्रेष्ठ पद है। इस व्रत से यह सातवाँ परमपद भी प्राप्त हो जाता है। यह व्रत लौकिक अभ्युदय के साथ-साथ निर्वाण पद को भी देने वाला है।

प्रतिपदा से लेकर सप्तमी तक निम्नलिखित जाप्य क्रम से करना चाहिए।

1. **ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्री ऋषभजिनेन्द्राय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं अर्हं सद्गृहस्थपरमस्थानप्राप्तये श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रपरमस्थानप्राप्तये श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमस्थानप्राप्तये श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः।**

व्रत के लिए उत्तम तो उपवास ही है, यदि शक्ति न हो तो एक वस्तु का भोजन करना चाहिए। जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक-पूजन करके सप्तपरमस्थान पूजन करना चाहिए। रात्रि में जागरण आदि करते हुए धर्मध्यान में सारा समय व्यतीत करना चाहिए।

कथा– जम्बूद्वीप के अन्तर्गत इसी भरतक्षेत्र में कांभोज नाम का एक देश है। उसमें भूमितिलक नगर है। वहाँ पर देवपाल राजा राज्य करते थे, उनकी रानी का नाम लक्ष्मीमती था। यहाँ के राजश्रेष्ठी धनदत्त थे और उनकी सेठानी का नाम धनश्री था। एक समय जिनमंदिर में पूजन करके सेठ दम्पती ज्ञानसागर मुनि के पास पहुँचे, उन्हें नमोस्तु-वंदना आदि करके धर्मोपदेश सुना। पुनः बोले– हे भगवन्! मुझे संसार समुद्र से पार होने के

लिए कोई एक व्रत दीजिए। मुनिराज ने सप्तपरमस्थान व्रत की विधि समझाकर व्रत दिया। पुनः वे बोले– हे गुरुदेव! पूर्व में यह किसने किया है? मुनिराज ने इस पर एक कथा सुनाई।

इसी भरतक्षेत्र के अन्तर्गत नेपाल देश में ललितपुर नामक एक नगर है। वहाँ पर भूपाल नामक राजा की रानी का नाम विशाला था। संतान न होने से ये हमेशा खिन्न रहा करते थे। एक समय देशभूषण महामुनि के दर्शन करके धर्मोपदेश सुना। पुनः प्रश्न किया– हे भगवन्! हमारे पुत्र संतान होगी या नहीं? महामुनि ने कहा– तुम्हारे महापुण्यशाली एक पुत्र होने वाला है। राजा ने कहा– भगवन्! उसने पूर्व में क्या पुण्य किये हैं? मुनिनाथ ने कहा– सुनो......

हस्तिनापुर नगर में रुद्रदत्त नाम का एक धर्मात्मा सेठ रहता था। उसकी भार्या का नाम रुद्रदत्ता था। इनके सोलह पुत्र थे। सेठ ने पुत्रों का विवाह करके प्रत्येक को 18-18 करोड़ द्रव्य दिया और अपनी पत्नी को दान-पूजन आदि के लिए 8 करोड़ द्रव्य दे दिया। आप स्वयं 32 करोड़ द्रव्य से जिनमंदिर, जिनप्रतिमाएं बनवाकर प्रतिष्ठा करवाईं, तीर्थयात्रा, ग्रंथलेखन, नित्य पूजन और जीर्णोद्धार आदि में सब द्रव्य खर्च करके आप जैनेश्वरी दीक्षा लेकर अंत में मरणकर सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र हो गये।

इधर इनके सोलह पुत्रों में से सातवाँ पुत्र नागसेन था। उसने अपने धन को सप्तव्यसनों में लगाकर दरिद्रावस्था प्राप्त कर ली। पुनः मर्कट वैराग्य से दीक्षित हो गया। फिर भी संयम से भ्रष्ट होकर संघ विरोधी, कलहप्रिय, स्वेच्छाचारी हो गया। आर्त-रौद्रध्यान से मरकर चौथे नरक में चला गया, वहाँ से आकर कुत्ता हुआ, जिसके सारे शरीर में कीड़े पड़ गये और बहुत ही दुर्गन्धि आती थी। कदाचित् पाप के कुछ मन्द होने से हस्तिनापुर में व्यास नाम के मिथ्यातापसी की विमलगंगा पत्नी से जन्म लेकर मनोहर नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसी शहर के कुबेरकान्त सेठ और कनकमाला सेठानी के धनदेव नाम का एक पुत्र था। इन दोनों में मित्रता हो गई। दोनों एक गुरु के पास जैन शास्त्रों का अभ्यास करने लगे।

एक दिन नगर के नन्दनवन में ज्ञानसागर नामक दिगम्बर मुनि आये हुए थे। इनके पास पहुँचकर दोनों यथोचित वंदना भक्ति करके वहाँ उपदेश सुनने लगे। मुनिराज सप्तपरमस्थान का महत्व और उसके व्रत की विधि समझा रहे थे। उस समय वहाँ पर बहुतों ने यह व्रत ग्रहण किया। तापसी पुत्र मनोहर ने भी यह व्रत ले लिया और उसका विधिवत् पालन किया। इस व्रत के फल से वही जीव तुम्हारी भार्या के गर्भ में आने वाला है।

कुछ दिन बाद विशालारानी ने पुत्र रत्न को जन्म दिया, उसका 'श्रीपाल' नामकरण हुआ। श्रीपाल ने अपने जीवन में पुनरपि इसी व्रत का पालन किया। आगे व्रत के माहात्म्य से सप्तपरमस्थान के ऐश्वर्य को प्राप्त करते हुए अन्त में निर्वाण पद को प्राप्त कर लिया।

(19) अक्षय (फल) दशमी व्रत कथा

ॐकार हृदयं धरूँ, सरस्वति को शिरनाय।
अक्षयदशमी व्रत कथा, भाषा कहूँ बनाय।।1।।

इसी राजगृही नगर में मेघनाद नाम के राजा की रानी पृथ्वीदेवी अत्यन्त रूप और शीलवान थी, परन्तु कोई पूर्व पाप के उदय से पुत्रविहीन होने से सदा दुःखी रहती थी। एक दिन अति आतुर हो वह कहनी लगी– हे भर्तार! क्या कभी मैं कुलमण्डनस्वरूप बालक को अपनी गोद में खिलाऊँगी? क्या कभी ऐसा शुभोदय होगा कि जब मैं पुत्रवती कहाऊँगी?

अहा! देखो, संसार में स्त्रियों को पुत्र की कितनी अभिलाषा होती है? वे इस ही इच्छा से दिन-रात व्याकुल रहती हैं, अनेकों उपचार करती हैं और कितनी ही तो (जिन्हें धर्म का ज्ञान नहीं है) अपना कुलाचरण भी छोड़कर धर्म तक से गिर जाती हैं। रानी की बात सुनकर राजा ने कहा– प्रिये! चिन्ता न करो, पुण्य के उदय से

सब कुछ होता है। हम लोगों ने पूर्व जन्मों में कोई ऐसा ही कर्म किया होगा कि जिसके कारण निःसंतान हो रहे हैं। इस प्रकार वे राजा-रानी परस्पर धैर्य बंधाते कालक्षेप करते थे।

एक दिन उनके शुभोदय से श्री शुभंकर नामक मुनिराज का शुभागमन हुआ, सो राजा-रानी उनके दर्शनार्थ गये। उनकी वंदना करने के अनन्तर धर्म श्रवण करके राजा ने पूछा–

हे प्रभु! आप त्रिकाल ज्ञानी हैं, आपको सब पदार्थ दर्पणवत् प्रतिभाषित होते हैं, सो कृपाकर यह बताइए कि किस कारण से मेरे घर पुत्र नहीं होता है? तब श्रीगुरु ने भवांतर की कथा विचार कर कहा– हे राजा! पूर्व जन्म में इस तुम्हारी रानी ने मुनिदान में अन्तराय किया था, इसी कारण से तुम्हारे पुत्र की अन्तराय हो रही है। तब राजा ने कहा– प्रभु! कृपया कोई यत्न बताइए कि जिससे इस पापकर्म का अन्त आवे।

यह सुनकर श्री मुनिराज बोले– वत्स! तुम अक्षय (फल) दशमी व्रत करो। श्रावण सुदी 10 को प्रोषध करके श्री जिनमंदिर में जाकर भाव सहित पूजन-विधान करो, पंचामृताभिषेक करो और '**ॐ नमो ऋषभाय**' इस मंत्र का जाप्य करो। यह व्रत दश वर्ष तक करके उद्यापन करो, दश-दश उपकरण श्री मंदिर जी में भेंट करो, दश शास्त्र लिखकर (छपाकर) साधर्मियों को भेंट करो और भी दीनदुःखी जीवों पर दया दान करो, विद्यादान देवो, अनाथों की रक्षा करो, जिससे शीघ्र ही पाप का नाश हो, सातिशय पुण्य लाभ हो, इत्यादि विधि सुनकर राजा-रानी घर वापस आए और क्रम-क्रम से विधिपूर्वक व्रत पालन करके उद्यापन किया।

सो इस व्रत के माहात्म्य तथा पूर्व पाप के क्षय होने से राजा को सात पुत्र और पाँच कन्याएँ हुईं। इस प्रकार कितने ही काल तक राजा दयाधर्म का पालन करते हुए मनुष्योचित सुख भोगते रहे, पश्चात् समाधिमरण करके पहिले स्वर्ग में देव हुए और वहाँ से चयकर मनुष्य भव लेकर मोक्षपद प्राप्त किया। इस प्रकार और भव्य जीव यदि श्रद्धा सहित यह व्रत पालेंगे तो उन्हें भी उत्तमोत्तम सुखों की प्राप्ति होवेगी।

(20) मंगल त्रयोदशी (धनतेरस) व्रत विधि एवं कथा

व्रतविधि– कार्तिक कृष्णा 12 के दिन इन व्रतिकों को एक भुक्ति करना चाहिए। त्रयोदशी को प्रातःकाल में शुचिजल से अभ्यंग स्नान (शिर से स्नान) करके नवधौतवस्त्र धारण करना चाहिए। सब पूजाद्रव्य हाथ में लेकर मंदिर में जाकर जिनालय की तीन प्रदक्षिणा देकर ईर्यापथशुद्धिपूर्वक श्रीजिनेन्द्र की भक्ति से वंदना करना, वेदी पर श्री विमलनाथ तीर्थंकर की प्रतिमा पातालयक्ष और वैरोटी यक्षी सह स्थापित करके उनका पंचामृत से अभिषेक करना। एक पाटे पर क्रम से 13 पान रखकर उस पर अक्षत, फल, फूल रखकर श्री आदिनाथ से विमलनाथ तक 13 तीर्थंकरों की अष्टद्रव्य से अर्चना करना। श्रुत और गणधर उनकी पूजा करके यक्ष-यक्षी की अर्चना करना। क्षेत्रपाल को तैलाभिषेक करके सिंदूर लगाना। उसके आगे पाँच पान रखकर इस पर अक्षत, फल, फूल रखकर गंध, पुष्प की माला, वस्त्र, खोपरे की कटोरी (गरी का गोला आधा लेना), गुड़, लड्डू, वगैरह अर्पण करना। अष्टक, स्तोत्र, जयमाला क्रम से बोलकर यथाविधि अर्चन करना चाहिए। तेल की पाँच-पाँच पूरन पूरी के पाँच नैवेद्य चढ़ाना। बाद में ''**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विमलनाथ तीर्थंकराय पाताल यक्ष वैरोटी यक्षी सहिताय नमः स्वाहा।**'' इस मंत्र से 108 पुष्प चढ़ाना। णमोकार मंत्र का 108 बार जप करना, यह व्रत कथा पढ़ना। एक थाली में तेरह पान रखकर उस पर अष्टद्रव्य, श्रीफल रखना और महार्घ्य से जिनालय की तीन प्रदक्षिणा करके मंगल आरती उतारना। इस दिन उपवास करके ब्रह्मचर्यपूर्वक धर्मध्यान में समय बिताना। सत्पात्र को आहारदान देना। उपवास करने की शक्ति नहीं है तो तीन वस्तु का नियम लेकर एकभुक्ति करना। इस प्रकार 13 मास तक उस तिथी में पूजा करके अंत में उसका उद्यापन करना। उस समय श्री विमलनाथ तीर्थंकर विधान महाभिषेक से करना। चतुःसंघ को चतुर्विध दान देना। ऐसी इस व्रत की पूरी विधि है।

कथा—इस जंबूद्वीप में भरतक्षेत्र में आर्यखण्ड है। उसमें मालव देश में उज्जयिनी नामक एक रमणीय पट्टण है। वहाँ बहुत दिन के पहले गुणमाल नामक गरीब परन्तु सदाचारी श्रावक रहता था। उसकी गुणवती नाम की एक लावण्यवती और सुशीला धर्मपत्नी थी। उनके गुणवंत नामक एक सुन्दर सद्गुणी पुत्र था। इनको दुर्दैव से दरिद्रावस्था प्राप्त होने से वे मजदूरी से गुजारा करते थे।

नगर में बार-बार मुनीश्वर आहार के लिए आते थे। उनको बहुत श्रावक-श्राविकाएँ बड़ी भक्ति से आहारदान देते थे। यह देखकर उस गुणपाल श्रावक के मन में मुनीश्वर को आहारदान देने की इच्छा होती थी। मगर दान देने की ताकत न होने से वह चिंताकुल होता था।

एक दिन सोमचंद्र नामक सप्तऋद्धिसंपन्न एक निर्ग्रंथ मुनीश्वर जिनमंदिर में आये थे। यह देखकर वह गुणपाल श्रेष्ठी अपनी स्त्री से बोला—"इस नगरी में बहुत भाविक श्रावक-श्राविकाएँ मुनी महाराज को आहारदान देकर पुण्य संचय करते हैं। हम भी आहारदान करके पुण्यसंचय करें, ऐसी मेरी प्रबल इच्छा है। इस विषय में तुम्हारी क्या राय है ? तब वह उनको बोली—हे प्राणनाथ! मुनीश्वर को दान देने की अपनी शक्ति नहीं है। तो भी अपने को एक-एक दिन उपवास करके उदरनिर्वाह साधन में से आहारदान देना चाहिए। फिर वे दोनों जिनमंदिर में गये। जिनेश्वर को भक्ति से वंदन करके सोमचंद्र मुनीश्वर की वंदना करके उनके समीप जाकर बैठे। कुछ समय उनके मुख से धर्मोपदेश सुनकर वह गुणपाल श्रेष्ठी अपने दोनों हाथ विनय से जोड़कर उनको बोला-हे दयानिधे स्वामिन्! हम दारिद्र्य से बहुत पीड़ित हुए हैं। उसके परिहार के लिए कुछ व्रत विधान कहो। आप चातुर्मास भी यहाँ कीजिए ऐसी हमारी नम्र प्रार्थना है। उनका यह वचन सुनकर वे मुनिवर्य दयार्द्र बुद्धि से बोले—हे भाग्योत्तम! तुम '**मंगलत्रयोदशी**' यह व्रत पालन करना। इससे तुम्हारा दारिद्र्य नष्ट होकर तुम सब तरह से अवश्य सुखी होगे। ऐसा कहकर उन्होंने चातुर्मास की सम्मति दे दी। फिर यह दंपती उस व्रत की विधी पूछकर व्रत ग्रहण करके वंदन करके घर में आ गये।

आगे चातुर्मास प्रारंभ हो गया। फिर वह गुणपाल श्रेष्ठी और उनकी धर्मपत्नी एक दिन के बाद उपवास करने लगे। उपवास के दिन आहारदान की तैयारी करके उन मुनीश्वर को आहारदान देने लगे।

इस प्रकार चार मास आहारदान देने का निश्चय किया। इस प्रकार चातुर्मास में आहार देते-देते कार्तिक कृ. 13 के दिन उन्होंने व्रत पूजा-विधान करके उन सोमचंद्र मुनीश्वर को महाभक्ति से आहारदान दिया। बाद में उनको भेजने के लिए वह गुणपाल श्रेष्ठी उनके साथ उद्यान की ओर निकला, उस समय वे मुनिराज उनको बोले-हे भव्योत्तम! अब हम जाते हैं। तुम यहाँ से घर वापिस जावो। तब वह बोला—हे दयालु मुनिवर्य! आपकी आज्ञा से घर जाता हूँ। ऐसा कहकर उसने मुनि को नमस्कार किया। उन्होंने उसको 'सद्धर्मवृद्धिरस्तु' ऐसा आशीष देकर अपना पादस्पर्शित एक पत्थर प्रदान दिया। तब वह पत्थर गुणपाल बड़े आदर से लेकर आया। यह पत्थर गुरुकृपा से मिला है। इसलिए मुझे पूज्य है। ऐसा कहकर उसने उसकी पूजा की, इतने में उस श्रेष्ठी का गुणवंत नाम का कुमार अपने हाथ में खुरपा लेकर खेलते-खेलते उधर आ गया। उसी समय वह खुरपा उसके हाथ से उस पत्थर पर गिरा। वह खुरपा सुवर्णमय बन गया। यह उचित ही है। यह पत्थर सप्तऋद्धिसंपन्न मुनीश्वर के हाथ से मिलने से उसमें पारस का गुण क्यों नहीं होगा? उसके संपर्क से लोहे का सोना क्यों नहीं बनेगा? अवश्य होगा, यह देखकर उसको आश्चर्य हुआ। 'यह पत्थर ब्रह्मज्ञानी मुनीश्वर ने दिया है। इसलिए पारस-पत्थर का गुण आया है'' ऐसा उसके मन में विश्वास हो गया। यह वार्ता नगर में शीघ्र ही चारों तरफ फैल गई। नगरवासी इकट्ठे हो गये। प्रत्यक्ष सब चमत्कार जानकर लोगों को जैनधर्म का महत्व जँचा। सब लोगों ने श्रेष्ठी की बहुत प्रशंसा की। वह दिन कार्तिक कृ. 13 रहने से तथा मंगलवार होने से उसको "मंगल त्रयोदशी" ऐसा लोग कहने लगे। उस समय से ही 'धनत्रयोदशी' नाम भी प्रचार में आया है। आगे वह गुणपाल श्रेष्ठी बड़ा श्रीमान होकर दान पूजादि क्रिया करते-करते आनंद से काल बिताने लगा।

इस प्रकार उन श्रेष्ठी ने चातुर्मास में लिया हुआ नियम यथावत् पालन कर उसका उद्यापन किया, इससे उनको उत्तम सौख्य प्राप्त हुआ।

(21) वृहत्पल्य व्रत विधि

जिस[1] किसी ने मनुष्य जन्म प्राप्त करके यदि पल्य विधान नाम का व्रत किया है, वह भव्य है, यह बात निश्चित है। यह व्रत श्रवण मात्र से ही असंख्यात भवों के पापों का नाश कर देता है और तत्काल ही स्वर्गमोक्ष को भी देने वाला है। वृषभदेव भगवान ने पहले इस पल्य विधान का कथन किया है। उसी प्रकार वीर जिनेन्द्र के निकट में गौतम आदि महर्षियों ने भी इसे कहा है। इस विधान के पढ़ने से सहस्रगुणा फल होता है और इसका अनुष्ठान करने से उत्तम अनन्त केवलज्ञान प्राप्त होता है। इस व्रत के अनुषंगिक फल चक्रीपद और इन्द्रपद भी प्राप्त होते हैं किन्तु मुख्यरूप से इसका फल निर्मल तीर्थंकर पद प्राप्त करना ही है।'

वृहत्पल्य व्रत की तिथियाँ, व्रतों के नाम एवं माहात्म्य

तिथि	व्रत का नाम	फल
आश्विन सुदी 6	सूर्यप्रभा	एक पल्य उपवास
आश्विन सुदी 13	चन्द्रप्रभा	दो पल्य उपवास
कार्तिक कृष्णा 5	कुमारसंभव	चार पल्य उपवास
कार्तिक कृष्णा 11	षडशीति	आठ पल्य उपवास
कार्तिक कृष्णा 14	पुष्पोत्तर	एक हजार पल्य उपवास
कार्तिक सुदी 12	नंदीश्वर	दो हजार पल्य उपवास
मगसिर कृष्णा 12	प्रातिहार्य	चार हजार पल्य उपवास
मगसिर सुदी 11	जितेन्द्रिय	पाँच पल्य उपवास
पौष कृष्णा 3	पंक्तिमान	छह पल्य उपवास
पौष कृष्णा 12	सूर्य	सात पल्य उपवास
पौष सुदी 5	पराक्रम	नौ पल्य उपवास
पौष सुदी 11	जयपृथु	दस पल्य उपवास
माघ कृष्णा 2	अजित	आठ पल्य उपवास
माघ कृष्णा 5	स्वयंप्रभ	ग्यारह पल्य उपवास
माघ कृष्णा 15	रत्नप्रभ	बारह पल्य उपवास
माघ सुदी 4	चतुर्मुख	तेरह पल्य उपवास
माघ सुदी 7	शील	चौदह पल्य उपवास
माघ सुदी 11	पंचाशीति	पन्द्रह पल्य उपवास

फाल्गुन वदी 3, 8, 14 को उपवास करने से क्रमशः सोलह, सतरह, अठारह पल्य उपवास का फल होता है। ऐसे ही फाल्गुन सुदी 5, 11 को उपवास करना चाहिए। चैत्र कृष्णा 3, 8, 11, चैत्र सुदी 1, 5, 8, 11, वैशाख वदी 3, 8, 14, वैशाख सुदी 1, 5, 8, 11, ज्येष्ठ वदी 3, 8, 14, ज्येष्ठ सुदी 5, 8, 10, आषाढ़ वदी 8, 14, आषाढ़ सुदी 1, 5, 8, 14, श्रावण वदी 1, 5, 8, 14, श्रावण-सुदी 3, 5, 8, 14, भाद्रपद वदी 5, 8, 14, भाद्रपद सुदी 5, 11, 14, आश्विन वदी 5, 8, 14 इन उपर्युक्त तिथियों में उपवास करना। इस व्रत में छियासठ उपवास होते हैं। यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है, बहुत ही उत्कृष्ट है। व्रत पूर्ण होने के बाद शक्ति के अनुसार उद्यापन करके पूर्ण करना चाहिए। व्रत के दिन पंचपरमेष्ठी की निम्नलिखित जाप्य करना चाहिए–

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः।

तथा जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक करके नित्यपूजन और पंचपरमेष्ठी की पूजन करना चाहिए।

1. वृहत्पल्यव्रत पूजन से उद्धृत।

(22) चक्रवाल व्रत विधि

व्रतविधि– फाल्गुन महिने में उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र जिस तिथि को पूरा होगा, इस व्रत धारकों को शुचिजल से अभ्यंग स्नान करके शुभ्र वस्त्र पहनना। बाद में सब पूजा सामग्री अपने हाथ में लेकर जिनालय में जाना। वहाँ जाकर मंदिर की तीन प्रदक्षिणा करके ईर्यापथ शुद्धि आदि क्रियापूर्वक श्री जिनेन्द्र की भक्ति से वंदना करना। अखण्डदीप लगाना। वेदी पर श्री आदिनाथ तीर्थंकर की प्रतिमा गोमुखयक्ष चक्रेश्वरी यक्षी सहित स्थापित करके उनका पंचामृत से अभिषेक करना। पूजन, स्तोत्र, जयमाला सहित पूजा करना। सरस्वती और गुरु की पूजा करना। यक्ष, यक्षी और क्षेत्रपाल की भी अर्चना करना।

ॐ ह्रीं अर्हं गोमुखयक्षचक्रेश्वरीयक्षीसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

इस मंत्र से 108 फूल चढ़ाना। णमोकार मंत्र का 108 बार जाप करना। श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्र पढ़कर श्री आदिनाथ चरित्र पढ़ना। बाद में एक पात्र में महार्घ्य करके आरती उतारते हुए तीन प्रदक्षिणा देकर मंगल आरती करना। उस दिन उपवास करके धर्मध्यान में समय बिताना। सत्पात्र को आहारादि दान करना। ब्रह्मचर्य पालना। दूसरे दिन पारणा करना।

इस तरह फाल्गुन महिने में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र को पूजा करके किए हुए उपवास को 'पंचकल्याण' कहते हैं। इस उपवास के योग से एक लाख उपवास का फल मिलता है।

उसी प्रकार चैत्र मास में चित्रा नक्षत्र को पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। इस दिन किए हुए उपवास का 'अष्टमहाविभूति' यह नाम है। इस उपवास से दो लाख उपवास का फल मिलता है।

वैशाख महीने में विशाखा नक्षत्र को पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। इस दिन किए हुए उपवास का 'जिनदर्शन' यह नाम है। इस उपवास से चार लक्ष उपवास का फल मिलता है।

ज्येष्ठ मास में 'ज्येष्ठा' नक्षत्र को पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। इस दिन किए हुए उपवास का 'चतुर्विंशति तीर्थंकर' यह नाम है। इस उपवास से आठ लाख उपवास का फल मिलता है।

आषाढ़ मास में ''पूर्वाषाढा'' नक्षत्र को पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। उस दिन किए हुए उपवास को 'अनंत श्रीवर्धन' यह नाम है। इस उपवास से सोलह लक्ष उपवास का फल मिलता है।

श्रावण मास में श्रवण नक्षत्र को पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। इस दिन किए हुए उपवास को 'धर्मानंद' यह नाम है। इस उपवास से बत्तीस लक्ष उपवास का फल मिलता है।

भादों मास में उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र को पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। इस उपवास को 'आयुर्वर्धन' ऐसा नाम है। इस उपवास से चौंसठ लाख उपवास का फल मिलता है।

आश्विन मास में आश्विनी नक्षत्र को पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। इस उपवास को 'श्रीवर्धमान' कहते हैं। इस उपवास से एक करोड़ 28 लाख उपवास का फल मिलता है।

कार्तिक मास में कृत्तिका नक्षत्र पर पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। इस उपवास का 'आरोग्यज्ञानवर्धन' यह नाम है। इस उपवास से 2 करोड़ 56 लाख उपवास का फल मिलता है।

मगसिर मास में 'मृगशिरा' नक्षत्र में पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। इस उपवास का ''परमैश्वर्यवर्धन'' नाम है। इस व्रत से पाँच करोड़ बारह लाख उपवास का फल प्राप्त होता है।

पौष मास में 'पुष्य' नक्षत्र में पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। इसका नाम ''पंचालंकार'' है। इस उपवास से दश करोड़, चौबीस लाख उपवास का फल प्राप्त होता है।

माघ मास में 'मघा' नक्षत्र पर पूर्ववत् पूजा करके उपवास करना। इस उपवास का 'धनवर्धन' यह नाम है। इससे 20 करोड़ 48 लाख उपवास का फल मिलता है।

इस क्रम से 3 वर्ष तीन महीने यह व्रत पूजा और उपवास करना। ऐसे कुल 39 दिन पूजा और उपवास

करना। इस 39 उपवास से 40 करोड़ 95 लाख उपवास का फल प्राप्त होता है। इस प्रकार सब पूजा और उपवास पूरे होने के बाद इस व्रत का उद्यापन करना। उसी समय श्रीआदिनाथ तीर्थंकर की नूतन सुवर्णमयी गोमुख यक्ष चक्रेश्वरी यक्षी सहित मूर्ति निर्माण कराके उसकी पंचकल्याणक विधिपूर्वक प्रतिष्ठा कराना। चतुःसंघ को चतुर्विध दान करना। इस प्रकार इस व्रत की विधि है।

यह व्रत श्रीगुरु के पास ग्रहण करके जो भव्यात्मा यथाविधि पालन करते हैं, उनको अपार पुण्यबंध होता है। इस पुण्ययोग से उनको सब अभ्युदय सुख प्राप्त होकर पुनः क्रम से मुक्तिसुख प्राप्त होता है। इस प्रकार से व्रत का प्रभाव है।

कथा– जिन्होंने क्षुधादि अठारह दोष नष्ट किये हैं, जिनको लोकालोक को प्रकाशित करने वाले ज्ञान की प्राप्ति हुई है, जो नरेन्द्र, नागेंद्रादि सौ इंद्रों से वंद्य हुए हैं, जो परमागम के अधिपति हुए हैं, ऐसे श्री महावीर तीर्थंकर, केवलज्ञान से सम्पन्न होकर समवसरण के साथ आर्यखण्ड में देश-देश में भव्यजन को उपदेश देते हुए विहार करते थे। एक दिन बुद्धायन राजा अपनी धर्मपत्नी इंद्रायिणी और अपने जनसमूह के साथ बड़े आदर से भगवंत के समवसरण में प्रवेश करके उनका त्रिप्रदक्षिणापूर्वक दर्शन, पूजन, स्तवन आदि करके मानव की सभा में जाकर बैठे। कुछ समय दिव्यध्वनि से तत्वोपदेश श्रवण करने के बाद इंद्रायिणी रानी अपने करकमल जोड़कर विनय से गौतम गणधर को बोली– भो! भवसिंधुतारक जगद्गुरो! आज आप हमारे लिए सब प्रकार के पापनाशक और सर्वसुखप्रद ऐसा व्रत विधान कहो। इनके इस विनयपूर्वक वचन को सुनकर वे गणेन्द्र इनको बोले– हे भव्यगुणमणि पुत्रि! चक्रवालव्रत पालन करने से सभी सुख प्राप्त होते हैं। ऐसा कहकर उन्होंने व्रत की सब विधि उसको कही। यह सब सुनकर इंद्रायिणी आदि सब लोगों को बहुत आनंद हुआ। बाद में उन्होंने गणधर की वंदना करके यह व्रत भक्तिभाव से उनके पास ग्रहण किया। फिर सब जन भगवान को और समस्त मुनिगणों को नमस्कार करके अपनी नगरी में वापस आ गये। आगे कालक्रम से इंद्रायिणी ने यह व्रत यथाविधि धारण करके उसका उद्यापन किया। इस योग से वह अंत में सन्यासविधि से मरकर स्त्रीलिंग छेद करके स्वर्ग में देव हुई और कुछ भव में ही मोक्ष प्राप्त करेंगी।

(23) द्वादशकल्प व्रत (मुष्टि तंदुल व्रत)

जैन परम्परा में तपश्चरण को कर्म-निर्जरा में प्रमुख कारण माना है, यही कारण है कि जैनसाधु एवं श्रावक विविध प्रकार के व्रतों का समय-समय पर अनुष्ठान करते हुए देखे जाते हैं। इन्हीं व्रतों में से महान फलदायी व्रत है- द्वादशकल्प व्रत अथवा मुष्टि तंदुल व्रत।

इस व्रत को गृहस्थ श्रावक-श्राविकाएं ही करते हैं। यह व्रत कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष से प्रारंभ करके एक वर्ष तक किया जाता है।

उदाहरणार्थ, कार्तिक शुक्ला एकम् से इस व्रत को प्रारंभ किया, प्रातःकाल जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक तथा अर्हन्त भगवान या चौबीस तीर्थंकर भगवान की पूजा करें एवं एक पात्र में एक मुट्ठी चावल (तंदुल) निकाल दें, दिन में नियमपूर्वक दो या तीन बार भोजन कर सकते हैं पर रात्रि में चतुराहार का त्याग रखें, पुनः कार्तिक शुक्ला द्वितीया से चतुर्दशी तक पूर्वोक्त विधि से प्रतिदिन एक-एक मुट्ठी चावल निकालते हुए कुल 14 मुट्ठी चावल एकत्रित हो जायेगा। अब, कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को उपवास रखते हुए अभिषेक करें और पूजन में इन 14 मुट्ठी चावल का नैवेद्य-लाडू इत्यादि बनाकर भगवान के समक्ष चढ़ावें। पुनः मगसिर कृष्णा एकम् से मगसिर कृष्णा चतुर्दशी तक 14 मुट्ठी चावल निकालें तथा मगसिर कृष्णा अमावस्या को उपवास करके इस एकत्रित चावल का नैवेद्य

बनाकर भगवान की पूजा में चढ़ावें। इस प्रकार प्रत्येक पक्ष में एक उपवास अर्थात् एक माह में दो उपवास करके इस व्रत को किया जाता है। प्रत्येक उपवास में निम्न मंत्र का जाप्य करें-''**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं परब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये अर्हत्परमेष्ठिने यक्षयक्षी सहिताय नमः स्वाहा।**'' मात्र दो उपवास करने पर भी हजारों उपवास का फल प्रदान करने वाले इस व्रत को निम्न तालिका से आप आसानी से समझ सकते हैं-

क्र. स.	प्रत्येक माह की व्रत विधि	व्रत का नाम	उपवास का फल
1.	कार्तिक शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः मगसिर कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	सौधर्मकल्पव्रत	12000 उपवास
2.	मगसिर शु. एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः पौष कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	ईशानकल्पव्रत	16000 उपवास
3.	पौष शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः माघ कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	सानतकुमार कल्पव्रत	20000 उपवास
4.	माघ शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः फाल्गुन कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	माहेन्द्रकल्पव्रत	22000 उपवास
5.	फाल्गुन शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः चैत्र कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	ब्रह्मकल्पव्रत	30000 उपवास
6.	चैत्र शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का	लांतवकल्पव्रत	32000 उपवास

नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः वैशाख कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।		
7. वैशाख शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः ज्येष्ठ कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	महाशुक्रकल्पव्रत	34000 उपवास
8. ज्येष्ठ शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः आषाढ़ कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	सहस्रारकल्पव्रत	36000 उपवास
9. आषाढ़ शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः श्रावण कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	आनतकल्पव्रत	38000 उपवास
10. श्रावण शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः भाद्रपद कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	प्राणतकल्पव्रत	40000 उपवास
11. भाद्रपद शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः आश्विन कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	आरणकल्पव्रत	42000 उपवास
12. आश्विन शुक्ला एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें, पूर्णिमा को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें, पुनः कार्तिक कृष्णा एकम् से चतुर्दशी तक एक-एक मुट्ठी चावल प्रतिदिन निकालें और अमावस्या को उपवास करके इस चावल का नैवेद्य बनाकर भगवान को चढ़ायें।	अच्युतकल्पव्रत	60000 उपवास

उद्यापन विधि—एक वर्ष तक विधि अनुसार इस व्रत का परिपालन करके इसका उद्यापन किया जाता है, जिसमें यथाशक्ति अर्हन्त भगवान की प्रतिमा या चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ बनवाकर प्रतिष्ठा कराकर मंदिर जी में विराजमान करें। बारह प्रकार के उपकरण मंदिर जी में दान करें। अपनी शक्ति अनुसार ग्रंथ छपाकर भेंट करें। साधुगणों को पिच्छी-कमण्डलु-शास्त्र इत्यादि प्रदान करें एवं आर्यिकाओं को वस्त्र आदि देवें।

यदि किसी पक्ष में एक तिथि बढ़ जाती है तो 15 मुट्ठी चावल एकत्रित हो जायेगा और यदि किसी पक्ष में एक तिथि घट जाती है तो चतुर्दशी को दो मुट्ठी चावल निकालना होगा।

इस व्रत का अनुष्ठान करने वालों के व्यापार-धान-धान्य आदि की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है, अक्षय भण्डार भरता है, सब प्रकार से सुख-शांति-संपत्ति-सन्तति आदि की प्राप्ति होती है तथा परम्परा से स्वर्ग-मोक्ष के सुखों की प्राप्ति होती है।

(24) नंदीश्वर पंक्ति व्रत विधि

इस व्रत में 56 उपवास और 52 पारणाएं होती हैं तथा 108 दिन में पूर्ण होता है। इसमें दधिमुख पर्वत संबंधी एक उपवास 1 पारणा के क्रम से 4 उपवास 4 पारणा होने पर अंजनगिरि संबंधी बेला होता है। पुनः पारणा करके 8 रतिकर संबंधी 8 उपवास एकांतर से होते हैं। यह पूर्वदिक् संबंधी विधि है, इसी प्रकार से 4 एकांतर पुनः बेला व 8 एकांतर दक्षिण दिक् संबंधी, तथैव पश्चिम व उत्तर दिक् संबंधी करने होते हैं। इस तरह 4 बेला, 48 उपवास व 42 पारणाएं होती हैं। जिन्हें 1 उपवास 1 पारणा के क्रम से व्रत करने की शक्ति नहीं है, वे अपनी शक्ति के अनुसार कभी भी 4 उपवास, पुनः बेला पुनः 8 उपवास अर्थात् 1-1 उपवास करके 1 महीने में 4 किये, नंतर बेला किया, नंतर 8 किये, ऐसे 48 उपवास व 4 बेला की संख्या को समयानुसार भी पूर्ण करके व्रत कर सकते हैं, ऐसा हरिवंश पुराण में एक श्लोक में संकेत आया है। इसका फल चक्रवर्ती व तीर्थंकर पद प्राप्त होना है।

समुच्चय मंत्र—**ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपसंबंधि-अकृत्रिमजिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।** (सुगंधित पुष्पों से 108 जाप्य करना)

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र—

पूर्वदिक् संबंधी जाप्य मंत्र—

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधिप्रथमदधिमुखपर्वतस्थितजिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधिद्वितीयदधिमुख पर्वतस्थितजिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधितृतीयदधिमुख पर्वतस्थितजिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधिचतुर्थदधिमुख पर्वतस्थितजिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक् संबंध्यंजनपर्वतस्थित जिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः

(बेला में दो दिन यही जाप्य)

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधिप्रथमरतिकर पर्वतस्थितजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि द्वितीयरतिकर पर्वतस्थितजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि तृतीयरतिकरपर्वतस्थितजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि चतुर्थरतिकरपर्वतस्थितजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधिपंचमरतिकरपर्वतस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधिषष्ठरतिकरपर्वतस्थितजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधिसप्तमरतिकरपर्वतस्थितजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधिअष्टमरतिकरपर्वतस्थितजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

इसी तरह ''पूर्वदिक्'' की जगह दक्षिणदिक् लगाकर 13 जाप्य होंगी, तथैव ''पूर्वदिक्'' के स्थान पर पश्चिमदिक् लगाकर 13, तथैव उत्तरदिक् लगाकर 13, कुल जाप्य 52 ही होंगी। व्रत के दिन नंदीश्वर, पूजन करना चाहिए। इस प्रकार व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन में 52 प्रतिमा सहित नंदीश्वर की प्रतिमा बनवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराना चाहिए अथवा शक्ति के अनुसार 52-52 उपकरण, शास्त्र आदि मंदिर में भेंट करके नंदीश्वर उद्यापन विधान का मंडल बनाकर पूजन आदि से धर्मप्रभावना करते हुए उद्यापन करना चाहिए।

(25) मेरु पंक्ति व्रत विधि

पाँच मेरु संबंधी 80 चैत्यालयों के व्रत मेरू पंक्ति व्रत में किये जाते हैं, इस व्रत का प्रारंभ श्रावण मास से माना जाता है। युग या वर्ष का प्रारंभ प्राचीन भारत में इसी दिन से होता है। श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से प्रारंभ कर लगातार 220 दिन तक यह व्रत किया जाता है।

इसकी विधि—पहले चार उपवास सुदर्शन मेरू के भद्रशालवन के चारों मंदिर संबंधी करने चाहिए, एक उपवास 1 पारणा के क्रम से इसमें 8 दिन लगेंगे। पुनः भद्रशाल वन का 1 बेला अर्थात् दो उपवास करना चाहिए। पुनः पारणा करके नंदनवन के चारों मंदिर संबंधी चार उपवास, चार पारणाएं व नंदनवन का बेला तथा पारणा होती है।

पुनः सौमनसवन के 4 मंदिर संबंधी 4 उपवास, पारणाएं व 1 बेला 1 पारणा तथैव पांडुकवन संबंधी 4 मंदिर के 4 उपवास व पारणाएं तथा बेला पारणा होती है। इस क्रम से प्रथम सुदर्शनमेरु संबंधी-

उपवास	**पारणा**	**बेला**	**पारणा**
4	4	1	1
4	4	1	1
4	4	1	1
4	4	1	1

(16 उपवास 4 बेला व 20 पारणाएं 44 दिन में हुई)

ऐसे ही द्वितीय विजयमेरु संबंधी भी उपवास विधि समझनी चाहिए। तथैव तृतीय अचलमेरु संबंधी, चतुर्थ मंदर मेरुसंबंधी व पंचम विद्युन्माली मेरु संबंधी उपवास क्रम होता है। सभी मिलकर 80 प्रोषधोपवास, 20 बेलाएं और 100 पारणाएं की जाती हैं। पंचमेरु संबंधी दिनसंख्या-44×5=220 होती हैं। जिन्हें उपर्युक्त विधि से व्रत करने की शक्ति नहीं है, वे यथाशक्ति इन 80 उपवास व 20 बेलाओं को कभी भी करके संख्या पूरी करके व्रत के फल को प्राप्त कर सकते हैं। इस व्रत के पूजन में मेरु की स्थापना करके विधिवत् पंचामृताभिषेक व पंचमेरु पूजनादि करके प्रत्येक मेरू संबंधी जाप्य करना चाहिए। इसका फल मेरु पर्वत पर अभिषेक प्राप्त करना अर्थात् तीर्थंकर पद प्राप्त करना बताया है। यह व्रत पूर्वोक्त विधि से करने से 7 महीने 10 दिन तक करना पड़ता है, इसमें तिथि वृद्धि व तिथिक्षय से कोई बाधा नहीं आती है। सुगंधित पुष्पों से जाप्य करना चाहिए। **जाप्य**—प्रथम मेरु संबंधी व्रतों के दिनों में **''ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि षोडशजिनालयेभ्यो नमः।''** इस मंत्र का त्रिकाल जाप्य देना चाहिए। द्वितीय मेरू संबंधी व्रतों के दिनों में—

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो नमः। तृतीय मेरू संबंधी व्रतों के दिनों में–

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधि षोडश जिनालयेभ्यो नमः। चतुर्थ मेरुव्रत में **ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।** पंचममेरुव्रत में-**ॐ ह्रीं विद्युन्माली मेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो नमः।**

विशेष– पारणा के दिनों में एक अनाज का ही प्रयोग करना चाहिए। फलों में सेब, नारियल, नारंगी आदि भी उपयोग कर सकते हैं। पूजन में नित्यपूजन, त्रिकाल चौबीसी, पंचमेरु, विद्यमान बीस तीर्थंकर, पंचपरमेष्ठी पूजन भी करें व रात्रि जागरण भी करना चाहिए तथा व्रत पूर्ण होने तक ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करना चाहिए। यह विशेषविधि व्रततिथि निर्णय से उद्धृत की है।

उद्यापन में सोलह-सोलह प्रतिमा सहित पांचमेरु की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराना चाहिए अथवा 5-5 उपकरण आदि यथाशक्ति मंदिर में भेंट करके पंचमेरु का मंडलविधान करके व्रत पूर्ण करना चाहिए।

(26) जिनगुणसंपत्ति व्रत विधि एवं कथा

धातकी खण्ड द्वीप के अन्तर्गत पूर्वमेरु संबंधी पश्चिम विदेह क्षेत्र में गंधिल नामक देश है। उसमें एक पाटलिपुत्र नाम का नगर है। उस नगर में एक नागदत्त सेठ रहते थे, उनकी भार्या का नाम सुमति था। वे दंपत्ति धनहीन होने से अत्यंत दुःखी थे। दोनों ही जंगल से लकड़ी आदि लाकर उसे बेचकर अपना पेट पालन करते थे। एक दिन बेचारी सुमति भूख-प्यास से घबराकर एक वृक्ष की छाया में बैठी थी, इतने में बहुत से नर-नारियों को उत्साह के साथ जाते हुए देखकर पूछा– बंधु और बहनों! आप लोग आज कहाँ जा रहे हैं? तब किसी ने कहा– बहन! इस अंबरतिलक पर्वत पर पिहितास्रव नाम के महामुनि आये हुए हैं, उनके दर्शन पूजन के लिए हम लोग जा रहे हैं।

सुमति[1] भी उन लोगों के साथ गुरु के दर्शनार्थ वहाँ चली गई। मुनिराज से षट्कर्म और बाहर व्रतों का उपदेश सुनकर अवसर पाकर उसने प्रश्न किया– हे भगवन्! किस पाप के उदय से मैं महान् दरिद्र हुई हूँ? मुनिराज ने कहा– पुत्री! पलासकूट ग्राम में दिविलह राजा की सुमति रानी से तू धनश्री नाम की कन्या हुई थी। एक दिन सखियों के साथ वन में क्रीड़ा करते हुए वृक्ष के नीचे ध्यान में मग्न समाधिगुप्त मुनिराज को देखा, रूप-यौवन के गर्व से उन्मत्त होकर तूने उनके ऊपर कुत्ते के द्वारा उपसर्ग कर दिया किन्तु मुनिराज ने शांत भाव से उपसर्ग सहन कर लिया। मुनि-उपसर्ग के पाप के कारण आयु पूर्णकर मरकर तू सिंहनी हुई। वहाँ से आकर तू धनहीन घर में उत्पन्न हुई है।

पुनः सुमति बोली– हे भगवन्! कोई ऐसा व्रत बतलाइये कि जिससे इस पाप से छुटकारा मिले। मुनि ने कहा– पुत्री! तुम सम्यग्दर्शनपूर्वक जिनगुणसम्पत्ति व्रत करो, जिससे तुम्हारे मनवांछित कार्यों की सिद्धि होगी। इस व्रत की विधि इस प्रकार है– सोलहकारण भावनाओं के 16 उपवास, पंचकल्याणक के 5, अष्ट प्रातिहार्य के 8 और चौंतीस अतिशयों के 34, इस प्रकार कुल मिलाकर 63 उपवास या प्रोषध (एक भुक्ति) करें।

[2]व्रतविधि निर्णय में ''प्रतिपदा के 16, पंचमी के 5, अष्टमी के 8, दशमी के 20 और चौदस के 14 ऐसे तिथि से उपवास माने हैं।'' व्रत के दिन पंचामृत अभिषेक करके पूजन करें, पुनः जाप्य करें। व्रत की कथा पढ़ें, स्वाध्याय आदि करते हुए दिन भर धर्मध्यान में व्यतीत करें। व्रत के दिन जिनगुणसम्पत्ति मंत्रों में से जिस मंत्र का दिन हो, उस मंत्र का जाप्य करें।

---

1. आदिपुराण में– वणिक् की पुत्री निर्नामिका ने यह व्रत पिहितास्रव मुनि से लेकर किया और पुनः क्रम से प्रभादेवी आदि पदों को प्राप्त करते हुए राजा श्रेयांस हो गया, ऐसा कथन है। 2. व्रत तिथि निर्णय, पृ. 264।

व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें। उद्यापन की शक्ति न होने से व्रत दूना करें। उद्यापन में मंदिर में मंडल माँडकर बड़े समारोह के साथ भगवान् की सम्मानपूर्वक पूजा करें, पात्रदान देवें, आम, केले, नारंगी, श्रीफल, अखरोट, खारिक, बादाम इत्यादि त्रेसठ-त्रेसठ फल एवं अनेक प्रकार के नैवेद्य सहित भगवान की पूजा करें। मंदिर में चंदोवा, छत्र, चंवर, झालर, घंटा आदि उपकरण भेंट करें। ज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थ श्रावक-श्राविकाओं को 63 ग्रंथ बाँटें।

सुमति (निर्नामिका) ने गुरु से व्रत ग्रहण कर विधिवत् पालन किया, अंत में समाधिपूर्वक मरण करके स्वर्ग में ललितांग देव की स्वयंप्रभा नाम की महादेवी हुई। वहाँ से चयकर जंबूद्वीप के पूर्वविदेह संबंधी पुष्कलावती देश के अन्तर्गत पुंडरीकिणी नगरी में वज्रदंत चक्रवर्ती की लक्ष्मीमती नाम की महारानी से श्रीमती नाम की पुत्री हुई, जो कि वज्रजंघ महाराज को विवाही गई। किसी समय इन दम्पत्ति ने मुनियुगल को आहारदान देकर महान् पुण्य संचय किया। वहाँ से मरकर उत्तम भोगभूमि में दोनों पति-पत्नी हुए। वहाँ पर चारण मुनियों के उपदेश से दोनों ने सम्यक्त्व ग्रहण कर लिया। वहाँ से मरकर ऐशान स्वर्ग में वज्रजंघ आर्य श्रीधर देव हो गये और श्रीमती आर्या स्वयंप्रभ देव हो गईं। सम्यक्त्व के प्रभाव से श्रीमती को स्त्रीपर्याय से छुटकारा मिल गया। स्वर्ग से च्युत होकर विदेह क्षेत्र में श्रीधर देव तो राजा सुविधि हुआ और उसकी मनोरमा रानी से यह स्वयंप्रभ देव का जीव केशव नाम का प्यारा पुत्र हुआ। पुनः दीक्षित होकर ये सुविधि सोलहवें स्वर्ग में इन्द्र हुए एवं केशव वहीं पर प्रतीन्द्र हुआ। पुनः यह इन्द्र स्वर्ग से आकर पूर्वविदेह में वज्रनाभि चक्रवर्ती हुआ और प्रतीन्द्र का जीव चक्रवर्ती व चौदह रत्नों में से गृहपति नाम का रत्न हुआ, जिसका नाम धनदेव था। अनन्तर वज्रनाभि चक्रीश ने दीक्षा लेकर सोलहकारण भावनाओं से तीर्थंकर प्रकृति को बाँध लिया और श्रेणी में मरणकर सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र हो गये। धनदेव भी दीक्षित होकर अंत में मरणकर ध्यान के प्रभाव से सर्वार्थसिद्धि में अहमिंद्र हो गये। वहाँ से चयकर वज्रनाभि का जीव अहमिंद्र तो भगवान ऋषभदेव हुआ है और धनदेव का जीव कुरुजांगल देश के हस्तिनापुर में राजा सोमप्रभ का भाई श्रेयांस कुमार हुआ है।

भगवान ऋषभदेव को जब एक वर्ष तक आहार का लाभ नहीं हुआ, तब हस्तिनापुर में आने पर उनके दर्शन से राजा श्रेयांस को श्रीमती के भव में दिये गये आहारदान का जातिस्मरण हो जाने से आहारदान की विधि का ज्ञान हो गया। उसी समय उन्होंने भगवान को इक्षुरस का आहार देकर अक्षय पुण्य सम्पादन किया, आज भी वह दिवस अक्षयतृतीया के नाम से जगत् में पूज्य हो रहा है।

राजा श्रेयांस भगवान के केवलज्ञान के अनन्तर उनके समवसरण में अपने भाई के साथ दीक्षित होकर भगवान के गणधर हो गये पुनः अन्त में कर्मों का नाश कर मुक्ति पद को प्राप्त हो गये। अहो! निर्नामिका ने एक जिनगुणसम्पत्ति व्रत का पालन किया, जिसके प्रसाद से उत्तम सुखों को भोगकर अन्त में राजा श्रेयांस होकर निर्वाणपद को प्राप्त कर वहाँ पर अनन्त-अनन्त काल के लिए पूर्ण सुखी हो चुके हैं।

जिनगुणसंपत्ति के मंत्र

प्रतिपदा की 16 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा दर्शनविशुद्धिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा विनयसंपन्नताभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा संवेगभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शक्तितस्त्यागभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शक्तितस्तपोभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा साधुसमाधिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वैयावृत्यकरणभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
10. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्हद्भक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
11. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आचार्यभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
12. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा बहुश्रुतभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
13. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रवचनभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
14. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आवश्यकापरिहाणिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
15. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मार्गप्रभावनाभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
16. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रवचनवत्सलत्वभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

पंचमी की 5 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा स्वर्गावतरणगर्भकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा जन्माभिषेककल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा परिनिष्क्रमणकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा केवलज्ञानकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निर्वाणकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

अष्टमी के 8 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चतुष्षष्टिचामरमहाप्रातिहार्य- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सिंहासनमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा भामंडलमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा देवदुन्दुभिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

दशमी की 20 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निःस्वेदत्वसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निर्मलत्वसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा क्षीरगौररुधिरत्वसहजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समचतुरस्रसंस्थानसहजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वज्रवृषभनाराचसंहननसहजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौरूप्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौगंध्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायैनमः।
8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौलक्षण्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्रमितवीर्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
10. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रियहितवादित्वसहजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
11. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षत्वघातिक्षय- जातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

12. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गगनगमनत्वघातिक्षयजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
13. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्राणिवधत्वघातिक्षयजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
14. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा भुक्त्यभावघातिक्षयजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
15. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा उपसर्गाभावघातिक्षयजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
16. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चतुर्मुखत्वघातिक्षयजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
17. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वविद्येश्वरघातिक्षयजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
18. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अच्छायत्वघातिक्षयजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
19. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अपक्ष्मस्पंदत्वघातिक्षयजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
20. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समाननखकेशत्वघातिक्षयजातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

चतुर्दशी की 14 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वार्धमागधीयभाषादेवोपनीतातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशय- जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणामदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा विहरणमनुगतवायुत्वदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादिदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मेघकुमारकृतगन्धोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा पादन्यासे कृतपद्मानिदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
10. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
11. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शरत्कालवन्निर्मलगगनत्वदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
12. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शरन्मेघवन्निर्मलदिग्भावत्वदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।
13. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा एतैतेतिचतुर्निकायामरपरापराह्वानदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारण-स्वरूपायै नमः।
14. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

(27) रोहिणी व्रत विधि एवं कथा

जम्बूद्वीप के इसी भरत क्षेत्र में कुरुजांगल देश है, इसमें हस्तिनापुर नाम का सुन्दर नगर है। किसी समय यहाँ वीतशोक राजा राज्य करते थे। इनकी रानी का नाम विद्युत्प्रभा था। इन दोनों के एक अशोक नाम का पुत्र था।

इसी समय अंग देश की चम्पा नगरी में मघवा नाम के राजा राज्य करते थे, इनकी श्रीमती नाम की रानी थी। श्रीमती के आठ पुत्र और रोहिणी नाम की एक कन्या थी। यौवन को प्राप्त हुई रोहिणी ने एक समय आष्टान्हिक पर्व में उपवास करके मंदिर में पूजा करके सभा भवन में बैठे हुए माता-पिता को शेषा दी। पिता ने पुत्री को युवती देखकर कुछ क्षण मंत्रशाला में मंत्रियों से मंत्रणा की, पुनः स्वयंवर की व्यवस्था की। स्वयंवर में रोहिणी ने हस्तिनापुर के राजकुमार के गले में वरमाला डाल दी।

कालांतर में वीतशोक महाराज ने दीक्षा ले ली और अशोक महाराज बहुत न्यायनीति से राज्य का संचालन कर रहे थे। रोहिणी महादेवी के आठ पुत्र और चार पुत्रियाँ थीं। किसी समय महाराज अशोक महादेवी रोहिणी के साथ महल की छत पर बैठे हुए विनोद गोष्ठी कर रहे थे। पास में वसंततिलका धाय बैठी हुई थी। जिसकी गोद में रोहिणी का छोटा बालक लोकपाल खेल रहा था। इसी समय रोहिणी ने देखा कि कुछ स्त्रियाँ गली में अपने बालों को बिखेरे हुए एक बालक को लिए छाती, सिर, स्तन और भुजाओं को कूटती-पीटती हुई चिल्ला-चिल्ला कर रो रही हैं। तब रोहिणी ने अपनी वसंततिलका धात्री से कुतूहलवश पूछा– हे माता! नृत्यकला में विशारद लोग सिग्नटक, भानी, छत्र, रास और दुंबिली इन पाँच प्रकारों के नाटकों का अभिनय करते हैं। भरत महाराज द्वारा प्रणीत इन पाँच प्रकारों के नाटकों के सिवाय ये स्त्रियाँ सादिकुट्टन रूप इस कौन से नृत्य का अभिनय कर रही है? इस नाटक में सात स्वर, भाषा और मूर्च्छनाओं का भी पता नहीं चल रहा है। तुम इस नाटक का नाम तो मुझे बताओ।

रोहिणी के इस भोलेपन के प्रश्न को सुनकर धाय बोली– पुत्री! कुछ दुःखी स्त्रियाँ महान् शोक और दुःख मना रही हैं।

रोहिणी ने जब धात्री के मुख से 'शोक' और 'दुख' ये दो शब्द सुने, तब उसने पूछा– अम्ब! यह बताओ कि यह 'शोक' और 'दुख' क्या वस्तु है?

तब धात्री ने रुष्ट होकर जवाब दिया-सुन्दरि! क्या तुम्हें उन्माद हो गया है? पाण्डित्य और ऐश्वर्य क्या ऐसा ही होता है? क्या रूप से पैदा हुआ गर्व यही है? जो कि तुम 'शोक' और 'दुख' को नहीं जानती हो और रुदन को नाटक-नाटक बक रही हो? क्या तुमने इसी क्षण जन्म लिया है?

क्रोधपूर्ण बात सुनकर रोहिणी बोली– भद्रे! आप मेरे ऊपर क्रोध मत कीजिए। मैं गन्धर्वविद्या, गणितविद्या, चित्र, अक्षर, स्वर और चौंसठ विज्ञानों तथा बहत्तर कलाओं को ही जानती हूँ। मैंने आज तक इस प्रकार का कलागुण न देखा है और न मुझसे किसी ने कहा है। यह आज मेरे लिए अदृष्ट और अश्रुतपूर्व है। इसीलिए मैंने आपसे यह पूछा है। इसमें अहंकार और पांडित्य की कोई बात नहीं।

पुनः धात्री बोली– वत्से! न यह नाटक का प्रयोग है और न किसी संगीत भाषा का स्वर है किन्तु किसी इष्ट बंधु की मृत्यु से रोने वालों का जो दुःख है, वही शोक कहलाता है।

धात्री की बात सुनकर रोहिणी पुनः बोली– भद्रे! यह ठीक है, परन्तु मैं रोने का भी अर्थ नहीं जानती, सो उसे भी बताइये।

रोहिणी के इस प्रश्न के पूरा होते ही राजा अशोक बोला– प्रिये! शोक से जो रुदन किया जाता है, उसका अर्थ मैं बतलाता हूँ। इतना कहकर राजा ने लोकपाल कुमार को रोहिणी की गोद से लेकर देखते ही देखते राजभवन के शिखर के नीचे फेंक दिया।

लोकपाल कुमार अशोक वृक्ष की चोटी पर गिरा, उसी समय नगर देवताओं ने आकर दिव्य सिंहासन पर उस बालक को बिठाया और क्षीरसागर से भरे हुए एक सौ कलशों से उसका अभिषेक किया और उसे आभरणों से भूषित कर दिया। अशोक महाराज और रोहिणी ने जैसे ही नीचे नजर डाली तो बहुत ही विस्मित हुए। उस समय सभी लोगों ने इसे रोहिणी के पूर्वकृत पुण्य का ही फल समझा।

हस्तिनापुर के बाहर अशोकवन में अतिभूतितिलक, महाभूतितिलक, विभूतितिलक और अंबरतिलक नामक चार जिनमंदिर क्रमशः चारों दिशाओं में थे। एक बार रूपकुंभ और स्वर्णकुंभ नाम के दो चारण मुनि विहार करते हुए हस्तिनापुर में आकर पूर्व दिशा के जिनमंदिर में ठहर गये। वनपाल द्वारा मुनि आगमन का समाचार ज्ञात होने पर परिजन और पुरजन सहित अशोक महाराज मुनिराज की वंदना के लिए वहाँ पहुँचे। वंदना भक्ति के अनंतर राजा ने प्रश्न किया कि हे भगवन्! मैंने और मेरी पत्नी रोहिणी ने पूर्वजन्म में कौन सा पुण्य विशेष किया है, सो कृपा कर बतलाइये।

मुनिराज ने कहा– हे राजन्! इसी जम्बूद्वीप के अन्तर्गत भरत क्षेत्र में सौराष्ट्र देश है। इसमें ऊर्जयंतगिरि के पश्चिम में एक गिरि नाम का नगर है। इस नगर के राजा का नाम भूपाल और रानी का नाम स्वरूपा था। राजा के एक गंगदत्त राजश्रेष्ठी था, जिसकी पत्नी का नाम सिंधुमती था, इसे अपने रूप का बहुत ही घमण्ड था। किसी समय राजा के साथ वनक्रीड़ा के लिए जाते हुए गंगदत्त ने नगर में आहारार्थ प्रवेश करते हुए मासोपवासी समाधिगुप्त मुनिराज को देखा और सिंधुमती से बोला– प्रिये! अपने घर की तरफ जाते हुए मुनिराज को आहार देकर तुम पीछे से आ जाना। सिंधुमती पति की आज्ञा से लौट आई किन्तु मुनिराज के प्रति तीव्र क्रोध भावना हो जाने से उसने कड़वी तूमड़ी का आहार मुनि को दे दिया। मुनिराज ने हमेशा के लिए प्रत्याख्यान ग्रहण कर सल्लेखनापूर्वक शरीर का त्याग कर स्वर्गपद को प्राप्त कर लिया।

जब राजा वन से वापस लौट रहे थे कि विमान में स्थित कर मुनि को ले जाते हुए देखकर मृत्यु का कारण पूछा। तब किसी व्यक्ति ने सारी घटना राजा को सुना दी। उस समय राजा ने सिंधुमती का मस्तक मुण्डवाकर उस पर पाँच बेल बंधवाये, गधे पर बिठाकर उसके अनर्थ की सूचना नगर में दिलाते हुए उसे बाहर निकाल दिया। उसके बाद उसे उदुम्बर कुष्ठ हो गया और भयंकर वेदना से सातवें दिन ही मरकर बाईस सागर पर्यन्त आयु धारण कर छठे नरक में उत्पन्न हुई। यह पापिनी क्रम से सातों ही नरकों में भ्रमण करते हुए कदाचित् तिर्यंचगति में आकर दो बार कुत्ती हुई, सूकरी, शृगाली, चुहिया, गोंच, हथिनी, गधी और गौणिका हुई। अनंतर इसी हस्तिनापुर के राजश्रेष्ठी धनमित्र की पत्नी धनमित्रा से पूतिगंधा पुत्री के रूप में जन्मी, दुर्गंधा के समान उसके शरीर से भयंकर दुर्गंधि आ रही थी जिससे कि उसके पास किसी का भी बैठना कठिन था।

उसी शहर के वसुमित्र सेठ का एक श्रीषेण पुत्र था, जो सप्त व्यसनी था। एक दिन चोरी कर्म से कोतवाल के द्वारा पकड़ा जाकर शहर से बाहर निकाला जा रहा था। उस समय धनमित्र ने कहा कि– श्रीषेण! यदि तुम मेरी कन्या के साथ विवाह करना मंजूर करो तो मैं तुम्हें इस बंधन से मुक्त करा सकता हूँ। उसके मंजूर करने पर सेठ ने उसे बंधनमुक्त कराकर उसके साथ अपनी दुर्गन्धा कन्या का विवाह कर दिया। किन्तु विवाह के बाद जैसे-तैसे एक रात दुर्गन्धा के पास बिताकर मारे दुर्गन्ध के घबराकर वह श्रीषेण अन्यत्र भाग गया। बेचारी दुर्गन्धा पुनः पिता के घर पर ही रहते हुए अपनी निंदा करते हुए दिन व्यतीत कर रही थी। एक दिन उसने सुव्रता आर्यिका को अपने पितृगृह में आहार दिया। अनन्तर पिहितास्रव नामक चारणमुनि अमितास्रव मुनिराज के साथ वन में आये। वहाँ पर सभी श्रावकों ने गुरु वंदना करके उपदेश सुना। पूतिगन्धा ने भी गुरु का उपदेश सुनकर कुछ क्षण बाद प्रश्न किया– हे भगवन्! मैंने पूर्वजन्म में कौन सा पाप किया है जिससे मेरा शरीर महा दुर्गन्धियुक्त है।

मुनिराज ने कहा– पुत्री! सुनो, तुमने सिंधुमती सेठानी की अवस्था में मुनिराज को कड़वी तूमड़ी का आहार दिया था। उसके फलस्वरूप बहुत काल तक नरक और तिर्यंचों के दुख भोगे हैं और अभी भी पाप के शेष रहने से यह स्थिति हुई है। सारी घटना सुनकर पूतिगंधा ने कहा– हे गुरुदेव! अब मुझे कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिससे पापों का क्षय हो। मुनिराज ने कहा- पुत्री! अब तुम सभी पापों से मुक्त होने के लिए रोहिणी व्रत करो।

रोहिणी व्रत विधि–जिस दिन चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र में हो उस दिन चतुराहार त्यागकर उपवास करना चाहिए और वासुपूज्य जिनेन्द्र की पूजा करके उनका जाप करना चाहिए। **ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।** यह रोहिणी नक्षत्र सत्ताईस दिन में आता है। इस तरह सत्ताइसवें दिन उपवास करते हुए पाँच वर्ष और नव दिन में सरसठ उपवास हो जाते हैं। अनन्तर उद्यापन में वासुपूज्य भगवान की महापूजा कराके रोहिणी व्रत संबंधी पुस्तक लिखाकर (छपाकर) और भी अन्य ग्रंथों का भी भव्य जीवों में वितरण करना चाहिए। ध्वजा, कलश, घण्टा, घण्टिका, दर्पण, स्वस्तिक आदि से मंदिर को भूषित करके महापूजा के अनंतर चतुर्विध संघ को आहार आदि चार प्रकार का दान और आर्यिकाओं के लिए वस्त्र का दान देना चाहिए।

इस तरह गुरुमुख से सुनकर विधिवत् व्रत ग्रहणकर पूतिगंधा ने उसका पालन किया। श्रावक व्रत पालन करते हुए अंत में समाधिपूर्वक मरण करके वह अच्युत नामक सोलहवें स्वर्ग में महादेवी हो गई। वहाँ से च्युत होकर यह तुम्हारी वल्लभा रोहिणी हुई है। राजन्! यह रोहिणी व्रत का ही माहात्म्य है जो कि यह 'शोक' और 'दुःख' को नहीं समझ पाई है।

अनन्तर मुनिराज ने अशोक से कहा– अब मैं तुम्हारे पूर्वजन्म सुनाता हूँ सो एकाग्रचित्त होकर सुनो।

कलिंग देश के निकट विंध्याचल पर्वत पर अशोक वन में स्तंबकारी और श्वेतकारी नाम के दो मदोन्मत्त हाथी थे। किसी एक दिन नदी में जल के लिए घुसे और आपस में लड़कर मर गये। वे बिलाव और चूहा हुए, पुनः साँप-नेवला और बाज–बगुला हुए, पुनः दोनों ही कबूतर हुए। अनन्तर कनकपुर के राजा सोमप्रभ के पुरोहित सोमभूमि की पत्नी सोमिला से सोमशर्मा और सोमदत्त नाम के पुत्र हो गये।

राजा सोमप्रभ ने सोमभूमि के मरने के बाद पुरोहित पद सोमदत्त नामक उनके छोटे पुत्र को दे दिया। किसी समय सोमदत्त को यह मालूम हुआ कि मेरा बड़ा भाई मेरी पत्नी के साथ दुराचार करता है, तब उसने विरक्त होकर जैनेश्वरी दीक्षा ले ली। इधर राजा ने पुरोहित पद सोमशर्मा को दे दिया।

एक बार सोमप्रभ राजा ने हाथी के लिए शकट देश के अधिपति वसुपाल के साथ युद्ध करने के लिए प्रस्थान कर दिया। उस समय सोमदत्त मुनि के दर्शन होने से सोमशर्मा ने कहा– महाराज! आपको अपशकुन हो गया है अतः इन मुनि को मारकर इनके खून को दशों दिशाओं में क्षेपण कर शांतिकर्म करना चाहिए। यह सुनकर राजा ने अपने कान दोनों हाथों से ढ़क लिए। तब विश्वसेन नामक निमित्तज्ञानी ने आकर बतलाया– राजन्! आपको आज बहुत ही उत्तम शकुन हुआ है। देखिए! ''यति, घोड़ा, हाथी, बैल, कुम्भ, ये चीजें प्रस्थान और प्रवेश में सिद्धिसूचक मानी गई हैं।''

अन्यत्र भी कहा है–

आरूरोह रथं पार्थ! गांडीवं चापि धारय! निर्जितां मेदिनां मन्ये निर्ग्रन्थो यतिरग्रतः।।

महाभारत में लिखा है कि श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं– हे अर्जुन! तुम रथ पर चढ़ जाओ और धनुष धारण कर लो। सामने निर्ग्रन्थ मुनिराज के दर्शन हो रहे हैं, इसलिए मैं समझता हूँ कि अब हमने पृथ्वी जीत ली। हमारी विजय निश्चित है। ज्योतिष शास्त्र में भी एक सुभाषित है–

पद्मिन्यो राजहंसाश्च निर्ग्रन्थाश्च तपोधनाः। यद्देशमभिगच्छन्ति तद्देशे शुभमादिशेत्।

पद्मिनी स्त्रियां, राजहंस और निर्ग्रन्थ तपस्वी जिस प्रदेश में रहते हैं, उस प्रदेश में सर्वत्र मंगल रहता है। अन्यत्र धर्मग्रन्थों में भी 'साधु के दर्शन से पापों का नाश हो जाता है' ऐसा कहा गया है।

राजन्! आप देखिए, प्रातः ही राजा वसुपाल त्रिलोकसुन्दर हाथी लाकर आपको भेंट करेगा। विश्वसेन के वचनों से राजा का मन शान्त हो गया पुनः प्रातःकाल स्वयं वसुपाल राजा ने आकर वह हाथी सहर्ष भेंट कर दिया।

इधर सोमशर्मा ने पूर्व वैर के कारण रात्रि में सोमदत्त मुनि की हत्या कर दी। जब राजा को इस बात का पता चला तब पाँच प्रकार के दण्डों से दण्डित किया। मुनि हत्या के पास से सोमशर्मा को कुष्ठ रोग हो गया और वह मरकर सातवें नरक पहुँच गया।

वहाँ से निकलकर महामत्स्य हुआ, छठे नरक गया, सिंह हुआ, पाँचवे नरक गया, सर्प हुआ, चतुर्थ नरक गया, पक्षी हुआ, द्वितीय नरक गया-बगुला हुआ, पुनः प्रथम नरक गया। वहाँ से निकलकर सिंहपुर के राजा सिंहसेन की रानी से पूतिगंधा नाम का महादुर्गन्धा शरीरधारी पुत्र हुआ।

किसी समय विमलमदन जिनराज को केवलज्ञान होने पर देवों के आगमन को देखकर पूतिगंधा मूर्च्छित हो गया। पुनः होश में आने पर उसे जातिस्मरण हो गया। वह पिता के साथ केवली भगवान का दर्शन करके मनुष्यों की सभा में बैठ गया। राजा ने पूतिगंधा के पूर्व भव पूछे और पूर्वोक्त प्रकार विशेष स्पष्टतया जिनेन्द्र की वाणी से

अपने भवांतरों को सुनकर पूतिगंध ने कहा– प्रभो! अब मुझे दुःखों से छूटने के लिए कोई व्रतादि बतलाइये, तब भगवान ने उसे रोहिणी व्रत का उपदेश दिया। इस व्रत में तीन साल में चालीस उपवास होते हैं और पाँच वर्ष नव दिन में सरसठ उपवास होते हैं। अनंतर विधिवत् उद्यापन करना चाहिए।

पूतिगंध राजकुमार इस व्रत और अणुव्रत आदि के प्रभाव से उसी भव में सुगंध शरीर वाला हो गया। अनंतर एक महीने में ही सल्लेखना विधि से मरण करके प्राणत नामक स्वर्ग में महर्द्धिक देव हो गया। वहाँ से च्युत होकर पूर्वविदेह में पुंडरीकिणी नगरी के विमलकीर्ति राजा की श्रीमती रानी से अर्ककीर्ति नाम का पुत्र हो गया। आगे जाकर अककीर्ति ने महावैभव स्वरूप चक्रवर्ती के पद को प्राप्त किया, अमित सुखों का अनुभव करके विरक्त हो जैनेश्वरी दीक्षा ले ली। अंत में मरणकर सोलहवें स्वर्ग में देवपद को प्राप्त किया। उस समय पूतिगंधा का जीव जो कि रोहिणी व्रत के प्रभाव से स्वर्ग में देवी हुई थी, वह इस देव की प्रिय देवी हुई। वहाँ से च्युत होकर आप अशोक राजा हुए हैं।

इस प्रकार मुनिराज के मुख से भवांतरों को सुनकर राजा-रानी अति प्रसन्न हुए और सभी पुत्र-पुत्रियों के भव पूछकर हर्षितमना अपने शहर वापस आ गये। एक समय श्वेत केश को देखकर विरक्त होकर राजा अशोक ने वासुपूज्य भगवान के समवसरण में जैनेश्वरी दीक्षा ले ली और सात ऋद्धि से सम्पन्न हुए भगवान के गणधर हो गये। अनन्तर मोक्ष को पधार गये। रोहिणी भी सुमति आर्यिका के समीप आर्यिका दीक्षा लेकर स्त्री पर्याय को छेदकर सोलहवें स्वर्ग में देव हो गई।

इस प्रकार से रोहिणी व्रत का माहात्म्य अचिंत्य है। इस व्रत में हर उपवास के दिन भगवान वासुपूज्य का अभिषेक करके पूजन करना चाहिए, पुनः यह जाप्य करना चाहिए– **ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।**

(28) चारित्रशुद्धि व्रत विधि

आवश्यक पठितव्य–

मुनियों के तेरह प्रकार के चारित्र प्रसिद्ध हैं। पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति। पाँच महाव्रत के अनंतर रात्रिभोजन त्यागरूप में छठा अणुव्रत भी माना है। मूलाचार में एवं श्री गौतमस्वामी के मुखकमल से निर्गत मुनि, आर्यिकाओं के दैवसिक-रात्रिक एवं पाक्षिक प्रतिक्रमण में इस छठे अणुव्रत का बहुत बार उल्लेख आता है। टीकाकारों ने स्पष्ट किया है कि महाव्रत पाँच ही होते है। चूंकि साधु दिन में एक बार ही भोजन करते है अतः यह रात्रिभोजन त्याग छठा अणुव्रत ही है, महाव्रत नहीं है।

इन चारित्रशुद्धिव्रत के मंत्रों में इन तेरह विध चारित्र के भेदों में मन, वचन, काय को कृत, कारित, अनुमोदना से गुणित करने पर नव भेद हो जाते है अतः हरिवंशपुराण ग्रंथ के आधार से ये मंत्र 1234 हो जाते हैं।

अन्यत्र छपी पुस्तकों में मंत्रों में समिति और गुप्ति के मंत्रों में भी महाव्रत लगाया है सो अनुचित है चूंकि 'सर्वदोष प्रायश्चित्त विधि' मंत्र 33 है उनमें भी समिति और गुप्ति में महाव्रत शब्द का प्रयोग नहीं है। (आगे देखें)

इस 1234 व्रत को करने की परंपरा उपवास या अल्पाहार आदि से मुनियों में आर्यिकाओं में तो है ही, श्रावक-श्राविकाओं में भी प्रचलित है।

इसी प्रकार से जो ब्रह्मचर्य व्रत के 180 मंत्र है उनमें पुरुषवर्ग के लिए करने योग्य मंत्र है। यथा–

ॐ ह्रीं मनसाकृत नरस्त्रीस्पर्शनेन्द्रिय विषयाब्रह्मविरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नमः। महिलाओं के प्रश्न आते है कि आप हमें ब्रह्मचर्यव्रत देते समय पुरुष के साथ संपर्क त्याग का नियम देते हैं न कि महिलाओं के संपर्क त्याग का, अतः ब्रह्मचर्यव्रत की भावना या शुद्धि हेतु ये मंत्र कैसे जपना? आदि।

मैंने इन 180 मंत्रों में से 'स्त्रीवाचक' शब्द निकाल कर जपने को लिखा है। अतः ये 180 मंत्र पुनः जोड़े हैं सभी आचार्य, मुनि और आर्यिकाएं इस विषय पर ध्यान दें और स्वयं आगे छपाने में स्त्रियों के लिए ऐसे मंत्र अवश्य जोड़ें तथा समिति और गुप्ति के मंत्रों से मैंने 'महाव्रत' शब्द निकाल दिया है, 'सर्वदोषप्रायश्चित्तविधि' मंत्रों के आधार से एवं महाव्रत पांच ही हैं, इस कथन के अनुसार ही संशोधन किया है।

इसी प्रकार सत्यमहाव्रत के मंत्रों में भी हरिवंशपुराण के आधार से श्लोक में नाम अलग हैं और आगे मंत्रों में कुछ अंतर है वह भी विचारणीय था अतः सुधारा है।

यथा—'**भीर्ष्या-स्वपक्ष-पैशून्य-क्रोध-लोभात्मशंसनैः। द्वासप्ततिर्निवर्ज्यैस्ते परनिन्दान्वितैरिति।।101।।**'

(विधि-चारित्रशुद्धि पृ. 3)

असत्य भाषण 8 प्रकार से होता है, जैसे-भी—भय, ईर्ष्या, स्वपक्ष-समर्थन, चुगुलखोरी, क्रोध, लोभ, आत्मप्रशंसा और पर की निन्दा।

मंत्र इस प्रकार है—"**ॐ ह्रीं मनसा कृताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।**"

यहां 'अभिख्यासत्य' का अर्थ मेरी समझ में नहीं आया है। मैंने मंत्र दिया है—

"**ॐ ह्रीं मनसा कृतभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।**"

आगे 'ईर्ष्या' का मंत्र इसमें नहीं है उस जगह पर परपक्ष- असत्य है तथा परनिंदा असत्य की जगह 'पराप्रशंसनासत्य' है। अतः ये मंत्र भी मैंने संशोधित किये हैं। यथा—

अन्यत्र से छपी हुई 'चारित्रशुद्धिव्रत' पुस्तक में छपे मंत्र-

ॐ ह्रीं मनसा कृताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत स्वपक्षासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत परपक्षासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत पैशुन्यासत्यसत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत क्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत लोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

ॐ ह्रीं मनसाकृत पराप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।

मैंने जो मंत्र संशोधित किए है-उनमें एक-एक नमूने यहाँ दिये है।

1. **ॐ ह्रीं मनसा कृतभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं मनसा कृतेर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं मनसा कृतस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधो-द्योतनाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं मनसा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं मनसा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं मनसा कृतपरनिन्दासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।**

ऐसे ही अन्यत्र से छपी पुस्तक में अचौर्यव्रत में 'उपधि अदत्तविरति' छूटा है अतः 'पानादत्तग्रहणविरति' के स्थान पर 'उपधिअदत्तविरति' मंत्र दिया है।

इसी प्रकार एषणासमिति में 46 दोषों में 'व्यपनिक' और 'चित्रयोग' दोष आये है। उनके स्थान पर मूलाचार के अनुसार 'वनीपक' और 'चूर्णदोष' के मंत्र दिये है तथा 'सर्वदोष प्रायश्चित्त विधि' के 33 मंत्रों में महाव्रत के बाद पाँच समितियों को पुनः तीनगुप्तियों को लिया है। इसी क्रम से मैंने इन मंत्रों को रखा है अतः इस संशोधित

ग्रंथ के अनुसार ही 1234 व्रत करने वाले सभी साधुवर्ग-मुनिगण-आर्यिकागण और श्रावक-श्राविकागण जाप्य करें, ऐसी मेरी प्रेरणा है। जो रत्नत्रय में अनुरागी मुमुक्षुवर्ग सम्यग्दर्शन, ज्ञान सहित इन तेरह प्रकार के चारित्र का व्रत करेंगे वे निश्चित ही अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने में सफल होंगे। यह व्रत सभी के स्वात्मसिद्धि में निमित्त बनें, यही मेरी मंगल कामना है।

हरिवंशपुराण के आधार से—

अनुष्टुप् — **चतुर्दशस्वहिंसार्थं जीवस्थानेषु भाविताः। त्रियोगनवकोटिघ्ना, ते षड्विंशं शतं स्फुटम्।।100।।**

भीर्ष्यास्वपक्षपैशुन्यक्रोधलोभात्मशंसनैः। द्वासप्ततिर्नवघ्नैस्ते परनिन्दान्वितैरिति।।101।।

ग्रामारण्यखलैकान्तैरन्यत्रोपध्यभुक्तकैः। सपुष्टग्रहणैः प्रागवद्द्वासप्ततिरमी मताः।।102।।

नृदेवाचित्ततिर्यक्स्त्रीरूपैः पञ्चेन्द्रियाहतैः। नवघ्नैः ब्रह्मचर्यैः स्युः, शतं तेऽशीतिमिश्रितम्।।103।।

उपजातिः — **चतुष्कषाया नव नोकषाया, मिथ्यात्वमेते द्विचतुःपदे च।**

क्षेत्रं च धान्यं च हि कुप्यभाण्डे, धनं च यानं शयनासनं च।।104।।

अन्तर्बहिर्भेदपरिग्रहास्ते, रन्ध्रैश्चतुर्विंशतिराहतास्तु।

ते द्वे शते षोडशसंयुते स्युर्महाव्रते स्यादुपवासभेदाः।।105।।

अनुष्टुप् — **षष्ठे दशोपवासाः स्युरनिच्छा नव कोटिभिः। प्रत्येकं नव विज्ञेया, त्रिगुप्तिसमितित्रिके।।106।।**

आर्या — **भावोपमाव्यवहारप्रतीत्यसंभावनासुभाषायाम्। जनपदसंवृतिनामस्थापनारूपा दश नवघ्नाः।।107।।**

अनुष्टुप् — **षट्चत्वारिंशद्दोषानेषणासमितौ मतान्। नवघ्नान् विघ्नितुं कार्यास्तावन्त उपवासकाः।।108।।**

त्रयोदशविधस्यैव चारित्रस्य विशुद्धये। विधौ चारित्रशुद्धौ स्युरुपवासाः प्रकीर्तिताः।।109।।

पाँच महाव्रत, तीन गुप्ति, पाँच समिति के भेद से चारित्र के तेरह भेद हैं। चारित्रशुद्धि विधि में इन सबकी शुद्धि के लिए पृथक्-पृथक् उपवास करने की प्रेरणा दी गई है। प्रथम ही अहिंसा महाव्रत है सो 1. बादर एकेन्द्रियपर्याप्तक 2. बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक 3. सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक 4. सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक 5. द्वीन्द्रिय पर्याप्तक 6. द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक 7. त्रीन्द्रिय पर्याप्तक 8. त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक 9. चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक 10. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक 11. असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक 12. असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक 13. संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक और 14. संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक। इन चौदह प्रकार के जीवस्थानों की हिंसा का त्याग मन-वचन-काययोग तथा कृत-कारित- अनुमोदना ($3\times3=9$) इन नौ कोटियों से करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर प्रथम अहिंसा व्रत के एक सौ छब्बीस उपवास होते हैं और एक-एक उपवास के बाद एक-एक पारणा होने से एक सौ छब्बीस ही पारणाएँ होती हैं।।100।।

दूसरा सत्य महाव्रत है सो 1. भय 2. ईर्ष्या 3. स्वपक्ष पुष्टि 4. पैशुन्य 5. क्रोध 6. लोभ 7. आत्मप्रशंसा और 8. परनिन्दा। इन आठ निमित्तों से बोले जाने वाले असत्य का पूर्वोक्त नौ कोटियों से त्याग करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर द्वितीय सत्य महाव्रत के बहत्तर उपवास होते हैं तथा उपवास के बाद एक-एक पारणा होने से बहत्तर ही पारणाएँ होती हैं।।101।।

तीसरा अचौर्य महाव्रत है सो 1. ग्राम 2. अरण्य 3. खलिहान 4. एकान्त 5. अन्यत्र 6. उपधि 7. अभुक्तक और 8. सपुष्टग्रहण। इन आठ भेदों से होने वाली चोरी का पूर्वोक्त नौ कोटियों से त्याग करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर तृतीय अचौर्य महाव्रत में बहत्तर उपवास होते हैं तथा प्रत्येक उपवास की एक-एक पारणा होने से बहत्तर ही पारणाएँ होती हैं।।102।।

चौथा ब्रह्मचर्य महाव्रत है सो मनुष्य, देव, अचित्त और तिर्यंच इन चार प्रकार की स्त्रियों का प्रथम ही स्पर्शनादि पाँच इन्द्रियों और तदनन्तर पूर्वोक्त नौ कोटियों से त्याग करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर $5\times4=20\times9=180$ एक सौ अस्सी उपवास होते हैं और इतनी ही पारणाएँ होती हैं।।103।।

पाँचवाँ परिग्रह त्याग महाव्रत है। सो चार कषाय, नौ नोकषाय और एक मिथ्यात्व इन चौदह प्रकार के

अन्तरंग और दोपाये, (दासी-दास आदि) चौपाये, (हाथी-घोड़ा आदि) खेत, अनाज, वस्त्र, बर्तन, सुवर्णादि धन, यान (सवारी), शयन और आसन-इन दस प्रकार के बाह्य, दोनों मिलाकर चौबीस प्रकार के परिग्रह का नौ कोटियों से त्याग करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर परिग्रहत्याग महाव्रत में दो सौ सोलह उपवास होते हैं और इतनी ही पारणाएँ होती हैं।।104-105।।

छठा रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत यद्यपि तेरह प्रकार के चारित्रों में परिगणित नहीं है तथापि गृहस्थ के संबंध से मुनियों पर भी असर आ सकता है अर्थात् गृहस्थ द्वारा रात्रि में बनायी हुई वस्तु को मुनि जानबूझकर ग्रहण करे तो उन्हें रात्रिभोजन का दोष लग सकता है। इस प्रकार के रात्रिभोजन का नौ कोटियों से त्याग करना चाहिए तथा अनिच्छा— दूसरे की जबर्दस्ती से भी रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिए। इस भावना को लेकर रात्रिभोजन त्याग व्रत में दश उपवास होते हैं और दश ही पारणाएँ होती हैं। मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति इन तीन गुप्तियों तथा ईर्या, आदान-निक्षेपण और प्रतिष्ठापन समिति इन तीन समितियों में प्रत्येक के नौ कोटियों की अपेक्षा नौ-नौ उपवास होते हैं अर्थात् तीन गुप्तियों के सत्ताईस उपवास और सत्ताईस पारणाएँ हैं तथा उपरिकथित तीन समितियों के भी सत्ताईस उपवास और सत्ताईस पारणाएँ जाननी चाहिए।।106।।

भाषा समिति में 1. भाव सत्य 2. उपमा सत्य 3. व्यवहार सत्य 4. प्रतीत सत्य 5. सम्भावना सत्य 6. जनपद सत्य 7. संवृत्ति सत्य 8. नाम सत्य 9. स्थापना सत्य और 10. रूप सत्य इन दश प्रकार के सत्य वचनों का नौ कोटियों से पालन करना पड़ता है। इस अभिप्राय को लेकर भाषा समिति में नब्बे उपवास होते हैं तथा इतनी ही पारणाएँ होती हैं।।107।।

और एषणा समिति में नौ कोटियों से लगने वाले छियालिस दोषों को नष्ट करने के लिए चार सौ चौदह उपवास होते हैं तथा उतनी ही पारणाएँ होती हैं।।108।।

इस प्रकार तेरह प्रकार के चारित्र को शुद्ध रखने के लिए चारित्रशुद्धि व्रत में सब मिलाकर एक हजार दो सौ चौंतीस उपवास कहे हैं तथा इतनी ही पारणाएँ कही गई हैं। इस व्रत में छह वर्ष दश माह आठ दिन लगते हैं।।109।।

विशेष—उपवासों की संख्या इस यंत्र से स्पष्ट जानना चाहिए— *कुल व्रतों का जोड़ - 676*

अहिंसा महाव्रत	14×9=	126	ईर्यासमिति	1×9=	9
सत्य महाव्रत	8×9=	72	भाषा समिति	10×9=	90
अचौर्य महाव्रत	8×9=	72	एषणा समिति	46×9=	414
ब्रह्मचर्य महाव्रत	20×9=	180	आदाननिक्षेपण समिति	1×9=	9
अपरिग्रह महाव्रत	24×9=	216	प्रतिष्ठापना समिति	1×9=	9
रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत	1×9=9+1=	10	मनोगुप्ति	1×9=	9
		676	वचनगुप्ति	1×9=	9
			कायगुप्ति	1×9=	9
					1234

इस प्रकार 1234 उपवास व इतने ही पारणे होते हैं।

विधि—प्रथम उपवास प्रथम पारणा, द्वितीय उपवास द्वितीय पारणा, तीसरा उपवास तीसरा पारणा, इस प्रकार आगे-आगे करते रहने से यह व्रत 6 वर्ष 10 महीने और 8 दिन में पूर्ण होता है और महीने में 10 उपवास करने पर 10 वर्ष साढ़े तीन मास में पूर्ण होते हैं।

कदाचित् ऐसी शक्ति न हो तो बीच-बीच में भी उपवास किये जा सकते हैं और 25-30 वर्ष में समाप्त किये जा सकते हैं पर उपवासों की संख्या कुल 1234 होनी चाहिए।

जो महानुभाव इस व्रत को निरतिचार पालन करते हैं उनके 13 प्रकार का निर्मल चारित्र पलता है। इस व्रत का विधान हरिवंशपुराण के 34वें सर्ग से लिया गया है।

कथा— मगध देश में राजगृही नगर का स्वामी राजा श्रेणिक न्यायपूर्वक राज्य शासन करता था। उसकी परम सुन्दरी और जिनधर्मपरायण श्रीमती चेलना पट्टरानी थी, सो जब विपुलाचल पर महावीर भगवान का समवसरण आया, तब राजा प्रजा सहित वंदना को गया और वंदना-स्तुति करके मनुष्यों की सभा में बैठकर धर्मोपदेश सुनने लगा।

पश्चात् राजा ने पूछा— हे प्रभु! षोडशकारण व्रत से तो तीर्थंकर पद मिलता ही है, परन्तु क्या अन्य प्रकार से भी मिल सकता है, सो कृपाकर कहिए। तब गौतम स्वामी ने कहा— राजन् सुनो! जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में अवन्ती देश है, वहाँ उज्जयिनी नगरी है, जहाँ हेमवर्मा राजा अपनी शिवसुन्दरी रानी सहित राज्य करता था।

एक दिन राजा वनक्रीड़ा करने को वन में गया था और वहाँ चारण मुनिराज को देखकर नमस्कार किया तथा मन में समताभाव धरकर विनय सहित पूछने लगा— भगवन्! कृपा करके बताइये कि मैं किस प्रकार तीर्थंकर पद प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करूँ? तब श्री गुरु ने कहा— राजन्! तुम बारह सौ चौंतीस व्रत करो। यह व्रत भादों सुदी 1 से प्रारंभ होता है इसमें 1234 उपवास करना चाहिए। एक महीने में 10 उपवास करने पर यह व्रत दश वर्ष और साढ़े तीन माह में पूरा होता है। व्रत के दिन आरंभ परिग्रह का त्याग कर भक्ति और पूजन में निमग्न रहे और **'ॐ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः'** इस मंत्र का 108 बार जाप करें। जब व्रत पूरा हो जावे, तब उद्यापन करें।

झारी, थाली, कलश आदि उपकरण चैत्यालय में भेंट करें, चौंसठ ग्रंथ बांटे, चार प्रकार का दान करे तथा 1234 लाडू श्रावकों के घर बांटे, पाठशालादि स्थापन करे इत्यादि और यदि उद्यापन की शक्ति न होवे तो दूना व्रत करें।

इस प्रकार राजा ने व्रत की विधि सुनकर उसे यथाविधि पालन किया व उद्यापन भी किया।

अन्त में समाधिमरण करके अच्युत स्वर्ग में देव हुआ। वहाँ से चयकर वह विदेह क्षेत्र के विजयापुरी में धनंजय राजा के चन्द्रभानु नाम का तीर्थंकर पदधारी पुत्र हुआ। उसके गर्भादिक पाँच कल्याणक हुए।

इस प्रकार राजा हेमवर्मा स्वर्ग के सुख भोगकर तीर्थंकर पद प्राप्त करके इस व्रत के प्रभाव से मोक्ष गया। इसलिए हे श्रेणिक! तीर्थंकर पद प्राप्त करने के लिए यह व्रत भी एक साधन है।

यह सुनकर राजा श्रेणिक ने भी श्रद्धासहित इस व्रत को धारण किया और षोडशकारण भावनाएँ भी भायीं सो तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया। अब आगामी चौबीसी में वे प्रथम तीर्थंकर होकर मोक्ष जावेंगे। इस प्रकार और भी जो भव्य जीव इस व्रत का पालन करेंगे, वे भी उत्तमोत्तम सुखों को पाकर मोक्षपद प्राप्त करेंगे।

चारित्रशुद्धिव्रत की 1234 पृथक्-पृथक् जाप्य-

अहिंसा महाव्रत के १२६ मंत्र

१. ॐ ह्रीं मनसा कृतबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।

२. ॐ ह्रीं मनसा कारितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४. ॐ ह्रीं वचसा कृतबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

५. ॐ ह्रीं वचसा कारितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।

९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितबादरपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः १

१०. ॐ ह्रीं मनसा कृतबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
११. ॐ ह्रीं मनसा कारितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१३. ॐ ह्रीं वचसा कृतबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१४. ॐ ह्रीं वचसा कारितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितबादरापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य द्वितीय प्रकारः २

१९. ॐ ह्रीं मनसा कृतसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२०. ॐ ह्रीं मनसा कारितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२२. ॐ ह्रीं वचसा कृतसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२३. ॐ ह्रीं वचसा कारितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसूक्ष्मपर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ३

२८. ॐ ह्रीं मनसा कृतसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२९. ॐ ह्रीं मनसा कारितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३१. ॐ ह्रीं वचसा कृतसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३२. ॐ ह्रीं वचसा कारितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसूक्ष्मापर्याप्तैकेन्द्रियहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः ४

३७. ॐ ह्रीं मनसा कृतद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३८. ॐ ह्रीं मनसा कारितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४०. ॐ ह्रीं वचसा कृतद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४१. ॐ ह्रीं वचसा कारितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

४४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः ५

४६. ॐ ह्रीं मनसा कृतद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४७. ॐ ह्रीं मनसा कारितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४९. ॐ ह्रीं वचसा कृतद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
५०. ॐ ह्रीं वचसा कारितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
५१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
५२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
५३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
५४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ६

५५. ॐ ह्रीं मनसा कृतत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
५६. ॐ ह्रीं मनसा कारितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
५७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
५८. ॐ ह्रीं वचसा कृतत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
५९. ॐ ह्रीं वचसा कारितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६३.ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितत्रीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः ७

६४. ॐ ह्रीं मनसा कृतत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६५. ॐ ह्रीं मनसा कारितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६७. ॐ ह्रीं वचसा कृतत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६८. ॐ ह्रीं वचसा कारितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितत्रीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ८

७३. ॐ ह्रीं मनसा कृतचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७४. ॐ ह्रीं मनसा कारितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७६. ॐ ह्रीं वचसा कृतचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७७. ॐ ह्रीं वचसा कारितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचतुरिन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य नवमः प्रकारः ९

८२. ॐ ह्रीं मनसा कृतचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
८३. ॐ ह्रीं मनसा कारितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
८४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
८५. ॐ ह्रीं वचसा कृतचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
८६. ॐ ह्रीं वचसा कारितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
८७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचतुरिन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य दशमः प्रकारः १०

९१. ॐ ह्रीं मनसा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
९२. ॐ ह्रीं मनसा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
९३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
९४. ॐ ह्रीं वचसा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
९५. ॐ ह्रीं वचसा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
९६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
९७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
९८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य एकादशः प्रकारः ११

१००. ॐ ह्रीं मनसा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०१. ॐ ह्रीं मनसा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०३. ॐ ह्रीं वचसा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१०४. ॐ ह्रीं वचसा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१०७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितासंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अहिंसामहाव्रतस्य द्वादशः प्रकारः १२

१०९. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
११०. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
१११. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
११२. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
११३. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
११४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
११५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
११६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
११७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति अहिंसामहाव्रतस्य त्रयोदशः प्रकारः १३

११८. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
११९. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
१२०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
१२१. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
१२२. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
१२३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
१२४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
१२५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
१२६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति अहिंसामहाव्रतस्य चतुर्दशः प्रकारः १४

सत्य महाव्रत के ७२ मंत्र

१२७. ॐ ह्रीं मनसा कृतभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
१२८. ॐ ह्रीं मनसा कारितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
१२९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
१३०. ॐ ह्रीं वचसा कृतभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
१३१. ॐ ह्रीं वचसा कारितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
१३२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
१३३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
१३४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
१३५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभयनिमित्तासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति सत्यमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः १५

१३६. ॐ ह्रीं मनसा कृतईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥१॥
१३७. ॐ ह्रीं मनसा कारितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥२॥
१३८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥३॥
१३९. ॐ ह्रीं वचसा कृतईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥४॥
१४०. ॐ ह्रीं वचसा कारितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥५॥

१४१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥६॥
१४२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥७॥
१४३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥८॥
१४४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितईर्ष्यानिमित्तासत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥९॥

इति सत्यमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः १६

१४५. ॐ ह्रीं मनसा कृतस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥१॥
१४६. ॐ ह्रीं मनसा कारितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥२॥
१४७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥३॥
१४८. ॐ ह्रीं वचसा कृतस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥४॥
१४९. ॐ ह्रीं वचसा कारितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥५॥
१५०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥६॥
१५१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥७॥
१५२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥८॥
१५३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितस्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिमहाव्रताय नमः॥९॥

इति सत्यमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः १७

१५४. ॐ ह्रीं मनसा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
१५५. ॐ ह्रीं मनसा कारितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
१५६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
१५७. ॐ ह्रीं वचसा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
१५८. ॐ ह्रीं वचसा कारितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
१५९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
१६०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
१६१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
१६२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति सत्यमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः १८

१६३. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
१६४. ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
१६५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
१६६. ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
१६७. ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
१६८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
१६९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
१७०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
१७१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति सत्यमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः १९

१७२. ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
१७३. ॐ ह्रीं मनसा कारितलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
१७४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
१७५. ॐ ह्रीं वचसा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥

१७६. ॐ ह्रीं वचसा कारितलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
१७७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
१७८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
१७९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
१८०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलोभासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति सत्यमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः २०

१८१. ॐ ह्रीं मनसा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
१८२. ॐ ह्रीं मनसा कारितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
१८३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
१८४. ॐ ह्रीं वचसा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
१८५. ॐ ह्रीं वचसा कारितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
१८६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
१८७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
१८८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
१८९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति सत्यमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः २१

१९०. ॐ ह्रीं मनसा कृतपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
१९१. ॐ ह्रीं मनसा कारितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
१९२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
१९३. ॐ ह्रीं वचसा कृतपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
१९४. ॐ ह्रीं वचसा कारितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
१९५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
१९६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
१९७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
१९८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपरनिन्दा-असत्यविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति सत्यमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः २२

अचौर्य महाव्रत के ७२ मंत्र

१९९. ॐ ह्रीं मनसा कृतग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
२००. ॐ ह्रीं मनसा कारितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
२०१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
२०२. ॐ ह्रीं वचसा कृतग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
२०३. ॐ ह्रीं वचसा कारितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
२०४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
२०५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
२०६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
२०७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति अचौर्यमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः २३

२०८. ॐ ह्रीं मनसा कृतारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२०९. ॐ ह्रीं मनसा कारितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२१०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२११. ॐ ह्रीं वचसा कृतारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२१२. ॐ ह्रीं वचसा कारितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२१३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२१४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२१५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२१६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः २४

२१७. ॐ ह्रीं मनसा कृतखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२१८. ॐ ह्रीं मनसा कारितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२१९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२२०. ॐ ह्रीं वचसा कृतखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२२१. ॐ ह्रीं वचसा कारितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२२२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२२३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२२४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२२५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः २५

२२६. ॐ ह्रीं मनसा कृतैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२२७. ॐ ह्रीं मनसा कारितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२२८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२२९. ॐ ह्रीं वचसा कृतैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२३०. ॐ ह्रीं वचसा कारितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२३१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२३२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२३३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२३४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः २६

२३५. ॐ ह्रीं मनसा कृतान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२३६. ॐ ह्रीं मनसा कारितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२३७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२३८. ॐ ह्रीं वचसा कृतान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२३९. ॐ ह्रीं वचसा कारितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२४०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

२४१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२४२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२४३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः २७

२४४. ॐ ह्रीं मनसा कृतउपधि-अदत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२४५. ॐ ह्रीं मनसा कारितउपधि-अदत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२४६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितउपधि-अदत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२४७. ॐ ह्रीं वचसा कृतउपधि-अदत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२४८. ॐ ह्रीं वचसा कारितउपधि-अदत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२४९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितउपधि-अदत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२५०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतउपधि-अदत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२५१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितउपधि-अदत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२५२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितउपधि-अदत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः २८

२५३. ॐ ह्रीं मनसा कृताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२५४. ॐ ह्रीं मनसा कारिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२५५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२५६. ॐ ह्रीं वचसा कृताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२५७. ॐ ह्रीं वचसा कारिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२५८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२५९. ॐ ह्रीं वपुषा कृताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२६०. ॐ ह्रीं वपुषा कारिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२६१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः २९

२६२. ॐ ह्रीं मनसा कृतापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२६३. ॐ ह्रीं मनसा कारितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२६४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२६५. ॐ ह्रीं वचसा कृतापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२६६. ॐ ह्रीं वचसा कारितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२६७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२६८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२६९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२७०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत- प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अचौर्यमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ३०

ब्रह्मचर्य महाव्रत के १८० मंत्र

(यहाँ से (पृ. ६२ से पृ. ६७ तक) १८० मंत्रों को मुनि, श्रावक आदि पुरुषवर्ग जपें)

२७१. ॐ ह्रीं मनसा कृतनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२७२. ॐ ह्रीं मनसा कारितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२७३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२७४. ॐ ह्रीं वचसा कृतनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२७५. ॐ ह्रीं वचसा कारितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२७६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२७७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२७८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२७९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनारीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः ३१

केवल पुरुषवर्ग जपें—

२८०. ॐ ह्रीं मनसा कृतनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२८१. ॐ ह्रीं मनसा कारितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२८२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२८३. ॐ ह्रीं वचसा कृतनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२८४. ॐ ह्रीं वचसा कारितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२८५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२८६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२८७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२८८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनारीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः ३२

केवल पुरुषवर्ग जपें—

२८९. ॐ ह्रीं मनसा कृतनारीघ्राणेद्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२९०. ॐ ह्रीं मनसा कारितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२९१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२९२. ॐ ह्रीं वचसा कृतनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२९३. ॐ ह्रीं वचसा कारितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२९४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२९५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
२९६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
२९७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनारीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ३३

केवल पुरुषवर्ग जपें—

२९८. ॐ ह्रीं मनसा कृतनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२९९. ॐ ह्रीं मनसा कारितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३००. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३०१. ॐ ह्रीं वचसा कृतनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३०२. ॐ ह्रीं वचसा कारितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३०३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३०४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३०५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३०६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनारीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः ३४

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३०७. ॐ ह्रीं मनसा कृतनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३०८. ॐ ह्रीं मनसा कारितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३०९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३१०. ॐ ह्रीं वचसा कृतनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३११. ॐ ह्रीं वचसा कारितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३१२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३१३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३१४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३१५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनारीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः ३५

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३१६. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३१७. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३१८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३१९. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३२०. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३२१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३२२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३२३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३२४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ३६

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३२५. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३२६. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३२७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३२८. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३२९. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३३०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३३१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३३२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३३३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः ३७

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३३४. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३३५. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३३६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३३७. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३३८. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३३९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३४०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३४१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३४२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ३८

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३४३. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३४४. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३४५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३४६. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३४७. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३४८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३४९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३५०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३५१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य नवमः प्रकारः ३९

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३५२. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३५३. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३५४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३५५. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३५६. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३५७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३५८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३५९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३६०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य दशमः प्रकारः ४०

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३६१. ॐ ह्रीं मनसा कृततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३६२. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

३६३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३६४. ॐ ह्रीं वचसा कृततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३६५. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३६६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३६७. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३६८. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३६९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिरश्चीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यैकादशः प्रकारः ४१

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३७०. ॐ ह्रीं मनसा कृततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३७१. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३७२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३७३. ॐ ह्रीं वचसा कृततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३७४. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३७५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३७६. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३७७. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३७८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य द्वादशः प्रकारः ४२

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३७९. ॐ ह्रीं मनसा कृततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३८०. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३८१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३८२. ॐ ह्रीं वचसा कृततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३८३. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३८४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३८५. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३८६. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३८७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य त्रयोदशः प्रकारः ४३

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३८८. ॐ ह्रीं मनसा कृततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३८९. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३९०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३९१. ॐ ह्रीं वचसा कृततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३९२. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३९३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३९४. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३९५. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३९६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य चतुर्दशः प्रकारः ४४

केवल पुरुषवर्ग जपें—

३९७. ॐ ह्रीं मनसा कृततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३९८. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३९९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४००. ॐ ह्रीं वचसा कृततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४०१. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४०२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४०३. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४०४. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४०५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य पंचदशः प्रकारः ४५

केवल पुरुषवर्ग जपें—

४०६. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४०७. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४०८.ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४०९. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४१०. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४११. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४१२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४१३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४१४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य षोडशः प्रकारः ४६

केवल पुरुषवर्ग जपें—

४१५. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४१६. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४१७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४१८. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४१९. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४२०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४२१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४२२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४२३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य सप्तदशः प्रकारः ४७

केवल पुरुषवर्ग जपें—

४२४. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४२५. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

४२६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४२७. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४२८. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४२९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४३०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४३१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४३२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्याष्टादशः प्रकारः ४८

केवल पुरुषवर्ग जपें—

४३३. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४३४. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४३५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४३६. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४३७. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४३८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४३९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४४०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४४१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यैकोनविंशः प्रकारः ४९

केवल पुरुषवर्ग जपें—

४४२. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४४३. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४४४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४४५. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४४६. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४४७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४४८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४४९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४५०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य विंशतितमः प्रकारः ५०

(आर्यिकाएं, श्राविकाएं आदि महिलाएँ पृ. ६७ से पृ. ७३ तक इन १८० मंत्रों को जपें)

२७१. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
२७२. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
२७३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
२७४. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
२७५. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
२७६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
२७७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

२७८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥८॥
२७९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥९॥

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः १

केवल महिलाएँ जपें—

२८०. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१॥
२८१. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२॥
२८२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥३॥
२८३. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥४॥
२८४. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥५॥
२८५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥६॥
२८६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥७॥
२८७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥८॥
२८८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥९॥

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः २

केवल महिलाएँ जपें—

२८९. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१॥
२९०. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२॥
२९१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥३॥
२९२. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥४॥
२९३. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥५॥
२९४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥६॥
२९५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥७॥
२९६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥८॥
२९७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥९॥

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ३

केवल महिलाएँ जपें—

२९८. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥१॥
२९९. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२॥
३००. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥३॥
३०१. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥४॥
३०२. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥५॥
३०३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥६॥
३०४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥७॥
३०५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥८॥
३०६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥९॥

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः ४

केवल महिलाएँ जपें—

३०७. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
३०८. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
३०९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
३१०. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
३११. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
३१२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
३१३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
३१४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
३१५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः ५

केवल महिलाएँ जपें—

३१६. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
३१७. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
३१८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
३१९. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
३२०. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
३२१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
३२२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
३२३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
३२४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ६

केवल महिलाएँ जपें—

३२५. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
३२६. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
३२७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
३२८. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
३२९. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
३३०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
३३१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
३३२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
३३३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः ७

केवल महिलाएँ जपें—

३३४. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
३३५. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
३३६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥

३३७. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३३८. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३३९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३४०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३४१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३४२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ८

केवल महिलाएँ जपें—

३४३. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३४४. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३४५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३४६. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३४७. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३४८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३४९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३५०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३५१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य नवमः प्रकारः ९

केवल महिलाएँ जपें—

३५२. ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३५३. ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३५४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३५५. ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३५६. ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३५७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३५८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३५९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३६०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य दशमः प्रकारः १०

केवल महिलाएँ जपें—

३६१. ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३६२. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३६३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३६४. ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३६५. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३६६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३६७. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

३६८. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३६९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यैकादशः प्रकारः ११

केवल महिलाएँ जपें—

३७०.ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३७४. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३७२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३७३. ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३७४. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३७५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३७६. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३७७. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३७८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्यग्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य द्वादशः प्रकारः १२

केवल महिलाएँ जपें—

३७९. ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्यग्घ्राणेद्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३८०. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३८१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३८२. ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३८३. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३८४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३८५. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३८६. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३८७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य त्रयोदशः प्रकारः १३

केवल महिलाएँ जपें—

३८८. ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३८९. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३९०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
३९१. ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
३९२. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
३९३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
३९४. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
३९५. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
३९६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य चतुर्दशः प्रकारः १४

केवल महिलाएँ जपें—

३९७. ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
३९८. ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
३९९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४००. ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४०१. ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४०२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४०३. ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४०४. ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४०५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य पंचदशः प्रकारः १५

केवल महिलाएँ जपें—

४०६. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४०७. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४०८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४०९. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४१०. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४११. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४१२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४१३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४१४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य षोडशः प्रकारः १६

केवल महिलाएँ जपें—

४१५. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४१६. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४१७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४१८. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४१९. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४२०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४२१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४२२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४२३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य सप्तदशः प्रकारः १७

केवल महिलाएँ जपें—

४२४. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तपुरुषघ्राणेद्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४२५. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४२६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

४२७. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४२८. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४२९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४३०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४३१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४३२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्याष्टादशः प्रकारः १८

केवल महिलाएँ जपें—

४३३. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४३४. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४३५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४३६. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४३७. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४३८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४३९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४४०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४४१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यैकोनविंशः प्रकारः १९

केवल महिलाएँ जपें—

४४२. ॐ ह्रीं मनसा कृतअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४४३. ॐ ह्रीं मनसा कारितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४४४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४४५. ॐ ह्रीं वचसा कृतअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४४६. ॐ ह्रीं वचसा कारितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४४७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४४८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४४९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४५०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्य विंशतितमः प्रकारः २०

अपरिग्रह महाव्रत के २१६ मंत्र

४५१. ॐ ह्रीं मनसा कृतमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४५२. ॐ ह्रीं मनसा कारितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४५३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४५४. ॐ ह्रीं वचसा कृतमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४५५. ॐ ह्रीं वचसा कारितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

४५६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
४५७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
४५८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
४५९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः ५१

४६०. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
४६१. ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
४६२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
४६३. ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
४६४. ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
४६५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
४६६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
४६७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
४६८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः ५२

४६९. ॐ ह्रीं मनसा कृतमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
४७०. ॐ ह्रीं मनसा कारितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
४७१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
४७२. ॐ ह्रीं वचसा कृतमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
४७३. ॐ ह्रीं वचसा कारितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
४७४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
४७५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
४७६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
४७७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ५३

४७८. ॐ ह्रीं मनसा कृतमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
४७९. ॐ ह्रीं मनसा कारितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
४८०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
४८१. ॐ ह्रीं वचसा कृतमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
४८२. ॐ ह्रीं वचसा कारितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
४८३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
४८४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
४८५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
४८६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः ५४

४८७. ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
४८८. ॐ ह्रीं मनसा कारितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥

४८९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४९०. ॐ ह्रीं वचसा कृतलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
४९१. ॐ ह्रीं वचसा कारितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
४९२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
४९३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
४९४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
४९५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः ५५

४९६. ॐ ह्रीं मनसा कृतहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
४९७. ॐ ह्रीं मनसा कारितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
४९८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
४९९. ॐ ह्रीं वचसा कृतहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
५००. ॐ ह्रीं वचसा कारितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
५०१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
५०२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
५०३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
५०४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ५६

५०५. ॐ ह्रीं मनसा कृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
५०६. ॐ ह्रीं मनसा कारितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
५०७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
५०८. ॐ ह्रीं वचसा कृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
५०९. ॐ ह्रीं वचसा कारितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
५१०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
५११. ॐ ह्रीं वपुषा कृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
५१२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
५१३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः ५७

५१४. ॐ ह्रीं मनसा कृताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
५१५. ॐ ह्रीं मनसा कारिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
५१६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
५१७. ॐ ह्रीं वचसा कृताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
५१८. ॐ ह्रीं वचसा कारिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
५१९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
५२०. ॐ ह्रीं वपुषा कृताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
५२१. ॐ ह्रीं वपुषा कारिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
५२२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ५८

५२३. ॐ ह्रीं मनसा कृतशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।१।।
५२४. ॐ ह्रीं मनसा कारितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।२।।
५२५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।३।।
५२६. ॐ ह्रीं वचसा कृतशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।४।।
५२७. ॐ ह्रीं वचसा कारितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।५।।
५२८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।६।।
५२९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।७।।
५३०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।८।।
५३१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्यः नवमः प्रकारः ५९

५३२. ॐ ह्रीं मनसा कृतभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।१।।
५३३. ॐ ह्रीं मनसा कारितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।२।।
५३४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।३।।
५३५. ॐ ह्रीं वचसा कृतभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।४।।
५३६. ॐ ह्रीं वचसा कारितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।५।।
५३७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।६।।
५३८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।७।।
५३९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।८।।
५४०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्यः दशमः प्रकारः ६०

५४१. ॐ ह्रीं मनसा कृतजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।१।।
५४२. ॐ ह्रीं मनसा कारितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।२।।
५४३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।३।।
५४४. ॐ ह्रीं वचसा कृतजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।४।।
५४५. ॐ ह्रीं वचसा कारितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।५।।
५४६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।६।।

५४७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।७।।
५४८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।८।।
५४९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्यैकादशः प्रकारः ६१

५५०. ॐ ह्रीं मनसा कृतस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।१।।
५५१. ॐ ह्रीं मनसा कारितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।२।।
५५२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।३।।
५५३. ॐ ह्रीं वचसा कृतस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।४।।
५५४. ॐ ह्रीं वचसा कारितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।५।।
५५५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।।६।।

५५६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
५५७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
५५८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य द्वादशः प्रकारः ६२

५५९. ॐ ह्रीं मनसा कृतपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
५६०. ॐ ह्रीं मनसा कारितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
५६१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
५६२. ॐ ह्रीं वचसा कृतपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
५६३. ॐ ह्रीं वचसा कारितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
५६४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
५६५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
५६६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
५६७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य त्रयोदशः प्रकारः ६३

५६८. ॐ ह्रीं मनसा कृतनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
५६९. ॐ ह्रीं मनसा कारितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
५७०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
५७१. ॐ ह्रीं वचसा कृतनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
५७२. ॐ ह्रीं वचसा कारितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
५७३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
५७४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
५७५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
५७६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य चतुर्दशः प्रकारः ६४

५७७. ॐ ह्रीं मनसा कृतद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
५७८. ॐ ह्रीं मनसा कारितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
५७९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
५८०. ॐ ह्रीं वचसा कृतद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
५८१. ॐ ह्रीं वचसा कारितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
५८२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
५८३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
५८४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
५८५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य पंचदशः प्रकारः ६५

५८६. ॐ ह्रीं मनसा कृतचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
५८७. ॐ ह्रीं मनसा कारितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
५८८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

५८९. ॐ ह्रीं वचसा कृतचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
५९०. ॐ ह्रीं वचसा कारितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
५९१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
५९२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
५९३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
५९४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य षोडशः प्रकारः ६६

५९५. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
५९६. ॐ ह्रीं मनसा कारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
५९७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
५९८. ॐ ह्रीं वचसा कृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
५९९. ॐ ह्रीं वचसा कारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६००. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६०१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६०२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६०३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य सप्तदशः प्रकारः ६७

६०४. ॐ ह्रीं मनसा कृतधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६०५. ॐ ह्रीं मनसा कारितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६०६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६०७. ॐ ह्रीं वचसा कृतधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६०८. ॐ ह्रीं वचसा कारितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६०९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६१०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६११. ॐ ह्रीं वपुषा कारितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६१२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य अष्टादशः प्रकारः ६८

६१३. ॐ ह्रीं मनसा कृतकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६१४. ॐ ह्रीं मनसा कारितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६१५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६१६. ॐ ह्रीं वचसा कृतकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६१७. ॐ ह्रीं वचसा कारितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६१८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६१९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६२०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६२१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्यैकोनविंशः प्रकारः ६९

६२२. ॐ ह्रीं मनसा कृतभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६२३. ॐ ह्रीं मनसा कारितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६२४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६२५. ॐ ह्रीं वचसा कृतभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६२६. ॐ ह्रीं वचसा कारितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६२७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६२८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६२९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६३०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य विंशतिमः प्रकारः ७०

६३१. ॐ ह्रीं मनसा कृतधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६३२. ॐ ह्रीं मनसा कारितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६३३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६३४. ॐ ह्रीं वचसा कृतधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६३५. ॐ ह्रीं वचसा कारितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६३६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६३७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६३८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६३९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्यैकविंशः प्रकारः ७१

६४०. ॐ ह्रीं मनसा कृतयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६४१. ॐ ह्रीं मनसा कारितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६४२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६४३. ॐ ह्रीं वचसा कृतयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६४४. ॐ ह्रीं वचसा कारितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६४५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६४६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६४७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६४८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य द्वाविंशः प्रकारः ७२

६४९. ॐ ह्रीं मनसा कृतशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६५०. ॐ ह्रीं मनसा कारितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६५१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६५२. ॐ ह्रीं वचसा कृतशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६५३. ॐ ह्रीं वचसा कारितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६५४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

६५५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६५६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६५७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य त्रयोविंशः प्रकारः ७३

६५८. ॐ ह्रीं मनसा कृतासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६५९. ॐ ह्रीं मनसा कारितासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६६०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६६१. ॐ ह्रीं वचसा कृतासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६६२. ॐ ह्रीं वचसा कारितासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६६३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६६४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६६५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६६६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितासनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य चतुर्विंशः प्रकारः ७४

रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत के १० मंत्र

६६७. ॐ ह्रीं मनसा कृतरात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६६८. ॐ ह्रीं मनसा कारितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६६९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६७०. ॐ ह्रीं वचसा कृतरात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६७१. ॐ ह्रीं वचसा कारितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६७२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६७३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतरात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६७४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६७५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।
६७६. ॐ ह्रीं अनिच्छा-रात्रिभोजनविरत्यणुव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१०।।

इति रात्रिभोजनविरतिअणुव्रतस्य प्रकारः ७५

ईर्यासमिति के ९ मंत्र

६७७. ॐ ह्रीं मनसा कृतेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६७८. ॐ ह्रीं मनसा कारितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६७९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६८०. ॐ ह्रीं वचसा कृतेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६८१. ॐ ह्रीं वचसा कारितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६८२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६८३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६८४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६८५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितेर्य्यासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति ईर्यासमितिचारित्रस्य प्रकारः ७६

भाषासमिति के ९० मंत्र

६८६. ॐ ह्रीं मनसा कृतभावसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६८७. ॐ ह्रीं मनसा कारितभावसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६८८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभावसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६८९. ॐ ह्रीं वचसा कृतभावसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६९०. ॐ ह्रीं वचसा कारितभावसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
६९१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभावसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
६९२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतभावसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
६९३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितभावसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
६९४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभावसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य प्रथमः प्रकारः ७७

६९५. ॐ ह्रीं मनसा कृतोपमासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
६९६. ॐ ह्रीं मनसा कारितोपमासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
६९७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितोपमासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
६९८. ॐ ह्रीं वचसा कृतोपमासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
६९९. ॐ ह्रीं वचसा कारितोपमासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७००. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितोपमासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७०१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतोपमासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७०२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितोपमासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७०३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितोपमासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य द्वितीयः प्रकारः ७८

७०४. ॐ ह्रीं मनसा कृतव्यवहारसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७०५. ॐ ह्रीं मनसा कारितव्यवहारसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७०६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितव्यवहारसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७०७. ॐ ह्रीं वचसा कृतव्यवहारसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
७०८. ॐ ह्रीं वचसा कारितव्यवहारसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७०९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितव्यवहारसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७१०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतव्यवहारसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७११. ॐ ह्रीं वपुषा कारितव्यवहारसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७१२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितव्यवहारसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य तृतीयः प्रकारः ७९

७१३. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रतीतसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७१४. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रतीतसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७१५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रतीतसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७१६. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रतीतसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
७१७. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रतीतसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७१८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रतीतसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

७१९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रतीतसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७२०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रतीतसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७२१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रतीतसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य चतुर्थः प्रकारः ८०

७२२. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंभावनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७२३. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंभावनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७२४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंभावनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७२५. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंभावनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
७२६. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंभावनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७२७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंभावनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७२८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंभावनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७२९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंभावनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७३०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंभावनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य पंचमः प्रकारः ८१

७३१. ॐ ह्रीं मनसा कृतजनपदसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७३२. ॐ ह्रीं मनसा कारितजनपदसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७३३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितजनपदसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७३४. ॐ ह्रीं वचसा कृतजनपदसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
७३५. ॐ ह्रीं वचसा कारितजनपदसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७३६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितजनपदसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७३७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतजनपदसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७३८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितजनपदसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७३९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितजनपदसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य षष्ठः प्रकारः ८२

७४०. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंवृतिसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७४१. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंवृतिसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७४२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंवृतिसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७४३. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंवृतिसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
७४४. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंवृतिसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७४५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंवृतिसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७४६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंवृतिसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७४७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंवृतिसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७४८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंवृतिसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य सप्तमः प्रकारः ८३

७४९. ॐ ह्रीं मनसा कृतनामसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७५०. ॐ ह्रीं मनसा कारितनामसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७५१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनामसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७५२. ॐ ह्रीं वचसा कृतनामसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

७५३. ॐ ह्रीं वचसा कारितनामसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७५४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनामसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७५५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनामसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७५६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनामसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७५७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनामसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्याष्टमः प्रकारः ८४

७५८. ॐ ह्रीं मनसा कृतस्थापनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७५९. ॐ ह्रीं मनसा कारितस्थापनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७६०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितस्थापनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७६१. ॐ ह्रीं वचसा कृतस्थापनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
७६२. ॐ ह्रीं वचसा कारितस्थापनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७६३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितस्थापनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७६४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतस्थापनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७६५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितस्थापनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७६६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितस्थापनासत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य नवमः प्रकारः ८५

७६७. ॐ ह्रीं मनसा कृतरूपसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७६८. ॐ ह्रीं मनसा कारितरूपसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७६९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितरूपसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७७०. ॐ ह्रीं वचसा कृतरूपसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
७७१. ॐ ह्रीं वचसा कारितरूपसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७७२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितरूपसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७७३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतरूपसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७७४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितरूपसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७७५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितरूपसत्यभाषासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिचारित्रस्य दशमः प्रकारः ८६

एषणा समिति के ४१४ मंत्र

७७६. ॐ ह्रीं मनसा कृतधात्रीदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७७७. ॐ ह्रीं मनसा कारितधात्रीदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७७८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधात्रीदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७७९. ॐ ह्रीं वचसा कृतधात्रीदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
७८०. ॐ ह्रीं वचसा कारितधात्रीदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७८१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधात्रीदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७८२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतधात्रीदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७८३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितधात्रीदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७८४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधात्रीदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति धात्रीदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य प्रथमः प्रकारः ८७

७८५. ॐ ह्रीं मनसा कृतदूतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७८६. ॐ ह्रीं मनसा कारितदूतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७८७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदूतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७८८. ॐ ह्रीं वचसा कृतदूतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
७८९. ॐ ह्रीं वचसा कारितदूतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७९०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदूतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
७९१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदूतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
७९२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदूतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
७९३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदूतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति दूतदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य द्वितीयः प्रकारः ८८

७९४. ॐ ह्रीं मनसा कृतनिमित्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
७९५. ॐ ह्रीं मनसा कारितनिमित्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
७९६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिमित्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
७९७. ॐ ह्रीं वचसा कृतनिमित्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
७९८. ॐ ह्रीं वचसा कारितनिमित्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
७९९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनिमित्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८००. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनिमित्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८०१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनिमित्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८०२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनिमित्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति निमित्तदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य तृतीयः प्रकारः ८९

८०३. ॐ ह्रीं मनसा कृताऽजीवकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
८०४. ॐ ह्रीं मनसा कारिताऽजीवकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
८०५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताऽजीवकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
८०६. ॐ ह्रीं वचसा कृताऽजीवकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
८०७. ॐ ह्रीं वचसा कारिताऽजीवकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
८०८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताऽजीवकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८०९. ॐ ह्रीं वपुषा कृताऽजीवकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८१०. ॐ ह्रीं वपुषा कारिताऽजीवकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८११. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताऽजीवकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति आजीवनदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य चतुर्थः प्रकारः ९०

८१२. ॐ ह्रीं मनसा कृतवनीपकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
८१३. ॐ ह्रीं मनसा कारितवनीपकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
८१४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितवनीपकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
८१५. ॐ ह्रीं वचसा कृतवनीपकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
८१६. ॐ ह्रीं वचसा कारितवनीपकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
८१७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितवनीपकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८१८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतवनीपकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

८१९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितवनीपकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८२०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितवनीपकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति वनीपकदोषरहितैषणासमिति चारित्रस्य पंचमः प्रकारः ९१

८२१. ॐ ह्रीं मनसा कृतचिकित्सादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
८२२. ॐ ह्रीं मनसा कारितचिकित्सादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
८२३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचिकित्सादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
८२४. ॐ ह्रीं वचसा कृतचिकित्सादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
८२५. ॐ ह्रीं वचसा कारितचिकित्सादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
८२६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचिकित्सादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८२७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतचिकित्सादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८२८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितचिकित्सादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८२९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचिकित्सादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति चिकित्सादोषरहितैषणासमिति चारित्रस्य षष्ठः प्रकारः ९२

८३०. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
८३१. ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रोधदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
८३२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रोधदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
८३३. ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रोधदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
८३४. ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रोधदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
८३५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रोधदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८३६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रोधदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८३७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रोधदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८३८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रोधदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति क्रोधदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य सप्तमः प्रकारः ९३

८३९. ॐ ह्रीं मनसा कृतमानदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
८४०. ॐ ह्रीं मनसा कारितमानदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
८४१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमानदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
८४२. ॐ ह्रीं वचसा कृतमानदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
८४३. ॐ ह्रीं वचसा कारितमानदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
८४४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमानदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८४५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमानदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८४६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमानदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८४७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमानदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मानदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य अष्टमः प्रकारः ९४

८४८. ॐ ह्रीं मनसा कृतमायादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
८४९. ॐ ह्रीं मनसा कारितमायादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
८५०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमायादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
८५१. ॐ ह्रीं वचसा कृतमायादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

८५२. ॐ ह्रीं वचसा कारितमायादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
८५३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमायादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८५४.ॐ ह्रीं वपुषा कृतमायादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८५५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमायादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८५६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमायादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मायादोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य नवमः प्रकारः ९५

८५७. ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
८५८. ॐ ह्रीं मनसा कारितलोभदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
८५९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलोभदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
८६०. ॐ ह्रीं वचसा कृतलोभदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
८६१. ॐ ह्रीं वचसा कारितलोभदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
८६२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलोभदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८६३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतलोभदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८६४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितलोभदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८६५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलोभदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति लोभदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य दशमः प्रकारः ९६

८६६. ॐ ह्रीं मनसा कृतपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
८६७. ॐ ह्रीं मनसा कारितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
८६८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
८६९. ॐ ह्रीं वचसा कृतपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
८७०. ॐ ह्रीं वचसा कारितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
८७१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८७२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८७३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८७४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति पूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य एकादशः प्रकारः ९७

८७५. ॐ ह्रीं मनसा कृतपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
८७६. ॐ ह्रीं मनसा कारितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
८७७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
८७८. ॐ ह्रीं वचसा कृतपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
८७९. ॐ ह्रीं वचसा कारितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
८८०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
८८१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
८८२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
८८३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति पश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य द्वादशः प्रकारः ९८

८८४. ॐ ह्रीं मनसा कृतविद्यादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
८८५. ॐ ह्रीं मनसा कारितविद्यादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
८८६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितविद्यादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
८८७. ॐ ह्रीं वचसा कृतविद्यादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
८८८. ॐ ह्रीं वचसा कारितविद्यादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
८८९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितविद्यादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
८९०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतविद्यादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
८९१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितविद्यादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
८९२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितविद्यादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति विद्यादोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य त्रयोदशः प्रकारः ९९

८९३. ॐ ह्रीं मनसा कृतमंत्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
८९४. ॐ ह्रीं मनसा कारितमंत्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
८९५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमंत्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
८९६. ॐ ह्रीं वचसा कृतमंत्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
८९७. ॐ ह्रीं वचसा कारितमंत्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
८९८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमंत्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
८९९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमंत्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
९००. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमंत्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
९०१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमंत्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति मंत्रदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य चतुर्दशः प्रकारः १००

९०२. ॐ ह्रीं मनसा कृतचूर्णदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
९०३. ॐ ह्रीं मनसा कारितचूर्णदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
९०४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचूर्णदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
९०५. ॐ ह्रीं वचसा कृतचूर्णदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
९०६. ॐ ह्रीं वचसा कारितचूर्णदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
९०७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचूर्णदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
९०८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतचूर्णदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥
९०९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितचूर्णदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥८॥
९१०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचूर्णदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥९॥

इति चूर्णदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य पंचदशः प्रकारः १०१

९११. ॐ ह्रीं मनसा कृतमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥१॥
९१२. ॐ ह्रीं मनसा कारितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥२॥
९१३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥३॥
९१४. ॐ ह्रीं वचसा कृतमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥४॥
९१५. ॐ ह्रीं वचसा कारितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥५॥
९१६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥६॥
९१७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥

९१८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९१९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य षोडशः प्रकारः १०२

९२०. ॐ ह्रीं मनसा कृतशंकितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
९२१. ॐ ह्रीं मनसा कारितशंकितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
९२२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितशंकितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
९२३. ॐ ह्रीं वचसा कृतशंकितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
९२४. ॐ ह्रीं वचसा कारितशंकितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
९२५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितशंकितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
९२६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतशंकितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
९२७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितशंकितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९२८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितशंकितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति शंकितदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य सप्तदशः प्रकारः १०३

९२९. ॐ ह्रीं मनसा कृतम्रक्षितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
९३०. ॐ ह्रीं मनसा कारितम्रक्षितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
९३१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितम्रक्षितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
९३२. ॐ ह्रीं वचसा कृतम्रक्षितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
९३३. ॐ ह्रीं वचसा कारितम्रक्षितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
९३४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितम्रक्षितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
९३५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतम्रक्षितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
९३६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितम्रक्षितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९३७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितम्रक्षितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति म्रक्षितदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य अष्टदशः प्रकारः १०४

९३८. ॐ ह्रीं मनसा कृतनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
९३९. ॐ ह्रीं मनसा कारितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
९४०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
९४१. ॐ ह्रीं वचसा कृतनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
९४२. ॐ ह्रीं वचसा कारितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
९४३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
९४४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
९४५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९४६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति निक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य एकोनविंशः प्रकारः १०५

९४७. ॐ ह्रीं मनसा कृतपिहितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
९४८. ॐ ह्रीं मनसा कारितपिहितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
९४९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपिहितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
९५०. ॐ ह्रीं वचसा कृतपिहितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

९५१. ॐ ह्रीं वचसा कारितपिहितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
९५२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपिहितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
९५३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपिहितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
९५४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपिहितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९५५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपिहितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति पिहितदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य विंशतितमः प्रकारः १०६

९५६. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
९५७. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
९५८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
९५९. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
९६०. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
९६१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
९६२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
९६३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९६४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंव्यवहरणदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति व्यवहरणदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य एकविंशः प्रकारः १०७

९६५. ॐ ह्रीं मनसा कृतदायकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
९६६. ॐ ह्रीं मनसा कारितदायकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
९६७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदायकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
९६८. ॐ ह्रीं वचसा कृतदायकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
९६९. ॐ ह्रीं वचसा कारितदायकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
९७०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदायकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
९७१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतदायकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
९७२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितदायकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९७३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदायकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति दायकदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य द्वाविंशः प्रकारः १०८

९७४. ॐ ह्रीं मनसा कृतोन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
९७५. ॐ ह्रीं मनसा कारितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
९७६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
९७७. ॐ ह्रीं वचसा कृतोन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
९७८. ॐ ह्रीं वचसा कारितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
९७९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
९८०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतोन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
९८१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९८२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति उन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य त्रयोविंशतितमः प्रकारः १०९

९८३. ॐ ह्रीं मनसा कृतापरिणतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
९८४. ॐ ह्रीं मनसा कारितापरिणतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
९८५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितापरिणतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
९८६. ॐ ह्रीं वचसा कृतापरिणतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
९८७. ॐ ह्रीं वचसा कारितापरिणतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
९८८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितापरिणतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
९८९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतापरिणतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
९९०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितापरिणतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
९९१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितापरिणतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अपरिणतदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य चतुर्विंशतितमः प्रकारः ११०

९९२. ॐ ह्रीं मनसा कृतलिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
९९३. ॐ ह्रीं मनसा कारितलिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
९९४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
९९५. ॐ ह्रीं वचसा कृतलिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
९९६. ॐ ह्रीं वचसा कारितलिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
९९७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
९९८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतलिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
९९९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितलिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०००. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलिप्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति लिप्तदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य पंचविंशतितमः प्रकारः १११

१००१. ॐ ह्रीं मनसा कृतछोटितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१००२. ॐ ह्रीं मनसा कारितछोटितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१००३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितछोटितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१००४. ॐ ह्रीं वचसा कृतछोटितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१००५. ॐ ह्रीं वचसा कारितछोटितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१००६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितछोटितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१००७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतछोटितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१००८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितछोटितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१००९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितछोटितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति छोटितदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य षड्विंशतितमः प्रकारः ११२

१०१०. ॐ ह्रीं मनसा कृतौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०११. ॐ ह्रीं मनसा कारितौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०१२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०१३. ॐ ह्रीं वचसा कृतौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१०१४. ॐ ह्रीं वचसा कारितौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०१५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०१६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।

१०१७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०१८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इत्यौद्देशिकदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य सप्तविंशतितमः प्रकारः ११३

१०१९. ॐ ह्रीं मनसा कृतअध्यधिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०२०. ॐ ह्रीं मनसा कारितअध्यधिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०२१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअध्यधिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०२२. ॐ ह्रीं वचसा कृतअध्यधिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१०२३. ॐ ह्रीं वचसा कारितअध्यधिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०२४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअध्यधिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०२५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअध्यधिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१०२६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअध्यधिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०२७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअध्यधिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अध्यधिदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य अष्टाविंशतितमः प्रकारः ११४

१०२८. ॐ ह्रीं मनसा कृतपूतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०२९. ॐ ह्रीं मनसा कारितपूतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०३०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपूतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०३१. ॐ ह्रीं वचसा कृतपूतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१०३२. ॐ ह्रीं वचसा कारितपूतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०३३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपूतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०३४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपूतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१०३५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपूतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०३६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपूतिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति पूतिदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य ऊनत्रिंशत्तमः प्रकारः ११५

१०३७. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०३८. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०३९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०४०. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१०४१. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०४२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०४३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१०४४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०४५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति प्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य त्रिंशत्तमः प्रकारः ११६

१०४६. ॐ ह्रीं मनसा कृतमिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०४७. ॐ ह्रीं मनसा कारितमिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०४८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०४९. ॐ ह्रीं वचसा कृतमिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।

१०५०. ॐ ह्रीं वचसा कारितमिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०५१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०५२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१०५३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०५४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमिश्रदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मिश्रदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य एकत्रिंशत्तमः प्रकारः ११७

१०५५. ॐ ह्रीं मनसा कृतबलिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०५६. ॐ ह्रीं मनसा कारितबलिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०५७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितबलिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०५८. ॐ ह्रीं वचसा कृतबलिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१०५९. ॐ ह्रीं वचसा कारितबलिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०६०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितबलिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०६१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतबलिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१०६२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितबलिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०६३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितबलिदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति बलिदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य द्वात्रिंशत्तमः प्रकारः ११८

१०६४. ॐ ह्रीं मनसा कृतन्यस्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०६५. ॐ ह्रीं मनसा कारितन्यस्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०६६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितन्यस्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०६७. ॐ ह्रीं वचसा कृतन्यस्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१०६८. ॐ ह्रीं वचसा कारितन्यस्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०६९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितन्यस्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०७०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतन्यस्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१०७१.ॐ ह्रीं वपुषा कारितन्यस्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०७२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितन्यस्तदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति न्यस्तदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य त्रयस्त्रिंशत्तमः प्रकारः ११९

१०७३. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०७४. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०७५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०७६. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१०७७. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०७८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०७९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१०८०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०८१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति प्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य चतुस्त्रिंशत्तमः प्रकारः १२०

१०८२. ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रीतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०८३. ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रीतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०८४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रीतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०८५. ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रीतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१०८६. ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रीतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०८७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रीतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०८८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रीतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१०८९. ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रीतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०९०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रीतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति क्रीतदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य पंचत्रिंशत्तमः प्रकारः १२१

१०९१. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१०९२. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१०९३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१०९४. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१०९५. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१०९६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१०९७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१०९८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१०९९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति प्रामित्यदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य षट्त्रिंशत्तमः प्रकारः १२२

११००. ॐ ह्रीं मनसा कृतपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
११०१. ॐ ह्रीं मनसा कारितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११०२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
११०३. ॐ ह्रीं वचसा कृतपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
११०४. ॐ ह्रीं वचसा कारितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
११०५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
११०६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
११०७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
११०८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति परिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य
सप्तत्रिंशत्तमः प्रकारः १२३

११०९. ॐ ह्रीं मनसा कृतनिषिद्धदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१११०. ॐ ह्रीं मनसा कारितनिषिद्धदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११११. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिषिद्धदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१११२. ॐ ह्रीं वचसा कृतनिषिद्धदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१११३. ॐ ह्रीं वचसा कारितनिषिद्धदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१११४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनिषिद्धदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।

१११५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतनिषिद्धदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१११६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितनिषिद्धदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१११७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनिषिद्धदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति निषिद्धदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य अष्टत्रिंशत्तमः प्रकारः १२४

१११८. ॐ ह्रीं मनसा कृतअभिहृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१११९. ॐ ह्रीं मनसा कारितअभिहृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११२०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअभिहृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
११२१. ॐ ह्रीं वचसा कृतअभिहृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
११२२. ॐ ह्रीं वचसा कारितअभिहृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
११२३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअभिहृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
११२४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअभिहृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
११२५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितअभिहृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
११२६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअभिहृतदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अभिहृतदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य ऊनचत्वारिंशत्तमः प्रकारः १२५

११२७. ॐ ह्रीं मनसा कृतउद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
११२८. ॐ ह्रीं मनसा कारितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११२९.ॐ ह्रीं मनसानुमोदितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
११३०. ॐ ह्रीं वचसा कृतउद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
११३१. ॐ ह्रीं वचसा कारितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
११३२.ॐ ह्रीं वचसानुमोदितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
११३३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतउद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
११३४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
११३५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितउद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति उद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य चत्वारिंशत्तमः प्रकारः १२६

११३६. ॐ ह्रीं मनसा कृतआच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
११३७. ॐ ह्रीं मनसा कारितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११३८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
११३९. ॐ ह्रीं वचसा कृतआच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
११४०. ॐ ह्रीं वचसा कारितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
११४१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
११४२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतआच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
११४३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
११४४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितआच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति आच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य एकचत्वारिंशत्तमः प्रकारः १२७

११४५. ॐ ह्रीं मनसा कृतमालादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
११४६. ॐ ह्रीं मनसा कारितमालादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११४७. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमालादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

११४८. ॐ ह्रीं वचसा कृतमालादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
११४९. ॐ ह्रीं वचसा कारितमालादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
११५०. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमालादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
११५१. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमालादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
११५२. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमालादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
११५३. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमालादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मालादोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य द्विचत्वारिंशत्तमः प्रकारः १२८

११५४. ॐ ह्रीं मनसा कृतसंयोजनादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
११५५. ॐ ह्रीं मनसा कारितसंयोजनादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११५६. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंयोजनादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
११५७. ॐ ह्रीं वचसा कृतसंयोजनादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
११५८. ॐ ह्रीं वचसा कारितसंयोजनादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
११५९. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंयोजनादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
११६०. ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंयोजनादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
११६१. ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंयोजनादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
११६२. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंयोजनादोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति संयोजनदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य त्रिचत्वारिंशत्तमः प्रकारः १२९

११६३. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
११६४. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११६५. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
११६६. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
११६७. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
११६८. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
११६९. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
११७०. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
११७१. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति प्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य चतुश्चत्वारिंशत्तमः प्रकारः १३०

११७२. ॐ ह्रीं मनसा कृतअंगारदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
११७३. ॐ ह्रीं मनसा कारितअंगारदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११७४. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअंगारदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
११७५. ॐ ह्रीं वचसा कृतअंगारदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
११७६. ॐ ह्रीं वचसा कारितअंगारदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
११७७. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअंगारदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
११७८. ॐ ह्रीं वपुषा कृतअंगारदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
११७९.ॐ ह्रीं वपुषा कारितअंगारदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
११८०. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअंगारदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति अंगारदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य पंचचत्वारिंशत्तमः प्रकारः १३१

११८१. ॐ ह्रीं मनसा कृतधूमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
११८२. ॐ ह्रीं मनसा कारितधूमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११८३. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधूमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
११८४. ॐ ह्रीं वचसा कृतधूमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
११८५. ॐ ह्रीं वचसा कारितधूमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
११८६. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधूमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
११८७. ॐ ह्रीं वपुषा कृतधूमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
११८८. ॐ ह्रीं वपुषा कारितधूमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
११८९. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधूमदोषरहितैषणासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति धूमदोषरहितैषणासमितिचारित्रस्य षट्चत्वारिंशत्तमः प्रकारः १३२

आदाननिक्षेपण समिति के ९ मंत्र

११९०. ॐ ह्रीं मनसा कृतादाननिक्षेपणसमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
११९१. ॐ ह्रीं मनसा कारितादाननिक्षेपणसमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
११९२. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितादाननिक्षेपणसमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
११९३. ॐ ह्रीं वचसा कृतादाननिक्षेपणसमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
११९४. ॐ ह्रीं वचसा कारितादाननिक्षेपणसमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
११९५. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितादाननिक्षेपणसमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
११९६. ॐ ह्रीं वपुषा कृतादाननिक्षेपणसमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
११९७. ॐ ह्रीं वपुषा कारितादाननिक्षेपणसमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
११९८. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितादाननिक्षेपणसमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति आदाननिक्षेपणसमितिचारित्रस्य प्रकारः १३३

प्रतिष्ठापनासमिति के ९ मंत्र

११९९. ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रतिष्ठापनासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१२००. ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रतिष्ठापनासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१२०१. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रतिष्ठापनासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१२०२. ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रतिष्ठापनासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१२०३. ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रतिष्ठापनासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१२०४. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रतिष्ठापनासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१२०५. ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रतिष्ठापनासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१२०६. ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रतिष्ठापनासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१२०७. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रतिष्ठापनासमितिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति प्रतिष्ठापनासमितिचारित्रस्य प्रकारः १३४

मनगुप्ति के ९ मंत्र

१२०८. ॐ ह्रीं मनसा कृतमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१२०९. ॐ ह्रीं मनसा कारितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१२१०. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

१२११. ॐ ह्रीं वचसा कृतमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१२१२. ॐ ह्रीं वचसा कारितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१२१३. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१२१४. ॐ ह्रीं वपुषा कृतमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१२१५. ॐ ह्रीं वपुषा कारितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१२१६. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमनोगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति मनोगुप्तिचारित्रस्य प्रकारः १३५

वचनगुप्ति के ९ मंत्र

१२१७. ॐ ह्रीं मनसा कृतवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१२१८. ॐ ह्रीं मनसा कारितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१२१९. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१२२०. ॐ ह्रीं वचसा कृतवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१२२१. ॐ ह्रीं वचसा कारितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१२२२. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१२२३. ॐ ह्रीं वपुषा कृतवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१२२४. ॐ ह्रीं वपुषा कारितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१२२५. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितवाग्गुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति वचनगुप्तिचारित्रस्य प्रकारः १३६

कायगुप्ति के ९ मंत्र

१२२६. ॐ ह्रीं मनसा कृतकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।१।।
१२२७. ॐ ह्रीं मनसा कारितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।
१२२८. ॐ ह्रीं मनसानुमोदितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।
१२२९. ॐ ह्रीं वचसा कृतकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।४।।
१२३०. ॐ ह्रीं वचसा कारितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
१२३१. ॐ ह्रीं वचसानुमोदितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।६।।
१२३२. ॐ ह्रीं वपुषा कृतकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
१२३३. ॐ ह्रीं वपुषा कारितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।८।।
१२३४. ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितकायगुप्तिप्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति कायगुप्तिचारित्रस्य प्रकारः १३७

(समाप्त)

(29) कर्मदहन व्रत विधि

ज्ञानावरणादि 8 कर्मों की 148 प्रकृतियों को नाश करने के लिए और आत्मशुद्धि के लिए कर्मदहन व्रत करने की और उसका विधान करने की प्रथा दिगम्बर जैन समाज में प्रचलित है।

इस कर्मदहन व्रत के 156 उपवास करने होते हैं अर्थात् कर्म की 148 प्रकृतियों के 148 उपवास और कर्म नाश होने के बाद सिद्धों के जो आठ गुण प्राप्त होते हैं उनके 8 उपवास करने होते हैं। ये उपवास चाहे जिस दिन नहीं करने चाहिए। निम्न तिथियों में ये 156 उपवास पूर्ण करने चाहिए।

1. चौथे गुणस्थान में 7 प्रकृतियों का नाश होता है, इसलिए चतुर्थी के 7 उपवास करें।
2. सातवें गुणस्थान में 3 प्रकृतियों का नाश होता है, इसलिए सप्तमी के 3 उपवास करें।
3. नौवें गुणस्थान में 36 प्रकृतियों का नाश होता है, इसलिए नवमी के 36 उपवास करें।
4. दसवें गुणस्थान में 1 प्रकृति का नाश होता है, इसलिए दशमी का 1 उपवास करें।
5. बारहवें गुणस्थान में 16 प्रकृतियों का नाश होता है, इसलिए बारस के 16 उपवास करें।
6. चौदहवें गुणस्थान में 85 प्रकृतियों का नाश होता है, इसलिए चौदश के 85 उपवास करें।
7. सिद्धों के अष्टगुणों के कारण अष्टमी के 8 उपवास करें।

इस प्रकार 7+3+36+1+16+85+8=156 उपवास कर्मदहन व्रत के करने चाहिए तथा हर एक उपवास के दिन गृहारम्भ का त्याग करके ब्रह्मचर्य धारण कर स्नानादि क्रिया से शरीर तथा वस्त्र की शुद्धि करके श्री जिनालय में आकर श्री अर्हंत भगवान का पंचामृताभिषेक करके देव-शास्त्र-गुरुपूर्वक श्री सिद्धपूजा करें। फिर 108 जाप्य देवें। कुल 156 जाप्य हैं। उनमें हर एक उपवास के दिन क्रमशः एक-एक जाप्य को 108 बार जपना चाहिए।

ये उपवास प्रोषधोपवास ही करने चाहिए अर्थात् पहले दिन एकाशन करके उपवास करें और फिर दूसरे दिन एकाशन करें। इसको प्रोषधोपवास कहते हैं।

यह कर्मदहनव्रत (156 उपवास) पूर्ण होने पर फिर उद्यापन करें। उसमें श्री जिनमंदिर में यथाशक्ति अष्ट मंगल द्रव्य और उपकरणादि चढ़ावें तथा मांडना मांड कर वृहत् अभिषेक, जलशुद्धि व सकलीकरणादि को विधिपूर्वक करके यह कर्मदहन व्रत विधान मंगलाष्टक, पुण्याहवाचन व शांतिविसर्जनपूर्वक करें, फिर यथाशक्ति चारों प्रकार का दान करें। उनमें खास करके जैन संस्थाओं के लिए अच्छी रकम विद्यादान में अवश्य निकालें तथा कम से कम 156 शास्त्रों का दान करें। यदि उद्यापन करने की शक्ति न हो तो यह व्रत दूना करना चाहिए।

चतुर्थी के 7 उपवास के सात मंत्र

1. ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं सम्यक्मिथ्यात्व-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं मिश्र-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिक्रोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिमाया-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिलोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

सप्तमी के 3 उपवास के तीन मंत्र

1. ॐ ह्रीं नारकायुष्कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं तिर्यगायुष्कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं देवायुष्कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

नवमी के 36 उपवास के छत्तीस मंत्र

1. ॐ ह्रीं निद्रानिद्रा-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचला-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
4. ॐ ह्रीं नरकगति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
5. ॐ ह्रीं तिर्यगति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
6. ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वी-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
7. ॐ ह्रीं तिर्यगत्यानुपूर्वी-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
8. ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
9. ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
10. ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
11. ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

12. ॐ ह्रीं स्थावर-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
13. ॐ ह्रीं आतप-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
14. ॐ ह्रीं उद्योत-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
15. ॐ ह्रीं परघात-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
16. ॐ ह्रीं सूक्ष्म-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
17. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
18. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
19. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमाया-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
20. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
21. ॐ ह्रींअप्रत्याख्यानावरणक्रोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
22. ॐ ह्रींअप्रत्याख्यानावरणमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
23. ॐ ह्रींअप्रत्याख्यानावरणमाया-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
24. ॐ ह्रींअप्रत्याख्यानावरणलोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
25. ॐ ह्रीं नपुंसकवेद-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
26. ॐ ह्रीं स्त्रीवेद-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
27. ॐ ह्रीं पुरुषवेद-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
28. ॐ ह्रीं हास्य-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
29. ॐ ह्रीं रति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
30. ॐ ह्रीं अरति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
31. ॐ ह्रीं शोक-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
32. ॐ ह्रीं भय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
33. ॐ ह्रीं जुगुप्सा-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
34. ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
35. ॐ ह्रीं संज्वलनमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
36. ॐ ह्रीं संज्वलनमाया-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

दशमी के 1 उपवास के एक मंत्र

1. ॐ ह्रीं संज्जवलनलोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

बारस के 16 उपवास के सोलह मंत्र

1. ॐ ह्रीं निद्रा-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं प्रचला-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
6. ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
7. ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
8. ॐ ह्रीं चक्षुर्दर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अचक्षुर्दर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
11. ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
12. ॐ ह्रीं दानांतराय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
13. ॐ ह्रीं लाभान्तराय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
14. ॐ ह्रीं भोगान्तराय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
15. ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
16. ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

चौदस के 85 उपवास के 85 मंत्र

1. ॐ ह्रीं असातावेदनीय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं औदारिकशरीर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
4. ॐ ह्रीं आहारकशरीर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
5. ॐ ह्रीं तैजसशरीर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
6. ॐ ह्रीं कार्मणशरीर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
7. ॐ ह्रीं औदारिकबंधन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
8. ॐ ह्रीं वैक्रियिकबंधन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
9. ॐ ह्रीं आहारकबंधन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
10. ॐ ह्रीं तैजसबंधन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
11. ॐ ह्रीं कार्मणबंधन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
12. ॐ ह्रीं औदारिकसंघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
13. ॐ ह्रीं वैक्रियिकसंघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
14. ॐ ह्रीं आहारसंघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
15. ॐ ह्रीं तैजससंघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
16. ॐ ह्रीं कार्मणसंघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
17. ॐ ह्रीं औदारिकाङ्गोपाङ्ग-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
18. ॐ ह्रीं वैक्रियिकाङ्गोपाङ्ग-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
19. ॐ ह्रीं आहारकाङ्गोपाङ्ग-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
20. ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
21. ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
22. ॐ ह्रीं स्वातिसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
23. ॐ ह्रीं वामनसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
24. ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
25. ॐ ह्रीं हुण्डकसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
26. ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
27. ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
28. ॐ ह्रीं नाराचसंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

29. ॐ ह्रीं अर्धनाराचसंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
30. ॐ ह्रीं कीलकसंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
31. ॐ ह्रीं असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
32. ॐ ह्रीं श्यामवर्ण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
33. ॐ ह्रीं हरिद्वर्ण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
34. ॐ ह्रीं पीतवर्ण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
35. ॐ ह्रीं अरुणवर्ण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
36. ॐ ह्रीं श्वेतवर्ण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
37. ॐ ह्रीं तिक्तरस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
38. ॐ ह्रीं कटुकरस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
39. ॐ ह्रीं मधुरस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
40. ॐ ह्रीं आम्लरस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
41. ॐ ह्रीं कषायरस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
40. ॐ ह्रीं मुदुस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
43. ॐ ह्रीं कठोरस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
44. ॐ ह्रीं शीतस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
45. ॐ ह्रीं उष्णस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
46. ॐ ह्रीं रुक्षस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
47. ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
48. ॐ ह्रीं गुरुस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
49. ॐ ह्रीं लघुस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
50. ॐ ह्रीं सुगंधा-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
51. ॐ ह्रीं दुर्गन्धा-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
52. ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्वी-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
53. ॐ ह्रीं अगुरु-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
54. ॐ ह्रीं लघु-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
55. ॐ ह्रीं उच्छवास-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
56. ॐ ह्रीं उपघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
57. ॐ ह्रीं शुभविहायोगति-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
58. ॐ ह्रीं अशुभविहायोगति-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
59. ॐ ह्रीं अपर्याप्त-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
60. ॐ ह्रीं स्थिर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
61. ॐ ह्रीं अस्थिर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
62. ॐ ह्रीं शुभ-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
63. ॐ ह्रीं अशुभ-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
64. ॐ ह्रीं दुर्भग-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
65. ॐ ह्रीं सुस्वर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
66. ॐ ह्रीं दुःस्वर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
67. ॐ ह्रीं अनादेय-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
68. ॐ ह्रीं अयशो-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
69. ॐ ह्रीं यशो-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
70. ॐ ह्रीं निर्माण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
71. ॐ ह्रीं नीचगोत्र-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
72. ॐ ह्रीं देवगति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
73. ॐ ह्रीं सातावेदनीय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
74. ॐ ह्रीं मनुष्यायुः-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
75. ॐ ह्रीं मनुष्यगति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
76. ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वी-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
77. ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियजाति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
78. ॐ ह्रीं त्रस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
79. ॐ ह्रीं बादर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
80. ॐ ह्रीं पर्याप्ति-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
81. ॐ ह्रीं सुभग-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
82. ॐ ह्रीं आदेय-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
83. ॐ ह्रीं उच्चगोत्र-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
84. ॐ ह्रीं यशो-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
85. ॐ ह्रीं तीर्थंकर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

इस प्रकार 148 कर्म-प्रकृतियों का क्षय कर आत्मा मोक्ष को चला जाता है। फिर वह संसार में कभी नहीं आता है। मुक्त आत्मा को सिद्ध कहते हैं सिद्ध अवस्था में उसके अनन्त गुण प्रगट होते हैं उनमें आठ गुण मुख्य हैं। इन आठ गुणों के अष्टमी के आठ उपवास कर प्रत्येक दिन क्रम से नीचे लिखे आठ मंत्रों की जाप देनी चाहिए।

अष्टमी के आठ उपवास के 8 मंत्र

1. ॐ ह्रीं सम्यक्त्व-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
5. ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अमूर्त्तिक-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अगुरुलघु-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अव्याबाध-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।

(30) श्री मौन एकादशी व्रत कथा

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में कौशल्य देश है। उसमें यमुना नदी के तट पर कौशाम्बी नाम की नगरी है, उसी नगर में परमपूज्य छठवें तीर्थंकर श्री पद्मप्रभु का जन्म हुआ था। एक समय इसी नगर में हरिवाहन नाम का राजा और उसकी शशिप्रभा पट्टरानी थी।

राजपुत्र का नाम सुकौशल था। यह राजकुमार सर्व विद्या और कलाओं में निपुण होने पर भी निरन्तर खेल-तमाशों आदि क्रीड़ाओं में निमग्न रहता था और राजकाज की ओर बिल्कुल भी ध्यान न देता था। इसलिए राजा को निरन्तर चिंता रहने लगी कि राजपुत्र राज्यकार्य में योग नहीं देता है, तब भविष्य में कार्य कैसे चलेगा?

एक समय भाग्योदय से सोमप्रभ नाम के महामुनिराज संघ सहित विहार करते हुए इसी नगर के उद्यान में पधारे। राजा ने वनमाली द्वारा ये शुभ समाचार सुनकर पुरवासियों सहित हर्षित होकर श्रीगुरु के दर्शनों को प्रयाण किया और वहाँ पहुँचकर भक्तिभाव से वंदना-स्तुति करके धर्मश्रवण की इच्छा से नतमस्तक होकर बैठ गया।

श्रीगुरु ने प्रथम मिथ्यात्व के छुड़ाने वाले और संसार से भय उत्पन्न कराने वाले ऐसे मोक्षमार्ग का व्याख्यान सुनाया, मुनि और श्रावक के धर्म को पृथक् कर-करके समझाया और यह भी कहा कि मुनि परम्परा मोक्ष का कारण समझना चाहिए, यथार्थ में तो भव्यजीवों को मुनिधर्म ही पालन करना चाहिए, परन्तु यदि शक्तिहीनता के कारण एकाएक मुनिधर्म न धारण कर सकें, तो कम से कम प्रतिमारूप श्रावक का धर्म ही धारण करें और निरन्तर अपने भावों को बढ़ाता और शरीरादि इन्द्रियों तथा मन को वश करता जावे, तब ही अभीष्ट सुख को प्राप्त हो सकता है।

श्रावक धर्म केवल अभ्यास ही के लिए है इसलिए इसी में रंजायमान होकर इति नहीं कर देना चाहिए किन्तु मुनिधर्म की भावना भाते हुए उसके लिए तत्पर रहना चाहिए।

राजा ने उपदेश सुनकर स्वशक्ति अनुसार व्रत धारण किया और विशेष बातों का श्रद्धान किया। पश्चात् अवसर देखकर पूछने लगे– हे नाथ! मेरा पुत्र विद्यादि में निपुण होने पर भी बालक्रीड़ाओं में अनुरक्त रहता है और राज्यभोग में कुछ भी नहीं समझता है अतः इसकी चिंता है कि भविष्य में राज्यस्थिति कैसे रहेगी?

राजा का प्रश्न सुनकर श्रीगुरु ने कहा– इसी देश के कूट नामक नगर में राजा रणवीर सिंह और उसकी त्रिलोचना नाम की रानी थी। इसी नगर में एक कुणबी रहता था। उसकी पुत्री तुंगभद्रा थी। इस भाग्यहीन कन्या के पापोदय से शैशव अवस्था में ही माता-पिता आदि बंधु-बांधव सब कालवश हो गये और यह अनाथिनी अकेली अन्न-वस्त्र से वंचित हुई, जूठन पर गुजार करती समय बिताने लगी।

वह जब आठ वर्ष की हुई, एक दिन घास काटने को वन में गई थी, वहाँ पिहिताश्रव मुनिराज के दर्शन हो गये। वह बालिका भी लोगों के साथ श्रीगुरु को नमस्कार करके धर्मश्रवण करने लगी, परन्तु भूख की वेदना से व्याकुल हुई।

इसके कुछ भी समझ में नहीं आता था, तब इस दुःखित कन्या ने दुःख से कातर होकर पूछा– हे दयानिधान गुरुदेव! मैं जन्म से अनाथिनी अन्न-वस्त्र तक का कष्ट पा रही हूँ, इसलिए कृपाकर ऐसा कोई उपाय बताइये कि जिससे मेरा दुःख दूर होवे।

तब श्रीगुरु ने कहा– हे पुत्री! यह सब तेरे पूर्वजन्म के पाप का फल है। अब तू श्रीजिनेन्द्रदेव, निर्ग्रन्थ गुरु, दयामयी धर्म पर श्रद्धा करके भाव सहित मौन एकादशी व्रत का पालन कर, जिससे तेरे पाप का क्षय होवे और संसार का अन्त आवे। सुन, इस व्रत की विधि इस प्रकार है–

पौष वदी एकादशी को सोलह प्रहर का उपवास कर और ये सोलह प्रहर जिनालय में धर्मकथा, पूजाभिषेकादि धर्मध्यान में व्यतीत कर, तीनों काल सामायिक कर, सोलह प्रहर मौन से रह, अर्थात् मुँह से न बोले, हाथ, नाक, आँख आदि से संकेत भी न करे।

इस प्रकार जब सोलह प्रहर हो जावें तब द्वादशी की दोपहर को पूजाभिषेक करके सामायिक या स्वाध्याय करे और फिर अतिथि (मुनि, गृहत्यागी) श्रावक या साधर्मी गृहस्थ व दीन-दुखित भूखित को भोजन कराकर आप

पारणा करे। जो कोई व्रती पुरुष हों उनको नारियल या खारक, बादाम आदि बाँटे। इस प्रकार ग्यारह वर्ष तक यह व्रत करके फिर उद्यापन करे और उद्यापन की शक्ति न होवे तो दूना व्रत करे। उद्यापन विधि इस प्रकार है कि आवश्यकता होवे तो श्री जिनमंदिर बनवाये, 24 भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करके पधरावे। घण्टा, झालर, चौकी, चन्दोवा, छत्र, चमर, शास्त्रादि 24-24 जिनालय में पधरावे। शास्त्र भंडार की स्थापना करे, ग्रंथ वितरित करे, विद्यार्थियों को भोजन करावे, यथाशक्ति आवश्यक संघ को आहारदान देवे।

नारियल आदि साधर्मियों को बाँटे, महापूजा विधान करे, दुःखी अपाहिजों को भोजन, वस्त्र, औषधि आदि दान करे, भयभीत जीवों को अभयदान दे, इत्यादि विधि सुन, उस दरिद्र कन्या ने भावसहित व्रत पालन किया और अन्त समय संन्यास सहित णमोकार मंत्र का स्मरण करते हुए शरीर छोड़कर तेरे घर यह पुत्र हुआ है। यह पुत्र चरमशरीरी है, इसी से राज्यभोग में इसका चित्त नहीं लगता है, यह बहुत ही थोड़े समय घर में रहेगा।

राजा इस प्रकार श्रीगुरु के मुख से अपने पुत्र का वृत्तांत सुनकर घर आया। संसार, देह, भोगों से विरक्त होकर उसने अपने पुत्र का राज्यतिलक किया, पश्चात् पिहिताश्रव आचार्य के पास दीक्षा ले ली। इसके साथ और भी बहुत से राजाओं ने दीक्षा ली और राजा सुकौशल राज्य करने लगा। सो वह अल्पसंसारी राजनीति की कुटिलता को न जानता हुआ सुखपूर्वक कालक्षेप करने लगा।

एक समय मतिसागर नामक भण्डारी ने श्रुतसागर नामक मंत्री से मंत्रणा किया कि राजा राजनीति से अनभिज्ञ है, इसलिए इसे कैद करके मैं तुम्हें राजा बनाए देता हूँ और मैं मंत्री होकर रहूँगा। परन्तु वह वार्ता मतिसागर के पुत्र और राजा के बालसखा द्वारा राजा के कान तक पहुँच गई, राजा ने मतिसागर को इस कुटिलता व धृष्टता के बदले अपमान सहित देश से निकाल दिया और श्रुतसागर को राज्यभार सौंपकर आप अपने पिता के पास गये और दीक्षा ले ली।

यह मतिसागर भण्डारी भ्रमण करते हुए दुःख से (आर्तभावों से) मरणकर सिंह हुआ, सो विकराल रूप धारण किये अनेक जीवों का घात करता हुआ विचरता था कि उसी वन में विहार करते हुए वे हरिवाहन और सुकौशलस्वामी आ पहुँचे। सिंह ने इन्हें देखकर पूर्व वैर के कारण क्रोधित होकर इनके शरीर को विदीर्ण कर दिया। वे मुनिराज उपसर्ग जानकर निश्चल हो शुक्लध्यान को धारणकर आत्मा में निमग्न हो गये, तब सिंह भी उपशांत होकर वहाँ से चला गया और वे मुनि अंतकृत केवली होकर सिद्ध पद को प्राप्त हुए और सिंह मुनिहत्या के कारण मरकर नरक में घोर दुःख भोगने को चला गया।

प्राणी निःसंदेह अपने ही द्वारा किये हुए शुभाशुभ कर्मों का फल सुख व दुःख भोगा करते हैं।

इस प्रकार एक दरिद्रा कन्या ने भी मौन एकादशी व्रत श्रद्धा व भक्तिपूर्वक पालन किया, जिसके फल से वह सुकौशल स्वामी होकर सकल कर्मों का क्षय कर सिद्धपद को प्राप्त हुई। तो और जो कोई भव्यजीव ज्ञान व श्रद्धापूर्वक यह व्रत करेंगे, तो अवश्य ही उत्तमोत्तम सुखों को प्राप्त करेंगे।

(31) णमोकार व्रत विधि

नमस्कारपञ्चत्रिंशत्कायां सप्तम्यां सप्त पञ्चम्याः पञ्चचतुर्दश्याश्चतुर्दश नवम्याः नवोपवासाः कथिताः। एतन्नमोकारपञ्चत्रिंशत्कमेतदक्षरसमुदायं विभज्यैकैकाक्षरस्योपवासः करणीयः। अस्मिन् व्रते न मासतिथ्यादिको नियमः, केवलां तिथिं प्रपद्य भवतीति तिथिसावधिकानि व्रतानि।

अर्थ– नमस्कारपञ्चत्रिंशत्– नमस्कार पैंतीसी व्रत में सप्तमी के सात उपवास, पंचमी के पाँच उपवास, चतुर्दशी के चौदह उपवास और नवमी के नौ उपवास बताये गये हैं। णमोकार मंत्र में पैंतीस अक्षर होते हैं, एक-एक अक्षर का एक-एक उपवास किया जाता है। इस व्रत के आरंभ करने में किसी मास की किसी विशेष

तिथि का नियम नहीं है। केवल तिथि के अनुसार ही व्रत किया जाता है। इस प्रकार तिथि सावधिक व्रतों का कथन समाप्त हुआ।

विवेचन— णमोकार मंत्र की विशेष आराधना के लिए नमस्कार पैंतीसी व्रत किया जाता है। इस व्रत में 35 उपवास करने का विधान है। सप्तमी तिथि के सात उपवास, पंचमी तिथि के पाँच उपवास, चतुर्दशी तिथि के चौदह उपवास एवं नवमी तिथि के नौ उपवास किये जाते हैं। इस व्रत में उपवास के दिन पंचपरमेष्ठी का पूजन और अभिषेक करना होता है तथा **जाप्य– 'ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं'** इस मंत्र का जाप किया जाता है। उपवास के पहले और पिछले दिन एकाशन करना होता है।

(32) श्रावक त्रेपनक्रिया व्रत विधि

श्रावकों के लिए त्रेपन क्रियाओं का रयणसार आदि ग्रंथों में विधान है। इनके व्रत की विधि व्रत तिथि निर्णय में कही गई है। इसमें 8 मूलगुण, 1 रात्रिभोजन त्याग, 1 जलगालन, 1 साम्यभाव, 5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत, 4 शिक्षाव्रत, 4 दान, 11 प्रतिमा, 12 तप और 3 रत्नत्रय, ऐसे त्रेपन क्रियाओं के त्रेपन व्रत माने हैं। इनकी तिथियाँ निम्न प्रकार हैं–

आठ मूलगुण के	अष्टमी के 8 व्रत
रात्रिभोजन त्याग का	प्रतिपदा का 1 व्रत
जलगालन का	प्रतिपदा का 1 व्रत
साम्यभाव का	प्रतिपदा का 1 व्रत
पाँच अणुव्रत के	पंचमी के 5 व्रत
तीन गुणव्रत के	तृतीया के 3 व्रत
चार शिक्षाव्रत के	चतुर्थी के 4 व्रत
चार दान के	चतुर्थी के 4 व्रत
ग्यारह प्रतिमा के	एकादशी के 11 व्रत
बारह तप के	द्वादशी के 12 व्रत
तीन रत्नत्रय के	तृतीया के 3 व्रत

इस प्रकार त्रेपन व्रत किये जाते हैं। इनमें उत्कृष्ट व्रत तो उपवास से किया जाता है। मध्यम व्रत जल, फल, मेवा, दूध आदि अल्प आहार से किया जाता है तथा जघन्य व्रत एक बार शुद्ध भोजन करके 'एकाशन' से भी किया जाता है।

यदि तिथि से व्रत नहीं कर सकते, तो खुले व्रत अर्थात् अष्टमी, चतुर्दशी आदि को कभी भी 53 व्रत कर सकते हैं। इस व्रत के 53 मंत्र व समुच्चय मंत्र आगे दिये हैं। प्रत्येक व्रत में चौबीस भगवान की प्रतिमा का या किन्हीं भी तीर्थंकर की प्रतिमा का अभिषेक करके चौबीसी पूजा और व्रत की पूजा करें एवं प्रत्येक व्रत में समुच्चय मंत्र की 1 माला जपकर प्रत्येक मंत्रों में से 1-1 मंत्र की क्रम से जाप्य करें, ऐसे त्रेपन व्रतों को पूर्ण करें। इन त्रेपन क्रिया के मंत्रों में गुणव्रत एवं शिक्षाव्रतों को श्री गौतम स्वामी द्वारा कथित पाक्षिकयतिप्रतिक्रमण से लिया गया है। व्रत पूर्ण कर शक्ति के अनुसार उद्यापन में जिनप्रतिमा प्रतिष्ठा, ग्रंथ प्रकाशन आदि कराके त्रेपन-त्रेपन वस्तुओं को– छत्र, चँवर आदि को मंदिर में देवें एवं त्रेपन-त्रेपन फल चढ़ाकर पूजा करके व्रत पूर्ण करें।

इस व्रत से श्रावक धर्म, जो कि मुनिधर्म का छोटा भाई है, इस धर्म की पूर्णता होती है एवं वह उत्तम श्रावक मुनि बनकर मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है अर्थात् इस व्रत का फल परंपरा से मोक्ष को प्राप्त कराने वाला है।

श्रावक त्रेपन क्रिया व्रत पूजा एवं जाप्य

–स्थापना–

ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक मंत्र–

ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घ्य कैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिनधर्ममहं यजे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

समुच्चय मंत्र

जाप्य– **ॐ ह्रीं श्रावकत्रिपञ्चाशत्क्रियाविशुद्धये श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

प्रत्येक मंत्र 53–

1. **ॐ ह्रीं मद्यत्यागमूलगुणक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**
2. **ॐ ह्रीं पलत्यागमूलगुणक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**
3. **ॐ ह्रीं मधुत्यागमूलगुणक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**
4. **ॐ ह्रीं वटफलत्यागमूलगुणक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**
5. **ॐ ह्रीं पिप्पलफलत्यागमूलगुणक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**
6. **ॐ ह्रीं उदुम्बरफलत्यागमूलगुणक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**
7. **ॐ ह्रीं प्लक्षफलत्यागमूलगुणक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**
8. **ॐ ह्रीं फल्गुफलत्यागमूलगुणक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**
9. **ॐ ह्रीं रात्रिभोजनत्यागक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**
10. **ॐ ह्रीं जलगालनक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**
11. **ॐ ह्रीं साम्यभावनाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

12. ॐ ह्रीं अहिंसाणुव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं सत्याणुव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं अचौर्याणुव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्याणुव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं परिग्रहपरिमाणाणुव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
17. ॐ ह्रीं दिग्विदिक्परिमाणगुणव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
18. ॐ ह्रीं विविधानर्थदण्डत्यागगुणव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
19. ॐ ह्रीं भोगोपभोगपरिमाणगुणव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
20. ॐ ह्रीं सामायिकशिक्षाव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
21. ॐ ह्रीं प्रोषधोपवासशिक्षाव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
22. ॐ ह्रीं अतिथिसंविभागशिक्षाव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
23. ॐ ह्रीं पश्चिमसल्लेखनाशिक्षाव्रतक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
24. ॐ ह्रीं आहारदानक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
25. ॐ ह्रीं औषधिदानक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
26. ॐ ह्रीं शास्त्रदानक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
27. ॐ ह्रीं अभयदानक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
28. ॐ ह्रीं दर्शनप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
29. ॐ ह्रीं व्रतप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
30. ॐ ह्रीं सामायिकप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
31. ॐ ह्रीं प्रोषधोपवासप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
32. ॐ ह्रीं सचित्तत्यागप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
33. ॐ ह्रीं रात्रिभुक्तित्यागप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
34. ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
35. ॐ ह्रीं आरंभत्यागप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
36. ॐ ह्रीं परिग्रहत्यागप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
37. ॐ ह्रीं अनुमतित्यागप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
38. ॐ ह्रीं उद्दिष्टत्यागप्रतिमाक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
39. ॐ ह्रीं अनशनतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
40. ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
41. ॐ ह्रीं वृत्तपरिसंख्यानतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
42. ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
43. ॐ ह्रीं विविक्तशयनासनतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
44. ॐ ह्रीं कायक्लेशतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
45. ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
46. ॐ ह्रीं विनयतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
47. ॐ ह्रीं वैयावृत्यतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
48. ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

49. ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
50. ॐ ह्रीं ध्यानतपःक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
51. ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
52. ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
53. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रक्रियाविशुद्धये श्रावकक्रियोपदेशकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

यह व्रत भव्यों के लिए सांसारिक सर्वसुख प्रदान कर अंत में सर्वोत्तम परमात्मपद प्राप्त करावे, यही मंगल कामना है।

(33) श्री जिनसहस्रनाम व्रत विधि (लघु)

किसी भी महिने में अष्टमी, चतुर्दशी व पंचमी आदि किसी भी तिथि को यह व्रत किया जा सकता है, व्रत करने की उत्तम विधि उपवास, मध्यम नीरस पेय (कांजी आदि) लेना, जघन्य एकाशन है। व्रत के दिन श्री जिनेन्द्र भगवान का पंचामृताभिषेक करना व कराना चाहिए तथा श्री जिनसहस्रनाम पूजा मंत्र आदि करके 108 सुगंधित व लवंग से अथवा माला से 1 जाप करें। इस तरह 11 व्रत करें व क्रमशः नीचे लिखे जाप करें व णमोकार मंत्र की जाप करें।

1. ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री दिव्यादिशतनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ठादिशतनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री महाशोक ध्वजादिशतनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशतनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री महामुन्यादिशतनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री असंस्कृतादिशतनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री बृहदादिशतनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री त्रिकालदर्श्यादिशतनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री दिग्वासाद्यष्टाधिकशतनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्रीमदाद्यष्टाधिकसहस्रनामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः।

(34) श्री जिनसहस्रनाम व्रतविधि (वृहत्)

चैत्र, वैशाख आदि महिनों में से किसी भी महीने में यह व्रत किया जा सकता है, व्रत के दिन श्री आदिनाथ भगवान का पंचामृत अभिषेक तथा पूजन करना चाहिए, साथ ही निम्न मंत्र जाप्य करें–

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय गोमुख यक्ष चक्रेश्वरी यक्षी सहिताय नमः।

पुनः सहस्रनाम पूजा व सहस्रनाम के 1008 मंत्र करें, 1008 मंत्रों में पुष्पांजलि क्षेपण कर सकते हैं अथवा लौंग या पुष्पों से भी 1008 मंत्रों से आराधना कर सकते हैं।

प्रत्येक व्रत में कम से कम 1-1 मंत्र की पूजा एवं जाप्य करें।

जैसे- **ॐ ह्रीं श्रीमज्जिनेन्द्र! अत्र एहि एहि संवौषट् आह्वाननं।**

ॐ ह्रीं श्रीमज्जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीमज्जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– **ॐ ह्रीं श्रीमते नमः।** "यह जाप्य करें।"

इसी प्रकार क्रम से प्रत्येक व्रत में एक-एक नाम की पूजा और जाप्य करें। अनंतर णमोकार मंत्र की भी 1 जाप्य करें और श्रुतपूजा, गुरुपूजा करके शासन देव-देवी को यथायोग्य अर्घ्य समर्पित करें, पुनः मंगल आरती करें। व्रतों के दिन ब्रह्मचर्य व्रत पालना चाहिए। उत्तम विधि उपवास, मध्यम विधि नीरस पेय, कांजी आदि ग्रहण करना तथा जघन्य विधि एकाशन है। 1008 व्रतों के पूर्ण होने के बाद यथाशक्ति उद्यापन करें। सहस्रनाम विधान करके 1008 नैवेद्य व 1008 कमल पुष्प चढ़ावें तथा 1008 कलशों से महाभिषेक करें। चतुर्विध संघ को चतुर्विध दान देवें।

1008 व्रतों के पृथक्-पृथक् 1008 जाप्य-

1. **ॐ ह्रीं श्रीमते नमः**
2. **ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः**
3. **ॐ ह्रीं वृषभाय नमः**
4. **ॐ ह्रीं शंभवाय नमः**
5. **ॐ ह्रीं शंभवे नमः**
6. **ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः**
7. **ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः**
8. **ॐ ह्रीं प्रभवे नमः**
9. **ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः**
10. **ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः**
11. **ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः**
12. **ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः**
13. **ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय नमः**
14. **ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः**
15. **ॐ ह्रीं अक्षराय नमः**
16. **ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः**
17. **ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः**
18. **ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः**
19. **ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः**
20. **ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः**
21. **ॐ ह्रीं विभवे नमः**
22. **ॐ ह्रीं धात्रे नमः**
23. **ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः**
24. **ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः**
25. **ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः**
26. **ॐ ह्रीं विधये नमः**
27. **ॐ ह्रीं वेधसे नमः**
28. **ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः**
29. **ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः**
30. **ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः**
31. **ॐ ह्रीं जगज्जेष्ठाय नमः**
32. **ॐ ह्रीं विश्वमूर्त्तये नमः**
33. **ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः**
34. **ॐ ह्रीं विश्वदृशे नमः**
35. **ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः**
36. **ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः**
37. **ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः**
38. **ॐ ह्रीं जिनाय नमः**
39. **ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः**
40. **ॐ ह्रीं अमेयात्मने नमः**
41. **ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः**
42. **ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः**
43. **ॐ ह्रीं अनंतजिते नमः**
44. **ॐ ह्रीं अचिंत्यात्मने नमः**
45. **ॐ ह्रीं भव्यबंधवे नमः**
46. **ॐ ह्रीं अबंधनाय नमः**
47. **ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय नमः**
48. **ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः**

49. ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय नमः
50. ॐ ह्रीं शिवाय नमः
51. ॐ ह्रीं पराय नमः
52. ॐ ह्रीं परतराय नमः
53. ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः
54. ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः
55. ॐ ह्रीं सनातनाय नमः
56. ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः
57. ॐ ह्रीं अजाय नमः
58. ॐ ह्रीं अजन्मने नमः
59. ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः
60. ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः
61. ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः
62. ॐ ह्रीं जेत्रे नमः
63. ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः
64. ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः
65. ॐ ह्रीं प्रशान्तारये नमः
66. ॐ ह्रीं अनंतात्मने नमः
67. ॐ ह्रीं योगिने नमः
68. ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः
69. ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः
70. ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः
71. ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः
72. ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः
73. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः
74. ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः
75. ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः
76. ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः
77. ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः
78. ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः
79. ॐ ह्रीं सिद्धांतविदे नमः
80. ॐ ह्रीं ध्येयाय नमः
81. ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय नमः
82. ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः
83. ॐ ह्रीं सहिष्णवे नमः
84. ॐ ह्रीं अच्युताय नमः
85. ॐ ह्रीं अनंताय नमः
86. ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः
87. ॐ ह्रीं भवोद्भवाय नमः
88. ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः
89. ॐ ह्रीं अजराय नमः
90. ॐ ह्रीं अजर्याय नमः
91. ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः
92. ॐ ह्रीं धीश्वराय नमः
93. ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः
94. ॐ ह्रीं विभावसवे नमः
95. ॐ ह्रीं असंभूष्णवे नमः
96. ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे नमः
97. ॐ ह्रीं पुरातनाय नमः
98. ॐ ह्रीं परमात्मने नमः
99. ॐ ह्रीं परंज्योतिषे नमः
100. ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः

(2)

1. ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नमः
2. ॐ ह्रीं दिव्याय नमः
3. ॐ ह्रीं पूतवाचे नमः
4. ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः
5. ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः
6. ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः
7. ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः
8. ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः
9. ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः
10. ॐ ह्रीं भगवते नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हते नमः
12. ॐ ह्रीं अरजसे नमः
13. ॐ ह्रीं विरजसे नमः
14. ॐ ह्रीं शुचये नमः
15. ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः
16. ॐ ह्रीं केवलिने नमः
17. ॐ ह्रीं ईशानाय नमः
18. ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः
19. ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः
20. ॐ ह्रीं अमलाय नमः
21. ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये नमः
22. ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः
23. ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः
24. ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः
25. ॐ ह्रीं मुक्ताय नमः
26. ॐ ह्रीं शक्ताय नमः
27. ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः
28. ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः
29. ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः
30. ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः
31. ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः
32. ॐ ह्रीं निरूक्तोक्तये नमः
33. ॐ ह्रीं अनामयाय नमः
34. ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः
35. ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः
36. ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः
37. ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः
38. ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः
39. ॐ ह्रीं अग्रण्ये नमः
40. ॐ ह्रीं ग्रामण्ये नमः
41. ॐ ह्रीं नेत्रे नमः
42. ॐ ह्रीं प्रणेत्रे नमः
43. ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते नमः
44. ॐ ह्रीं शास्त्रे नमः
45. ॐ ह्रीं धर्मपतये नमः
46. ॐ ह्रीं धर्म्याय नमः
47. ॐ ह्रीं धर्मात्मने नमः
48. ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते नमः
49. ॐ ह्रीं वृषध्वजाय नमः
50. ॐ ह्रीं वृषाधीशाय नमः
51. ॐ ह्रीं वृषकेतवे नमः
52. ॐ ह्रीं वृषायुधाय नमः
53. ॐ ह्रीं वृषाय नमः
54. ॐ ह्रीं वृषपतये नमः
55. ॐ ह्रीं भर्त्रे नमः
56. ॐ ह्रीं वृषभाङ्काय नमः
57. ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय नमः
58. ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये नमः
59. ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः
60. ॐ ह्रीं भूतभृते नमः

61. ॐ ह्रीं भूतभावनाय नमः
62. ॐ ह्रीं प्रभवाय नमः
63. ॐ ह्रीं विभवाय नमः
64. ॐ ह्रीं भास्वते नमः
65. ॐ ह्रीं भवाय नमः
66. ॐ ह्रीं भावाय नमः
67. ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः
68. ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः
69. ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नमः
70. ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नमः
71. ॐ ह्रीं अभवाय नमः
72. ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः
73. ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः
74. ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः
75. ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः
76. ॐ ह्रीं सर्वादये नमः
77. ॐ ह्रीं सर्वदिशे नमः
78. ॐ ह्रीं सार्वाय नमः
79. ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः
80. ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः
81. ॐ ह्रीं सर्वात्मने नमः
82. ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय नमः
83. ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः
84. ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते नमः
85. ॐ ह्रीं सुगतये नमः
86. ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः
87. ॐ ह्रीं सुश्रुते नमः
88. ॐ ह्रीं सुवाचे नमः
89. ॐ ह्रीं सूरये नमः
90. ॐ ह्रीं बहुश्रुताय नमः
91. ॐ ह्रीं विश्रुताय नमः
92. ॐ ह्रीं विश्वतः पादाय नमः
93. ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय नमः
94. ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नमः
95. ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय नमः
96. ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः
97. ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय नमः
98. ॐ ह्रीं सहस्रपदे नमः
99. ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः
100. ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय नमः

(3)

1. ॐ ह्रीं स्थविष्ठाय नमः
2. ॐ ह्रीं स्थविराय नम
3. ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय नमः
4. ॐ ह्रीं प्रष्ठाय नमः
5. ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नमः
6. ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये नमः
7. ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय नमः
8. ॐ ह्रीं गरिष्ठाय नमः
9. ॐ ह्रीं बंहिष्ठाय नमः
10. ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नमः
11. ॐ ह्रीं अणिष्ठाय नमः
12. ॐ ह्रीं गरिष्ठगिरे नमः
13. ॐ ह्रीं विश्वभृते नमः
14. ॐ ह्रीं विश्वसृजे नमः
15. ॐ ह्रीं विश्वेशे नमः
16. ॐ ह्रीं विश्वभुजे नमः
17. ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नमः
18. ॐ ह्रीं विश्वाशिषे नमः
19. ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नमः
20. ॐ ह्रीं विश्वजिते नमः
21. ॐ ह्रीं विजितान्तकाय नमः
22. ॐ ह्रीं विभवाय नमः
23. ॐ ह्रीं विभयाय नमः
24. ॐ ह्रीं वीराय नमः
25. ॐ ह्रीं विशोकाय नमः
26. ॐ ह्रीं विजराय नमः
27. ॐ ह्रीं अजरते नमः
28. ॐ ह्रीं विरागाय नमः
29. ॐ ह्रीं विरताय नमः
30. ॐ ह्रीं असङ्गाय नमः
31. ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः
32. ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः
33. ॐ ह्रीं विनेयजनताबन्धवे नमः
34. ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय नमः
35. ॐ ह्रीं वियोगाय नमः
36. ॐ ह्रीं योगविदे नमः
37. ॐ ह्रीं विदुषे नमः
38. ॐ ह्रीं विधात्रे नमः
39. ॐ ह्रीं सुविधये नमः
40. ॐ ह्रीं सुधिये नमः
41. ॐ ह्रीं क्षांतिभाजे नमः
42. ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्त्तये नमः
43. ॐ ह्रीं शांतिभाजे नमः
44. ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय नमः
45. ॐ ह्रीं वायुमूर्त्तये नमः
46. ॐ ह्रीं असंगात्मने नमः
47. ॐ ह्रीं वन्हिमूर्तये नमः
48. ॐ ह्रीं अधर्मदहे नमः
49. ॐ ह्रीं सुयज्वने नमः
50. ॐ ह्रीं यजमानात्मने नमः
51. ॐ ह्रीं सुत्वने नमः
52. ॐ ह्रीं सुत्रामपूजिताय नमः
53. ॐ ह्रीं ऋत्विजे नमः
54. ॐ ह्रीं यज्ञपतये नमः
55. ॐ ह्रीं याज्याय नमः
56. ॐ ह्रीं यज्ञाङ्गाय नमः
57. ॐ ह्रीं अमृताय नमः
58. ॐ ह्रीं हविषे नमः
59. ॐ ह्रीं व्योममूर्तये नमः
60. ॐ ह्रीं अमूर्तात्मने नमः
61. ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः
62. ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः
63. ॐ ह्रीं अचलाय नमः
64. ॐ ह्रीं सोममूर्तये नमः
65. ॐ ह्रीं सुसौम्यात्मने नमः
66. ॐ ह्रीं सूर्यमूर्तये नमः
67. ॐ ह्रीं महाप्रभाय नमः
68. ॐ ह्रीं मंत्रविदे नमः
69. ॐ ह्रीं मंत्रकृते नमः

70. ॐ ह्रीं मंत्रिणे नमः
71. ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये नमः
72. ॐ ह्रीं अनंतगाय नमः
73. ॐ ह्रीं स्वतंत्राय नमः
74. ॐ ह्रीं तंत्रकृते नमः
75. ॐ ह्रीं स्वंताय नमः
76. ॐ ह्रीं कृतांतांताय नमः
77. ॐ ह्रीं कृतान्तकृते नमः
78. ॐ ह्रीं कृतिने नमः
79. ॐ ह्रीं कृतार्थाय नमः
80. ॐ ह्रीं सत्कृत्याय नमः
81. ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः
82. ॐ ह्रीं कृतक्रतवे नमः
83. ॐ ह्रीं नित्याय नमः
84. ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः
85. ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः
86. ॐ ह्रीं अमृतात्मने नमः
87. ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः
88. ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः
89. ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमः
90. ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने नमः
91. ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नमः
92. ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः
93. ॐ ह्रीं ब्रह्मेजे नमः
94. ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः
95. ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः
96. ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने नमः
97. ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः
98. ॐ ह्रीं प्रशमात्मने नमः
99. ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने नमः
100. ॐ ह्रीं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः

(4)

1. ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय नमः
2. ॐ ह्रीं अशोकाय नम
3. ॐ ह्रीं काय नमः
4. ॐ ह्रीं स्रष्ट्रे नमः
5. ॐ ह्रीं पद्मविष्टराय नमः
6. ॐ ह्रीं पद्मेशाय नमः
7. ॐ ह्रीं पद्मसंभूतये नमः
8. ॐ ह्रीं पद्मनाभये नमः
9. ॐ ह्रीं अनुत्तराय नमः
10. ॐ ह्रीं पद्मयोनये नमः
11. ॐ ह्रीं जगद्योनये नमः
12. ॐ ह्रीं इत्याय नमः
13. ॐ ह्रीं स्तुत्याय नमः
14. ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय नमः
15. ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय नमः
16. ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः
17. ॐ ह्रीं जितजेयाय नमः
18. ॐ ह्रीं कृतक्रियाय नमः
19. ॐ ह्रीं गणाधिपाय नमः
20. ॐ ह्रीं गणज्येष्ठाय नमः
21. ॐ ह्रीं गण्याय नमः
22. ॐ ह्रीं पुण्याय नमः
23. ॐ ह्रीं गणाग्रण्ये नमः
24. ॐ ह्रीं गुणाकराय नमः
25. ॐ ह्रीं गुणांभोधये नमः
26. ॐ ह्रीं गुणज्ञाय नमः
27. ॐ ह्रीं गुणनायकाय नमः
28. ॐ ह्रीं गुणादरिणे नमः
29. ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने नमः
30. ॐ ह्रीं निर्गुणाय नमः
31. ॐ ह्रीं पुण्यगिरे नमः
32. ॐ ह्रीं गुणाय नमः
33. ॐ ह्रीं शरण्याय नमः
34. ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः
35. ॐ ह्रीं पूताय नमः
36. ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः
37. ॐ ह्रीं पुण्यनायकाय नमः
38. ॐ ह्रीं अगण्याय नमः
39. ॐ ह्रीं पुण्यधिये नमः
40. ॐ ह्रीं गुण्याय नमः
41. ॐ ह्रीं पुण्यकृते नमः
42. ॐ ह्रीं पुण्यशासनाय नमः
43. ॐ ह्रीं धर्मारामाय नमः
44. ॐ ह्रीं गुणग्रामाय नमः
45. ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यनिरोधकाय नमः
46. ॐ ह्रीं पापापेताय नमः
47. ॐ ह्रीं विपापात्मने नमः
48. ॐ ह्रीं विपाप्मने नमः
49. ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय नमः
50. ॐ ह्रीं निर्द्वंद्वाय नमः
51. ॐ ह्रीं निमर्दाय नमः
52. ॐ ह्रीं शांताय नमः
53. ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः
54. ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय नमः
55. ॐ ह्रीं निर्निमेषाय नमः
56. ॐ ह्रीं निराहाराय नमः
57. ॐ ह्रीं निष्क्रियाय नमः
58. ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय नमः
59. ॐ ह्रीं निष्कलंकाय नमः
60. ॐ ह्रीं निरस्तैनसे नमः
61. ॐ ह्रीं निर्धूतागसे नमः
62. ॐ ह्रीं निरास्रवाय नमः
63. ॐ ह्रीं विशालाय नमः
64. ॐ ह्रीं विपुलज्योतिषे नमः
65. ॐ ह्रीं अतुलाय नमः
66. ॐ ह्रीं अचिंत्यवैभवाय नमः
67. ॐ ह्रीं सुसंवृताय नमः
68. ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः
69. ॐ ह्रीं सुभुजे नमः
70. ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वविदे नमः
71. ॐ ह्रीं एकविद्याय नमः
72. ॐ ह्रीं महाविद्याय नमः
73. ॐ ह्रीं मुनये नमः
74. ॐ ह्रीं परिवृढाय नमः
75. ॐ ह्रीं पत्ये नमः
76. ॐ ह्रीं धीशाय नमः
77. ॐ ह्रीं विद्यानिधये नमः
78. ॐ ह्रीं साक्षिणे नमः
79. ॐ ह्रीं विनेत्रे नमः
80. ॐ ह्रीं विहतान्तकाय नमः

81. ॐ ह्रीं पित्रे नमः
82. ॐ ह्रीं पितामहाय नमः
83. ॐ ह्रीं पात्रे नमः
84. ॐ ह्रीं पवित्राय नमः
85. ॐ ह्रीं पावनाय नमः
86. ॐ ह्रीं गतये नमः
87. ॐ ह्रीं त्रात्रे नमः
88. ॐ ह्रीं भिषग्वराय नमः
89. ॐ ह्रीं वर्याय नमः
90. ॐ ह्रीं वरदाय नमः
91. ॐ ह्रीं परमाय नमः
92. ॐ ह्रीं पुंसे नमः
93. ॐ ह्रीं कवये नमः
94. ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः
95. ॐ ह्रीं वर्षीयसे नमः
96. ॐ ह्रीं वृषभाय नमः
97. ॐ ह्रीं पुरवे नमः
98. ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रसवाय नमः
99. ॐ ह्रीं हेतवे नमः
100. ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय नमः

(5)

1. ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः
2. ॐ ह्रीं श्लक्ष्णाय नमः
3. ॐ ह्रीं लक्षण्याय नमः
4. ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय नमः
5. ॐ ह्रीं निरक्षाय नमः
6. ॐ ह्रीं पुंडरीकाक्षाय नमः
7. ॐ ह्रीं पुष्कलाय नमः
8. ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय नमः
9. ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः
10. ॐ ह्रीं सिद्धसंकल्पाय नमः
11. ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः
12. ॐ ह्रीं सिद्धसाधनाय नमः
13. ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय नमः
14. ॐ ह्रीं महाबोधये नमः
15. ॐ ह्रीं वर्द्धमानाय नमः
16. ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय नमः
17. ॐ ह्रीं वेदांगाय नमः
18. ॐ ह्रीं वेदविदे नमः
19. ॐ ह्रीं वेद्याय नमः
20. ॐ ह्रीं जातरूपाय नमः
21. ॐ ह्रीं विदांवराय नमः
22. ॐ ह्रीं वेदवेद्याय नमः
23. ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय नमः
24. ॐ ह्रीं विवेदाय नमः
25. ॐ ह्रीं वदतांवराय नमः
26. ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः
27. ॐ ह्रीं व्यक्ताय नमः
28. ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे नमः
29. ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय नमः
30. ॐ ह्रीं युगादिकृते नमः
31. ॐ ह्रीं युगाधाराय नमः
32. ॐ ह्रीं युगादये नमः
33. ॐ ह्रीं जगदादिजाय नमः
34. ॐ ह्रीं अतींद्राय नमः
35. ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय नमः
36. ॐ ह्रीं धींद्राय नमः
37. ॐ ह्रीं महेन्द्राय नमः
38. ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः
39. ॐ ह्रीं अनिन्द्रियाय नमः
40. ॐ ह्रीं अहमिंद्राच्र्याय नमः
41. ॐ ह्रीं महेन्द्रमहिताय नमः
42. ॐ ह्रीं महते नमः
43. ॐ ह्रीं उद्भवाय नमः
44. ॐ ह्रीं कारणाय नमः
45. ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः
46. ॐ ह्रीं पारगाय नमः
47. ॐ ह्रीं भवतारकाय नमः
48. ॐ ह्रीं अग्राह्याय नमः
49. ॐ ह्रीं गहनाय नमः
50. ॐ ह्रीं गुह्याय नमः
51. ॐ ह्रीं परार्ध्याय नमः
52. ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः
53. ॐ ह्रीं अनंतर्द्धये नमः
54. ॐ ह्रीं अमेयर्द्धये नमः
55. ॐ ह्रीं अचिंत्यर्द्धये नमः
56. ॐ ह्रीं समग्रधिये नमः
57. ॐ ह्रीं प्राग्रयाय नमः
58. ॐ ह्रीं प्राग्रहराय नमः
59. ॐ ह्रीं अभ्यग्राय नमः
60. ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय नमः
61. ॐ ह्रीं अग्राय नमः
62. ॐ ह्रीं अग्रिमाय नमः
63. ॐ ह्रीं अग्रजाय नमः
64. ॐ ह्रीं महातपसे नमः
65. ॐ ह्रीं महातेजसे नमः
66. ॐ ह्रीं महोदर्काय नमः
67. ॐ ह्रीं महोदयाय नमः
68. ॐ ह्रीं महायशसे नमः
69. ॐ ह्रीं महाधाम्ने नमः
70. ॐ ह्रीं महासत्त्वाय नमः
71. ॐ ह्रीं महाधृतये नमः
72. ॐ ह्रीं महाधैर्याय नमः
73. ॐ ह्रीं महावीर्याय नमः
74. ॐ ह्रीं महासंपदे नमः
75. ॐ ह्रीं महाबलाय नमः
76. ॐ ह्रीं महाशक्तये नमः
77. ॐ ह्रीं महाज्योतिषे नमः
78. ॐ ह्रीं महाभूतये नमः
79. ॐ ह्रीं महाद्युतये नमः
80. ॐ ह्रीं महामतये नमः
81. ॐ ह्रीं महानीतये नमः
82. ॐ ह्रीं महाक्षांतये नमः
83. ॐ ह्रीं महादयाय नमः
84. ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय नमः
85. ॐ ह्रीं महाभागाय नमः
86. ॐ ह्रीं महानंदाय नमः
87. ॐ ह्रीं महाकवये नमः
88. ॐ ह्रीं महामहसे नमः
89. ॐ ह्रीं महाकीर्तये नमः
90. ॐ ह्रीं महाकांतये नमः

91. ॐ ह्रीं महावपुषे नमः
92. ॐ ह्रीं महादानाय नमः
93. ॐ ह्रीं महाज्ञानाय नमः
94. ॐ ह्रीं महायोगाय नमः
95. ॐ ह्रीं महागुणाय नमः
96. ॐ ह्रीं महामहपतये नमः
97. ॐ ह्रीं प्राप्तमहाकल्याण- पंचकाय नमः
98. ॐ ह्रीं महाप्रभवे नमः
99. ॐ ह्रीं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः
100. ॐ ह्रीं महेश्वराय नमः

(6)

1. ॐ ह्रीं महामुनये नमः
2. ॐ ह्रीं महामौनिने नमः
3. ॐ ह्रीं महाध्यानाय नमः
4. ॐ ह्रीं महादमाय नमः
5. ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः
6. ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः
7. ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः
8. ॐ ह्रीं महामखाय नमः
9. ॐ ह्रीं महाव्रतपतये नमः
10. ॐ ह्रीं मह्याय नमः
11. ॐ ह्रीं महाकांतिधराय नमः
12. ॐ ह्रीं अधिपाय नमः
13. ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः
14. ॐ ह्रीं अमेयाय नमः
15. ॐ ह्रीं महोपायाय नमः
16. ॐ ह्रीं महोमयाय नमः
17. ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः
18. ॐ ह्रीं मंत्रे नमः
19. ॐ ह्रीं महामंत्राय नमः
20. ॐ ह्रीं महायतये नमः
21. ॐ ह्रीं महानादाय नमः
22. ॐ ह्रीं महाघोषाय नमः
23. ॐ ह्रीं महेज्याय नमः
24. ॐ ह्रीं महसांपतये नमः
25. ॐ ह्रीं महाध्वरधराय नमः
26. ॐ ह्रीं धुर्याय नमः
27. ॐ ह्रीं महोदार्याय नमः
28. ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे नमः
29. ॐ ह्रीं महात्मने नमः
30. ॐ ह्रीं महसांधाम्ने नमः
31. ॐ ह्रीं महर्षये नमः
32. ॐ ह्रीं महितोदयाय नमः
33. ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय नमः
34. ॐ ह्रीं शूराय नमः
35. ॐ ह्रीं महाभूतपतये नमः
36. ॐ ह्रीं गुरवे नमः
37. ॐ ह्रीं महापराक्रमाय नमः
38. ॐ ह्रीं अनंताय नमः
39. ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे नमः
40. ॐ ह्रीं वशिने नमः
41. ॐ ह्रीं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः
42. ॐ ह्रीं महामोहाद्रिसूदनाय नमः
43. ॐ ह्रीं महागुणाकराय नमः
44. ॐ ह्रीं क्षांताय नमः
45. ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय नमः
46. ॐ ह्रीं शमिने नमः
47. ॐ ह्रीं महाध्यानपतये नमः
48. ॐ ह्रीं ध्यानमहाधर्मणे नमः
49. ॐ ह्रीं महाव्रताय नमः
50. ॐ ह्रीं महाकर्मारिघ्ने नमः
51. ॐ ह्रीं आत्मज्ञाय नमः
52. ॐ ह्रीं महादेवाय नमः
53. ॐ ह्रीं महेशित्रे नमः
54. ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहाय नमः
55. ॐ ह्रीं साधवे नमः
56. ॐ ह्रीं सर्वदोषहराय नमः
57. ॐ ह्रीं हराय नमः
58. ॐ ह्रीं असंख्येयाय नमः
59. ॐ ह्रीं अप्रमेयात्मने नमः
60. ॐ ह्रीं शमात्मने नमः
61. ॐ ह्रीं प्रशमाकराय नमः
62. ॐ ह्रीं सर्वयोगीश्वराय नमः
63. ॐ ह्रीं अचिंत्याय नमः
64. ॐ ह्रीं श्रुतात्मने नमः
65. ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे नमः
66. ॐ ह्रीं दान्तात्मने नमः
67. ॐ ह्रीं दमतीर्थेशाय नमः
68. ॐ ह्रीं योगात्मने नमः
69. ॐ ह्रीं ज्ञानसर्वगाय नमः
70. ॐ ह्रीं प्रधानाय नमः
71. ॐ ह्रीं आत्मने नमः
72. ॐ ह्रीं प्रकृतये नमः
73. ॐ ह्रीं परमाय नमः
74. ॐ ह्रीं परमोदयाय नमः
75. ॐ ह्रीं प्रक्षीणबन्धाय नमः
76. ॐ ह्रीं कामारये नमः
77. ॐ ह्रीं क्षेमकृते नमः
78. ॐ ह्रीं क्षेमशासनाय नमः
79. ॐ ह्रीं प्रणवाय नमः
80. ॐ ह्रीं प्रणताय नमः
81. ॐ ह्रीं प्राणाय नमः
82. ॐ ह्रीं प्राणदाय नमः
83. ॐ ह्रीं प्रणतेश्वराय नमः
84. ॐ ह्रीं प्रमाणाय नमः
85. ॐ ह्रीं प्रणिधये नमः
86. ॐ ह्रीं दक्षाय नमः
87. ॐ ह्रीं दक्षिणाय नमः
88. ॐ ह्रीं अध्वर्यवे नमः
89. ॐ ह्रीं अध्वराय नमः
90. ॐ ह्रीं आनंदाय नमः
91. ॐ ह्रीं नंदनाय नमः
92. ॐ ह्रीं नंदाय नमः
93. ॐ ह्रीं वंद्याय नमः
94. ॐ ह्रीं अनिंद्याय नमः
95. ॐ ह्रीं अभिनंदनाय नमः
96. ॐ ह्रीं कामघ्ने नमः
97. ॐ ह्रीं कामदाय नमः
98. ॐ ह्रीं काम्याय नमः
99. ॐ ह्रीं कामधेनवे नमः
100. ॐ ह्रीं अरिञ्जयाय नमः

(7)

1. ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः
2. ॐ ह्रीं प्राकृताय नमः
3. ॐ ह्रीं वैकृतांतकृते नमः
4. ॐ ह्रीं अंतकृते नमः
5. ॐ ह्रीं कांतिगवे नमः
6. ॐ ह्रीं कांताय नमः
7. ॐ ह्रीं चिंतामणये नमः
8. ॐ ह्रीं अभीष्टदाय नमः
9. ॐ ह्रीं अजिताय नमः
10. ॐ ह्रीं जितकामारये नमः
11. ॐ ह्रीं अमिताय नमः
12. ॐ ह्रीं अमितशासनाय नमः
13. ॐ ह्रीं जितक्रोधाय नमः
14. ॐ ह्रीं जितामित्राय नमः
15. ॐ ह्रीं जितक्लेशाय नमः
16. ॐ ह्रीं जितान्तकाय नमः
17. ॐ ह्रीं जिनेन्द्राय नमः
18. ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः
19. ॐ ह्रीं मुनीन्द्राय नमः
20. ॐ ह्रीं दुंदुभिस्वनाय नमः
21. ॐ ह्रीं महेंद्रवंद्याय नमः
22. ॐ ह्रीं योगीन्द्राय नमः
23. ॐ ह्रीं यतीन्द्राय नमः
24. ॐ ह्रीं नाभिनंदनाय नमः
25. ॐ ह्रीं नाभेयाय नमः
26. ॐ ह्रीं नाभिजाय नमः
27. ॐ ह्रीं अजाताय नमः
28. ॐ ह्रीं सुव्रताय नमः
29. ॐ ह्रीं मनवे नमः
30. ॐ ह्रीं उत्तमाय नमः
31. ॐ ह्रीं अभेद्याय नमः
32. ॐ ह्रीं अनत्याय नमः
33. ॐ ह्रीं अनाश्वते नमः
34. ॐ ह्रीं अधिकाय नमः
35. ॐ ह्रीं अधिगुरवे नमः
36. ॐ ह्रीं सुधिये नमः
37. ॐ ह्रीं सुमेधसे नमः
38. ॐ ह्रीं विक्रमिणे नमः
39. ॐ ह्रीं स्वामिने नमः
40. ॐ ह्रीं दुराधर्षाय नमः
41. ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय नमः
42. ॐ ह्रीं विशिष्टाय नमः
43. ॐ ह्रीं शिष्टभुजे नमः
44. ॐ ह्रीं शिष्टाय नमः
45. ॐ ह्रीं प्रत्ययाय नमः
46. ॐ ह्रीं कामनाय नमः
47. ॐ ह्रीं अनघाय नमः
48. ॐ ह्रीं क्षेमिने नमः
49. ॐ ह्रीं क्षेमंकराय नमः
50. ॐ ह्रीं अक्षय्याय नमः
51. ॐ ह्रीं क्षेमधर्मपतये नमः
52. ॐ ह्रीं क्षमिने नमः
53. ॐ ह्रीं अग्राह्याय नमः
54. ॐ ह्रीं ज्ञाननिग्राह्याय नमः
55. ॐ ह्रीं ध्यानगम्याय नमः
56. ॐ ह्रीं निरुत्तराय नमः
57. ॐ ह्रीं सुकृतिने नमः
58. ॐ ह्रीं धातवे नमः
59. ॐ ह्रीं इज्यार्हाय नमः
60. ॐ ह्रीं सुनयाय नमः
61. ॐ ह्रीं चतुराननाय नमः
62. ॐ ह्रीं श्रीनिवासाय नमः
63. ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय नमः
64. ॐ ह्रीं चतुरास्याय नमः
65. ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः
66. ॐ ह्रीं सत्यात्मने नमः
67. ॐ ह्रीं सत्यविज्ञानाय नमः
68. ॐ ह्रीं सत्यवाचे नमः
69. ॐ ह्रीं सत्यशासनाय नमः
70. ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः
71. ॐ ह्रीं सत्यसंधानाय नमः
72. ॐ ह्रीं सत्याय नमः
73. ॐ ह्रीं सत्यपरायणाय नमः
74. ॐ ह्रीं स्थेयसे नमः
75. ॐ ह्रीं स्थवीयसे नमः
76. ॐ ह्रीं नेदीयसे नमः
77. ॐ ह्रीं दवीयसे नमः
78. ॐ ह्रीं दूरदर्शनाय नमः
79. ॐ ह्रीं अणोरणीयसे नमः
80. ॐ ह्रीं अनणवे नमः
81. ॐ ह्रीं गरीयसामाद्यगुरवे नमः
82. ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः
83. ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः
84. ॐ ह्रीं सदातृप्ताय नमः
85. ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः
86. ॐ ह्रीं सदागतये नमः
87. ॐ ह्रीं सदासौख्याय नमः
88. ॐ ह्रीं सदाविद्याय नमः
89. ॐ ह्रीं सदोदयाय नमः
90. ॐ ह्रीं सुघोषाय नमः
91. ॐ ह्रीं सुमुखाय नमः
92. ॐ ह्रीं सौम्याय नमः
93. ॐ ह्रीं सुखदाय नमः
94. ॐ ह्रीं सुहिताय नमः
95. ॐ ह्रीं सुहृते नमः
96. ॐ ह्रीं सुगुप्ताय नमः
97. ॐ ह्रीं गुप्तिभृते नमः
98. ॐ ह्रीं गोप्त्रे नमः
99. ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय नमः
100. ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः

(8)

1. ॐ ह्रीं बृहद्बृहस्पतये नमः
2. ॐ ह्रीं वाग्मिने नमः
3. ॐ ह्रीं वाचस्पतये नमः
4. ॐ ह्रीं उदारधिये नमः
5. ॐ ह्रीं मनीषिणे नमः
6. ॐ ह्रीं धिषणाय नमः
7. ॐ ह्रीं धीमते नमः
8. ॐ ह्रीं शेमुषीशाय नमः
9. ॐ ह्रीं गिरांपतये नमः

10. ॐ ह्रीं नैकरूपाय नमः
11. ॐ ह्रीं नयोत्तुङ्गाय नमः
12. ॐ ह्रीं नैकात्मने नमः
13. ॐ ह्रीं नैकधर्मकृते नमः
14. ॐ ह्रीं अविज्ञेयाय नमः
15. ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः
16. ॐ ह्रीं कृतज्ञाय नमः
17. ॐ ह्रीं कृतलक्षणाय नमः
18. ॐ ह्रीं ज्ञानगर्भाय नमः
19. ॐ ह्रीं दयागर्भाय नमः
20. ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय नमः
21. ॐ ह्रीं प्रभास्वराय नमः
22. ॐ ह्रीं पद्मगर्भाय नमः
23. ॐ ह्रीं जगद्गर्भाय नमः
24. ॐ ह्रीं हेमगर्भाय नमः
25. ॐ ह्रीं सुदर्शनाय नमः
26. ॐ ह्रीं लक्ष्मीवते नमः
27. ॐ ह्रीं त्रिदशाध्यक्षाय नमः
28. ॐ ह्रीं द्रढीयसे नमः
29. ॐ ह्रीं इनाय नमः
30. ॐ ह्रीं ईशित्रे नमः
31. ॐ ह्रीं मनोहराय नमः
32. ॐ ह्रीं मनोज्ञांगाय नमः
33. ॐ ह्रीं धीराय नमः
34. ॐ ह्रीं गंभीरशासनाय नमः
35. ॐ ह्रीं धर्मयूपाय नमः
36. ॐ ह्रीं दयायागाय नमः
37. ॐ ह्रीं धर्मनेमये नमः
38. ॐ ह्रीं मुनीश्वराय नमः
39. ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय नमः
40. ॐ ह्रीं देवाय नमः
41. ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः
42. ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय नमः
43. ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः
44. ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय नमः
45. ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः
46. ॐ ह्रीं अमोघशासनाय नमः
47. ॐ ह्रीं सुरूपाय नमः
48. ॐ ह्रीं सुभगाय नमः
49. ॐ ह्रीं त्यागिने नमः
50. ॐ ह्रीं समयज्ञाय नमः
51. ॐ ह्रीं समाहिताय नमः
52. ॐ ह्रीं सुस्थिताय नमः
53. ॐ ह्रीं स्वास्थ्यभाजे नमः
54. ॐ ह्रीं स्वस्थाय नमः
55. ॐ ह्रीं नीरजस्काय नमः
56. ॐ ह्रीं निरुद्धवाय नमः
57. ॐ ह्रीं अलेपाय नमः
58. ॐ ह्रीं निष्कलंकात्मने नमः
59. ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः
60. ॐ ह्रीं गतस्पृहाय नमः
61. ॐ ह्रीं वश्येन्द्रियाय नमः
62. ॐ ह्रीं विमुक्तात्मने नमः
63. ॐ ह्रीं निःसपत्नाय नमः
64. ॐ ह्रीं जितेन्द्रियाय नमः
65. ॐ ह्रीं प्रशान्ताय नमः
66. ॐ ह्रीं अनंतधामर्षये नमः
67. ॐ ह्रीं मंगलाय नमः
68. ॐ ह्रीं मलघ्ने नमः
69. ॐ ह्रीं अनघाय नमः
70. ॐ ह्रीं अनीदृशे नमः
71. ॐ ह्रीं उपमाभूताय नमः
72. ॐ ह्रीं दिष्टये नमः
73. ॐ ह्रीं दैवाय नमः
74. ॐ ह्रीं अगोचराय नमः
75. ॐ ह्रीं अमूर्त्ताय नमः
76. ॐ ह्रीं मूर्तिमते नमः
77. ॐ ह्रीं एकाय नमः
78. ॐ ह्रीं नैकाय नमः
79. ॐ ह्रीं नानैकतत्त्वदृशे नमः
80. ॐ ह्रीं अध्यात्मगम्याय नमः
81. ॐ ह्रीं अगम्यात्मने नमः
82. ॐ ह्रीं योगविदे नमः
83. ॐ ह्रीं योगिवंदिताय नमः
84. ॐ ह्रीं सर्वत्रगाय नमः
85. ॐ ह्रीं सदाभाविने नमः
86. ॐ ह्रीं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः
87. ॐ ह्रीं शंकराय नमः
88. ॐ ह्रीं शंवदाय नमः
89. ॐ ह्रीं दान्ताय नमः
90. ॐ ह्रीं दमिने नमः
91. ॐ ह्रीं क्षांतिपरायणाय नमः
92. ॐ ह्रीं अधिपाय नमः
93. ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः
94. ॐ ह्रीं परात्मज्ञाय नमः
95. ॐ ह्रीं परापराय नमः
96. ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय नमः
97. ॐ ह्रीं अभ्यर्च्याय नमः
98. ॐ ह्रीं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः
99. ॐ ह्रीं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः
100. ॐ ह्रीं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः

(9)

1. ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शिने नमः
2. ॐ ह्रीं लोकेशाय नमः
3. ॐ ह्रीं लोकधात्रे नमः
4. ॐ ह्रीं दृढव्रताय नमः
5. ॐ ह्रीं सर्वलोकातिगाय नमः
6. ॐ ह्रीं पूज्याय नमः
7. ॐ ह्रीं सर्वलोकैकसारथये नमः
8. ॐ ह्रीं पुराणाय नमः
9. ॐ ह्रीं पुरुषाय नमः
10. ॐ ह्रीं पूर्वाय नमः
11. ॐ ह्रीं कृतपूर्वांगविस्तराय नमः
12. ॐ ह्रीं आदिदेवाय नमः
13. ॐ ह्रीं पुराणाद्याय नमः
14. ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः
15. ॐ ह्रीं अधिदेवतायै नमः
16. ॐ ह्रीं युगमुख्याय नमः
17. ॐ ह्रीं युगज्येष्ठाय नमः
18. ॐ ह्रीं युगादिस्थितिदेशकाय नमः
19. ॐ ह्रीं कल्याणवर्णाय नमः
20. ॐ ह्रीं कल्याणाय नमः
21. ॐ ह्रीं कल्याय नमः

22. ॐ ह्रीं कल्याणलक्षणाय नमः
23. ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः
24. ॐ ह्रीं दीप्रकल्याणात्मने नमः
25. ॐ ह्रीं विकल्मषाय नमः
26. ॐ ह्रीं विकलंकाय नमः
27. ॐ ह्रीं कलातीताय नमः
28. ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय नमः
29. ॐ ह्रीं कलाधराय नमः
30. ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः
31. ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः
32. ॐ ह्रीं जगद्बंधवे नमः
33. ॐ ह्रीं जगद्विभवे नमः
34. ॐ ह्रीं जगद्धितैषिणे नमः
35. ॐ ह्रीं लोकज्ञाय नमः
36. ॐ ह्रीं सर्वगाय नमः
37. ॐ ह्रीं जगदग्रजाय नमः
38. ॐ ह्रीं चराचरगुरवे नमः
39. ॐ ह्रीं गोप्याय नमः
40. ॐ ह्रीं गूढात्मने नमः
41. ॐ ह्रीं गूढगोचराय नमः
42. ॐ ह्रीं सद्योजाताय नमः
43. ॐ ह्रीं प्रकाशात्मने नमः
44. ॐ ह्रीं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः
45. ॐ ह्रीं आदित्यवर्णाय नमः
46. ॐ ह्रीं भर्माभाय नमः
47. ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः
48. ॐ ह्रीं कनकप्रभाय नमः
49. ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णाय नमः
50. ॐ ह्रीं रुक्माभाय नमः
51. ॐ ह्रीं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः
52. ॐ ह्रीं तपनीयनिभाय नमः
53. ॐ ह्रीं तुंगाय नमः
54. ॐ ह्रीं बालार्काभाय नमः
55. ॐ ह्रीं अनलप्रभाय नमः
56. ॐ ह्रीं संध्याभ्रबभ्रवे नमः
57. ॐ ह्रीं हेमाभाय नमः
58. ॐ ह्रीं तप्तचामीकरच्छवये नमः
59. ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः
60. ॐ ह्रीं कनत्कांचनसन्निभाय नमः
61. ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय नमः
62. ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय नमः
63. ॐ ह्रीं शातकुंभनिभप्रभाय नमः
64. ॐ ह्रीं द्युम्नाभाय नमः
65. ॐ ह्रीं जातरूपाभाय नमः
66. ॐ ह्रीं तप्तजांबूनदद्युतये नमः
67. ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रिये नमः
68. ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय नमः
69. ॐ ह्रीं हाटकद्युतये नमः
70. ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय नमः
71. ॐ ह्रीं पुष्टिदाय नमः
72. ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः
73. ॐ ह्रीं स्पष्टाय नमः
74. ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय नमः
75. ॐ ह्रीं क्षमाय नमः
76. ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय नमः
77. ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः
78. ॐ ह्रीं अमोघाय नमः
79. ॐ ह्रीं प्रशास्त्रे नमः
80. ॐ ह्रीं शासित्रे नमः
81. ॐ ह्रीं स्वभुवे नमः
82. ॐ ह्रीं शांतिनिष्ठाय नमः
83. ॐ ह्रीं मुनिज्येष्ठाय नमः
84. ॐ ह्रीं शिवतातये नमः
85. ॐ ह्रीं शिवप्रदाय नमः
86. ॐ ह्रीं शांतिदाय नमः
87. ॐ ह्रीं शांतिकृते नमः
88. ॐ ह्रीं शांतये नमः
89. ॐ ह्रीं कांतिमते नमः
90. ॐ ह्रीं कामितप्रदाय नमः
91. ॐ ह्रीं श्रेयोनिधये नमः
92. ॐ ह्रीं अधिष्ठानाय नमः
93. ॐ ह्रीं अप्रतिष्ठाय नमः
94. ॐ ह्रीं प्रतिष्ठिताय नमः
95. ॐ ह्रीं सुस्थिराय नमः
96. ॐ ह्रीं स्थावराय नमः
97. ॐ ह्रीं स्थास्नवे नमः
98. ॐ ह्रीं प्रथीयसे नमः
99. ॐ ह्रीं प्रथिताय नमः
100. ॐ ह्रीं पृथवे नमः

(10)

1. ॐ ह्रीं दिग्वाससे नमः
2. ॐ ह्रीं वातरशनाय नमः
3. ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थेशाय नमः
4. ॐ ह्रीं निरंबराय नमः
5. ॐ ह्रीं निष्किंचनाय नमः
6. ॐ ह्रीं निराशंसाय नमः
7. ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे नमः
8. ॐ ह्रीं अमोमुहाय नमः
9. ॐ ह्रीं तेजोराशये नमः
10. ॐ ह्रीं अनंतौजसे नमः
11. ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धये नमः
12. ॐ ह्रीं शीलसागराय नमः
13. ॐ ह्रीं तेजोमयाय नमः
14. ॐ ह्रीं अमितज्योतिषे नमः
15. ॐ ह्रीं ज्योतिमूर्तये नमः
16. ॐ ह्रीं तमोपहाय नमः
17. ॐ ह्रीं जगच्चूड़ामणये नमः
18. ॐ ह्रीं दीप्ताय नमः
19. ॐ ह्रीं शंवदे नमः
20. ॐ ह्रीं विघ्नविनायकाय नमः
21. ॐ ह्रीं कलिघ्नाय नमः
22. ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नाय नमः
23. ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकाय नमः
24. ॐ ह्रीं अनिद्रालवे नमः
25. ॐ ह्रीं अतन्द्रालवे नमः
26. ॐ ह्रीं जागरूकाय नमः
27. ॐ ह्रीं प्रमामयाय नमः
28. ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये नमः
29. ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः
30. ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः
31. ॐ ह्रीं प्रजाहिताय नमः
32. ॐ ह्रीं मुमुक्षवे नमः
33. ॐ ह्रीं बंधमोक्षज्ञाय नमः

34. ॐ ह्रीं जिताक्षाय नमः
35. ॐ ह्रीं जितमन्मथाय नमः
36. ॐ ह्रीं प्रशांतरसशैलूषाय नमः
37. ॐ ह्रीं भव्यपेटकनायकाय नमः
38. ॐ ह्रीं मूलकर्त्रे नमः
39. ॐ ह्रीं अखिलज्योतिषे नमः
40. ॐ ह्रीं मलघ्यान नमः
41. ॐ ह्रीं मूलकारणाय नमः
42. ॐ ह्रीं आप्ताय नमः
43. ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः
44. ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः
45. ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये नमः
46. ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे नमः
47. ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे नमः
48. ॐ ह्रीं वचसामीशाय नमः
49. ॐ ह्रीं मारजिते नमः
50. ॐ ह्रीं विश्वभावविदे नमः
51. ॐ ह्रीं सुतनवे नमः
52. ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्ताय नमः
53. ॐ ह्रीं सुगताय नमः
54. ॐ ह्रीं हतदुर्नयाय नमः
55. ॐ ह्रीं श्रीशाय नमः
56. ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः
57. ॐ ह्रीं वीतभिये नमः
58. ॐ ह्रीं अभयंकराय नमः
59. ॐ ह्रीं उत्सन्नदोषाय नमः
60. ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः
61. ॐ ह्रीं निश्चलाय नमः
62. ॐ ह्रीं लोकवत्सलाय नमः
63. ॐ ह्रीं लोकोत्तराय नमः
64. ॐ ह्रीं लोकपतये नमः
65. ॐ ह्रीं लोकचक्षुषे नमः
66. ॐ ह्रीं अपारधिये नमः
67. ॐ ह्रीं धीरधिये नमः
68. ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गाय नमः
69. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः
70. ॐ ह्रीं सूनृतपूतवाचे नमः
71. ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय नमः
72. ॐ ह्रीं प्राज्ञाय नमः
73. ॐ ह्रीं यतये नमः
74. ॐ ह्रीं नियमितेंद्रियाय नमः
75. ॐ ह्रीं भदन्ताय नमः
76. ॐ ह्रीं भद्रकृते नमः
77. ॐ ह्रीं भद्राय नमः
78. ॐ ह्रीं कल्पवृक्षाय नमः
79. ॐ ह्रीं वरप्रदाय नमः
80. ॐ ह्रीं समुन्मूलितकर्मारये नमः
81. ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः
82. ॐ ह्रीं कर्मण्याय नमः
83. ॐ ह्रीं कर्मठाय नमः
84. ॐ ह्रीं प्रांशवे नमः
85. ॐ ह्रीं हेयादेयविचक्षणाय नमः
86. ॐ ह्रीं अनंतशक्तये नमः
87. ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नमः
88. ॐ ह्रीं त्रिपुरारये नमः
89. ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः
90. ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः
91. ॐ ह्रीं त्र्यंबकाय नमः
92. ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय नमः
93. ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः
94. ॐ ह्रीं समंतभद्राय नमः
95. ॐ ह्रीं शांतारये नमः
96. ॐ ह्रीं धर्माचार्याय नमः
97. ॐ ह्रीं दयानिधये नमः
98. ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने नमः
99. ॐ ह्रीं जितानंगाय नमः
100. ॐ ह्रीं कृपालवे नमः
101. ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः
102. ॐ ह्रीं शुभंयवे नमः
103. ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय नमः
104. ॐ ह्रीं पुण्यराशये नमः
105. ॐ ह्रीं अनामयाय नमः
106. ॐ ह्रीं धर्मपालाय नमः
107. ॐ ह्रीं जगत्पालाय नमः
108. ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः

इति सहस्रनाममंत्राः

(35) ज्ञान पचीसी व्रत विधि

ज्ञान पचीसी व्रत में ग्यारस के ग्यारह उपवास और चौदश के चौदह उपवास ऐसे कुल पचीस व्रत होते हैं। यह व्रत ग्यारह अंग और चौदह पूर्वरूप ज्ञान की आराधना के लिए किया जाता है। इसको श्रावण सुदी चतुर्दशी से करने का विधान है।

मतांतर से इस व्रत में दशमी के दश उपवास और पूर्णिमा के पंद्रह उपवास करने का भी विधान है।

इस व्रत में प्रधानरूप से श्रुतस्कंध यंत्र का अभिषेक एवं श्रुतज्ञान (सरस्वती) की पूजा करना चाहिए।

प्रत्येक व्रत की उत्तम विधि तो उपवास ही है। मध्यम एवं जघन्य विधि में शक्ति के अनुसार अल्पाहार या एकाशन करके भी व्रत किया जा सकता है। व्रत के दिन जिनेन्द्रदेव एवं श्रुतस्कंध यंत्र अथवा सरस्वती की मूर्ति का पंचामृत अभिषेक करके पूजा करें, पुनः सरस्वती के 108 नामों को पढ़ते हुए एक-एक मंत्रों का उच्चारण कर सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावलों को चढ़ावें। अनंतर समुच्चय मंत्र से एक जाप्य करें।

समुच्चय जाप्य—ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगाय नमः।

ग्यारह अंग और चौदह पूर्वसंबंधी व्रतों में पृथक्-पृथक् एक-एक जाप्य करना चाहिए।

ग्यारह अंग की 11 जाप्य—

1. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-आचारांगाय नमः।
2. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-सूत्रकृतांगाय नमः।
3. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-स्थानांगाय नमः।
4. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-समवायांगाय नमः।
5. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगाय नमः।
6. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-नाथधर्मकथांगाय नमः।
7. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-उपासकाध्ययनांगाय नमः।
8. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अंतकृत्दशांगाय नमः।
9. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अनुत्तरोपपादिकदशांगाय नमः।
10. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्रश्नव्याकरणांगाय नमः।
11. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-विपाकसूत्रांगाय नमः।

चौदह पूर्वों की 14 जाप्य—

1. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-उत्पादपूर्वाय नमः।
2. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अग्रायणीयपूर्वाय नमः।
3. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-वीर्यानुप्रवादपूर्वाय नमः।
4. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय नमः।
5. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-ज्ञानप्रवादपूर्वाय नमः।
6. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-सत्यप्रवादपूर्वाय नमः।
7. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-आत्मप्रवादपूर्वाय नमः।
8. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-कर्मप्रवादपूर्वाय नमः।
9. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्रत्याख्यानपूर्वाय नमः।
10. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-विद्यानुप्रवादपूर्वाय नमः।
11. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-कल्याणप्रवादपूर्वाय नमः।
12. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्राणावायप्रवादपूर्वाय नमः।
13. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-क्रियाविशालपूर्वाय नमः।
14. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-लोकबिंदुसारपूर्वाय नमः।

इस व्रत के 25 उपवास एक वर्ष में करें। ऐसे एक वर्ष तक या बारह वर्ष तक भी यह व्रत किया जाता है। व्रत पूर्ण करके यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए।

इस व्रत के प्रसाद से मनुष्य श्रुतज्ञान को प्राप्त कर अगले भव में श्रुतकेवली होकर परम्परा से केवलज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ हो जावेगा।

(36) श्रुतज्ञान व्रत

(1) पहली विधि—श्रुतविधि उपवास में मतिज्ञान के 28, ग्यारह अंगों के 11, परिकर्म के 2, सूत्र के 88, प्रथमानुयोग का 1, चौदह पूर्वों के 14, पाँच चूलिका के 5, अवधिज्ञान के 6, मनः पर्ययज्ञान के 2 और केवलज्ञान का 1, ऐसे 158 उपवास करने होते हैं। एक-एक उपवास के बाद एक-एक पारणा होती है[1]।

(2) दूसरी विधि—श्रुतज्ञान व्रत में सोलह प्रतिपदाओं के 16 उपवास, तीन तृतीयाओं के 3, चार चतुर्थी के 4, पांच पंचमी के 5, छह षष्ठी के 6, सात सप्तमी के 7, आठ अष्टमी के 8, नौ नवमी के 9, बीस दशमी के 20, ग्यारह एकादशी के 11, बारह द्वादशी के 12, तेरह त्रयोदशी के 13, चौदह चतुर्दशी के 14, पंद्रह पूर्णिमासी के 15 एवं पंद्रह अमावस्या के 15 उपवास किये जाते हैं।[2] यथा—)

16+3+4+5+6+7+8+9+20+11+12+13+14+15+15 = 158

(3) तृतीय विधि[3] —

अट्ठाईस मतिज्ञान के	—	प्रतिपदा के 28 उपवास
ग्यारह अंग श्रुतज्ञान के	—	ग्यारस के 11 उपवास
दो परिकर्म श्रुतज्ञान के	—	द्वितीया के 2 उपवास
अट्ठासी सूत्र श्रुतज्ञान के	—	अष्टमी के 88 उपवास
एक प्रथमानुयोग श्रुतज्ञान का	—	दशमी का 1 उपवास
चौदह पूर्वश्रुतज्ञान के	—	चतुर्दशी के 14 उपवास
पांच चूलिका श्रुतज्ञान के	—	पंचमी के 5 उपवास
छह अवधिज्ञान के	—	षष्ठी के 6 उपवास
दो मनःपर्ययज्ञान के	—	द्वितीया के 2 उपवास
एक केवलज्ञान का	—	नवमी का 1 उपवास

इन व्रतों के मंत्र निम्नलिखित हैं—

समुच्चय जाप्य—**ॐ ह्रीं श्रीमानसावग्रहादिकेवलज्ञानान्त्य-अष्टपंचाशदुत्तरशत प्रमाणज्ञानेभ्यो नमः।**

मतिज्ञान के 28 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं मानस-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं मानस-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं मानस-अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं मानस-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।

1. हरिवंशपुराण सर्ग 34, श्लोक 97। 2. व्रततिथि निर्णय पृ. 257। 3. ये श्रुतज्ञानव्रत विधि की तिथियाँ अन्य पुस्तक से प्राप्त हुई हैं। यदि उपवास की शक्ति न हो तो एक बार अल्पाहार या एकाशन से भी व्रत कर सकते हैं।

23. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज-अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं रसनेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह-मतिज्ञानाय नमः।

11 अंगरूप श्रुतज्ञान के 11 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं आचारांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं सूत्रकृतांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं स्थानांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं समवायांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं व्याख्याप्रज्ञप्ति-अंग-श्रुतज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञातृधर्मकथांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं उपासकाध्ययन-अंग-श्रुतज्ञानाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं अंतकृत्-दशांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तरौपपादिक-दशांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं प्रश्नव्याकरणांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं विपाकसूत्रांग-श्रुतज्ञानाय नमः।

परिकर्म के 2 भेद के 2 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिवादप्रथम-अवयवपरिकर्मणे नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं परिकर्म-अंतर्गत-चंद्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति-जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिद्वीपसागरप्रज्ञप्ति-व्याख्याप्रज्ञप्तिनाम-पंचविधा-परिकर्म-श्रुतज्ञानेभ्यो नमः।

सूत्र के 88 भेद के 88 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापकर्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापफलभोक्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगतत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं चेतनत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्त्तत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं मूर्त्तत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं अशब्दत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं अगंधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं अरूपत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं अस्पर्शत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं अरसत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं जीवहेतुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं स्वीकृतदेहप्रमाणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं असंसारत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्ध्वगतिशीलत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं पारिणामिकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं बहिरात्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं अंतरात्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिरूपत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।

23. ॐ ह्रीं अर्हं उपयोगधर्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं उपयोगित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं त्रैरूप्यधर्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं जीवनास्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं जीवैकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
29. ॐ ह्रीं अर्हं जीवानेकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
30. ॐ ह्रीं अर्हं जीवनित्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं जीवानित्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं वाच्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
33. ॐ ह्रीं अर्हं अवाच्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं हेतुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं अहेतुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
36. ॐ ह्रीं अर्हं कार्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
37. ॐ ह्रीं अर्हं अकार्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
38. ॐ ह्रीं अर्हं वस्तुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
39. ॐ ह्रीं अर्हं अवस्तुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
40. ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
41. ॐ ह्रीं अर्हं अद्रव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
42. ॐ ह्रीं अर्हं बंधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
43. ॐ ह्रीं अर्हं अबंधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
44. ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
45. ॐ ह्रीं अर्हं अमुक्तत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
46. ॐ ह्रीं अर्हं भव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
47. ॐ ह्रीं अर्हं अभव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
48. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमेयत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
49. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
50. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
51. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमाणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
52. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमातृत्त्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
53. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमातृत्त्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
54. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमितित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
55. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमितित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
56. ॐ ह्रीं अर्हं कर्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
57. ॐ ह्रीं अर्हं अकर्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
58. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
59. ॐ ह्रीं अर्हं अकर्मत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
60. ॐ ह्रीं अर्हं करणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।

61. ॐ ह्रीं अर्हं अकरणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
62. ॐ ह्रीं अर्हं संप्रदानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
63. ॐ ह्रीं अर्हं असंप्रदानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
64. ॐ ह्रीं अर्हं अपादानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
65. ॐ ह्रीं अर्हं अनपादानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
66. ॐ ह्रीं अर्हं संबंधात्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
67. ॐ ह्रीं अर्हं असंबंधात्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
68. ॐ ह्रीं अर्हं अधिकरणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
69. ॐ ह्रीं अर्हं अनधिकरणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
70. ॐ ह्रीं अर्हं क्रियात्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
71. ॐ ह्रीं अर्हं अक्रियात्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
72. ॐ ह्रीं अर्हं विशेषणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
73. ॐ ह्रीं अर्हं अविशेषणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
74. ॐ ह्रीं अर्हं विशेष्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
75. ॐ ह्रीं अर्हं अविशेष्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
76. ॐ ह्रीं अर्हं भावस्य भावशक्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
77. ॐ ह्रीं अर्हं भावस्याभावशक्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
78. ॐ ह्रीं अर्हं भूत कार्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
79. ॐ ह्रीं अर्हं अव्यापकत्वनिषेधाप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
80. ॐ ह्रीं अर्हं व्यापकत्वनिषेधाप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
81. ॐ ह्रीं अर्हं अचेतनत्वनिषेधाप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
82. ॐ ह्रीं अर्हं अंगुष्ठमात्रकत्वनिषेधाप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
83. ॐ ह्रीं अर्हं श्यामकप्रमाणनिषेधाकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
84. ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थत्वप्रमाणनिषेधाकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
85. ॐ ह्रीं अर्हं निरन्वय-क्षणिकनिषेधाकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
86. ॐ ह्रीं अर्हं अद्वैत-एकान्त-निषेधाकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
87. ॐ ह्रीं अर्हं असर्वज्ञत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
88. ॐ ह्रीं अर्हं क्रम-अक्रम-अनेकांतप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।

प्रथमानुयोग का 1 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमानुयोग-श्रुतज्ञानाय नमः।

चौदह पूर्व के 14 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं उत्पादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रायणीयपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं वीर्यानुप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं अस्ति-नास्तिप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानुवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणानुप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणावायपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं क्रियाविशालपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं लोकविंदुसारपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।

पांच चूलिका के 5 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं जलगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं स्थलगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं मायागताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं रूपगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नमः।

अवधिज्ञान के 6 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमान-अवधिज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं हीयमान-अवधिज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं अवस्थित-अवधिज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं अनवस्थित-अवधिज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं अनुगामि-अवधिज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं अननुगामि-अवधिज्ञानाय नमः।

मनः पर्ययज्ञान के 2 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं ऋजुमतिमनः पर्ययज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं विपुलमतिमनः पर्ययज्ञानाय नमः।

केवलज्ञान का 1 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानाय नमः।

पांच ज्ञानों के पृथक्-पृथक् मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशतिमतिज्ञानेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं द्विविधापरिकर्मभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाशीतिसूत्रेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमानुयोगाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं पंचचूलिकाभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षड्विधा अवधिज्ञानेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं द्विविधा मनःपर्ययज्ञानेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानाय नमः।

(37) चौंसठ ऋद्धि व्रत विधि

चौंसठ ऋद्धि मंत्र की अपेक्षा चौंसठ व्रत करना चाहिए। व्रत के दिन उपवास करना उत्तम, अल्पाहार फल, दूध, मेवा या जल आदि लेना मध्यम और एक बार शुद्ध भोजन करना जघन्य विधि है। प्रत्येक माह में अष्टमी, चतुर्दशी आदि किसी भी दिन व्रत कर सकते हैं। व्रत पूर्ण कर 'चौंसठ ऋद्धि मंडल विधान' करके शक्ति के अनुसार चौंसठ शास्त्र, उपकरण आदि मंदिर में रखें। अनेक प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि को प्राप्त करना, अनेक प्रकार के रोग, शोक, दुःख, दारिद्र्य से छुटकारा पाना यह इसका फल है।

प्रत्येक व्रत का समुच्चय मंत्र– **ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यो नमः।**

चौंसठ व्रतों के 64 मंत्र

चौंसठ ऋद्धि के 18 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अवधिज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं केवलज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं पदानुसारिणीबुद्धिऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्वबुद्धिऋद्धये नमः।

8. ॐ ह्रीं दूरास्वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः।
9. ॐ ह्रीं दूरस्पर्शत्वबुद्धिऋद्धये नमः।
10. ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्वबुद्धिऋद्धये नमः।
11. ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्वबुद्धिऋद्धये नमः।
12. ॐ ह्रीं दूरदर्शित्वबुद्धिऋद्धये नमः।
13. ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः।
14. ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः।
15. ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तबुद्धिऋद्धये नमः।
16. ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धये नमः।
17. ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धये नमः।
18. ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः।

विक्रिया के 11 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अणिमाविक्रियाऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं महिमाविक्रियाऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं लघिमाविक्रियाऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं गरिमाविक्रियाऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं प्राप्तिविक्रियाऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं प्राकाम्यविक्रियाऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं ईशत्वविक्रियाऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं वशित्वविक्रियाऋद्धये नमः।
9. ॐ ह्रीं अप्रतिघातविक्रियाऋद्धये नमः।
10. ॐ ह्रीं अंतर्धानविक्रियाऋद्धये नमः।
11. ॐ ह्रीं कामरूपविक्रियाऋद्धये नमः।

चारणऋद्धि के 9 मंत्र

1. ॐ ह्रीं नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं जलचारणक्रियाऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं जंघाचारणक्रियाऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं मेघधाराचारणक्रियाऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धये नमः।
9. ॐ ह्रीं मरुच्चारणक्रियाऋद्धये नमः।

तपऋद्धि के 7 मंत्र

1. ॐ ह्रीं उग्रतपःऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं दीप्ततपःऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं तप्ततपःऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं महातपःऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं घोरतपःऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपःऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्वतपःऋद्धये नमः।

बलऋद्धि के 3 मंत्र

1. ॐ ह्रीं मनोबलऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं वचनबलऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं कायबलऋद्धये नमः।

औषधिऋद्धि के 8 मंत्र

1. ॐ ह्रीं आमर्शौषधिऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं मलौषधिऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं विप्रुषौषधिऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं मुखनिर्विषऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषऋद्धये नमः।

रसऋद्धि के 6 मंत्र

1. ॐ ह्रीं आशीर्विषऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं दृष्टिविषऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं क्षीरस्राविरसऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं मधुस्राविरसऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं अमृतस्राविरसऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं सर्पिस्राविरसऋद्धये नमः।

अक्षीणऋद्धि के 2 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयऋद्धये नमः।

(38) पंचपरमेष्ठी व्रत विधि

पंचपरमेष्ठी के मूलगुणों की आराधना करते हुए यह व्रत किया जाता है। इसमें अरहंत परमेष्ठी के 46 व्रत हैं, सिद्ध परमेष्ठी के 8, आचार्य के 36, उपाध्याय के 25 एवं साधु के 28 गुणों के मंत्रों की जाप्य की जाती है। 46+8+36+25+28=143 व्रत, 143 मूलगुणों के लिये किए जाते हैं।

व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य एकाशन करना है। व्रत के दिन पंचपरमेष्ठी प्रतिमा का अभिषेक करके समुच्चय पूजा करके क्रमशः एक-एक मंत्र का जाप्य करना चाहिये।

इस व्रत को जो छोटे रूप में करना चाहें तो अरिहंत परमेष्ठी के पृथक्रूप से 46 व्रत कर सकते हैं, ऐसे ही सिद्ध परमेष्ठी के आठ व्रत कर सकते हैं, आचार्य परमेष्ठी के 36 व्रत पृथक् से भी किये जाते हैं, उपाध्याय परमेष्ठी के 25 व्रत एवं साधु परमेष्ठी के 28 व्रत भी किये जाते हैं।

इस व्रत के प्रसाद से भव्यात्मा साधु, आचार्य आदि के व्रतों को धारण करने में समर्थ होकर कालांतर में अर्हंत, सिद्ध पद को प्राप्त करने के अधिकारी बनेंगे। इस व्रत को पूर्ण कर उद्यापन में पंचपरमेष्ठी विधान करें। पंचपरमेष्ठी की प्रतिमा बनवाकर प्रतिष्ठा करावें। ग्रंथ प्रकाशन, गुरुजनों को पिच्छी-कमंडलु एवं यथायोग्य वस्त्रादि के दान देवें। 5-5 उपकरण मंदिर में भेंट करके आदि पूर्वक उद्यापन पूर्ण करें।

समुच्चय मंत्र–**ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः।**

प्रत्येक व्रत की पृथक्-पृथक् जाप्य–

अर्हंत परमेष्ठी के 46 मंत्र

1. **ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
2. **ॐ ह्रीं निर्मलत्व सहजातिशयधारक अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
3. **ॐ ह्रीं क्षीरगौर रुधिरत्व सहजातिशय सहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
4. **ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थान सहजातिशय सहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
5. **ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन सहजातिशय सहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
6. **ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयसमन्वितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
7. **ॐ ह्रीं सौगन्ध्य शरीर सहजातिशयसमन्वितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
8. **ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षणसहितशरीरसहजातिशयधारकार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
9. **ॐ ह्रीं अप्रमितवीर्यसहजातिशयसमन्वितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
10. **ॐ ह्रीं प्रियहितवादित्वसहजातिशयसमन्वितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
11. **ॐ ह्रीं गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षत्वघातिक्षयजातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
12. **ॐ ह्रीं आकाशगमनघातिक्षयजातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
13. **ॐ ह्रीं अदयाऽभावघातिक्षयजातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
14. **ॐ ह्रीं कवलाहाराभावघातिक्षयजातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
15. **ॐ ह्रीं उपसर्गाभावघातिक्षयजातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
16. **ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्वघातिक्षयजातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
17. **ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरत्वघातिक्षयजातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
18. **ॐ ह्रीं छायारहितघातिक्षयजातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
19. **ॐ ह्रीं पक्ष्मस्पंदरहितघातिक्षयजातिशयसमन्वितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
20. **ॐ ह्रीं समाननखकेशत्वघातिक्षयजातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
21. **ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीयभाषादेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**

22. ॐ ह्रीं सर्वजीवमैत्रीभावदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
23. ॐ ह्रीं सर्वर्तुपुष्पफलादिशोभिततरुपरिणामदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
24. ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
25. ॐ ह्रीं सुगंधितविहरणमनुगतवायुत्वदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
26. ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
27. ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलिकंटकादिदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
28. ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
29. ॐ ह्रीं चरणकमलतलरचितस्वर्णकमलदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
30. ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः ।
31. ॐ ह्रीं शरत्कालवन्निर्मलगगनदिग्भागत्वदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
32. ॐ ह्रीं एतैतेति चतुर्णिकायामरपरापराह्वानदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
33. ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
34. ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्यदेवोपनीतातिशयसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
35. ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः ।
36. ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
37. ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्यसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
38. ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरमहाप्रातिहार्यसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
39. ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्यसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
40. ॐ ह्रीं भामंडलमहाप्रातिहार्यसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
41. ॐ ह्रीं सुरदुंदुभिमहाप्रातिहार्यसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
42. ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
43. ॐ ह्रीं अनंतज्ञानसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
44. ॐ ह्रीं अनंतदर्शनसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
45. ॐ ह्रीं अनंतसौख्यसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
46. ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यसहितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

सिद्ध परमेष्ठी के 8 मंत्र

47. ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मरहितसम्यक्त्वगुणसहितसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।
48. ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मरहितानंतज्ञानगुणसहितसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।
49. ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मरहितानंतदर्शनगुणसहितसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।
50. ॐ ह्रीं अंतरायकर्मरहितानंतवीर्यगुणसहितसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।
51. ॐ ह्रीं नामकर्मरहितसूक्ष्मत्वगुणसहितसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।
52. ॐ ह्रीं आयुकर्मरहितावगाहनगुणसहितसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।
53. ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहितागुरुलघुगुणसहितसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।
54. ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताव्याबाधसुखसहितसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।

आचार्य परमेष्ठी के 36 मंत्र

55. ॐ ह्रीं ज्ञानाचारगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
56. ॐ ह्रीं दर्शनाचारगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
57. ॐ ह्रीं चारित्राचारगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।

58. ॐ ह्रीं तपाचारगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
59. ॐ ह्रीं वीर्याचारगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
60. ॐ ह्रीं उत्तमक्षमागुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
61. ॐ ह्रीं उत्तममार्दवगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
62. ॐ ह्रीं उत्तमार्जवगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
63. ॐ ह्रीं उत्तमसत्यगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
64. ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
65. ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
66. ॐ ह्रीं उत्तमतपोधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
67. ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
68. ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
69. ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
70. ॐ ह्रीं अनशनतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
71. ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
72. ॐ ह्रीं वृत्तपरिसंख्यानतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
73. ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
74. ॐ ह्रीं विविक्तशयनासनतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
75. ॐ ह्रीं कायक्लेशतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
76. ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
77. ॐ ह्रीं विनयतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
78. ॐ ह्रीं वैयावृत्तितपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
79. ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
80. ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
81. ॐ ह्रीं ध्यानतपोगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
82. ॐ ह्रीं समतावश्यकगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
83. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिस्तवावश्यकगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
84. ॐ ह्रीं वंदनावश्यकगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
85. ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
86. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
87. ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
88. ॐ ह्रीं मनोगुप्तिगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
89. ॐ ह्रीं वचोगुप्तिगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।
90. ॐ ह्रीं कायगुप्तिगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।

उपाध्याय परमेष्ठी के 25 मंत्र

91. ॐ ह्रीं आचारांगज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
92. ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
93. ॐ ह्रीं स्थानांगज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
94. ॐ ह्रीं समवायांगज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।

95. ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
96. ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथांगज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
97. ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
98. ॐ ह्रीं अतंकृद्दशांगज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
99. ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादिकदशांगज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
100. ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
101. ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
102. ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
103. ॐ ह्रीं अग्रायणीयपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
104. ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवादपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
105. ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
106. ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
107. ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
108. ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
109. ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
110. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
111. ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
112. ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
113. ॐ ह्रीं प्राणावायपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।
114. ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः
115. ॐ ह्रीं लोकबिंदुसारपूर्वज्ञानधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।

साधु परमेष्ठी के 28 मंत्र

116. ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
117. ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
118. ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
119. ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
120. ॐ ह्रीं अपरिग्रहमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
121. ॐ ह्रीं ईर्यासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
122. ॐ ह्रीं भाषासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
123. ॐ ह्रीं एषणासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
124. ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
125. ॐ ह्रीं उत्सर्गसमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
126. ॐ ह्रीं स्पर्शनेंद्रियनिरोधव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
127. ॐ ह्रीं रसनेंद्रियनिरोधव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
128. ॐ ह्रीं घ्राणेंद्रियनिरोधव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
129. ॐ ह्रीं चक्षुइंद्रियनिरोधव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
130. ॐ ह्रीं श्रोत्रेंद्रियनिरोधव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
131. ॐ ह्रीं समतावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।

132. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिस्तवावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
133. ॐ ह्रीं वंदनावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
134. ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
135. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
136. ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
137. ॐ ह्रीं केशलोंचगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
138. ॐ ह्रीं आचेलक्यगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
139. ॐ ह्रीं अस्नानगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
140. ॐ ह्रीं क्षितिशयनगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
141. ॐ ह्रीं अदंतधावनगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
142. ॐ ह्रीं स्थितिभोजनगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।
143. ॐ ह्रीं एकभक्तगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।

पाँचों परमेष्ठियों के पृथक्-पृथक् व्रत विधि

अरिहंत परमेष्ठी व्रत विधि–

अरिहंत परमेष्ठी के–तीर्थंकर भगवान के जन्म के 10 अतिशय, केवलज्ञान के 10 अतिशय, देवकृत 14 अतिशय, 8 प्रातिहार्य और 4 अनंत चतुष्टय ऐसे 10+10+14+8+4+46 गुण तीर्थंकर भगवान के–श्री अरिहंत परमेष्ठी के होते हैं। व्रत के दिन अरिहंत परमेष्ठी की प्रतिमा या किन्हीं तीर्थंकर प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके अरिहंत परमेष्ठी की पूजा करके क्रम से 1-1 मंत्र की जाप्य करें।

समुच्चय मंत्र - **ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसमन्वितार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र पृ. नं. 124 पर प्रकाशित है।

सिद्धपरमेष्ठी व्रत विधि–

सिद्धपरमेष्ठी के 8 गुणों के आठ व्रत करना चाहिये। व्रत के दिन सिद्धपूजा करके क्रम से 1-1 जाप्य करके व्रत पूर्ण करें। उद्यापन विधि पूर्ववत् करना चाहिए।

समुच्चय मंत्र- ॐ ह्रीं अष्टगुणान्वितसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र पृ. नं. 125 पर प्रकाशित है।

आचार्य परमेष्ठी व्रत विधि–

आचार्यों के 36 मूलगुण होते हैं–आचार 5, धर्म 10, तप 12, आवश्यक क्रिया 6 और गुप्ति 3 ये 5+10+12+6+3+36 गुण हैं। इनकी आराधना करते हुए व्रत किया जाता है। व्रत के दिन पंचपरमेष्ठी की प्रतिमा का अभिषेक, पूजा आदि करके क्रम से 1-1 मंत्र की जाप्य करें। यथाशक्ति उद्यापन करें। यह व्रत एक दिन अवश्य ही आचार्य के गुणों को प्राप्त करायेगा।

समुच्चय मंत्र- ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसमन्विताचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र पृ. नं. 125 पर प्रकाशित है।

उपाध्याय परमेष्ठी व्रत विधि–

उपाध्याय परमेष्ठी के 11 अंग, 14 पूर्व के पठन-पाठन की अपेक्षा 25 गुण हैं। इनके व्रतों के दिन पंचपरमेष्ठी प्रतिमा की अभिषेक पूजा आदि करके 'समुच्चय' जाप करें, पुनः क्रम से एक-एक जाप्य करें।

समुच्चय मंत्र– **ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुणसमन्वितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र पृ. नं. 126 पर प्रकाशित है।

साधु परमेष्ठी व्रत विधि–

मुनियों के 28 मूलगुण माने हैं। उनकी अपेक्षा करके व्रत करना है। व्रत के दिन पंचपरमेष्ठी प्रतिमा का अभिषेक पूजन करके समुच्चय जाप्य करें एवं क्रम से एक-एक मंत्र करके 28 व्रत करें। पंच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इंद्रिय निरोध, छह आवश्यक क्रिया, 1 अस्नान, 1 आचेलक्य, 1 अदंतधावन, 1 केशलोंच, 1 भूमिशयन, 1 स्थिति भोजन और 1 एक भक्त ये अट्ठाईस मूलगुण हैं।

समुच्चय मंत्र–ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिगुणसमन्वित साधुपरमेष्ठिभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र पृ. नं. 127 पर प्रकाशित है।

(39) सम्यक्त्व पचीसी व्रत

व्रत की विधि–सम्यग्दर्शन की प्राप्ति और विशुद्धि के लिए यह व्रत किया जाता है। आठ अंगपूर्वक सम्यक्त्व को धारण करके शंकादि 8 दोष, 8 मद, 6 अनायतन और 3 मूढ़ता से दूर रहना ही इसका फल है। यह व्रत नियम से एक दिन क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त करायेगा और मोक्ष की प्राप्ति में मूल कारण बनेगा। इस में 25 व्रत होते हैं। इनकी उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य एकाशन है।

समुच्चय मंत्र– **ॐ ह्रीं पंचविंशति मलदोषविरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं शंकादोषरहित निःशंकितांगसमन्वित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं कांक्षादोषरहित निःकांक्षितांगसमन्वित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं जुगुप्सादोषरहित निर्विचिकित्सांगसमन्वित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं मूढ़दृष्टिदोषरहित अमूढदृष्टि-अंगसमन्वित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं अनुपगूहनदोषरहित उपगूहनांगसमन्वित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं अस्थितिकरणदोषरहित स्थितीकरणांगसमन्वित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं अवात्सल्यदोषरहित वात्सल्यांगसमन्वित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं अप्रभावनादोषरहित प्रभावनांगसमन्वित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं ज्ञानमदरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
10. **ॐ ह्रीं पूजामदरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
11. **ॐ ह्रीं कुलमदरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
12. **ॐ ह्रीं जातिमदरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
13. **ॐ ह्रीं बलमदरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
14. **ॐ ह्रीं ऐश्वर्यमदरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
15. **ॐ ह्रीं तपोमदरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।**
16. **ॐ ह्रीं रूपमदरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।**

17. ॐ ह्रीं मिथ्यादर्शनानायतनविरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।[1]
18. ॐ ह्रीं मिथ्याज्ञानानायतनरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।
19. ॐ ह्रीं मिथ्याचारित्रानायतनरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।
20. ॐ ह्रीं मिथ्यादर्शनसहितजन-अनायतनरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।
21. ॐ ह्रीं मिथ्याज्ञानसहितजन-अनायतनरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।
22. ॐ ह्रीं मिथ्याचारित्रसहितजन-अनायतनरहित सम्यग्दर्शनाय नमः।
23. ॐ ह्रीं देवमूढ़तारहित सम्यग्दर्शनाय नमः।
24. ॐ ह्रीं गुरुमूढ़तारहित सम्यग्दर्शनाय नमः।
25. ॐ ह्रीं पाखंडिमूढ़तारहित सम्यग्दर्शनाय नमः।

(40) तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि व्रत विधि

विधि—यह पंचकल्याणक व्रत एक वर्ष में करने से 91 तिथियों में पूर्ण होगा एवं पाँच वर्ष में करने से प्रत्येक वर्ष में क्रम से गर्भकल्याणक की चौबीस तिथियाँ, जन्मकल्याणक की चौबीस तिथियाँ, दीक्षाकल्याणक की चौबीस तिथियाँ, केवलज्ञानकल्याणक की चौबीस तिथियाँ और निर्वाणकल्याणक की चौबीस तिथियाँ की जायेंगी।

इसमें भी पौषकृष्णा एकादशी को चन्द्रप्रभ एवं पार्श्वनाथ के जन्मकल्याणक एक ही तिथि में होने से 23 तिथियाँ ही रहेंगी तथा दीक्षाकल्याणक में श्री चन्द्रप्रभ एवं पार्श्वनाथ की पौष कृष्णा एकादशी की एक ही तिथि होने से 23 तिथियाँ रहेंगी तथा ऐसे ही चैत्र कृष्णा अमावस्या को अनन्तनाथ एवं अरनाथ का निर्वाणकल्याणक होने से 23 ही तिथियाँ रहेंगी।

इस प्रकार तीन तिथियाँ कम हो जाने से 117 दिन में यह व्रत पूर्ण होगा।

नोट-प्रत्येक व्रत के दिनों में उन-उन तीर्थंकरों की पूजा एवं उन तीर्थंकरों के कल्याणकों के मंत्र जपने चाहिए। पंचकल्याणक तिथि दर्पण में मगसिर शुक्ला 11-11 दो बार, फाल्गुन कृ. 7-7 दो बार, फाल्गुन कृ. 11-11 दो बार, चैत्र कृष्णा अमावस्या-अमावस्या दो बार आ गये हैं।

समुच्चय मंत्र— **1. ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

अथवा **2. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकेभ्यो नमः।**

पंचकल्याणक तिथियों के पृथक्-पृथक् मंत्र—

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभदेवाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाष्टम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां तपःकल्याणक प्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।5।।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।7।।

1. ये छह अनायतन श्री उमास्वामी श्रावकाचार के आधार से हैं।

श्रावण कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।।8।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णादशम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः।।9।।

श्रावण शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।10।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।11।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।12।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।।13।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लापूर्णिमायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।।14।।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।15।।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।।16।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाष्टम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।।17।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।।18।।

आश्विन कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।19।।

आश्विन शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।20।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः।।21।।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाप्रतिपदि गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।।22।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः।।23।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः।।24।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः।।25।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।।26।।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री पुष्पदन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।।27।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।28।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः।।29।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः।।30।।

मगसिर कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।।31।।

मगसिर शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।।32।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।।33।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लादशम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः।।34।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला-एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।35।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला-एकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।36।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला-एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।37।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः।।38।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लापूर्णिमायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय नमः।।39।।

पौष कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।40।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।।41।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।।42।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा-एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।।43।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा-एकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।।44।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः।।45।।

पौष शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।46।।
ॐ ह्रीं पौषशुक्ला-एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।।47।।
ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।।48।।
ॐ ह्रीं पौषशुक्लापूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।।49।।

माघ कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः।।50।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः।।51।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः।।52।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभदेवाय नमः।।53।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।।54।।

माघ शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।।55।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।।56।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।।57।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।।58।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लानवम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।।59।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लादशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।।60।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।।61।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।।62।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।।63।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।।64।।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णातृतीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः।।65।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः।।66।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।।67।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।।68।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।।69।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।।70।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय नमः।।71।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।72।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।73।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।74।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचर्तुदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः ।।75।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः ।।76।।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।77।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः ।।78।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।79।।

चैत्र कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः ।।80।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।81।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय नमः ।।82।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय नमः ।।83।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।84।।

अथवा

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।84।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।85।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।86।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।87।।

चैत्र शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाप्रतिपदायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।88।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लातृतीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।89।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।90।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ठ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।91।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नमः ।।92।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला-एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।93।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला-एकादश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।94।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः ।।95।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः ।।96।।

वैशाख कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।97।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।98।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।99।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।100।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।101।।

वैशाख शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।102।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।103।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः।।104।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।।105।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।।106।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लानवम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।107।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।।108।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लात्रयोदश्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।।109।।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।।110।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णादशम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।।111।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।।112।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।।113।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।114।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।115।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।।116।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा-अमावस्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।।117।।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।।118।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।।119।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।।120।।

(41) नवरात्रि व्रत

व्रतविधि—नवरात्रि व्रत आश्विन शु. एकम से आश्विन शुक्ला नवमी तक किया जाता है। प्रातः स्नानादि कर शुद्ध वस्त्र पहनकर शुद्ध द्रव्य लेकर जिनालय में जाएँ, वहाँ जिनालय की तीन प्रदक्षिणा देकर ईर्यापथ शुद्धिपूर्वक आदिनाथ भगवान की प्रतिमा का पंचामृताभिषेक करें, अष्टद्रव्य से पूजन करें पुनः श्रुत और गणधर की पूजा कर चक्रेश्वरी यक्षी व गोमुखयक्ष की अर्चना करें।

''**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आदिनाथ तीर्थंकराय गोमुखयक्ष-चक्रेश्वरी यक्षी सहिताय नमः स्वाहा।।**'' इस मंत्र की 108 पुष्पों से जाप्य करें। श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्र पढ़कर णमोकार मंत्र की भी जाप्य करना चाहिए, साथ ही आदिनाथ चरित्र और कथा भी पढ़ना चाहिए। यथाशक्ति उपवास आदि करें। व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार व जघन्य एकाशना है। इस प्रकार नौ दिन पूजा करके दसवें दिन विसर्जन करें तथा दस दिन ब्रह्मचर्य का पालन करें। रात्रि जागरण करते हुए समय को व्यतीत करें। पुनः सत्पात्र को आहार दानादि देकर पारणा करें। 9 वर्ष तक इस व्रत को करने के पश्चात् यथाशक्ति उद्यापन करें। उद्यापन में आदिनाथ भगवान की यक्ष-यक्षी सहित प्रतिमा बनवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करें, चतुर्विध संघ को चार प्रकार का दान देवें, नूतन जिनमंदिर बनवावें, पुराण-ग्रंथों का जीर्णोद्धार करावें और गरीबों को भोजनादि अभयदान देवें। इस प्रकार यह व्रत की विधि है।

कथा—भरतक्षेत्र के अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी दोनों काल सर्वदा प्रचलित हैं। अवसर्पिणी काल में सुषमा-सुषमा,

सुषमा, सुषमा-दुषमा, दुषमा-सुषमा, दुषमा और दुषमा-दुषमा ऐसे छः भेद हैं और उत्सर्पिणी के इनसे उल्टे भेद हैं। अनेकों अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी के बीत जाने पर एक कल्पकाल आता है। भरतक्षेत्र में अवसर्पिणी काल में प्रथम तीन काल में भोगभूमि होती है जिसमें प्राणी के शरीर की कांति, शक्ति आदि कालानुसार क्रम से ह्रास को प्राप्त होते हैं, तीसरे काल में 14 मनु होते हैं, जो प्राणियों को जीवनोपयोगी मार्ग दिखाते हैं इन्हें कुलकर भी कहते हैं, चौथे काल के प्रारंभ में चौदहवें कुलकर होते हैं तब कर्मभूमि प्रारंभ होती है। तब इंद्र की आज्ञा से कुबेर ग्राम, नगर, पुर, पट्टण आदि की रचना करता है और अयोध्या नामक सुन्दर नगर की रचना करता है। उसमें चौदहवें कुलकर महाराजा नाभिराय अपनी महारानी मरुदेवी के साथ सुखपूर्वक काल व्यतीत करते थे।

एक दिवस रात्रि के पिछले प्रहर में मरुदेवी ने सोलह शुभ स्वप्न देखे और शुभ तिथि में उनके गर्भ में आदिनाथ तीर्थंकर के जीव ने स्वर्ग से अवतार लिया। प्रातः पति से उन स्वप्नों का फल जानकर महारानी अत्यन्त प्रसन्न हुईं। 9 माह पूर्ण होने पर आदिनाथ तीर्थंकर ने जन्म लिया, उस समय चारों निकाय के देवों ने आकर भगवान का जन्मोत्सव मनाया, 20 लाख वर्ष का भगवान का कुमार काल था पुनः यौवनावस्था में आने पर जब कल्पवृक्ष लुप्त होने लगे तब राजा नाभिराय के कहने पर प्रजा ऋषभकुमार के पास पहुँची तब उन्होंने विदेह क्षेत्र में जैसी व्यवस्था थी, अवधिज्ञान से जानकर प्रजा को षट्क्रिया आदि का उपदेश दिया, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तीन वर्णों की स्थापना की। महाराजा नाभिराय ने उनका विवाह यशस्वती और सुनन्दा नामक दो कन्याओं से कराकर सारा राज्यभार उन्हें सौंप दिया और शुभ मुहूर्त में उनका राज्याभिषेक कर दिया। उनकी यशस्वती रानी से 100 पुत्र और एक पुत्री तथा सुनन्दा रानी से बाहुबली पुत्र व सुंदरी पुत्री ने जन्म लिया।

एक दिवस राज्यसभा में नीलांजना के नृत्य को देखकर भगवान को संसार, शरीर, भोगों से वैराग्य उत्पन्न हो गया तब तत्काल ही लौकान्तिक देवों ने आकर उनके वैराग्य की अनुमोदना और प्रशंसा की। भगवान ने ज्येष्ठ पुत्र भरत को राज्यपट्ट पर अभिषिक्त कर बाहुबली पुत्र को युवराज पद पर सुशोभित किया और चार हजार राजाओं के साथ दिगम्बरी दीक्षा ले ली, उस समय देवों ने दीक्षाकल्याणक उत्सव मनाया, भगवान ने घोर तपश्चर्या करके चार घातिया कर्मों का नाश कर लिया तब देवों ने आकर केवलज्ञान कल्याणक उत्सव मनाया। उसी समय अयोध्या में भरत को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई और उनकी आयुधशाला में चक्ररत्न उत्पन्न हुआ। यह तीनों ही समाचार जब एक साथ भरत के पास पहुँचे तब उन्होंने सर्वप्रथम आदिनाथ भगवान के केवलज्ञान कल्याणक की पूजा की, उनकी स्तुति, पूजा, वंदना करके धर्मोपदेश सुना और वहाँ से आकर पुत्र जन्मोत्सव मनाकर पुनः आयुधशाला में जाकर चक्ररत्न की पूजा की। दिग्विजय के लिए प्रस्थान करने के पूर्व उन्होंने 9 दिन तक व्रत करके विधिवत् अनुष्ठान किया और दशवें दिन प्रस्थान किया तभी से वह दिवस ''विजयादशमी'' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

नव दिन व्रत करने से तथा चौबीस घंटे धर्मध्यान करने से और रात्रि में जागरण पूर्वक भगवान की भक्ति करने से ही इसे ''नवरात्रि'' व्रत कहते हैं।

सम्राट भरत ने इस व्रत के उद्यापन में नूतन जिनमंदिर बनवाए, नूतन जिनप्रतिमा निर्माण करवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवाई। 9 हजार मुनियों और आर्यिकाओं को आहारदान दिया। इस प्रकार विधिवत् व्रत का पालन किया तथा बहुत समय तक राजाधिराज चक्रवर्ती के पद पर सुशोभित रहकर सुखपूर्वक राज्यलक्ष्मी का उपभोग किया।

भगवान आदिनाथ ने समवसरण के माध्यम से अनेक देशों में विहार कर भव्यात्माओं को धर्मोपदेश दिया और कैलाशपर्वत पर जाकर उनका निर्वाणकल्याणक मनाया गया, आगे सम्राट् भरत ने भी दीक्षा लेकर अंतर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त कर लिया ऐसी इस व्रत की अचिन्त्य महिमा है। इस व्रत को करने से सांसारिक सुख, यश-कीर्ति के साथ-साथ पारलौकिक सुख भी प्राप्त होता है।

(42) नवदेवता व्रत (रूपार्थवल्लरी व्रत)

व्रतविधि–नवदेवता व्रत का दूसरा नाम रूपार्थवल्लरी व्रत है। यह आश्विन शुक्ला एकम् से आश्विन शुक्ला नवमी तक किया जाता है, पुनः दशमी को पूजा करके आहार दानादि देकर व्रत का समापन करें, इस प्रकार 9 वर्ष तक यह व्रत किया जाता है।

''श्री जैनेन्द्र व्रत कथा संग्रह (मराठी)'' के अनुसार यह व्रत है। इसमें स्नान आदि कर शुद्ध वस्त्र पहनकर मंदिर जावें, वहाँ मंदिर की तीन प्रदक्षिणा देकर भगवान को पंचांग नमस्कार करें। पुनः नवदेवता की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक, पूजा करके, श्रुत, गणधर की पूजा एवं क्षेत्रपाल-पद्मावती की अर्चना करें। भगवान को 9 प्रकार के नैवेद्य चढ़ावें, 108 पुष्पों से मंत्र जाप्य करें, ब्रह्मचर्यपूर्वक दिवस बितावें, दूसरे दिन पूजा-दानादि करके पारणा करें।

इस प्रकार 9 दिन पूजा करके दशवें दिन जिनपूजा करके पूजा का विसर्जन करें। 9 वर्ष करके यथाशक्ति उद्यापन करें, चतुर्विध संघ को चार प्रकार का दान देवें। उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार व जघन्य विधि एकाशन (एक बार शुद्ध भोजन) है। इस व्रत को करने से पुत्रसुखप्राप्ति, धन की वृद्धि, यश-कीर्ति की प्राप्ति होकर परभव में मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।

व्रत की जाप्य–

समुच्चय मंत्र–**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

प्रत्येक व्रत के अलग-अलग मंत्र–

1. ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं जिनधर्मेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं जिनागमेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं जिनचैत्येभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं जिनचैत्यालयेभ्यो नमः।

(43) कर्मनिर्जरा व्रत विधि एवं कथा

व्रतविधि–आश्विन सुदी 5 के दिन इन व्रतिकों को प्रासुक जल से अभ्यंगस्नान करके नया धौतवस्त्र पहनना चाहिए। सब पूजा-सामग्री हाथ में लेकर चैत्यालय में जाकर मंदिर की तीन प्रदक्षिणा करके ईर्यापथशुद्धि आदि क्रिया करके श्री जिनेन्द्र को भक्ति से साष्टांग नमस्कार करना चाहिए। पुनः भूमि शुद्धि करके उस पर पंचवर्ण का अष्टदल यंत्र बनाकर चारों तरफ चतुरस्र पंचमंडल बनाकर उसके पास अष्ट मंगल कुंभ आदि आठ प्रातिहार्य रखें। बीच में सुशोभित कुंभ रखें और एक थाली में पाँच नागरबेली के पान, फल, आदि रखकर वह थाली कुंभ पर रखें। श्रीवेदी पर पंचपरमेष्ठी की प्रतिमा यक्ष-यक्षी सहित स्थापित करके उनका पंचामृत से मंत्रपूर्वक अभिषेक करें। मूर्ति के सामने एक पाटे पर पाँच स्वस्तिक बनाकर उसमें पाँच पान,गंधाक्षत, फल, पुष्प आदि द्रव्य रखकर फिर **पंचपरमेष्ठी की प्रतिमा इस मध्य कुंभ की थाली में स्थापित करें और अष्टद्रव्य से उनकी पूजन करें।** पुनः यक्ष, यक्षी की अर्चना करें। पंच पकवानों के पाँच नैवेद्य बनाकर चढ़ावें और ''**ॐ ह्रीं अर्हं अनंतचतुष्टकात्मकेभ्यो नवकेवललब्धिसमन्वितेभ्यो अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः स्वाहा।।1।।ॐ ह्रीं अर्हं अष्टकर्मविनिर्मुक्तेभ्यो अष्टगुणसंयुक्तेभ्यः सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः स्वाहा।।2।।ॐ ह्रीं अर्हं पंचेंद्रियविषयरहितेभ्यः पंचाचारनिरतेभ्यः सूरिपरमेष्ठिभ्यो**

नमः स्वाहा।।3।। ॐ ह्रीं अर्हं व्रतसमितिगुप्तिसहितेभ्यः कषायदुरितरहितेभ्यः पाठकपरमेष्ठिभ्यो नमः स्वाहा।।4।। ॐ ह्रीं अर्हं मूलोत्तरगुणाढ्येभ्यः सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमः स्वाहा।।5।। इस पंच मंत्र में से प्रत्येक मंत्र से अलग अलग अर्घ्य चढ़ाकर 108-108 बार सुगंधितपुष्प से इन मंत्रों से जप करना चाहिए। इस क्रम से पंचपरमेष्ठी की पूजन करें। बाद में एक पात्र में पाँच पान और उस पर अष्टद्रव्य और एक नारियल रखकर **''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः स्वाहा।।'' इस मंत्र से पूर्णार्घ्य करें।** श्री जिनसहस्रनाम स्त्रोत पढ़कर व्रत की कथा पढ़ें। साथ ही णमोकार मंत्र का 108 बार जाप भी करें। उस दिन उपवास करें। यदि शक्ति नहीं है तो अल्पाहार या एकाशन करें। यह दिन धर्मध्यान में लगावें। ब्रह्मचर्य का पालन करें। मुनि, आर्यिका आदि चतुर्विध संघ को आहारादि दान देकर पारणा करें। इस प्रकार यह व्रत पाँच वर्ष करके फिर उसका उद्यापन करें। उसी समय श्री पंचपरमेष्ठी की नयी प्रतिमा बनाकर पंचकल्याणक विधिपूर्वक इसकी प्रतिष्ठा करें। नये नौ पात्र में और नौ कटोरी में दूध की खीर, अंबील करंज्या (गुझिया), लड्डू आदि पकवान रखकर मूर्ति के सामने रखते समय यह मंत्र बोलें-**''ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽर्हते पंचकल्याणकसंपूर्णाय नवकेवललब्धिसमन्विताय स्वाहा''।।** इस मंत्र से वायने मूर्ति के पास रखें और **''ॐ नमोऽर्हते भगवते सर्वकर्मनिर्जरां कुरू कुरू स्वाहा''।।** इस मंत्र से चढ़ावें। चतु:संघ को आहारादि दान देवें। ऐसी इस व्रत की पूर्ण विधि है।

कथा–उज्जयिनी नगर के समीप एक छोटा सा गाँव था। वहाँ पहले बलभद्र नाम के सेठ रहते थे। उनके सात लड़के थे। सातों के सात भार्या थीं। वह उनके साथ आनंद से रहते थे। किसी दिन एक महातपस्वी उस गाँव के परकोटे के सन्निध कायोत्सर्ग से ध्यान में बैठे थे। उस सेठ की यशोमति नाम की एक छोटी बहू थी। उस बहू ने उषाकाल में जानवरों का गोबर इकट्ठा करके परकोटे के बाहर फेंक दिया। वह गोबर उन मुनीश्वर के ऊपर पड़ा। सुबह हो गयी। लोग इधर-उधर जा रहे थे। बलभद्र सेठ बहिर्दिशा (शौच) को गये थे। जब उन्होंने देखा कि मुनीश्वर के ऊपर गोबर है तब उन्होंने घर से उष्ण जल मंगवाया और उनका सब बदन अच्छी तरह से साफ किया। मुनि ने ध्यान का विसर्जन किया फिर सेठ ने उनको भक्तिपूर्वक वंदन किया और विनय से बोला ''हे मुनिराज! मेरी छोटी बहू ने अज्ञान से बिना जाने आपके बदन पर गोबर फेंक दिया इसलिये हमें क्षमा करो।'' तब मुनि बोले– 'हे भद्रपुरूष! इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है, मेरा ही पूर्व भव का कर्मोदय है। यह कहकर मुनि ने उनको 'सद्धर्मवृद्धिरस्तु' ऐसा आशीर्वाद दिया और वहाँ से वन में विहार कर गये।

इधर वह यशोमति स्त्री, उन मुनीश्वर के ऊपर गोबर अज्ञान से डालने के पाप के कारण दुर्धर रोग से ग्रस्त होकर मर गयी। फिर वह उज्जयिनी में वैश्यसुत के घर में जन्मी। जन्मते ही माँ-बाप मर गये तो एक गृहस्थ ने उसका पालन पोषण किया। पाँच बरस की होते ही वो भी मर गया। पुनः श्रीमती नामक एक आर्यिका उस लड़की का पालन-पोषण करने लगी। लोग उस लड़की को 'कर्मी' नाम से पुकारते थे। एक दिन उस गाँव के जिनमंदिर में श्रुतसागर नाम के चारणऋद्धिधारी मुनीश्वर आये थे। उनके दर्शन के लिए नगर के श्रावक-श्राविकाजन गये थे। उस समय वह कर्मी भी गयी थी। सब लोग उन मुनि की तीन प्रदक्षिणा देकर भक्ती से दर्शनादि करके उनके समीप जाकर बैठ गए, उस समय मुनिराज ने मधुर वचनों से धर्मोपदेश दिया। उपदेश सुनकर वह कर्मी कुमारी बहुत दुःखाकुल होकर अपने नेत्रों से अश्रु गिराने लगी और उन मुनीश्वर के चरणों में पड़ गई, तब मुनीश्वर ने अपने अवधिज्ञान से उस लड़की का पूर्वभव जान लिया और अत्यंत करूणायुक्त अंतःकरण से बोले–हे कन्यके! तूने पहले भव में एक तपस्वी के ऊपर अज्ञान से गोबर फेंक दिया था। उस पातक के कारण अब तुझे दुःखदाई ये दरिद्रावस्था प्राप्त हुई है और उस दुर्दैव के कारण तुम्हारे माता-पिता और वो पालनकर्ता भी मर गये हैं। अब तू उस कर्म की निर्जरा करने के लिए कर्मनिर्जराव्रत यथोचित पालन करके उसका उद्यापन कर, तब तुझे इस योग से आगे ऐहिक और पारमार्थिक सुख मिलेगा। ऐसा कहकर उन्होंने उस व्रत की विधि बतायी। तब उस कर्मी कुमारी ने वह व्रत उनके पास ग्रहण किया।

तदनंतर उस कर्मी कुमारी ने वहाँ के श्रावक-श्राविकाओं की सहायता से काल के अनुसार यह व्रत करना आरंभ किया। कुछ दिन के बाद उस उज्जयिनी नगर का एक श्रियंकर राजपुत्र सर्पदंश से अकस्मात् मर गया।

उस समय उसका विवाह नहीं हुआ था। इसलिए माता को बहुत दुःख हो गया। वह अपने पति को बोली– ''हे प्राणनाथ! अपने लड़के का विवाह-संस्कार किए बिना दहन क्रिया मत करो''। रानी के यह वचन सुनकर राजा ने प्रधान को कहा, हे प्रधानगणों! हमारे लड़के का विवाह संस्कार करने के बाद दहन क्रिया करनी है। अतः कन्या मिलाने के लिए आप कहीं से भी शीघ्र उपाय करिये। तब मरे हुये पुत्र को कन्या कौन देगा, इस विचार से सब चिंताग्रस्त हो गये। फिर मंत्रीजनों ने एक युक्ति की। बहुत सुवर्णादि धन एक गाड़ी में भरकर नगर में एक ढिंढ़ोरा पिटवाया कि हमारे मृत राजपुत्र को जो कन्या देगा उसे ये सब धन दिया जायेगा। जिसकी इच्छा है वह संतोष से अपनी कन्या देकर ये सब धन ले ले। ऐसा घोष उच्चस्वर से करते-करते उस धनपूर्ण गाड़ी के साथ वे राजसेवक जिनमंदिर के पास गये। तब वह कर्मी कुमारी उन श्रीमती नामक माताजी से कहती है– 'हे आर्याम्बिके! अगर मैं मेरा शरीर उस मृतक राजपुत्र को देकर वो सब धन ले लूँ तो उस धन से जिनमंदिर पूजादिक करके पुण्यलाभ होगा क्या?

उस कन्या की चतुरता और धूर्तता का भाषण सुनकर वह आर्यिका बोली ''हे कुमारि! अगर तुम्हारे दिल में धैर्य और उत्साह हो तो वह द्रव्य लेने की कोई भी मनाही नहीं है। आर्यिका के वाक्य सुनते ही वह दौड़कर उन राजसेवकों की ओर गयी और बोली– हे राजसेवक! मैं इस मृतक राजपुत्र के साथ शादी करने के लिए तैयार हूँ, अतः यह सब द्रव्य मंदिर जी के निकट धरो। तब मैं तुम्हारे साथ तत्काल इस गाड़ी में चलूँगी।

''ठीक है चलो! ऐसा कहते ही उस राजसेवक ने सब धन गाड़ी से निकालकर उस मंदिर के निकट रख दिया और उस कन्या को गाड़ी में बिठाकर राजवाड़े की तरफ बड़े ही ठाट से ले गये। तब राजा, रानी, मंत्री आदि सब लोगों को महदाश्चर्य हुआ। उन्होंने उस ही क्षण एक सुंदर मंडप बनवाया और समारंभ से उस राजपुत्र का उस कर्मी लड़की के साथ विवाह किया। तदनंतर उस मृतक राजपुत्र की शवयात्रा निकली, वह श्मशान के पास पहुँची भी नहीं कि मेघकुमार ने अकस्मात् भयंकर मेघवर्षा शुरु कर दी। उस समय पास में एक बड़ा बरसाती नाला था। वह अचानक भर गया और जोर से बहने लगा। ऐसी भीषण परिस्थिति में सब लोगों ने विचार करके वह शव सुरक्षित स्थान पर रखा और उसके रक्षणार्थ किंकरों को नियुक्त कर दिया और वे सभी लोग राजवाड़े की ओर चले गये। मात्र वो कर्मी अपने पति की सेवा करने के लिए वहाँ ही रही। वह दिन कर्मनिर्जरा व्रत का है ऐसा उसके ध्यान में आया। तब कर्मी ने उस जलप्रवाह के समीप जाकर और अंतरंग शुद्धि करके पंचपरमेष्ठी के मंत्र से सिर्फ पानी और बालू लेकर भाव पूजा बड़ी भक्ति से करना शुरू किया। उस लड़की की दृढ़ भक्ति देखकर पद्मावती माता का आसन कम्पायमान हुआ। पद्मावती माता ने अवधिज्ञान से उस भाविक कन्या की सब परिस्थिति जान ली और तत्काल वहाँ आयीं। उन्होंने अपना दिव्य रूप प्रगट किया और बोलीं–हे दीनबालिके! पूजाद्रव्य न होने पर भी तूने ये मिथ्या पूजा को क्यों आरंभ किया ? बालू और पानी से पूजा करने से किसी भी फल की प्राप्ति नहीं होगी। भाषण सुनकर वह लड़की बोली- हे भगवति! आप कौन हो? कहाँ से और क्यों आई हो ? ऐसा सुनते ही वह पद्मावती माता बोलीं– हे कन्या! तुम मुझे देखकर मत डरो। मैं पद्मावती देवी हूँ। तुम्हारी पंचपरमेष्ठी पर जो दृढ़ भक्ति है वह देखकर मैं आयी हूँ। अब मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुम्हें जो वर चाहिए, माँगो। तब वह कर्मी बोली– हे महादेवी! मैंने राजा की प्रकट आज्ञा को सुनकर द्रव्य के लोभ से उनके मृत पुत्र के साथ शादी की है। वह राजपुत्र आज सबेरे ही सर्पदंश से मरा है। उनका दाहकर्म करने के लिए यहाँ श्मशान में लाया गया है और आज मेरे व्रतविधान का भी दिन है। इसलिए मैं द्रव्यभाव से भाव पूजा कर रही हूँ। फिर वह पद्मावती माता उस कन्या के साथ उस मृतक राजपुत्र के पास गयीं और उसको निर्विष करके अपने स्थान पर चली गयीं। ध्यान रहे कि सर्पदंश से वह राजपुत्र मृतकवत् हो गया था इसलिए देवी ने उसे विष रहित करके जीवित कर दिया। यदि प्राण निकल गये होते तो कर्मसिद्धांत के अनुसार प्राण वापस नहीं आ सकते थे। उस वक्त वह राजपुत्र गाढ़ निद्रा से जागृत होने के समान दिखा और उठ बैठा। वह भयचकित होकर बोला– ''यह क्या है? मुझे यहाँ कौन लाया? और क्यों लाया? ऐसी प्रतिध्वनि उसके मुख से निकलने लगी। यह सुनकर उस कर्मी युवराज्ञी ने अपना सब वृत्तान्त उसको बता दिया। यह सब चमत्कार देखकर वहाँ के सब रक्षक लोग राजा की ओर दौड़ते-दौड़ते

गये और सब देखी हुई बातें राजा को बतायीं।

ये सब बातें सुनकर उन सब लोगों को महद्आश्चर्य हुआ। तत्क्षण वृषभसेन राजा, गुणसेना रानी, मंत्री इत्यादि बहुत लोग उस राजपुत्र के पास गये। तब अपने पुत्र को देखते ही उनको परमानंद हो गया। सब लोग भी हर्षित हो गये। राजा ने अपनी कर्मी बहू से सब वृत्तान्त पूछा, तब कर्मी ने सब बता दिया। उसे सुनकर उस 'कर्मनिर्जरा' व्रत के बारे में और जैन धर्म के बारे में सब लोगों के अंतःकरण में बहुत दृढ़ श्रद्धा उत्पन्न हुई। सब लोग कहने लगे कि ''यह स्त्री महातपस्वी है'' इत्यादि शब्दों से उस कर्मी की स्तुति करने लगे। पुनः सभी उन श्रियंकर राजपुत्र को और उस कर्मी युवराज्ञी को हाथी पर बिठाकर सब लोगों के साथ बड़े उत्साह से राजमंदिर की ओर लेकर गये। पश्चात् वृषभसेन राजा परिवार के साथ सुख से कालयापन करने लगा। उस कर्मी कन्या ने जो धन-सम्पत्ति मंदिर के निकट रखवाई थी उससे मंदिर निर्माण आदि अनेक उत्तम कार्य सम्पन्न करा दिये।

कालान्तर में सब लोग क्रम-क्रम से जिनदीक्षा लेकर अंत में समाधिपूर्वक मरकर अच्युत स्वर्ग में देव हो गये और वहाँ वे चिरकाल तक बहुत सुख भोगने लगे।

(44) नवग्रहशांति व्रत

विधि–वर्ष में तीन बार आष्टान्हिक पर्व आता है। उन्हीं पर्वों में एक दिन पहले से यह व्रत किया जाता है जैसे कि आषाढ़ शुक्ला सप्तमी से आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा तक। कार्तिक शु. सप्तमी से पूर्णिमा तक एवं फाल्गुन शु.7 से पूर्णिमा तक ऐसे वर्ष में तीन बार यह व्रत करना चाहिए। अधिकतम यह व्रत नौ वर्ष तक (27 बार), मध्यम में 7 वर्ष तक (18 बार) एवं कम से कम तीन वर्ष 3×3=9 बार किया जाता है। इस व्रत में आगे कहे गए मंत्रों की क्रम से जाप्य करना चाहिए एवं 'नवग्रह पूजा विधान' से एक-एक पूजाएँ करना चाहिए। व्रत पूर्ण होने पर यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए।

व्रत की जाप्य–**ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री नवतीर्थंकरेभ्यो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र—

1. **ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टशांतिकराय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं सोमग्रहारिष्टशांतिकराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टशांतिकराय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टशांतिकराय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टशांतिकराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टशांतिकराय श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टशांतिकराय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टशांतिकराय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टशांतिकराय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।**

इस प्रकार जो इन नवग्रहों की शांति के लिए जाप्य, पूजा एवं व्रत आदि करते हैं वे निश्चित ही अपने सर्व ग्रहों को अनुकूल, सिद्धिकारक बनाकर संसार के सर्व सुखों को प्राप्त कर परम्परा से मोक्ष को भी प्राप्त करेंगे।

(45) तत्त्वार्थसूत्र व्रत विधि

तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ जिसका दूसरा नाम मोक्षशास्त्र भी है, इसमें दश अध्याय हैं। दिगम्बर जैन परंपरा में संस्कृत भाषा में यह पहला सूत्रग्रंथ है। एक-एक अध्याय को आश्रित करके इसके 10 व्रत किये जाते हैं। व्रत में भगवान का पंचामृत अभिषेक करके पूजन करें। सरस्वती प्रतिमा या श्रुतस्कंध यंत्र या सरस्वतीयंत्र का पंचामृत अभिषेक करके तत्त्वार्थ सूत्र की पूजा करें।

समुच्चय मंत्र–**ॐ ह्रीं दशाध्यायसहिततत्त्वार्थसूत्रमहाशास्त्रेभ्यो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रप्रथमाध्यायस्य सम्यग्दर्शनादित्रयस्त्रिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
2. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रद्वितीयाध्यायस्य औपशमिकादित्रिपंचाशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
3. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रतृतीयाध्यायस्य रत्नशर्करादि-एकोनचत्वारिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
4. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रचतुर्थाध्यायस्य देवाश्चतुर्णिकाया आदि द्विचत्वारिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
5. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रपंचमाध्यायस्य अजीवकायादि द्विचत्वारिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
6. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रषष्ठाध्यायस्य कायवाङ्मनःकर्मयोगइत्यादि सप्तविंशतिसूत्रेभ्यो नमः।**
7. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रसप्तमाध्यायस्य हिंसानृतस्तेयादि एकोनचत्वारिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
8. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्राष्टमाध्यायस्य मिथ्यादर्शनाविरत्यादि-षड्विंशतिसूत्रेभ्यो नमः।**
9. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रनवमाध्यायस्य आस्रवनिरोधःसंवर आदिसप्तचत्वारिंशत्सूत्रेभ्यो नमः।**
10. **ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्रदशमाध्यायस्य मोहक्षयाज्ज्ञानादि नवसूत्रेभ्यो नमः।**

इस व्रत को पूर्ण कर उद्यापन में तत्त्वार्थसूत्र की पूजा व श्रुतस्कंध विधान करके तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ छपाकर ज्ञानदान में चतुर्विध संघ को प्रदान करें। दश-दश उपकरणादि मंदिर जी में भेंट देवें। यथाशक्ति व्रत पूर्णकर श्रुतज्ञान की वृद्धि करके केवलज्ञान को प्राप्त करने में अपनी आत्मा को सफल बनावें।

(46) सर्वदोषप्रायश्चित्त व्रत विधि

यह व्रत 33 प्रकार की अत्यासादना को दूर करके आत्मशुद्धि के लिए किया जाता है। इसमें 33 व्रत होते हैं।

प्रथमतः समुच्चय मंत्र है–

पुनः पाँच महाव्रत के 5, पाँच समिति के 5, तीनगुप्ति के 3 ऐसे 13 व्रत हैं। पाँच अस्तिकाय के 5, छह षट्कायिक जीव के 6 और नव पदार्थ के 9 ऐसे कुल–

5+5+3+5+6+9=33 व्रत हुये हैं।

इनकी उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य एकाशन है। इस व्रत का फल चारित्र की प्राप्ति और परंपरा से मोक्ष की प्राप्ति है।

समुच्चय मंत्र-

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा त्रयस्त्रिंशदत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।1।।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसामहाव्रतस्यात्यासादना-त्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचौर्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं अपरिग्रहमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं ईर्यासमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं भाषासमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं एषणासमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं आदाननिक्षेपणसमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं उत्सर्गसमिते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं मनोगुप्ते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं अर्हं वचोगुप्ते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं अर्हं कायगुप्ते-रत्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।14।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुद्गलास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।15।।
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।16।।
ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।17।।
ॐ ह्रीं अर्हं आकाशास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।18।।
ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।19।।
ॐ ह्रीं अर्हं अप्कायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।20।।
ॐ ह्रीं अर्हं तेजःकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।21।।
ॐ ह्रीं अर्हं वायुकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।22।।
ॐ ह्रीं अर्हं वनस्पतिकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।23।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रसकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।24।।
ॐ ह्रीं अर्हं जीवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।25।।
ॐ ह्रीं अर्हं अजीवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।26।।
ॐ ह्रीं अर्हं आस्रवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।27।।
ॐ ह्रीं अर्हं बंधपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।28।।
ॐ ह्रीं अर्हं संवरपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।29।।
ॐ ह्रीं अर्हं निर्जरापदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।30।।
ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।31।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।32।।
ॐ ह्रीं अर्हं पापपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-प्रोषधोद्योतनाय नमः।।33।।
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्ज्ञानाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्चारित्राय नमः।।3।।

(47) तीस चौबीसी व्रत विधि

व्रत की विधि– मध्यलोक में ढाई द्वीप तक पाँच भरत एवं पाँच ऐरावत क्षेत्र हैं। जंबूद्वीप में एक भरत, एक ऐरावत ऐसे दो क्षेत्र हैं। धातकी खंड में पूर्वधातकी खंड में एक-एक भरत, ऐरावत एवं पश्चिम धातकीखंड में एक भरत, एक ऐरावत ऐसे दो भरत और दो ऐरावत क्षेत्र हैं। इसी प्रकार पूर्वपुष्करार्ध द्वीप में भी पूर्व पुष्करार्ध में एक भरत, एक ऐरावत और पश्चिमपुष्करार्ध द्वीप में भी एक भरत, एक ऐरावत ऐसे दो भरत और दो ऐरावत क्षेत्र हैं। इन पाँचों भरत एवं पाँचों ऐरावत क्षेत्रों के आर्यखंडों में षट्काल परिवर्तन होता रहता है। इनमें चतुर्थ काल में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर होते रहते हैं। इस प्रकार यद्यपि भूतकाल की अपेक्षा अनंत चौबीसी हो चुकी हैं और भविष्यत् काल में भी अनंत चौबीसी होवेंगी, फिर भी एक-एक भूतकालीन एक-एक वर्तमानकालीन और एक-एक भविष्यत्कालीन के ऐसे पाँच भरत, पाँच ऐरावत के त्रिकाल संबंधी तीस चौबीसी तीर्थंकर भगवंतों के नाम ग्रंथों में मिलते हैं।

इन चौबीसी के तीर्थंकरों के मंत्रों को जपते हुये ''तीस चौबीसी व्रत'' करने की परम्परा चली आ रही है। चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने तथा और भी अनेक मुनि, आर्यिकाओं एवं श्रावक-श्राविकाओं ने यह व्रत किया है और कर रहे हैं। इन व्रतों में उत्कृष्ट विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य एकाशन है। इसमें तिथियों का कोई नियम नहीं है। व्रत के दिन पंचामृत अभिषेक करके तीस चौबीसी की समुच्चय पूजा करें। 720 भगवंतों के नाम या मंत्र पढ़ें। उद्यापन में जिनप्रतिमा विराजमान करके तीस ग्रंथों का दान आदि करके व्रत पूर्ण करें एवं तीस चौबीसी विधान करके सम्मेदशिखर या अहिच्छत्र तीर्थ पर जाकर तीस चौबीसी भगवंतों का दर्शन पूजन आदि संपन्न करें।

समुच्चय मंत्र–**ॐ ह्रीं श्री त्रिंशच्चतुर्विंशति–तीर्थंकरेभ्यो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र निम्न प्रकार हैं–

(1)
जम्बूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री निर्वाणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री सागरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री महासाधुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री विमलप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री श्रीधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री सुदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री अमलप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री उद्धरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री अंगिरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री सन्मतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री सिंधुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री कुसुमांजलिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री शिवगणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री उत्साहनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री ज्ञानेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री परमेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री विमलेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री यशोधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री कृष्णमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री शुद्धमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री भद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री अतिक्रांतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री शांतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(2)
जम्बूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।

5. ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

(3)
जम्बूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के भविष्यत्कालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री महापद्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री सुरदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री सर्वात्मभूतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री देवपुत्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री कुलपुत्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री उदंकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री प्रोष्ठिलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री जयकीर्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री निष्पापनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री निष्कषायनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री विपुलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री निर्मलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री चित्रगुप्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री समाधिगुप्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री स्वयंभूनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री अनिवर्तकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री जयनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री देवपालनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(4)
जम्बूद्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री पंचरूपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री जिनधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री सांप्रतिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री ऊर्जयंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री आधिक्षायिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री रत्नसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री रामेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री अनंगोज्झितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री विन्यासनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री अशेषनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री सुविधाननाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री प्रदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री कुमारनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री सर्वशैलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री प्रभंजननाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री सौभाग्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री व्रतविंदुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री सिद्धकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री ज्ञानशरीरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री कल्पद्रुमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री तीर्थफलेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री दिनकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री वीरप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(5)

जम्बूद्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री बालचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री अग्निसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री नंदिसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री श्रीदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री व्रतधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री सोमचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री धृतदीर्घनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री शतायुष्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री विवसितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री श्रेयोनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री विश्रुतजलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री सिंहसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री उपशांतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री गुप्तशासननाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री अभिधाननाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री मरुदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री श्रीधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री शामकंठनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री अग्निप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री अग्निदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री वीरसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।

(6)

जम्बूद्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के भविष्यत्कालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री सिद्धार्थनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री जयघोषनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री नंदिसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री स्वर्गमंगलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री वज्राधारीनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री निर्वाणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री धर्मध्वजनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री सिद्धसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री महासेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री रविमित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री सत्यसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री चंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री महीचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री श्रुतांजननाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री देवसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री जिनेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री सुकौशलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री अमृतसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री अग्निदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(7)

पूर्वधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री रत्नप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री अमितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री अकलंकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री चंद्रस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री शुभंकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री तत्त्वनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री सुंदरस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री पुरंधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री स्वामिदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री देवदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री वासवदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री श्रेयोनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री विश्वरूपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री तपस्तेजोनाथ जिनेन्द्राय नमः।

16. ॐ ह्रीं श्री श्रीपतिबोधदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री सिद्धार्थदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री संयमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री देवेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री प्रवरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री विश्वसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री मेघनंदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री त्रिजेतृकनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(8)

पूर्वधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री युगादिदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री सिद्धांतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री महेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री परमार्थनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री समुद्धरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री भूधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री उद्योतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री आर्जवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री अभयनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री अप्रकंपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री पद्मनंदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री प्रियंकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री सुकृतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री भद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री मुनिचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री पंचमुष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री त्रिमुष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री गांगिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री गणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री सर्वांगदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री इंद्रदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री नायकनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(9)

पूर्वधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री श्रीसिद्धार्थनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री सम्यग्गुणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्रदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री संपन्ननाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री सर्वस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री मुनिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री विशिष्टदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री अमरनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मशांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री पर्वनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री अकामुकदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री ध्याननाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री श्रीकल्पनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री संवरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री स्वास्थ्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री आनंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री रविप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री सुनंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री सुकर्णदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री सुकर्मदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री अममदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री शाश्वतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(10)

पूर्वधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री वज्रस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री उदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री सूर्यस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री पुरुषोत्तमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री शरणस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री अवबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः।

7. ॐ ह्रीं श्री विक्रमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री निर्घटिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री हरीन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री परित्रेरितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री निर्वाणसूरिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री धर्महेतुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुखनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री सुकृतेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री श्रुताम्बुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री विमलार्कनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री देवप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री धरणेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री सुतीर्थनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री उदयानंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री सर्वार्थदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री धार्मिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री क्षेत्रस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री हरिचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(11)
पूर्वधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री अपश्चिमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री अर्हद्देवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री चरित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री सिद्धानंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री नंदगनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री पद्मकूपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री उदयनाभिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री रुकमेंदुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री कृपालुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री प्रौष्ठिलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री सिद्धेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री अमृतेंदुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री स्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री भुवनलिंगनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री सर्वरथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री मेघनंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री नंदिकेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री हरिनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री अधिष्ठनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री शांतिकदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री नंदीस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री कुंदपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री विरोचननाथ जिनेन्द्राय नमः।

(12)
पूर्वधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री प्रवरवीरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री विजयप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री सत्पदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री महामृगेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री चिंतामणिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री अशोकिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री मृगेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री उपवासिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री पद्मचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री बोधकेंदुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री चिंताहिमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री उत्साहिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री अपाशिवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री देवजलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री नारिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री अनघनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री नागेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री नीलोत्पलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री अप्रकंपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री पुरोहितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री भिंदकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री निर्वाचनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री विरोषिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(13)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री प्रियमित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री सुमितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री अतिव्यक्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री कलासेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री कर्मजित्नाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री प्रबुद्धनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री प्रव्रजित्नाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री सुधर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री तमोदीपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री व्रजनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री बुद्धनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री प्रबंधदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री अतीतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री प्रमुखनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री पल्योपमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री अकोपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री निष्ठितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री मृगनाभिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री देवेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री पदस्थनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री शिवनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(14)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री विश्वचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री कपिलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री प्रियतेजोनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री प्रशमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री विषमाँगनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री चारित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री प्रभादित्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री मुंजकेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री वीतवासनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री सुराधिपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री दयानाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री सहस्रभुजनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री जिनसिंहनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री रैवतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री बाहुस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री श्रीमालिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री अयोगदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री अयोगिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री कामरिपुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री आरंभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री गर्भज्ञातिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री एकार्जितनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(15)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी भरतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री रक्तकेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री चक्रहस्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री कृतनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री परमेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री सुमूर्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री मुक्तिकांतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री निकेशिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री प्रशस्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री निराहारनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री अमूर्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री द्विजनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री श्रेयोगतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री अरूजनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री देवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री दयाधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री पुष्पनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री नरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री प्रतिभूतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री नागेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।

20. ॐ ह्रीं श्री तपोधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री दशाननन्नाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री आरण्यकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री दशानीकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री सात्विकनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(16)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री सुमेरुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री जिनकृतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री कैटभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री प्रशस्तदायकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री निर्दमननाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री कुलकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री वर्धमाननाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री अमृतेंदुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री संख्यानंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री कल्पकृतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री हरिनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री बाहुस्वानाथमि जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री भार्गवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री भद्रस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री पविपाणिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री विपोषितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचारिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री असाक्षिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री चारित्रेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री पारिणामिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री शाश्वतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री निधिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री कौशिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री धर्मेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(17)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री साधितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री जिनस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री स्तमितेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री अत्यानंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री पुष्पोत्फुल्लनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री मंडितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री प्रहतदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री मदनसिद्धनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री हसदिंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री चंद्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री अब्जबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री जिनबल्लभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री सुविभूतिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री ककुद्धासनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री सुवर्णनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री हरिवासकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री प्रियमित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री धर्मदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री प्रियरतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री नंदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री अश्वानीकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री पर्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री चित्रहृदयनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(18)

पश्चिमधातकीखंड संबंधी ऐरावतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री रवीन्दुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री सौकुमारनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीवान्नाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीकुलरत्ननाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री सोमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री वरुणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री सर्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री सुदृष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री शिष्टनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री सुधन्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री सोमचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।

14. ॐ ह्रीं श्री क्षेत्राधीशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री सदंतिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री जयंतदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री तमोरिपुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री निर्मितदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री कृतपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री बोधिलाभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री बहुनंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री सुदृष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री कुंकुमनाभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री वक्षेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(19)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री दमनेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री मूर्तस्वानाथ मिजिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री विरागस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री प्रलंबनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीपतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री चारित्रनिधिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री अपराजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री सुबोधकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री बुद्धीशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री वैतालिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री त्रिमुष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री मुनिबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री तीर्थस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री धर्मधीशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री धरणेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री प्रभवदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री अनादिदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री अनादिप्रभुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री सर्वतीर्थनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री निरुपमदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री कौमारिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री विहारगृहनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री धरणीश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री विकासदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(20)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री जगन्नाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री प्रभासनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री स्वरस्वामीनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री भरतेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री दीर्घाननननाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री विख्यातकीर्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री अवसानिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री प्रबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री तपोनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री पावकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री त्रिपुरेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री सौगतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री वासवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री मनोहरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री शुभकर्मईशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री इष्टसेवितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री विमलेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री धर्मवासनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री प्रसादनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री प्रभामृगांकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री उज्झितकलंकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री स्फटिकप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री गजेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री ध्यानजयनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(21)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री वसंतध्वजनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री त्रिजयंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री त्रिस्तंभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री अबालिशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री प्रवादिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री भूमानंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।

8. ॐ ह्रीं श्री त्रिनयननाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री विद्वाननाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री परमात्मप्रसंगनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री भूमींद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री गोस्वामीनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री कल्याणप्रकाशितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री मंडलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री महावसुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री उदयवाननाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री दिव्यज्योतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री प्रबोधेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री अभयांकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री प्रमितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री दिव्यस्फारकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री व्रतस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री निधाननाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री त्रिकर्मानाथ जिनेन्द्राय नमः।

(22)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री कृतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री उपविष्टनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री देवादित्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री आस्थानिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री प्रचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री वेषिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री त्रिभानुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री वज्रांगनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री अविरोधीनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री अपापनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री लोकोत्तरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री जलधिशेषनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री विद्योतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री सुमेरुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री विभावितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री वत्सलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री जिनालयनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री तुषारनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री भुवनस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री सुकायनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री देवाधिदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री अकारिमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री बिंबितनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(23)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री शंकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री अक्षवासनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री नग्ननाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री नग्नाधिपतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री नष्टपाखंडनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री स्वप्नवेदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री तपोधननाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री पुष्पकेतुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री धार्मिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री चंद्रकेतुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री अनुरक्तज्योतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री वीतरागनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री उद्योतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री तमोपेक्षनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री मधुनादनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री मरुदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री दमनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री वृषभस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री शिलातननाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री विश्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री नंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री तमोहरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मजनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(24)

पूर्वपुष्करार्ध द्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री यशोधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री सुकृतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

3. ॐ ह्रीं श्री अभयघोषनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री निर्वाणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री व्रतवासनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री अतिराजनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री अश्वदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री अर्जुननाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री तपश्चंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री शारीरिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री महेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री सुग्रीवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री दृढप्रहारनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री अम्बरीकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री दयातीतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री तुंबरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री सर्वशीलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री प्रतिजातनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री जितेन्द्रियनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री तपादित्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री रत्नाकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री देवेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री लांछननाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री सुप्रदेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(25)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री पद्मचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री रत्नांगनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री अयोगिकेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री सर्वार्थनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री ऋषिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री हरिभद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री गुणाधिपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री पारत्रिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री मुनीन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री दीपकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री राजर्षिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री विशाखदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री अनिंदितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री रविस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री सोमदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री जयस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री मोक्षनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री अग्रभासनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री धनुःसंगनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री रोमांचकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री मुक्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री प्रसिद्धनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री जितेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(26)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री सर्वांगस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री पद्माकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री प्रभाकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री बलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री योगीश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मांगनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री व्रतचलातीतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री कलंबकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री परित्यागनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री निषेधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री पापापहारिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री सुस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री मुक्तिचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री अप्राशिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री जयचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री मलाधारिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री सुसंयतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री मलयसिंधुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री अक्षधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री देवधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री देवगणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री आगमिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री विनीतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री रतानंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(27)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री प्रभावकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री विनतेंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री सुभावकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री दिनकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री अगस्त्येजोनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री धनदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री पौरवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री जिनदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री मुनिसिंधुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री आस्तिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री भवानीकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री नृपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री नारायणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री प्रशमौकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री भूपतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री सुदृष्टिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री भवभीरुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री नंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री भार्गवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री सुवसुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री परावशनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री वनवासीकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री भरतेशनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(28)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के अतीत चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री उपशांतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री फाल्गुणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री पूर्वासनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री सौधर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री गौरिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री त्रिविक्रमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री नरसिंहनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री मृगवसुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री सोमेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री सुधासुरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री अपापमल्लनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री विबाधनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री संधिकस्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री मान्धात्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री अश्वतेजोनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री विद्याधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री सुलोचननाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री मौननिधिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री पुंडरीकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री चित्रगणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री मणिरिन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री सर्वकालनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री भूरिश्रवणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री पुण्यांगनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(29)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री गांगेयकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री नल्लवासवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री भीमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री दयाधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री सुभद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री स्वामिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री हनिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री नंदिघोषनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री रूपबीजनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री वज्रनाथनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री संतोषनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री सुधर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री फणीश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री वीरचंद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री मेधानिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री स्वच्छनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री कोपक्षयनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री अकामनाथ जिनेन्द्राय नमः।

19. ॐ ह्रीं श्री धर्मधामनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री सूक्तिसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री दयानाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री कीर्तिपनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री शुभंकरनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(30)

पश्चिमपुष्करार्ध द्वीप संबंधी ऐरावतक्षेत्र के भावी चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री अदोषिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री विनयानंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री मुनिभारतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री इंद्रकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री चंद्रकेतुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री ध्वजादित्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री वसुबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री मुक्तिगतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री धर्मबोधनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री देवांगनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री मारीचिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री सुजीवननाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री यशोधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री गौतमनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री मुनिशुद्धिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री प्रबोधिकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री सदानीकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री चारित्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री शतानंदनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री वेदार्थनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री सुधानीकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री ज्योतिर्मुखनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री सुरार्घनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(48) तीन चौबीसी व्रत विधि

व्रत विधि– जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के वर्तमानकालीन तीर्थंकर श्री ऋषभदेव से लेकर श्री महावीर पर्यंत 24 हैं। ऐसे ही भूतकालीन श्री निर्वाणनाथ से लेकर श्री शांतिनाथ पर्यंत 24 हैं, पुनः भविष्यत्कालीन श्रीमहापद्म से लेकर अनंतवीर्य पर्यंत चौबीस हैं। ये 24+24+24=72 तीर्थंकर के 72 व्रत करने होते हैं। व्रतों की उत्कृष्ट विधि उपवास, मध्यम विधि अल्पाहार और जघन्यविधि एकाशन है। व्रत के दिन तीर्थंकर प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके तीन चौबीसी पूजा करें। व्रत पूर्ण कर यथाशक्ति तीन चौबीसी की प्रतिमा विराजमान करावें। 72 ग्रंथ आदि का दान देवें। ग्रंथ प्रकाशित करावें। जहाँ तीन चौबीसी विराजमान हैं, ऐसे 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली' प्रयाग (इलाहाबाद), अयोध्या, हस्तिनापुर जम्बूद्वीप आदि तीर्थों की वंदना करें।

समुच्चय मंत्र–**ॐ ह्रीं श्रीत्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

मंत्र जपें पुनः व्रत के दिन क्रमशः एक-एक तीर्थंकरों का मंत्र जपें।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

(1)

भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री निर्वाणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री सागरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री महासाधुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री विमलप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री श्रीधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री सुदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री अमलप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री उद्धरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री अंगिरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री सन्मतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

11. ॐ ह्रीं श्री सिंधुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री कुसुमांजलिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री शिवगणनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री उत्साहनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री ज्ञानेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री परमेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री विमलेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री यशोधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री कृष्णमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री शुद्धमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री भद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री अतिक्रांतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री शांतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(2)
वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथजिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

(3)
भविष्यत्कालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री महापद्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री सुरदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री सर्वात्मभूतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री देवपुत्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री कुलपुत्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री उदंकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री प्रोष्ठिलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री जयकीर्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री निष्पापनाथ जिनेन्द्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्री निष्कषायनाथ जिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री विपुलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री निर्मलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री चित्रगुप्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री समाधिगुप्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री स्वयंभूनाथ जिनेन्द्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री अनिवर्तकनाथ जिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री जयनाथ जिनेन्द्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री देवपालनाथ जिनेन्द्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(49) विद्यमान बीस तीर्थंकर व्रत विधि

जम्बूद्वीप के पूर्वविदेह में सीमंधार स्वामी और युगमंधार स्वामी आज भी समवसरण में विराजमान हैं अतः इन्हें विद्यमान या विहरमाण कहते हैं। जंबूद्वीप के पश्चिम विदेह में बाहुस्वामी और सुबाहुस्वामी हैं। पूर्वधातकी के विदेहों में क्रमशः चार तीर्थंकर एवं पश्चिम धातकी खंड के विदेहों में क्रमशः आगे के चार तीर्थंकर, इसी प्रकार पूर्व पुष्करार्ध द्वीप के विदेहों में आगे के चार तीर्थंकर एवं पश्चिम पुष्करार्ध के विदेह क्षेत्रों में चार तीर्थंकर, ऐसे बीस तीर्थंकर आज भी विद्यमान हैं। इनके मंत्रों का जाप्य करके व्रत विधि संपन्न होती है। इसमें भी तिथि का कोई नियम नहीं है। उत्कृष्ट विधि उपवास, मध्यम विधि अल्पाहार और जघन्य विधि एकाशन है।

व्रत के दिन तीर्थंकर प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक, विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा आदि करके व्रत के उद्यापन में बीस तीर्थंकर प्रतिमा विराजमान कराना, 20-20 ग्रंथ आदि दान देना, 20-20 फल आदि बीस श्रावकों को देना आदि यथाशक्ति दान देकर व्रत समापन करें। व्रत की पूर्णता पर जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, दहीगाँव आदि जाकर बीस तीर्थंकर भगवंतों का दर्शन पूजन करके जीवन धन्य करें।

समुच्चय मंत्र–**ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

प्रत्येक मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं श्री सीमंधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं श्रीयुगमंधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं श्री बाहुनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं श्री सुबाहुनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं श्री संजातकनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं श्री ऋषभाननाथ जिनेन्द्राय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं श्री सूरिप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
10. **ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
11. **ॐ ह्रीं श्री वज्रधरनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
12. **ॐ ह्रीं श्री चंद्राननाथ जिनेन्द्राय नमः।**
13. **ॐ ह्रीं श्री चंद्रबाहुनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
14. **ॐ ह्रीं श्री भुजंगमनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
15. **ॐ ह्रीं श्री ईश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
16. **ॐ ह्रीं श्री नेमीप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
17. **ॐ ह्रीं श्री वीरसेननाथ जिनेन्द्राय नमः।**
18. **ॐ ह्रीं श्री महाभद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
19. **ॐ ह्रीं श्री देवयशोनाथ जिनेन्द्राय नमः।**
20. **ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्यनाथ जिनेन्द्राय नमः।**

(50) सम्मेदशिखर व्रत विधि

सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र शाश्वत तीर्थ है। यहाँ से हमेशा चतुर्थकाल में तीर्थंकर भगवान एवं असंख्यातों मुनिगण मोक्ष प्राप्त करते रहे हैं और आगे भी मोक्ष प्राप्त करते रहेंगे। इस सिद्धक्षेत्र के 25 व्रत हैं।

इस बार चतुर्थकाल में हुण्डावसर्पिणी के निमित्त से सम्मेदशिखर पर्वत से 20 तीर्थंकर ही मोक्ष गये हैं, शेष चार तीर्थंकर अन्यत्र स्थलों से मोक्ष गए हैं फिर भी वहां पर इन चारों की भी टोंके बनाई गई हैं अतः चौबीस तीर्थंकरों के 24 व्रत तथा गौतम गणधर की टोंक का 1, इस प्रकार 25 व्रत करना है। प्रथमतः अजितनाथ तीर्थंकर के सिद्धकूट से व्रत प्रारंभ कर भगवान पार्श्वनाथ के सुवर्णभद्रकूट तक व्रत करना है पुनः ऋषभदेव, वासुपूज्य, नेमिनाथ और महावीर स्वामी के टोंकों का व्रत करना चाहिए।

इस व्रत के दिन मंदिर में तीर्थंकर भगवंतों की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके सम्मेदशिखर पूजन विधान करना है पुनः समुच्चय जाप्य करके एक-एक व्रतों के दिन क्रम से एक-एक जाप्य करना है।

इस व्रत का फल नाना प्रकार के रोग, शोक, दुःख, संकट को दूर कर सम्पूर्ण मनोरथों को सफल करना है। जो यह व्रत करेंगे, वे सम्मेदशिखर की वंदना के समान अनेकों उपवासों का फल प्राप्त कर परम्परा से मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

समुच्चय मंत्र - **1. ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय नमः।** अथवा
2. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतानंतप्रमसिद्धेभ्यो नमो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. ॐ ह्रीं सिद्धवरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीअजितनाथ तीर्थंकराय नमः।
2. ॐ ह्रीं धवलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय नमः।
3. ॐ ह्रीं आनंदकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीअभिनंदननाथतीर्थंकराय नमः।
4. ॐ ह्रीं अविचलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय नमः।
5. ॐ ह्रीं मोहनकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीपद्मप्रभनाथतीर्थंकराय नमः।
6. ॐ ह्रीं प्रभासकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकराय नमः।
7. ॐ ह्रीं ललितकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीचंद्रप्रभनाथतीर्थंकराय नमः।
8. ॐ ह्रीं सुप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय नमः।
9. ॐ ह्रीं विद्युत्वरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय नमः।
10. ॐ ह्रीं संकुलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकराय नमः।
11. ॐ ह्रीं सुवीरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीविमलनाथतीर्थंकराय नमः।
12. ॐ ह्रीं स्वयंभूकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय नमः।
13. ॐ ह्रीं सुदत्तकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय नमः।
14. ॐ ह्रीं कुंदप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय नमः।
15. ॐ ह्रीं ज्ञानधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय नमः।
16. ॐ ह्रीं नाटककूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीअरहनाथतीर्थंकराय नमः।
17. ॐ ह्रीं संबलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय नमः।
18. ॐ ह्रीं निर्जरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय नमः।
19. ॐ ह्रीं मित्रधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीनमिनाथतीर्थंकराय नमः।
20. ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकराय नमः।
21. ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीआदिनाथतीर्थंकराय नमः।
22. ॐ ह्रीं चंपापुरीक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय नमः।
23. ॐ ह्रीं ऊर्जयंतगिरिक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय नमः।
24. ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित–श्रीमहावीरतीर्थंकराय नमः।
25. ॐ ह्रीं वृषभसेनादिगौतमान्त्य–सर्वगणधरचरणेभ्यो नमः।

(51) भक्तामर व्रत विधि

विधि– जैन समाज में भक्तामर स्तोत्र सबसे अधिक प्रसिद्धि को प्राप्त है। इसकी महिमा के विषय में सभी लोग जानते हैं कि श्री मानतुंगमहामुनि ने इस स्तोत्र की रचना की है, एक-एक काव्य के प्रभाव से एक-एक ऐसे अड़तालीस ताले टूट गये हैं और अतिशय चमत्कार हुआ है। यह श्री आदिनाथ भगवान का स्तोत्र है, प्रारंभ में ''भक्तामरप्रणत' आदि श्लोक में ''भक्तामर' पद के आने से इसका ''भक्तामर स्तोत्र'' नाम प्रसिद्ध हो गया है।

इसके 48 व्रत होते हैं। एक-एक काव्य को आधार बनाकर 48 व्रत किये जाते हैं। व्रत के दिन भक्तामर पूजा या ऋषभदेव की प्रतिमा का पंचामृताभिषेक कर श्री ऋषभदेव की पूजा करना चाहिए। पुनः एक-एक व्रत के दिनों में क्रम से एक-एक मंत्र का जाप्य करना चाहिए। मंत्र निम्न प्रकार हैं।

कोई-कोई भक्तामर स्तोत्र में छपे ऋद्धि-मंत्र का जाप्य करते हैं। वैसे भक्तामर के एक-एक काव्य का भी 108 बार जाप्य कर सकते हैं। व्रत विधि पूर्णकर उद्यापन में श्री ऋषभदेव प्रतिमा विराजमान कराना, भक्तामर स्तोत्र छपाकर वितरित करना चाहिए। यथाशक्ति दान आदि करके भक्तामर विधान करके व्रत पूर्ण करना चाहिए।

समुच्चय मंत्र–

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथतीर्थंकराय नमः।

अथवा

2. ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

ॐ ह्रीं प्रणतदेवसमूह मुकुटाग्रमणिद्योतकाय महापापान्धकार विनाशनाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।1।।

ॐ ह्रीं गणधर-चारणसमस्त-ऋषीन्द्र-चन्द्रादित्य-सुरेन्द्र-नरेन्द्र- व्यंतरेन्द्र-नागेन्द्र-चतुर्विध मुनीन्द्रस्तुत चरणारविंदाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।2।।

ॐ ह्रीं विगतबुद्धि गर्वापहार सहित श्रीमन्मानतुंगाचार्य भक्तिसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनगुणसमुद्र चन्द्रकान्तिमणितेजशरीर समस्त- सुरनाथस्तुत श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।4।।

ॐ ह्रीं समस्तगणधरादि-मुनिवरप्रतिपालक मृगबालवत् श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।5।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रचन्द्रभक्ति सर्वसौख्य तुच्छभक्ति बहुसुखदायकाय जिनेन्द्राय जिनादिपरमेश्वराय नमः।।6।।

ॐ ह्रीं अनंतभव-पातक सर्व विनाशकाय तवस्तुति सौख्यदायकाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।7।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रस्तवन सत्पुरुष चिच्चमत्काराय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनपूजन-स्तवन-कथाश्रवणेन जगत्त्रयभव्यजीव समस्तपापौघविनाशनाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।9।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यानुपमगुणमंडित समस्तोपमासहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।10।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदर्शन अनंतभवसंचित अघसमूहविनाशनाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।11।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनशान्तिस्वरूपगुण त्रिभुवनतिलकाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।12।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यविजयी रूपातिशय अनंतचन्द्रतेजोजितृ सदातेज-पुंजायमान श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।13।।

ॐ ह्रीं शुभ्रगुणातिशयरूप त्रिभुवन जिनजिनेन्द्रगुण विराजमानाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।14।।

ॐ ह्रीं मेरुवद्अचल शीलशिरोमणये चतुर्विधवनिताविकाररहित शीलसमुद्राय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।15।।

ॐ ह्रीं धूमस्नेहवर्त्यादिविघ्नरहित त्रैलोक्य परमकेवलदीपकाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।16।।

ॐ ह्रीं राहुचन्द्रपूजित निरावरणज्योतिरूप लोकालोकित सदोदयाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।17।।

ॐ ह्रीं नित्योदयरूप अगम्य राहु त्रिभुवनसर्वकलासहित विराजमानाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।18।।

ॐ ह्रीं चन्द्रसूर्योदयास्त रजनी-दिवारहित परमकेवलोदय सदा दीप्तिविराजमानाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।19।।

ॐ ह्रीं हरिहरादिज्ञानरहित परमज्योतिकेवलज्ञानसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।20।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनमनोमोहन जिनेन्द्ररूपान्यदृष्टान्तरहित परम मंडिताय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनवरमाताजनित जिनेन्द्रपूर्वदिग्भास्कर केवलज्ञान भास्कराय श्रीआदिब्रह्मजिनाय नमः।।22।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यपावनादित्यवर्ण परमअष्टोत्तरशतलक्षण नवशत व्यंजनाय समुदाय एकसहस्रअष्टमंडिताय श्रीआदिजिनेन्द्राय नमः।।23।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मा-विष्णु-श्रीकंठ-गणपति त्रिभुवनदेवत्वसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।24।।

ॐ ह्रीं बुद्धशंकरशेषधरब्रह्मानाम् सहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।25।।

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-ऊर्ध्वलोकत्रय कृताहोरात्रिनमस्कार समस्तार्तरौद्रविनाशक त्रिभुवनेश्वराय भवदधितरणतारणसमर्थाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।26।।

ॐ ह्रीं श्री परमगुणाश्रितावगुणानाश्रित श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।27।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष प्रातिहार्यसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।28।।

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्यसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।29।।

ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्टिचामर प्रातिहार्यसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।। 30।।

ॐ ह्रीं श्री छत्रत्रयप्रातिहार्यसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।31।।

ॐ ह्रीं अष्टादशकोटिवादित्र प्रातिहार्यसहिताय श्रीपरमादिपरमेश्वराय नमः।।32।।

ॐ ह्रीं समस्त पुष्पजातिवृष्टिप्रतिहार्यसहिताय श्रीपरमादिपरमेश्वराय नमः।।33।।

ॐ ह्रीं श्री कोटिभास्करप्रभामण्डित भामण्डलप्रातिहार्यसहिताय श्रीपरमादिपरमेश्वराय नमः।।34।।

ॐ ह्रीं जलधरपटल गर्जित ध्वनियोजनप्रमाणप्रातिहार्यसहिताय श्रीपरमादिपरमेश्वराय नमः।।35।।

ॐ ह्रीं हेमकमलोपरिकृतगमन देवकृतातिशयसहिताय श्रीपरमादिपरमेश्वराय नमः।।36।।

ॐ ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवसरणविभूतिमंडिताय श्रीपरमादिपरमेश्वराय नमः।।37।।

ॐ ह्रीं मस्तक गलितमद सुरगजेन्द्रमहादुद्धर भयविनाशकाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।38।।

ॐ ह्रीं आदिदेव प्रसादान्महासिंहभयविनाशकाय श्रीयुगादिदेवपरमेश्वराय नमः।।39।।

ॐ ह्रीं श्रीविश्वभक्षणसमर्थ महावन्हिविनाशकाय जिननामजलाय श्रीआदिब्रह्मणे नमः।।40।।

ॐ ह्रीं रक्तनयन सर्प जिननामनागदमन्यौषधये समस्तभय-विनाशकाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।41।।

ॐ ह्रीं महासंग्रामभयविनाशकाय सर्वांगरक्षणकराय श्रीप्रथमजिनेन्द्राय नमः।।42।।

ॐ ह्रीं महारिपुयुद्धे जय-विजयप्राप्तकाय श्रीआदिवृषभेश्वराय नमः।।43।।

ॐ ह्रीं महासमुद्रचलितवात महादुर्जयभयविनाशकाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।44।।

ॐ ह्रीं दशताप-जलंधराष्टदश-कुष्टसन्निपातमहारोगविनाशकाय परमकामदेवरूपलक्ष्मीदायकादि जिनेश्वराय नमः।।45।।

ॐ ह्रीं महाबंधन आपादकंठपर्यन्त बैरीकृतोपद्रवभयविघाताय श्री आदिपरमेश्वराय नमः।।46।।

ॐ ह्रीं सिंह-गजेन्द्राराक्षसभूतपिशाचशाकिनीरिपु परमोपद्रवविनाशकाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।47।।

ॐ ह्रीं पठन-पाठन श्रोतव्य श्रद्धावनत मानतुंगाचार्यादि समस्तजीव कल्याणदाय श्रीआदिपरमेश्वराय नमः।।48।।

(52) श्रुतपंचमी व्रत (श्रुतावतार व्रत)

व्रतविधि–ज्येष्ठ शु. एकम् से इस व्रत को ग्रहण करें, प्रातःकाल शुद्ध वस्त्र पहनकर सामग्री लेकर जिनमंदिर में जावें। मंदिर की तीन प्रदक्षिणा देकर जिनेन्द्र भगवान को भक्तिपूर्वक नमस्कार करके पंचपरमेष्ठी भगवान एवं श्रुतस्कंध यंत्र का पंचामृत अभिषेक करें, पुनः अष्टद्रव्य से पंचपरमेष्ठी, द्वादशांग श्रुतदेवी एवं गणधर देव एवं षट्खण्डागम की पूजा करें, साथ ही यक्ष-यक्षी को अर्घ्य समर्पित करें। निम्न मंत्र की पीले पुष्पों से 108 बार जाप्य करें–

जाप्य–**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अर्हं असिआउसा अनाहतविद्यायै नमः स्वाहा।**

जाप्य के पश्चात् तत्त्वार्थसूत्र का पाठ करके णमोकार मंत्र की एक जाप्य करें।

शक्ति के अनुसार उपवासादि करें। व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम विधि फलाहार एवं जघन्य विधि एकाशन है। ब्रह्मचर्यपूर्वक धर्मध्यान में दिन व्यतीत करें।

इस प्रकार चार दिन लगातार पूजा-पाठ करके एकाशन करें एवं पाँचवे दिन ज्येष्ठ शु. पंचमी को उपवास करें। श्रुत भंडार के शास्त्रों को ठीक करके उन पर वस्त्र चढ़ावें। जिनमंदिर में श्रुतस्कंध यंत्रदल बनाकर श्रुतस्कंध की आराधना करें और उपवासपूर्वक समय बितावें। छठवें दिन मुनि, आर्यिका आदि चतुर्विध संघ को आहारदान देकर व्रत को पूर्ण करें। यह व्रत 12 वर्ष तक किया जाता है। व्रतोद्यापन में श्रुतस्कंध यंत्र बनवाकर उसकी विधिपूर्वक प्रतिष्ठा करें। चतुर्विध संघ को चार प्रकार का दान देवें और मंदिर में आवश्यक उपकरण रखें।

इसकी **दूसरी विधि** यह है कि श्रुतपंचमी– ज्येष्ठ शु. पंचमी के दिन ही उपवास करके पाँच वर्ष तक यह व्रत कर सकते हैं।

यह विधि ''जैनेन्द्रव्रत कथा संग्रह'' मराठी पुस्तक से दी गई है। इस दिन षट्खंडागम की पूर्णता पर चतुर्विध संघ ने विधिवत् इन सूत्र ग्रंथों की पूजा की थी अतः वर्तमान में यह 'श्रुतपंचमी' नाम से प्रसिद्ध है।

जाप्य-1. **ॐ ह्रीं अर्हं षट्खंडागमजिनागमेभ्यो नमः।**

2. **ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्यो नमः।**

(53) श्री अक्षयतृतीया व्रत कथा

जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र के अंदर राजगृह नामकी एक सुंदर नगरी है। वहाँ मेघनाद नामका महा मंडलेश्वर राजा राज्य करता था। वह रूप लावण्य से अत्यन्त सुंदर था। वह रूपवान के साथ-साथ बलवान एवं योद्धा भी था। उसकी पट्टरानी का नाम पृथ्वीदेवी था। वह अति रूपवान व जैनधर्म रत थी। उसे जैन धर्म पर पक्का श्रद्धान था। राजा मेघनाद के राज्य में सारी प्रजा प्रसन्न थी। राजा बड़े विनोद के साथ राज्य कर रहा था।

एक दिन पट्टरानी पृथ्वीदेवी अपनी अन्य सहेलियों के साथ अपने महल की सातवीं मंजिल से दिशावलोकन कर रही थी। आनंद से बैठी-बैठी विनोद की बातें कर रही थी तब उसने देखा कि बहुत से विद्यार्थी विद्या पढ़कर अपने घर आ रहे थे जो खेलने कूदने में इतने मग्न थे कि उनका सारा बदन धूल से सना हुआ था। आठों अंग खेलने में क्रियारत थे।

रानी ने बालकों की सारी क्रिया देखी तो उसका चित्त विचारमग्न हो गया। रानी को कोई पुत्र नहीं था। बालकों का अभिनय देखकर उसे अपने पुत्र न होने का दुःख हुआ। दिल में विचार किया कि जिस स्त्री के कूख से पुत्र जन्म नहीं होता उसका जीना इस संसार में वृथा है। इन्हीं विचारधाराओं के साथ वह नीचे आई तथा चिंता

का शरीर बनाकर शयनकक्ष में जाकर सो गई। कुछ समय पश्चात् राजा उधर आया तो उसने रानी को इस तरह देखकर विस्मितता प्रगट की।

रानी से पूछा-प्रिये! आज आप इतनी चिंतित क्यों हो? रानी चुप रही। पुनः राजा ने प्रश्न किया, अनेक बार राजा के प्रश्न करने पर उसने जवाब दिया, हे राजन्! अपने कोई संतान नहीं है और यह समस्त राज वैभव संतान के अभाव में व्यर्थ है।

राजा ने उसे धैर्य बंधाते हुए जवाब दिया– इसमें किस के हाथ की बात है? जो होनहार होता है वह होता है। हमारे अशुभ कर्मों का उदय है इसमें चिंता करने से क्या होगा! यदि भाग्य में होगा तो अवश्य-किन्तु!

होनहार होगा वही, विधिने दिया रचाय।
'विमल' पुण्य प्रभाव से, सुख सम्पत्ति बहु पाय।।

कुछ समय बीता, नगर के बाहर उद्यान में सिद्धवरकूट चैत्यालय की वंदना हेतु पूर्व विदेह क्षेत्र में सुप्रभ नाम के चारणऋद्धिधारी मुनीश्वर आकाश मार्ग से पधारे। वनमाली यह सब देख अत्यंत प्रफुल्लित हुआ और वह गया फूलवारी के पास और अनेक प्रकार के फलफूल आदि से डाली सजाकर प्रसन्न चित्त से राजा के पास जाकर निवेदन किया–

हे राजन्! श्रीमान के उद्यान में सुप्रभ नामक चारण ऋद्धिधारी मुनिराज पधारे हैं।

राजा सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसी समय सिंहासन से उतरकर 10 कदम आगे बढ़ मुनिराज को साष्टांग परोक्ष प्रणाम किया तथा प्रसन्नचित्त हो वनमाली को वस्त्राभूषण धनादि ईनाम देकर प्रसन्न किया।

सारे नगर में आनंद भेरी बजवाई। आनंद भेरी सुनकर सब नगर निवासियों ने राजा के साथ चारण ऋद्धिधारी मुनि की वंदना को प्रस्थान किया।

राजा ने अपने साथ में अत्यंत सुंदर अष्ट द्रव्य मुनि पूजा हेतु लिये और अनेक गाजे-बाजे-दुन्दुभि के साथ पहुँचा, वहाँ पहुँचकर चैत्यालय की वंदना की, सर्वप्रथम चैत्यालय को तीन प्रदक्षिणा दी तथा भगवान की स्तुति-स्तवन, रूपस्तवन वा गुणस्तवन करता हुआ साष्टांग नमस्कार किया।

फिर भगवान को मणिमय सिंहासन पर विराजमान कर बड़े उत्साह से साथ पंचामृत कलशाभिषेक किया व अष्ट द्रव्यों से पूजा की। भगवत् आराधना के पश्चात् राजा मुनिराज के पास पहुँचा व नमस्कार कर चरण समीप बैठ गया और मुनिराज से प्रार्थना की- हे मुनिवर! कृपाकर धर्म श्रवण कराओ।

उधर रानी पृथ्वीदेवी (राजा की पट्टरानी ने) दोनों कर जोड़ विनम्र निवेदन किया कि हे मुनिवर! इस भव में मुझे सब सुख प्राप्त है, परन्तु संतान के अभाव में मेरा जन्म निरर्थक है।

कुछ क्षण रूककर मुनिराज ने जवाब दिया कि हे देवी! तुम्हारे अंतराय कर्म का उदय है, अस्तु तुम्हारे कोई संतान नहीं है। रानी ने पुनः निवेदन किया कि हे महाराज! ऐसा कौन सा पूर्वभव का उदय है, कृपाकर समझाइये, अर्थात् मेरे अंतराय कर्म होने का पूर्व भव सुनाइये–

भरतक्षेत्र में काश्मीर नाम का एक विशाल देश है जिसमें रत्नसंचयपुर नामका एक सुंदर नगर है। वहाँ एक वैश्य कुल में उत्पन्न श्रीवत्स नामका सेठ रहता था। जिसकी सेठानी का नाम श्रीमती था। वह अत्यंत सुंदर एवं गुणवान थी। दोनों सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते थे। तब इसी नगर में चैत्यालय की वंदना हेतु मुनिगुप्त नाम के दिव्यज्ञान धारी मुनि अन्य 500 मुनियों के साथ पधारे।

मुनिगण के दर्शन पाकर राजा सेठ अत्यंत प्रसन्न हुआ और अपना जन्म सफल समझा। उसने मुनि महाराज को नमोस्तु कर मुनिसंघ को अपने उद्यान में ले गया। घर जाकर अपनी स्त्री श्रीमती से कहा कि तुम आहार की व्यवस्था शीघ्र करो, आज हमारा पुण्योदय है जिससे विशाल मुनि संघ का आगमन हुआ है।

किन्तु सेठानी ने सुनी-अनसुनी कर दी और कोई व्यवस्था नहीं की। सेठ स्वयं आया और शुद्धतापूर्वक बहुत से पकवान तैयार कर सात गुणों से नवधा भक्तिपूर्वक आहार दिया। सबके निरंतराय आहार से वह बहुत संतुष्ट हुआ। महाराज ने सेठ को 'अक्षयदानमस्तु' नाम का आशीर्वाद दे विहार किया।

इधर सेठानी श्रीमती अत्यंत क्रोधित हुई और अंतराय कर्म का बन्ध हो गया, उसी अंतराय कर्म से तेरे इस भव में संतान नहीं है।

रानी ने मुनि महाराज के मुँह से अपना पूर्व भव सुना तो वह अपने कुकृत्य पर अत्यंत दुःखी हुई और प्रार्थना की कि हे मुनिराज! अंतराय कर्म नष्ट हो, इसके लिए कोई उपाय बताइये जिससे मुझे संतान-सुख की प्राप्ती हो।

मुनि ने कहा– हे महादेवी! तुम अपने कर्मों का क्षय करने हेतु अक्षयतृतीया व्रत विधिपूर्वक करो। यह व्रत सर्व सुख को देने वाला तथा अपनी इष्ट पूर्ति करने वाला है।

रानी ने प्रश्न किया– हे मुनिश्वर! यह व्रत पहले किसने किया और क्या फल पाया? इसकी कथा सुनाइये–

मुनिराज ने कहा कि रानी! इसकी भी पूर्वकथा सुनो–

विशाल जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में मगधदेश नामका एक देश है। उसी देश में एक नदी के किनारे सहस्त्रकूट नामका चैत्यालय स्थित है। उस चैत्यालय की वंदना हेतु एक धनिक नाम का वैश्य अपनी सुंदरी नामा स्त्री सहित गया। वहाँ कुण्डल पंडित नामका एक विद्याधर अपनी स्त्री मनोरमा देवी सहित उक्त व्रत (अक्षय तीज व्रत) का विधान कर रहे थे। उस समय (पति पत्नी) धनिक सेठ व सुंदरी नामा स्त्री ने विद्याधर युगल से पूछा कि यह आप क्या कर रहे हो-अर्थात् यह किस व्रत का विधान है?

विद्याधर ने जवाब दिया कि इस अवसर्पिणीकाल में अयोध्या नगरी में पहिले नाभिराय नाम के अंतिम मनु हुए। उनके मरुदेवी नामकी पट्टरानी थी। रानी के गर्भ में जब प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ आये तब गर्भकल्याणक उत्सव देवों ने बड़े ठाठ से मनाया और जन्म होने पर जन्मकल्याणक मनाया। फिर दीक्षाकल्याणक होने के बाद आदिनाथ जी ने छः मास तक घोर तपस्या की। छः माह के बाद चर्या (आहार) विधि के लिए आदिनाथ भगवान ने अनेक ग्राम-नगर-शहर में विहार किया किन्तु जनता को आहार की विधि मालूम न होने के कारण भगवान को धान, कन्या, पैसा, सवारी आदि अनेक वस्तु भेंट की। भगवान के यह सब अंतराय का कारण जानकर पुनः वन में पहुँच छः माह का तपश्चरण योग धारण कर लिया।

अवधि पूर्ण होने के बाद पारणा करने के लिए चर्या मार्ग से ईर्यापथ शुद्ध करते हुए ग्राम नगर में भ्रमण करते करते कुरुजांगल नामक देश में पधारे। वहाँ हस्तिनापुर नामके नगर में कुरुवंश शिरोमणि महाराजा सोम राज्य करते थे। उनके श्रेयांस नाम का एक भाई था उसने सर्वार्थसिद्धि नामक स्थान से चयकर यहाँ जन्म लिया था।

एक दिन रात्रि के समय सोते हुए उसे रात्रि के आखिरी भाग में कुछ स्वप्न आये। उन स्वप्नों में सुमेरु पर्वत, कल्पवृक्ष, सिंह, वृषभ, चंद्र-सूर्य, समुद्र, आठ मंगल-द्रव्य, यह अपने राजमहल के समक्ष स्थित हैं ऐसा उस स्वप्न में देखा, तदनंतर प्रभातबेला में उठकर उक्त स्वप्न अपने ज्येष्ठ भ्राता से कहा-तब ज्येष्ठ भ्राता सोमप्रभ ने अपने विद्वान पुरोहित को बुलाकर स्वप्नों का फल पूछा। पुरोहित ने जवाब दिया हे राजन्! आपके घर श्री आदिनाथ भगवान पारणा के लिए पधारेंगे, इससे सबको आनंद हुआ।

इधर भगवान आहार हेतु ईर्या समितिपूर्वक भ्रमण करते हुए उस नगर में राजमहल के सामने पधारे, तब सिद्धार्थ नाम का कल्पवृक्ष ही मानो अपने सामने आया है-ऐसा सबको भास हुआ। राजा श्रेयांस को आदिनाथ भगवान का श्रीमुख देखते ही उसी क्षण अपने पूर्वभव में श्रीमती व वज्रजंघ की अवस्था में एक सरोवर के किनारे दो चारण मुनियों को आहार दिया था-उसका जातिस्मरण हो गया। अतः आहार दान की समस्त विधि जानकर श्री आदिनाथ भगवान को तीन प्रदक्षिणा देकर पड़गाहन किया वा भोजनगृह में ले गये।

'प्रथम दान तीर्थ कर्ता' ऐसा वह दाता श्रेयांस राजा और उनकी धर्मपत्नी सुमतीदेवी व ज्येष्ठ बंधु सोमप्रभ राजा अपनी पत्नी लक्ष्मीमती सहित आदि सबों ने मिलकर श्री आदिनाथ भगवान को सुवर्ण कलशों द्वारा तीन खंडी (बंगाली तोल) इक्षुरस नवधा भक्तिपूर्वक आहार में दिया। तीन खंडी में से एक खंडी इक्षुरस तो अंजूली में होकर निकल गया और दो खंडीरस पेट में गया।

इस प्रकार भगवान आदिनाथ की आहार चर्या निरंतराय सम्पन्न हुई। इस कारण उसी वक्त स्वर्ग के देवों ने अत्यंत हर्षित होकर पंचाश्चर्य (रत्नवृष्टि, पुष्पवृष्टि, गंधोदक वृष्टि, देवदुंदुभि, बाजों का बजना व जय जयकार शब्द का होना) वृष्टि की और सबों ने मिलकर अत्यंत प्रसन्नता मनाई।

आहार चर्या करके वापिस जाते हुए भगवान आदिनाथ ने सब दाताओं को 'अक्षयदानमस्तु' अर्थात् दान इसी प्रकार कायम रहे, इस आशय का आशीर्वाद दिया, यह आहार वैशाख सुदी तीज को सम्पन्न हुआ था।

जब आदिनाथ निरन्तराय आहार करके वापिस विहार कर गये, उसी समय से अक्षयतीज नाम का पुण्य दिवस प्रारंभ हुआ। (इसी को आखा तीज भी कहते हैं) यह दिन हिन्दु धर्म में भी बहुत पवित्र माना जाता है। इस रोज शादी विवाह प्रचुर मात्रा में होते हैं।

श्रेयांस राजा ने आदि तीर्थंकर को आहार देकर दान की उन्नति की, दान को प्रारंभ किया। इस प्रकार दान की उन्नति व महिमा समझकर भरतचक्रवर्ती, अकम्पन आदि राजपुत्र व सपरिवारसहित श्रेयांस व उनके सह राजाओं का आदर से साथ सत्कार किया। प्रसन्नचित्त हो अपने नगर को वापिस आये।

उक्त सर्व वृतांत (कथा) सुप्रभनाम के चारण मुनि के मुख से पृथ्वीदेवी ने एकाग्रचित्त से श्रवण किया। वह बहुत प्रसन्न हुई। उसने मुनि को नमस्कार किया तथा उक्त अक्षयतीज व्रत को ग्रहण करके सर्व जन परिजन सहित अपने नगर को वापिस आये। पृथ्वीदेवी ने (समयानुसार) उस व्रत को विधि अनुसार सम्पन्न किया। पश्चात् यथाशक्य उद्यापन किया। चारों प्रकार के दान चारों संघ को बांटे। मंदिरों में मूर्तियाँ विराजमान की। चमर, छत्र आदि बहुत से वस्त्राभूषण मंदिर जी को भेंट चढ़ाये।

उक्त व्रत के प्रभाव से उसने 32 पुत्र और 32 कन्याओं को जन्म दिया। साथ ही बहुत सा वैभव और धन कंचन आदि ऐश्वर्य से समृद्ध होकर बहुत काल तक अपने पति सहित राज्य का भोग किया और अनंत ऐश्वर्य को प्राप्त किया।

पश्चात् वह दम्पति वैराग्य प्रवर होकर जिनदीक्षा धारण करके 'तपश्चर्या' करने लगे और तपोबल से मोक्ष सुख को प्राप्त किया। अस्तु! हे भविकजनों! तुम भी इस प्रकार अक्षय तृतीया व्रत को विधिपूर्वक पालन कर यथाशक्ति उद्यापन कर अक्षय सुख प्राप्त करो। यह व्रत सब सुखों को देने वाला है व इससे क्रमशः मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।

इस व्रत की विधि इस प्रकार है-

यह व्रत वैशाख सुदी तीज से प्रारंभ होता है और वैशाख सुदी सप्तमी तक (5 दिन पर्यंत) किया जाता है। पाँचों दिन शुद्धतापूर्वक एकाशन करे या 2 उपवास और 3 एकाशन करें।

इसकी विधि यह है कि व्रत की अवधि प्रातः नैमित्तिक क्रिया से निवृत्त होकर मंदिर जी को जावें। मंदिर जी में जाकर शुद्ध भावों से भगवान की दर्शन स्तुति करें। पश्चात् भगवान को (आदिनाथ भगवान की प्रतिमा) सिंहासन पर विराजमान कर कलशाभिषेक करें। नित्य-नियम पूजा, भगवान आदि तीर्थंकर (आदिनाथ जी) की पूजा एवं पंचकल्याणक मण्डल जी मंडवाकर मण्डल की पूजा करें। तीनों काल (प्रातः मध्यान्ह, सायं) निम्नलिखित मंत्र का जाप्य (माला) करें व सामायिक करें।

मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आदिनाथ तीर्थंकराय गोमुख चक्रेश्वरी यक्ष यक्षी सहिताय नमः स्वाहा।
प्रातः सायं-णमोकार मंत्र का शुद्धोच्चारण करते हुए जाप्य करें।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

व्रत के समय में गृहादि समस्त क्रियाओं से दूर रहकर स्वाध्याय, भजन, कीर्तन आदि में समय यापन करें। रात्रि में जागरण करे। दिन भर जिनचैत्यालय में ही रहें। व्रत अवधि में ब्रह्मचर्य से रहे। हिंसादि पाँचों पापों का अणुव्रत रूप से त्याग करें। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायों को शमन करें।

पूजनादि के पश्चात् प्रतिदिन मुनीश्वरादि चार प्रकार के संघ को चारों प्रकार का दान देवें, आहार करावें, फिर स्वयं पारणा करें। प्रतिदिन अक्षय तीज व्रत की कथा सुनें व सुनावें।

(नोट-व्रत के समय स्त्री यदि रजस्वला हो जावे तो प्रतिदिन (एक) रस छोड़कर पारणा करें।)

इस प्रकार विधिपूर्वक व्रत को 5 वर्ष करें। व्रत पूर्ण होने पर यथाशक्ति उद्यापन करें। भगवान आदिनाथ की प्रतिमा मंदिरजी में स्थापित करें तथा चार संघ को चार प्रकार का दान देवें।

इस प्रकार शुद्धतापूर्वक विधिवत् व्रत करने से सर्व सुख की प्राप्ति होती है तथा साथ ही क्रम से अक्षय सुख अर्थात् मोक्ष मार्ग की प्राप्ति होती है।

(54) चौबीस तीर्थंकर गणधर व्रत

चौबीस तीर्थंकरों के चौदह सौ उनसठ गणधार हैं। अन्य ग्रंथों में चौदह सौ बावन माने हैं। इन चौबीसों तीर्थंकरों के एक-एक प्रमुख गणधारों के नाम प्रसिद्ध हैं। उनके ये 24 व्रत हैं। इन व्रतों के प्रभाव से अंतरंग ऋद्धियाँ एवं बहिरंग ऋद्धि-सुख-संपत्ति-सन्तति आदि को प्राप्त करते हैं एवं रोग, शोक, दरिद्रता को दूर करते हैं तथा परम्परा से गणधारदेव आदि की विभूति को प्राप्त कर नियम से मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

इस व्रत को तीर्थंकरों के केवलज्ञानकल्याणक के दिन करने से अति उत्तम है अथवा कभी भी किन्हीं भी तिथि में कर सकते हैं।

व्रतविधि– व्रत के दिन उपवास करना उत्तम है। अल्पाहार मध्यम है और एक बार शुद्ध भोजन लेकर एकाशन करना जघन्य है। प्रत्येक व्रत के दिन तीर्थंकर भगवान का अभिषेक करके गणधर अथवा गणधारवलययंत्र का अभिषेक करना चाहिए एवं तीर्थंकरों की पूजन करके गणधारदेव की पूजा करना चाहिए। इनके चौबीस मंत्र दिये हैं। क्रम से एक-एक व्रत में एक-एक मंत्र की माला करना चाहिए। यह व्रत आप सबको स्वस्थता प्रदान कर ऋद्धि-सिद्धि से भरपूर सर्वसुख प्रदान करे, यही मंगल कामना है।

24 मंत्र

समुच्चय मंत्र– **ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकर श्रीऋषभसेनादिप्रमुख-एकोनषष्ट्यधिकचतुर्दशशतगणधरदेवेभ्यो नमो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीऋषभसेनगणधरप्रमुख-चतुरशीतिगणधरदेवेभ्यो नमः।**
2. **ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य श्रीकेशरीसेनगणधरप्रमुख-नवतिगणधरदेवेभ्यो नमः।**
3. **ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य श्रीचारुदत्तगणधरप्रमुख-पंचोत्तरशतगणधरदेवेभ्यो नमः।**
4. **ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य श्रीवज्रचामरगणधरप्रमुख-त्र्युत्तरशतगणधरदेतेभ्यो नमः।**
5. **ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य श्रीवज्रगणधरप्रमुख-षोडशोत्तरशतगणधरदेवेभ्यो नमः।**
6. **ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य श्रीचमरगणधरप्रमुख-एकादशोत्तरशतगणधरदेवेभ्यो नमः।**
7. **ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य श्रीबलदत्तगणधरप्रमुख-पंचनवतिगणधरदेवेभ्यो नमः।**
8. **ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य श्रीवैदर्भगणधरप्रमुख-त्रिनवतिगणधरदेवेभ्यो नमः।**
9. **ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य नागमुनिगणधरप्रमुख-अष्टाशीतिगणधरदेवेभ्यो नमः।**
10. **ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य श्रीकुंथुगणधरप्रमुख-सप्ताशीतिगणधरदेवेभ्यो नमः।**
11. **ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य श्रीधर्मगणधरप्रमुख-सप्तसप्ततिगणधरदेवेभ्यो नमः।**

12. ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य श्रीमंदरगणधरप्रमुख-षट्षष्टिगणधरदेवेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य श्रीजयमुनिगणधरप्रमुख-पंचपंचाशत्गणधरदेवेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथस्य श्रीअरिष्टगणधरप्रमुख-पंचाशत्गणधरदेवेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य श्रीअरिष्टसेनगणधरप्रमुख-त्रिचत्वारिंशत्गणधरदेवेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथस्य श्रीचक्रायुधगणधरप्रमुख-षट्त्रिंशद्गणधरदेवेभ्यो नमः।
17. ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य श्रीस्वयंभूगणधरप्रमुख-पंचत्रिंशद्गणधरदेवेभ्यो नमः।
18. ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य श्रीकुंभगणधरप्रमुख-त्रिंशद्गणधरदेवेभ्यो नमः।
19. ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य श्रीविशाखगणधरप्रमुख-अष्टाविंशतिगणधरदेवेभ्यो नमः।
20. ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य श्रीमल्लिगणधरप्रमुख-अष्टादशगणधरदेवेभ्यो नमः।
21. ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य श्रीसुप्रभगणधरप्रमुख-सप्तदशगणधरदेवेभ्यो नमः।
22. ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य श्रीवरदत्तगणधरप्रमुख-एकादशगणधरदेवेभ्यो नमः।
23. ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य श्रीस्वयंभूगणधरप्रमुख-दशगणधरदेवेभ्यो नमः।
24. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः श्रीइन्द्रभूतिगणधरप्रमुख-एकादशगणधरदेवेभ्यो नमः।

अथवा 24 लघु मंत्र

समुच्चय मंत्र– **ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरप्रमुखश्रीऋषभसेनादिगौतमान्त्यगणधरदेवेभ्यो नमो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीऋषभसेनगणधरदेवाय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य श्रीकेशरीसेनगणधरदेवाय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य श्रीचारुदत्तगणधरदेवाय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य श्रीवज्रचमरगणधरदेवाय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य श्रीवज्रगणधरदेवाय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य श्रीचमरगणधरदेवाय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य श्रीबलदत्तगणधरदेवाय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभनाथस्य श्रीवैदर्भगणधरदेवाय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य श्रीनागमुनिगणधरदेवाय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य श्रीकुंथुगणधरदेवाय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य श्रीधर्मगणधरदेवाय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य श्रीमंदरगणधरदेवाय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य श्रीजयमुनिगणधरदेवाय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथस्य श्रीअरिष्टगणधरदेवाय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य श्रीअरिष्टसेनगणधरदेवाय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथस्य श्रीचक्रायुधगणधरदेवाय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य श्रीस्वयंभूगणधरदेवाय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य श्री कुंभगणधरदेवाय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य श्रीविशाखगणधरदेवाय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य श्रीमल्लिगणधरदेवाय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य श्रीसुप्रभगणधरदेवाय नमः।

22. ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य श्रीवरदत्तगणधरदेवाय नमः।

23. ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य श्रीस्वयंभूगणधरदेवाय नमः।

24. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः श्रीइन्द्रभूतिगौतमगणधरदेवाय नमः।

(55) श्री संपत्-शुक्रवार व्रत विधि एवं कथा (पद्मावती व्रत)

मगध देश में राजगृह नगर के पास विपुलाचल पर्वत पर श्री महावीर स्वामी का समवसरण आने का समाचार महाराज श्रेणिक ने वनपाल के मुख से सुना और हर्षित होकर महारानी चेलना के साथ सपरिवार वहाँ पहुँचे। बड़ी भक्ति-भाव से जयजयकार करके तीन प्रदक्षिणाएँ देकर श्री वीर प्रभु को त्रिबार नमोऽस्तु किया। बाद में बारह सभा में मनुष्यों के कोठे में बैठ गये। भगवान की दिव्य-ध्वनि श्री गौतम गणधर की वाणी द्वारा सुनकर राजा-रानी ने भक्तिभाव से आनन्दित होकर विनती की कि हे भगवन्! संसार में दम्पत्ति को अखण्ड सौभाग्य प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए? इस विषय में कोई एक कथा हमको सुनाइये। तब संघ के भट्टारक श्री विजयाभिनन्दन जी के मुख से वाणी निकली, वह कथा इस प्रकार है–

प्राचीन काल में सौराष्ट्र देश में पारिभद्रपुरी नाम का एक नगर था। वहाँ का विकारमाप्ता नाम का तेजस्वी, महापराक्रमी, न्यायी और धर्म व प्रजावत्सल राजा था। उसके बहुत रानियाँ थीं। उनमें भूमि पूजा देवी पट्टरानी पतिव्रता, चतुर व कार्यकुशल थी और वह राजा को मंत्री की तरह सहायता देती थी। दोनों ने अपने राज्य में महती धर्म प्रभावना की। उनकी नगरी में श्रुणुयात नाम का एक दरिद्र व्यापारी था। उसकी पत्नी का नाम रुक्मावती था। उसकी जैनधर्म पर बहुत श्रद्धा भक्ति थी। पाप के डर से उससे कोई बुरे कार्य नहीं होते थे। घर में दरिद्रता के कारण वह दुःखी थी, इसलिए उसे किसी के पास जाकर बैठना बुरा लगता था और अपने घर में जो था उसी में संतुष्ट थी। अपनी बुरी स्थिति के कारण वह किसी से नहीं बोलती थी। अधिक संतान होने के कारण उनकी देख-भाल में उसका सारा दिन बीत जाता था। उनकी इच्छा पूर्ति व पालन-पोषण में असमर्थ थी। इस दुःख से छुटकारा पाने की रात दिन उसे चिन्ता रहती थी। इससे उसका शरीर दुर्बल हो गया था। क्या करूँ, कहाँ जाऊँ उसे कुछ समझ में नहीं आता था। एक दिन पड़ोसी स्त्री ने उसे आकर समझाया– देखो! आज भाग्य का दिन निकला है। गाँव के बाहर बगीचे में भट्टारक श्री विजयाभिनन्दन महाराज पधारे हैं, उनके दर्शनों के लिए गाँव के स्त्री व पुरुषों की भीड़ लग रही है। वे बहुत ज्ञानी हैं तथा भक्तों को हित का उपदेश देते हैं। सो अपन भी उनके दर्शनों का लाभ लेवें और इहलोक-परलोक के हित को साधकर सद्गति प्राप्त कर लें। इसलिए मैं तुझे बुलाने आई हूँ। तेरी इच्छा हो तो मेरे साथ चल। यह सुनकर रुक्मावती को अत्यन्त हर्ष हुआ। चिन्तित मन में शांति हुई। घरेलू दुःखों से छूटने का मार्ग मिले और शांति-सुख की प्राप्ति हो, इस भावना से वह उस स्त्री के साथ जाने को निकली। वहाँ पहुँच कर देखा कि क्या चमत्कार है! दर्शनों की प्रतीक्षा में अपार जनसमुदाय श्री विजयाभिनन्दन महाराज के सामने जयजयकार कर रहा है। विमान से पुष्प वृष्टि हो रही है। यह दृश्य देखकर रुक्मावती का मन प्रफुल्लित हो गया। उसने भट्टारक जी को विनयपूर्वक सादर नमस्कार किया और श्राविकाओं की सभा में जाकर बैठी। भट्टारक जी ने उपदेश प्रारंभ किया। उसे सुनकर वह इतनी गद्‌गद व प्रसन्न हुई कि अपने बाल बच्चों, घरबार व संसार को भूल गई। भट्टारक जी ने अपनी अमृतवाणी से सात तत्त्वों का निरूपण किया। जीव तत्त्व का महत्त्व समझाया, अनादि संसार के सुख दुःख का वर्णन किया और जीवों के हित का मार्ग बतलाया। उन्होंने अखण्ड सौभाग्य बढ़ाने वाली व अत्यन्त सुख देने वाली संपत् शुक्रवार व्रत की क्रिया बतलाई। वह क्रिया रुक्मावती ने ध्यानपूर्वक सुनी। वह क्रिया इस प्रकार है–

संपत् शुक्रवार व्रत विधि—श्रावण महीने में प्रत्येक शुक्रवार को उपवास अथवा एकासना करें, शक्ति अनुसार पूजा सामग्री साथ लेकर श्री जिनमंदिर में जाकर दर्शन स्तुति, स्तोत्रादि द्वारा भगवान की पूजा भक्ति करें और धरणेन्द्र- पद्मावती सहित श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान का पंचामृत अभिषेक पूजा करके श्री पद्मावती देवी की मूर्ति को दूसरे एक ऊँचे आसन पर विराजमान करें। नाना प्रकार के वस्त्रालंकारों से उनका शृँगार करें। दीप, धूप, फूलों के हार, केला के खम्भ इत्यादि साधनों से मंडप सजावे। हल्दी, कुमकुम, भीगे हुए चने आदि लेकर पंचोपचार पूजा करें। बाद में श्री पद्मावती महादेवी को मणिमंगल सूत्र आदि आभूषण पहनावे। बाद में आटे के दो दीपक सहित जयमाला बोलकर तीन प्रदक्षिणाएं देकर पूर्णार्घ्य चढ़ावें। फिर महादेवी की मंगल आरती करके शांति भक्तिपूर्वक विसर्जन करें। बाद में ध्यानपूर्वक शुक्रवार की व्रत कथा सुनें। श्री पद्मावती देवी के सहस्रनाम के प्रत्येक बीजाक्षर मंत्रों को बोलते हुए एक-एक चुटकी कुमकुम या लवंग पुष्प चढ़ावें, प्रत्येक शतक में अर्घ्य चढ़ावें, गंधोदक सिंचन करें और ''**ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं ह्र सौं श्री पद्मावतीदेव्यै नमः मम सर्व-विघ्नोपशांतिं कुरु-कुरु स्वाहाः**'' अथवा-**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पद्मावतीदेव्यै नमः मम ईप्सितं कुरु कुरु स्वाहा।** इस मंत्र का लाल कनेर के फूलों से जाप्य करें। यदि कनेर के फूल उपलब्ध न हों तो गुलाब आदि के पुष्पों से जाप करें। आखिरी शुक्रवार को ऊपर कही हुई सारी क्रिया परिपूर्ण करके श्री पद्मावती माता को साड़ी पहनावें, षोडशालंकार से शृँगार करावें और नीचे लिखी सामग्री लेकर गोद भरें-

पाँच हरी चूड़ियाँ, पाँच हल्दी की गाँठ, पाँच खोपरा, पाँच चोपड़े, पाँच नींबू, पाँच केले, पाँच छुहारे, पाँच मखाना, पताशा आदि इस प्रमाण लेकर उत्तम नारियल तथा चोली का वस्त्र लेकर गहूँ या चावल से पाँच सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा गोद भरावें। गोद भरते समय अग्रिम श्लोक पढ़ें—

जय स्फटिक रूपद भामिनी, श्री पद्मावती अघहारिणी।
धरणेन्द्रराज कुलयक्षिणी, दीर्घ आयुरारोग्य रक्षिणी।।

उसके बाद अपने कुटुम्बीजनों को भीगे चने, हल्दी, कुमकुम, मखाना, पताशा, गुड़, खोपरा, पान, सुपारी इत्यादि गोद का प्रसाद बोलकर बांटे। एकत्रित सौभाग्यवती स्त्रियों को हल्दी कुमकुम लगावें। बाद में जयजयकार करके मंगल गीत गाजे-बाजे के साथ घर वापस आवें। इस प्रकार पाँच वर्ष पर्यन्त यह व्रत विधिपूर्ण होने पर बाद में उद्यापन करें।

उद्यापन विधि इस प्रकार है—पाँच कोणों पर कुम्भों की स्थापना करें, पाँच कलश स्थापित करें, पंचवर्णी रेशमी सूत बांधकर पाँचों कोणे तैयार करें। चारों दिशाओं में केले के खम्भ खड़े करें। खम्भों के पास दीपकों की रोशनी तथा हांडी, गोला, झाड़ आदि से सजावट करें, आटे के दीपक से आरती करें, चंवर ढुरावें, कुमकुम मिश्रित अक्षत एवं फूलों की वृष्टि करें। श्री पद्मावती देवी का विधान करें। पाँच पकवान के पाँच नैवेद्य अर्पण करें। पद्मावती देवी के समक्ष फूल और फूलों पर कुमकुम रख कर और मोती रखकर चढ़ावें और सौभाग्यवती स्त्रियों को देवें। पाँच-पाँच मंगल वस्तुएं श्री जिनमंदिर में चढ़ावें। आर्यिका को आहारदान तथा वस्त्रदान देवें। पाँच दम्पत्ति को इच्छित भोजन करावें। यदि इस प्रकार से उद्यापन करने की शक्ति न हो तो दुगुणा व्रत करें। इस व्रत का फल कहते हैं-

माँ, बाप, बहिन, भाई, ननद, देवर, जेठानी, सास, ससुर सबके आशीर्वाद से जीकर पति परमेश्वर का आखिर तक अच्छा सहवास मिले। सुसंतान सहित सुखी संसार बने, आनन्द से समय बीते, धन संतान की वृद्धि, लक्ष्मी की प्राप्ति, आरोग्यता, दीर्घायु एवं भूतपिशाचादि का नाश इत्यादि सुखों की प्राप्ति होकर चारों तरफ कीर्ति फैलती है। इस व्रत की महिमा अपरम्पार है। श्री जिनधर्म पर श्रद्धा भक्ति रखें। जीवन पर्यन्त श्री पद्मावती माता की यथायोग्य सेवा नियमित रूप से करते रहने से अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

स्त्रियों के लिए कुमारी अवस्था में आत्म कुमकुम (हल्दी) और यौवनावस्था में संपत् कुमकुम (कुमकुम) निश्चय से दुर्गति निवारक हैं। परन्तु इस जन्म में भी—

''कज्जलं कुमकुमं काचं कबरी कर्णशेखरम्।
एवं पंच प्रकीर्त्यानि ककाराणि पुरन्ध्रीणाम्।।''

अर्थात् काजल, कुमकुम, काँच, केश व कर्णफूल ये पति-पुत्रवती (सौभाग्यवती) स्त्री के पाँच ककार कहे गये हैं। सौभाग्यवती कहलाने वाली महाभाग्यवती को ऊपर कहे पाँच ककारों को जीवन के आखिर तक प्राप्ति होकर अखण्ड सौभाग्यवती कहलाकर बड़े गौरव से उसका आयुपर्यन्त यश फैलता है। आत्म कुमकुम और संपत् कुमकुम इन व्रतों के महत्व का वर्णन श्री धरणेन्द्र देवराज की चंचल जिव्हा द्वारा भी किया जाना अति कठिन है, यह महाकल्याणकारी है। बरसाती तुच्छ नदी प्रवाह के समान क्षणभंगुर जीवन को निस्सार समझकर संसार बढ़ाना मूर्खपने है। इस भवसागर से पार होने के लिए विचारशील को यह व्रत करणीयभूत है इसलिए महिलागण इस व्रत को पालन करने में दृढ़ बनें, अबला की तरह अति कोमल न होवें। स्त्री जन्म को इसी भव में सार्थक कर लेवें, क्योंकि अगला जन्म उच्च कुल में ही होगा, ऐसा निश्चित नहीं कहा जा सकता। इसीलिए नर से नारायण बनने का यही उत्तम साधन है इसलिए जागरूक होकर उत्साह व प्रसन्नता से व्रत धारण करें, उससे दुःख में सुख की प्राप्ति होगी। इस प्रकार रुक्मावती ने उन भट्टारक जी के मुख से व्रत का माहात्म्य, विधि और फल सुनकर अपनी दरिद्रता की बिना परवाह किये महाराज के पास व्रत लेने का मन में निश्चय किया। उसने भट्टारक जी को नमोऽस्तु करके अपने भाव व्यक्त किये। उन्होंने पंचपरमेष्ठी की साक्षी से उसको व्रत दिया। रुक्मावती महाराज से व्रत लेकर घर गई और शक्य सामग्री से व्रत शुरू किया।

उसी गाँव में रुक्मावती का गुरुदेव नाम का भाई रहता था। वह बड़ा धनाढ्य था। उसने अपने पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार के निमित्त गाँव के सारे नागरिकों को एक सप्ताह पर्यन्त इच्छित भोजन कराकर संतुष्ट करने के भाव से घर-घर निमंत्रण दिया। मगर अपनी बहिन को निमंत्रण मात्र भी नहीं भेजा, क्योंकि वह दरिद्रा थी, अगर वह आयेगी तो देखकर लोक में निंदा होगी, यह सोचकर उसे याद तक नहीं किया। गाँव के छोटे-बड़े सब लोग खा-पीकर ताव देकर डकार लेते हुए उसी के दरवाजे के सामने से जाने लगे तब उसको एक प्रकार का आश्चर्य हुआ और सोचने लगी कि मैं और मेरा भाई एक ही हाड़, माँस, रक्त, पिंड के होते हुए देखो उसने सब लोगों को संतुष्ट किया है, मैंने उसका ऐसा क्या बिगाड़ किया है? फिर सोचा शायद कामकाज की धांधली में भूल हो गई होगी। इसलिए बेकार उस पर रोष करके मुझे मेरे सोने जैसे भाई को दोष देना ठीक नहीं। निमंत्रण नहीं भेजा तो क्या हुआ? भाई ही का तो घर है, जाने में क्या हरज है। ऐसा विचार करके वह बाल-बच्चों सहित जीमने गई। बच्चों को सामने लेकर स्त्रियों की पंगत में बैठ गई। थोड़ी देर बाद उसका भाई कौन आया, कौन रहा, यह जानने के लिए वहाँ घूम रहा था, उसका ध्यान अपनी बहिन की तरफ गया तो पास आया और गुस्से से बोला, ''बहिन तू आज यहाँ कैसे आई? तेरी गरीबी के कारण ही तो मैंने तुझे जानबूझकर नहीं बुलाया, तेरे पास न अच्छे कपड़े हैं न गहने। तुझे ऐसी दरिद्र देखकर लोग मुझ पर हसेंगे। इसलिए आज तो आई सो आई मगर कल मत आना, समझी! बहिन बेचारी लज्जित होकर नीची गर्दन कर खा-पीकर बच्चों को लेकर घर गई। दूसरे दिन भी बच्चे कहने लगे – माँ! अपन आज भी मामा के यहाँ खाने को जायेंगे, यह सुनकर माँ के पेट में खलबची मची। उसने बच्चों को बहुत डांटा मगर वे माने नहीं, उनके हठ के कारण फिर मन में विचार किया कि कैसा भी हो अपना भाई ही तो है, बोला तो क्या हुआ, अपनी गरीबी है तो सुनना ही पड़ेगा, मगर आज का निर्वाह तो होगा। ऐसा सोचकर दूसरे दिन भी बच्चों को लेकर भाई के घर गई और खाने को बैठी। कल की तरह आज भी भाई की सवारी पंगत में आने पर उसने उसे देखा और बोला-''बहिन तू कैसी भिखारिन है? कल तुझे मना किया था तो भी आज फिर सुअरी जैसी बच्चों को लेकर आ गई? तुझे शर्म कैसे नहीं आई? आज आई तो आई अगर कल फिर आई तो हाथ पकड़कर निकाल दूँगा।'' उस बेचारी ने चुपचाप यह सुन लिया और खाने के बाद उठकर अपने घर चली गई। तीसरे दिन भी इसी प्रकार हुआ तब भाई को खूब गुस्सा आया और उसने उसको धक्का देकर बाहर निकाल दिया। तब उसे बहुत दुःख हुआ,

घर जाकर बहुत फूट-फूटकर रोई। उसके मन में विचार आया कि कौन जन्म में कौन-सा घोर पाप किया जिससे इस जन्म में मुझे घोर दरिद्रता की मार पड़ रही है। सच है अनन्त जन्मों के पाप की राशि इस दरिद्रता का मुख्य कारण है। इसकी अपेक्षा तो मुझे नरक के दुःखों से भुन जाना ही अच्छा होता, अब यह यम-यातना सही नहीं जाती, इससे तो मरण अच्छा। क्योंकि वह तो एक बार ही भुगतना पड़ता है परन्तु दरिद्रता का दुःख जीवन पर्यन्त भोगना पड़ेगा। धिक्कार है मेरे इस जीने को! हे देवी पद्मावती! हे अम्बिका माता! तू ही मेरी सहायता कर माँ! मुझे जगत में किसी का आधार नहीं, तू तो आसरा दे माता! इस प्रकार करुण क्रन्दन करके वह खूब रोई, रोते-रोते उसे नींद आ गई। नींद में उसे स्वप्न आया। उसके रोने की ध्वनि पद्मावती देवी के कानों पर जा टकराई, महादेवी तत्काल मुकुट, कुण्डल, हार जवाहरात आदि पहनकर एक हाथ में धर्मचक्र लिए जगमगाती पोशाक पहने उसके पास आकर खड़ी हो गई और कहने लगी कि ''हे महाभागे! तू दुःखी होना नहीं, बिल्कुल घबराना नहीं, तू जो आचरण कर रही है उस संपत् शुक्रवार व्रत को मैं अच्छी तरह जानती हूँ। आज तुझे दरिद्रता संबंधी महान दुःख हुआ है तथापि तेरे कष्ट अत्यन्त तेज से युक्त हैं, कारण–

कष्टाधीन ही दैवचि, देवाधीन सुकृतफल तदाधीव।
सुज्ञावाक्याचरिता भुक्ति मुक्ति मिले तदाधीन।।

कष्टाधीन दैवयोग है। दैवाधीन ही पुण्य का फल है। इसलिए महान पुरुषों के द्वारा कथित मार्ग पर चलना चाहिए उसके आधीन संसार के भोग व मुक्ति है।

''तू ध्यान दे और एक निष्ठापन से श्री जिन परमात्मा का चिन्तन कर उससे तेरा कल्याण होगा।'' ऐसा कहकर वह देवी अदृश्य हो गई। रुक्मावती ने नींद से जागकर देखा तो वहाँ कोई नहीं दिखा। यह क्या चमत्कार है? कह कर वह उठ बैठी, मगर उसका मस्तक शून्य हो गया, उसे कुछ भी नहीं सूझा तो फिर वह श्री जिनमंदिर में जाकर शान्त चित्त से श्री पद्मावती महादेवी का मुख कमल देखने लगी। तब उसे वह मूर्ति हँसती हुई दिखाई दी। उस वक्त रुक्मावती दोनों हाथ जोड़कर विनती करने लगी कि ''हे देवी! महामाते! अम्बिका! पद्मावती माता! मैं अनाथ हूँ, मैंने तुम्हारी शरण को पाया है, मुझ गरीब की रक्षा करो, मुझे सन्मार्ग पर लगावो। तुम्हारी लड़की घोर संकट में है। इस जगत में मेरा कोई रक्षक नहीं रहा। भाई-भाई कहती हुई अब कहाँ जाऊँ, मैंने तुम्हें ही अपने मन में धारण किया है।''

इस प्रकार कहते-कहते आँखों से अश्रुओं की धारा बह निकली और बहुत देर तक प्रार्थना व भक्ति करने के बाद उसे भान हुआ कि घर में बच्चे भूख से व्याकुल होंगे, सोचकर ध्यान से उठी और घर को चली। घर आकर क्या देखती है कि उसे अपने बच्चे कामदेव के अवतार के समान दिख रहे हैं। घर में धान-धान्य की भरमार होने लग गई है। हर काम में यशवृद्धि हो रही है। जगह-जगह वैभव फैलता जा रहा है और सामने नवीन हवेली बनकर तैयार है। घर में लक्ष्मी की बाढ़ सी आई हुई है कि शायद श्रावण मास में बहने वाली नदी का प्रवाह भी उससे कम ही होगा। यहाँ-तहाँ आनन्द ही आनन्द है। सच देखा जाये तो जहाँ उसे दो वक्त खाने की भी मारामार थी वहाँ अब नये-नये पकवान की थालियाँ भरी दिखने लगी हैं। अनेक प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त हैं। सब तरह से घर भरपूर है, उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई है। यह कीर्ति सुनकर उसका भाई गुरुदेव आश्चर्य चकित हो गया। अपनी बहिन का आदर सत्कार करना चाहिए ऐसा विचार कर वह स्वयं अपनी बहिन के घर आया और बहन से बोला-''बड़ी बहन! तुम कल मेरे घर खाने को आना। ना नहीं करना, तुम आओगी तब ही मैं खाना खाऊँगा, नहीं तो मैं भी खाना खाऊँगा नहीं, समझीं।'' बहिन ने सोचा, चलो अपना भाई बड़े सम्मान से बुलाता है, अब हम श्रीमंत हुए तो एक साथ गर्व नहीं करना चाहिए। इसका इस समय अपमान करना ठीक नहीं। सिर्फ इसको अपने किए हुए का पश्चाताप होवे और सन्मार्ग प्रवर्तक होकर अहंकार छोड़े, ऐसा विचार कर वह अच्छे-अच्छे गहने तथा बढ़िया ओढ़नी पहन उत्तम शृंगार करके सम्मान से भाई के घर गई। भाई बड़ी आस्था से राह देख रहा था, उसके आने के साथ उसे पाँव धोने को गर्म जल दिया, पाँव पोंछने को रुमाल दिया। थाली

परोसने पर दोनों बहन-भाई बड़े प्रेम से पास-पास खाने को बैठे। बैठे हुए पाटे पर उसने बदन पर से ओढ़नी उतारकर रख दी, भाई ने समझा गर्मी लगती होगी बाद में उसने शरीर पर से गहने निकालकर रखे, भाई ने सोचा अपनी कोमल बहिन को बोझा लगता होगा सो खाना खाने के वक्त तक के लिए निकाला है। परन्तु उसकी बहिन ने पहला चावल का ग्रास उठाया और ओढ़नी पर रखा। जलेबी उठाई और मोती के कंगन पर रखी। पूरण पोली उठाई और हार पर रखी, भाजी उठाई और कंठी पर रखी। लाड्डू उठाया और भुजबंध पर रखा। यह देखकर भाई ने पूछा– बड़ी बहन! तुम यह क्या कर रही हो? तो बहिन ने शान्त मुद्रा से कहा मैं जो करती हूँ वह ठीक है, जिनको तुमने खाने को बुलाया है उनको मैं खाना दे रही हूँ। उसकी कुछ समझ में नहीं आया, फिर उसने विनती की कि बहिन अब तो तुम खाना खावो। तब बहिन ने कहा कि हे भाई साहब! आज खाना मेरा नहीं है, इस लक्ष्मी बहन का है। मेरा खाना मैं पहले ही खा चुकी हूँ। ऐसा सुनते ही भाई के मन में पश्चाताप हुआ। उसने बहन के पाँव पकड़े और बीती हुई गलती की क्षमा मांगी। बहिन भी उस समय बहुत दुःखी हुई और दोनों आपस में गले मिले और बाद में दोनों आनंद से खाने को बैठे, मन में जो शल्य था उसे निकाल दिया। जिनकी कृपा के प्रसाद से अपार सम्पत्ति प्राप्त हुई उन पद्मावती माताजी की दोनों कुल के छोटे बड़े सभी कुटुम्बीजन सेवा करने लगे और अपनी अगणित सम्पत्ति का उपयोग अनेक व्रत उद्यापन, चतुर्विध संघ को दान, जिनमंदिर जीर्णोद्धार, जिनवाणी प्रचार, सिद्धक्षेत्र यात्रा आदि धर्म कार्यों में करने लगे। सहस्रनाम मंत्र का क्रम से कुमकुम अर्चन करने लगे। इन सब परिणामों को देखकर वहाँ के राजा ने भी भक्ति में दृढ़ होकर जिनधर्म की खूब ठाठबाट से प्रभावना की। बाद में थोड़े ही समय में सर्व कुटुम्बीजनों ने राजा सहित जिन दीक्षा धारण कर घोर तप किया और वे चतुर्गति का नाशकर अन्त में मोक्ष गये।

(56) कवलचान्द्रायण व्रत विधि

योऽमावास्योपवासी प्रतिपदि कवलाहारमात्रः पुरस्तात्।
तद्वृद्ध्या पौर्णमासीमुपवनयुतो ह्रासयन्ग्रासमग्रे।।
सामावास्योपवासः स भजति तपसश्चंद्रगत्यानुपूर्व्या।
चार्व्या चांद्रायणस्य प्रविततयशसः कर्तृणः कर्तृभावं।।8।।

(जिनसेनाचार्य विरचित हरिवंश पु. सर्ग 34)

अर्थ–इस कवल चांद्रायण व्रत की विधि को जिनसेन स्वामी ने हरिवंश पुराण में इस प्रकार बताई है कि– अमावस्या को उपवास करके शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को एक ग्रास, द्वितीया को दो ग्रास क्रमशः बढ़ते हुए चतुर्दशी को 14 ग्रास व पूर्णमासी को उपवास करके कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को 14 ग्रास दूज को 13 ऐसे चतुर्दशी को 1 ग्रास लेवें व अमावस्या को उपवास करके प्रतिपदा को पारणा करें इस प्रकार चंद्र की कला के समान ग्रास की वृद्धि व हानिपूर्वक इस व्रत को करने वाले का चंद्रमा के समान यश वृद्धिंगत होता है।

''व्रततिथि निर्णय में व किशनसिंहकृत क्रियाकोश में इस व्रत की विधि में कुछ अंतर है अर्थात् –अमावस्या को उपवास करके एकम से एक ग्रास से बढ़ते हुये पूर्णमासी को 15 ग्रास लेवे पुनः एकम को 14 ऐसे घटते हुए चतुर्दशी को 1 ग्रास व अमावस्या को पारणा करें, व्रतों के दिन श्री चंद्रप्रभ भगवान का पंचामृताभिषेक करके नित्य पूजन, चंद्रप्रभ पूजन एवं जाप्य आदि करें। ऐसे ही दीप चान्द्रायण, धूप चान्द्रायण, फल व नैवेद्य चान्द्रायण भी होते हैं। अर्थात् 1-1 दीप, धूप, फल व नैवेद्य के द्वारा वृद्धि करते हुए पूजन करें। जैसे–प्रतिपदा को 1 दीपक से दूज को दो दीपक से पूजन करें, इसी तरह वृद्धि व नंतर क्रमशः हानि करें। इस व्रत में जाप्य चन्द्रप्रभु भगवान की करें।

व्रत पूर्ण करके उद्यापन करें–इस कवल चांद्रायण का मंडल मांडकर सकलीकरण आदिपूर्वक विधिवत् अभिषेक करके मंडल पर जिनबिंब विराजमान करके उद्यापन पूजन करें, पूर्णार्घ्य के नंतर संकल्प, पुण्याहवाचन, शांति और विसर्जन करें व मंदिर में चंद्रोपक, शास्त्र, छत्र, चामर आदि उपकरण दान देवें और 30 श्रावकों को भोजन करावें तथा 30 श्रावकों के घर फल, मिष्ठान्न आदि बांटें और भी अपनी शक्ति के अनुसार रथयात्रा, पालकी, जलयात्रा आदि उत्सवों के द्वारा धर्मप्रभावना करें, चतुर्विध संघ का यथोचित पूजन दान आदि के द्वारा सत्कार करें।

यही उद्यापन की पूजन नित्य प्रति भी करते हैं, 30 अर्घ्यों में एकम के दिन 1 अर्घ, दूज के दो ऐसे एक-एक बढ़ाते हुये 30 दिन तक 30 अर्घ्य पूर्ण होते हैं।

(57) चारित्रमाला व्रत

(शरदपूर्णिमा व्रत)

(जैनेन्द्र व्रत कथा संग्रह मराठी पुस्तक के आधार से)

आश्विन शुक्ला पूर्णिमा– शरत् पूर्णिमा को उपवास करके यह व्रत किया जाता है। इस व्रत में पंचपरमेष्ठी की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करें। पुनः अष्टदल कमल बनाकर उसके चारों तरफ चौकोन मंडल बनावें। आठ दिशा में आठ मंगल कुंभ स्थापित करके मध्य में एक बड़ा मंगल कुंभ स्थापित करें। ये सभी कुंभ– कलश पंचवर्णी सूत्र से वेष्टित होवें। मध्य में सिंहासन पर पंचपरमेष्ठी की प्रतिमा विराजमान करके पंचपरमेष्ठी विधान करना चाहिए।

इस व्रत में चार बार पंचामृत अभिषेक करने का विधान है। प्रातः, मध्यान्ह, सायं और अर्द्धरात्रि में ऐसे चार महाभिषेक करना है।

व्रत मंत्र– **ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा।**

इस मंत्र का 108 बार सुगंधित पुष्पों से जाप्य करके पुनः णमोकार मंत्र की एक माला जपें।

इस दिवस ब्रह्मचर्य व्रत पालन कर रात्रि जागरण आदि करके धर्माराधना करें। यह व्रत 27 वर्ष करना उत्कृष्ट है, 16 वर्ष मध्यम है और कम से कम सात वर्ष करना जघन्य है। यदि उपवास की शक्ति नहीं है तो एक बार शुद्ध भोजन करके भी व्रत कर सकते हैं।

व्रत की दूसरी विधि इस प्रकार है– शरत् पूर्णिमा के दिन व्रत करके चन्द्रप्रभ भगवान की पूजा करके रात्रि में श्री चंद्रप्रभ प्रतिमा का दूध से महाभिषेक करना चाहिए। उसका मंत्र निम्न प्रकार है–

ॐ ह्रीं अर्हं विजययक्ष-ज्वालामालिनीयक्षीसहिताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय नमः।

इस व्रत के प्रभाव से पूर्ण चन्द्रमा के समान उज्ज्वल कीर्ति फैलती है। चारित्र दिन-प्रतिदिन उज्ज्वल होता जाता है। इसके प्रभाव से समस्त लौकिक सुख प्राप्त कर परम्परा से मोक्ष सुख प्राप्त होता है। संसार में रहते हुए पुत्र, पौत्र, सुख, संतति और धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती रहती है। अतएव यह व्रत चारित्र की पूर्ति करके नियम से परमात्मपद को प्राप्त कराने वाला है।

विशेष– इनमें से एक व्रत भी कर सकते हैं अथवा दोनों व्रत करके भी पुण्योपार्जन कर सकते हैं।

(58) नित्योत्सव व्रत (अमृतसिद्धिव्रत)

(जैनेन्द्र व्रत कथा संग्रह मराठी पुस्तक के आधार से)

चैत्र मास आदि बारह मास में से किसी भी महीने में जिस दिन 'अमृतसिद्धि योग' हो उस दिन यह व्रत करना है। ऐसे पाँच 'अमृत' सिद्धियोग के दिन पाँच व्रत करना है। इस व्रत में 'अमृतसिद्धियोग' के दिन उपवास करके जिनमंदिर में भगवान शांतिनाथ का पंचामृत अभिषेक करके शांतिनाथ पूजा करके 24 घंटे का अखण्ड दीपक जलावें।

मंत्र—**ॐ ह्रीं अर्हं गरुडयक्ष-महामानसीयक्षी सहिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय नमः।**

(सुगंधित पुष्पों से 108 बार मंत्र जपें)

पुनः महामंत्र की माला फेरें व भगवान शांतिनाथ का जीवन चरित्र पढ़ें। यदि उपवास की शक्ति नहीं हो तो एक बार भोजन करें, उसमें मात्र पाँच वस्तु ही लेवें। जैसे एक धान्य-गेहूँ या चावल आदि, एक रस, दूध या नमक आदि, एक फल, एक सब्जी या दो सब्जी।

यह व्रत 'अमृतसिद्धियोग' के दिन ही किया जाता है। यह 'अमृतसिद्धियोग' पंचांग से या विद्वान से समझना चाहिए।

उद्यापन में 'शांतिनाथ विधान' करें। शुक्लपक्ष सोलह दिन का जब हो तो विधिवत् 16 दिन का शांति विधान का अनुष्ठान करके जिनवाणी पूजा, गुरुपूजा आदि करके यथाशक्ति शास्त्रदान आदि देवें। 16-16 उपकरण आदि देवें तथा भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर और निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर की वंदना करें। इस व्रत का फल लौकिक अभ्युदय के साथ-साथ परम्परा से शाश्वत शांति अर्थात् परमात्मपद की प्राप्ति होती है।

विशेष—जैनी जियालाल पंचांग में ''अमृतसिद्धियोग'' की तिथियाँ प्रकाशित हैं उनसे देखें अथवा किन्हीं ज्योतिषाचार्य से जानकारी कर लेवें।

(59) नित्य सौभाग्य व्रत (सप्तज्योति कुंकुम व्रत)

(जैनेन्द्र व्रत कथा संग्रह मराठी पुस्तक के आधार से)

आषाढ़ शुक्ला अष्टमी को उपवास करके मंदिर में जाकर चौबीस तीर्थंकर प्रतिमा का महाभिषेक-पूजा आदि करके, शास्त्र व गुरु की भी पूजा करें पुनः यक्ष-यक्षी आदि की पूजा करें। पुनः चौबीस तीर्थंकर का जाप्य करें-

1. मंत्र—**ॐ ह्रीं यक्ष-यक्षीसहितेभ्यः श्री वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।** (108 पुष्पों से जाप करें)
2. मंत्र—**ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः। (108 पुष्पों से जाप्य करें)**

पुनः महा अर्घ्य थाल में लेकर सात बत्तियों का दीपक उसमें रखकर वेदी की तीन प्रदक्षिणा देवें। पुनः सात दीपक लेकर क्रम से निम्नलिखित मंत्र बोलते हुए एक-एक दीपक का अवतरण करें।

1. आत्मज्योतिः नित्यं अस्माकं भवतु स्वाहा।

2. आचारज्योतिः नित्यं अस्माकं भवतु स्वाहा।

3. पुरुषज्योतिः नित्यं अस्माकं भवतु स्वाहा।

4. पुत्रज्योतिः नित्यं अस्माकं भवतु स्वाहा।

5. पुण्यज्योतिः नित्यं अस्माकं भवतु स्वाहा।

6. सहोदरज्योतिः नित्यं अस्माकं भवतु स्वाहा।

7. छत्रज्योतिः नित्यं अस्माकं भवतु स्वाहा।

इस प्रकार सात दीपकों से अवतरण विधि सम्पन्न करें। अनंतर शांति पाठ विसर्जन करके महिलाएँ सात सुवासिनी स्त्रियों को कुंकुम लगावें।

यह पूजा विधि आषाढ़ शुक्ला अष्टमी से शुरू होकर पूर्णिमा तक पुनः आगे से करते हुए कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा तक करना है।

इस मध्य प्रत्येक अष्टमी, चतुर्दशी को उपवास या जघन्य विधि एकाशन करना है तथा प्रत्येक दिन पूजा विधि पूरी करें तथा भोजन में शुद्ध भोजन दिन में एक बार अथवा दो बार लेवें, औषधि, दूध, आदि भी दिन में लेवें, रात्रि में चतुर्विध आहार का त्याग रखें।

ऐसे यह व्रत पूर्ण कर यथाशक्ति उद्यापन सम्पन्न करें। चौबीसी प्रतिमा बनवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करावें तथा चौबीस तीर्थंकर की जन्मभूमि व निर्वाणभूमि की वंदना करें। कम से कम एक जन्मभूमि व एक निर्वाणभूमि की वंदना अवश्य करें।

व्रत की कथा—राजगृही के महाराजा श्रेणिक के राजश्रेष्ठी जिनदत्त, उनकी पत्नी जिनदत्ता पुत्र वृषभदत्त और पुत्रवधू सुमति, इन चारों ने इस व्रत को किया। इसी मध्य जिनदत्त पर दुष्टों ने भयंकर उपसर्ग किया। व्रत के प्रभाव से उपसर्ग दूर हुआ। पुनः एक दिन सुमति की पुत्री को सांप ने काट लिया। इधर व्रत की पूजाविधि चल रही थी, तभी पुत्री के ऊपर गंधोदक छिड़कते ही विष उतर गया।

इसी मध्य एक दिन सुमति के भाई पर अकस्मात् भयंकर उपसर्ग हुआ तभी यक्ष देवता ने प्रकट होकर उपसर्ग दूर कर दिया। इस प्रकार पूजा विधि का फल प्रत्यक्ष दिखने पर सभी भक्तों का इस व्रत पर विशेष विश्वास हो गया।

अनन्तर सुमति ने इस व्रत के प्रभाव से स्वर्ग सुख प्राप्त कर परम्परा से मोक्ष प्राप्त किया है।

(60) कारुण्य व्रत[1] (षट्क्रिया व्रत)

आषाढ़ शु. 13 को एक भुक्ति—एकाशन करके चतुर्दशी को उपवास करें। जिनमंदिर में श्री ऋषभदेव का महाभिषेक-पंचामृताभिषेक करके पूजा करें। पूजा में निम्न मंत्रों को पढ़ें—

मंडल पर छह कोठे बनावें। उन पर पान रखें, उन पर यह पूजा करें। पृथक्-पृथक् छह पान पर यह पूजा छह बार करें।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्री ऋषभदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्री ऋषभदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्री ऋषभदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टकं

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्रीऋषभदेवाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्रीऋषभदेवाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्रीऋषभदेवाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्रीऋषभदेवाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

1. जैनेन्द्र व्रत कथा संग्रह (मराठी), पृ. 484।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्रीऋषभदेवाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्रीऋषभदेवाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्रीऋषभदेवाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्रीऋषभदेवाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशक श्रीऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनः श्रुत-गुरु, यक्ष, यक्षी आदि की पूजा करके यह जाप्य करें –

मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं षट्कर्मक्रियाचरणलोकोपदेशकश्रीऋषभदेवतीर्थंकराय गोमुखयक्ष चक्रेश्वरी यक्षीसहिताय नमः स्वाहा।** (सुगंधित पुष्पों से 108 बार मंत्र जपें)

पुनः सहस्रनाम पढ़कर णमोकार महामंत्र की एक माला करें।

चतुर्दशी का उपवास करके पूर्णिमा को इसी प्रकार पूजा करके पारणा – एकाशन करें। पुनः श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से षष्ठी तक पूर्वोक्त विधि से मंडल बनाकर पूजा विधि करते रहें एवं छहों दिन एकाशन – एक भुक्ति – एक बार भोजन करें। इस व्रत में एक बार भोजन में छह वस्तुओं से अधिक वस्तु नहीं लेवें। जैसे कि एक धान, एक फल, एक रस, एक सब्जी, मसाला में जीरा और धनिया। ऐसे ही कोई भी छह वस्तुएँ छह दिन तक भोजन में ग्रहण करना है। प्रतिदिन भगवान ऋषभदेव का चरित्र पढ़ें।

अर्थात् यह व्रत त्रयोदशी से षष्ठी तक इस प्रकार 9 दिन का है, इसमें चतुर्दशी और एकम् का उपवास करना है तथा शेष सात दिन एकाशन करना है।

इस प्रकार छह वर्ष तक यह व्रत विधिवत् करके उद्यापन में श्री ऋषभदेव की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराकर विराजमान करें। चतुर्विध संघों को आहारदान, ग्रंथदान आदि देकर छह-छह उपकरण मंदिरों में या तीर्थों पर भेंट करें। छह तीर्थों की यात्रा करें। कम से कम अयोध्या जो कि युग की आदि में इन षट्क्रियाओं की उद्गमस्थली है उसके दर्शन करके प्रयाग-इलाहाबाद में श्री तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षाभूमि-केवलज्ञानभूमि के दर्शन अवश्य करें।

इस व्रत को करने वाले सर्व क्रियाओं में अग्रणी होकर विद्या, वाणिज्य में विशेष सफलता प्राप्तकर परम्परा से इन क्रियाओं के उपदेष्टा ऐसे तीर्थंकर पद को प्राप्त कर सकते हैं।

(61) लोकमंगल व्रत

(जैनेन्द्र व्रत कथा संग्रह मराठी पुस्तक के आधार से)

आषाढ़ शुक्ला चतुर्थी के दिन उपवास करके यह व्रत किया जाता है। पुनः श्रावण कृ. 4, श्रावण शु. 4, भाद्रपद कृ. 4, भाद्रपद शु. 4, आश्विन कृ. 4, आश्विन शु. 4, कार्तिक कृ. 4 और कार्तिक शु. 4, ऐसी नौ चतुर्थी को यह व्रत करना है। इस व्रत में तृतीया और पंचमी को एकाशन एवं चतुर्थी को उपवास यह उत्तम विधि है और मात्र चतुर्थी को एकाशन यह जघन्य विधि है।

व्रत के दिन मंदिर में चौबीस तीर्थंकर की प्रतिमा का या किन्हीं भी भगवान की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके, चौबीसी समुच्चय पूजा करें पुनः एक चौकी पर चार स्वस्तिक बनाकर उन पर चार पान रखें। पुनः निम्न मंत्रों का उच्चारण कर उन स्वस्तिक पर चार पुंज चढ़ावें, फल-पुष्पादि चढ़ावें।

''चत्तारिमंगलं – अरिहंत मंगलं'' बोलकर एक स्वस्तिक पर एक पुंज रखें। ''सिद्धमंगलं'' बोलकर दूसरा पुंज, 'साहू मंगलं' बोलकर तीसरा पुंज एवं ''केवलिपण्णत्तोधम्मो मंगलं'' बोलकर चौथा पुंज रखें।

संसार में अरिहंत, सिद्ध, साधु और केवली प्रणीत धर्म ये चार ही मंगल हैं – मंगलस्वरूप हैं।

पुनः इसी मंत्र की एक माला जपें।

मंत्र– **चत्तारिमंगलं-अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।**

(सुगंधित पुष्पों से 108 बार महामंत्र जपें) पुनः

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा। (इस मंत्र का भी 108 बार जाप्य करें)

व्रत के दिन तीर्थंकर भगवान की पूजा, शास्त्र पूजा, गुरुपूजा आदि करके कार्तिक शुक्ला चतुर्थी को यह व्रत पूर्णकर यथाशक्ति उद्यापन करें। चार-चार उपकरण मंदिर में रखें तथा चौबीस तीर्थंकर विधान करके चतुर्विध संघ को चार प्रकार के दान आदि देकर चार तीर्थों की यात्रा करके व्रत को पूर्ण करें।

(62) चतुर्विंशति गणिनी व्रत[1]

चैत्र शु. प्रतिपदा को उपवास करके जिनमंदिर में जाकर चौबीस तीर्थंकर प्रतिमा का महाभिषेक करके श्रुतस्कंध यंत्र, गणधर यंत्र आदि का भी अभिषेक करें। चौबीस तीर्थंकरों की चौबीस गणिनी के चरणों का अभिषेक और पूजा करें।

पुनः निम्न मंत्र की माला करें–

मंत्र– **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ऋषभादिवर्धमानान्त्य वर्तमान तीर्थंकरेभ्यो यक्षयक्षीसहितेभ्यो नमः स्वाहा।** (सुगंधित पुष्पों से 108 बार मंत्र जपें)

अनंतर-एक-एक व्रत में एक-एक गणिनी माताजी का मंत्र जपें। वे मंत्र निम्न प्रकार हैं-

चौबीस गणिनी माता के 24 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभदेव समवसरणस्थित ब्राह्मी गणिनीमात्रे नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथ समवसरणस्थित प्रकुब्जा गणिनीमात्रे नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं श्री संभवनाथ समवसरणस्थित धर्मश्री गणिनीमात्रे नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिनंदननाथ समवसरणस्थित मेरुषेणा गणिनीमात्रे नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमतिनाथ समवसरणस्थित अनन्ता गणिनीमात्रे नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मप्रभु समवसरणस्थित रतिषेणा गणिनीमात्रे नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथ समवसरणस्थित मीना गणिनीमात्रे नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभु समवसरणस्थित वरुणा गणिनीमात्रे नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्पदंतनाथ समवसरणस्थित घोषा गणिनीमात्रे नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं श्री शीतलनाथ समवसरणस्थित धरणा गणिनीमात्रे नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयांसनाथ समवसरणस्थित धारणा गणिनीमात्रे नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं श्री वासुपूज्य समवसरणस्थित वरसेना गणिनीमात्रे नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलनाथ समवसरणस्थित पद्मा गणिनीमात्रे नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तनाथ समवसरणस्थित सर्वश्री गणिनीमात्रे नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मनाथ समवसरणस्थित सुव्रता गणिनीमात्रे नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं श्री शान्तिनाथ समवसरणस्थित हरिषेणा गणिनीमात्रे नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुंथुनाथ समवसरणस्थित भाविता गणिनीमात्रे नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरहनाथ समवसरणस्थित कुंथुसेना गणिनीमात्रे नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं श्री मल्लिनाथ समवसरणस्थित बंधुसेना गणिनीमात्रे नमः।

1. जैनेन्द्र व्रत कथा संग्रह (मराठी), पृ. 586।

20. ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ समवसरणस्थित पुष्पदत्ता गणिनीमात्रे नमः।

21. ॐ ह्रीं अर्हं श्री नमिनाथ समवसरणस्थित मार्गिणी गणिनीमात्रे नमः।

22. ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिनाथ समवसरणस्थित राजमती गणिनीमात्रे नमः।

23. ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ समवसरणस्थित सुलोचना गणिनीमात्रे नमः।

24. ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीर स्वामी समवसरणस्थित चन्दना गणिनीमात्रे नमः।

इस व्रत में चैत्र शु. प्रतिपदा को प्रथम व्रत करके आगे वैशाख कृ. प्रतिपदा, वैशाख शुक्ला प्रतिपदा आदि प्रत्येक मास की दोनों प्रतिपदाओं को व्रत करते हुए चैत्र कृष्णा प्रतिपदा को व्रत पूर्ण करें।

ऐसे ये चौबीस व्रत पूर्ण होने पर चौबीस तीर्थंकर की प्रतिमा बनवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न करावें एवं गणिनी माताजी के चरण बनवाकर विराजमान करावें। जो महिलाएँ इस व्रत को करेंगी वे नियम से संसार के संपूर्ण सुखों को, धान, सुख, सम्पत्ति और संतति को प्राप्तकर पुनः सम्यक्त्व के प्रभाव से स्त्रीलिंग को छेदकर आगे मोक्ष प्राप्त करेंगी। जो पुरुष इस व्रत को करेंगे, वे गणिनी माताओं की भक्ति से संसार के संपूर्ण अभ्युदयों को प्राप्तकर अपने गार्हस्थ जीवन को सफल कर परम्परा से पूर्ण महाव्रत को पालने में समर्थ होकर निर्वाण प्राप्त करेंगे।

(63) सिंह निष्क्रीडित व्रत

सिंह निष्क्रीड़ित विधि—सिंह निष्क्रीडित व्रत जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट के भेद से तीन प्रकार हैं। इनमें से प्रथम ही जघन्य व्रत की विधि को बतलाते हैं—

जघन्य सिंह निष्क्रीडित व्रत विधि—इसमें पहले एक उपवास एक पारणा और दो उपवास एक पारणा करना चाहिए। फिर एक उपवास एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, दो उपवास एक पारणा, चार उपवास एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, पाँच उपवास एक पारणा, चार उपवास एक पारणा, पाँच उपवास एक पारणा, यहाँ अंत में पाँच का अंक आ जाने से पूर्वार्ध समाप्त हो जाता है। आगे उल्टी संख्या से पहले पाँच उपवास एक पारणा करना चाहिए। फिर चार उपवास एक पारणा, पाँच उपवास एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, चार उपवास एक पारणा, दो उपवास एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, एक उपवास एक पारणा, दो उपवास एक पारणा और एक उपवास एक पारणा करना चाहिए। इस व्रत में समस्त अंकों का जोड़ साठ होता है। इसलिए साठ उपवास होते हैं और स्थान बीस हैं इसलिए पारणाएँ बीस होती हैं। यह व्रत अस्सी दिन में पूर्ण होता है। इसका प्रस्तार यह है—

पारणा	—1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
उपवास	—1	2	1	3	2	4	3	5	4	5	5	4	5	3	4	2	3	1	2	1

मध्यम सिंह निष्क्रीडित व्रत—पूर्वोक्त विधि में पाँच उपवास तक था ऐसे ही विधि से इसमें नौ उपवास तक बढ़ना चाहिए। उसकी विधि नीचे लिखे प्रस्तार से समझना चाहिए। इस व्रत में 153 उपवास और 33 पारणाएँ होने से 186 दिन में पूर्ण होता है।

मध्यम सिंह निष्क्रीडित व्रत का प्रस्तार—

पारणा	—1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
उपवास	—1	2	1	3	2	4	3	5	4	6	5	7	6	8	7	8	9	
पारणा	—1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1		
उपवास	—8	7	8	6	7	5	6	4	5	3	4	2	3	1	2	1		

उत्कृष्ट सिंह निष्क्रीडित विधि—उत्कृष्ट सिंह निष्क्रीडित व्रत में एक से लेकर पन्द्रह तक के अंकों का प्रस्तार बनाना चाहिए और उसके शिखर में 16 का अंक लिखना चाहिए। इसके बाद उल्टे क्रम से एक तक के अंक लिखना चाहिए। इस व्रत में 496 उपवास और 61 पारणाएँ होती हैं। यह व्रत 557 दिन में पूर्ण होता है। इसका प्रस्तार निम्न प्रकार है—

पारणा —1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

उपवास —1 2 1 3 2 4 3 5 4 6 5 7 6 8 7 9 8 10 9 11 10 12 11

पारणा —1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

उपवास —13 12 14 13 15 14 15 16 15 14 15 13 14 12 13

पारणा —1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

उपवास —11 12 20 11 9 10 8 9 7 8 6 7 56 4 5 3 4 2 3 1 2 1

व्रत का फल—इस व्रत के फलस्वरूप मनुष्य वज्रवृषभ नाराच संहनन का धारक, अनन्तवीर्य से सम्पन्न, सिंह के समान निर्भय और अणिमा आदि गुणों से युक्त होता हुआ शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है।

भगवान महावीर के जीव ने 'नन्दन' मुनिराज के भव में कनकावली, रत्नावली, मुक्तावली और सिंह निष्क्रीडित आदि अनेकों व्रतों का अनुष्ठान किया था। उसी प्रकार भगवान नेमिनाथ के जीव ने भी तीर्थंकर से तृतीय भव पूर्व 'सुप्रतिष्ठ' मुनिराज की अवस्था में इन कनकावली आदि अनेकों व्रतों का अनुष्ठान किया था और आज तक बहुत से महापुरुष इन व्रतों का अनुष्ठान करते रहते हैं।

इस व्रत में नवदेवता की जाप्य एवं श्रावक-श्राविकाएँ नवदेवता की पूजा कर सकते हैं।

मंत्र—**ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।**

(64) त्रिलोकसार व्रत

त्रिलोकसार विधि—जिसमें नीचे से पाँच से लेकर एक तक, फिर दो से लेकर चार तक और उसके बाद तीन से लेकर एक तक बिन्दु रखी जावें यह त्रिलोकसार विधि है। इसका प्रस्तार तीन लोक के आकार का बनाना चाहिए। इसमें तीस धारणाएँ अर्थात् तीस उपवास और ग्यारह पारणाएँ होती हैं। उनका क्रम यह है पाँच उपवास एक पारणा, चार उपवास एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, दो उपवास एक पारणा, एक उपवास एक पारणा, दो उपवास एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, चार उपवास एक पारणा, तीन उपवास एक पारणा, दो उपवास एक पारणा और एक उपवास एक पारणा। इस विधि में 41 दिन लगते हैं। इस विधि का फल कोष्ठबीज आदि ऋद्धियाँ तथा तीन लोक के शिखर पर तीन लोक का सारभूत मोक्ष सुख का प्राप्त होना है।

इस व्रत में तीन लोक का मंत्र जपना चाहिए एवं तीन लोक की पूजा करनी चाहिए।

मंत्र—**ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यसंबंधि-कृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।** अथवा **ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यसंबंधि-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।** दोनों मंत्रों में से कोई भी मंत्र जपें या दोनों भी मंत्र कर सकते हैं।

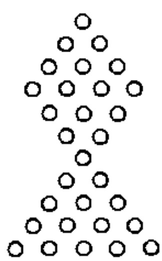

त्रिलोकसारविधियन्त्रम्

(65) निर्वाण चतुर्दशी व्रत (शिवरात्रि व्रत)

(जैनेन्द्र व्रत कथा संग्रह मराठी पुस्तक के आधार से)

भगवान ऋषभदेव ने माघ कृ. 14 को कैलाशपर्वत से शिवपद अर्थात् मोक्षपद को प्राप्त किया है। इस तिथि को इसीलिए शिवरात्रि व्रत कहते हैं।

व्रत विधि– माघ कृष्णा चतुर्दशी को उपवास करके जिनमंदिर में भगवान ऋषभदेव का महाभिषेक करके उनकी पूजा करें। पूजन का मंत्र विशेष इस प्रकार है–

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पंचकल्याणसंपूर्ण नवकेवललब्धिसमन्वितश्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पंचकल्याणसंपूर्ण नवकेवललब्धिसमन्वितश्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पंचकल्याणसंपूर्ण नवकेवललब्धिसमन्वितश्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पंचकल्याणसंपूर्णाय नवकेवललब्धिसमन्विताय श्री ऋषभदेवतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(ऐसे ही चंदन, अक्षत आदि चढ़ाकर पूजन करें)

पुनः व्रत का मंत्र जपें– **ॐ ह्रीं अर्हं गोमुखयक्ष-चक्रेश्वरीयक्षीसहिताय श्री ऋषभदेव तीर्थंकराय नमः।**

(सुगंधित पुष्पों से या पीले चावल से 108 बार मंत्र जपकर णमोकार महामंत्र की 1 माला जपें)

अनंतर शास्त्र व गुरु की पूजा करके यक्ष-यक्षी आदि को अर्घ्य समर्पित कर पूजा पूर्ण करें। पुनः सहस्रनाम स्तोत्र पढ़ें।

इस दिन रात्रि में पंचस्तोत्र, दशभक्ति आदि पढ़ते हुए भजन आदि पूर्वक 'रात्रिजागरण' करें। सायंकाल में मंदिर में 1008 आदि दीपों से आरती करके 'दीपमालिका' सजावें।

पाँच वर्ष तक यह व्रत करना है। पुनः उद्यापन में जिनबिम्ब निर्माण कराकर-श्री ऋषभदेव की प्रतिमा बनवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करावें। कैलाशपर्वत की– जहाँ-जहाँ तीर्थों पर कैलाशपर्वत निर्मित हैं उन तीर्थों की वंदना करके प्रयाग-इलाहाबाद पर निर्मित 'ऋषभदेव तपस्थली' तीर्थ पर कैलाशपर्वत की 108 वंदना करके व्रत को पूर्ण करें।

(66) कनकावली व्रत

भगवान नेमिनाथ ने तीर्थंकर से तृतीय भवपूर्व 'सुप्रतिष्ठ' मुनिराज की अवस्था में इन कनकावली आदि व्रतों का अनुष्ठान किया था। वैसे ही भगवान महावीर के जीव ने 'नंदन मुनिराज' के भव में इन्हीं व्रतों का अनुष्ठान किया था।

कनकावली व्रत विधि– कनकावली व्रत में 434 उपवास और 88 पारणाएँ होती हैं। इसका क्रम यह है कि एक उपवास एक पारणा, दो उपवास एक पारणा, नौ बार तीन-तीन उपवास और उसके मध्य में एक-एक पारणा, पुनः एक से लेकर सोलह तक क्रमशः उपवास और मध्य में एक-एक पारणा, फिर चौंतीस बार तीन-तीन उपवास और मध्य में एक-एक पारणा, पुनः सोलह से लेकर एक तक क्रमशः उपवास और मध्य में एक-एक पारणा, पुनः नौ बार तीन-तीन उपवास और एक-एक पारणा तथा दो उपवास एक पारणा और एक उपवास एक पारणा इस प्रकार विधि होती है।

कनकावली व्रत विधि यंत्र–

उपवास –1 2 3 3 3 3 3 3 3 3 3 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12

पारणा –1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

उपवास –13 14 15 16 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3

पारणा –1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

उपवास –3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 16 15 14 13 12 11 10 9

पारणा –1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

उपवास –8 7 6 5 4 3 2 1 3 3 3 3 3 3 3 3 3 2 1

पारणा –1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

इस व्रत में एक वर्ष पाँच मास और बारह दिन लगते हैं। लौकांतिक देवपद की प्राप्ति होना अथवा संसार का अंतकर मोक्ष प्राप्त करना इस व्रत का फल है। इस व्रत में चौबीस तीर्थंकर का मंत्र जपें एवं चौबीस तीर्थंकर पूजा करें।

मंत्र– **ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः** अथवा **ॐ ह्रीं वृषभादिवर्धमानान्तेभ्यो नमः।**

(67) सर्वसंपत् व्रत (पुत्र संपत व्रत)

संसार में जितने भी सुख हैं, पुत्रप्राप्ति, सौभाग्य, संपत्ति, आदि भी धार्मिक व्रतों के प्रभाव से प्राप्त होते हैं। सौभाग्यवती महिला पुत्र-पुत्री-संतान सुख की प्राप्ति हेतु व्रत करने की इच्छुक हैं। वे तीर्थंकर भगवन्तों की माता की आराधना करते हुए व्रत करें। ये तीर्थंकर की माता इन्द्रों के द्वारा भी पूज्य मानी गई है अतः इनकी पूजा वंदना में गृहस्थों के लिए कोई दोष नहीं है प्रत्युत् गुण ही है।

व्रत की विधि–व्रत करने में तिथि का कोई नियम नहीं है अपनी सुविधा से किसी भी अष्टमी, चतुर्दशी आदि तिथि में ये व्रत किये जा सकते हैं। व्रत के दिन मंदिर में उन-उन तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमा का अभिषेक करके उन-उनकी पूजा करके पुनः उन-उन भगवान की माता की पूजा करें। अनंतर जाप्य करें। इस व्रत में चौबीस व्रत करना है। व्रत के दिन उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार एवं जघन्य विधि एकाशन– एक बार शुद्ध भोजन करना है।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजननी मरुदेवीमात्रे नमः।

2. ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजननी विजयादेवीमात्रे नमः।

3. ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजननी सुषेणादेवीमात्रे नमः।

4. ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजननी सिद्धार्थादेवीमात्रे नमः।

5. ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजननी सुमंगलादेवीमात्रे नमः।

6. ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजननी सुसीमादेवीमात्रे नमः।

7. ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजननी पृथ्वीषेणादेवीमात्रे नमः।

8. ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजननी लक्ष्मणादेवीमात्रे नमः।

9. ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथजननी जयरामामात्रे नमः।

10. ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजननी सुनन्दादेवीमात्रे नमः।

11. ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजननी विपुलानंदामात्रे नमः।

12. ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथजननी जयावतीमात्रे नमः।

13. ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजननी अर्यश्यामामात्रे नमः।
14. ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजननी लक्ष्मीमतीमात्रे नमः।
15. ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजननी सुप्रभादेवीमात्रे नमः।
16. ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजननी ऐरादेवीमात्रे नमः।
17. ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजननी श्रीकांतामात्रे नमः।
18. ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजननी श्रीमित्रसेनामात्रे नमः।
19. ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजननी श्रीप्रभावतीमात्रे नमः।
20. ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजननी श्रीसोमादेवीमात्रे नमः।
21. ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजननी श्रीवर्मिलादेवीमात्रे नमः।
22. ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजननी श्रीशिवादेवीमात्रे नमः।
23. ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजननी श्रीवामादेवीमात्रे नमः। (श्री ब्राह्मीदेवी मात्रे)
24. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिजननी श्रीत्रिशलादेवीमात्रे नमः।

व्रत पूर्ण करके उद्यापन में तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों की वंदना करें।

सोलह जन्मभूमियों के नाम

1. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	– श्री ऋषभदेव भगवान, श्री अजितनाथ भगवान, श्री अभिनंदननाथ भगवान, श्री सुमतिनाथ भगवान, श्री अनंतनाथ भगवान
2. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	– श्री संभवनाथ भगवान
3. कौशाम्बी (उ.प्र.)	– श्री पद्मप्रभु भगवान
4. वाराणसी (उ.प्र.)	– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान, श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	– श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	– श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. भद्रिकापुरी (भद्दिलपुर)	– श्री शीतलनाथ भगवान
8. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	– श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	– श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. कम्पिलपुरी (फर्रुक्खाबाद-उ.प्र.)	– श्री विमलनाथ भगवान
11. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	– श्री धर्मनाथ भगवान
12. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	– श्री शांतिनाथ भगवान, श्री कुन्थुनाथ भगवान, श्री अरनाथ भगवान
13. मिथिलापुरी	– श्री मल्लिनाथ भगवान, श्री नमिनाथ भगवान
14. राजगृही (नालंदा-बिहार)	– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)	– श्री नेमिनाथ भगवान
16. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	– श्री महावीर भगवान

इस व्रत को करने वाली महिलाएँ वंध्यापने को दूरकर पुत्र-पुत्री के संतानसुख को प्राप्त कर अपनी वंश परम्परा को वृद्धिंगत करेंगी। संतान धर्मनिष्ठ, सदाचारी, कुल के दीपक होंगे। माता-पिता की सेवा-शुश्रूषा में कुशल होंगे। उस घर से परम्परा से मोक्षमार्ग चलता रहेगा।

(68) तपोञ्जलि व्रत

किंनाम तपोऽञ्जलिर्व्रतम्? द्वादशमासेषु निशिजलपानं न कर्त्तव्यमुपवासाश्चतुर्विंशतयः कार्याः, अष्टम्यां चतुर्दश्यां नैव नियमः अष्टम्यामेव चतुर्दश्यामेवेति।

अर्थ– तपोऽञ्जलि व्रत की क्या विधि है? कैसे किया जाता है? आचार्य कहते हैं कि बारह महीनों तक अर्थात् एक वर्ष पर्यन्त रात को पानी नहीं पीना और एक वर्ष में चौबीस उपवास करना तपोऽञ्जलि व्रत है। उपवास करने का नियम अष्टमी और चतुर्दशी को ही नहीं है, प्रत्येक महीने में दो उपवास कभी भी किये जा सकते हैं।

विवेचन–आचार्य ने तपोऽञ्जलि व्रत का अर्थ यह किया है कि रात को जल नहीं पीना, ब्रह्मचर्यपूर्वक रहना, धर्मध्यानपूर्वक वर्ष को बिताना। यह व्रत श्रावण मास की कृष्णा प्रतिपदा से किया जाता है। इसका प्रमाण एक वर्ष है। व्रत करने वाला दिगम्बर जैन मुनि या दिगम्बर जैन प्रतिमा के समक्ष बैठकर व्रत को विधिपूर्वक ग्रहण करता है। दो घटी सूर्य अस्त होने के पूर्व से लेकर दो घटी सूर्योदय के बाद तक जलपान का त्याग करता है। जलपान का अर्थ यहाँ हलका भोजन नहीं है बल्कि जल पीने का त्याग करना अभिप्रेत है। इस व्रत का धारी श्रावक रात को जल तो पीता ही नहीं, किन्तु ब्रह्मचर्य का भी पालन करता है। यद्यपि कहीं-कहीं स्वदारसन्तोष व्रत रखने का विधान किया है, पर उचित तो यही प्रतीत होता है कि एक वर्ष ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर आत्मिक शक्ति का विकास किया जाये। ब्रह्मचर्य से रहने पर शरीर और मन दोनों स्वस्थ होते हैं।

वर्षा ऋतु से व्रतारम्भ करने का अभिप्राय भी यही है कि इस ऋतु में पेट की अग्नि मंद हो जाती है, अतः ब्रह्मचर्य से रहने पर शक्ति का विकास होता है। ब्रह्मचर्य के अभाव में वर्षा ऋतु में नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं, जिससे मनुष्य आत्मकल्याण से वंचित हो जाता है। इस ऋतु में रात को जल न पीना भी बहुत लाभप्रद है। नाना प्रकार के सूक्ष्म और बादर जीव- जन्तुओं की उत्पत्ति इस ऋतु में होती है, जिससे रात में पीने वाले जल के साथ वे पेट में चले जाते हैं। भयंकर व्याधियाँ भी वर्षा ऋतु की रात में जल पीने से हो जाती हैं। तपोऽञ्जलि व्रत में प्रत्येक मास में दो उपवास स्वेच्छा से किसी भी तिथि को करने चाहिए।

प्रत्येक महीने की शुक्लपक्ष की अष्टमी और कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी का नियम इस व्रत के लिए बताया गया है; परन्तु यह कोई आवश्यक नहीं कि यह व्रत इन दोनों दिनों में होना ही चाहिए। प्रत्येक पक्ष में एक उपवास करना आवश्यक है, एक ही पक्ष में दो उपवास नहीं करने चाहिए। जो लोग अष्टमी और चतुर्दशी का उपवास करना चाहते हैं, उनको भी इस व्रत के लिए कृष्ण पक्ष में अष्टमी का और शुक्लपक्ष में चतुर्दशी का अथवा शुक्लपक्ष में अष्टमी का और कृष्णपक्ष में चतुर्दशी का उपवास करना चाहिए। लगातार एक ही पक्ष में दो उपवास करने का निषेध है। कोई भी व्यक्ति एक ही पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी को उपवास नहीं कर सकता है। उपवास के लिए जिस प्रकार पक्ष का पृथक् होना आवश्यक है, उसी प्रकार तिथि का भी। एक महीने में उपवास की तिथियाँ एक नहीं हो सकती। जैसे कोई व्यक्ति कृष्ण पञ्चमी का उपवास करे, तो पुनः शुक्ल पक्ष में वह पञ्चमी का उपवास नहीं कर सकता है। कृष्णपक्ष में पञ्चमी के उपवास के पश्चात् शुक्लपक्ष में उसे तिथि-परिवर्तन करना ही पड़ेगा। अतः शुक्ल पक्ष में पञ्चमी को छोड़ किसी भी अन्य तिथि को उपवास कर सकता है। इस व्रत में प्रतिदिन '**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः**' मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिए।

(69) श्रवण द्वादशी व्रत

श्रवणद्वादशीव्रतस्तु भाद्रपदशुक्लद्वादश्यां तिथौ क्रियते। अस्य व्रतस्यावधिः द्वादशवर्षपर्यन्तमस्ति। उद्यापनान्तरं व्रतसमाप्तिर्भवति।

अर्थ—श्रवणद्वादशी व्रत भाद्रपद शुक्ला द्वादशी को किया जाता है। यह व्रत बारह वर्ष तक करना पड़ता है। उद्यापन करने के उपरान्त व्रत की समाप्ति की जाती है।

विवेचन—श्रवण द्वादशी व्रत के दिन भगवान वासुपूज्य स्वामी की पूजा, अभिषेक और स्तुति की जाती है। नित्यनैमित्तिक पूजा-पाठों के अनन्तर गाजे-बाजे के साथ भगवान वासुपूज्य स्वामी की पूजा करनी चाहिए। इस व्रत में चार बार—तीनों संध्याओं और रात में लगभग दस बजे **'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः स्वाहा'** इस मंत्र का जाप करना चाहिए। प्रायः इस द्वादशी तिथि को श्रवण नक्षत्र भी पड़ता है, इसी कारण इस व्रत का नाम श्रवणद्वादशी पड़ा है। क्योंकि यह द्वादशी श्रवण नक्षत्र से युक्त होती है। इस व्रत की सामान्य विधि अन्य व्रतों के समान ही है परन्तु विशेष यह है कि यदि श्रवण नक्षत्र त्रयोदशी को पड़ता हो या एकादशी में ही आ जाता हो तथा द्वादशी को श्रवण नक्षत्र का अभाव हो तो द्वादशी के व्रत के साथ श्रवण नक्षत्र के दिन भी व्रत करना चाहिए। यों तो प्रायः द्वादशी तिथि को श्रवण आ ही जाता है। ऐसा बहुत कम होता है, जब श्रवण एक दिन आगे या एक दिन पीछे पड़ता है। द्वादशी तिथि व्रत के लिए छह घटी प्रमाण होने पर ही ग्राह्य है।

यदि कभी ऐसी परिस्थिति आवे कि श्रवण द्वादशी में श्रवण नक्षत्र न मिले, तो उस समय अस्तकालीन तिथि भी ग्रहण की जा सकती है। द्वादशी को प्रातःकाल में श्रवण नक्षत्र का होना आवश्यक नहीं है, किसी भी समय द्वादशी और श्रवण का योग होना चाहिए। ज्योतिषशास्त्र में भाद्रपद शुक्ला द्वादशी और श्रवण नक्षत्र के योग को बहुत श्रेष्ठ बताया है। इसका कारण यह है कि श्रावण मास में पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र पड़ता है तथा भाद्रपद मास में पूर्णिमा को भाद्रपद नक्षत्र। द्वादशी श्रवण से संयुक्त होकर विशेष पुण्यकाल उत्पन्न करती है, क्योंकि श्रवण नक्षत्र मासवाली पूर्णिमा के पश्चात् प्रथम बार द्वादशी के साथ योग करता है, चन्द्रमा नीच राशि से आगे निकल जाता है और अपनी उच्च राशि की ओर बढ़ता है। द्वादशी तिथि को यों तो अनुराधा नक्षत्र श्रेष्ठ माना जाता है, परन्तु भाद्रपद मास में श्रवण ही श्रेष्ठतम बताया गया है। इस कारण श्रवण से संयुक्त द्वादशी कल्याणप्रद, पुण्यकारक और जीवन मार्ग में गति देने वाली होती है। अपनी मासान्त की पूर्णिमा के संयोग के पश्चात् श्रवण प्रथम बार जिस किसी तिथि से संयोग करता है, वही तिथि श्रेष्ठ, पुण्योत्पादक और मंगलप्रद मानी जाती है। श्रवण की यह स्थिति भाद्रपद शुक्ल द्वादशी को ही आती है, अतः यह व्रत महान् पुण्य को देने वाला बताया गया है।

श्रवणद्वादशी व्रत का माहात्म्य जैनियों में भी बहुत अधिक माना गया है। इस व्रत को प्रायः सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपनी सौभाग्य-वृद्धि, सन्तान प्राप्ति तथा अपनी ऐहिक मंगलकामना से करती हैं। इस व्रत की अवधि बारह वर्ष तक मानी गयी है, बारह वर्ष तक विधिपूर्वक व्रत करने के उपरांत व्रत का उद्यापन करना चाहिए।

मुकुटसप्तमी, निर्दोषसप्तमी और श्रवणद्वादशी ये सब व्रत वर्ष में एक बार ही किये जाते हैं। जो तिथियाँ इनके लिए निश्चित की गई हैं, उन-उन तिथियों में ही उन्हें सम्पन्न करना चाहिए। श्रवणद्वादशी व्रत के दिन वासुपूज्य भगवान के पंचकल्याणकों का चिन्तन करना चाहिए।

(70) ज्येष्ठ जिनवर व्रत

ज्येष्ठकृष्ण पक्षे प्रतिपदि ज्येष्ठशुक्ले प्रतिपदि चोपवासः, आषाढ़कृष्णस्य प्रतिपति चोपवासः, एवमुपवासत्रयं करणीयम्, ज्येष्ठमासस्यावशेषदिवसेष्वेकाशनं करणीयम्, एतद्व्रतं ज्येष्ठजिनवरव्रतं भवति। ज्येष्ठप्रतिपदामारभ्याषाढकृष्णाप्रतिपत् पर्यन्तं भवति।

अर्थ– ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा, ज्येष्ठशुक्ला प्रतिपदा और आषाढ़ शुक्ला प्रतिपदा, इन तीनों तिथियों में तीन उपवास करने चाहिए। ज्येष्ठ मास के शेष दिनों में एकाशन करना होता है। इस व्रत का नाम ज्येष्ठ जिनवर व्रत है। यह ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा से आरंभ होता है और आषाढ़ कृष्णा प्रतिपदा को समाप्त होता है।

विवेचन– ज्येष्ठजिनवर व्रत ज्येष्ठ महीने में किया जाता है। यह व्रत ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा से प्रारंभ होता है और आषाढ़ कृष्णा प्रतिपदा को समाप्त होता है। इसमें प्रथम ज्येष्ठवदी प्रतिपदा को प्रोषध किया जाता है, पश्चात् कृष्ण पक्ष के शेष 14 दिन एकाशन करते हैं। पुनः ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा को उपवास और शेष 14 दिन एकाशन या आषाढ़ वदी प्रतिपदा को उपवास कर व्रत की समाप्ति कर दी जाती है।

ज्येष्ठ जिनवर व्रत में मिट्टी के पाँच कलशों से प्रतिदिन भगवान आदिनाथ का अभिषेक करना चाहिए। **'ॐ ह्रीं श्रीज्येष्ठजिनाधिपतये नमः कलशस्थापनं करोमि'** इस मंत्र को पढ़कर कलशों की स्थापना की जाती है। पाँच कलशों में से चार कलशों द्वारा अभिषेक स्थापन के समय ही किया जाता है और एक कलश से जयमाल पढ़ने के अनन्तर अभिषेक होता है। इस व्रत में ज्येष्ठ जिनवर की पूजा की जाती है। **'ॐ ह्रीं श्रीऋषभजिनेन्द्राय नमः'** इस मंत्र का जाप करना होता है। ज्येष्ठ मासभर तीनों समय सामायिक करना, ब्रह्मचर्य का पालन एवं शुद्ध और अल्प भोजन करना आवश्यक है।

(71) अक्षय निधि व्रत

अक्षयनिधिनियमस्तु श्रावणशुक्ला दशमी भाद्रपदशुक्ला तत्कृष्णा चेति दशमीत्रयं पञ्चवर्षे यावत् व्रतं कार्यम्; दशमीहानौ तु नवम्यां वृद्धौ तु यस्मिन् दिने पूर्णा दशमी तस्मिन्नेव दिने व्रतं कार्यम्; वृद्धिगततिथौ सोदयप्रमाणेऽपि व्रतं न कार्यम्।

अर्थ–अक्षय निधि व्रत श्रावण शुक्ला दशमी, भाद्रपद कृष्णा दशमी, भाद्रपद शुक्ला दशमी, इस प्रकार तीन दशमियों को किया जाता है। यह व्रत पाँच वर्ष तक करना होता है। दशमी तिथि की हानि होने पर नवमी को व्रत और दशमी तिथि की वृद्धि होने पर जिस दिन पूर्ण दशमी हो उस दिन व्रत किया जाता है। वृद्धिंगत तिथि छः घटी से अधिक हो तो भी दूसरे दिन व्रत करने का विधान नहीं है। यह व्रत वर्ष में तीन दिन से अधिक नहीं किया जाता है, तिथि वृद्धि होने पर भी एक दिन अधिक करने का नियम नहीं है।

विवेचन–अक्षयनिधि व्रत श्रावण सुदी दशमी, भादों वदी दशमी और भादों सुदी दशमी इन तीनों दशमी तिथियों को वर्ष में एक बार किया जाता है। इस व्रत का दूसरा नाम अक्षयफल दशमी व्रत भी है। अक्षयनिधि व्रत करने वाले को दशमी के दिन प्रोषध करना चाहिए। गृहारंभ छोड़कर श्रीजिन-मंदिर में जाकर भगवान आदिनाथ का अभिषेक और पूजन करना चाहिए। **'ॐ ह्रीं नमो ऋषभाय'** इस मंत्र का जाप उपवास के दिन 1008 करना चाहिए। रात्रि में जागरण, शक्ति न होने पर अल्प निद्रा ली जाती है। धर्मध्यान व्रत के दिन विशेषरूप से किया जाता है। शीलव्रत श्रावण सुदी नवमी से लेकर भादों सुदी एकादशी तक इस व्रत के धारी को पालना चाहिए।

(72) सर्वार्थसिद्धि व्रत

कार्तिक सुदी अष्टमी से लगातार आठ दिन उपवास किये जाते हैं तथा कार्तिक सुदी सप्तमी का एकाशन कर मार्गशीर्ष वदी प्रतिपदा को पुनः एकाशन करने का विधान है। इस व्रत में लगातार आठ दिन तक उपवास करना चाहिए। व्रत के दिनों में '**श्रीसिद्धाय नमः**' मंत्र का जाप किया जाता है।

(73) धर्मचक्र व्रत

धर्मचक्र व्रत 22 दिनों में पूर्ण होता है। इसमें 16 उपवास और 6 पारणाएँ सम्पन्न होती हैं। प्रथम उपवास, पारणा, पश्चात् दो उपवास पारणा, अनन्तर तीन उपवास पारणा, तत्पश्चात् चार उपवास पारणा, पश्चात् पाँच उपवास पारणा एवं अन्त में एक उपवास और पारणा की जाती है। धर्मचक्र व्रत के दिनों में '**ॐ ह्रीं अरिहंतधर्मचक्राय नमः**' मंत्र का जाप गुग्गुल और धूप देकर किया जाता है।

(74) लघु सुखसम्पत्ति व्रत

इस व्रत में 120 उपवास किये जाते हैं। प्रतिपदा का एक, दो द्वितीयाओं के दो, तीन तृतीयाओं के तीन, चार चतुर्थियों के चार, पाँच पंचमियों के पाँच, छः षष्ठियों के छः, सात सप्तमियों के सात, आठ अष्टमियों के आठ, नौ नवमियों के नौ, दश दशमियों के दश, ग्यारह एकादशियों के ग्यारह, बारह द्वादशियों के बारह, तेरह त्रयोदशियों के तेरह, चौदह चतुर्दशियों के चौदह एवं पन्द्रह पूर्णमासियों के पन्द्रह इस प्रकार एक सौ बीस उपवास सम्पन्न किये जाते हैं। 1+2+3+4+5+6+7+8+9+10+11+12+13+14+15=120 उपवास। उपवास के दिनों में श्रावक के उत्तरगुणों का पालना और शीलव्रत धारण करना आवश्यक है। इस व्रत में चौबीस तीर्थंकर का मंत्र जपें एवं चौबीसी पूजा करें।

मंत्र– **ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः** अथवा **ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तेभ्यो नमः।**

(75) अक्षय तृतीया व्रत

(श्री ऋषभदेव-आहार व्रत)

भगवान ऋषभदेव ने चैत्र कृष्णा नवमी को प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा ली थी। छह माह तक प्रभु ध्यान में लीन रहे, अनंतर आहार की चर्या दिखलाने के लिए भगवान चांद्रीचर्या से आहार हेतु निकले किन्तु उन दिनों किसी को भी नवधाभक्तिपूर्वक आहार देने की विधि मालूम नहीं थी अतः प्रभु के पुनः छह माह से अधिक निकल गये। पुनः भगवान चांद्रीचर्या से भ्रमण करते हुए हस्तिनापुर आये। वहाँ के राजा सोमप्रभ के भ्राता श्रेयांस

युवराज को सात स्वप्न हुए अनंतर प्रभु के दर्शन करते ही उन्हें आठ भव पूर्व का जातिस्मरण हो गया जबकि उन्होंने रानी श्रीमती और राजा वज्रजंघ के रूप में युगलमुनि चारण ऋद्धिधारियों को आहार दिया था। उसी की सारी विधि ज्ञात हो गई और उन्होंने जान लिया कि ये भगवान ऋषभदेव आठ भव पूर्व मेरे पति राजा वज्रजंघ थे और मैं इनकी रानी श्रीमती था आदि...।

तत्क्षण ही युवराज श्रेयांस ने अपने भ्राता के साथ-साथ प्रभु का पड़गाहन किया और नवधाभक्तिपूर्वक प्रभु को इक्षुरस का आहार दिया। उसी क्षण आकाश से देवों ने पंचाश्चर्य वृष्टि करके विशेष जयजयकारा किया था। वह तिथि वैशाख शुक्ला तीज थी जो कि आज भी ''अक्षयतृतीया'' के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त है एवं जिसके नीचे प्रभु ने दीक्षा ली थी, वह वृक्ष 'अक्षयवटवृक्ष' के नाम से आज भी प्रयाग– इलाहाबाद में विद्यमान है।

व्रत की विधि– इन्हीं प्रभु की प्रथम पारणा के उपलक्ष्य में यह व्रत करना चाहिए। इसकी विधि इस प्रकार है–

चैत्र कृ. 9 को उपवास करके आगे दशमी को पारणा करें अर्थात् दो बार भोजन करें। एक वर्ष चालीस दिन तक रात्रि में चतुर्विध आहार का त्याग रखें। जिस दिन पारणा हो, दिन में दो बार भोजन, जल एवं औषधि ले सकते हैं। इस तरह एक दिन व्रत– उपवास या एकाशन करें। अगले दिन पारणा में दो बार भोजन करें, इस प्रकार एक व्रत-एक पारणा, एक व्रत-एक पारणा करते हुए अक्षयतृतीया के एक दिन पहले वैशाख शु. द्वितीया तक व्रत करके हस्तिनापुर पहुँचकर अक्षयतृतीया के दिन जम्बूद्वीप में विराजमान भगवान ऋषभदेव की आहार मुद्रा की प्रतिमा को इक्षुरस का आहार देकर स्वयं इक्षुरस से पारणा उस दिन एकाशन– एक बार ही भोजन करके व्रत को पूर्ण करें।

भगवान ने वटवृक्ष के नीचे दीक्षा लेकर छह महीने का योग धारण किया था अतः छह माह– चैत्र कृ. नवमी से आश्विन कृ. नवमी तक निम्न मंत्र का जाप्य करें–

प्रथम मंत्र– **ॐ ह्रीं प्रयागतीर्थे वटवृक्षतले दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय ध्यानमग्नश्रीऋषभदेवाय नमः।**

पुनः आश्विन कृ. दशमी से वैशाख शु. 3– अक्षयतृतीया तक छह माह चालीस दिन निम्न मंत्र का जाप्य करें–

द्वितीय मंत्र– **ॐ ह्रीं चान्द्रीचर्याप्रकाशकाय प्रथमतीर्थंकर- श्रीऋषभदेवाय नमः।**

व्रत के दिन श्री ऋषभदेव का अभिषेक करके श्री ऋषभदेव की पूजा करें एवं उपर्युक्त ऋषभदेव के मंत्र का जाप करें। व्रत के पूर्ण होने पर उद्यापन में श्री ऋषभदेव की प्रतिमा की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करावें। श्री ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या, दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि प्रयाग-इलाहाबाद तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली के दर्शन करें पुनः हस्तिनापुर प्रथम पारणा भूमि के दर्शन करके श्री ऋषभदेव विधान करके यथाशक्ति मुनि-आर्यिका आदि को आहार, औषधि आदि दान देकर मंदिर में 9-9 उपकरण आदि रखकर दीन-दुःखियों को करुणादान आदि देकर व्रत पूर्ण करें। इस व्रत के प्रभाव से अक्षय धान-धान्य के साथ-साथ अक्षय पुण्य संपादित कर अक्षयमोक्षधाम को प्राप्त करेंगे।

यदि एक वर्ष 40 दिन का यह व्रत एकान्तरा से नहीं कर सकते हैं तो लघुव्रत भी करके अपनी भावना को सफल कर सकते हैं।

व्रत की लघु विधि (मात्र 40 दिन में करने वाला)– चैत्र कृ. 9 को उपवास करके अगले दिन पारणा करें, पुनः एक उपवास या एकाशन एवं एक पारणा, एक उपवास या एकाशन एवं एक पारणा ऐसे वैशाख शु. द्वितीया तक मात्र 39 दिन का व्रत करके चालिसवें दिन 'अक्षयतृतीया' को हस्तिनापुर में आकर भगवान की मूर्ति– आहारमुद्रावाली को इक्षुरस का आहार देकर व्रत की पारणा करके उस दिन एकाशन– एक बार ही भोजन करके यथाशक्ति उद्यापन करके व्रत पूर्ण करें। इस व्रत में उपर्युक्त दो मंत्रों में से द्वितीय मंत्र का जाप्य करना चाहिए।

प्रथम उत्तम– उत्कृष्टव्रत एक वर्ष चालीस दिन का है और द्वितीय लघुव्रत मात्र चालीस दिन का है। इन व्रतों को करके भक्तगण संपूर्ण मनोरथों को सफल करें।

(76) रक्षाबंधन व्रत

हस्तिनापुर में आज से लगभग 12 लाख वर्ष पूर्व श्री अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों का उपसर्ग दूर हुआ था। श्री विष्णुकुमार महामुनि ने विक्रियाऋद्धि के प्रभाव से उज्जयिनी से आकर बलि आदि मंत्रियों के द्वारा किये गये उपसर्ग को दूर कर मुनियों की रक्षा की थी, वह तिथि 'श्रावण शुक्ला पूर्णिमा' थी, तभी से आज तक यह तिथि 'रक्षाबंधन' पर्व के नाम से सारे भारत में विख्यात है। भले ही आज यह पर्व मात्र भाई-बहन के पर्व के रूप में प्रसिद्ध है, फिर भी गुरुओं की रक्षा ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

व्रत की विधि–श्रावण शु. 13 से पूर्णिमा तक 3 दिन यह व्रत करना चाहिए। त्रयोदशी को एकाशन करके चतुर्दशी को उपवास करें। व्रत के दिन मंदिर में पंचपरमेष्ठी की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके, यदि श्री अकंपनाचार्य और विष्णुकुमार मुनियों की प्रतिमाएं हों, तो उनका अभिषेक करें या युगल मुनियों के चरणों का अभिषेक करके पंचपरमेष्ठी की पूजा, श्री अकंपनाचार्य व विष्णुकुमार मुनि की पूजा करें। निम्न जाप्य करें–

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं अर्हं महोपसर्गविजयि श्रीअकंपनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो नमः।

व्रतों के दिन रक्षाबंधन की एवं श्री विष्णुकुमार मुनि की कथा अवश्य पढ़ें। पुनः श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन हस्तिनापुर आकर श्री अकंपनाचार्य और श्री विष्णुकुमार महामुनियों की पूजा करके वहाँ पर विराजमान साधुओं को आहार दान देकर स्वयं खीर आदि का भोजन लेकर एकाशन करें अर्थात् एक बार भोजन करें एवं धर्मध्वज स्तंभ में रक्षासूत्र बांधें तथा साधर्मियों को धर्म की एवं धर्मायतन की रक्षा हेतु रक्षासूत्र बांधें। उपर्युक्त दो में से एक जाप्य करके– **ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार महामुनये नमः** मंत्र की भी जाप्य करें। पुनः भाद्रपद कृ. प्रतिपदा को व्रत पूर्ण करें। इस प्रकार यह व्रत सात वर्ष तक करके यथाशक्ति उद्यापन करें। इन मुनियों के चरण बनवाकर या प्रतिमा बनवाकर विधिवत् प्रतिष्ठा कराकर मंदिर में विराजमान करें।

इस व्रत के प्रभाव से अनेक प्रकार की दुर्घटना,रेल, मोटर आदि के एक्सीडेंट आदि का निवारण होगा, अकाल मृत्यु टलेगी। अनेक प्रकार के कष्ट दूर होंगे और सब प्रकार से सुख, शांति, यश, संपत्ति, संतति आदि की वृद्धि होगी।

(77) चौबीस तीर्थंकर व्रत

व्रत के दिन 24 तीर्थंकर प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक एवं पूजन करें। व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम विधि अल्पाहार एवं जघन्य विधि एकाशन है। इसमें 24 व्रत करना है। व्रत के दिन प्रत्येक तीर्थंकर की एक-एक जाप्य एवं एक समुच्चय जाप्य करना है। व्रत में तिथि का कोई बंधन नहीं है, एक महीने में एक व्रत अवश्य करें। व्रत के उद्यापन में 'चौबीस तीर्थंकर विधान' करें। 24-24 उपकरण मंदिर जी में भेंट करें। चौबीसी प्रतिमा बनवाएँ अथवा 24 तीर्थंकर से संबंधित कोई शास्त्र प्रकाशित करवाकर वितरित करें।

व्रत की समुच्चय जाप्य– **ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथतीर्थंकराय नमः।**

3. ॐ ह्रीं अर्हं श्री संभवनाथतीर्थंकराय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिनंदननाथतीर्थंकराय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमतिनाथतीर्थंकराय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मप्रभुतीर्थंकराय नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथतीर्थंकराय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभतीर्थंकराय नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्पदंततीर्थंकराय नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं श्री शीतलनाथतीर्थंकराय नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयांसनाथतीर्थंकराय नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं श्री वासुपूज्यतीर्थंकराय नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलनाथतीर्थंकराय नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तनाथतीर्थंकराय नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मनाथतीर्थंकराय नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं श्री शान्तिनाथतीर्थंकराय नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुंथुनाथतीर्थंकराय नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरहनाथतीर्थंकराय नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं श्री मल्लिनाथतीर्थंकराय नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथतीर्थंकराय नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं श्री नमिनाथतीर्थंकराय नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिनाथतीर्थंकराय नमः।
23. ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथतीर्थंकराय नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीरतीर्थंकराय नमः।

(78) मुक्तावली व्रत

मुक्तावली व्रत दो प्रकार का होता है – लघु और बृहत्। लघु व्रत में नौ वर्ष तक प्रतिवर्ष 9-9 उपवास करने होते हैं। पहला उपवास भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को, दूसरा आश्विन कृष्णा षष्ठी को, तीसरा आश्विन कृष्णा त्रयोदशी को, चौथा आश्विन शुक्ला एकादशी को, पाँचवाँ कार्तिक कृष्णा द्वादशी को, छठवाँ कार्तिक शुक्ला तृतीया को, सातवाँ कार्तिक शुक्ला एकादशी को, आठवाँ मार्गशीर्ष कृष्णा एकादशी को और नौवाँ मार्गशीर्ष शुक्ला तृतीया को करना चाहिए। मुक्तावली व्रत में ब्रह्मचर्य सहित अणुव्रतों का पालन करना चाहिए। रात में उपवास के दिन जागरण कर धर्मार्जन करना चाहिए। ''**ॐ ह्रीं वृषभजिनाय नमः**'' इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

बृहत् मुक्तावली व्रत 34 दिनों का होता है। इस व्रत में प्रथम एक उपवास कर पारणा, पुनः दो उपवास के पश्चात् पारणा, तीन उपवास के पश्चात् पारणा, चार उपवास के पश्चात् पारणा तथा पाँच उपवास के पश्चात् पारणा करनी चाहिए। अब चार उपवास के पश्चात् एक पारणा, तीन उपवास के पश्चात् पारणा, दो उपवास के पश्चात् पारणा एवं एक उपवास के पश्चात् पारणा करनी होती है। इस प्रकार कुल 25 दिन उपवास तथा 9 दिन पारणाएँ, इस प्रकार कुल 34 दिनों तक व्रत किया जाता है। इस व्रत में लगातार दो, तीन, चार और पाँच उपवास करने होते

हैं, दिन धर्मध्यानपूर्वक बिताने होते हैं तथा रात को जागकर आत्मचिंतन करते हुए व्रत की क्रियाएँ सम्पन्न की जाती हैं। इस व्रत का फल विशेष बताया गया है। इस प्रकार निरवधि व्रतों का अपने समय पर पालन करना चाहिए, तभी आत्मोत्थान हो सकता है। बृहद् मुक्तावली में "**ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं**" इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

बृहद् मुक्तावली और लघु मुक्तावली व्रत के मध्य में एक मध्यम मुक्तावली व्रत भी होता है। यह 62 दिन में पूर्ण होता है, इसमें 49 उपवास और 13 पारणाएँ होती हैं। मध्यम मुक्तावली व्रत में भी बृहद् मुक्तावली व्रत के मंत्र का जाप करना चाहिए। पारणा के दिन तीनों ही प्रकार के मुक्तावली व्रत में भात ही लेना चाहिए।

(79) द्विकावली व्रत

द्विकावली व्रत में दो उपवास के अनन्तर पारणा की जाती है। इसमें कुल 54 उपवास होते हैं और 54 दिन ही पारणा करनी पड़ती है। इसमें तिथि आदि का कोई नियम नहीं है। मतान्तर से द्विकावली व्रत के प्रत्येक महीने के कृष्णपक्ष में चतुर्थी-पंचमी, अष्टमी-नवमी, चतुर्दशी-अमावस्या और शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा-द्वितीया, पंचमी-षष्ठी, अष्टमी-नवमी और चतुर्दशी-पूर्णिमा का उपवास करना चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक महीने में 7 उपवास तथा 7 एकाशन करने चाहिए। वर्ष में इस प्रकार 84 उपवास और 84 पारणाएँ होती हैं।

विवेचन— द्विकावली व्रत की विधि के संबंध में दो मत प्रचलित हैं। पहला मत इस व्रत के लिए तिथि का कोई बंधन नहीं मानता है। इसमें कभी भी दो दिन उपवास कर पारणा करनी चाहिए। इस प्रकार 54 उपवास और 54 पारणाएँ करके व्रत को समाप्त करना चाहिए। 54 उपवास 162 दिन में सम्पन्न किये जाते हैं। उपवास करने वाला प्रथम दो दिन उपवास, एक दिन पारणा पुनः दो दिन उपवास, एक दिन पारणा, इसी प्रकार आगे भी करता जाता है। इस प्रकार एक उपवास के सम्पन्न करने में तीन दिन लगते हैं, अतः 54 उपवास के 54×3=162 दिन हुए। उपवास के दिनों में शीलव्रत का पालन करते हुए तीनों समय प्रतिदिन प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल '**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय सर्वशांतिकराय सर्वक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय श्रीं क्लीं नमः स्वाहा**' मंत्र का जाप करना चाहिए। यह मंत्र तीनों संध्याकालों में कम से कम 108 बार जपा जाता है।

उपवास और पारणा के लिए किसी तिथि का नियम नहीं है; फिर भी यह व्रत श्रावण मास से आरंभ किया जाता है। यह माघ मास की द्वादशी तक किया जाता है। कुछ लोग इसे वर्ष भर करने की सम्मति देते हैं, उनका कहना है कि श्रावण मास से आरंभ कर दो दिन उपवास, एक दिन पारणा इस क्रम से वर्षान्त तक व्रत करते रहना चाहिए।

द्विकावली व्रत की विधि के संबंध में दूसरी मान्यता यह है कि इस व्रत में प्रत्येक मास में सात उपवास किये जाते हैं, ये सात उपवास 21 दिन में सम्पन्न होते हैं। दो दिन व्रत रखने के उपरान्त पारणा करनी होती है, इस प्रकार 21 दिन में सात उपवास करने के पश्चात् महीने के शेष दिनों में एकाशन करना चाहिए। प्रथम उपवास कृष्ण पक्ष में चतुर्थी-पंचमी का किया जायेगा। षष्ठी को पारणा की जायेगी, सप्तमी को एकाशन करने के उपरान्त अष्टमी और नवमी को व्रत किया जायेगा। इस व्रत की दशमी को पारणा होगी, पुनः एकादशी, द्वादशी और त्रयोदशी को एकाशन करना होगा। चतुर्दशी और अमावस्या को उपवास, पुनः शुक्लपक्ष में प्रतिपदा और द्वितीया का उपवास करना होगा। इस प्रकार व्रत में एक बार चार दिन का उपवास पड़ेगा। एक पारणा बीच की लुप्त हो जायेगी। चार दिनों के व्रत के उपरान्त तृतीया और चतुर्थी को एकाशन करना होगा। पंचमी और षष्ठी के उपवास के अनन्तर, सप्तमी को पारणा, पश्चात् अष्टमी और नवमी को उपवास करने पर दशमी, एकादशी, द्वादशी और त्रयोदशी को एकाशन करना चाहिए।

प्रत्येक महीने का अंतिम उपवास शुक्लपक्ष में चतुर्दशी और पूर्णिमा का करना होगा।

कुछ लोग इस व्रत को शुक्लपक्ष से आरंभ करने के पक्ष में हैं। शुक्ल पक्ष से आरंभ करने पर प्रथम बार चार दिन तक लगातार उपवास नहीं पड़ता है, क्योंकि चतुर्दशी और पूर्णिमा के उपवास के पश्चात् कृष्णपक्ष में चतुर्थी-पंचमी को उपवास करने का विधान है। परन्तु इस क्रम में भी दूसरी आवृत्ति में चार उपवास करना पड़ेगा।

द्वितीय मान्यता में द्विकावली व्रत के लिए तिथियाँ निर्धारित की गई हैं। अतः इसमें भी छः घटी प्रमाण तिथि के होने पर ही व्रत करना होगा। इस व्रत की जाप-विधि सर्वत्र एक सी ही है। कषाय और विकथाओं के त्याग पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। द्विकावली व्रत का फल स्वर्ग-मोक्ष की प्राप्ति होना है। जो श्रावक इस व्रत का अनुष्ठान ध्यानपूर्वक करता है तथा प्रमाद का त्याग कर देता है, वह शीघ्र ही अपना आत्मकल्याण कर लेता है।

यों तो सभी व्रतों द्वारा आत्मकल्याण करने में व्यक्ति समर्थ है, पर इस व्रत के पालन करने से समस्त मनोवाञ्छाएँ पूरी हो जाती हैं। किसी संकट या विपत्ति को दूर करने के लिए भी यह व्रत किया जाता है। कुछ लोग इसे संकटहरण व्रत भी कहते हैं।

लघु व्रत—यह व्रत 120 दिन में समाप्त होता है, इसमें 24 बेला, 48 एकाशन और 24 पारणा, इस प्रकार 120 दिन लगते हैं। प्रथम बेला, पुनः पारणा, तत्पश्चात् दो एकाशन करें। इस प्रकार इस व्रत को पूर्ण करना चाहिए। इस व्रत में णमोकार मंत्र का जाप या पूर्वोक्त बृहद् द्विकावली मंत्र का जाप करना चाहिए।

(80) एकावली व्रत

किंनाम एकावलीव्रतम्? कथं च विधीयते व्रतिकैः? अस्य किं फलम्? उच्यते-एकावल्यामुपवासा एकान्तरेण चतुरशीतिः कार्याः, न तु तिथ्यादिनियमः। इदं स्वर्गापवर्गफलप्रदं भवति। इति निरवधिव्रतानि।।

अर्थ—एकावली व्रत क्या है? व्रती व्यक्तियों के द्वारा यह कैसे किया जाता है? इसका फल क्या है? आचार्य कहते हैं कि एकावली व्रत में एकान्तर रूप से उपवास और पारणाएँ की जाती हैं, इसमें चौरासी उपवास तथा चौरासी पारणाएँ की जाती हैं। तिथि का नियम इसमें नहीं है। इस व्रत के पालने से स्वर्ग-मोक्ष की प्राप्ति होती है।

विवेचन—एकावली व्रत की विधि दो प्रकार देखने को मिलती है। प्रथम प्रकार की विधि आचार्य-द्वारा प्रतिपादित है, जिसके अनुसार किसी तिथि आदि का नियम नहीं है। यह कभी भी एक दिन उपवास, अगले दिन पारणा, पुनः उपवास, पुनः पारणा, इस प्रकार चौरासी उपवास करने चाहिए। चौरासी उपवासों में चौरासी ही पारणाएँ होती हैं। इस व्रत को प्रायः श्रावण मास से आरंभ करते हैं। व्रत के दिनों में शीलव्रत और पञ्चाणुव्रतों का पालन करना आवश्यक है।

दूसरी विधि यह है कि प्रत्येक महीने में सात उपवास करने चाहिए, शेष एकाशन, इस प्रकार एक वर्ष में कुल चौरासी उपवास करने चाहिए। प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी, अष्टमी और चतुर्दशी एवं शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, पञ्चमी, अष्टमी और चतुर्दशी तिथियों में उपवास करना चाहिए। उपवास के अगले और पिछले दिन एकाशन करना आवश्यक है। शेष दिनों में भोज्य वस्तुओं की संख्या परिगणित कर दोनों समय भी आहार ग्रहण किया जा सकता है। इस व्रत में णमोकार मंत्र का जाप करना चाहिए।

(81) रत्नावली व्रत

इस व्रत में भी आश्विन शुक्ला तृतीया, पञ्चमी, अष्टमी तथा कार्तिक कृष्णा द्वितीया, पञ्चमी और अष्टमी इस प्रकार प्रत्येक महीने में छः उपवास करने चाहिए। बारह महीनों में कुल 72 उपवास उपर्युक्त तिथियों में ही करने होते हैं। यह द्वादश मासवाली रत्नावली है। सावधिक मासिक रत्नावली व्रत नहीं होता है।

विवेचन—रत्नावली व्रत में मास गणना अमावस्या से ग्रहण की गई है। अमान्त से लेकर दूसरे अमान्त एक मास माना जाता है। व्रत का आरंभ आश्विन के अमान्त के पश्चात् किया जाता है तथा कनकावली और रत्नावली दोनों व्रतों के लिए वर्षगणना आश्विन के अमान्त से ग्रहण की जाती है। रत्नावली व्रत मासिक नहीं होता है, वार्षिक ही किया जाता है। प्रत्येक महीने में उपर्युक्त तिथियों में छः उपवास होते हैं, इस प्रकार एक वर्ष में कुल 72 उपवास हो जाते हैं। उपवास के दिन अभिषेक, पूजन आदि कार्य पूर्ववत् ही किये जाते हैं। **'ॐ ह्रीं त्रिकालसंबंधिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः'** इस मंत्र का जाप इस व्रत में उपवास के दिन करना चाहिए।

(82) पुरन्दर व्रत

अथ पुरन्दरव्रतमाह-यत्र तत्र क्वचिन्मासे समारभ्य शुक्लपक्षे प्रतिपदमारभ्याष्टमीपर्यन्तं कार्यम्। अत्र प्रतिपदष्टम्योः प्रोषधं शेषमेकभुक्तञ्च वा एकान्तरेण व्रतं कार्यम्। एतद्व्रतमनियतमासिकं नियतपाक्षिकं द्वादशमासिकं ज्ञेयम्। फलञ्चैतत्—

दारिद्र्यमृगशार्दूलं मूलं मोक्षश्च निश्चलम्।
पुरन्दरविधिं विद्धि सर्वसिद्धिप्रदं नृणाम्।।1।।

अर्थ—पुरन्दर व्रत का स्वरूप कहते हैं—किसी भी महीने में शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से अष्टमी तक पुरन्दर व्रत का पालन किया जाता है। प्रतिपदा और अष्टमी का प्रोषध तथा शेष दिनों में एकाशन अथवा एकान्तर से उपवास और एकाशन करने चाहिए अर्थात् प्रतिपदा का उपवास द्वितीया का एकाशन, तृतीया उपवास चतुर्थी का एकाशन, पञ्चमी का उपवास षष्ठी का एकाशन, सप्तमी का उपवास और अष्टमी का एकाशन किये जाते हैं। यह व्रत अनियत मासिक और नियत पाक्षिक है, क्योंकि इसके लिए कोई भी महीना निश्चित नहीं है पर शुक्ल पक्ष निश्चित है। इसका फल निम्न है—

पुरन्दर व्रत दरिद्रतारूपी मृग को नष्ट करने के लिए सिंह के समान है और मोक्षरूपी लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए मूल कारण है अर्थात् इस व्रत के पालन करने से निश्चय ही मोक्षलक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा यह व्रत मनुष्यों को सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान करता है। अभिप्राय यह है कि पुरन्दर व्रत का विधिपूर्वक पालन करने से रोग, शोक, व्याधि, व्यसन सभी दूर हो जाते हैं तथा कालान्तर में परम्परा से निर्वाण की प्राप्ति होती है।

विवेचन—क्रियाकोष में बताया गया है कि पुरन्दर व्रत में किसी भी महीने की शुक्ला प्रतिपदा से लेकर अष्टमी तक लगातार आठ दिन का प्रोषध करना चाहिए। आठों दिन घर का समस्त आरंभ त्यागकर जिनालय में भगवान जिनेन्द्र का अभिषेक, पूजन, आरती एवं स्तवन आदि करने चाहिए। आठ दिन के उपवास के पश्चात् नवमी तिथि को पारणा करने का विधान है। यह काम्य व्रत है, दरिद्रता एवं रोग-शोक को दूर करने के लिए किया जाता है। व्रत के दिनों में रात्रि को धर्मध्यान करना, रात्रि जागरण करना, जिनेन्द्र प्रभु की आरती उतारना एवं भजन पढ़ना आदि क्रियाएँ भी करना आवश्यक है। रात के मध्यभाग में अल्प निद्रा लेना तथा जिनेन्द्र प्रभु के गुणों का चिंतन करना और सामायिक स्वाध्याय करना भी इस व्रत की विधि के भीतर परिगणित है। प्रोषध के दिनों में स्नान, तेलमर्दन, दन्तधावन आदि क्रियाओं का त्याग करना चाहिए। यदि आठ दिन तक लगातार उपवास करने की शक्ति न हो तो चार दिन के पश्चात्

पारणा कर लेनी चाहिए, पारणा में एक ही अनाज तथा एक ही प्रकार की वस्तु लेनी चाहिए। जिनमें उपर्युक्त प्रकार से व्रत करने की शक्ति न हो, वे अष्टमी और प्रतिपदा का उपवास करें तथा शेष दिन एकाशन करें। अन्य धार्मिक क्रियाएँ समान हैं। व्रत के दिनों में प्रतिदिन णमोकार मंत्र का एक हजार आठ बार जाप करना चाहिए। एकाशन के दिन तीन बार प्रातः, दोपहर और संध्या को एक हजार आठ बार णमोकार मंत्र का जाप करना चाहिए।

(83) लब्धि विधान व्रत की विधि

भाद्रपद, माघ और चैत्र मास में शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेकर तृतीया तक तीन दिन पर्यन्त लब्धि विधान व्रत किया जाता है। तिथि हानि होने पर एक दिन पहले से व्रत करना होता है और तिथि वृद्धि होने पर पहले वाला क्रम अर्थात् वृद्धिंगत तिथि छः घटी से अधिक हो तो एक दिन व्रत अधिक करना चाहिए।

विवेचन—भादों, माघ और चैत्र सुदी प्रतिपदा से तृतीया तक लब्धि विधान व्रत करने का नियम है। इस व्रत की धारणा पूर्णिमा को तथा पारणा चतुर्थी को करनी होती है। यदि शक्ति हो तो तीनों दिनों का अष्टमोपवास करने का विधान है। शक्ति के अभाव में प्रतिपदा को उपवास, द्वितीया को ऊनोदर एवं तृतीया को उपवास या कांजी-छाछ या माढ़भात लेना होता है। व्रत के दिनों में महावीर स्वामी की प्रतिमा का पूजन, अभिषेक किया जाता है तथा '**ॐ ह्रीं महावीरस्वामिने नमः**' मंत्र का जाप प्रतिदिन तीन बार किया जाता है। त्रिकाल सामायिक करने का भी विधान है। रात्रि जागरण तथा स्तोत्र पाठ, भजन-गान आदि भी व्रत के दिनों की रात्रियों में किये जाते हैं।

आवश्यकता पड़ने अथवा आकुलता होने पर मध्यरात्रि में अल्प निद्रा ली जा सकती है। कषाय और आरंभ परिग्रह को घटाना, विकथाओं की चर्चा का त्याग करना एवं धर्मध्यान में लीन होना आवश्यक है।

(84) कल्याण मंदिर व्रत विधि

कल्याण मंदिर स्तोत्र भगवान पार्श्वनाथ का स्तोत्र है। इसमें भी आदि में ''कल्याणमंदिरमुदारमवद्य...''

'कल्याण मंदिर' पद आ जाने से इसका कल्याणमंदिर स्तोत्र यह सार्थक नाम हो गया है। इसमें 44 काव्य हैं अतः 44 व्रत किये जाते हैं। व्रत के दिन श्री पार्श्वनाथ का अभिषेक करके कल्याण मंदिर यंत्र का भी अभिषेक करें और कल्याण मंदिर की पूजा या श्री पार्श्वनाथ की पूजा करें।

इसकी समुच्चय जाप्य निम्न प्रकार है-

ॐ ह्रीं कमठोपसर्गजिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

प्रत्येक 44 मंत्र - (एक-एक व्रत के दिन क्रम से 1-1 मंत्र की माला फेरें।)

1. **ॐ ह्रीं भवसमुद्रतरणे पोतायमानकल्याणमंदिरस्वरूपाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं कमठस्य धूमकेतूपमाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं त्रैलोक्यधीशाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं सर्वपीड़ानिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं सुखविधायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं अव्यक्तगुणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं भवाटवीनिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।**

8. ॐ ह्रीं कर्माहिबन्धमोचनाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
9. ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवहरणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
10. ॐ ह्रीं भवोदधितारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
11. ॐ ह्रीं हुतभुग्भयनिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
12. ॐ ह्रीं हृदयधार्यमाणभव्यगणतारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
13. ॐ ह्रीं कर्मचौरविध्वंसकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
14. ॐ ह्रीं हृदयाम्बुजान्वेषिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
15. ॐ ह्रीं जन्ममरणरोगहराय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
16. ॐ ह्रीं विग्रहनिवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
17. ॐ ह्रीं आत्मस्वरूपध्येयाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
18. ॐ ह्रीं परवादिदेवस्वरूपध्येयाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
19. ॐ ह्रीं अशोकप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
20. ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
21. ॐ ह्रीं अजरामरदिव्यध्वनिप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
22. ॐ ह्रीं चामरप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
23. ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
24. ॐ ह्रीं भामण्डलप्रातिहार्यप्रभास्वते श्री पार्श्वनाथाय नमः।
25. ॐ ह्रीं दुन्दुभिप्रातिहार्योपशोभिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
26. ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यविराजिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
27. ॐ ह्रीं वप्रत्रयविराजिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
28. ॐ ह्रीं पुष्पमालानिषेवितचरणाम्बुजाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
29. ॐ ह्रीं श्री संसारसागरतारकाय पार्श्वनाथाय नमः।
30. ॐ ह्रीं अद्भुतगुणविराजितरूपाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
31. ॐ ह्रीं श्री रजोवृष्ट्यक्षोभ्याय पार्श्वनाथाय नमः।
32. ॐ ह्रीं कमठदैत्यमुक्तवारिधाराक्षोभ्याय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
33. ॐ ह्रीं कमठदैत्यप्रेषितभूतपिशाचाद्यक्षोभ्याय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
34. ॐ ह्रीं त्रिकालपूजनीयाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
35. ॐ ह्रीं आपन्निवारकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
36. ॐ ह्रीं सर्वपराभवहरणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
37. ॐ ह्रीं सर्वमनर्थमथनाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
38. ॐ ह्रीं सर्वदुःखहराय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
39. ॐ ह्रीं जगज्जीवदयालवे श्री पार्श्वनाथाय नमः।
40. ॐ ह्रीं सर्वशांतिकराय श्रीजिनचरणाम्बुजाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
41. ॐ ह्रीं जगन्नायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
42. ॐ ह्रीं अशरणशरणाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
43. ॐ ह्रीं चित्तसमाधि सुसेविताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।
44. ॐ ह्रीं परमशांतिविधायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

(85) विषापहार व्रत विधि

विषापहार स्तोत्र श्री ऋषभदेव स्तोत्र है। यह श्री धनंजय कवि की रचना है। इस स्तोत्र के रचते ही उनके पुत्र का सर्पविष उतर गया था। इसलिए विषापहार यह इसका सार्थक नाम है। इसमें 40 व्रत किए जाते हैं भक्तामर के समान इन व्रतों को करना चाहिए।

समुच्चय मंत्र - **ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् 40 मंत्र -

1. **ॐ ह्रीं अर्हं स्वात्मस्थिताय केवलज्ञानकिरणैर्लोकालोकव्याप्ताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं अर्हं युगारंभे युगादिब्रह्मणे वृषभनामप्राप्ताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं अर्हं भाक्तिकस्योपरि कृपादृष्टिधारकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं अर्हं परमस्तुत्यगुणसमन्विताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं अर्हं हिताहितविवेकशून्यप्राणिनां बालवैद्याय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं अर्हं विनतजनाभिमतफलप्रदायकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं अर्हं रागद्वेषादिविरहितैकरूपादर्शवद् वीतरागाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं अर्हं गंभीरोत्तुंगविशालगुणविभूषिताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं अर्हं पुनरागमनविरहिताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
10. **ॐ ह्रीं अर्हं कामदेवभस्मसात्करणाय सर्वकालजाग्रते सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
11. **ॐ ह्रीं अर्हं समुद्रवत्स्वाभाविमहिमोपेताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
12. **ॐ ह्रीं अर्हं संसारसागरतरणोपायप्रदर्शकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
13. **ॐ ह्रीं अर्हं मूढजनहितोपदेशिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
14. **ॐ ह्रीं अर्हं विषापहारमण्यौषध-मंत्र-रसायनस्वरूपपर्यायवाचिनामधारकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
15. **ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजगद्हस्तकृतसामर्थ्यप्रापकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
16. **ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल-त्रैलोक्यज्ञानस्वामिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
17. **ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्रकृतप्रभुभक्तिस्वोपकारिगुणसमन्विताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
18. **ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजगत्प्रियत्वगुणसमन्विताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
19. **ॐ ह्रीं अर्हं स्वभक्तजनसर्ववांछितफलदानसमर्थाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
20. **ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरप्रकृतिनिमित्तप्राप्तविभवाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
21. **ॐ ह्रीं अर्हं मोहान्धकारत्रस्तजनहितोपदेशप्रकाशप्रदायिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
22. **ॐ ह्रीं अर्हं मूढजनप्रतिबोधकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
23. **ॐ ह्रीं अर्हं स्वयमनन्तगुणादिस्वरूपमाहात्म्यप्राप्ताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
24. **ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनविजयिमोहराजप्रभावमूलोन्मूलिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
25. **ॐ ह्रीं अर्हं केवलैकमोक्षमार्गदर्शिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
26. **ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंविपक्षगणरहिताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
27. **ॐ ह्रीं अर्हं ईप्सितफलप्रापकसमर्थाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
28. **ॐ ह्रीं अर्हं सत्यमार्गप्रतिबोधकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**
29. **ॐ ह्रीं अर्हं सर्वहितकरस्याद्वादवचनोपदेशिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।**

30. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजनहितकरदिव्यध्वनिप्रकटितकरणाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगुणस्वामिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं अभिमतफलप्राप्त्यर्थं प्रयत्नतत्परभाक्तिकजनमनोरथपूर्णीकराय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।
33. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापविरहितपरपुण्यहेतवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं शब्द-गंध-स्पर्श-रूप-रसविरहिताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं अदृष्टपारविश्वपारंगताय जिनपतये सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।
36. ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यदीक्षागुरवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।
37. ॐ ह्रीं अर्हं कालकलामतीताय विभवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।
38. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतिकर्त्रे याचनाविरहितायापि सर्वाभीप्सितफलप्रदायिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।
39. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मपोष्यशिष्याचार्याय परमकृपालवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।
40. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसौख्यं यशो धनं जयं दातुं समर्थाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

कालसर्पयोग निवारक

(86) श्री पार्श्वनाथ व्रत

इस व्रत में 108 उपवास या एकाशन करना है। इसमें तिथि का कोई नियम नहीं है अथवा प्रत्येक रविवार को भी यह व्रत कर सकते हैं।

व्रत के दिन भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक एवं पूजा करके प्रथम समुच्चय जाप्य करना पुनः एक-एक मंत्र की जाप्य करना। 108 व्रतों में क्रम से एक-एक जाप्य करना है। यह मंत्र सर्व मनोरथों को सफल करने वाला है। धान की वृद्धि, पुत्र की प्राप्ति आदि जिस भावना को लेकर यह व्रत किया जावेगा, वही भावना पूर्ण होगी।

व्रत पूर्णकर उद्यापन में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान कराना, 108 ग्रंथ दान देना, मुनि, आर्यिका आदि को पिच्छी-कमण्डलु आदि देना चाहिए।

समुच्चय जाप्य–

1. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं धरणेन्द्रपद्मावतीसेवितचरणकमलाय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय नमः।

अथवा

2. ॐ ह्रीं अर्हं धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

अथवा

3. ॐ ह्रीं कमठोपसर्गविजयिने श्रीपार्श्वनाथस्वामिने नमः कालसर्पयोगनिवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

108 व्रतों में प्रत्येक व्रत के 108 मंत्र–

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगाष्टमहाप्रातिहार्यलक्ष्मीसमन्विताय 'श्रीमान्' इति नाम विभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरङ्ग-बहिरंगपरिग्रहविरहितदिगम्बरमुद्रांकितमुनिगणस्वामिने 'निर्ग्रन्थराट्' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वज्ञादिगुणस्वरूपधनयुक्ताय 'स्वामी' इति गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशसभारूपगणाधिपतये 'गणेश' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजगत्स्वामिने 'विश्वनायक' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंस्वपुरुषार्थेन अर्हत्पदप्राप्ताय 'स्वयंभू' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं वृषनामधर्मेण शोभिताय 'वृषभ' गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं हितोपदेशेन समस्तजीवपोषणाय अनन्तगुणधारकाय 'भर्ता' इति गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं समस्तपदार्थस्वस्मिन् प्रतिबिंबीकरणाय 'विश्वात्मा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुनर्जन्मरहिताय 'अपुनर्भव' गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपदार्थावलोकिने 'सर्वदर्शी' इति गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनस्वामिने 'जगन्नाथ' गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रनाय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मस्वरूपात्मने 'धर्मात्मा' इति नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजनहितकारिणे 'धर्मबान्धव' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।14।।
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मप्राणस्वरूपाय 'धर्ममूर्ति' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।15।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वोत्कृष्टधर्मकारकाय 'महाधर्मकर्ता' इति नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।16।।
ॐ ह्रीं अर्हं परमधर्मदात्रे 'धर्मप्रद' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।17।।
ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टैश्वर्यसहिताय 'विभु' गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।18।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शरसगंधवर्ण स्वरूपमूर्तगुणविरहिताय 'अमूर्त' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।19।।
ॐ ह्रीं अर्हं परमोत्कृष्टपुण्यस्वरूपाय 'अत्यन्त पुण्यात्मा' इति नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।20।।
ॐ ह्रीं अर्हं अन्तविरहिताय 'अनन्त' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।21।।
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्यसहिताय 'अनन्तशक्तिमान्' इति नामधेयाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।22।।
ॐ ह्रीं अर्हं भव्यजनशरणदानकुशलाय 'शरण्य' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।23।।
ॐ ह्रीं अर्हं अखिललोकहितंकरस्वामिने 'विश्वलोकेश' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।24।।
ॐ ह्रीं अर्हं परमकारुणिकगुणान्विताय 'दयामूर्ति' गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।25।।
ॐ ह्रीं अर्हं महत्पदप्रदानसमर्थमहाव्रतसहिताय 'महाव्रती' इति गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।26।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वश्रेष्ठप्रशस्तवचनसहिताय 'वाग्मी' इति नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।27।।
ॐ ह्रीं अर्हं समवसरणसभायां चतुर्दिग्मुखप्रदर्शिताय 'चतुर्मुख' नामप्रसिद्धाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।28।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वकीयगुणवृद्धिंकराय 'ब्रह्मा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।29।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकर्मविप्रमुक्ताय 'निष्कर्मा' इति नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।30।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वप्रकारेण पञ्चेन्द्रियमनोविजयिने 'निर्जितेन्द्रिय' गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।31।।
ॐ ह्रीं अर्हं कामदेवमल्लविजयिने 'मारजित्' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।32।।
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तसंसारमूलकारणमिथ्यात्वविजयिने 'जितमिथ्यात्व' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।33।।
ॐ ह्रीं अर्हं घातिकर्मविघातकाय 'कर्मघ्न' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।34।।
ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युमहामल्लस्यान्तकरणकुशलाय 'यमान्तक' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।35।।
ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वस्त्रधारकनिर्विकारनग्नमुद्रांकिताय 'दिगम्बर' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।36।।
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानेन त्रिभुवनज्ञायकगुणान्विताय 'जगद्व्यापी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।37।।
ॐ ह्रीं अर्हं अखिलभव्यजनहितकारिणे 'भव्यबंधु' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।38।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यगौरवपदप्राप्ताय 'जगद्गुरु' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।39।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजनमनोरथपूर्णकरणनिपुणाय 'कामद' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जयिमदनरिपुमर्दकाय 'कामहंता' इति गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।41।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनजनातिप्रियसौंदर्यप्राप्ताय 'सुन्दर' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।42।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजनताल्हादनकराय 'आनन्ददायक' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।43।।
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुविजयिनामपि वर्याय 'जिनेन्द्र' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।44।।
ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानुबंध्यादिकर्मविजयिस्वामिने 'जिनराट्' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।45।।
ॐ ह्रीं अर्हं संपूर्णकेवलज्ञानापेक्षया सर्वत्र विश्वव्यापकाय 'विष्णु' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।46।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यपूज्यपरमपदे स्थिताय 'परमेष्ठी' इति नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।47।।
ॐ ह्रीं अर्हं अनादिकालाद् ज्ञानस्वभावाय 'पुरातन' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।48।।
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानैकज्योतिर्मयाय 'ज्ञानज्योतिः' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।49।।
ॐ ह्रीं अर्हं परमपावनस्वभावाय 'पूतात्मा' इति नामविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।50।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजगत्प्रसिद्धहरिहरादिष्वपि श्रेष्ठाय 'महान्' इति नामविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।51।।
ॐ ह्रीं अर्हं संसारिजिन-इन्द्रियैरग्राह्याय 'सूक्ष्म' गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।52।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्स्वामिने 'जगत्पति' नाम विभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।53।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वोदयीपरम-अहिंसामयी धर्मचक्रप्रवर्तकाय 'धर्मचक्रि' गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।54।।
ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तशान्तस्वभावपरिणताय 'प्रशान्तात्मा' इति गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।55।।
ॐ ह्रीं अर्हं कर्माञ्जनलेपविरहिताय 'निर्लेप' गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।56।।
ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यस्वभावापेक्षया कल—शरीरविरहिताय 'निष्कल' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।57।।
ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युमहामल्लविजयिने 'अमर' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।58।।
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धबुद्धस्वभाव-स्वात्मोपलब्धिस्वरूपाय 'सिद्ध' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।59।।
ॐ ह्रीं अर्हं परिपूर्णकेवलज्ञानयुक्ताय 'बुद्ध' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।60।।
ॐ ह्रीं अर्हं जगत्ख्यातिप्राप्तात्मने 'प्रसिद्धात्मा' इति गुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।61।।
ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरंग-बहिरंगविभूतिधारकत्रिजगत्पूज्याय 'श्रीपति' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।62।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रसिद्धपुरुषाणामपि श्रेष्ठपदप्राप्ताय 'पुरुषोत्तम' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।63।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वभाषामयीदिव्यध्वनिस्वामिने 'दिव्यभाषापति' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।64।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रकाशपुञ्जसुंदराय 'दिव्य' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।65।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वकीयशुद्धबुद्धनित्यनिरंजनस्वभावात् च्यवनविरहिताय 'अच्युत' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।66।।
ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यैश्वर्यसमन्वितशतेन्द्रनम्रीभूतकरणसमर्थ-परमैश्वर्यविभूषिताय 'परमेश्वर' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।67।।
ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरंगबहिरंगतपश्चरणबलेन तपनशीलात्मस्वभावाय 'महातपा' इति नामसहिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।।68।।
ॐ ह्रीं अर्हं कोटिसूर्यचन्द्रातिशायिप्रकाशसहिताय 'महातेजा' इति नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।69।।
ॐ ह्रीं अर्हं अन्तिमशुक्लध्यानपरिणतस्वभावाय 'महाध्यानी' इति गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।70।।
ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यकर्मभावकर्मनोकर्मरूपाञ्जनविरहिताय 'निरञ्जन' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।71।।
ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसामयीपरमधर्माम्नायकर्त्रे 'तीर्थकर्ता' इति नामविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।72।।
ॐ ह्रीं अर्हं हेयोपादेयविचारविज्ञाय 'विचारज्ञ' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।73।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वपरभेदविज्ञानबलेन सर्वोत्तमज्ञानप्राप्ताय 'विवेकी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।74।।
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशसहस्रशीलगुणविभूषिताय 'शीलभूषण' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।75।।
ॐ ह्रीं अर्हं अपरिमितमाहात्म्यसमन्विताय 'अनन्तमहिमा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वभव्यजीवहितकरणसमर्थाय 'दक्ष' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।77।।
ॐ ह्रीं अर्हं शरीरालंकरणकारणनानाभूषणविरहिताय 'निर्भूष' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।78।।
ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुनिवारणहेतुनानाविधायुध-शस्त्रविरहिताय 'विगतायुध' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।79।।
ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकज्ञायकाय 'सर्वज्ञ' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।80।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वचराचरजगदवलोकनकराय 'सर्वदृक्' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।81।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजनहितैषिणे 'सार्व' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।82।।
ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तसौम्यस्वभावाय 'सुसौम्यात्मा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।83।।
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुविजयिजिनानां मुख्याय 'जिनाग्रणी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।84।।
ॐ ह्रीं अर्हं अपराजितादिचतुरशीतिलक्षमंत्रस्वरूपाय 'मंत्रमूर्ति' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।85।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदेवेषु श्रेष्ठमहापूजाप्राप्ताय 'महादेव' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय नमः।।86।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्णिकायदेवानामुपरि श्रेष्ठपरमोत्तमदेवपदप्राप्ताय 'देवदेव' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।87।।
ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तस्वच्छपवित्रहृदयाय 'अतिनिर्मल' नामप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।88।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकार्यपूर्णीकृताय 'कृतकृत्य' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।89।।
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशमहादोषविरहिताय 'अतिनिर्दोष' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।90।।
ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालकस्वरूपाय 'परंब्रह्मा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।91।।
ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयगुणधारकाय 'महागुणी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।92।।
ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य-परमौदारिकदेहसमन्विताय 'दिव्यदेह' विभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।93।।
ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयसौंदर्यगुणसमन्विताय 'महारूप' नामधारकाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।94।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वभावदृष्ट्या विनाशविरहिताय 'नित्य' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।95।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशक्तिमद्मृत्युमल्लविजयिने 'मृत्युंजय' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।96।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकार्यकरणसमर्थाय 'कृती' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।97।।
ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षपदप्रापणकारणसर्वयम-नियमसमन्विताय 'यमी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।98।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेण्यारोहणसमर्थयतीनामीश्वराय 'यतीश्वर' नामविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।99।।
ॐ ह्रीं अर्हं षट्कर्मरूपजगत्सृष्टि-उपदेशकाय 'स्रष्टा' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।100।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनभव्यजनस्तुतियोग्याय 'स्तुत्य' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।101।।
ॐ ह्रीं अर्हं अन्तरंगकर्ममलबहिरंगशरीरादिमलविरहितपवित्राय 'पूत' नामविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।102।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विधदेवगणशतेन्द्रपूजिताय 'अमरार्चित' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।103।।
ॐ ह्रीं अर्हं समस्तविद्यानां स्वामिने 'विद्येश' नामसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।104।।
ॐ ह्रीं अर्हं मनोवचनकाययोगनिमित्तात्मप्रदेश-परिष्पंदनक्रियाविरहिताय 'निष्क्रिय' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।105।।
ॐ ह्रीं अर्हं दशलक्षण-रत्नत्रय-दयामय-वस्तुस्वभावरूपधर्मसमन्विताय 'धर्मी' इति नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।106।।
ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजातबालकवन्निर्विकाररूपधारकाय 'जातरूप' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।107।।
ॐ ह्रीं अर्हं मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानिनां सयोग्ययोगिकेवलिनामपिश्रेष्ठतमाय भव्यभाक्तिकजनानां ईप्सितकेवलज्ञान-लक्ष्मीप्रदानकुशलाय 'विदांवर' नामविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।।108।।

(87) त्रैलोक्य जिनालय व्रत

तीनलोक में अकृत्रिम–शाश्वत जिनमंदिर आठ कोटि–करोड़, छप्पनलाख, सत्तानवे हजार, चार सौ इक्यासी होते हैं। इनमें से अधोलोक में 7 करोड़ 72 लाख जिनमंदिर हैं। मध्यलोक में 458 जिनमंदिर हैं और ऊर्ध्वलोक में 84 लाख 97 हजार 23 जिनमंदिर हैं। व्यन्तर देवों के असंख्यात जिनमंदिर हैं एवं ज्योतिर्वासी देवों के भी असंख्यात जिनमंदिर हैं। इन दोनों की संख्या न कर सकने से उपर्युक्त मंदिरों की गणना में इनकी संख्या नहीं आ पाती है।

यहाँ तीनों लोकों के अकृत्रिम जिनमंदिरों के 48 व्रत हैं। उत्कृष्ट विधि उपवास है एवं जघन्यविधि एकाशन–एक बार शुद्ध भोजन करके व्रत करने की है। इस व्रत में तिथि का कोई नियम नहीं है।

व्रत के दिन जिनप्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके तीन लोक यंत्र का अभिषेक करके त्रैलोक्य पूजा करना चाहिए। व्रत पूर्णकर उद्यापन में जिनप्रतिमा की प्रतिष्ठा कराना, 48 ग्रंथ मुनि, आर्यिका आदि को देना आदि यथाशक्ति दान करना चाहिए।

इनमें अधोलोक के भवनवासी देवों के दश भेदों की अपेक्षा दश व्रत हैं। मध्यलोक के 12 व्रत एवं व्यन्तर देवों के 8 भेदों की अपेक्षा 8 व्रत हैं। ज्योतिषीदेवों के 5 भेदों की अपेक्षा 5 व्रत हैं। ऊर्ध्वलोक के 12 व्रत हैं एवं एक सिद्धशिला का ऐसे 10+12+8+5+12+1=48 हो जाते हैं। इनका स्पष्टीकरण–

भवनवासी के असुरकुमारेन्द्र के 64 लाख जिनमंदिर का	**–1**
नागकुमार के 84 लाख मंदिर का	**–1**
सुपर्णकुमार के 72 लाख मंदिर का	**–1**
उदधिकुमार के 76 लाख मंदिर का	**–1**
स्तनित कुमार के 76 लाख मंदिर का	**–1**
विद्युत्कुमार के 76 लाख मंदिर का	**–1**
दिक्कुमार के 76 लाख मंदिर का	**–1**
अग्नि कुमार के 76 लाख मंदिर का	**–1**
वायु कुमार के 96 लाख मंदिर का	**–1 = 10 हो गये।**

मध्यलोक के 458 में–

पाँच मेरु के 80 जिनमंदिर का	**–1**
बीस गजदंत के 20 जिनमंदिर का	**–1**
दश जंबूवृक्षादि वृक्षों के 20 जिनमंदिर का	**–1**
अस्सी वक्षार के 80 जिनमंदिर का	**–1**
एक सौ सत्तर विजयार्ध के 170 जिनमंदिर का	**–1**
तीस कुलाचल के 30 जिनमंदिर का	**–1**
चार इष्वाकार के 4 जिनमंदिर का	**–1**
मानुषोत्तर के 4 जिनमंदिर का	**–1**
नंदीश्वर द्वीप के 52 जिनमंदिर का	**–1**
कुंडलगिरि के 4 जिनमंदिर का	**–1**
रुचकगिरि के 4 जिनमंदिर का	**–1**
ढाई द्वीप संबंधी कृत्रिम जिनमंदिरों का	**–1 = 12 हुए।**

व्यन्तर देवों के 8 भेदों के मंदिरों के 8–

किन्नर देवों के जिनमंदिरों का	–1
किंपुरुष देवों के जिनमंदिरों का	–1
महोरग देवों के जिनमंदिरों का	–1
गंधर्व देवों के जिनमंदिरों का	–1
यक्ष देवों के जिनमंदिरों का	–1
राक्षस देवों के जिनमंदिरों का	–1
भूत देवों के जिनमंदिरों का	–1
पिशाच देवों के जिनमंदिरों का	–1= 8 हो गये।

ज्योतिर्वासी के 5 भेदों के जिनमंदिरों के 5–

चन्द्रमा देवों के जिनमंदिरों का	–1
सूर्य देवों के जिनमंदिरों का	–1
ग्रह देवों के जिनमंदिरों का	–1
नक्षत्र देवों के जिनमंदिरों का	–1
तारा देवों के जिनमंदिरों का	–1 = 5 हो गये।

ऊर्ध्वलोक देवों के 12 व्रत–

सौधर्मेन्द्र के 32 लाख जिनमंदिरों का	–1
ईशानेन्द्र के 28 लाख जिनमंदिरों का	–1
सानत्कुमारेन्द्र के 12 लाख जिनमंदिरों का	–1
माहेन्द्रेन्द्र के 8 लाख जिनमंदिरों का	–1
ब्रह्मयुगल के 4 लाख जिनमंदिरों का	–1
लांतवयुगल के 50 हजार जिनमंदिरों का	–1
शुक्रयुगल के 40 हजार जिनमंदिरों का	–1
शतारयुगल के 6 हजार जिनमंदिरों का	–1
आनत-प्राणत, आरण–अच्युत के 700 जिनमंदिरों का	–1
नवग्रैवेयक के 309 जिनमंदिरों का	–1
नवअनुदिश के 9 जिनमंदिरों का	–1
पंचअनुत्तर के 5 जिन मंदिरों का	–1 = 12

एवं सिद्धशिला का 1–

ऐसे 10 +12+8+5+12+1=48 व्रत हुए हैं।

इनके मंत्र निम्न प्रकार हैं–

समुच्चय जाप्य – ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

अथवा –ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यसंबंधि-कृत्रिमाकृत्रिमसर्वजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

यह समुच्चय जाप्य-प्रत्येक व्रत में करनी चाहिए।

भवनवासी के जिनमंदिरों के 10 मंत्र

1. ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थितचतुःषष्टिलक्षजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थितचतुरशीतिलक्षजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थितद्वासप्ततिलक्षजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालय जिनबिंबेभ्यो नम;।
7. ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थितषट्सप्ततिलक्षजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थितषण्णवतिलक्षजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।

मध्यलोक के जिनमंदिरों के 12 मंत्र

11. ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं गजदन्तसंबंधि-विंशतिजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं जंबूवृक्षादिसंबंधि-दशजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं वक्षारपर्वतसंबंधि-अशीतिजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं विजयार्धपर्वतसंबंधि-सप्तत्यधिकशतजिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं कुलाचलपर्वतसंबंधि-त्रिंशद्जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
17. ॐ ह्रीं इष्वाकारपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
18. ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
19. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधि-द्वापंचाशद्जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
20. ॐ ह्रीं कुंडलवरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
21. ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः।
22. ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

व्यंतर देव जिनालयों के 8 मंत्र

23. ॐ ह्रीं मध्यलोके अंजनकद्वीपस्थितकिन्नरजातिव्यंतरदेवभवन-भवनपुरावाससंबंधि-संख्यातीतजिनालय-जिनबिंबेभ्यो नमः।

24. ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रधातुकद्वीपस्थितकिंपुरुषजातिव्यंतरदेवभवन-भवनपुरावाससंबंधि-असंख्यात-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

25. ॐ ह्रीं मध्यलोके सुवर्णद्वीपस्थितमहोरगजातिव्यंतरदेवभवनादिसंबंधि-असंख्यात-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

26. ॐ ह्रीं मध्यलोके मनःशिलकद्वीपस्थितगंधर्वजातिव्यंतरदेवभवनादिसंबंधि-असंख्यात-जिनालय-जिनबिंबेभ्यो नमः।

27. ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रद्वीपस्थितयक्षजातिव्यंतरदेवभवनादिसंबंधि-असंख्यातजिनालय-जिनबिंबेभ्यो नमः।

28. ॐ ह्रीं अधोमध्यलोके पंकभागस्थितराक्षसजातिव्यंतरदेवभवन-रजतद्वीपस्थितभवन-भवनपुरनानास्थल-स्थितावाससंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

29. ॐ ह्रीं अधोमध्यलोके खरभागस्थितभूतजातिव्यंतरदेवभवन-हिंगुलकद्वीपस्थितभवन-भवनपुरनानास्थल-स्थितावाससंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

30. ॐ ह्रीं मध्यलोके हरितालद्वीपस्थितपिशाचजातिव्यंतरदेवभवनादिसंबंधि-असंख्यातजिनालयजिन-बिंबेभ्यो नमः।

अथवा व्यंतरदेव जिनालयों के सरल 8 मंत्र

[23. ॐ ह्रीं किन्नरजातिव्यंतरदेवसंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

24. ॐ ह्रीं किंपुरुषजातिव्यंतरदेवसंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

25. ॐ ह्रीं महोरगजातिव्यंतरदेवसंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

26. ॐ ह्रीं गंधर्वजातिव्यंतरदेवसंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

27. ॐ ह्रीं यक्षजातिव्यंतरदेवसंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

28. ॐ ह्रीं राक्षसजातिव्यंतरदेवसंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

29. ॐ ह्रीं भूतजातिव्यंतरदेवसंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

30. ॐ ह्रीं पिशाचजातिव्यंतरदेवसंबंधि-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।]

ज्योतिष्कदेव जिनालयों के 5 मंत्र

31. ॐ ह्रीं मध्यलोके चन्द्रविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

32. ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

33. ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

34. ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

35. ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णकताराविमानस्थित-असंख्यातजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

वैमानिकदेव जिनमंदिरों के 12 मंत्र

36. ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रसंबंधि-द्वात्रिंशद्लक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

37. ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रसंबंधि-अष्टाविंशतिलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

38. ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्रसंबंधि-द्वादशलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

39. ॐ ह्रीं माहेन्द्र-इन्द्रसंबंधि-अष्टलक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

40. ॐ ह्रीं ब्रह्म-ब्रह्मोत्तरस्वर्गसंबंधि-चतुर्लक्षजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

41. ॐ ह्रीं लांतवकापिष्ठस्वर्गसंबंधि-पंचाशत्सहस्रजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

42. ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्रस्वर्गसंबंधि-चत्वारिंशत्सहस्रजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

43. ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसंबंधि-षट्सहस्रजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

44. ॐ ह्रीं आनतप्राणत-आरणाच्युतस्वर्गसंबंधि-सप्तशतकजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

45. ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकसंबंधि-नवोत्तरत्रिशतकजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

46. ॐ ह्रीं नवानुदिशसंबंधि-नवजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

47. ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरसंबंधि-पञ्चजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

सिद्धशिला का एक मंत्र

48. ॐ ह्रीं सिद्धशिलोपरिविराजमान-अनन्तानन्तसिद्धेभ्यो नमो नमः।

यह त्रैलोक्यजिनालय व्रत विधि पूर्ण हुई।

(88) मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत एवं मंत्र

व्रत विधि–जैनशासन में पर्वों की भांति ही अनादिकाल से व्रतों की परम्परा भी चली आ रही है जिनमें दो प्रकार के व्रत प्रचलित हैं-1. सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, आष्टान्हिका, रत्नत्रय आदि पर्वों में किये जाने वाले व्रत अनादि कहलाते हैं तथा रोहिणी, रविव्रत, पंचकल्याणक आदि व्रत सादि कहलाते हैं। इनमें ही अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के नाम से मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत भी विशेष महिमाशाली व्रत है। पुत्रप्राप्ति तथा अन्य इच्छित फल की प्राप्ति हेतु इस व्रत को किया जाता है। इस व्रत में 108 उपवास किये जाते हैं तथा व्रत वाले दिन 1-1 मंत्र की जाप दिन में तीन बार करना चाहिए। व्रत की उत्तम विधि उपवासपूर्वक है, मध्यम में जल आदि पेय वस्तु दिन में एक बार ली जाती है तथा दिन में एक बार शुद्ध भोजन करना एकाशन कहलाता है यह जघन्यविधि है।

इस व्रत को करने में तिथि का कोई बंधान नहीं है अपनी सुविधा के अनुसार महीने में कम से कम एक व्रत अवश्य करें तथा अधिक से अधिक जितने व्रत चाहें, कर सकते हैं।

व्रत को स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकाएँ सभी को अपनी शक्ति के अनुसार करना चाहिए। व्रत वाले दिन भगवान महावीर का अभिषेक-पूजन करें तथा भगवान महावीर का संक्षिप्त जीवनदर्शन आदि पढ़कर धर्मध्यान में दिन को व्यतीत करना चाहिए।

व्रत के उद्यापन में भगवान महावीर की प्रतिमा बनवाकर मंदिर में विराजमान करें, विश्वशांति महावीर विधान का आयोजन करें, मंदिर में यथोचित उपकरण आदि दान दें, भगवान महावीर से संबंधित साहित्य छपाकर वितरित करें तथा 108 लोगों को या कम से कम 24 लोगों को 3-3 फल वितरित करें।

इस व्रत की जाप्य निम्न प्रकार है–

समुच्चय जाप्य–**ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**

(प्रत्येक व्रत में निम्न मंत्रों की क्रम-क्रम से 1-1 जाप्य करें)

1. **ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं विनयसंपन्नताभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं शीलव्रतेषु अनतिचारभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं संवेगभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरणभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
10. **ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
11. **ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
12. **ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
13. **ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
14. **ॐ ह्रीं आवश्यक-अपरिहाणिभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
15. **ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**
16. **ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वभावनाबलेन तीर्थंकरपदप्राप्त श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।**

17. ॐ ह्रीं मातुः ऐरावतहस्तिस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं मातुः महावृषभस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं मातुः सिंहस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं मातुः मालायुगलस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं मातुः लक्ष्मीस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं मातुः चन्द्रस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं मातुः सूर्यस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं मातुः कलशयुगलस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
25. ॐ ह्रीं मातुः मीनयुगलस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
26. ॐ ह्रीं मातुः सरोवरस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
27. ॐ ह्रीं मातुः समुद्रस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
28. ॐ ह्रीं मातुः सिंहासनस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
29. ॐ ह्रीं मातुः देवविमानस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
30. ॐ ह्रीं मातुः धरणेंद्रभवनस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
31. ॐ ह्रीं मातुः रत्नराशिस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
32. ॐ ह्रीं मातुः निर्धूम-अग्निस्वप्नप्रदर्शकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
33. ॐ ह्रीं स्वेदरहितजन्मातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
34. ॐ ह्रीं मलरहितजन्मातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
35. ॐ ह्रीं क्षीरसमरुधिरजन्मातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
36. ॐ ह्रीं वज्रऋषभनाराचसंहननजन्मातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
37. ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानजन्मातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
38. ॐ ह्रीं अनुपमरूपजन्मातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
39. ॐ ह्रीं सुगंधशरीरजन्मातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
40. ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रलक्षणजन्मातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
41. ॐ ह्रीं अनंतबलजन्मातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
42. ॐ ह्रीं प्रियहितमधुरवचनजन्मातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
43. ॐ ह्रीं गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षताकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
44. ॐ ह्रीं आकाशगमनकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
45. ॐ ह्रीं प्राणिवधाभावकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
46. ॐ ह्रीं कवलाहाराभावकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
47. ॐ ह्रीं उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
48. ॐ ह्रीं चतुर्मुखकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
49. ॐ ह्रीं छायारहितकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
50. ॐ ह्रीं नेत्रनिमीलनरहितकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
51. ॐ ह्रीं सर्वविद्यास्वामिकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
52. ॐ ह्रीं नखकेशवृद्धिरहितकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
53. ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिकेवलज्ञानातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
54. ॐ ह्रीं सर्व-ऋतुफलपुष्पादिदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
55. ॐ ह्रीं धूलिकंटकादिनिवारणदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।

56. ॐ ह्रीं सर्वजनमैत्रीभावदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
57. ॐ ह्रीं रत्नमयीभूमिदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
58. ॐ ह्रीं गंधोदकवृष्टिदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
59. ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालिदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
60. ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानंददेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
61. ॐ ह्रीं अनुकूलवायुदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
62. ॐ ह्रीं जलभरितकूपादिदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
63. ॐ ह्रीं निर्मलाकाशदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
64. ॐ ह्रीं सर्वजनरोगशोकबाधारहितदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
65. ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टयदेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
66. ॐ ह्रीं चरणकमलतलस्वर्णकमलरचनादेवकृतातिशयसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
67. ॐ ह्रीं अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
68. ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
69. ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्यसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
70. ॐ ह्रीं द्वादशगणवेष्टितप्रातिहार्यसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
71. ॐ ह्रीं देवदुंदुभिप्रातिहार्यसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
72. ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
73. ॐ ह्रीं भामंडलप्रातिहार्यसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
74. ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरप्रातिहार्यसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
75. ॐ ह्रीं अनंतज्ञानगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
76. ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
77. ॐ ह्रीं अनंतसौख्यगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
78. ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
79. ॐ ह्रीं क्षुधामहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
80. ॐ ह्रीं तृषामहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
81. ॐ ह्रीं भयमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
82. ॐ ह्रीं क्रोधमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
83. ॐ ह्रीं चिंतामहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
84. ॐ ह्रीं जरामहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
85. ॐ ह्रीं रागमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
86. ॐ ह्रीं मोहमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
87. ॐ ह्रीं रोगमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
88. ॐ ह्रीं मृत्युमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
89. ॐ ह्रीं स्वेदमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
90. ॐ ह्रीं विषादमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
91. ॐ ह्रीं मदमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
92. ॐ ह्रीं रतिमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
93. ॐ ह्रीं विस्मयमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
94. ॐ ह्रीं निद्रामहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।

95. ॐ ह्रीं जन्ममहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
96. ॐ ह्रीं अरतिमहादोषरहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
97. ॐ ह्रीं इन्द्रकृतवीर-वर्द्धमाननामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
98. ॐ ह्रीं मुनिद्वयकृतसन्मतिनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
99. ॐ ह्रीं संगमदेवकृतमहावीरनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
100. ॐ ह्रीं रूद्रकृतमहतिमहावीरनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
101. ॐ ह्रीं महायोगीश्वरगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
102. ॐ ह्रीं द्रव्यसिद्धगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
103. ॐ ह्रीं अदेहगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
104. ॐ ह्रीं अपुनर्भवगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
105. ॐ ह्रीं ज्ञानैकचिद्गुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
106. ॐ ह्रीं जीवघनगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
107. ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धिरूपसिद्धनामसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
108. ॐ ह्रीं लोकाग्रगामुकगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।

(89) तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ व्रत विधि

चौबीसों तीर्थंकर के गर्भ-जन्मकल्याणक, दीक्षाकल्याणक, केवलज्ञानकल्याणक एवं निर्वाण-कल्याणक के तेईस तीर्थ हैं। यह उन्हीं तेईस तीर्थों के व्रत करने की विधि है एवं एक चौबीसवाँ व्रत अन्य महापुरुषों की निर्वाणभूमि एवं अतिशय क्षेत्रों का समूहरूप है। उनका स्पष्टीकरण—

1. **प्रथम तीर्थ अयोध्या**—प्रथम तीर्थंकर के 2 कल्याणक, अजित, अभिनंदन, सुमति और अनंतनाथ के 4-4 कल्याणक हुए हैं। यह शाश्वत तीर्थ है।

2. **श्रावस्ती**—यहाँ संभवनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

3. **कौशाम्बी**—यहाँ पद्मप्रभुनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं, यहाँ प्रभासगिरि पर्वत पर दीक्षा एवं केवलज्ञान माने हैं यह पर्वत कौशाम्बी में ही माना है।

4. **वाराणसी**—सुपार्श्वनाथ के 4 कल्याणक एवं पार्श्वनाथ के तीन कल्याणक हुए हैं।

5. **चंद्रपुरी**—यहाँ चन्द्रप्रभनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

6. **काकंदी**—यहाँ पुष्पदंतनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

7. **भद्रिकावती**—इसे 'भद्दिलपुर' भी कहते हैं यहाँ शीतलनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

8. **सिंहपुरी**—इसे सारनाथ कहते हैं, यहाँ श्रेयांसनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

9. **चंपापुरी**—यहाँ वासुपूज्य के पाँचों कल्याणक हुए हैं। यहाँ से कुछ दूर 'मंदारगिरि' पर्वत से मोक्ष माना है। यह पर्वत चंपापुरी के अन्तर्गत ही है। इस जन्मभूमि तीर्थ व्रत के साथ ही निर्वाणभूमि का व्रत भी हो जाता है। इसीलिए चंपापुरी को अलग से निर्वाणभूमि के व्रत में नहीं लिया है।

10. **कंपिलाजी**—इसे कांपिल्यपुरी भी कहते हैं, यहाँ विमलनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

11. **रत्नपुरी**—इसे नौराही या रौनाही भी कहते हैं, यहाँ धर्मनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

12. **हस्तिनापुर**—यहाँ भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरनाथ के चार-चार कल्याणक हुए हैं। ये तीनों तीर्थंकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव पद के धारक भी हुए हैं।

13. **मिथिलापुरी**–यहाँ मल्लिनाथ एवं नमिनाथ के चार-चार कल्याणक हुए हैं।

14. **राजगृही**–यहाँ पर श्रीमुनिसुव्रतनाथ भगवान के चार कल्याणक हुए हैं।

15. **शौरीपुर**–यहाँ पर श्री नेमिनाथ के गर्भ-जन्म ये दो कल्याणक हुए हैं।

16. **कुण्डलपुर**–यहाँ महावीर स्वामी के गर्भ, जन्म एवं दीक्षा ऐसे तीन कल्याणक हुए हैं।

यहाँ तक जन्मभूमियाँ हो चुकी हैं। अब दीक्षा भूमि एवं केवलज्ञान भूमि को बताते हैं।

17. **प्रयाग**–यहाँ भगवान ऋषभदेव ने वटवृक्ष के नीचे दीक्षा ली थी। पुनः इसी वटवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया था। महापुराण में इसे 'पुरिमतालपुर' का उद्यान कहा है।

18. **अहिच्छत्र**–यहाँ भगवान पार्श्वनाथ को केवलज्ञान हुआ है। शंबर नाम के ज्योतिषी देव जो कि 10वें भव पूर्व के 'कमठ' नाम से जाना जाता है, उसने प्रभु पर उपसर्ग किया था। पुनः धरणेन्द्र देव और उनकी पद्मावती देवी ने आकर प्रभु को मस्तक पर धारण कर पुनः मस्तक पर फणा का छत्र फैलाया था। तभी उपसर्ग दूर होते ही प्रभु को केवलज्ञान हो गया था।

19. **जृंभिकाग्राम**–इसे 'जमुई' भी कहते हैं। यहाँ ऋजुकूला नदी के किनारे महावीर स्वामी को केवलज्ञान हुआ है।

अब निर्वाणभूमि को कहते हैं–

20. **कैलाशपर्वत**–इसे अष्टापद भी कहते हैं। यहाँ से श्री ऋषभदेव ने निर्वाण प्राप्त किया है। भरत-बाहुबली आदि अनेक महापुरुषों ने भी मोक्ष प्राप्त किया है।

21. **सम्मेदशिखर**–यहाँ से अजितनाथ आदि बीस तीर्थंकरों ने मोक्ष प्राप्त किया है। यह शाश्वत तीर्थ है।

22. **गिरनार पर्वत**–यहाँ पर भगवान नेमिनाथ ने दीक्षा ली है। वह 'सिरसावन' नाम से प्रसिद्ध है। पुनः यहीं केवलज्ञान प्राप्त किया है। अनंतर यहीं से मोक्ष प्राप्त किया है। इस पर्वत के 'ऊर्जयंतगिरि' एवं 'रैवतकगिरि' नाम भी हैं। यहाँ निर्वाणस्थल पर इन्द्र ने वज्र से चरणचिन्ह उत्कीर्ण किये थे, ऐसा वर्णन शास्त्रों में आया है।

23. **पावापुरी**–यहाँ से भगवान महावीर स्वामी ने सरोवर के मध्य में स्थित शिला से मोक्ष प्राप्त किया है। यहाँ का कमल सहित सरोवर शास्त्रों में प्रसिद्ध है।

24. मांगीतुंगी आदि सिद्धक्षेत्र तथा महावीर जी आदि अतिशय क्षेत्रों का चौबीसवां व्रत है।

इस प्रकार इन चौबीस व्रतों को करना है।

व्रत विधि–प्रत्येक व्रत में उत्तम विधि उपवास है, मध्यम विधि अल्पाहार है और जघन्य विधि एक बार शुद्ध भोजन-एकाशन है। व्रत के दिन भगवान का अभिषेक-पूजन करके पंचकल्याणक तीर्थ पूजा करना चाहिए। पुनः क्रम से एक-एक व्रत में एक-एक मंत्र की माला फेरना चाहिए।

इस 'पंचकल्याणक तीर्थ व्रत' को करने वाले उन-उन तीर्थों की वंदना कर सैकड़ों-हजारों आदि उपवासों का फल प्राप्त करते हैं। इस जन्म में रोग, शोक, दुःख, दारिद्रय आदि को दूर कर सुख, शांति, संपत्ति, सन्तति आदि को प्राप्त करते हैं। पुनः परम्परा से स्वर्गादि वैभव को प्राप्त करते हुए पंचकल्याणक के स्वामी तीर्थंकर पद को भी प्राप्त कर सकते हैं। इन व्रतों का फल परम्परा से निर्वाण तो निश्चित ही है। यह व्रत आप सबके लिए उत्तम फलदायी हो, यही मंगल कामना है।

तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ व्रत के चौबीस मंत्र

समुच्चय जाप्य–**ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक-पवित्र अयोध्यादिपावापुरीपर्यंततीर्थ-क्षेत्रेभ्यो नमो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकर-गर्भजन्म-कल्याणक-अजित-अभिनंदन-सुमति-अनन्तनाथ गर्भ-जन्म-दीक्षा-केवलज्ञान कल्याणकपवित्र शाश्वत अयोध्या-तीर्थक्षेत्राय नमः।**

2. ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र श्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र कौशाम्बी-प्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणक-पार्श्वनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकल्याणकपवित्र वाराणसी तीर्थक्षेत्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र काकंदीतीर्थक्षेत्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणक-पवित्र भद्रिकावतीतीर्थक्षेत्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणक-पवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-निर्वाणकल्याणक-पवित्र चंपापुरी-मंदारगिरि-सिद्धक्षेत्राय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकर-गर्भ-जन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र कंपिलापुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र रत्नपुरी'तीर्थक्षेत्राय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ तीर्थंकरगर्भजन्म-दीक्षा-केवलज्ञान चतुश्चतुःकल्याणकपवित्र हस्तिनापुरी-तीर्थक्षेत्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-नमिनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षा-केवलज्ञानकल्याणकपवित्र मिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र राजगृहीतीर्थक्षेत्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मकल्याणकपवित्र शौरीपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षा-कल्याणकपवित्र कुण्डलपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकर-दीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक-पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर-केवलज्ञानकल्याणकपवित्र अहिच्छत्रतीर्थक्षेत्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर-केवलज्ञानकल्याणक-पवित्र जृंभिकाग्रामतीर्थक्षेत्राय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकर-निर्वाणकल्याणकपवित्र कैलाश-गिरिसिद्धक्षेत्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकर-दीक्षा-केवलज्ञान-निर्वाण-कल्याणकपवित्र गिरनारसिद्धक्षेत्राय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-संभवनाथ-अभिनंदननाथ-सुमतिनाथ-पद्मप्रभु-सुपार्श्व-चंद्रप्रभ-पुष्पदंत-शीतल-श्रेयांस-विमल-अनंत-धर्म-शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ-मल्लिनाथ-मुनिसुव्रतनाथ-नमिनाथ-पार्श्वनाथ-नामविंशति-तीर्थंकर निर्वाण-कल्याणकपवित्र श्रीसम्मेदशिखर शाश्वतसिद्धक्षेत्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर-निर्वाणकल्याणकपवित्र पावापुरी-सिद्धक्षेत्राय नमः।
24. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रस्थित मांगीतुंगीपर्वतादि-सिद्धक्षेत्र-महावीरजीपद्मपुरादि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः।

(90) जम्बूद्वीप व्रत विधि

जम्बूद्वीप के सुदर्शमेरु के 16 जिनमंदिर, गजदंत के 4, जंबू शाल्मली वृक्ष के 2, सोलहवक्षार पर्वत के 16, चौंतीस विजयार्ध पर्वत के 34 और छह कुलाचल के 6 ऐसे 16+4+2+16+34+6= 78 अठत्तर अकृत्रिम जिनमंदिर हैं। इनको लक्ष्य करके 78 उपवास करना उत्तम है, अल्पाहार करना मध्यम है और एक बार शुद्ध भोजन-एकाशन करना जघन्य व्रत है।

इस व्रत को तिथि से करने पर सुदर्शमेरु के 16 प्रतिपदा के 16, दो वृक्ष के द्वितीया के 2, चार गजदंत के चतुर्थी के 4, षट् कुलाचल के षष्ठी के 6, सोलह वक्षार के 16 अष्टमी के 16, चौंतीस विजयार्ध के 34 चौदश के 34 इस प्रकार इन तिथियों में व्रत कर सकते हैं। यदि बिना तिथि के करना है तो अष्टमी, चतुर्दशी आदि तिथियों में व्रतों को

करके 78 व्रत पूरे करने चाहिए। पुनः जंबूद्वीप विधान करके उद्यापन करे, शक्ति के अनुसार जिनप्रतिमा निर्माण कराकर जिनमंदिर बनवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, शास्त्रदान, 78-78 उपकरण दान आदि करके व्रत का उद्यापन पूर्ण करना चाहिए। व्रत के दिन जंबूद्वीप की पूजा करना चाहिए। यह पूजा जम्बूद्वीप पूजाञ्जलि में प्रकाशित है।

प्रत्येक व्रत में समुच्चय जाप्य निम्न प्रकार है–

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिअष्टसप्ततिजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

जम्बूद्वीप जिनमंदिर के 78 व्रत के 78 पृथक्-पृथक् मंत्र–

सुदर्शन मेरु के 16 जिनमंदिर के 16 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितउत्तरदिग्जिनालय- जिनबिम्बेभ्यो नमः।

चार गजदंतपर्वत जिनमंदिर के 4 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवद्गजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महासौमनसगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

दो वृक्षों के जिनमंदिर के 2 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-जंबूवृक्षस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शाल्मलिवृक्षस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

षट् कुलाचल जिनमंदिर के 6 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्थित-जिनालयाजिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्थित-जिनालयाजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रूक्मिपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरिपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

सोलह वक्षार पर्वत जिनमंदिर के 16 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

34 विजयार्ध के 34 मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुरम्यकाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
17. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
18. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
19. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
20. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
21. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

22. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- नलिनाविदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
23. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- कुमुदविदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
24. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- सरित्विदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
25. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- वप्राविदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
26. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- सुवप्राविदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
27. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- महावप्राविदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
28. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- वप्रकावतीविदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
29. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- गंधाविदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
30. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- सुगंधाविदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
31. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- गंधिलाविदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
32. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- गंधामालिनीविदेहस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
33. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- भरतक्षेत्रस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
34. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि- ऐरावतक्षेत्रस्थित- विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

(91) अट्ठाईस मूलगुण व्रत

व्रतविधि– साधु के 28 मूलगुणों के 28 व्रत किये जाते हैं। इन व्रतों में उपवास या एकाशन जैसी भी शक्ति हो, कर सकते हैं।

समुच्चय मंत्र– **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय अष्टाविंशतिमूलगुणेभ्यो नमः।**

पृथक्-पृथक् व्रत के मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय अहिंसामहाव्रताय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय सत्यमहाव्रताय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय अचौर्यमहाव्रताय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय ब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय अपरिग्रहमहाव्रताय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय ईर्यासमितये नमः।**
7. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय भाषासमितये नमः।**
8. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय एषणासमितये नमः।**
9. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय आदाननिक्षेपणसमितये नमः।**
10. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय उत्सर्गसमितये नमः।**
11. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय स्पर्शनेन्द्रियनिरोधव्रताय नमः।**
12. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय रसनेन्द्रियनिरोधव्रताय नमः।**
13. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय घ्राणेन्द्रियनिरोधव्रताय नमः।**
14. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय चक्षुरिन्द्रियनिरोधव्रताय नमः।**
15. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय श्रोत्रेन्द्रियनिरोधव्रताय नमः।**
16. **ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय समतावश्यकक्रियायै नमः।**

17. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय चतुर्विंशतिस्तवावश्यकक्रियायै नमः।
18. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय वंदनावश्यकक्रियायै नमः।
19. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय प्रतिक्रमणावश्यकक्रियायै नमः।
20. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय प्रत्याख्यानावश्यकक्रियायै नमः।
21. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय कायोत्सर्गावश्यकक्रियायै नमः।
22. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय केशलोंचमूलगुणाय नमः।
23. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय आचेलक्यमूलगुणाय नमः।
24. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय अस्नानमूलगुणाय नमः।
25. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय क्षितिशयनमूलगुणाय नमः।
26. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय अदंतधावनमूलगुणाय नमः।
27. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय स्थितिभोजनमूलगुणाय नमः।
28. ॐ ह्रीं सकलचारित्रलाभाय एकभक्तमूलगुणाय नमः।

(92) चारित्रलब्धिव्रत

व्रत विधि– यह मुनियों के तेरह प्रकार के चारित्र की लब्धि–प्राप्ति के लिये किया जाता है। इसमें पाँच महाव्रत, एक छठा अणुव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति के भेदों से यह व्रत 137 भेद से 137 व्रत रूप किया जाता है।

पाँच महाव्रत में अहिंसा महाव्रत के 14 भेद हैं, सत्य महाव्रत के 8, अचौर्य महाव्रत के 8, ब्रह्मचर्य महाव्रत के 20, परिग्रह त्याग महाव्रत के 24 भेद होते हैं। रात्रिभोजन त्याग छठा अणुव्रत 1 है। ईर्या समिति एक है। भाषा समिति के 10 भेद हैं। एषणासमिति के 46 भेद हैं। आदाननिक्षेपण समिति, उत्सर्ग समिति 1-1 हैं। मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति भी एक-एक हैं। अतः 14+8+8+20+24+1+1+10+46+1+1+1+1+1=137 भेद होते हैं।

इनमें आर्यिकाओं और श्राविकाओं के लिए ब्रह्मचर्य व्रत के मंत्रों के अंतर हैं उसे देखकर मंत्र जपना चाहिए।

इस व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य एक बार शुद्धभोजन लेकर एकाशन करना है। व्रत के दिन मंदिर में तीर्थंकर भगवंतों की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके चारित्र लब्धि व्रत की पूजा करें और क्रम से एक-एक मंत्र का जाप्य करें। व्रत की पूर्णता पर श्रावक-श्राविकायें चारित्रलब्धि विधान या रत्नत्रय विधान करके यथाशक्ति ग्रंथदान आदि देकर उद्यापन संपन्न करें। इस व्रत का फल नियम से इस भव में तथा आगे भव में मुनियों के चारित्र को ग्रहण कर मोक्ष प्राप्त करना है और परम्परा से संपूर्ण सांसारिक सुख भी प्राप्त होंगे।

(137 व्रतों के मंत्र)

समुच्चय मंत्र–ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये त्रयोदशविधसम्यक्चारित्रेभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

अहिंसा महाव्रत के 14 मंत्र

1. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये बादरैकेन्द्रियपर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
2. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये बादरैकेन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
3. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये सूक्ष्मैकेन्द्रियपर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।

4. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये सूक्ष्मैकेन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
5. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये द्वीन्द्रियपर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
6. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये द्वीन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
7. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये त्रीन्द्रियपर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
8. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये त्रीन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
9. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये चतुरिन्द्रियपर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
10. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये चतुरिन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
11. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये असंज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
12. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये असंज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
13. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये संज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः।
14. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये संज्ञिपंचेन्द्रियापर्याप्तजीवदयास्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाहिंसामहाव्रताय नमः

सत्यमहाव्रत के 8 मंत्र

15. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये भयनिमित्त-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध- सत्यमहाव्रताय नमः।
16. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये ईर्ष्यानिमित्त-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध- सत्यमहाव्रताय नमः।
17. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये स्वपक्षपुष्टि-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध- सत्यमहाव्रताय नमः।
18. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये पैशुन्य-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध- सत्यमहाव्रताय नमः।
19. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये क्रोधनिमित्त-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध- सत्यमहाव्रताय नमः।
20. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये लोभनिमित्त-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धसत्यमहाव्रताय नमः।
21. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये आत्मप्रशंसा-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध- सत्यमहाव्रताय नमः।
22. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये परनिंदा-असत्यविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध- सत्यमहाव्रताय नमः।

अचौर्य महाव्रत के 8 मंत्र

23. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये ग्रामादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाचौर्यमहाव्रताय नमः।
24. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये अरण्यादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाचौर्यमहाव्रताय नमः।
25. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये खलादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाचौर्यमहाव्रताय नमः।
26. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये एकान्तादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाचौर्यमहाव्रताय नमः।
27. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये अन्यत्रादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाचौर्यमहाव्रताय नमः।
28. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये उपधि-अदत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाचौर्यमहाव्रताय नमः।
29. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये आहारपानादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाचौर्यमहाव्रताय नमः।
30. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये पृष्ठग्रहणादत्तग्रहणविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाचौर्यमहाव्रताय नमः।

ब्रह्मचर्यमहाव्रत के 20 मंत्र (पुरुषों के लिए मंत्र)

31. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मानुषीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
32. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मानुषीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
33. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मानुषीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
34. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मानुषीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
35. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मानुषीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
36. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये देवांगनास्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
37. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये देवांगनारसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्य महाव्रताय नमः।

38. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवांगनाघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
39. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवांगनाचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
40. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवांगनाकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
41. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिर्यक्स्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
42. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिरश्चीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
43. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिरश्चीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
44. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिरश्चीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
45. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिरश्चीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
46. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
47. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तस्त्रीरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
48. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
49. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तस्त्रीचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
50. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तस्त्रीकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।

ब्रह्मचर्यव्रत के महिलाओं के लिए 20 मंत्र

ब्रह्मचर्यमहाव्रत के 20 मंत्र

31. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
32. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
33. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
34. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
35. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
36. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
37. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
38. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
39. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
40. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये देवकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
41. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिर्यक्स्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
42. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिर्यक्रसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
43. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिर्यग्घ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
44. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिर्यक्चक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
45. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये तिर्यक्कर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
46. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तपुरुषस्पर्शनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
47. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तपुरुषरसनेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
48. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तपुरुषघ्राणेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
49. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तपुरुषचक्षुरिन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।
50. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अचित्तपुरुषकर्णेन्द्रियविषयाब्रह्मविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धब्रह्मचर्यमहाव्रताय नमः।

परिग्रहत्याग महाव्रत के 24 मंत्र

51. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मिथ्यात्वाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
52. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये क्रोधकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्ध-अपरिग्रहमहाव्रताय नमः।

53. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मानकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
54. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये मायाकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
55. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये लोभकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
56. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये हास्यनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
57. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये रतिनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
58. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये अरतिनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
59. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये शोकनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
60. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये भयनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
61. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये जुगुप्सानोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
62. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये स्त्रीवेदनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
63. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये पुंवेदनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
64. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नपुंसकवेदनोकषायाभ्यन्तरपरिग्रहविरतिस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
65. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये द्विपदबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
66. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये चतुष्पदबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
67. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये क्षेत्रबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
68. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये धान्यबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
69. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये कुप्यबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
70. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये भांडबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
71. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये धनबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
72. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये यानबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
73. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये शयनबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।
74. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये आसनबाह्यपरिग्रहत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धापरिग्रहमहाव्रताय नमः।

रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत का 1 मंत्र

75. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये रात्रिभोजनत्यागस्वरूपाय नवकोटिविशुद्धाणुव्रताय नमः।

ईर्यासमिति का 1 मंत्र

76. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-ईर्यासमितये नमः।

भाषा समिति के 10 मंत्र

77. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-भावसत्यस्वरूपभाषासमितये नमः।
78. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-उपमासत्यस्वरूपभाषासमितये नमः।
79. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-व्यवहारसत्यस्वरूपभाषासमितये नमः।
80. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-प्रतीत्यसत्यस्वरूपभाषासमितये नमः।
81. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-संभावनासत्यस्वरूपभाषासमितये नमः।
82. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-जनपदसत्यस्वरूपभाषासमितये नमः।
83. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-संवृतिसत्यस्वरूपभाषासमितये नमः।
84. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-नामसत्यस्वरूपभाषासमितये नमः।
85. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-स्थापनासत्यस्वरूपभाषासमितये नमः।
86. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धये नवकोटिविशुद्ध-रूपसत्यस्वरूपभाषासमितये नमः।

एषणासमिति के 46 मंत्र

87. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये औद्देशिकनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धएषणासमितये नमः।
88. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये अध्यधिनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धएषणासमितये नमः।
89. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये पूतिनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धएषणासमितये नमः।
90. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मिश्रनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धएषणासमितये नमः।
91. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये स्थापितनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
92. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये बलिनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
93. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये प्रावर्तितनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
94. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये प्राविष्करणनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
95. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये क्रीतनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
96. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये प्रामृष्यनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
97. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये परिवर्तनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
98. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये अभिघटनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
99. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये उद्भिन्ननामोद्गमदोषरहित - नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
100. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मालारोहणनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
101. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये आच्छेद्यनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
102. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये अनीशार्थनामोद्गमदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।

(उत्पादन दोष रहित के 10 मंत्र)

103. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये धात्रीनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
104. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये दूतनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
105. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये निमित्तनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
106. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये आजीवनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
107. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये वतीपकनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
108. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये चिकित्सानामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
109. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये क्रोधकषायनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
110. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मानकषायनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
111. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मायाकषायनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
112. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये लोभकषायनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
113. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये पूर्वसंस्तुतिनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
114. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये पश्चात्संस्तुतिनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
115. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये विद्यानामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
116. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मंत्रनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
117. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये चूर्णनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
118. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये मूलकर्मनामोत्पादनदोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।

एषणा संबंधि 10 दोष रहित के 10 मंत्र

119. 103. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये शंकितनामैषणादोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
120. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये भ्रक्षितनामैषणादोषरहित- नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।

121. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये निक्षिप्तनामैषणादोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
122. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये पिहितनामैषणादोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
123. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये संव्यवहरणनामैषणादोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
124. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये दायकनामैषणादोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
125. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये उन्मिश्रनामैषणादोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
126. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये अपरिणतनामैषणादोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
127. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये लिप्तनामैषणादोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
128. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये छोप्तिनामैषणादोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।

संयोजनादि 4 दोष रहित के 4 मंत्र

129. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये संयोजनानामदोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
130. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये अप्रमाणनामदोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
131. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये अंगारनामदोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।
132. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये धूमनामदोषरहित-नवकोटिविशुद्धैषणासमितये नमः।

आदाननिक्षेपण समिति का 1 मंत्र

133. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये नवकोटिविशुद्धआदाननिक्षेपणसमितये नमः।

प्रतिष्ठापन समिति का 1 मंत्र

134. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये नवकोटिविशुद्धप्रतिष्ठापन समितये नमः।

तीनगुप्ति के 3 मंत्र

135. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये नवकोटिविशुद्ध-मनोगुप्तये नमः।
136. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये नवकोटिविशुद्ध-वचनगुप्तये नमः।
137. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रलब्धाये नवकोटिविशुद्ध-कायगुप्तये नमः।

(93) तेरहद्वीप जिनालय व्रत (मध्यलोक जिनालय व्रत)

इस व्रत में 458 उपवास या एकाशन करना है। इसमें तिथि का कोई नियम नहीं है।

व्रत के दिन तेरहद्वीप के अकृत्रिम जिनमंदिर की पूजा करके प्रथम समुच्चय जाप्य करना, पुनः एक-एक मंत्र की जाप्य करना। 458 व्रतों में क्रम से एक-एक जाप्य करना है। यह मंत्र सर्व मनोरथों को सफल करने वाला है। धन की वृद्धि, पुत्र की प्राप्ति आदि जिस भावना को लेकर यह व्रत किया जावेगा, वही भावना पूर्ण होगी।

समुच्चय जाप्य-

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा त्रयोदशद्वीपसंबंधि चतुःशताष्टपंचाशत्श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो नमः।

अथवा—**ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-चतुःशताष्टपंचाशत् जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

अथवा—**ॐ ह्रीं अर्हं मध्यलोकद्वीपसंबंधि-चतुःशताष्टपंचाशत् जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

जम्बूद्वीप जिनालय के 78 मंत्र

सुदर्शन मेरु के 16 जिनालय के 16 मंत्र–

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितपूर्वदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुभद्रशालवनस्थितउत्तरदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितपूर्वदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थितउत्तरदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितदक्षिणदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितपश्चिमदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।14।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।15।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थितउत्तरदिग्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।16।।

चार गजदंतपर्वत के 4 जिनालय के 4 मंत्र–

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-माल्यवद्‌गजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।17।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महासौमनसगजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।18।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।19।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।20।।

जम्बू-शाल्मलि दो वृक्षों के 2 जिनालय के 2 मंत्र–

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-जंबूवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।21।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।22।।

षट् कुलाचल के 6 जिनालय के 6 मंत्र–

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।23।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।24।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।25।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।26।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रूक्मिपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।27।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शिखरिपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।28।।

सोलह वक्षार पर्वत के 16 जिनालय के 16 मंत्र–

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।29।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।30।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।31।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।32।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।33।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।34।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।35।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।36।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।37।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।38।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।39।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।40।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-चन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।41।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।42।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।43।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।44।।

34 विजयार्ध के 34 जिनालय के 34 मंत्र–

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।45।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।46।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।47।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।48।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।49।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।50।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।51।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।52।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।53।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।54।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।55।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।56।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।57।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुरम्यकाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।58।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।59।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।60।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।61।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।62।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।63।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।64।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।65।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-नलिनाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।66।।
ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-कुमुदविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।67।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सरित्विदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।68।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।69।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।70।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।71।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।72।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।73।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।74।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।75।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।76।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।77।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।78।।

पूर्व धातकीखण्ड द्वीप जिनालय मंत्र

धातकी खण्डद्वीप के 2 इष्वाकार पर्वत जिनालय के 2 मंत्र–

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपसंबंधि-दक्षिणदिग्-इष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।79।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपसंबंधि-उत्तरदिग्-इष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।80।।

विजयमेरू के 16 जिनालय के 16 मंत्र–

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुभद्रशालवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।81।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।82।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।83।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुभद्रशालवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।84।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुनंदनवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।85।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।86।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।87।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुनंदनवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।88।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।89।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुसौमनसवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।90।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुसौमनसवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।91।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।92।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।93।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।94।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।95।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुपांडुकवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।96।।

चार गजदंत के 4 जिनालय के 4 मंत्र–

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवद्गजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।97।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महासौमनसगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।98।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।99।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।100।।

धातकी-शाल्मलि दो वृक्षों के 2 जिनालय के 2 मंत्र–

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-धातकीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।101।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।102।।

छह कुलाचलों के 6 जिनालयों के 6 मंत्र–

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।103।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।104।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।105।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।106।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रूक्मिपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।107।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरिपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।108।।

सोलह वक्षार पर्वत के 16 जिनालय के 16 मंत्र–

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।109।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।110।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।111।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयाजिनबिम्बेभ्यो नमः।।112।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।113।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।114।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।115।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।116।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।117।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।118।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।119।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।120।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।121।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।122।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।123।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।124।।

34 विजयार्ध के 34 जिनालय के 34 मंत्र–

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।125।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।126।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहस्थित-विजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।127।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।128।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।129।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।130।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।131।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।132।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।133।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।134।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।135।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।136।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।137।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुरम्यकाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।138।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।139।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।140।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।141।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।142।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।143।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।144।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।145।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।146।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कुमुदविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।147।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सरित्विदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।148।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।149।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।150।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।151।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।152।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।153।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।154।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।155।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।156।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।157।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।158।।

पश्चिम धातकीखंड द्वीप जिनालय मंत्र

अचलमेरु के 16 जिनमंदिर के 16 मंत्र—

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुभद्रशालवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।159।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।160।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।161।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुभद्रशालवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।162।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुनंदनवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।163।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।164।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।165।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुनंदनवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।166।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।167।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुसौमनसवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।।168।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुसौमनसवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।169।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।170।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।171।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।172।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।173।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुपांडुकवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।174।।

चार गजदंतपर्वत के 4 जिनालय के 4 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-माल्यवद्गजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।175।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महासौमनसगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।176।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।177।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।178।।

धातकी-शाल्मलि दो वृक्षों के 2 जिनालय के 2 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-धातकीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।179।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।180।।

षट् कुलाचल के 6 जिनालय के 6 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।181।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।182।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।183।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।184।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रूक्मिपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।185।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शिखरिपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।186।।

सोलहवक्षार पर्वत के 16 जिनालय के 16 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।187।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।188।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।189।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्थित-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।190।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।191।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।192।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।193।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्थित- जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।194।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।195।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्थित- जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।196।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्थित- जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।197।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।198।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-चन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थित- जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।199।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।200।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्थित- जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः ।201।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।202।।

34 विजयार्ध के 34 जिनालय के 34 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।203।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।204।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।205।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहस्थित-विजयार्धपर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।206।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।207।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।208।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।209।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।210।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।211।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।2121।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।213।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।214।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।215।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुरम्यकाविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।216।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।217।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।218।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।219।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।220।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।221।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।222।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।223।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनाविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।224।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कुमुदविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।225।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सरित्विदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।226।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।227।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।228।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।229।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।230।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।231।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।232।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।233।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।234।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।235।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्ध-पर्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।236।।

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप जिनालय मंत्र

पुष्करार्धद्वीप के दो इष्वाकारपर्वत जिनालय के 2 मंत्र–

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधि-दक्षिणदिग्-इष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।237।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधि-उत्तरदिग्-इष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।238।।

मन्दरमेरू के 16 जिनालय के 16 मंत्र–

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुभद्रशालवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।239।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।240।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।241।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुभद्रशालवनस्थितउत्तर-दिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।242।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुनंदनवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।243।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।244।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।245।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुनंदनवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।246।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।247।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुसौमनसवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।248।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुसौमनसवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।249।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।250।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।251।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।252।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।253।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मन्दरमेरुपांडुकवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।254।

चार गजदंत पर्वत के 4 जिनालय के 4 मंत्र–

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवद्गजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।255।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महासौमनसगजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।256।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।257।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।258।।

पुष्कर-शाल्मलि दो वृक्षों के 2 जिनालय के 2 मंत्र–

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्करवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।259।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।260।।

षट्कुलाचल के 6 जिनालय के 6 मंत्र–

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।261।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।262।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।263।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।264।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रुक्मिपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।265।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरिपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।266।।

सोलह वक्षारपर्वत के 16 जिनालय के 16 मंत्र—

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।267।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।268।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।269।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।270।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।271।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।272।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।273।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।274।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।275।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।276।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।277।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।278।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।279।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।280।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।281।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।282।।

34 विजयार्ध के 34 जिनालय के 34 मंत्र—

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।283।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।284।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।285।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।286।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।287।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।288।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।289।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।290।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।291।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।292।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।293।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।294।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।295।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुरम्यकाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।296।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।297।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।298।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।299।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।230।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।301।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।302।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।303।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।304।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कुमुदविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।305।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सरित्विदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।306।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।307।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।308।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।309।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।310।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।311।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।312।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।313।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।314।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।315।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।316।।

पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप जिनालय मंत्र

पाँचवे विद्युन्माली मेरु के 16 जिनालय के 16 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुभद्रशालवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।317।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।318।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।319।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुभद्रशालवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।320।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुनंदनवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।321।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।322।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।323।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुनंदनवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।324।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।325।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुसौमनसवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।326।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुसौमनसवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।327।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।328।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।329।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।330।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।331।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालिमेरुपांडुकवनस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।332।।

चार गजदंत पर्वत के 4 जिनालय के 4 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-माल्यवद्गजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।333।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महासौमनसगजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।334।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।335।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमादनगजदंतपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।336।।

पुष्कर-शाल्मलि दो वृक्षों के 2 जिनालय के 2 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्करवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।337।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।338।।

षट् कुलाचल के 6 जिनालय के 6 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-हिमवत्पर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।339।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाहिमवत्पर्वस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।340।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-निषधपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।341।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नीलपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।342।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रूक्मिपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।343।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शिखरिपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।344।।

सोलह वक्षार पर्वत के 16 जिनालय के 16 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चित्रकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।345।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।346।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।347।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-एकशैलकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।348।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।349।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वैश्रवणवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।350।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-अंजनवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।351।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आत्मांजनवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।352।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-श्रद्धावद्वक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।353।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विजटावद्वक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।354।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आशीविषवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।355।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुखावहवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।356।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-चन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।357।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सूर्यमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।358।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नागमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।359।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-देवमालवक्षारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।360।।

34 विजयार्ध के 34 जिनालय के 34 मंत्र–

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।361।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।362।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।363।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।364।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।365।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।366।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।367।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।368।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।369।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।370।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।371।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।372।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।373।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।374।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।375।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।376।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।377।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।378।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।379।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।380।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।381।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।382।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कुमुदविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।383।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सरित्विदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।384।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।385।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।386।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।387।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।388।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।389।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।390।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।391।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।392।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।393।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।394।।

मानुषोत्तर पर्वत के चार जिनालय के 4 मंत्र

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधि-पूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।395।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधि-दक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।396।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधि-पश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।397।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधि-उत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।398।।

नंदीश्वर द्वीप जिनालय मंत्र

नंदीश्वरद्वीप के पूर्व दिशा के 13 जिनालय के 13 मंत्र–

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदावापीमध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।399।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदावतीमध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।400।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदोत्तरावापीमध्यस्थितदधिमुख-पर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।401।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदिघोषावापीमध्यस्थितदधिमुख-पर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।402।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदावापीईशानकोणस्थितरतिकर-पर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।403।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदावापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।404।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदावतीवापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।405।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदावतीवापीनैऋत्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।406।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदोत्तरावापीनैऋत्यकोण-स्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।407।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदोत्तरावापीवायव्यकोणस्थित-रतिकर पर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।408।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदिघोषावापीवायव्यकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।409।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-नंदिघोषावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।410।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि-अंजनगिरिस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।411।।

नंदीश्वरद्वीप में दक्षिणदिशा के 13 जिनालय के 13 मंत्र—

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अरजावापीमध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।412।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-विरजावापीमध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।413।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अशोकावापीमध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।414।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-वीतशोकावापीमध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।415।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अरजावापीईशानकोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।416।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अरजावापीआग्नेयकोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।417।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-विरजावापीआग्नेयकोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।418।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-विरजावापीनैऋत्यकोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।419।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अशोकावापीनैऋत्यकोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।420।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अशोकावापीवायव्यकोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।421।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-वीतशोकावापीवायव्यकोण-स्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।422।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-वीतशोकावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।423।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थदक्षिणदिक्संबंधि-अंजनगिरिस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।424।।

नंदीश्वरद्वीप में पश्चिम दिशा के 13 जिनालय के 13 मंत्र—

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-विजयावापीमध्यस्थितदधि-मुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।425।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-वैजयंतीवापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।426।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-जयंतीवापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।427।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-अपराजितावापीमध्यस्थित-दधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।428।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-विजयावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।429।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-विजयावापी आग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।430।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-वैजयंतीवापीआग्नेयकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।431।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-वैजयंतीवापीनैऋत्यकोण-स्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।432।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-जयंतीवापीनैऋत्यकोण-स्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।433।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-जयंतीवापीवायव्य-कोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।434।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-अपराजितावापीवायव्यकोण-स्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।435।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-अपराजितावापीईशानकोण-स्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।436।।

ॐ ह्री नंदीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-अंजनगिरिस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।437।।

नंदीश्वरद्वीप में उत्तर दिशा के 13 जिनालय के 13 मंत्र–

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रम्यावापीमध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।438।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रमणीयावापीमध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।439।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सुप्रभावापीमध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।440।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सर्वतोभद्रावापीमध्यस्थितदधिमुखपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।441।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रम्यावापीईशानकोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।442।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रम्यावापीआग्नेयकोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।443।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रमणीयावापीआग्नेयकोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।444।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-रमणीयावापीनैऋत्य-कोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।445।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सुप्रभावापीनैऋत्य-कोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।446।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सुप्रभावापीवायव्यकोणस्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।447।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सर्वतोभद्रावापीवायव्यकोण-स्थितरतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।448।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सर्वतोभद्रावापीईशानकोणस्थित-रतिकरपर्वत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।449।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-अंजनगिरिस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।450।।

कुण्डलवर पर्वत के 4 जिनालय के 4 मंत्र

ॐ ह्रीं कुण्डलवरद्वीपसंबंधि-कुण्डलवरपर्वतस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।451।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरद्वीपसंबंधि-कुण्डलवरपर्वतस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।452।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरद्वीपसंबंधि-कुण्डलवरपर्वतस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।453।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवरद्वीपसंबंधि-कुण्डलवरपर्वतस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।454।।

रूचकवरपर्वत के 4 जिनालय के 4 मंत्र

ॐ ह्रीं रुचकवरद्वीपसंबंधि-रुचकवरपर्वतस्थितपूर्वदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।455।।

ॐ ह्रीं रुचकवरद्वीपसंबंधि-रुचकवरपर्वतस्थितदक्षिणदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।456।।

ॐ ह्रीं रुचकवरद्वीपसंबंधि-रुचकवरपर्वतस्थितपश्चिमदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।457।।

ॐ ह्रीं रुचकवरद्वीपसंबंधि-रुचकवरपर्वतस्थितउत्तरदिग्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।।458।।

(94) तेरहद्वीप व्रत (लघु)

तेरहद्वीपसंबंधी अकृत्रिम जिनमंदिरों के अतीव संक्षेप में तेरह व्रत करना है। किसी भी माह में, किसी भी तिथि को इन व्रतों को कर सकते हैं। व्रत के दिन तेरहद्वीप जिनालय पूजा करके प्रत्येक व्रत में एक-एक मंत्र का जाप्य करना है।

व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम में अल्पाहार व जघन्य में एक बार भोजन– एकाशन करना है।

समुच्चय जाप्य– **ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।**

व्रत पूर्ण कर हस्तिनापुर में निर्मित तेरहद्वीप जिनालय के दर्शन करके तेरहद्वीप विधान करना चाहिए एवं तेरह-तेरह उपकरण और शास्त्र मंदिर जी में रखना चाहिए।

1. **ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-सुदर्शनमेरुप्रमुख-अष्टसप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**
2. **ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-विजयमेरुप्रमुख-अष्टसप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**
3. **ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-अचलमेरुप्रमुख-अष्टसप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

4. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मंदरमेरुप्रमुख-अष्टसप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-विद्युन्मालीमेरुप्रमुख-अष्टसप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं चतुरिष्वाकारसंबंधि-चतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधि-द्वापंचाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं कुण्डलवरद्वीपस्थितकुण्डलवरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं रुचकवरद्वीपस्थितरुचकवरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधि-सप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधि-सप्तत्यधिकशतकर्मभूमिस्थित-सप्ततिशतसमवसरणमध्यविराजमान-तीर्थंकरपरमदेवेभ्यो नमो नमः।

तेरहद्वीप व्रत के लघु मंत्र–

1. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि-अष्टसप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीद्वीपसंबंधि-अष्टसप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीद्वीपसंबंधि-अष्टसप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धसंबंधि-अष्टसप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धसंबंधि-अष्टसप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं इष्वाकारसंबंधि-चतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधि-द्वापंचाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं कुण्डलवरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतसंबंधि-चतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधि-सर्वदेवभवनजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधि-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधि-सप्ततिशततीर्थंकरेभ्यो नमः।

(95) गणधरवलय व्रत विधि

व्रत विधि–गणधरवलय मंत्र श्री गौतमस्वामी के मुखकमल से निकले हुए अत्यधिक महिमाशाली मंत्र हैं, ये संपूर्ण ऋद्धि- सिद्धि को देने वाले और सर्व रोगों को तथा सर्व संकटों को हरने वाले हैं। ये 48 मंत्र हैं। इनके 48 व्रत होते हैं। उत्तम विधि उपवास एवं जघन्य एकाशन है। व्रत के दिन भगवंतों की प्रतिमा का अभिषेक करके गणधरवलय यंत्र का अभिषेक करें। पुनः गणधरवलय पूजा करके क्रम से 1-1 मंत्र का जाप्य करें। यह व्रत संपूर्ण मनोरथ को पूर्ण करने वाला है।

समुच्चय मंत्र-**ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं असि आ उसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं झ्रौं झ्रौं नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झ्रौं झ्रौं नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदिमहावीरवड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

(96) षट्खण्डागम व्रत विधि

युग की आदि में भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या में जन्म लिया। प्रजा को असि, मषि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प ऐसी षट् क्रियाओं का उपदेश देकर जीवनजीने की कला सिखाई, अनन्तर किसी समय वैराग्य को प्राप्त होकर इन्द्रों द्वारा लायी गई पालकी में बैठकर प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा लेकर एक हजार वर्ष के तपश्चरण के बाद प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे दिव्य केवलज्ञान प्राप्त किया, भगवान की दिव्यध्वनि खिरी जो कि सात सौ अट्ठारह भाषाओं में प्रसिद्ध है। प्रभु ऋषभदेव के समवसरण में उन्हीं के तृतीय पुत्र ऋषभसेन प्रथम गणधर हुए हैं, प्रथम पुत्र सम्राट् भरत चक्रवर्ती मुख्य श्रोता थे तथा पुत्री ब्राह्मी आर्यिकाओं में प्रधान गणिनी थीं। तभी से द्वादशांगरूप श्रुत अवतरित हुआ है।

यद्यपि यह द्वादशांगश्रुत विदेहक्षेत्र की अपेक्षा अनादि अनंत है तथापि भरत-ऐरावत क्षेत्र में चतुर्थकाल में तीर्थंकरों से अवतरित होने से सादि-सान्त भी है।

जब चतुर्थकाल में तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष थे, तभी अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी पावापुरी से कार्तिक कृष्णा अमावस्या को प्रातः प्रत्यूष बेला में निर्वाण को प्राप्त हुए हैं। उस दिन देवों ने निर्वाणकल्याणक

महोत्सव मनाकर अगणित दीप प्रज्ज्वलित करके दीपमालिका पर्व मनाया है पुनः उसी दिन सायंकाल में श्री गौतम गणधर को केवलज्ञान प्राप्त हुआ है। आज यह वीर निर्वाण संवत् 2536वाँ चल रहा है।

इससे पूर्व तीस वर्ष पहले भगवान महावीर को जृंभिका ग्राम के निकट ऋजुकूला नदी के किनारे दिव्य केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। फिर भी भगवान की दिव्यध्वनि नहीं खिरी थी पुनः राजगृही में विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर के समवसरण में युक्ति के द्वारा लाये गये गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति ब्राह्मण ने भगवान के शिष्यत्व को स्वीकार कर मुनि बनकर गणधर पद प्राप्त किया था, उसी क्षण भगवान की दिव्यध्वनि खिरी थी वह श्रावण कृष्णा प्रतिपदा का दिवस था, जो कि प्रथम देशना के रूप में ''वीर शासन जयंती पर्व'' के नाम से प्रसिद्ध है। उसी दिन श्री गौतम स्वामी ने द्वादशांग की रचना की थी।

इसलिए भावश्रुत और अर्थपदों के कर्ता तीर्थंकर महावीर स्वामी हैं और श्रुत पर्याय से परिणत श्री गौतम स्वामी द्रव्यश्रुत के कर्ता हैं। इन प्रथम गणधर ने संपूर्ण श्रुतज्ञान लोहार्य महामुनि को दिया। इन्होंने श्री जम्बूस्वामी को दिया। परिपाटी के क्रम से ये तीनों ही सकलश्रुत के धारक हुए हैं। क्रम-क्रम से इन तीनों के मोक्ष प्राप्ति के बाद विष्णु, नंदिमित्र, अपराजित, गोवर्द्धन और भद्रबाहु ये पाँचों ही आचार्य परिपाटी से चौदह पूर्व के धारी श्रुतकेवली हुए हैं।

तदनंतर विशाखाचार्य, प्रोष्ठिल आदि ग्यारह महामुनि परिपाटी क्रम से ग्यारह अंग और दश पूर्वों के ज्ञाता तथा शेष चारों पूर्वों के एकदेश ज्ञाता हुए हैं।

इसके बाद नक्षत्राचार्य आदि पाँच आचार्य ग्यारह अंगों और चौदह पूर्वों के एकदेश धारी हुए हैं। तदनंतर श्रीसुभद्र यशोभद्र, यशोबाहु और लोहार्य ये चारों ही आचार्य संपूर्ण आचारांग के धारक और शेष अंग तथा पूर्वों के एकदेश के धारक हुए हैं।

इसके बाद सभी अंग और पूर्वों का एकदेश ज्ञान आचार्य परम्परा से श्रीधरसेनाचार्य को प्राप्त हुआ है।

सौराष्ट्र-गुजरात-कठियावाड़ देश के गिरिनगर के निकट ऊर्जयंत पर्वत की चन्द्रगुफा में रहने वाले, अष्टांग महानिमित्त के पारगामी प्रवचन वत्सल ये श्रीधरसेनाचार्य द्वितीय अग्राणयीय पूर्व की पंचम वस्तु के चतुर्थ महाकर्म प्रकृति प्राभृत के ज्ञाता थे।[1] ''ऊर्जयंतगिरि की गुफा में'' यह वर्णन इंद्रनंदिकृत श्रुतावतार में वर्णित है। यथा—

देशे ततः सुराष्ट्रे गिरिनगरपुरान्तिकोर्जयंतगिरौ।
चन्द्रगुहाविनिवासी महातपाः परममुनिमुख्या[2]।।

इन धरसेनाचार्य को एक समय यह चिंता हुई कि आगे इन अंग-पूर्व के अंश के ज्ञान का विच्छेद हो जावेगा अतः इस ज्ञान को किन्हीं योग्य शिष्यों को देना चाहिए। उन दिनों दक्षिण देश में वेणाक नदी के निकट जैन साधुओं का पंचवर्षीय महासम्मेलन था। वहाँ पत्र देकर एक ब्रह्मचारी को भेजा। वहाँ उपस्थित आचार्यों ने श्री धरसेनाचार्य द्वारा प्रेषित पत्र को पढ़कर श्री धरसेनाचार्य के अभिप्राय को समझकर अच्छी तरह निर्णय करके दो योग्य शिष्यों को भेजा। ये दोनों मुनिराज श्रीधरसेन गुरु के पास आये, विधिवत् गुरुवंदना आदि करके अपने आने का हेतु बताया। श्री आचार्यदेव ने इनकी यथायोग्य परीक्षा करके उन्हें शुभ मुहूर्त में अध्ययन कराना प्रारंभ किया और कुछ ही दिनों में आषाढ़ शुक्ला एकादशी को ग्रंथ पूर्ण किया। तभी व्यंतर देवों ने आकर इन गुरु की और दोनों शिष्यों-मुनियों की भी विशेष पूजा की। इस देवों द्वारा की गई पूजा के अनंतर श्री आचार्यदेव ने एक मुनि का 'पुष्पदंत' एवं दूसरे मुनि का 'भूतबलि' नाम घोषित किया। इसके पूर्व इनके नाम 'सुबुद्धि' और 'नरवाहन' थे, ऐसा विबुधश्रीधर के श्रुतावतार में आया है।

पुनः गुरुदेव ने दोनों को वहाँ से विहार का आदेश दे दिया। 'गुरु आज्ञा अलंघनीय होती है' ऐसा सोचकर वे वहाँ से प्रस्थान कर अंकलेश्वर गुजरात में पहुँचे, वहाँ वर्षायोग धारण किया। अनंतर श्री पुष्पदंत मुनि ने बीस प्ररूपणा गर्भित सत्प्ररूपणा सूत्र 177 सूत्रों को लिखकर अपने शिष्य जिनपालित को पढ़ाकर पुनः उन सूत्रों को

1. षट्खण्डागम, धवला टीका समन्वित, पुस्तक 1, पृ. 68। 2. इन्द्रनंदि कृत श्रुतावतार-103।

देकर जिनपालित मुनि को श्री भूतबलि महामुनि के पास भेजा।

श्री पुष्पदंताचार्य भी अल्पायु हैं, ऐसा जानकर एवं उन सत्प्ररूपणा सूत्रों को देखकर अति प्रसन्न होकर श्री भूतबलि आचार्य ने ''महाकर्म प्रकृति प्राभृत'' का विच्छेद न हो, इस भावना से आगे 'द्रव्यप्रमाणानुगम' को आदि लेकर ग्रंथ रचना प्रारंभ कर दी। अतएव इस खण्ड सिद्धांत की अपेक्षा श्री पुष्पदंत और भूतबलि आचार्य भी श्रुत के कर्ता कहे गये हैं।[1]

जब यह षट्खण्डागम ग्रंथ सूत्ररूप में लिपिबद्ध होकर पूर्ण हुआ, तभी चतुर्विध संघ ने मिलकर बहुत ही महोत्सवपूर्वक श्रुत की महापूजा की थी। वह तिथि ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी थी, जो कि आज भी जैनसमाज में श्रुतपंचमी के नाम से प्रसिद्ध है और सभी जैन बंधु-स्त्री, पुरुष भक्तिभाव से शास्त्रों की पूजा करते हैं।

षट्खण्डागम व्रत

यह षट्खण्डागम ग्रंथ छह खण्डों में विभक्त है—1. जीवस्थान 2. क्षुद्रकबंध 3. बंधस्वामित्व विचय 4. वेदनाखण्ड 5. वर्गणाखण्ड और 6. महाबंध।

प्रारंभ के पाँच खण्डों पर श्रीवीरसेनाचार्यवर्य ने धवला टीका लिखी है तथा महाबंध ग्रंथराज पर 'महाधवला' नाम से टीका प्रसिद्ध है।

इससे पूर्व श्रीकुंदकुंददेव आदि अनेक आचार्यों ने टीकाएँ लिखी हैं ऐसा ग्रंथों में ही उल्लेख है, आज वे टीकाएँ हमें उपलब्ध नहीं हो रही हैं। इन धवला टीका समन्वित पाँच खण्डों का हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशन सोलह ग्रंथों में छप चुका है।

इसी धवला टीका को आधार बना करके तथा इस टीका के ही कुछ सार अंशों को ग्रहण कर एवं अन्य ग्रंथों के भी आधार लेकर मैंने सिद्धान्त चिन्तामणि टीका नाम से संस्कृत टीका लिखी है पुनः उनके व्रत को करना प्रारंभ किया है। आप सभी जिनागम भक्ति में ओतप्रोत भव्यों के लिए यह व्रत और उनके मंत्रों को यहाँ दिया जा रहा है।

व्रत विधि एवं मंत्र

प्रथम जीवस्थान खण्ड के नव व्रत हैं, उनके नव मंत्र हैं—

1. सत्प्ररूपणा 2. द्रव्यप्रमाणानुगम 3. क्षेत्रानुगम 4. स्पर्शनानुगम 5. कालानुगम 6. अन्तरानुगम 7. भावानुगम 8. अल्पबहुत्वानुगम और 9. नव चूलिका। यह प्रथम खण्ड छह ग्रंथों—पुस्तकों में वर्णित है।

द्वितीय खण्ड क्षुद्रकबंध के 13 व्रत हैं—

1. बंधकसत्त्वप्ररूपणा 2. स्वामित्वानुगम 3. एकजीवापेक्षयाकालानुगम 4. एक जीवापेक्षयान्तरानुगम 5. नानाजीवापेक्षया भंगविचयानुगम 6. द्रव्यप्रमाणानुगम 7. क्षेत्रानुगम 8. स्पर्शनानुगम 9. नाना जीवापेक्षया कालानुगम 10. नाना जीवापेक्षयान्तरानुगम 11. भागाभागानुगम 12. अल्पबहुत्वानुगम 13. महादण्डक।

यह द्वितीय खण्ड केवल 7वें ग्रंथ में—सातवीं पुस्तक में वर्णित है।

तृतीय खण्ड बंधस्वामित्वविचय के 15 व्रत हैं—

1. गुणस्थान संबंधि-बंधस्वामित्वविचय 2. गतिमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 3. इन्द्रियमार्गणा संबंधि बंधस्वामित्वविचय 4. कायमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 5. योगमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 6. वेदमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 7. कषायमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 8. ज्ञानमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 9. संयममार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 10. दर्शनमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 11. लेश्यामार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 12. भव्यत्वमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 13. सम्यक्त्वमार्गणा-संबंधि बंधस्वामित्वविचय 14. संज्ञिमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय 15. आहारमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचय।

यह तृतीय खण्ड भी 8वें ग्रंथ—पुस्तक में निबद्ध है।

1. षट्खण्डागम धवलाटीका सहित, पु. 1, पृ. 72।

चतुर्थ वेदनाखण्ड के 17 व्रत हैं–

1. कृति अनुयोगद्वार 2. वेदना निक्षेपानुयोगद्वार 3. वेदनानयविभाषणता 4. वेदना नामविधान 5. वेदना द्रव्यविधान 6. वेदना क्षेत्रविधान 7. वेदना कालविधान 8. वेदना भावविधान 9. वेदना प्रत्ययविधान 10. वेदना स्वामित्वविधान 11. वेदना वेदनाविधान 12. वेदना गतिविधान 13. वेदनानन्तर विधान 14. वेदना सन्निकर्षविधान 15. वेदना परिमाणविधान 16. वेदना भागाभागविधान और 17. वेदनाल्पबहुत्वानुयोगद्वार।

अग्रायणीय पूर्व की पंचम वस्तु के चतुर्थ प्राभृत का नाम कर्मप्रकृति है– जिनके कृति, वेदना, स्पर्श, कर्म, प्रकृति आदि 24 अनुयोगद्वार हैं। चतुर्थ खण्ड में 9, 10, 11 और 12 ये 4 ग्रंथ– पुस्तक हैं। नवमें ग्रंथ में मात्र कृत्यनुयोगद्वार का वर्णन है। 10, 11, 12वें ग्रंथ में वेदनानुयोगद्वार के 16 भेद विस्तार से वर्णित हैं।

पंचम वर्गणा खण्ड के 22 व्रत हैं–

1. स्पर्शानुयोगद्वार 2. कर्मानुयोगद्वार 3. प्रकृति 4. बंधान 5. निबंधान 6. प्रक्रम 7. उपक्रम 8. उदय 9. मोक्ष 10. संक्रम 11. लेश्या 12. लेश्याकर्म 13. लेश्यापरिणाम 14. सातासात 15. दीर्घ-ह्रस्व 16. भवधारणीय 17. पुद्गलात्त 18. निधत्तानिधत्त 19. निकाचितानिकाचित 20. कर्मस्थिति 21. पश्चिमस्कंध और 22. अल्पबहुत्वानुयोगद्वार। इस पंचमखण्ड में 13, 14, 15 और 16 इन चार ग्रंथों– पुस्तकों में स्पर्शानुयोगद्वार आदि 22 अनुयोगद्वार वर्णित हैं।

छठे खण्ड महाबंध का 1 व्रत है–1. महाबंध

कषायप्राभृत ग्रंथ का 1 व्रत है–1. कषायप्राभृत।

इस प्रकार ये व्रत 9+13+15+17+22+1+1=78 हैं।

विधि–इन व्रतों को अष्टमी, चतुर्दशी आदि किन्हीं भी तिथि में कर सकते हैं। उत्तम विधि उपवास, मध्यम विधि अल्पाहार और जघन्य विधि एक बार शुद्ध भोजन करना है तथा आगे लिखे मंत्रों की जाप्य करना है। समुच्चय मंत्र तो प्रत्येक व्रत में जपना ही है पुनः एक-एक व्रत में 1-1 मंत्रों का जाप्य करना है।

श्रावक-श्राविकाओं को प्रत्येक व्रतों के दिन श्रुतस्कंध यंत्र का अभिषेक करके षट्खण्डागम ग्रंथ की पूजा करना है।

इस व्रत को करने वाले श्रुतज्ञान की वृद्धि करके नियम से आगे भवों में श्रुतकेवली पद को प्राप्त करें।

षट्खण्डागम व्रत के 78 मंत्र

समुच्चय मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमजिनागमेभ्यो नमः।

प्रथम खण्ड के 9 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत- सप्तसप्तत्यधिकशतसूत्रसमन्वित- सत्प्ररूपणानामजीवस्थानेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत- द्विनवत्यधिकशतसूत्रसमन्वित- द्रव्यप्रमाणानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत- द्विनवतिसूत्रसमन्वित- क्षेत्रानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत- पंचाशीत्यधिकशतसूत्रसमन्वित- स्पर्शनानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत- द्विचत्वारिंशदधिकत्रिशतसूत्रसमन्वित- कालानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत- सप्तनवत्यधिकत्रिशतसूत्रसमन्वित- अन्तरानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत- त्रिनवतिसूत्रसमन्वित- भावानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत- द्व्यशीत्यधिकत्रिशतसूत्रसमन्वित- अल्पबहुत्वानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत- पञ्चदशाधिकपञ्चशतसूत्रसमन्वित- नवचूलिकानामजीवस्थानेभ्यो नमः।

द्वितीय खण्ड के 13 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत- त्रिचत्वारिंशत्सूत्रसमन्वित- बन्धकसत्त्वप्ररूपणानामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत- एकनवतिसूत्रसमन्वित- स्वामित्वानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।

3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-षोडशोत्तरद्विशतसूत्रसमन्वित-एकजीवापेक्षाकालानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकपंचाशदधिकशतसूत्रसमन्वित-एकजीवापेक्षान्तरानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-त्रयोविंशतिसूत्रसमन्वित-नानाजीवापेक्षाभंगविचयानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकसप्तत्यधिकशतसूत्रसमन्वित-द्रव्यप्रमाणानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-चतुर्विंशत्यधिकशतसूत्रसमन्वित-क्षेत्रानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकोनाशीत्यधिकद्विशतसूत्रसमन्वित-स्पर्शनानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-पंचपंचाशतसूत्रसमन्वित-नानाजीवापेक्षाकालानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-अष्टषष्टिसूत्रसमन्वित-नानाजीवापेक्षान्तरानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-अष्टाशीतिसूत्रसमन्वित-भागाभागानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-षडुत्तरद्विशतसूत्रसमन्वित-अल्पबहुत्वानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकोनाशीतिसूत्रसमन्वित-महादण्डकनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः।

तृतीय खण्ड के 15 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशत्सूत्रसमन्वित-गुणस्थानसंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनषष्टिसूत्रसमन्वित-गतिमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-पंचत्रिंशत्सूत्रसमन्वित-इन्द्रियमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-कायमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनत्रिंशत्सूत्रसमन्वित-योगमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनविंशतिसूत्रसमन्वित-वेदमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनविंशतिसूत्रसमन्वित-कषायमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-अष्टादशसूत्रसमन्वित-ज्ञानमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-अष्टाविंशतिसूत्रसमन्वित-संयममार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-पंचसूत्रसमन्वित-दर्शनमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-सप्तदशसूत्रसमन्वित-लेश्यामार्गणासंबंधि-बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-भव्यत्वमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशत्सूत्रसमन्वित-सम्यक्त्वमार्गणासंबंधि बंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-संज्ञिमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विसूत्रसमन्विताहारमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः।

चतुर्थ खण्ड के 17 मंत्र

कृतिअनुयोगद्वार का 1 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-णमोजिणाणमित्यादिगणधरमंत्रयुत सप्तभेदसहित षट्सप्ततिसूत्रसमन्वित कृति-अनुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।

वेदना के 16 भेद के 16 मंत्र

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्रसमन्वित-वेदनानिक्षेपानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चतुस्सूत्रसमन्वित-वेदनानयविभाषणतानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चतुः सूत्रसमन्वित-वेदनानामविधानानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चूलिकासमेतत्रयोदशोत्तरद्विशतसूत्रसमन्वित-वेदनाद्रव्य-विधानानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-नवनवतिसूत्रसमन्वित-वेदनाक्षेत्रविधानानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-द्वयचूलिकासमेत-एकोनाशीत्यधिक द्विशतसूत्रसमन्वित-वेदनाकालविधानानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिचूलिकासमेत-चतुर्दशोत्तरत्रिशत्सूत्रसमन्वित-वेदनाभाव-विधानानुयोग-द्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-षोडशसूत्रसमन्वित-वेदनाप्रत्ययविधानानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-पंचदशसूत्रसमन्वित-वेदनास्वामित्वविधानानुयोगद्वार- नामवेदना-खण्डेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-अष्टपंचाशत्सूत्रसमन्वित-वेदनावेदनाविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-द्वादशसूत्रसमन्वित-वेदनागतिविधानानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-एकादशसूत्रसमन्वित-वेदनानन्तरविधानानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-विंशत्युत्तरत्रिशतसूत्रसमन्वितवेदनासन्निकर्ष- विधानानुयोगद्वार-नामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिपंचाशत्सूत्रसमन्वित-वेदनापरिमाणविधानानुयोगद्वारनामवेदना-खण्डेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-एकविंशतिसूत्रसमन्वित-वेदनाभागाभागविधानानुयोग-द्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-सप्तविंशतिसूत्रसमन्वित-वेदनाल्पबहुत्वानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः।

पाँचवें खण्ड के 22 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-त्रयस्त्रिंशत्सूत्रसमन्वित-स्पर्शानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-एकत्रिंशत्सूत्रसमन्वित-कर्मानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशदधिकशतसूत्रसमन्वित-प्रकृत्यनुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-चूलिकायुत बंध-बंधक-बंधनीयसमेत-सप्तनवत्यधिक-सप्तशतसूत्र-समन्वित-बंधानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-विंशतिसूत्रसमन्वित-निबंधानुयोगद्वारनामवर्गणा-खण्डेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-प्रक्रमानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-उपक्रमानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-उदयानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-मोक्षानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-संक्रमानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-लेश्यानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-लेश्याकर्मानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-लेश्यापरिणामानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-सातासातानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-दीर्घह्रस्वानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।

16. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत- भवधारणीयानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत- पुद्गलात्तानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत- निधत्तानिधत्तानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत- निकाचितानिकाचितानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत- कर्मस्थित्यनुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत- पश्चिमस्कन्धानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-अल्पबहुत्वानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः।

छठे महाबंध नाम षट्खण्डागम का मंत्र–

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य षष्ठखण्डान्तर्गत- चत्वारिंशत्सहस्रसूत्रसमन्वित- महाबन्धेभ्यो नमः।

कषायप्राभृत ग्रंथ का मंत्र–

1. ॐ ह्रीं अर्हं चूर्णिसूत्रसमन्वितत्र्यशीतिगाथासूत्रस्वरूप-कषायप्राभृतेभ्यो नमः।।

(97) पुण्यास्रव व्रत विधि

संसार में प्रत्येक अच्छे या बुरे कार्यों को करने में सर्वप्रथम संरंभ, समारंभ और आरंभ क्रियायें होती हैं। मन, वचन और काय से प्रवृत्ति होती है जो कि कृत, कारित और अनुमोदना रूप से ही होती है। प्रत्येक के साथ क्रोध, मान, माया और लोभ ये कषायें अवश्य ही रहती हैं। इसलिये प्रथम ही संरंभ आदि तीन को मन आदि तीन से गुणा करके–3×3=9 भेद हुये पुनः इन नव को कृत आदि से गुणा किये तो 9×3=27 भेद हुए, अनंतर चार कषाय से गुणा करने से 27×4=108 भेद हो जाते हैं। इन्हीं पापास्रवों को रोकने एवं पुण्यास्रव को बढ़ाने हेतु माला में 108 दाने होते हैं। इन 108 व्रतों को करने से महान सातिशय पुण्य कर्मों का आस्रव होता है पुनः परंपरा से संपूर्ण आस्रव का अभाव होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। लौकिक फल तो संसार के चक्रवर्ती आदि के वैभव, इंद्र पद आदि तो सहज ही संभव हैं। अतः यह व्रत अवश्य ही करना चाहिए।

व्रत के दिन अर्हंत भगवान का या चौबीसी प्रतिमा का या किन्हीं भी तीर्थंकर का पंचामृत अभिषेक करके चौबीसी पूजा और पुण्यास्रव पूजा अवश्य करना चाहिए। उद्यापन में यथाशक्ति प्रतिमा विराजमान करना, 108 ग्रंथों का दान देना आदि करना चाहिए तथा पुण्यास्रव विधान करना चाहिए।

संरंभ–हिंसादि करने का मन में विचार करना।

समारंभ–हिंसादि कर्मों के करने का अभ्यास करना।

आरंभ–हिंसादि क्रियाओं को प्रारंभ कर देना।

कृत–स्वयं करना।

कारित–दूसरों से कराना।

अनुमोदना या अनुमति–दूसरों के द्वारा हिंसादि क्रियाओं के करने को अच्छा कहना–समर्थन करना।

आगे मन, वचन, काय और क्रोध, मान, माया और लोभ के अर्थ स्पष्ट हैं।

इसका समुच्चय मंत्र निम्न प्रकार है–

जाप्य–ॐ ह्रीं कर्मास्रवरहितानन्तकेवलिभ्यो नमः।

यह व्रत इच्छानुसार अष्टमी- चतुर्दशी आदि किन्हीं भी तिथि को किया जा सकता है। इसमें 108 व्रत करने होते हैं। उत्तम विधि उपवास, मध्यम एक बार अल्पाहार और जघन्य में एक बार शुद्ध भोजन करना चाहिए।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र—

1. ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
2. ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
3. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
4. ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
5. ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
6. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
7. ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
8. ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
9. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
10. ॐ ह्रीं मानकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
11. ॐ ह्रीं मानकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
12. ॐ ह्रीं मानानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
13. ॐ ह्रीं मानकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
14. ॐ ह्रीं मानकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
15. ॐ ह्रीं मानानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
16. ॐ ह्रीं मानकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
17. ॐ ह्रीं मानकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
18. ॐ ह्रीं मानानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
19. ॐ ह्रीं मायाकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
20. ॐ ह्रीं मायाकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
21. ॐ ह्रीं मायानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
22. ॐ ह्रीं मायाकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
23. ॐ ह्रीं मायाकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
24. ॐ ह्रीं मायानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
25. ॐ ह्रीं मायाकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिन नमः।
26. ॐ ह्रीं मायाकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
27. ॐ ह्रीं मायानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
28. ॐ ह्रीं लोभकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
29. ॐ ह्रीं लोभकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
30. ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
31. ॐ ह्रीं लोभकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
32. ॐ ह्रीं लोभकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
33. ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
34. ॐ ह्रीं लोभकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
35. ॐ ह्रीं लोभकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
36. ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
37. ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
38. ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
39. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
40. ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
41. ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
42. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
43. ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।।
44. ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
45. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
46. ॐ ह्रीं मानकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
47. ॐ ह्रीं मानकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
48. ॐ ह्रीं मानानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
49. ॐ ह्रीं मानकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
50. ॐ ह्रीं मानकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
51. ॐ ह्रीं मानानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
52. ॐ ह्रीं मानकृतवचनआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
53. ॐ ह्रीं मानकारितवचनआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
54. ॐ ह्रीं मानानुमतवचनआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
55. ॐ ह्रीं मायाकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
56. ॐ ह्रीं मायाकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
57. ॐ ह्रीं मायानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
58. ॐ ह्रीं मायाकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
59. ॐ ह्रीं मायाकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
60. ॐ ह्रीं मायानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
61. ॐ ह्रीं मायाकृतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
62. ॐ ह्रीं मायाकारितवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
63. ॐ ह्रीं मायानुमतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
64. ॐ ह्रीं लोभकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
65. ॐ ह्रीं लोभकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
66. ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
67. ॐ ह्रीं लोभकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
68. ॐ ह्रीं लोभकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
69. ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
70. ॐ ह्रीं लोभकृतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
71. ॐ ह्रीं लोभकारितवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
72. ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
73. ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
74. ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

75. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
76. ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
77. ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
78. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
79. ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
80. ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
81. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
82. ॐ ह्रीं मानकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
83. ॐ ह्रीं मानकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
84. ॐ ह्रीं मानानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
85. ॐ ह्रीं मानकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
86. ॐ ह्रीं मानकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
87. ॐ ह्रीं मानानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
88. ॐ ह्रीं मानकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
89. ॐ ह्रीं मानकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
90. ॐ ह्रीं मानानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
91. ॐ ह्रीं मायाकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
92. ॐ ह्रीं मायाकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
93. ॐ ह्रीं मायानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
94. ॐ ह्रीं मायाकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
95. ॐ ह्रीं मायाकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
96. ॐ ह्रीं मायानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
97. ॐ ह्रीं मायाकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
98. ॐ ह्रीं मायाकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
99. ॐ ह्रीं मायानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
100. ॐ ह्रीं लोभकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
101. ॐ ह्रीं लोभकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
102. ॐ ह्रीं लोभानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
103. ॐ ह्रीं लोभकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
104. ॐ ह्रीं लोभकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
105. ॐ ह्रीं लोभानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
106. ॐ ह्रीं लोभकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
107. ॐ ह्रीं लोभकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
108. ॐ ह्रीं लोभानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

(98) समवसरण व्रत (लघु)

विधि— समवसरण का व्रत समवसरण की आठ भूमि, तीन कटनी आदि को लक्षित करके किया जाता है। इसमें 24 व्रत हैं। व्रत के दिन तीर्थंकर प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक, समवसरण पूजा करके उपवास करें। उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार एवं जघन्य एकाशन है। व्रत पूर्ण करके उद्यापन में समवसरण रचना बनवाकर प्रतिष्ठा कराना अथवा समवसरण मंडल विधान करना। 24 ग्रंथ आदि का दान देना। जहाँ-जहाँ प्रभु के समवसरण की रचना बनी हुई हैं उनके दर्शन करना। इस व्रत का फल तत्काल में संपूर्ण मनोरथों की सिद्धि, परम्परा से समवसरण के दर्शन का लाभ और तीर्थंकर पद की प्राप्ति आदि भी संभव है।

समुच्चय मंत्र-

1. ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय सकलगुणकरण्डाय श्रीसर्वज्ञाय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

अथवा—

2. ॐ ह्रीं समवसरणपद्मसूर्यवृषभादिवर्धमानान्तेभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र—

1. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणसंबंधि- मानस्तंभस्थितसर्वजिनप्रतिमाभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणसंबंधि- चैत्यप्रासादस्थितसर्वजिनप्रतिमाभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं खातिकाभूमिवैभवमंडितसमवसरणस्थित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं लताभूमिवैभवमंडितसमवसरणस्थित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणसंबंधि- उपवनभूमिचतुर्दिक् चैत्यवृक्षस्थितसर्वजिनप्रतिमाभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं ध्वजभूमिवैभवमंडितसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणसंबंधि- कल्पवृक्षभूमिचतुर्दिक्सिद्धार्थवृक्षस्थितसिद्धप्रतिमाभ्यो नमः।

8. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणसंबंधि- भवनभूमिस्थितनवनवस्तूपमध्यविराजमानसर्वजिनप्रतिमाभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितसमवसरणविभूतिधारक चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणसंबंधि- प्रथमकटनीस्थितयक्षेन्द्रमस्तकोपरिविराजमान धर्मचक्रेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्रीं द्वितीयकटनीउपरि- अष्टमहाध्वजावैभवधारकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणसंबंधितृतीयपीठोपरिस्थितगंधकुटीभ्यो नमः।

13. ॐ ह्रीं चतुस्त्रिंशदतिशयसमन्वितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

14. ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्यसमन्वितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

15. ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुणसमन्वितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

16. ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनगुणसमन्वितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

17. ॐ ह्रीं अनन्तसौख्यगुणसमन्वितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

18. ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुणसमन्वितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

19. ॐ ह्रीं अष्टादशमहादोषविरहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

20. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थित- एकोनषष्ट्यधिकचतुर्दश शतगणधरादिअष्टाविंशतिलक्ष- अष्टचत्वारिंशतसहस्रसर्व मुनिभ्यो नमः।

21. ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थित- ब्राह्मीगणिनीप्रमुख- पंचाशल्लक्ष- पंचाशत्सहस्र- द्वयशतपंचाशत् आर्यिकाभ्यो नमः।

अथवा

21. ॐ ह्रीं समवसरणस्थितब्राह्मीगणिनीप्रमुखपंचाशल्लक्ष- पंचाशत्सहस्र- द्वयशतपंचाशदार्यिकावंदितचरणकमल- चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

22. ॐ ह्रीं समवसरणस्थित- असंख्यातदेवदेवीवंदितचरणकमलचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

23. ॐ ह्रीं समवसरणस्थित- संख्यातमनुष्यगण- श्रावकश्राविकावंदितचरणकमल चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

24. ॐ ह्रीं समवसरणस्थित परस्परविरोध विवर्जित संख्याततिर्यग्गणवंदितचरणकमल चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(99) समवसरण व्रत विधि (वृहत् समवसरण व्रत १७० हैं)

ढाई द्वीप में 170 कर्मभूमियों में यदि एक साथ अधिकतम तीर्थंकर होवें तो 170 हो सकते हैं। एक साथ नहीं भी हों तो भी इन 170 कर्मभूमियों में तीर्थंकर होते रहते हैं। उन 170 कर्मभूमियों के तीर्थंकरों के 170 व्रत किये जाते हैं। इनमें तिथियों का कोई नियम नहीं है। अपनी सुविधा के अनुसार किन्हीं भी तिथियों में यह व्रत करें। मंदिर में तीर्थंकर भगवंतों की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके समवसरण पूजा करें। उत्कृष्ट विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य विधि एकाशन करना है। व्रत पूर्ति के अनंतर किन्हीं भी तीर्थंकर का समवसरण बनवाकर प्रतिष्ठा करावें या जहाँ- जहाँ समवसरण बने हैं उन की वंदना करके समवसरण विधान करके व्रत का उद्यापन करें।

समवसरण व्रत का समुच्चय मंत्र - **ॐ ह्रीं सर्वकर्मभूमिस्थितसप्तत्यधिकशतसमवसरणमध्यविराजमाना- चिन्त्यविभूतिसहित तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्- पृथक् मंत्र–

जम्बूद्वीप के 34 समवसरण के 34 मंत्र

1. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
2. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
3. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
4. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
5. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
6. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
7. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
8. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
9. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
10. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
11. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
12. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
13. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
14. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
15. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
16. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
17. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
18. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
19. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
20. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
21. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
22. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
23. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
24. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
25. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
26. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
27. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
28. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
29. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
30. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
31. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
32. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
33. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
34. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि- गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

पूर्वधातकीखण्डद्वीप के 34 समवसरण के 34 मंत्र

1. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
2. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

3. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
4. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
5. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
6. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
7. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपासंबंधि- आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
8. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।
9. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
10. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।
11. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
12. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
13. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।
14. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।
15. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
16. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
17. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
18. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।
19. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
20. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
21. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।
22. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।
23. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
24. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
25. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
26. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
27. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
28. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
29. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
30. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।
31. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

32. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
33. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
34. ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

पश्चिमधातकीखण्डद्वीप के 34 समवसरण के 34 मंत्र

1. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
2. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
3. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
4. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
5. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
6. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
7. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपासंबंधि- आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
8. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
9. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
10. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
11. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
12. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
13. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
14. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
15. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
16. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
17. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
18. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
19. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि- पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

20. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
21. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
22. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
23. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
24. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
25. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
26. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
27. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
28. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
29. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
30. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
31. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
32. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
33. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
34. ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

पूर्वपुष्करार्धद्वीप के 34 समवसरण के 34 मंत्र

1. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
2. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
3. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
4. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
5. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
6. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
7. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपासंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
8. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
9. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

10. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
11. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
12. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
13. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
14. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
15. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
16. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
17. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
18. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
19. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
20. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
21. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
22. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
23. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
24. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
25. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
26. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
27. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
28. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
29. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
30. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
31. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
32. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
33. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
34. ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

पश्चिमपुष्करार्धद्वीप के 34 समवसरण के 34 मंत्र

1. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-भरतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
2. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-ऐरावतक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
3. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
4. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
5. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महाकच्छाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
6. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कच्छकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
7. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-आवर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
8. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-लांगलावर्ताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

9. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
10. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पुष्कलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
11. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
12. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
13. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावत्साविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
14. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वत्सकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
15. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
16. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुरम्याविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
17. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-रमणीयाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
18. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-मंगलावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
19. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
20. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुपद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
21. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महापद्माविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
22. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-पद्मकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
23. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-शंखाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
24. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-नलिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
25. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-कुमुदाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
26. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सरिताविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
27. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
28. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुवप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
29. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-महावप्राविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
30. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-वप्रकावतीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
31. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
32. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-सुगंधाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
33. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधिलाविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।
34. ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधि-गंधमालिनीविदेहक्षेत्रार्यखण्डे अचिन्त्यसमवसरणविभूतिसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

(100) ऋषभशासन जयंती व्रत

युगादि ब्रह्मा भगवान ऋषभदेव को प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे फाल्गुन कृष्णा एकादशी को केवलज्ञान प्रगट हुआ था। उसी क्षण सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने आकाश में दिव्य समवसरण की रचना की थी। पुरिमतालपुर के राजा– भगवान ऋषभदेव के तृतीय पुत्र ''ऋषभसेन'' ने उसी क्षण भगवान ऋषभदेव के समवसरण में आकर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर प्रथम गणधर पद को प्राप्त किया था। उसी दिन प्रभु ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी-सुन्दरी ने आर्यिका दीक्षा लेकर प्रथम पुत्री ब्राह्मी ने आर्यिकाओं में गणिनी पद को प्राप्त किया था।

उसी दिन प्रभु ऋषभदेव की दिव्यध्वनि खिरी थी तथा उसी दिन दिव्यध्वनि से मुनिधर्म और श्रावकधर्मरूप मोक्षमार्ग का उद्भव हुआ था अतः यह 'फाल्गुन कृ. एकादशी' ऋषभ शासन जयंती पर्व तो है ही, मोक्षमार्ग उद्भव' दिवस भी है क्योंकि प्रभु ने दीक्षा से पूर्व गृहस्थाश्रम में असि, मषि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प इन षट्क्रियाओं का उपदेश देकर प्रजा को जीने की कला सिखाई थी, राजनीति का भी उपदेश दिया था एवं संपूर्ण विद्याओं को अपनी पुत्री ब्राह्मी- सुन्दरी को पढ़ाकर सभी एक सौ एक पुत्रों को भी सर्व विद्या और कलाएँ सिखाई थीं किन्तु मोक्षमार्ग का उपदेश दिव्य केवली अवस्था में ही दिया था अतः यह विशेष ही महत्वपूर्ण तिथि है।

व्रत की विधि–फाल्गुन कृष्णा एकादशी को व्रत करके मंदिर में भगवान ऋषभदेव का अभिषेक करके प्रभु की पूजा करें और समवसरण विधान या ऋषभदेव विधान का अनुष्ठान करें पुनः निम्न मंत्र का जाप्य करें-

जाप्य– **ॐ ह्रीं अर्हं गोमुखयक्ष चक्रेश्वरी यक्षी सहिताय श्री ऋषभदेव तीर्थंकराय नमः।**

(सुगंधित पुष्पों से 108 बार मंत्र जपें)

पुनः चौरासी गणधर देवों को अर्घ्य चढ़ावें, पूजा करें, सरस्वती की पूजा और गुरुपूजा करके यक्ष-यक्षी की आराधना सम्पन्न करें। इस प्रकार 11 वर्ष तक यह व्रत करके उद्यापन करें। उद्यापन में प्रयाग तीर्थ पर पहुँचकर ऋषभदेव विधान या समवसरण विधान करके 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली' पर समवसरण में विराजमान भगवन्तों का महाभिषेक करें।11-11 उपकरण मंदिरों में भेंट करें, चतुर्विध संघ को आहार, औषधि आदि चार प्रकार का दान देवें तथा कोई धार्मिक ग्रंथ प्रकाशित करवाकर वितरित करें। उद्यापन पूर्ण करें। यह व्रत करने वाले नियम से मोक्षमार्ग को प्राप्त कर परम्परा से मोक्ष को अवश्य ही प्राप्त करेंगे। इससे पूर्व संसार में रहते हुए पुत्र, पौत्र, धान, धान्य आदि सुखों का अनुभव करते हुए अनंत सौख्य पद को प्राप्त करने में समर्थ हो जावेंगे।

(101) नवलब्धि व्रत (नवकेवललब्धि व्रत)

तीर्थंकर भगवन्तों को जब केवलज्ञान प्रगट हो जाता है तब अर्हंत अवस्था में उन्हें नव केवललब्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। दर्शनमोहनीय के अभाव से क्षायिकसम्यक्त्वलब्धि, चारित्रमोहनीय के अभाव से क्षायिकचारित्रलब्धि, ज्ञानावरणकर्म के नाश से केवलज्ञानलब्धि, दर्शनावरण के क्षय से केवलदर्शनलब्धि, अंतरायकर्म के पाँच भेदों में से क्रमशः दानान्तराय के विनाश से अनंतदानलब्धि, लाभान्तराय कर्म के क्षय से अनंतलाभलब्धि, भोगान्तराय के अभाव से अनंतभोगलब्धि, उपभोगान्तराय के नाश से अनंतउपभोगलब्धि और वीर्यान्तरायकर्म के क्षय से अनंतवीर्यलब्धि ये नव केवललब्धि स्वरूप अनंतलब्धियाँ प्रगट हो जाती हैं। इन्हीं नवकेवललब्धियों को प्राप्त करने के लिए इस व्रत को करना है। तीर्थंकर भगवन्तों की केवलज्ञान तिथि या किसी भी तिथि को अथवा अष्टमी, चतुर्दशी आदि को इस व्रत को करना है।

उत्तम विधि में व्रत के पूर्व दिन एक बार शुद्ध भोजन करके व्रत के दिन उपवास करें पुनः पारणा के दिन भी एक भुक्ति करें। व्रत के दिन चौबीस तीर्थंकर की पूजा या अर्हंत परमेष्ठी की पूजा करें। पुनः समुच्चय जाप्य करके व्रत की एक-एक जाप्य करें। नवव्रत पूर्ण होने पर तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणकभूमि की वंदना करें। चौबीस तीर्थंकर विधान करें तथा शक्ति के अनुसार नव-नव उपकरण मंदिर में भेंट करें।

मध्यम विधि में व्रत के दिन एक बार अल्पाहार और जघन्यव्रत में एक बार शुद्ध भोजन– एकाशन करके व्रत करना चाहिए।

समुच्चय मंत्र–

ॐ ह्रीं अर्हं नवकेवललब्धिसमन्विताार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत की पृथक्-पृथक् जाप्य–

1. **ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकसम्यक्त्वलब्धिसमन्विताार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
2. **ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकचारित्रलब्धिसमन्विताार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
3. **ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानलब्धिसमन्विताार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
4. **ॐ ह्रीं अर्हं केवलदर्शनलब्धिसमन्विताार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
5. **ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदानलब्धिसमन्विताार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
6. **ॐ ह्रीं अर्हं अनंतलाभलब्धिसमन्विताार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
7. **ॐ ह्रीं अर्हं अनंतभोगलब्धिसमन्विताार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
8. **ॐ ह्रीं अर्हं अनंतोपभोगलब्धिसमन्विताार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**
9. **ॐ ह्रीं अर्हं अनंतवीर्यलब्धिसमन्विताार्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**

इस व्रत का फल अर्हंत अवस्था को प्राप्त करना है। परंपरा फल संसार के अनेक प्रकार के अभ्युदय चक्रवर्ती आदि के वैभव तथा स्वर्ग के उत्तम सुखों को प्राप्त करना है। इस व्रत के प्रभाव से दरिद्रता, रोग, शोक आदि दुःख दूर होंगे और परभव में नियम से स्वर्ग आदि के वैभव प्राप्त होंगे पुनः परंपरा से ये नव केवललब्धियाँ जहाँ प्रगट होती हैं, ऐसे परमात्मपद की प्राप्ति होगी।

(102) नवनिधि व्रत

हस्तिनापुर में भगवान शांतिनाथ, भगवान कुंथुनाथ एवं भगवान अरनाथ ये तीन तीर्थंकर जन्मे हैं। ये तीनों ही तीर्थंकर तीन-तीन पद के धारक हुए हैं। ये ही इन तीनों तीर्थंकर भगवन्तों की एवं हस्तिनापुर तीर्थ की विशेषता है। इन तीनों तीर्थंकरों के तीन-तीन पदों की अपेक्षा यह 'नवनिधि व्रत' किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से नवनिधि-ऋद्धि से भंडार भरेगा। सर्व लौकिक संपत्ति के साथ-साथ अलौकिक आध्यात्मिक संपत्ति भी प्राप्त होगी।

व्रत की उत्तम विधि–आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास में आष्टान्हिक पर्व में एक दिन पहले सप्तमी से पूर्णिमा तक नवदिन व्रत करना– उत्तम विधि नव उपवास करना, मध्यम में अल्पाहार और जघन्य में एकाशन– एक बार शुद्ध भोजन करना है। व्रत के दिन भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरहनाथ तीर्थंकरों की समुच्चय पूजन या पृथक्-पृथक् पूजन करके उनके जीवन चरित्र को पढ़ना है।

अथवा लघु व्रत विधि–इस व्रत में लगातार 9 माह तक प्रत्येक माह में तिथि का कोई नियम न करके एक-एक व्रत कर लेना, यह सर्वजघन्य विधि है। ऐसे मात्र नव व्रत करना है।

मंत्र इस प्रकार हैं—

समुच्चय मंत्र—

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरचक्रवर्तिकामदेवपदधारक शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथतीर्थंकरेभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र—

1. **ॐ ह्रीं अर्हं षोडशतीर्थंकरपदप्राप्तश्रीशांतिनाथाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं अर्हं पंचमचक्रवर्तिपदप्राप्तश्रीशांतिनाथाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशकामदेवपदप्राप्तश्रीशांतिनाथाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं अर्हं सप्तदशतीर्थंकरपदप्राप्तश्रीकुंथुनाथाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं अर्हं षष्ठचक्रवर्तिपदप्राप्तश्रीकुंथुनाथाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशकामदेवपदप्राप्तश्रीकुंथुनाथाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशतीर्थंकरपदप्राप्तश्रीअरनाथाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं अर्हं सप्तमचक्रवर्तिपदप्राप्तश्रीअरनाथाय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशकामदेवपदप्राप्तश्रीअरनाथाय नमः।**

व्रत पूर्ण करके तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भगवान की या तीनों तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करावें। हस्तिनापुर तीर्थ और सम्मेदशिखर तीर्थ की वंदना करके श्री शांतिनाथ का सोलह दिन का महाविधान करके उद्यापन पूर्ण करें और भी अपनी शक्ति के अनुसार 9-9 उपकरण आदि मंदिर में प्रदान करें। मुनि-आर्यिका आदि गुरुओं को आहारदान, पिच्छी-कमण्डलु, शास्त्र दान देवें। इस विधि से इस 'नवनिधि व्रत' को करने वाले नियम से संसार के समस्त सुखों का अनुभव कर चक्रवर्ती, कामदेव, तीर्थंकर आदि पदों को प्राप्त कर अक्षय-अतीन्द्रिय मोक्षसुख को प्राप्त करेंगे, यही इस व्रत का फल है।

द्वितीय प्रकार से नवनिधि व्रतविधि—इस नवनिधि व्रत में 21 उपवास किये जाते हैं। चौदह चतुर्दशियों के चौदह, नौ नवमियों के नौ, तीन तृतीयाओं के तीन एवं पाँच पञ्चमियों के पाँच उपवास किये जाते हैं। प्रत्येक उपवास के अनन्तर एकाशन करने का विधान है। इस व्रत में '**ॐ ह्रीं अक्षयनिधिप्राप्तेभ्यो जिनेन्द्रेभ्यो नमः**' मंत्र का जाप किया जाता है।

(103) शांतिनाथ व्रत (शांति भक्ति व्रत)

व्रत विधि—श्री शांतिनाथ भगवान सोलहवें तीर्थंकर हैं, साथ ही पाँचवें चक्रवर्ती एवं बारहवें कामदेव भी हुए हैं। इस प्रकार ये भगवान तीन पद के धारक महान हुए हैं। श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित शांतिभक्ति साधुगण एवं श्रावकगण सभी में प्रसिद्ध है। उस शांतिभक्ति का ही यह व्रत है। इसमें सोलह काव्य हैं वे सभी एक से एक महिमापूर्ण हैं। उन एक-एक काव्य का आश्रय कर यह व्रत करना चाहिए। इस व्रत के प्रसाद से स्वयं को शांति, सर्व व्याधियों का विनाश एवं सर्व कष्ट, संकट, आपदाओं का निवारण होगा। सर्वत्र मंगल होगा, घर में, परिवार में मंगल, क्षेम होगा, देश में सुभिक्ष होगा, राजा-प्रजा में धार्मिक भावनाएँ बनेंगी व बढ़ेंगी अतः यह व्रत बहुत ही महत्वपूर्ण है।

श्री पूज्यपाद स्वामी, जो कि हजार वर्ष पूर्व हुए हैं, एक समय उनकी नेत्र की ज्योति मंद हो गई, उसी क्षण उन्होंने शांतिनाथ चैत्यालय में बैठकर इस शांतिनाथ की भक्ति की रचना की, आठवें काव्य को पढ़ते ही ''दृष्टिं प्रसन्नां कुरु'' बोलते ही उनकी आँख की रोशनी वापस आ गई। इस वाक्य में श्लेषालंकार है कि हे भगवन्! आप मुझ पर अपनी दृष्टि प्रसन्न करो अथवा मुझ पर प्रसन्न होवो अर्थात् मेरी दृष्टि—नेत्र ज्योति, प्रसन्न-स्वच्छ-स्वस्थ-निर्मल करो। ऐसे दो अर्थ होते हैं।

व्रत विधि—इस व्रत को शुक्ला अष्टमी से प्रारंभकर लगातार प्रत्येक मास की दो-दो अष्टमी ऐसे 16 अष्टमी तक यह व्रत करना चाहिए। अथवा खुली तिथि में कभी भी कर सकते हैं। व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य में एक बार शुद्ध भोजन करना एवं व्रत के दिन शांतिभक्ति का 16 बार या कम से कम एक बार पाठ करना है।

व्रत पूर्ण कर उद्यापन में शांतिविधान करना, भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराना, शांति भक्ति का 16 दिन अखंड पाठ करना आदि, अपनी शक्ति के अनुसार 16-16 उपकरण मंदिर में भेंट करना आदि है। व्रत पूर्ण कर भगवान की चार कल्याणक भूमि हस्तिनापुर एवं निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर की वंदना करना चाहिए।

व्रतों के मंत्र निम्न प्रकार हैं—

समुच्चय मंत्र—

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय सर्वशांतिकराय श्रीशान्तिनाथाय नमः।

प्रत्येक 16 मंत्र—

1. **ॐ ह्रीं संसारदुःखभीतभव्यगणशरण्याय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं सर्वविघ्नशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं प्रणतजनकष्टनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं स्तोतृणां मृत्युंजयपदप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं चरणाम्बुजस्तुतिकर्तृणां सर्वरोगविनाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं स्तवनप्रसादात् स्तोतृणां अचिन्त्यसारसौख्यप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं चरणकमलाश्रितजनसर्वपापप्रणाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं स्वपादपद्माश्रयिशान्त्यर्थिभाक्तिकानां दृष्टिप्रसन्नविधायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं शीलगुणव्रतसंयमपात्राय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
10. **ॐ ह्रीं पंचमचक्रिषोडशतीर्थंकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
11. **ॐ ह्रीं अशोकवृक्षाद्यष्टप्रातिहार्यसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
12. **ॐ ह्रीं सर्वगणाय स्तुतिपाठकाय मह्यं च परमशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
13. **ॐ ह्रीं शक्रादिभिः स्तुतपादपद्माय सततशान्तिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
14. **ॐ ह्रीं संपूजक-प्रतिपालक-यतीन्द्रगण-देश-राष्ट्र-पुर-नृपतिगण-शांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
15. **ॐ ह्रीं क्षेम-धार्मिकनृपति-समयसमयवृष्टिकारकाय व्याधिदुर्भिक्ष-चौरिमारिकष्टनिवारकाय सर्वसौख्यकरधर्मचक्रप्रवर्तकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
16. **ॐ ह्रीं केवलज्ञानभास्कर-जगत् शांतिकारकवृषभादि तीर्थंकर-समन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।**

(104) एकीभाव स्तोत्र व्रत एवं कथा

एकीभाव स्तोत्र के रचयिता श्री आचार्य वादिराज वि. की 11वीं शताब्दी के महान् विद्वान थे। वादिराज यह उनकी पदवी थी, नाम नहीं। जगत् प्रसिद्ध वादियों में उनकी गणना होने से वे वादिराज के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपकी गणना जैन साहित्य के प्रमुख आचार्यों में की जाती है।

वादिराज स्वामी का चौलुक्य नरेश जयसिंह (प्रथम) की सभा में बड़ा सम्मान था। पूर्वकृत पापोदय से आचार्यश्री के शरीर में कुष्ट रोग हो गया। निस्पृही वीतरागी संत अपने आत्मध्यान में ही लीन रहते थे। शरीर की वेदना से उन्हें किसी प्रकार की चिंता नहीं थी किन्तु जिनधर्मद्वेषी एक दुष्ट स्वभावी विद्वान् ने राजसभा में

मुनिश्री का घोर उपहास कर राजा से कहा– राजन्! तुम जैनधर्म की इतनी मान्यता करते हो, श्रेष्ठ कहकर उनके साधुओं का सम्मान करते हो पर यह नहीं जानते कि "जैन साधु कोढ़ी (कुष्ट-ग्रस्त)" होते हैं। राजश्रेष्ठी को यह उपहास सहन नहीं हुआ। उसने भक्तिवशात् राजा से कहा– राजन्! यह असत्य है, जैन मुनियों की काया तपाये स्वर्ण के समान सुन्दर और तेजोदीप्त होती है।

राजा ने निर्णय लिया कि प्रातः आचार्यश्री के दर्शनार्थ चला जाये। इधर राजश्रेष्ठी दौड़ता हुआ आचार्यश्री के चरणों में पहुँचा। उसने आचार्यश्री से अपनी करुण कथा कह सुनाई और कहा– प्रभो! अब जिनधर्म की रक्षा का प्रश्न है। आप जो उचित समझें करें, आचार्यश्री ने उन्हें आशीर्वाद दिया और आदिनाथ जी की भक्ति में लीन हो एकीभावस्तोत्र की रचना कर डाली। जिनभक्ति में लीन मुनिश्री जिनेन्द्र भक्ति का वर्णन करते हुए चौथे काव्य में लिखते हैं....हे भगवन्! भव्य जीवों के पुण्योदय से स्वर्ग से माता के गर्भ में आने वाले आपके द्वारा छः माह पूर्व ही यह पृथ्वी कनकमयता को प्राप्त करा दी गई थी। हे जिनेन्द्र! ध्यानरूपी द्वार से मेरे मनरूपी मंदिर में प्रविष्ट हुए आप कुष्ट रोग से पीड़ित मेरे इस शरीर को सुवर्णमय कर रहे हो, इसमें क्या आश्चर्य है! अथवा हे जिन! जो कोई आपके दर्शन करता है, वचनरूपी अमृत का भक्तिरूपी पात्र से पान करता है तथा कर्मरूपी मन से आप जैसे असाधारण आनन्द के धाम दुर्वार काम के मदहारी व प्रासाद की अद्वितीय भूमिरूप पुरुष में ध्यान द्वारा प्रवेश करता है, उसे क्रूराकार रोग और कंटक कैसे सता सकते हैं?

जिनभक्ति के प्रसाद से रातभर में ही उनका गलित कुष्ट ग्रस्त शरीर स्वर्णवत् चमकने लगा। प्रातः राजा राजश्रेष्ठी और जिनधर्मद्वेषी सभी आचार्यश्री के दर्शनार्थ चल दिये। उसी जंगल में आ पहुँचे, जहाँ मुनिश्री ध्यान में लीन थे। उनका तेज दूर तक फैल रहा था। चमकती देहकान्ति को देखते ही राजश्रेष्ठी आनन्दविभोर हो गया। राजा ने पूछा– श्रेष्ठी, क्या ये ही आपके गुरु हैं? सेठ जी ने कहा– जी! हाँ। राजा उनके पावन चरणों में नतमस्तक हुआ और द्वेषियों की ओर कोप भरी दृष्टि से देखने लगा। सबके मन थर-थर काँपने लगे। मुनिश्री ने कहा– राजन्! यह सत्य है कि मेरे शरीर में कुष्ट था, अभी भी मेरी कनिष्ठा अंगुली में इसका प्रभाव शेष है किन्तु "जैनधर्म के सभी साधु कोढ़ी होते हैं" इस आक्षेप को दूर कर जिनधर्म की प्रभावना के लिए मैंने भक्ति के प्रसाद से यह रोग एक रात में दूर कर दिया है अतः इन बेचारों की कोई गलती नहीं। राजा मुनिश्री के वचनों से ऐसा सुनकर जैन दर्शन से बहुत प्रभावित हुआ। राजा ने व जिनधर्म द्वेषियों ने आचार्यश्री से क्षमा प्रार्थना की और जिनधर्म को धारणकर सम्यग्दर्शन प्राप्त किया।

व्रतविधि– इस एकीभाव स्तोत्र में छब्बीस पद्य हैं, उन काव्यों के अनुसार छब्बीस (26) व्रत किये जाते हैं। उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य व्रत एकाशन करना है। इसमें तिथियाँ खुली हैं, जब जो तिथि सुविधाजनक हो, उसी दिन व्रत करें। व्रत के दिन स्तोत्र पाठ करें। चौबीस तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके पूजा करें पुनः प्रत्येक मंत्र पृथक्-पृथक् हैं, उनमें से क्रम से एक-एक जाप्य करें।

समुच्चय मंत्र– **ॐ ह्रीं सर्वव्याधिविनाशनसमर्थाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं एकीभावसदृशकर्मबंधनाशनसमर्थाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं हृदयस्थितपापान्धकारविनाशनसमर्थाय ज्योतीरूपाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं स्तोत्रमंत्रप्रभावेनदेहस्थविषमव्याधिनिष्कासनसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं गर्भावतारप्राक्पृथ्वीकनकमयकरणसमानभाक्तिकतनु-सुवर्णीकरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं भक्तजनहृदयस्थिततत्सर्वक्लेशविनाशनसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं त्वन्नयकथापीयूषवापीमध्यनिर्मग्नभाक्तिकदुःखदावोप-तापशांतकरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं पादन्यासस्थलस्वर्णकमलमिवत्वत्स्पृशन्ममभक्तस्य-सर्वश्रेयःप्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं भक्तिपात्र्यात्वद्वचनामृतपिबन्भाक्तिक दुर्वाररोगनिवारण-समर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं मानस्तम्भसदृश-त्वत्समीपत्वप्राप्तभाक्तिकजनमान-रोगहरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।**

10. ॐ ह्रीं त्वन्मूर्तिस्पर्शितवायुना निरवधिरोगधूलिधुन्वन्समर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

11. ॐ ह्रीं भाक्तिकजनभव-भवदुःखनिवारणसमर्थपरमदयालु-सर्वेशाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

12. ॐ ह्रीं मणिजयमालिकया त्वन्नमस्कारमंत्रजपद्भाक्तिकगण-स्वर्गलक्ष्मीप्रभुत्वकरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

13. ॐ ह्रीं अनवधिस्-त्वदुत्कृष्टभक्तिकुञ्चिकानिमित्तेनमुक्ति-द्वारोद्घाटनकारणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

14. ॐ ह्रीं भवद्भारतीरत्नदीपेन मुक्तिपथावलोकनसामर्थ्य-प्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

15. ॐ ह्रीं कर्मक्षोणीपिहितात्मज्योतीनिधिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

16. ॐ ह्रीं त्वद्भक्तिगंगामध्यावगाहकभक्तगणसर्वकल्मष-क्षालनसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

17. ॐ ह्रीं त्वद्ध्यायन्भाक्तिकस्य सोऽहमितिमतिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

18. ॐ ह्रीं सप्तभंगीतरंगयुत-त्वद्वाक्समुद्रमंथनोद्भवपरमामृत-प्रापकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

19. ॐ ह्रीं शस्त्रवसनभूषाविरहितपरमसुंदरस्वरूपाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

20. ॐ ह्रीं भवसमुद्रपारंगतसिद्धिकान्तापतित्रैलोक्यप्रभु-स्तुतिश्लाघनाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

21. ॐ ह्रीं भक्तिपीयूषपुष्टभव्यगणाभिमतफलप्रदपारिजाताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

22. ॐ ह्रीं कोपप्रसादविरहितपरमोपेक्षि-भुवनतिलकप्राभवसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

23. ॐ ह्रीं सकलतत्त्वग्रन्थस्मरणविषयिबुद्धिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

24. ॐ ह्रीं अनंतसुखज्ञानदृग्वीर्यरूपाय भाक्तिकजनपञ्चकल्याण-प्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

25. ॐ ह्रीं स्वात्माधीनसुखेच्छुकजनकल्याणकल्पद्रुमाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

26. ॐ ह्रीं शाब्दिक-तार्किक-काव्यकृत-भव्यगणोत्कृष्टश्रीवादिराज-सूरिकृतएकीभावस्तोत्रस्वामिने श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

यह व्रत सर्व प्रकार के रोगों को शांत करके शरीर को आरोग्य प्रदान करने वाला है और परम्परा से आत्मा को स्वस्थ- शुद्ध करके अतीन्द्रिय मोक्षसुख प्राप्त कराने वाला है। साथ ही संसार के भी उत्तम-उत्तम सुखों को देने वाला है।

(105) सप्तर्षि व्रत (मृत्युंजय व्रत)

आज से लगभग 9 लाख वर्ष पूर्व श्री रामचन्द्र के समय मथुरानगरी के उद्यान में सात महर्षि महामुनि पधारे थे। वहाँ वर्षायोग स्थापित किया था, उनके शरीर से स्पर्शित हवा के प्रभाव से वहाँ पर दैवी प्रकोप—महामारी रोग कष्ट दूर हुआ था। तभी से लेकर आज तक इन सप्तर्षि मुनियों की प्रतिमाएँ मंदिरों में विराजमान कराने की परम्परा चली आ रही है और इनका अभिषेक-भक्ति आदि पूजा की जाती है।

इस व्रत की विधि—आषाढ़ शु. चतुर्दशी से श्रावण कृष्णा पंचमी तक सात दिन यह व्रत करना चाहिए। इन व्रतों के दिन सप्तर्षि मुनियों की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके उन्हीं की पूजा करें। मंत्र निम्न प्रकार हैं—

समुच्चय मंत्र—**ॐ ह्रीं अर्हं सुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्रनाम सप्त महर्षिभ्यो नमः।**

प्रत्येक दिन के प्रत्येक पृथक्-पृथक् मंत्र—

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुरमन्युमहर्षये नमः।

2. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रीमन्युमहर्षये नमः।

3. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनिचयमहर्षये नमः।

4. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसर्वसुंदरमहर्षये नमः।

5. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीजयवानमहर्षये नमः।

6. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविनयलालसमहर्षये नमः।

7. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीजयमित्रमहर्षये नमः।

इन सप्तर्षियों की कथा पढ़ें। सात वर्ष तक यह व्रत करके उद्यापन में सप्तर्षियों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कराकर मंदिरों में, गृह चैत्यालयों में विराजमान करें। यथाशक्ति मुनि-आर्यिका आदि को आहारदान आदि देकर दीन-दुखियों को भी करुणादान, औषधिदान आदि देवें।

इस व्रत को लगातार सात वर्ष करना चाहिए। इस व्रत के प्रभाव से अकालमृत्यु को दूर कर परम्परा से मृत्युंजयपद मोक्षपद भी प्राप्त किया जा सकता है। जीवन में आने वाले अनेक संकट दूर होंगे। अनेक प्रकार के एक्सीडेंट, रोग, शोक, संकट दूर होंगे। इसमें कोई भी संदेह नहीं है।

यदि आप मथुरा तीर्थ नहीं जा सकते हैं, तो अन्य किसी भी तीर्थ की वंदना करके व्रत पूर्ण करें।

सप्तर्षियों की कथा—अयोध्या के राजदरबार में एक दिन महाराजा श्री रामचन्द्र ने अपने भाई शत्रुघ्न से कहा—

''शत्रुघ्न! इस तीन खण्ड की वसुधा में तुम्हें जो देश इष्ट हो, उसे स्वीकृत कर लो। क्या तुम अयोध्या का आधा भाग लेना चाहते हो? या उत्तम पोदनपुर को? राजगृह नगर चाहते हो या मनोहर पौंड्र नगर को?''

इत्यादि प्रकार से श्री राम और लक्ष्मण ने सैकड़ों राजधानियाँ बताईं, तब शत्रुघ्न ने बहुत कुछ विचार कर मथुरा नगरी की याचना की। तब श्री राम ने कहा—

''मथुरा का राजा मधु है, वह हम लोगों का शत्रु है, यह बात क्या तुम्हें ज्ञात नहीं है? वह मधु रावण का जमाई है और चमरेन्द्र ने उसे ऐसा शूलरत्न दिया हुआ है जो कि देवों के द्वारा भी दुर्निवार है, वह हजारों के भी प्राण हरकर पुनः उसके हाथ में आ जाता है। इस मधु का लवणार्णव नाम का पुत्र है वह विद्याधरों के द्वारा भी दुःसाध्य है, उस शूरवीर को तुम किस तरह जीत सकोगे?''

बहुत कुछ समझाने के बाद भी शत्रुघ्न ने यही कहा कि—

''इस विषय में अधिक कहने से क्या लाभ? आप तो मुझे मथुरा दे दीजिए। यदि मैं उस मधु को मधु के छत्ते के समान तोड़कर नहीं फेंक दूँ तो मैं राजा दशरथ के पुत्र होने का ही गर्व छोड़ दूँ। हे भाई! आपके आशीर्वाद से मैं उसे दीर्घ निद्रा में सुला दूँगा।''

इसके बाद शत्रुघ्न ने जिनमंदिर में जाकर सिद्ध परमेष्ठियों की पूजा करके घर जाकर भोजन किया पुनः माता के पास पहुँचकर प्रणाम करके मथुरा की ओर प्रस्थान के लिए आज्ञा माँगी। माता सुप्रभा ने पुत्र के मस्तक पर हाथ फेरकर उसे अपने अर्धासन पर बिठाकर प्यार से कहा—

''हे पुत्र! तू शत्रुओं को जीतकर अपना मनोरथ सिद्ध कर। हे वीर! तुझे युद्ध में शत्रु को पीठ नहीं दिखाना है। हे वत्स! जब तू युद्ध में विजयी होकर आयेगा, तब मैं सुवर्ण के कमलों से जिनेन्द्रदेव की परम पूजा करूँगी।''

बहुत बड़ी सेना के साथ शत्रुघ्न ने क्रम-क्रम से पुण्यभागा नदी को पार कर आगे पहुँचकर अपनी सेना ठहरा दी और गुप्तचरों को मथुरा भेज दिया। उन लोगों ने आकर समाचार दिया—

''देव! सुनिए, यहाँ से उत्तर दिशा में मथुरा नगरी है वहाँ नगर के बाहर एक सुन्दर राजउद्यान है। इस समय राजा मधुसुन्दर अपनी जयंत रानी के साथ वहीं निवास कर रहा है। कामदेव के वशीभूत हुए और सब काम को छोड़कर रहते हुए आज छठा दिन है। आपके आगमन का उसे अभी तक कोई पता नहीं है।''

गुप्तचरों के द्वारा सर्व समाचार विदित कर शत्रुघ्न ने यही अवसर अनुकूल समझकर साथ में एक लाख घुड़सवारों को लेकर वह मथुरा की ओर बढ़ गया। अर्धरात्रि के बाद शत्रुघ्न ने मथुरा के द्वार में प्रवेश किया। इधर शत्रुघ्न के बंदीगणों ने—

''राजा दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न की जय हो।'' ऐसी जयध्वनि से आकाश को गुंजायमान कर दिया था। तब मथुरा के अन्दर किसी शत्रुराजा का प्रवेश हो गया है, ऐसा जानकर शूरवीर योद्धा जग पड़े। इधर शत्रुघ्न ने मधु

के राजमहल में प्रवेश किया और मधु की आयुधशाला पर अपना अधिकार जमा लिया।

शत्रुघ्न को मथुरा में प्रविष्ट जानकर महाबलवान् राजा मधुसुन्दर रावण के समान क्रोध को करता हुआ उद्यान से बाहर निकला किन्तु शत्रुघ्न से सुरक्षित मथुरा के अन्दर व अपने महल में प्रवेश करने में असमर्थ ही रहा, तब वह अपने शूलरत्न को प्राप्त नहीं कर सका फिर भी उसने शत्रुघ्न से सन्धि नहीं की प्रत्युत् युद्ध के लिए तैयार हो गया।

वहाँ दोनों की सेनाओं में घमासान युद्ध शुरू हो गया। इधर मधुसुन्दर के पुत्र लवणार्णव के साथ कृतांतवक्त्र सेनापति का युद्ध चल रहा था। बहुत ही प्रकार से गदा, खड्ग आदि से एक-दूसरे पर प्रहार करते हुए अन्त में कृतांतवक्त्र के द्वारा शक्ति नामक शस्त्र के प्रहार से वह लवणार्णव मृत्यु को प्राप्त हो गया। पुनः राजा मधु और शत्रुघ्न का बहुत देर तक युद्ध चलता रहा। बाद में मधु ने अपने को शूलरत्न से रहित जानकर तथा पुत्र के महाशोक से अत्यंत पीड़ित होता हुआ शत्रु की दुर्जेय स्थिति समझकर मन में चिंतन करने लगा–

''अहो! मैंने दुर्दैव से पहले अपने हित का मार्ग नहीं सोचा, यह राज्य, यह जीवन पानी के बुलबुले के समान क्षणभंगुर है। मैं मोह के द्वारा ठगा गया हूँ। पुनर्जन्म अवश्य होगा, ऐसा जानकर भी मुझ पापी ने समय रहते हुए कुछ नहीं सोचा। अहो! जब मैं स्वाधीन था, तब मुझे सद्बुद्धि क्यों नहीं उत्पन्न हुई? अब मैं शत्रु के सन्मुख क्या कर सकता हूँ? अरे! जब भवन में आग लग जावे, तब कुंआ खुदवाने से भला क्या होगा.....?''

ऐसा चिंतवन करते हुए राजा मधु एकदम संसार, शरीर और भोगों से विरक्त हो गया। तत्क्षण ही उसने अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पाँचों परमेष्ठियों को नमस्कार करके चारों मंगल, लोकोत्तम और शरणभूत की शरण लेता हुआ अपने दुष्कृतों की आलोचना करके सर्व सावद्य योग– सर्व आरंभ-परिग्रह का भावों से ही त्याग करके यथार्थ समाधिमरण करने में उद्यमशील हो गया। उसने सोचा–

''अहो! ज्ञान-दर्शनस्वरूप एक आत्मा ही मेरा है, वही मुझे शरण है। न तृण सांथरा है न भूमि, बल्कि अंतरंग-बहिरंग परिग्रह को मन से छोड़ देना ही मेरा संस्तर है।.....।''

ऐसा विचार करते हुए उस घायल स्थिति में ही शरीर से निर्मम होते हुए राजा मधुसुन्दर ने हाथी पर बैठे-बैठे ही केशलोंच करना शुरू कर दिया।

युद्ध की इस भीषण स्थिति में भी अपने हाथों से अपने सिर के बालों का लोच करते हुए देखकर शत्रुघ्न कुमार ने आगे आकर उन्हें नमस्कार किया और बोले–

''हे साधो! मुझे क्षमा कीजिए.....। आप धान्य हैं कि जो इस रणभूमि में भी सर्वारंभ-परिग्रह का त्याग कर जैनेश्वरी दीक्षा लेने के सन्मुख हुए हैं।''

उस समय जो देवांगनाएँ आकाश में स्थित हो युद्ध देख रही थीं उन्होंने महामना मधु के ऊपर पुष्पों की वर्षा की। इधर राजा मधु ने परिणामों की विशुद्धि से समता भाव धारण करते हुए प्राण छोड़े और समाधिमरण–वीरमरण के प्रभाव से तत्क्षण ही सानत्कुमार नाम के तीसरे स्वर्ग में उत्तम देव हो गये।

इधर वीर शत्रुघ्न भी संतुष्ट हुआ और युद्ध को विराम देकर सभी प्रजा को अभयदान देते हुए मथुरा में आकर रहने लगा।

मथुरानगरी में महामारी प्रकोप, सप्तर्षि के चातुर्मास से कष्ट निवारण– राजा मधुसुन्दर का वह दिव्य शूलरत्न यद्यपि अमोघ था, फिर भी शत्रुघ्न के पास वह निष्फल हो गया, उसका तेज छूट गया और वह अपनी विधि से च्युत हो गया। तब वह (उसका अधिष्ठाता देव) खेद, शोक और लज्जा को धारण करता हुआ अपने स्वामी असुरों के अधिपति चमरेन्द्र के पास गया। शूलरत्न के द्वारा मधु के मरण का समाचार सुनकर चमरेन्द्र को बहुत ही दुःख हुआ। वह बार-बार मधु के सौहार्द का स्मरण करने लगा। तदनंतर वह पाताल लोक से निकलकर मथुरा जाने को उद्यत हुआ। तभी गरुड़कुमार देवों के स्वामी वेणुधारी इन्द्र ने इसे रोकने का प्रयास किया किन्तु यह नहीं माना और मथुरा में पहुँच गया।

वहाँ चरमेन्द्र ने देखा कि मथुरा की प्रजा शत्रुघ्न के आदेश से बहुत बड़ा उत्सव मना रही है, तब वह

विचार करने लगा–

''ये मथुरा के लोग कितने कृतघ्नी हैं कि जो दुःख-शोक के अवसर पर भी हर्ष मना रहे हैं। जिसने हमारे स्नेही राजा मधु को मारा है, मैं उसके निवासस्वरूप इस समस्त देश को नष्ट कर दूँगा।''

इत्यादि प्रकार से क्रोध से प्रेरित हो उस चमरेन्द्र ने मथुरा के लोगों पर दुःसह उपसर्ग करना प्रारंभ कर दिया। जो जिस स्थान पर सोये थे, बैठे थे, वे महारोग (महामारी) के प्रकोप से दीर्घ निद्रा को प्राप्त हो गये– मरने लगे।

इस महामारी उपसर्ग को देखकर कुल देवता की प्रेरणा से राजा शत्रुघ्न अपनी सेना के साथ अयोध्या वापस आ गये।

विजय को प्राप्त कर आते हुए शूरवीर शत्रुघ्न का श्रीराम-लक्ष्मण ने हर्षित हो अभिनंदन किया। माता सुप्रभा ने भी अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सुवर्ण के कमलों से जिनेन्द्रदेव की महती पूजा सम्पन्न करके धर्मात्माओं को दान दिया पुनः दीन-दुःखी जनों को करुणादान देकर सुखी किया। यद्यपि वह अयोध्या नगरी सुवर्ण के महलों से सहित थी फिर भी पूर्वभवों के संस्कारवश शत्रुघ्न का मन मथुरा में ही लगा हुआ था।

इधर मथुरा नगरी के उद्यान में गगनगामी ऋद्धिधारी सात दिगम्बर महामुनियों ने वर्षायोग धारण कर लिया– चातुर्मास स्थापित कर लिया। इनके नाम थे– सुरमन्यु, श्रीमन्यु, श्रीनिचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनयलालस और जयमित्र।

प्रभापुर नगर के राजा श्रीनंदन की धारिणी रानी के ये सातों पुत्र थे। प्रीतिंकर मुनिराज को केवलज्ञान प्राप्त हो जाने पर देवों को जाते हुए देखकर प्रतिबोध को प्राप्त हुए थे। उस समय राजा श्रीनंदन ने अपने एक माह के पुत्र को राज्य देकर अपने सातों पुत्रों के साथ प्रीतिंकर भगवान के समीप दीक्षा ग्रहण कर ली थी। समय पाकर श्रीनंदन ने केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त कर लिया था और ये सातों मुनि तपस्या के प्रभाव से अनेक ऋद्धियों को प्राप्त कर सातऋषि (सप्तर्षि) के नाम से प्रसिद्ध हो रहे थे।

उद्यान में वटवृक्ष के नीचे ये सातों मुनि चातुर्मास में स्थित हो गये थे। इन मुनियों के तपश्चरण के प्रभाव से उस समय मथुरा में चमरेन्द्र के द्वारा फैलायी गयी महामारी एकदम नष्ट हो गई थी। वहाँ नगरी में चारों तरफ के वृक्ष फलों के भार से लद गये थे और खेती भी खूब अच्छी हो रही थी। ये मुनिराज रस-परित्याग, बेला, तेला आदि तपश्चरण करते हुए महातप कर रहे थे। कभी-कभी ये आहार के समय आकाश को लांघकर निमिषमात्र में विजयपुर, पोदनपुर आदि दूर-दूर नगरों में जाकर आहार ग्रहण करते थे। वे महामुनिराज परगृह में अपने करपात्र में केवल शरीर की स्थिति के लिए आहार लेते थे।

एक दिन ये सातों ही महाऋषिराज जूड़ाप्रमाण (चार हाथ प्रमाण) भूमि को देखते हुए अयोध्या नगरी में प्रविष्ट हुए। वे विधिपूर्वक भ्रमण करते हुए अर्हद्दत्त सेठ के घर के दरवाजे पर पहुँचे। उन मुनियों को देखकर अर्हद्दत्त सेठ विचार करने लगा–

''यह वर्षाकाल कहाँ? और इन मुनियों की यह चर्या कहाँ? इस नगरी के आस-पास पर्वत की कंदराओं में, नदी के तट पर, वृक्ष के नीचे, शून्य घर में, जिनमंदिर में तथा अन्य स्थानों में जहाँ कहीं जो भी मुनिराज स्थित हैं, वे सब वर्षायोग पूरा किये बिना इधर-उधर नहीं जाते हैं परन्तु ये मुनि आगम के विपरीत चर्या वाले हैं, ज्ञान से रहित और आचार्यों से रहित हैं। इसलिए ये इस समय यहाँ आ गये हैं। यद्यपि ये मुनि असमय में आये थे फिर भी अर्हद्दत्त के अभिप्राय को समझने वाली वधू ने उनका पड़गाहन करके उन्हें आहारदान दिया।

आहार के बाद ये सातों मुनि तीन लोक को आनंदित करने वाले ऐसे जिनमंदिर में पहुँचे, जहाँ भगवान मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा विराजमान थी और शुद्ध निर्दोष प्रवृत्ति करने वाले दिगम्बर साधुगण भी विराजमान थे।

ये सातों मुनिराज पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर चल रहे थे। ऐसे इन मुनियों को वहाँ पर स्थित द्युति भट्टारक– द्युति नाम के आचार्य देव ने देखा। इन मुनियों ने उत्तम श्रद्धा से पैदल चलकर ही जिनमंदिर में प्रवेश किया, तब द्युति भट्टारक ने खड़े होकर नमस्कार कर विधि से उनकी पूजा की।

''यह हमारे आचार्य चाहे जिसकी वंदना करने के लिए उद्यत हो जाते हैं।''

ऐसा सोचकर उन द्युति आचार्य के शिष्यों ने उन सप्तर्षियों की निंदा का विचार किया। तदनंतर सम्यक् प्रकार से स्तुति करने में तत्पर वे सप्तर्षि मुनिराज जिनेन्द्र भगवान की वंदना कर आकाशमार्ग से पुनः अपने स्थान पर चले गये। जब वे आकाश में उड़े, तब उन्हें चारण ऋद्धि के धारक जानकर द्युति आचार्य के शिष्य जो अन्य मुनि थे, उन्होंने अपनी निंदा-गर्हा आदि करके प्रायश्चित्त कर अपनी कलुषता दूर कर अपना हृदय निर्मल कर लिया।

इसी बीच में अर्हद्दत्त सेठ जिनमंदिर में आया, तब द्युति आचार्य ने कहा–

''हे भद्र! आज तुमने ऋद्धिधारी महान मुनियों के दर्शन किये होंगे। वे सर्वजगवंदित महातपस्वी मुनि मथुरा में निवास करते हैं, आज मैंने उनके साथ वार्तालाप किया है। उन आकाशगामी ऋषियों के दर्शन से आज तुमने भी अपना जीवन धन्य किया होगा।''

इन आचार्यदेव के मुख से उन साधुओं की प्रशंसा सुनते ही सेठ अर्हद्दत्त खेदखिन्न होकर पश्चात्ताप करने लगा–

''ओह! यथार्थ को नहीं समझने वाले मुझ मिथ्यादृष्टि को धिक्कार हो, मेरा आचरण अनुचित था, मेरे समान दूसरा अधार्मिक भला और कौन होगा? इस समय मुझसे बढ़कर दूसरा मिथ्यादृष्टि अन्य कौन होगा? हाय! मैंने उठकर मुनियों की पूजा नहीं की तथा नवधाभक्ति से उन्हें आहार भी नहीं दिया।

साधुरूपं समालोक्य न मुंचत्यासनं तु यः।
दृष्ट्वाऽपमन्यते यश्च स मिथ्यादृष्टिरुच्यते।।

दिगम्बर मुनियों को देखकर जो अपना आसन नहीं छोड़ता है– उठकर खड़ा नहीं होता है तथा देखकर भी उनका अपमान करता है, वह मिथ्यादृष्टि कहलाता है।

मैं पापी हूँ, पाप कर्मा हूँ, पापात्मा हूँ, पाप का पात्र हूँ अथवा जिनागम की श्रद्धा से दूर निंद्यतम हूँ। जब तक मैं हाथ जोड़कर उन मुनियों की वंदना नहीं कर लूँगा, तब तक मेरा शरीर एवं हृदय झुलसता ही रहेगा। अहंकार से उत्पन्न हुए इस पाप का प्रायश्चित्त उन मुनियों की वंदना के सिवाय और कुछ भी नहीं हो सकता है।''

(इस कथा से यह स्पष्ट हो जाता है कि आकाशगामी मुनि चातुर्मास में भी अन्यत्र जाकर आहार ग्रहण करके आ जाते थे।)

शत्रुघ्न के लिए महामुनि का उपदेश– इधर इस मथुरा नगरी में इन मुनियों के चातुर्मास करने से चमरेन्द्र द्वारा किये गये सारे उपद्रव-महामारी आदि नष्ट हो गये थे। नगर में पुनः पूर्ण शांति का वातावरण हो गया था।

इधर अयोध्या से अर्हदत्त सेठ महान वैभव के साथ कार्तिक शुक्ला सप्तमी के दिन उन ऋषियों की वंदना करने के लिए पहुँच गये थे। राजा शत्रुघ्न भी इन मुनियों का उपदेश श्रवणकर भक्ति से प्रेरित हुए मथुरा के उद्यान में आ गये थे और उनकी माता सुप्रभा भी विशाल वैभव और धन आदि को लेकर इन मुनियों की पूजा करने के लिए आ गई। उन सम्यग्दृष्टि महापुरुषों ने और सुप्रभा आदि रानियों ने मुनिराज की महान पूजा की। उस समय वहाँ वह उद्यान और मुनियों के आश्रम का स्थान प्याऊ, नाटकशाला, संगीतशाला आदि से सुशोभित हुआ स्वर्गप्रदेश के समान मनोहर हो गया था।

अनन्तर भक्ति एवं हर्ष से भरे हुए शत्रुघ्न ने वर्षायोग को समाप्त करने वाले उन मुनियों को पुनः पुनः नमस्कार करके उनसे आहार ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की, तब इन सातों में जो प्रमुख थे, वे ''सुरमन्यु'' महामुनि बोले–

''हे नरश्रेष्ठ! जो आहार मुनियों के लिए संकल्प कर बनाया जाता है, दिगम्बर मुनिराज उसे ग्रहण नहीं करते हैं। जो आहार न स्वयं किया गया है न कराया गया है और जिसमें न बनाते हुए को अनुमति दी गई है ऐसे नवकोटि विशुद्ध आहार को ही साधुगण ग्रहण करते हैं।''

पुनः शत्रुघ्न ने निवेदन किया–

''हे भगवन् ! आप भक्तों के ऊपर अनुग्रह करने वाले हैं। आप अभी कुछ दिन और यहीं मथुरा में ठहरिये। आपके प्रभाव से ही यहाँ महामारी की शांति हुई है.....।''

पुनः शत्रुघ्न चिंता करने लगा–

''ऐसे महामुनियों को विधिवत् आहार दान देकर मैं कब संतुष्ट होऊँगा?'' शत्रुघ्न को नतमस्तक देखकर उन मुनिराज ने पुनः आगे आने वाले काल का वर्णन करते हुए उपदेश दिया–

''हे राजन् ! जब अनुक्रम से तीर्थंकरों का काल व्यतीत हो जायेगा– पंचम काल आ जाएगा, तब यहाँ धर्म कर्म से रहित अत्यन्त भयंकर समय आ जाएगा। दुष्ट पाखण्डी लोगों द्वारा यह परम पावन जैन शासन उस तरह तिरोहित हो जायेगा कि जिस तरह धूलि के छोटे-छोटे कणों द्वारा सूर्य का बिम्ब ढक जाता है। यह संसार चोरों के समान कुकर्मी, क्रूर, दुष्ट, पाखण्डी लोगों से व्याप्त होगा। पुत्र, माता-पिता के प्रति और माता-पिता पुत्रों के प्रति स्नेह रहित होंगे। उस कलिकाल में राजा लोग चोरों के समान धन के अपहर्ता होंगे। कितने ही मनुष्य यद्यपि सुखी होंगे, फिर भी उनके मन में पाप होगा, वे दुर्गति में ले जाने वाली ऐसी विकथाओं से एक-दूसरे को गोहित करते हुए प्रवृत्ति करेंगे।

हे शत्रुघ्न! कषायबहुल समय के आने पर देवागमन आदि समस्त अतिशय नष्ट हो जायेंगे। तीव्र मिथ्यात्व से युक्त मनुष्य व्रतरूप गुणों से सहित एवं दिगम्बर मुद्रा के धारक मुनियों को देखकर ग्लानि करेंगे। अप्रशस्त को प्रशस्त मानते हुए कितने ही दुर्बुद्धि लोग भय पक्ष में उस तरह जा पड़ेंगे जिस तरह कि पतंगे अग्नि में जा पड़ते हैं। कितने ही मूढ़ मनुष्य हंसी करते हुए शान्तचित्त मुनियों को तिरस्कृत करके मूढ़ मनुष्यों को आहार देवेंगे। जिस प्रकार शिलातल पर रखा हुआ बीज यद्यपि सदा सींचा जाय तो भी उसमें फल नहीं लग सकता है, वैसे ही शील रहित मनुष्यों के लिए दिया हुआ दान भी निरर्थक होता है। 'जो गृहस्थ मुनियों की अवज्ञा कर गृहस्थ के लिए आहार देते हैं, वे मूर्ख चंदन को छोड़कर बहेड़ा ग्रहण करते हैं।

अवज्ञाय मुनीन् गेही गेहिने यः प्रयच्छति।
त्यक्त्वा स चंदनं मूढो गृह्णत्येव विभीतकं।।67।।

हे शत्रुघ्न! इस प्रकार दुषमता के कारण निकृष्ट काल को आने वाला जानकर तुम आत्मा के लिए हितकर शुभ और स्थायी ऐसा कार्य करो। तुम नामी पुरुष हो अतः निर्ग्रन्थ मुनियों को आहार देने का निश्चय करो, यही तुम्हारी धन-संपदा का सार है। हे राजन् ! आगे आने वाले काल में थके हुए मुनियों के लिए आहार देना अपने गृहदान के समान एक बड़ा भारी आश्रय होगा। इसलिए हे वत्स! तुम ये दान देकर इस समय गृहस्थ के शीलव्रत का नियम धारण करो और जीवन को सार्थक बनाओ। मथुरा के समस्त लोग समीचीन धर्म को धारण करें। दया और वात्सल्य भाव से सम्पन्न तथा जिनशासन की भावना से युक्त होवें। घर-घर में जिनप्रतिमाएँ स्थापित की जावें, उनकी पूजाएँ हों, अभिषेक हों और विधिपूर्वक प्रजा का पालन किया जाये।

सप्तर्षि प्रतिमा दिक्षु चतसृष्वपि यत्नतः।
नगर्यां कुरू शत्रुघ्न! तेन शांतिर्भविष्यति।।74।।
अद्यप्रभृति यद्गेहे जैनं बिंबं न विद्यते।
मारी भक्ष्यति यद्व्याघ्री यथाऽनाथं कुरंगकं।। 75।। (पद्मपुराण, पर्व 92)

हे शत्रुघ्न! इस नगरी की चारों दिशाओं में सप्तर्षियों की प्रतिमाएँ स्थापित करो, उसी से सब प्रकार की शांति होगी। आज से लेकर जिस घर में जिनप्रतिमा नहीं होगी, उस घर को मारी उसी तरह खा जायेगी कि जिस तरह व्याघ्री अनाथ मृग को खा जाती है। जिसके घर में अंगूठा प्रमाण भी जिनप्रतिमा होगी, उसके घर में गरुड़ से डरी हुई सर्पिणी के समान मारी का प्रवेश नहीं होगा।''

महामुनि के इस उपदेश को सुनकर हर्ष से युक्त हो राजा शत्रुघ्न ने कहा–

''आपने जैसी आज्ञा दी है, वैसा ही हम लोग करेंगे'' इत्यादि। इसके बाद वे महामना सातों मुनि आकाश में उड़कर विहार कर गये। वे सप्तर्षि निर्वाण क्षेत्रों की वंदना करके अयोध्या में सीता के घर उतरे। अत्यधिक हर्ष को धारण करने वाली एवं श्रद्धा आदि गुणों से सुशोभित सीता ने उन्हें विधिपूर्वक उत्तम आहार

दिया। जानकी के नवधाभक्ति से दिये गये सर्वगुणसम्पन्न आहार को ग्रहण कर उसे शुभाशीर्वाद देकर वे मुनि आकाश मार्ग से चले गये।

अनन्तर शत्रुघ्न ने नगर के भीतर और बाहर सर्वत्र जिनेंद्र भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान करायीं तथा ईतियों को दूर करने वाली सप्तर्षियों की प्रतिमाएँ भी चारों दिशाओं में विराजमान करायीं। उस समय वहाँ पर सर्व प्रकार से सुभिक्ष, क्षेम और शांति का साम्राज्य हो गया। तब राजा शत्रुघ्न निर्विघ्नरूप से राज्य का संचालन करते हुए और प्रजा का पुत्रवत् पालन करते हुए सुखपूर्वक मथुरा नगरी में रहने लगे।

(106) शारदा व्रत

शारदा– सरस्वती की आराधना, उपासना, भक्ति आदि से भव्यजीव समीचीन ज्ञान की वृद्धि करते हुए परम्परा से श्रुतकेवली, केवली पद को प्राप्त करेंगे। यह व्रत ज्येष्ठ मास में शुक्लपक्ष में एकम से आषाढ़ कृष्णा एकम तक सोलह दिन करना है। इसी प्रकार आश्विन मास में शुक्ला एकम से कार्तिक कृ. एकम तक पुनः माघ मास में शुक्ला एकम से फाल्गुन कृ. एकम तक, ऐसे वर्ष में तीन बार व्रत करना है। इस व्रत में शास्त्रों की पूजा-द्वादशांग जिनवाणी की पूजा, सरस्वती की मूर्ति की पूजा– जिनके मस्तक पर भगवान अर्हंतदेव की मूर्ति विराजमान हैं ऐसी सरस्वती– शारदा देवी की पूजा करना।

इस व्रत में ज्येष्ठ शु. 5, आश्विन शु. 5 और माघ शु. 5 को व्रत, उपवास या एकाशन करना और उन दिनों विशेषरूप से सरस्वती की आराधना करना है तथा शेष दिनों में एक बार अन्न का भोजन करना, शक्ति के अनुसार दूसरी बार अल्पाहार– फल-दूध, औषधि आदि लेना चाहिए। रात्रि में चतुर्विध आहार का त्याग करना है। प्रतिदिन सरस्वती के साथ-साथ महालक्ष्मी देवी की तथा चक्रेश्वरी, पद्मावती आदि शासन देवियों की भी आराधना करना है।

'सरस्वती महापूजा' नाम से पुस्तक जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से मंगाकर उसमें लिखे अनुसार सरस्वती के 108 मंत्र आदि विधि से 'महाआराधना' करना चाहिए।

इस व्रत में ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा, आश्विन शु. पूर्णिमा– शरद पूर्णिमा और माघ शु. पूर्णिमा को उपवास या एकाशन से व्रत करके हस्तिनापुर, अयोध्या, प्रयाग आदि तीर्थों पर जाकर उन-उन केवलज्ञान भूमि की पूजा करके सरस्वती की विशेष आराधना करें। आज उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ– षट्खण्डागम ग्रंथों की पूजा करके अगले दिन एकम– प्रतिपदा को पारणा करना है। यह व्रत सम्यग्ज्ञान की वृद्धि में तो निमित्त है ही, इसके प्रभाव से तत्काल में सांसारिक नाना प्रकार के सुख, शांति, सम्पत्ति, संतति आदि की वृद्धि होती है और आगे परम्परा से द्वादशांग का ज्ञान प्राप्त कर नियम से केवलज्ञान को तथा मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

इसका मंत्र–

ॐ ह्रीं द्वादशांगवाणीसरस्वतीदेव्यै नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः।

लक्ष्मी मंत्र–

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ऐं महालक्ष्म्यै नमः।

चक्रेश्वरी मंत्र–

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री चक्रेश्वरी देव्यै नमः।

पद्मावती मंत्र–

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पद्मावती देव्यै नमः मम ईप्सितं कुरु कुरु स्वाहा।

इस प्रकार से जाप्य करें। सरस्वती के 108 मंत्रों से विधान-आराधना आदि करें।

एक वर्ष में तीन बार इस व्रत को करके बड़े रूप में सरस्वती की आराधना करके सरस्वती की प्रतिमा बनवाकर मंदिरों में विराजमान करें। यह व्रत सब प्रकार के मनोरथों को सफल करने वाला है।

(107) तीर्थंकर जन्मभूमि व्रत

वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों की वंदना के उद्देश्य से 16 व्रत करना है। व्रत के दिन उन-उन तीर्थंकरों की पूजन करें तथा ''तीर्थंकर जन्मभूमि विधान'' की पुस्तक से उन-उन जन्मभूमियों की भी पूजन करें। व्रत के उद्यापन में संभव हो तो सोलहों जन्मभूमियों की वंदना करें अथवा अयोध्या, हस्तिनापुर, वाराणसी आदि प्रमुख तीर्थों की वंदना अवश्य करें। व्रत में तिथि का कोई बंधन नहीं है। एक महीने में एक व्रत अवश्य करना है। व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम विधि अल्पाहार एवं जघन्य विधि एकाशन है। व्रत के उद्यापन में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से प्रकाशित ''तीर्थंकर जन्मभूमि विधान'' करें, 16-16 उपकरण मंदिर जी में रखें तथा कोई ग्रंथ प्रकाशित करवाकर वितरित करें।

व्रत की समुच्चय जाप्य – **ॐ ह्रीं षोडशजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र –

1. **ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकर-गर्भजन्म-कल्याणक-अजित-अभिनंदन-सुमति-अनन्तनाथ गर्भ-जन्म-दीक्षा-केवलज्ञान कल्याणकपवित्र शाश्वत अयोध्यातीर्थक्षेत्राय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र श्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र कौशाम्बी-प्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक-पार्श्वनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकल्याणकपवित्र वाराणसी तीर्थक्षेत्राय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र काकंदीतीर्थक्षेत्राय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक-पवित्र भद्रिकावतीतीर्थक्षेत्राय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक-पवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञाननिर्वाणकल्याणक-पवित्र चंपापुरी-मंदारगिरि-सिद्धक्षेत्राय नमः।**
10. **ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकर-गर्भ-जन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र कंपिलापुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।**
11. **ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र रत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।**
12. **ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ तीर्थंकरगर्भजन्म-दीक्षा-केवलज्ञान चतुश्चतुःकल्याणकपवित्र हस्तिनापुरी-तीर्थक्षेत्राय नमः।**
13. **ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-नमिनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षा-केवलज्ञानकल्याणकपवित्र मिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।**
14. **ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र राजगृहीतीर्थक्षेत्राय नमः।**
15. **ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकर-गर्भजन्मकल्याणकपवित्र शौरीपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।**
16. **ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकल्याणकपवित्र कुण्डलपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।**

(108) वीरशासन जयंती व्रत

(श्री गौतम स्वामी व्रत विधि)

आज से पच्चीस सौ छ्यासठ[1] वर्ष पूर्व राजगृही के विपुलाचल पर्वत पर श्रावण कृष्णा प्रतिपदा के दिन भगवान महावीर स्वामी की प्रथम दिव्यध्वनि खिरी थी अतः यही पवित्र दिन ''वीर शासन जयंती'' पर्व के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त है, क्योंकि तब से लेकर आज तक भगवान महावीर का ही शासन चला आ रहा है और पंचम काल के अंत तक– वीरांगज नाम के अंतिम मुनिराज तक चलता रहेगा। यही इस व्रत की तिथि है इसी दिन श्री गौतम स्वामी नाम से प्रसिद्ध भगवान के प्रथम गणधर ने द्वादशांग की रचना की थी अथवा ग्यारह अंग और चौदह पूर्वों की रचना की थी।

इस वीरशासन जयंती पर्व के बारे में कहा है–

एत्थावसप्पिणीए चउत्थकालस्स चरिमभागम्मि।
तेत्तीसवासअडमासपण्णरसदिवससेसम्मि।।68।।

वासस्स पढममासे सावणणामम्मि बहुलपडिवाए।
अभिजीणक्खत्तम्मि य उप्पत्ती धम्मतित्थस्स।।69।।

सावणबहुले पाडिवरुद्दमुहुत्ते सुहोदये रविणो।।
अभिजस्स पढमजोए जुगस्स आदी इमस्स पुढं[2]।।70।।

यहाँ अवसर्पिणी के चतुर्थ काल के अंतिम भाग में तेतीस वर्ष, आठ माह और पन्द्रह दिन शेष रहने पर वर्ष के श्रावण नामक प्रथम महिने में, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन अभिजित् नक्षत्र के उदित रहने पर धर्मतीर्थ की उत्पत्ति हुई।।68-69।।

श्रावण कृष्णा पड़िवा के दिन रुद्रमुहूर्त के रहते हुए सूर्य का शुभ उदय होने पर अभिजित् नक्षत्र के प्रथम योग में इस युग का प्रारंभ हुआ, यह स्पष्ट है।।70।।

इस दिन भगवान महावीर स्वामी की दिव्यध्वनि खिरी है वह सात सौ अठारह भाषारूप है अथवा सर्वभाषामयी है। उसी का स्पष्टीकरण–

जोयणपमाणसंठिदतिरियामरयणुवणिवहपडिबोहो।
मिदुमधुरगभीरतराविसदविसयसयलभासाहिं।।60।।

अट्ठरस महाभासा खुल्लयभासा वि सत्तसयसंखा।
अक्खरअणक्खरप्पय सण्णीजीवाण सयलभासाओ।।61।।

एदासिं भासाणं तालुवदंतोट्ठकंठवावारं।
परिहरिय एक्ककालं भव्वजणाणंदकरभासो[3]।।62।।

मृदु, मधुर, अति गंभीर और विषय को विशद करने वाली भाषाओं से एक योजनप्रमाण समवसरण सभा में स्थित तिर्यंच, देव और मनुष्यों के समूह को प्रतिबोधित करने वाले हैं, संज्ञी जीवों की अक्षर और अनक्षररूप अठारह महाभाषा और सात सौ छोटी भाषाओं में परिणत हुई और तालु, दन्त, ओठ तथा कण्ठ के हलन-चलन- रूप व्यापार से रहित होकर एक ही समय में भव्यजनों को आनन्द करने वाली भाषा (दिव्यध्वनि) के स्वामी भगवान महावीर हैं।

व्रत की विधि–श्रावण कृष्णा प्रतिपदा के दिन यह व्रत करना है। मंदिर में जाकर भगवान महावीर स्वामी का अभिषेक और पूजन करें तथा श्रुतस्कंध यंत्र और श्रुतदेवी– सरस्वती देवी जिनके मस्तक पर भगवान विराजमान हैं, उनका भी अभिषेक करके पूजन करें।

---

1. आज वीर निर्वाण संवत् 2536 है, इसी से लेना। 2. तिलोयपण्णत्ति, अ.1। 3. तिलोयपण्णत्ति, अ.1।

मंत्र जाप्य–ॐ ह्रीं सर्वभाषामयदिव्यध्वनिस्वामिने श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः मंत्र का जाप्य करें।

इस व्रत को 11 अंग, 14 पूर्व के रूप में 25 वर्ष या द्वादशांग के प्रतीक में 12 वर्ष तक करना चाहिए। पुनः उद्यापन में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा का पंचकल्याणक कराकर विराजमान करना या अपनी शक्ति अनुसार ग्रंथों को छपवाकर वितरित करना। भगवान महावीर की केवलज्ञान भूमि 'जमुही', देशनास्थली राजगृही आदि तीर्थों की वंदना करना आदि करके व्रत पूर्ण करना है। इस व्रत का फल परम्परा से केवलज्ञान को प्राप्त कर दिव्यध्वनि के स्वामी बनना है तथा प्रत्यक्ष में श्रुतज्ञान का विकास करना है।

श्री गौतम स्वामी व्रत विधि

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्।।1।।

इसी श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को श्री इंद्रभूति ब्राह्मण ने भगवान महावीर से दीक्षा लेकर प्रथम गणधर पद प्राप्त किया था अतः इसी दिन गौतम स्वामी व्रत भी किया जाता है। दोनों व्रत अलग-अलग करना चाहिए। अथवा यह व्रत एक साथ भी गौतम स्वामी की पूजा करके मंत्र जपकर कर सकते हैं।

आज से लगभग 2566 वर्ष पूर्व श्री इन्द्रभूति ब्राह्मण ने इन्द्र की प्रेरणा से राजगृही में भगवान महावीर के समवसरण के दर्शन किये। मानस्तंभ के दर्शन से ही उनका मान गलित हो गया और वे उसी क्षण सम्यग्दृष्टी बन गये। भगवान के श्रीचरणों में जैनेश्वरी दीक्षा लेते ही उन्हें मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ज्ञान प्रगट हो गया और वे प्रभु के प्रथम गणधर हो गये। उनका गोत्र गौतम था अतः वे गौतम स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हैं। इससे पूर्व गणधर के अभाव में भगवान महावीर की दिव्यध्वनि नहीं खिरी थी। इनके दीक्षा लेते ही प्रभु की दिव्यध्वनि खिरने लगी। उस दिन श्रावण कृष्णा प्रतिपदा थी प्रातःकाल गौतम स्वामी ने दीक्षा ली, प्रभु की दिव्यध्वनि खिरी। उसी दिन रात्रि में श्री गौतम गणधर देव ने ग्यारह अंग-चौदह पूर्वों की रचना कर दी।

ऋद्धियाँ सात होती हैं–

बुद्धि तवो विय लद्धी, विउव्वणलद्धी तहेव ओसहिया।
रस-वल-अक्सीणा वि य, लद्धीओ सत्त पण्णत्ता[1]।।

बुद्धि, तप, विक्रिया, औषधि, रस, बल और अक्षीण, इस प्रकार ऋद्धियाँ सात होती हैं।

षट्खण्डागम ग्रंथ की नवमी पुस्तक में श्री वीरसेन स्वामी ने लिखा है कि गणधर देवों के सातों ऋद्धियाँ होती हैं–

बुद्धि-तव-विउवणोसहि-रस-बल-अक्खीण-सुरसरत्तादी।
ओहि-मणपज्जवेहि य, हवंति गणबालया सहिया।

गणधर देव बुद्धि, तप, विक्रिया, औषधि, रस, बल, अक्षीण, सुस्वरत्वादि तथा अवधि एवं मनःपर्यय ज्ञान से सहित हैं।

आज जितना भी जैन वाङ्मय है, वह सब प्रभु की दिव्यध्वनि का ही अंश है।

व्रत की विधि–आषाढ़ शु. 15, गुरुपूर्णिमा को धारणा– एकाशन करके श्रावण कृ. 1 को उपवास करके भगवान महावीर स्वामी का, श्री गौतम स्वामी की प्रतिमा का एवं सरस्वती देवी की प्रतिमा का या श्रुतस्कंध यंत्र का अभिषेक करके इन तीनों की पूजा करें पुनः गौतम स्वामी का जीवन परिचय पढ़कर सारा दिवस धर्मध्यान में व्यतीत करें।

यदि उपवास की शक्ति नहीं हो तो अल्पाहार लेकर व्रत करना, ऐसे यह व्रत सात वर्ष तक करना है।

व्रत की जाप्य–ॐ ह्रीं सप्तर्द्धिसमन्वितश्रीगौतमस्वामिने नमः।

यह श्रावण कृ. 1, तभी से लेकर आज तक भी वीरशासन जयंती के नाम से प्रसिद्ध है। जैन शास्त्रों में इसे युगादि दिवस भी माना गया है। इस दिन किया गया व्रत संपूर्ण अमंगल को दूर कर ज्ञान की वृद्धि करने वाला

है क्योंकि यह धर्म तीर्थ उत्पत्ति का भी प्रथम दिन है अतः इसे प्रथम देशना दिवस के नाम से भी कहते हैं। श्री गौतम स्वामी के नाम से किया यह व्रत सभी के जीवन में मंगलकारी होगा। व्रत पूर्णकर राजगृही तीर्थ एवं गुणावां तीर्थ की वंदना अवश्य करना चाहिए।

श्री गौतम स्वामी का परिचय– मगध देश में ब्राह्मण नाम के नगर में शांडिल्य नाम के ब्राह्मण की दो पत्नी थीं– स्थंडिला और केशरी। स्थंडिला ने गौतम और गार्ग्य को जन्म दिया तथा केशरी ने भार्गव को जन्म दिया। इन तीनों भाइयों के इन्द्रभूति, अग्निभूति एवं वायुभूति नाम प्रसिद्ध थे। किसी जगह गौतम की जन्मतिथि चैत्र शु. एकम् मानी गई है।

भगवान महावीर को केवलज्ञान प्रगट होकर समवसरण की रचना हो चुकी थी, किन्तु दिव्यध्वनि नहीं खिर रही थी। 66 दिन व्यतीत हो गये, तभी सौधर्म इन्द्र ने समवसरण में गणधर का अभाव समझकर अपने अवधिज्ञान से ''गौतम'' को इस योग्य जानकर वृद्ध का रूप बनाया और वहाँ गौतमशाला में पहुँचकर कहते हैं–

''मेरे गुरु इस समय ध्यान में होने से मौन हैं अतः मैं आपके पास इस श्लोक का अर्थ समझने आया हूँ।'' गौतम ने विद्या के गर्व से गर्विष्ठ हो पूछा– ''यदि मैं इसका अर्थ बता दूँगा तो तुम क्या दोगे?'' तब वृद्ध ने कहा– यदि आप इसका अर्थ कर देंगे, तो मैं सब लोगों के सामने आपका शिष्य हो जाऊँगा और यदि आप अर्थ न बता सके तो इन सब विद्यार्थियों और अपने दोनों भाईयों के साथ आप मेरे गुरु के शिष्य बन जाना।'' महा अभिमानी गौतम ने यह शर्त मंजूर कर ली क्योंकि वह समझता था कि मेरे से अधिक विद्वान इस भूतल पर कोई है ही नहीं। तब वृद्ध ने वह काव्य पढ़ा–

''धर्मद्वयं त्रिविधकालसमग्रकर्म, षड्द्रव्यकायसहिताः समयैश्च लेश्याः।
तत्त्वानि संयमगती सहितं पदार्थै-रंगप्रवेदमनिशं वद चास्तिकायं।।''

तब गौतम ने कुछ देर सोचकर कहा– ''ब्राह्मण! तू अपने गुरु के पास ही चल। वहीं मैं इसका अर्थ बताकर तेरे गुरु के साथ वाद-विवाद करूँगा।'' इन्द्र तो चाहता ही यह था। वह वृद्ध वेषधारी इन्द्र गौतम को समवसरण में ले आया।

वहाँ मानस्तंभ को देखते ही गौतम का मान गलित हो गया और उसे सम्यक्त्व प्रगट हो गया। गौतम ने अनेक स्तुति करते हुए भगवान के चरणों को नमस्कार किया तथा अपने पाँच सौ शिष्यों और दोनों भाईयों के साथ भगवान के पादमूल में जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली। अन्तर्मुहूर्त में ही इन गौतम मुनि को सातों ऋद्धियाँ, अवधि और मनःपर्ययज्ञान प्रगट हो गया तथा वे तीर्थंकर महावीर स्वामी के प्रथम गणधर हो गये। उत्तर पुराण में लिखा है–

''तदनन्तर सौधर्मेन्द्र ने मेरी पूजा की और मैंने पाँच सौ ब्राह्मण पुत्रों के साथ श्री वर्धमान भगवान को नमस्कार कर संयम धारण किया। परिणामों की विशेष शुद्धि होने से मुझे उसी समय सात ऋद्धियाँ प्राप्त हो गईं। तदनन्तर भट्टारक वर्धमान स्वामी के उपदेश से मुझे श्रावण वदी प्रतिपदा के दिन पूर्वान्ह काल में समस्त अंगों के अर्थ तथा पदों का भी स्पष्ट बोध हो गया। पुनः चार ज्ञान से सहित मैंने रात्रि के पूर्व भाग में अंगों की तथा रात्रि के पिछले भाग में पूर्वों की रचना की, उसी समय से मैं ग्रंथकर्ता हुआ हूँ।''

''जिस दिन भगवान महावीर स्वामी को निर्वाण प्राप्त होगा, उसी दिन मैं केवलज्ञान प्राप्त करूँगा।

श्री गौतम स्वामी के मुखकमल से निर्गत चैत्यभक्ति, वीरभक्ति एवं दैवसिक, पाक्षिक मुनि प्रतिक्रमण तथा श्रावक प्रतिक्रमण व गणधरवलय मंत्र अत्यधिक प्रसिद्धि को प्राप्त हैं।

जब भगवान महावीर स्वामी आज से 2534 वर्ष पूर्व कार्तिक कृ. अमावस्या को प्रातः मोक्ष गये हैं उसी दिन देवों ने मोक्षकल्याणक पूजा कर दीपावली मनायी थी। वहीं पावापुरी में उसी दिन सायंकाल में श्री गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हो गया, अनंतर 12 वर्ष बाद श्री गौतम स्वामी ने गुणावां के जलमंदिर से मोक्ष प्राप्त किया है।

दीपावली के दिन सायंकाल में भगवान महावीर के साथ ही गौतम स्वामी की व केवलज्ञान लक्ष्मी तथा सरस्वती की पूजा करके अगले दिन से वीर निर्वाण का नया संवत् मानकर नव संवत्सर पूजा करना चाहिए।

गुरु के समक्ष व्रत ग्रहण करने का आदेश

(व्रत तिथि निर्णय के आधार से)

व्रतादानव्रतत्यागः कार्यो गुरुसमक्षतः।
नो चेत्तन्निष्फलं ज्ञेयं कुतः शिक्षादिकं भवेत्।।

यो स्वयं व्रतमादत्ते स्वयं चापि विमुञ्चति।
तद्व्रतं निष्फलं ज्ञेयं साक्ष्याभावात् कुतः फलम्।।

गुरुप्रद्दिष्टं नियमं सर्वकार्याणि साधयेत्।
यथा च मृत्तिकाद्रोणः विद्यादानपरो भवेत्।।

गुर्वभावतया त्यक्तं व्रतं किं कार्यकृद् भवेत्।
केवलं मृतिकावेश्म किं कुर्यात् कर्तृवर्जितम्।।

अतो व्रतोपदेशस्तु ग्राह्यो गुर्वाननात् खलु।
त्याज्यश्चापि विशेषेण तस्य सातिशया पुनः।।

क्रममुल्लंघ्य यो नारी नरो वा गच्छति स्वयम्।
स एव नरकं याति जिनाज्ञागुरुलोपतः।।

अर्थ—गुरु के समक्ष से ही व्रतों का ग्रहण और व्रतों का त्याग करना चाहिए। गुरु की साक्षी के बिना ग्रहण किये और त्यागे व्रत निष्फल होते हैं अतः उन व्रतों से धन-धान्य, शिक्षा आदि फलों की प्राप्ति नहीं हो सकती है, जो स्वयं व्रतों को ग्रहण करता है और स्वयं ही व्रतों को छोड़ देता है, उसके व्रत निष्फल हो जाते हैं। गुरु की साक्षी न होने से व्रतों का क्या फल होगा? अर्थात् कुछ भी नहीं। गुरु से यथाविधि ग्रहण किये गये व्रत नियम ही सभी कार्यों को सिद्ध कर सकते हैं। जैसे-भिल्लराज द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसे गुरु मानकर विद्या-साधन करता था, उसे इस मृत्तिकामय गुरु की कृपा से विद्याएँ सिद्ध हो गई थीं, इस प्रकार गुरु की कृपा से ही व्रत सफल होते हैं। बिना गुरु की भावना के ग्रहण किये गये व्रत कुछ भी कार्यकारी नहीं हो सकते हैं। जैसे मिट्टी का घर बिना कर्त्ता के निरर्थक है, उसी प्रकार गुरु के साक्ष्य के बिना त्यक्त व्रत भी निष्फल हैं। अतएव गुरु के मुख से व्रतों को ग्रहण करना चाहिए तथा उन्हीं की साक्षीपूर्वक व्रतों को छोड़ना चाहिए। जो स्त्री या पुरुष क्रम का उल्लंघन कर स्वेच्छा से व्रत करते हैं, वे गुरु की अवहेलना एवं जिनाज्ञा का लोप करने के कारण नरक में जाते हैं।

विवेचन—व्रत सर्वदा गुरु के सामने जाकर ग्रहण करने चाहिए। यदि गुरु न मिलें तो किसी तत्त्वज्ञ विद्वान्, ब्रह्मचारी, व्रती या अन्य धर्मात्मा से व्रत लेना चाहिए तथा व्रतों को गुरु या विद्वान्, ब्रह्मचारी के समक्ष छोड़ना भी चाहिए। यदि गुरु, विद्वान्, ब्रह्मचारी आदि का सान्निध्य भी प्राप्त न हो सके, तो जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा के सामने ग्रहण करने तथा छोड़ने चाहिए। बिना साक्ष्य के व्रतों का यथार्थ फल प्राप्त नहीं होता है।

चौबीस तीर्थंकरों की कल्याणक तिथियाँ

(नोट-ये पंचकल्याणक की तिथियाँ श्री गुणभद्र आचार्य विरचित उत्तरपुराण के आधार से दी जा रही हैं)

महीना-पक्ष-तिथि	भगवान के नाम	कल्याणक
	आषाढ़	
आषाढ़ कृ. 2	आदिनाथ	गर्भ
आषाढ़ कृ. 6	वासुपूज्यनाथ	गर्भ
आषाढ़ कृ. 8	विमलनाथ	निर्वाण
आषाढ़ कृ. 10	नमिनाथ	जन्म, तप
आषाढ़ शु. 6	महावीर	गर्भ
आषाढ़ शु. 7	नेमिनाथ	निर्वाण
	श्रावण	
श्रावण कृ. 2	मुनिसुव्रतनाथ	गर्भ
श्रावण कृ. 10	कुंथुनाथ	गर्भ
श्रावण शु. 2	सुमतिनाथ	गर्भ
श्रावण शु. 6	नेमिनाथ	जन्म, तप
श्रावण शु. 7	पार्श्वनाथ	निर्वाण
श्रावण शु. 15	श्रेयांसनाथ	निर्वाण
	भाद्रपद	
भाद्रपद कृ. 7	शांतिनाथ	गर्भ
भाद्रपद शु. 6	सुपार्श्वनाथ	गर्भ
भाद्रपद शु. 8	पुष्पदंतनाथ	निर्वाण
भाद्रपद शु. 14	वासुपूज्यनाथ	निर्वाण
	आश्विन	
आश्विन कृ. 2	नमिनाथ	गर्भ
आश्विन शु. 1	नेमिनाथ	केवलज्ञान
आश्विन शु. 8	शीतलनाथ	निर्वाण
	कार्तिक	
कार्तिक कृ. 1	अनन्तनाथ	गर्भ
कार्तिक कृ. 4	संभवनाथ	केवलज्ञान
कार्तिक कृ. 13	पद्मप्रभु	जन्म, तप
कार्तिक कृ. अमा	महावीर	निर्वाण
कार्तिक शु. 2	पुष्पदंतनाथ	केवलज्ञान
कार्तिक शु. 6	नेमिनाथ	गर्भ
कार्तिक शु. 12	अरहनाथ	केवलज्ञान
कार्तिक शु. 15	संभवनाथ	जन्म
	मगसिर	
मगसिर कृ. 10	महावीर	तप
मगसिर शु. 1	पुष्पदंतनाथ	जन्म, तप
मगसिर शु. 10	अरहनाथ	तप
मगसिर शु. 11	मल्लिनाथ	जन्म, तप
मगसिर शु. 11	नमिनाथ	केवलज्ञान
मगसिर शु. 14	अरहनाथ	जन्म
मगसिर शु. 15	संभवनाथ	तप
	पौष	
पौष कृ. 2	मल्लिनाथ	केवलज्ञान
पौष कृ. 11	चन्द्रप्रभ, पार्श्वनाथ	जन्म, तप
पौष कृ. 14	शीतलनाथ	केवलज्ञान
पौष शु. 10	शांतिनाथ	केवलज्ञान
पौष शु. 11	अजितनाथ	केवलज्ञान
पौष शु. 14	अभिनंदननाथ	केवलज्ञान
पौष शु. 15	धर्मनाथ	केवलज्ञान
	माघ	
माघ कृ. 6	पद्मप्रभ	गर्भ
माघ कृ. 12	शीतलनाथ	जन्म, तप
माघ कृ. 14	आदिनाथ	निर्वाण
माघ कृ. अमा.	श्रेयांसनाथ	केवलज्ञान
माघ शु. 2	वासुपूज्य	केवलज्ञान
माघ शु. 4	विमलनाथ	जन्म, तप
माघ शु. 6	विमलनाथ	केवलज्ञान
माघ शु. 9	अजितनाथ	तप
माघ शु. 10	अजितनाथ	जन्म
माघ शु. 12	अभिनंदननाथ	जन्म, तप
माघ शु. 13	धर्मनाथ	जन्म
	फाल्गुन	
फाल्गुन कृ. 2	अरहनाथ	गर्भ
फाल्गुन कृ. 4	पद्मप्रभु	निर्वाण
फाल्गुन कृ. 6	सुपार्श्वनाथ	केवलज्ञान
फाल्गुन कृ. 7	सुपार्श्वनाथ	निर्वाण
फाल्गुन कृ. 7	चन्द्रप्रभु	केवलज्ञान
फाल्गुन कृ. 9	पुष्पदंतनाथ	गर्भ
फाल्गुन कृ. 11	श्रेयांसनाथ	जन्म, तप
फाल्गुन कृ. 11	आदिनाथ	केवलज्ञान
फाल्गुन कृ. 12	मुनिसुव्रतनाथ	निर्वाण
फाल्गुन कृ. 14	वासुपूज्यनाथ	जन्म, तप
फाल्गुन शु. 5	मल्लिनाथ	निर्वाण
फाल्गुन शु. 7	चन्द्रप्रभु	निर्वाण
फाल्गुन शु. 8	संभवनाथ	गर्भ
	चैत्र	
चैत्र कृ. 5	चन्द्रप्रभु	गर्भ
चैत्र कृ. 8	शीतलनाथ	गर्भ
चैत्र कृ. 9	आदिनाथ	जन्म, तप
चैत्र कृ. 14	पार्श्वनाथ	केवलज्ञान
चैत्र कृ. अमा.	अनंतनाथ	केवलज्ञान, निर्वाण
चैत्र कृ. अमा.	अरहनाथ	निर्वाण
चैत्र शु. 1	मल्लिनाथ	गर्भ
चैत्र शु. 3	कुंथुनाथ	केवलज्ञान
चैत्र शु. 5	अजितनाथ	निर्वाण
चैत्र शु. 6	संभवनाथ	निर्वाण
चैत्र शु. 11	सुमतिनाथ	जन्म, केवलज्ञान, निर्वाण
चैत्र शु. 13	महावीर	जन्म
चैत्र शु. 15	पद्मप्रभु	केवलज्ञान
	वैशाख	
वैशाख कृ. 2	पार्श्वनाथ	गर्भ
वैशाख कृ. 9	मुनिसुव्रतनाथ	केवलज्ञान
वैशाख कृ. 10	मुनिसुव्रतनाथ	तप
वैशाख कृ. 12	मुनिसुव्रतनाथ	जन्म
वैशाख कृ. 14	नमिनाथ	निर्वाण
वैशाख शु. 1	कुंथुनाथ	जन्म, तप, निर्वाण
वैशाख शु. 6	अभिनंदननाथ	गर्भ, निर्वाण
वैशाख शु. 9	सुमतिनाथ	तप
वैशाख शु. 10	महावीर	केवलज्ञान
वैशाख शु. 13	धर्मनाथ	गर्भ
	ज्येष्ठ	
ज्येष्ठ कृ. 6	श्रेयांसनाथ	गर्भ
ज्येष्ठ कृ. 10	विमलनाथ	गर्भ
ज्येष्ठ कृ. 12	अनंतनाथ	जन्म, तप
ज्येष्ठ कृ. 14	शांतिनाथ	जन्म, तप, निर्वाण
ज्येष्ठ कृ. अमा.	अजितनाथ	गर्भ
ज्येष्ठ शु. 4	धर्मनाथ	निर्वाण
ज्येष्ठ शु. 12	सुपार्श्वनाथ	जन्म, तप

एक सौ आठ व्रतों में करने वाली पूजाएँ

दो शब्द

—ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

''जैन व्रत विधि संग्रह'' (108 व्रत) नामक इस ग्रंथ में आपने अब तक 108 व्रतों के बारे में पढ़ा, अब आगे व्रतों में करने वाली पूजाओं का संकलन है। इस ग्रंथ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस एक ही ग्रंथ में आपको व्रत की विधि, मंत्र, कथा एवं पूजाओं का एक साथ संकलन देखने को मिल रहा है।

इसमें व्रत तो 108 हैं और पूजाएँ 61 हैं, इसका कारण यह है कि कई पूजाएँ ऐसी हैं, जिनमें से एक ही पूजा कई व्रतों में करनी होती है जैसे— चौबीस तीर्थंकर पूजा-सम्यक्त्वपचीसी व्रत, सुखचिन्तामणि व्रत, सर्वसंपत् व्रत आदि, 12 व्रतों में काम आती है, एक सरस्वती पूजन 4 व्रतों में करनी है जैसे— शारदा व्रत, श्रुतस्कंध व्रत, ज्ञानपचीसी व्रत एवं श्रुतज्ञान व्रत। पंचपरमेष्ठी पूजन भी 4 व्रतों में करनी है यथा— मेघमाला व्रत, पंचपरमेष्ठी व्रत, कर्मनिर्जरा व्रत एवं वृहत्पल्यव्रत, ऐसे ही श्री ऋषभदेव पूजन, श्री चन्द्रप्रभ पूजन, श्री शांतिनाथ पूजन आदि भी एक से अधिक व्रतों में की जाती हैं अतः व्रतों की अपेक्षा पूजन की संख्या कम है। इन 61 पूजाओं में से 47 पूजाएँ तो पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित हैं, शेष 14 पूजाओं में से 10 पूजाएँ प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित हैं, एक कवलचांद्रायण व्रत की संस्कृत पूजन भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति जी स्वामी द्वारा रचित है, रविव्रत पूजा एवं ज्येष्ठ जिनवर ये दो पूजाएँ अन्य कवियों द्वारा लिखी गई हैं तथा पद्मावती पूजन श्रीमती त्रिशला जैन-लखनऊ द्वारा रचित है।

ग्रंथ के अन्त में बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज एवं उनके प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की पूजन है, प्रत्येक व्रत में गुरुपूजा भी करनी चाहिए।

इन व्रतों में से कुछ व्रत ऐसे हैं, जिनकी पूजा अन्यत्र उपलब्ध नहीं हो पाती हैं जैसे— जिनगुणसंपत्ति व्रत, गणधरवलय व्रत, चौंसठऋद्धि व्रत, रोहिणी व्रत, सप्तपरमस्थान व्रत आदि। इन व्रतों में पूज्य ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित जिनगुणसंपत्ति पूजा, गणधरवलय पूजा आदि ही करने में आती हैं। ये सभी पूजाएँ बहुत ही भावपूर्ण हैं।

रोहिणी व्रत में कुछ लोग वासुपूज्य भगवान की दूसरी पूजा कर लेते हैं, यह दोषास्पद नहीं है क्योंकि रोहिणी व्रत में वासुपूज्य भगवान की ही पूजन-जाप्य की जाती है परन्तु पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित ''रोहिणी व्रत पूजन'' करने से व्रत का सम्पूर्ण कथानक ज्ञानपथ पर आ जाता है। इसमें अष्टक की नीचे की दो पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।

पूजन के पश्चात् जयमाला के प्रारंभ में—

वर हस्तिनापुरी नरेश जो कि अशोक था।
उसकी प्रिया थी रोहिणी जिसको न शोक था।।

पुनः जयमाला के अन्त में—

मुनि ने कहा यह रोहिणी व्रत का माहात्म्य है।
रोना किसे कहते हैं जो इसको न ज्ञान है।।

इस प्रकार पूरी जयमाला पढ़ने से इस व्रत की महिमा को अच्छी तरह समझा जा सकता है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी के द्वारा रचित प्रत्येक पूजाओं में यह विशेषता है कि पूजा की पंक्तियों के माध्यम से तत्संबंधित विषय का सम्पूर्ण ज्ञान सहज ही प्राप्त हो जाता है।

इस प्रकार आप सभी भक्तगण इन 108 व्रतों में से क्रम-क्रम से कोई न कोई व्रत करते रहें तथा उन-उन व्रतों की पूजाएँ करके अतिशायि पुण्य बंध करें, यही इसकी सार्थकता है।

विषय सूची

क्र.	कौन सी पूजा	पृष्ठ	किन-किन व्रतों में करना है?
1.	नंदीश्वर पूजा	269	आष्टान्हिक व्रत एवं नंदीश्वर पंक्ति व्रत में।
2.	रविव्रत पूजा	271	रविव्रत में।
3.	चौबीस तीर्थंकर पूजा	273	सम्यक्त्व पचीसी व्रत, सुखचिन्तामणि व्रत, सर्वसंपत् व्रत (पुत्र संपत् व्रत), नित्य सौभाग्य व्रत (सप्तज्योति कुंकुम व्रत), लोकमंगल व्रत, कनकावली व्रत, तपोञ्जलि व्रत, लघु सुखसम्पत्ति व्रत, चौबीस तीर्थंकर व्रत, श्रावक त्रेपन क्रिया व्रत, एकीभाव स्तोत्र व्रत एवं रत्नावली व्रत में।
4.	सोलहकारण पूजा	274	षोडशकारण व्रत में।
5.	पंचपरमेष्ठी पूजा	276	मेघमाला व्रत, पंचपरमेष्ठी व्रत, कर्मनिर्जरा व्रत एवं वृहत्पल्य व्रत में।
6.	अर्हंत परमेष्ठी पूजा	278	धर्मचक्र व्रत, जिनमुखावलोकन व्रत एवं द्वादशकल्प व्रत (मुष्टि तंदुल व्रत) में।
7.	सरस्वती पूजा	280	शारदा व्रत, श्रुतस्कंध व्रत, ज्ञान पचीसी व्रत एवं श्रुतज्ञान व्रत में।
8.	श्री चन्द्रप्रभ पूजन	282	चन्दन षष्ठी व्रत एवं चारित्रमाला व्रत (शरदपूर्णिमा व्रत) में।
9.	दशलक्षण पूजन	284	दशलक्षण व्रत में।
10.	तीन चौबीसी पूजन	288	त्रिलोक तीज व्रत एवं तीन चौबीसी व्रत में।
11.	पंचमेरु पूजन	290	मेरु पंक्ति व्रत एवं पुष्पांजलि व्रत में।
12.	भगवान सुमतिनाथ पूजन	292	श्री आकाशपंचमी व्रत में।
13.	शांतिनाथ पूजन	294	शांतिनाथ व्रत (शांतिभक्ति व्रत), नित्योत्सवव्रत (अमृतसिद्धिव्रत) एवं निर्दोषसप्तमी व्रत में।
14.	भगवान शीतलनाथ पूजन	297	सुगंधदशमी व्रत में।
15.	अनन्त चतुर्दशी व्रत पूजा	299	अनन्त चौदश व्रत में।
16.	रत्नत्रय पूजा	306	रत्नत्रय व्रत में।
17.	पार्श्वनाथ पूजन	311	मौन एकादशी व्रत, कालसर्पयोग निवारक श्री पार्श्वनाथ व्रत एवं मुकुटसप्तमी व्रत में।
18.	सप्तपरमस्थान पूजन	314	सप्तपरमस्थान व्रत में।
19.	ऋषभदेव पूजन	316	ऋषभशासन जयंती व्रत, अक्षय तृतीया व्रत (श्री ऋषभदेव-आहारव्रत), मुक्तावली व्रत, निर्वाण चतुर्दशी व्रत (शिवरात्रि व्रत), अक्षय दशमी व्रत, अक्षय निधि व्रत, विषापहार व्रत, नवरात्रि व्रत, श्री अक्षयतृतीया व्रत एवं चक्रवाल व्रत में।
20.	विमलनाथ भगवान पूजन	318	मंगल त्रयोदशी (धनतेरस) व्रत में।
21.	जिनगुणसंपत्ति पूजन	320	जिनगुणसंपत्ति व्रत में।
22.	रोहिणी व्रत पूजन	322	रोहिणी व्रत में।
23.	चारित्रशुद्धि व्रत पूजा	325	सर्वदोषप्रायश्चित्त व्रत, चारित्रलब्धिव्रत (लघु चारित्र शुद्धि व्रत) एवं चारित्रशुद्धि व्रत में।

क्र.	कौन सी पूजा	पृष्ठ	किन-किन व्रतों में करना है?
24.	कर्मदहन पूजन	327	कर्मदहन व्रत में।
25.	णमोकार मंत्र पूजन	329	णमोकार व्रत, द्विकावली व्रत, एकावली व्रत एवं पुरन्दर व्रत में।
26.	जिनसहस्रनाम पूजन	331	श्री जिनसहस्रनाम व्रत-लघु एवं श्री जिनसहस्रनाम व्रत-वृहत् में।
27.	चौंसठ ऋद्धि पूजन	333	चौंसठ ऋद्धि व्रत में।
28.	तीर्थंकर पंचकल्याणक पूजन	335	तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि व्रत में।
29.	नवदेवता पूजन	337	नवदेवता व्रत (रूपार्थवल्लरी व्रत) एवं सिंह निष्क्रीडित व्रत में।
30.	नवग्रहशांति पूजन	339	नवग्रहशांति व्रत में।
31.	तीस चौबीसी पूजन	341	तत्त्वार्थसूत्र व्रत एवं तीस चौबीसी व्रत में।
32.	बीस तीर्थंकर पूजन	342	विद्यमान बीस तीर्थंकर व्रत में।
33.	सम्मेदशिखर पूजन	344	सम्मेदशिखर व्रत में।
34.	भक्तामर पूजन	350	भक्तामर व्रत में।
35.	षट्खण्डागम पूजा	352	षट्खण्डागम व्रत एवं श्रुतपञ्चमी व्रत (श्रुतावतार व्रत) में।
36.	गणधरवलय पूजा	356	गणधरवलय व्रत में।
37.	पद्मावती पूजन	358	श्री संपत्-शुक्रवार व्रत में।
38.	कवलचान्द्रायण पूजा	360	कवलचान्द्रायण व्रत में।
39.	चौबीस तीर्थंकर गणधर पूजा	363	चौबीस तीर्थंकर गणधर व्रत में।
40.	चौबीस तीर्थंकर गणिनी पूजा	368	चतुर्विंशति गणिनी व्रत में।
41.	त्रैलोक्य जिनालय पूजन	372	त्रैलोक्य जिनालय व्रत एवं त्रिलोकसार व्रत में।
42.	वासुपूज्य भगवान पूजन	375	श्रवण द्वादशी व्रत में।
43.	ज्येष्ठ जिनवर पूजन	377	ज्येष्ठ जिनवर व्रत में।
44.	सिद्ध परमेष्ठी पूजा	379	सर्वार्थसिद्धि व्रत में।
45.	रक्षाबंधन पूजन	381	रक्षाबंधन व्रत में।
46.	महावीर पूजन	384	लब्धि विधान व्रत एवं वीर शासन जयंती व्रत में।
47.	मनोकामनासिद्धि महावीर पूजन	387	मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत में।
48.	कल्याणमंदिर पूजन	389	कल्याण मंदिर व्रत में।
49.	तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ पूजा	392	तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ व्रत में।
50.	जम्बूद्वीप पूजन	397	जम्बूद्वीप व्रत में।
51.	साधु परमेष्ठी पूजा	399	अट्ठाईस मूलगुण व्रत में।
52.	तेरहद्वीप पूजा	400	तेरहद्वीप जिनालय व्रत (मध्यलोक जिनालय व्रत) एवं तेरहद्वीप व्रत (लघु) में।
53.	पुण्यास्रव पूजा	402	पुण्यास्रव व्रत में।
54.	समवसरण पूजन	405	समवसरण व्रत-लघु एवं समवसरण व्रत-वृहत् में।
55.	नवकेवललब्धि पूजा	407	नवकेवललब्धि व्रत में।
56.	शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ पूजा	409	नवनिधि व्रत में।
57.	सप्तर्षि पूजा	411	सप्तर्षि व्रत (मृत्युंजय व्रत) में।
58.	तीर्थंकर जन्मभूमि पूजा	414	तीर्थंकर जन्मभूमि व्रत में।
59.	गौतम स्वामी पूजन	418	श्री गौतम स्वामी व्रत में।
60.	प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर पूजन	420	
61.	आचार्य श्री वीरसागर पूजन	422	

(1) नंदीश्वर द्वीप पूजा

– अथ स्थापना (गीता छंद) –

सिद्धांत सिद्ध अनादि अनिधन, द्वीप नंदीश्वर कहा।
मुनि वंद्य सुरनर पूज्य अष्टम-द्वीप अतिशययुत महा।।
वहाँ पर चतुर्दिक शाश्वते, बावन जिनालय शोभते।
प्रत्येक में जिनबिंब इक सौ-आठ सुर मन मोहते।।1।।

–दोहा –

जिन प्रतिमा के जिनभवन, परमशांति के धाम।
आह्वानन कर पूजते, मिले आत्मविश्राम।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथ अष्टक –

क्षीरोदधि का उज्ज्वल जल ले, कंचन झारी भर लाया हूँ।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में, त्रयधारा देने आया हूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन कर्पूर मिला, भर कनक कटोरी लाया हूँ।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में, चर्चन करके हर्षाया हूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम उज्ज्वल शालि पुंज, ले पुंज चढ़ाने आया हूँ।
निज का अक्षय पद शीघ्र मिले, बस ये ही इच्छा लाया हूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मचकुंद कमल बेला गुलाब, बहु सुरभित पुष्पों को लाया।
निजगुण सुगंधि फैले जग में, चरणों में रखकर हर्षाया।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली पेड़ा बरफी, पकवान बनाकर लाया हूँ।
सब उदर व्याधि के नाश हेतु, तव अर्पण कर सुख पाया हूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योती के जलते ही, सब अंधकार नश जाता है।
दीपक से तव पूजा करके, सज्ज्ञान उजेला आता है।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध धूप धूपायन में, खेवूँ मैं कर्म जला डालूँ।
यश सौरभ से दशदिश महके, निजआत्म गुणों को मैं पालूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लीची अंगूर अनार आम, बहु सरस फलों को लाया हूँ।
तव चरणों में अर्पण करके, शिवफल के हित ललचाया हूँ।।
कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
तव चरणों में यह अर्घ समर्पण, करके अति हर्षाया हूँ।।

कंचन थाली में चंदन से, बावन जिनमंदिर की रचना।
बावन पुंजों को धर कर मैं, पूजूँ प्रभु लेकर तव शरणा।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

अमल वापिका नीर, जिनपद धारा मैं करूँ।
शांति करो जिनराज, मेरे को सबको सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी फूल, हर्षित मन से लायके।
जिनवर चरण चढ़ाय, सर्वसौख्य संपति बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

नंदीश्वरवरद्वीप में, अकृत्रिम जिन सद्म।
उनमें जिनप्रतिमा अमल, नमूँ नमूँ पदपद्म।।1।।

–शंभु छंद–

जय जय नंदीश्वर पर्व जगत् में, महापर्व कहलाता है।
जय जय बावन जिनमंदिर से, इंद्रों के मन को भाता है।।
जय जय जय रत्नमयी प्रतिमा, शाश्वत हैं आदि अंत विरहित।
जय जय प्रत्येक मंदिरों में, इक सौ अठ इकसौ आठ प्रमित।।2।।

चारों दिश में एकेक कहे, अंजनगिरि अतिशय ऊँचे हैं।
इनके चारों जिनमंदिर को, पूजत ही दुःख से छूटे हैं।।
अंजनगिरि के चारों दिश में, बावड़ियाँ एक एक सोहें।
इन सोलह बावड़ियों के मधि, दधिमुख पर्वत सुरमन मोहें।।3।।

इनके सोलह जिनमंदिर की, हम नित्य वंदना करते हैं।
जिनप्रतिमाओं की अर्चाकर, निज आत्म संपदा भरते हैं।।
सोलह बावड़ियों के बाहर, दो कोणों पर दो रतिकर हैं।
इन बत्तिस रतिकर पर्वत पर, शाश्वत जिनमंदिर रुचिकर हैं।।4।।

इन बत्तिस रतिकर मंदिर के, जिनबिंबों को मैं नित पूजूँ।
चउ सोलह बत्तिस के मिलकर, बावन जिनगृह सबको पूजूँ।।
अंजनगिरि नीलमणी सम हैं, दधिमुख नग दधिसम श्वेत कहे।
रतिकर नग स्वर्णिम वर्ण धरें, ये शाश्वत पर्वत शोभ रहे।।5।।

प्रत्येक वर्ष में तीन बार, आष्टान्हिक पर्व मनाते हैं।
सुरगण नंदीश्वर में जाकर, पूजा अतिशायि रचाते हैं।।
हम वहाँ नहीं जा सकते हैं, अतएव यहीं से नमते हैं।
अर्चन परोक्ष से ही करके, भव भव के पातक हरते हैं।।6।।

चारणऋद्धी धर ऋषिगण भी, इन प्रतिमाओं को ध्याते हैं।
जिनवर के गुणमणि नित गाते, फिर भी नहिं तृप्ती पाते हैं।।
यद्यपि इनका परोक्ष वंदन, पूजन है तो भी फल देता।
भावों से भक्ती की महिमा, परिणाम विशुद्धी कर देता।।7।।

मुनिराज भाव से शुक्लध्यान, ध्याते शिवपुरश्री पा जाते।
तब भला परोक्ष भक्ति करके, क्यों नहीं महान पुण्य पाते।।
जिनप्रतिमा चिंतामणि पारस, जिनप्रतिमा कल्पवृक्ष सम हैं।
ये केवल ''ज्ञानमती'' देने में, भी तो अतिशय सक्षम हैं।।8।।

–दोहा–

नंदीश्वरवर द्वीप की, महिमा अपरंपार।
जो श्रद्धा से नित जजें, पावें सौख्य अपार।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपसंबंधिद्वापंचाशत्-जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद–

जो भव्य आष्टान्हिक परब में, आठ दिन पूजा करें।
वरद्वीप नंदीश्वर जिनालय-बिम्ब के गुण उच्चरें।।
वे सर्वसुखसंपत्ति ऋद्धी-सिद्धि को भी पाएंगे।
सज्ज्ञानमति की गुणसुरभि को, विश्व में फैलाएंगे।।10।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(2) श्री रविव्रत पूजा

अडिल्ल छंद

यह भविजन हितकार, सु रविव्रत जिन कही।
करहु भव्यजन सर्व, सुमन देकें सही।।

पूजो पार्श्व जिनेन्द्र, त्रियोग लगायके।
मिटै सकल सन्ताप, मिलै निधि आयके।।

मतिसागर इक सेठ, सुग्रन्थन में कहो।
उनने भी यह पूजा, कर आनंद लहो।।

तातें रविव्रत सार, सो भविजन कीजिये।
सुख सम्पति संतान, अतुल निधि लीजिए।।

प्रणमों पार्श्व जिनेश को, हाथ जोड़ सिर नाय।
परभव सुख के कारने, पूजा करूँ बनाय।।

रवीवार व्रत के दिना, ये ही पूजन ठान।
ता फल सम्पत्ति को लहैं, निश्चय लीजे मान।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

उज्ज्वल जल भरकें अतिलायो, रतन कटोरन माहीं।
धार देत अति हर्ष बढ़ावत, जन्म जरा मिट जाहीं।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरत ही, आनंद मंगल दाई।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर केशर अतिसुन्दर, कुंकुम रङ्ग बनाई।
धार देत जिन चरनन आगे, भव आताप नशाई।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरत ही, आनंद मंगल दाई।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम अति उज्ज्वल तंदुल, लावो नीर पखारो।
अक्षयपद के हेतु भावसों, श्री जिनवर ढिग धारो।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरत ही, आनंद मंगल दाई।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला अरु मचकुंद चमेली, पारिजात के ल्यावो।
चुनचुन श्रीजिन अग्र चढ़ाऊँ, मनवांछित फल पावो।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरत ही, आनंद मंगल दाई।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बावर फैनी गुजिया आदिक, घृत में लेत पकाई।
कंचन थार मनोहर भरके, चरनन देत चढ़ाई।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरत ही, आनंद मंगल दाई।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीप रत्नमय लेकर, जगमग जोति जगाई।
जिनके आगे आरति करके, मोहतिमिर नश जाई।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरत ही, आनंद मंगल दाई।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चूरन कर मलयागिर चंदन, धूप दशांग बनाई।
तट पावक में खेय भाव सों, कर्मनाश हो जाई।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरत ही, आनंद मंगल दाई।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि बदाम सुपारी, भांति भांति के लावो।
श्रीजिन चरन चढ़ाय हरषकर, तातें शिवफल पावो।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरत ही, आनंद मंगल दाई।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, अर्घ बनावो भाई।
नाचत गावत हर्षभाव सों, कंचन थार भराई।।
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पत्ति बहु होय तुरत ही, आनंद मंगल दाई।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—गीतिका छंद —

मन वचन काय त्रिशुद्ध करके, पार्श्वनाथ सु पूजिये।
जल आदि अर्घ बनाय भविजन, भक्तिवंत सु हूजिये।।
पूज्य पारसनाथ जिनवर, सकल सुखदातार जी।
जे करत हैं नर नारि पूजा, लहत सौख्य अपार जी।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं नमो भगवते चिंतामणि-पार्श्वनाथाय सप्तफणमण्डिताय श्री धरणेन्द्रपद्मावती-सहिताय मम ऋद्धिं सिद्धिं वृद्धिं सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।**

जयमाला

यह जग में विख्यात हैं, पारसनाथ महान।
तिन गुण की जयमालिका, भाषा करूँ बखान।।

जय जय प्रणमों श्री पार्श्व देव, इन्द्रादिक तिनकी करत सेव।
जय जय सु बनारस जन्म लीन, तिहुँ लोक विषैं उद्योत कीन।।
जय जिनके पितु श्री विश्वसेन, तिनके घर भये सुख-चैन देन।
जय वामा देवी मात जान, तिनके उपजे पारस महान।।
जय तीन लोक आनंद देन, भविजन के दाता भये ऐन।
जय जिनने प्रभु का शरण लीन, तिनकी सहाय प्रभुजी सो कीन।।
जय नाग नागिनी भये अधीन, प्रभु चरणन लाग रहे प्रवीन।
तज देह देवगति गये जाय, धरणेन्द्र पद्मावति पद लहाय।।
जय अञ्जन चोर अधम अजान, चोरी तज प्रभु को धरो ध्यान।
जय मृत्यु भये वह स्वर्ग जाय, ऋद्धी अनेक उनने सो पाय।।
जय मतिसागर इक सेठ जान, तिन अशुभकर्म आयो महान।
तिनकै सुत थे परदेश मांहि, उनसे मिलने की आश नांहि।।
जय रविव्रत पूजन करी सेठ, ता फल कर सबसे भई भेंट
जिन जिनने प्रभु का शरण लीन, तिन ऋद्धि सिद्धि पाई नवीन।।
जय रविव्रत पूजा करहिं जेय, ते सौख्य अनन्तानन्त लेय।
धरणेन्द्र पद्मावति हुये सहाय, प्रभुभक्त जान तत्काल आय।।
पूजाविधान इहिविधि रचाय, मन वचन काय तीनों लगाय।
जो भक्तिभाव जयमाल गाय, सोही सुखसम्पत्ति अतुल पाय।।
बाजत मृदंग बीनादि सार, गावत नाचत नाना प्रकार।
तन नन नन नन नन ताल देत, सन नन नन नन सुर भर सो लेत।।
ता थेई थेई थेई पग धरत जाय, छम छम छम छम घुंघरू बजाय।
जे करहिं निरत इहि भाँत भाँत, ते लहहिं सुक्ख शिवपुर सुजात।।
रविव्रत पूजा पार्श्व की, करै भविक जन जोय।
सुख सम्पत्ति इह भव लहै, आगे सुर पद होय।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविव्रत पार्श्व जिनेन्द्र पूज भवि मन धरें।
भव भव के आताप सकल छिन में टरें।।
होय सुरेन्द्र नरेन्द्र आदि पदवी लहे।
सुख सम्पत्ति सन्तान अटल लक्ष्मी रहे।।
फेर सर्व विधि पाय भक्ति प्रभु अनुसरें।
नानाविध सुख भोग बहुरि शिवतिय वरें।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(3) चौबीस तीर्थंकर पूजा

—अथ स्थापना-शंभु छंद —

पुरुदेव आदि चौबिस तीर्थंकर, धर्मतीर्थ करतार हुये।
इस जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र के, आर्यखंड में नाथ हुये।।
इन मुक्तिवधू परमेश्वर का हम, भक्ती से आह्वान करें।
इनके चरणाम्बुज को जजते, भव भव दुःखों की हानि करें।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथ अष्टक-गीता छंद —

हे नाथ! मेरी ज्ञानसरिता, पूर्ण भर दीजे अबे।
इस हेतु जल से आप के, पदकमल को पूजूँ अबे।।

चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म में सम्पूर्ण शीतल, सलिल धारा पूरिये।
तुम चरण युगल सरोज में, चंदन चढ़ाऊँ इसलिए।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखंडित सौख्य निधि, भंडार भर दीजे प्रभो।
इस हेतु अक्षत पुंज से, मैं पूजहूँ तुम पद विभो।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ आत्मगुण सौगंध्य सागर, पूर्ण भर दीजे प्रभो।
इस हेतु मैं सुरभित सुमन ले, पूजहूँ तुम पद विभो।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरी करो परिपूर्ण तृप्ती, आत्म सुख पीयूष से।
भगवन्! अतः नैवेद्य से, पूजूँ चरण युग भक्ति से।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञान ज्योती मुझ हृदय में, पूर्ण भर दीजे अबे।
मैं आरती रुचि से करूँ, अज्ञानतम तुरतहिं भगे।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ आत्मयश सौरभ गगन में, व्याप्त कर दीजे प्रभो।
इस हेतु खेऊँ धूप मैं, कटुकर्म भस्म करो विभो।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मगुण संपत्ति को, अब पूर्ण भर दीजे प्रभो।
इस हेतु फल को मैं चढ़ाऊँ, आपके सन्निध विभो।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल गुण निज के अनंते, किस विधी से पूर्ण हों।
बस अर्घ्य अर्पण करत ही, सब विघ्न वैरी चूर्ण हों।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते निजसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

तीर्थंकर चरणाब्ज में, धारा तीन करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, निजगुण मणि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज में, सुरभित कुसुम धरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, आत्म सौख्य विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य— **ॐ ह्रीं वृषभादिवर्धमानान्तेभ्यो नमः।**

जयमाला

—चौबोल छंद—

आवो हम सब करें वंदना, चौबीसों भगवान की।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया, उन अनंत गुणवान की।।
जय जय जिनवरं-4

आदिनाथ युग आदि तीर्थंकर, अजितनाथ कर्मारि हना।
संभवजिन भव दुःख के हर्ता, अभिनंदन आनंद घना।।
सुमतिनाथ सद्बुद्धि प्रदाता, पद्मप्रभु शिवलक्ष्मी दें।
श्री सुपार्श्व यम पाश विनाशा, चन्द्रप्रभू निज रश्मी दें।।
केवलज्ञान सूर्य बन चमके, त्रिभुवन तिलक महान की।।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया, उन अनंत गुणवान की।।1।।
जय जय जिनवरं-4

पुष्पदंत भव अंत किया है, शीतल प्रभु के वच शीतल।
श्री श्रेयांस जगत हित कर्ता, वासुपूज्य छवि लाल कमल।।
विमलनाथ ने अघ मल धोया, जिन अनंत गुण अन्तातीत।
धर्मनाथ वृषतीर्थ चलाया, शांतिनाथ शांतिप्रद ईश।।
शांतीच्छुक जन शरण आ रहे, ऐसे करुणावान की।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया, उन अनंत गुणवान की।।2।।
जय जय जिनवरं-4

कुंथुनाथ करुणा के सागर, अर जिन मोह अरी नाशा।
मल्लिनाथ यममल्ल विजेता, मुनिसुव्रत व्रत के दाता।।
नमिप्रभु नियम रत्नत्रय धारी, नेमिनाथ शिवतिय परणा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, महावीर भविजन शरणा।।
इनने शिव की राह दिखाई, जन-जन के कल्याण की।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया, उन अनंत गुणवान की।।3।।
जय जय जिनवरं-4

तीर्थंकर के जन्म समय से, दश अतिशय श्रुत में गाये।
केवलज्ञान प्रगट होते ही, दश अतिशय गणधर गायें।।
देवोंकृत चौदह अतिशय हों, सुंदर समवसरण रचना।
इन्द्र-इन्द्राणी देव-देवियाँ, गाते रहते गुण गरिमा।।
सभी भव्य गुण कीर्तन करते, अभयंकर जिननाम की।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया, उन अनंत गुणवान की।।4।।
जय जय जिनवरं-4

तरु अशोक सुरपुष्पवृष्टि, भामंडल चामर सिंहासन।
तीन छत्र सुरदुंदुभि बाजे, दिव्यध्वनी है अमृतसम।।
आठ महा ये प्रातिहार्य हैं, गंधकुटी में प्रभु शोभें।
विभव वहाँ का सुर नर पशु क्या, मुनियों का भी मन लोभे।।
गणधर गुरु भी संस्तुति करते, अविनश्वर भगवान की।।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया, उन अनंत गुणवान की।।5।।
जय जय जिनवरं-4

दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज ये, चार अनंत चतुष्टय हैं।
ये छ्यालिस गुण अर्हंतों के, फिर भी गुणरत्नाकर हैं।।
क्षुधा तृषादिक दोष अठारह, प्रभु के कभी नहीं होते।
वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर, हित उपदेशी ही होते।।
परम पिता परमेश्वर स्वामिन्! पूजा कृपानिधान की।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया, उन अनंत गुणवान की।।6।।
जय जय जिनवरं-4

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्धमानान्त्यचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

— सोरठा —

धर्मचक्र के नाथ, द्विविध धर्मकर्ता प्रभो।
नमूँ नमाकर माथ, ''ज्ञानमती'' कलिका खिले।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(4) सोलहकारण पूजा

— अथ स्थापना-गीता छंद —

दर्शनविशुद्धी आदि सोलह, भावना भवनाशिनी।
जो भावते वे पावते, अति शीघ्र ही शिवकामिनी।।
हम नित्य श्रद्धा भाव से, इनकी करें आराधना।
पूजा करें वसुद्रव्य ले, करके विधीवत थापना।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं (चाल-चौबीसों श्रीजिनचंद.....)

पयसागर को जल स्वच्छ, हाटक भृंग भरूँ।
जिनपद में धारा देत, कलिमल दोष हरूँ।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन कर्पूर, केशर संग घिसा।
जिनगुण पूजा कर शीघ्र, भव भव दुःख घिसा।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिनगुणसंपद्भ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल शशि रश्मि समान, अक्षत धोय लिये।
अक्षय पद पावन हेतु, सन्मुख पुंज दिये।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हने।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना-जिनगुणसंपद्भ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक सुम हरसिंगार, सुरभित भर लीने।
भवविजयी जिनपद अग्र, अर्पण कर दीने।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हने।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिन-गुणसंपद्भ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध घृत पकवान, अमृत सम लाऊँ।
निज क्षुधा निवारण हेतु, पूजत सुख पाऊँ।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हने।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिन-गुणसंपद्भ्यो क्षुधारोग निवारणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचनदीपक की ज्योति, दशदिश ध्वांत हरे।
निज पूजा भ्रमतम टार, भेद विज्ञान करे।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हने।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिन-गुणसंपद्भ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप सुगंध, खेवत धूम्र उड़े।
निज अनुभव सुख से पुष्ट, कर्मन भस्म उड़े।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हने।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिन-गुणसंपद्भ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अखरोट बदाम, एला थाल भरे।
जिनपद पूजत तत्काल, सब सुख आन वरें।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हने।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिन-गुणसंपद्भ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से पूर्ण, तुम पद अर्घ्य दिया।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हने।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाजिन-गुणसंपद्भ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।
झारी से धारा करूँ, सकल संघ हितकर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कुंद कमल बेला वकुल, पुष्प सुगंधित लाय।
जिनगुण हेतू मैं करूँ, पुष्पांजलि सुखदाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

– दोहा –

स्वातमरस पीयूष से, तृप्त हुये जिनराज।
सोलह कारण भावना, भाय हुये सिरताज।।1।।

– सोमवल्लरी छंद (चामर) –

दर्श की विशुद्धी जो पचीस दोष शून्य है।
आठ अंग से प्रपूर्ण सात भीति शून्य है।।
सत्य ज्ञान आदि तीन रत्न में विनीत जो।
साधुओं में नम्रवृत्ति धारता प्रवीण वो।।1।।

शील में व्रतादि में सदोषवृत्ति ना धरें।
विदूर अतीचार से तृतीय भावना धरें।।
ज्ञान के अभ्यास में सदैव लीनता धरें।
भावना अभीक्ष्ण ज्ञान मोहध्वांत को हरें।।2।।

देह मानसादि दुःख से सदैव भीरुता।
भावना संवेग से समस्त मोह जीतता।।
चार संघ को चतुः प्रकार दान जो करें।
सर्व दुःख से छूटें सुज्ञान संपदा भरें।।3।।

शुद्ध तप करें समस्त कर्म को सुखावते।
साधु की समाधि में समस्त विघ्न टारते।।
रोग कष्ट आदि में गुरुजनों कि सेव जो।
प्रासुकादि औषधी सुदेत पुण्यहेतु जो।।4।।

भक्ति अरीहंत सूरि, बहुश्रुतों की भी करें।
प्रवचनों की भक्ति भावना से भवदधी तरें।।

छै क्रिया अवश्य करण योग्य काल में करें।
मार्ग की प्रभावना सुधर्म द्योत को करें।।5।।

वत्सलत्व प्रवचनों में धर्म वात्सल्य है।
रत्नत्रयधरों में सहज प्रीति धर्मसार है।।
सोलहों सुभावना पुनीत भव्य को करें।
तीर्थनाथ संपदा सुदेय मुक्ति भी करें।।6।।

वंदना करूँ पुनः पुनः करूँ उपासना।
अर्चना करूँ पुनः पुनः करूँ सुसाधना।।
मैं अनंत दुःख से बचा चहूँ प्रभो सदा।
'ज्ञानमती' संपदा मिले अनंत सौख्यदा।।7।।

–दोहा –

तीर्थंकर पद हेतु ये, सोलह भावना सिद्ध।
जो जन पूजें भाव से, लहें अनूपम सिद्धि।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। परिपुष्पांजलिः।

(5) श्री पंचपरमेष्ठी पूजा

–अडिल्ल छन्द –

अर्हत्सिद्धाचार्य, उपाध्याय साधु हैं।
कहें पंचपरमेष्ठी, गुणमणि साधु हैं।।
भक्ति भाव से करूँ, यहाँ पर थापना।
पूजूँ श्रद्धा धार, करूँ हित आपना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं (चाल-नन्दीश्वर श्री जिनधाम.....)

सुर सरिता का जल स्वच्छ, कंचन भृंग भरूँ।
भव तृषा बुझावन हेतु, तुम पद धार करूँ।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन कर्पूर, गंध सुगंध करूँ।
भव दाह करो सब दूर, चरणन चर्च करूँ।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पयसागर फेन समान, अक्षत धोय लिया।
अक्षय गुण पाने हेतु, पुंज चढ़ाय दिया।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मचकुंद कमल वकुलादि, सुरभित पुष्प लिया।
मदनारिजयी पदकंज, पूजत सौख्य लिया।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी रस पूर्ण, मोदक शुद्ध लिया।
मम क्षुधा रोग कर चूर्ण, तुम पद पूज किया।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो क्षुधारोगनिवारणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रकाश, दशदिश ध्वांत हरे।
तुम पूजत मन का मोह, हर विज्ञान भरे।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत कर्म जरें।
सब कर्म कलंक विदूर, आतम शुद्ध करें।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अनार खजूर, फल के थाल भरे।
तुम पद अर्चत भव दूर, शिवफल प्राप्त करे।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से पूर्ण, तुम पद अर्घ्य किया।।
श्री पंचपरमगुरुदेव, पंचमगति दाता।
भव भ्रमण पंच हर लेव, पूजूँ पद त्राता।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

पंचपरमगुरु के चरण, जल की धारा देत।
निज मन शीतल हेतु अर, तिहुं जग शांती हेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मल्लिका सित कमल, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि कर जिन चरण, पूजूँ मन हरषाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-**ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यो नमः।**

(108 सुगंधित पुष्प या लवंग से जाप्य करना।)

जयमाला

—सोरठा—

भवजलनिधी जिहाज, पंचपरम गुरु जगत में।
तिनकी गुणमणिमाल, गाऊँ भक्ती वश सही।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु....)

जैवंत अरिहंत देव, सिद्ध अनंता।
जैवंत सूरि उपाध्याय साधु महंता।।
जैवंत तीन लोक में ये पंचगुरु हैं।
जैवंत तीन काल के भी पंचगुरु हैं।।1।।

अर्हंत देव के हैं छियालीस गुण कहे।
जिन नाम मात्र से ही पाप शेष ना रहे।।
दशजन्म के अतिशय हैं चमत्कार से भरे।
कैवल्यज्ञान होत ही अतिशय जु दश धरें।।2।।

चौदह कहे अतिशय हैं देव रचित बताये।
तीर्थंकरों के ये सभी चौंतीस हैं गाये।।
हैं आठ प्रातिहार्य जो वैभव विशेष हैं।
आनंत चतुष्टय सुचार सर्व श्रेष्ठ हैं।।3।।

जो जन्म मरण आदि दोष आठदश कहे।
अर्हंत में न हों अतः निर्दोष वे रहें।।
सर्वज्ञ वीतराग हित के शास्ता हैं जो।
है बार बार वंदना अरिहंत देव को।।4।।

सिद्धों के आठ गुण प्रधान रूप से गाये।
जो आठ कर्म के विनाश से हैं बताये।।
यों तो अनंत गुण समुद्र सर्व सिद्ध हैं।
उनको है वंदना जो सिद्धि में निमित्त हैं।।5।।

आचार्य देव के प्रमुख छत्तीस गुण कहे।
दीक्षादि दे चउसंघ के नायक गुरू रहें।।
पच्चीस गुणों से युक्त उपाध्याय गुरु हैं।
जो मात्र पठन पाठनादि में ही निरत हैं।।6।।

जो आत्मा की साधना में लीन रहे हैं।
वे मूलगुण अट्ठाइसों से साधु कहे हैं।।
आराधना सुचार की आराधना करें।
हम इन त्रिभेद साधु की उपासना करें।।7।।

अरिहंत सिद्ध दो सदा आराध्य गुरु कहे।
त्रयविधि मुनी आराधकों की कोटि में रहें।।
अर्हंत सिद्ध देव हैं शुद्धातमा कहे।
शुद्धात्म आराधक हैं सूरि स्वात्मा लहें।।8।।

गुरुदेव उपाध्याय प्रतिपादकों में हैं।
शुद्धातमा के साधकों को साधु कहे हैं।।
पाँचों ये परम पद में सदा तिष्ठ रहे हैं।
इस हेतु से परमेष्ठी ये नाम लहे हैं।।9।।

इन पाँच के हैं इक सौ तितालीस गुण कहे।
इन मूलगुणों से भी संख्यातीत गुण रहें।।
उत्तर गुणों से युक्त पाँच सुगुरु हमारे।
जिनका सुनाम मंत्र भवोदधि से उबारे।।10।।

हे नाथ! इसी हेतु से तुम पास में आया।
सम्यक्त्व निधी पाय के तुम कीर्ति को गाया।।
बस एक विनती पे मेरी ध्यान दीजिए।
कैवल्य 'ज्ञानमती' का ही दान दीजिए।।11।।

—दोहा—

त्रिभुवन के चूड़ामणि, अर्हंत सिद्ध महान।
सूरी पाठक साधु को, नमूँ नमूँ गुणखान।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। परिपुष्पांजलिः।

—दोहा—

पंचपरमगुरु की शरण, जो लेते भविजीव।
रत्नत्रय निधि पाय के, भोगें सौख्य सदीव।।13।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(6) अर्हन्त परमेष्ठी पूजा

—स्थापना-गीताछन्द—

अरिहंत प्रभु ने घातिया को, घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह, दोष का सब क्षय किया।।
शत इन्द्र नित पूजें उन्हें, गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना, के हेतु अभिनंदन करें।।1।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठि समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्थापनं।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठि समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-स्रग्विणी छंद

साधु के चित्त सम स्वच्छ जल ले लिया।
कर्ममल क्षालने तीन धारा किया।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सौगंध्य से नाथ को पूजते।
सर्व संताप से भव्यजन छूटते।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धौत अक्षत लिये स्वर्ण के थाल में।
पुंज धर के जजूँ नाय के भाल मैं।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।3।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

केतकी कुंद मचकुंद बेला लिये।
कामहर नाथ के पाद अर्पण किये।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग मोदक इमरती भरे थाल में।
आत्म सुख हेतु मैं अर्पिहूँ हाल में।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।5।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण के दीप में ज्योति कर्पूर की।
नाथ पाद पूजते मोह तम चूरती।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।6।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को अग्नि में खेवते शीघ्र ही।
कर्म शत्रू जलें सौख्य हो शीघ्र ही।।

सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।7।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव अँगूर दाड़िम अनन्नास ले।
मोक्ष फल हेतु जिन पाद पूजूँ भले।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य लेकर जजूँ नाथ को आज मैं।
स्वात्म संपत्ति का पाऊँ साम्राज मैं।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।9।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

जिन पद में धारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यन्तिक सुख देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-**ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**

जयमाला

—दोहा —

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

—शंभु छंद—

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हत् लक्ष्मी पाकर, निज आतम में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पय सम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु है, शुभ लक्षण सहस आठ सोहें।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जनमन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखे सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्धमागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल और फूल खिलें, दर्पणवत् भूमी लाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानन्द भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहुधान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसुमंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चौसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुधा तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भव दुःख से घबड़ाकर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधीपूर्वक हो।
हो केवल ''ज्ञानमती'' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

—दोहा —

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमूँ नमूँ अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।9।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेरछन्द —

जो भक्ति से अरिहंत देव यजन करेंगे।
वे भव्य नवो निधि से भंडार भरेंगे।।
कैवल्य ज्ञानमति से नवलब्धि वरेंगे।
फिर मोक्षमहल में अनंतसौख्य भरेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(7) सरस्वती पूजा

जिनदेव के मुख से खिरी, दिव्यध्वनी अनअक्षरी।
गणधर ग्रहण कर द्वादशांगी, ग्रंथमय रचना करी।।
इन अंग पूरब शास्त्र के ही, अंश ये सब शास्त्र हैं।
उस जैनवाणी को जजूँ, जो ज्ञान अमृतसार है।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –चामर छन्द

जैन साधु चित्त सम, पवित्र नीर ले लिया।
स्वर्ण भृंग में भरा, पवित्र भाव मैं किया।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशरादि को घिसाय, स्वर्ण पात्र में भरी।
ताप पाप शांति हेतु, पूजहूँ इसी घरी।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्ररश्मि के समान, धौत स्वच्छ शालि हैं।
पुंज को चढ़ावते, मिले गुणों कि माल है।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा गुलाब चंप, केतकी चुनायके ।
स्वात्म सौख्य प्राप्त होय, पुष्प को चढ़ावते।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डुकादि व्यंजनों से, थाल को भराय के।
ज्ञानदेवता समीप, भक्ति से चढ़ाय के।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में कपूर ज्वाल, आरती उतारहूँ।
ज्ञानपूर जैन भारती, हृदय में धारहूँ।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप ले दशांग, अग्निपात्र में हि खेवते।
कर्म भस्म हो उड़े, सुगंधि को बिखेरते।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब संतरा अनार, द्राक्ष थाल में भरें।
मोक्ष सौख्य हेतु शास्त्र, के समीप ले धरें।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि गंध शालि पुष्प, चरु सुदीप धूप ले।
सत्फलों समेत अर्घ्य, से जजें सुयश मिले।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण भृंग नाल से, सुशांतिधार देय के।
विश्वशांति हो तुरंत, इष्ट सौख्य देय के।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

गंध से समस्तदिक् , सुगंध कर रहे सदा।
पुष्प को समर्पिते, न दुःख व्याधि हो कदा।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगाय नमः।

जयमाला

–दोहा–

द्वादशांग हे वाङ्.मय ! श्रुतज्ञानामृतसिंधु।
गाऊँ तुम जयमालिका, तरूँ शीघ्र भवसिंधु।।1।।

–शंभु छन्द–

जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी, जो अनक्षरी ही खिरती है।
जय जय जिनवाणी श्रोताओं को, सब भाषा में मिलती है।
जय जय अठरह महाभाषाएँ, लघु सात शतक भाषाएँ हैं।
फिर भी संख्यातों भाषा में, सब समझे जिनमहिमा ये हैं।।2।।

जिनदिव्यध्वनी को सुनकर के, गणधर गूँथें द्वादश अंग में।
बारहवें अंग के पाँच भेद, चौथे में चौदह पूर्व भणें।।
पद इक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख अठावन सहस पाँच।
मैं इनका वंदन करता हूँ, मेरा श्रुत में हो पूरणांक।।3।।

इक पद सोलह सौ चौंतिस कोटी, और तिरासी लाख तथा।
है सात हजार आठ सौ अठ्ठासी, अक्षर जिन शास्त्र कथा।।
इतने अक्षर का इक पद तब, सब अक्षर के जितने पद हैं।
उनमें से शेष बचें अक्षर, वह अंगबाह्य श्रुत नाम लहे।।4।।

जो आठ कोटि इक लाख आठ, हज्जार एक सौ पचहत्तर।
चौदह प्रकीर्णमय अंगबाह्य के, इतने ही माने अक्षर।।
यह शब्दरूप अरु ग्रन्थरूप, सब द्रव्यश्रुत कहलाता है।
जो ज्ञानरूप है आत्मा में, वह कहा भावश्रुत जाता है।।5।।

जिनको केवलज्ञानी जानें, पर वच से नहिं कह सकते हैं।
ऐसे पदार्थ सु अनंतानंत, जो तीन भुवन में रहते हैं।।
उनसे भी अनंतवें भाग प्रमित, वचनों से वर्णित हो पदार्थ।
उन प्रज्ञापनीय से भी अनन्तवें, भाग कथित श्रुत में पदार्थ।।6।।

फिर भी यह श्रुत सब द्वादशांग, सरसों सम इसका आज अंश।
उनमें से भी लवमात्र ज्ञान, हो जावे तो भी जन्म धन्य।।
यह जिन आगम की भक्ती ही, निज पर का भान कराती है।
यह भक्ती ही श्रुतज्ञान पूर्णकर, श्रुतकेवली बनाती है।।7।।

श्रुतज्ञान व केवलज्ञान उभय, ज्ञानापेक्षा हैं सदृश कहे।
श्रुतज्ञान परोक्ष लखे सब कुछ, बस केवलज्ञान प्रत्यक्ष लहे।।
अंतर इतना ही तुम जानो, इसलिए जिनागम आराधो।
स्वाध्याय मनन चिंतन करके, निज आत्म सुधारस को चाखो।।8।।

इस ढाईद्वीप में कर्मभूमि, इक सौ सत्तर जिनवर होते।
उन सबकी ध्वनि जिन आगम है, इससे जन अघमल को धोते।।
जिनवचपूजा जिनपूजा सम, यह केवलज्ञान प्रदाता है।
नित पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ, यह भव्यों को सुखदाता है।।9।।

है नाम भारती सरस्वती, शारदा हंसवाहिनी तथा।
विदुषी वागीश्वरि और कुमारी, ब्रह्मचारिणी सर्वमता।।
विद्वान् जगन्माता कहते, ब्राह्मणी व ब्रह्माणी वरदा।
वाणी भाषा श्रुतदेवी गौ, ये सोलह नाम सर्व सुखदा।।10।।

हे सरस्वती ! अमृतझरिणी, मेरा मन निर्मल शांत करो।
स्याद्वाद सुधारस वर्षाकर, सब दाह हरो मन तृप्त करो।।
हे जिनवाणी माता मुझ, अज्ञानी की नित रक्षा करिये।
दे केवल ''ज्ञानमती'' मुझको, फिर भले उपेक्षा ही करिये।।11।।

–दोहा–

भूत भविष्यत् संप्रति, त्रैकालिक जिनशास्त्र।
त्रिकरण शुद्धी मैं नमूँ, मिले सिद्धि सर्वार्थ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

सब भाषामय सरस्वती, जिनकन्या जिनवाणि।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो, माता जगकल्याणि।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(8) श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

अर्धचन्द्र सम सिद्धशिला पर, श्रीचन्द्रप्रभ राजें।
चन्द्रकिरण सम देह कांति को, देख चन्द्र भी लाजे।।
अतः आपके श्रीचरणों में, हुआ समर्पित चंदा।
आह्वानन कर चन्द्रप्रभू का, मेरा मन आनंदा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-नरेन्द्र छंद

गंगा सरिता का निर्मल जल, रजत कलश भर लाऊँ।
श्री चन्द्रप्रभ चरण कमल में, धारा तीन कराऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में चर्चूं, निजानंद सुख पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रकिरणसम उज्ज्वल तंदुल, लेकर पुंज रचाऊँ।
अमल अखंडित सुख से मंडित, निज आतम पद पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्ली बेला कमल केवड़ा, पुष्प सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में अर्पूं, निजगुण यश विकसाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतपिंड सदृश चरु ताजे, घेवर मोदक लाऊँ।
जिनवर आगे अर्पण करते, सब दुःख व्याधि नशाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भगवन्।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञानज्योति उद्योतन।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित लाऊँ।
अशुभ कर्म के दग्ध हेतु मैं, अग्नी संग जलाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरस फल, लाके थाल भराऊँ।
जिनवर सन्निध अर्पण करते, परमानंद सुख पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ बनाऊँ।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, तीनरत्न निज पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

पद्मसरोवर नीर से, चन्द्रप्रभ चरणाब्ज।
त्रयधारा विधि से करूँ, मिले शांति साम्राज्य।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जुही गुलाब सुगंधियुत, वर्ण वर्ण के फूल।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अनुकूल।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

—गीता छंद—

जिनचंद्र विजयंते अनुत्तर, से चये आये यहाँ।
महासेन पितु माँ लक्ष्मणा के, गर्भ में तिष्ठे यहाँ।।
शुभ चंद्रपुरि में चैत्रवदि-पंचमि तिथी थी शर्मदा।
इंद्रादि मिल उत्सव किया, मैं पूजहूँ गुणमालिका।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां चंद्रप्रभजिनगर्भ-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्र जिनवर पौष कृष्णा-ग्यारसी शुभयोग में।
जन्में उसी क्षण सर्व बाजे, बज उठे सुरलोक में।।
तिहुँलोक में भी हर्ष छाया, तीर्थकर महिमा महा।
सुरशैल पर जन्माभिषव को, देखते ऋषि भी वहाँ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां चन्द्रप्रभजिनजन्म-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदर्श में मुख देखकर, वैराग्य उपजा नाथ को।
वदि पौष एकादशि दिवस, इंद्रादि सुर आये प्रभो।।
पालकी विमला में बिठा, सर्वर्तुवन में ले गये।
स्वयमेव दीक्षा ली किया, बेला जगत वंदित हुए।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां चन्द्रप्रभजिनदीक्षा-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमि तिथी, सर्वर्तुवन में आ गये।
तरु नाग नीचे ज्ञान केवल, हुआ सुरगण आ गये।।
धनपति समवसृति को रचा, श्रीचंद्रप्रभ राजें वहाँ।
द्वादशगणों के भव्य जिनध्वनि, सुनें अति प्रमुदित वहाँ।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां चन्द्रप्रभजिनज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रजिन फाल्गुन सुदी, सप्तमि निरोधा योग को।
सम्मेदगिरि से मुक्ति पायी, जजें सुरपति भक्ति सों।।
हम भक्ति से श्रीचंद्रप्रभ, सम्मेदगिरि को भी जजें।
निज आत्म संपति दीजिए, इस हेतु ही प्रभु को भजें।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां चन्द्रप्रभजिनमोक्ष-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - **ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रायः नमः।**

जयमाला

—दोहा—

परम हंस परमात्मा, परमानंद स्वरूप।
गाऊँ तुम गुण मालिका, अजर अमर पद रूप।।1।।

—शंभु छंद—

जय जय श्री चन्द्रप्रभो जिनवर, जय जय तीर्थंकर शिव भर्ता।
जय जय अष्टम तीर्थेश्वर तुम, जय जय क्षेमंकर सुख कर्ता।।
काशी में चन्द्रपुरी सुंदर, रत्नों की वृष्टी खूब हुई।
भू धन्य हुई जन धन्य हुए, त्रिभुवन में हर्ष की वृद्धि हुई।।2।।

प्रभु जन्म लिया जब धरती पर, इन्द्रों के आसन कंप हुए।
प्रभु के पुण्योदय का प्रभाव, तत्क्षण सुर के शिर नमित हुए।।
जिस वन में ध्यान धरा प्रभु ने, उस वन की शोभा क्या कहिए।
जहाँ शीतल मंद पवन बहती, षट् ऋतु के कुसुम खिले लहिये।।3।।

सब जात विरोधी गरुड़, सर्प, मृग, सिंह खुशी से झूम रहे।
सुर खेचर नरपति आ आकर, मुकुटों से जिनपद चूम रहे।।
दश लाख वर्ष पूर्वायू थी, छह सौ कर तुंग देह माना।
चिंतित फल दाता चिंतामणि, अरु कल्पतरू भी सुखदाना।।4।।

श्रीदत्त आदि त्रयानवे गणधर, मनपर्यय ज्ञानी माने थे।
मुनि ढाई लाख आत्मज्ञानी, परिग्रह विरहित शिवगामी थे।।
वरुणा गणिनी सह आर्यिकाएँ, त्रय लाख सहस अस्सी मानीं।
श्रावक त्रय लाख श्राविकाएँ, पण लाख भक्तिरस शुभध्यानी।।5।।

भव वन में घूम रहा अब तक, किंचित् भी सुख नहिं पाया हूँ।
प्रभु तुम सब जग के त्राता हो, अतएव शरण में आया हूँ।।
गणपति सुरपति नरपति नमते, तुम गुणमणि की बहु भक्ति लिए।
मैं भी नत हूँ तव चरणों में, अब मेरी भी रक्षा करिए।।6।।

—दोहा—

हे चन्द्रप्रभ! आपके, हुए पंच कल्याण।
मैं भी मांगूँ आपसे, बस एकहि कल्याण।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—दोहा—

तीर्थंकर प्रकृति कही, महापुण्य फलराशि।
केवल 'ज्ञानमती' सहित, मिले सर्वसुखराशि।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(9) दशलक्षण पूजा

-स्थापना (शंभु छंद)-

तीर्थंकर मुख से प्रगटे ये, दशलक्षण धर्म सौख्यकारी।
ये मुक्तिमहल की सीढ़ी हैं, सब जन मन को आनंदकारी।।
वर क्षमा-मार्दव-आर्जव-सत्य-शौच-संयम-तप-त्याग तथा।
आकिंचन ब्रह्मचर्य उत्तम इन पूजत मिटती सर्व व्यथा।।1।।

-दोहा-

उत्तम दशविध धर्म ये, धरें सूर्य सम तेज।
आह्वानन विधि से जजूँ, खिले स्वगुण पंकेज।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमा-मार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदश-लक्षण धर्म समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमा-मार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदश-लक्षण धर्म समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमा-मार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदश-लक्षण धर्म समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अथ अष्टक (चौबोल छंद)-

पद्माकर का जल अति शीतल, पद्मपराग सुवास मिला।
रागभावमल धोवन कारण, धार करूँ मनकंज खिला।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर घिस कर्पूर मिलाया, भ्रमर पंक्तियां आन पड़े।
जिनगुण पूजन से नश जाते, कर्मशत्रु भी बड़े-बड़े।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र चंद्रिका सम सित तंदुल, पुंज चढ़ाऊँ भक्ति भरें।
अमृत कण सम निज समकित गुण, पाऊँ अतिशय शुद्ध खरे।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के सुमन सुगंधित, पारिजात बकुलादि खिले।
कामवाणविजयी जिनवल्लभ, चरण जजत नवलब्धि मिले।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, जिनवर के गुण पूज किये।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तम नाश करे।
दीपक से करते गुण पूजन, हृदय पटल की भ्रांति हरे।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में धूप जलाकर, अष्टकर्म को दग्ध करें।
निज आतम के भाव कर्म मल, द्रव्यकर्म भी भस्म करें।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अंगूर अनंनासादिक, सरस मधुर ले थाल भरें।
नव क्षायिक लब्धि फल इच्छुक, पूजूँ जिनगुणमणी खरे।।

दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल अर्घ लिया।
त्रिभुवन पूजित पद के हेतू, तुम गुणगण को अर्घ किया।।
दशलक्षण धर्मामृत पूजत, त्रिविध कर्म मल शीघ्र धुलें।
स्वयं अनंते गुण विकसित हों, परमानंद पियूष मिले।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जव-सत्यशौचसंयमतपत्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सोरठा-

यमुना सरिता नीर, कंचन झारी में भरा।
मिले भवाम्बुधि तीर, जिनवर पद धारा करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल मालती फूल, सुरभित निजकर से चुनें।
सब सुख हों अनुकूल, तुम गुण पंकज पूजतें।।11।।

पुष्पांजलिः।।

पृथक्-पृथक् पूजा (अर्घ)

-दोहा-

स्वात्म धर्म पीयूष की, निर्झरणीमय गंग।
इसमें अवगाहन करूँ, धुले कर्ममल जंग।।1।।

।। इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(चाल-भक्तामर मंगल गीता)

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नित प्रति शीश नमाते हैं।
मेरे घट में पूर्ण प्रगट हों, यही भावना भाते हैं।।1।।

उत्तम क्षमा सुधाम्बुधि है, वैरशमन की औषधि है।
सर्व सौख्य की खान कही, सर्वजनों को मान्य रही।।2।।

क्रोध कषाय महाविष है, भव भव में दुखदायक है।
वैर भाव मन में धरते, कमठ समान शत्रु बनते।।3।।

क्षमा भाव मन में धारें, द्वेष कलह सब परिहारें।
पार्श्वनाथ के गुण गावें, श्रेष्ठ उदाहरण अपनावें।।4।।

क्षमा निजात्मा का गुण है, क्रोध भाव अग्नी कण है।
क्षमा पूर्ण शीतल जल है, सभी गुणों में उज्ज्वल है।।5।।

ऐसे पावन क्षमाधर्म को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
समरस हेतू क्षमाधर्म को, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण सार्वधर्म को, नित प्रति शीश नमाते हैं।
मेरे घट में पूर्ण प्रगट हों, यही भावना भाते हैं।।1।।

उत्तम मार्दव निजगुण है, मान महाविष दुर्गुण है।
विनय मुक्ति का द्वार कहा, सर्वगुणों का सार कहा।।2।।

दर्शन ज्ञान चरित तप में, इनके धारक गुरुजन में।
विनय भाव जो धरते हैं, निजगुण संपत्ति लभते हैं।।3।।

गुरु की विनय सदा करते, वे उपचार विनय धरते।
अठ विध मद को परिहरते, सबके सहज मित्र बनते।।4।।

रावण अर्धचक्रि मानी, अपयश से की निज हानि।
नरक धरा में दुख भोगे, विनयी नर सुर सुख भोगें।।5।।

ऐसे पावन मार्दव को हम, हृदय कमल में ध्याते हैं।
कोमलतामय स्वात्मधर्म को, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तममार्दव-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण सार्वधर्म को, नित प्रति शीश नमाते हैं।
मेरे घट में पूर्ण प्रगट हों, यही भावना भाते हैं।।1।।

उत्तम आर्जव ऋजुता है, मन वच काय सरलता है।
सरल भाव से ऋजुगति है, ऋजुगति से ही शिवगति है।।2।।

माया से तिर्यग्गति है, कुटिल वृत्ति दुर्गतिप्रद है।
मृदुमति मुनि ने कपट किया, हाथी बनकर दुखित हुआ।।3।।

काष्ठांगार छद्मबल से, अतिविश्वासघात करके।
सत्यंधर नृप को मारा, खुद को दुर्गति में डारा।।4।।

माया में सब दुर्गुण हैं, सरलभाव में सद्गुण हैं।
आर्जव गुण की पूजा से, स्वात्मशुद्ध हो कर्म नशें।।5।।

ऐसे उत्तम आर्जव गुण को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
स्वात्म सौख्य की प्राप्ति हेतू, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमआर्जव-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण सार्वधर्म को, नित प्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम सत्यधर्म प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।1।।

उत्तम सत्यवचन बोलो, श्रुतसम्मत प्रशस्त बोलो।
झूठ बराबर पाप नहीं, जहाँ सांच वहाँ आंच नहीं।।2।।

निंदा चुगली बैर वचन, कर्कश गर्हित पाप वचन।
सब असत्य के परिकर हैं, सब दुर्गति के किंकर हैं।।3।।

झूठ पक्ष से वसु नृप के, हिंसा यज्ञ चला तब से।
नृप का सिंहासन धसका, नृपति नरक में जाय बसा।।4।।

सत्य सौख्यप्रद सुन्दर है, सत्य वचन जग हितकर है।
सत्यवचन से वाक् सिद्धी, हो निज की भी उपलब्धी।।5।।

शिवप्रद उत्तम सत्यधर्म को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
निजगुणसंपत्ती के हेतू, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमसत्य-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नित प्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम शौच धर्म प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।1।।

शुचि का भाव शौच जानो, लोभ पाप की खनि मानो।
जो मन में संतोष धरें, वे ही मन की शुद्धि करें।।2।।

जल आदिक से शुद्धि कही, वह बहिरंग शुद्धि सच ही।
श्रावक जन नित ही करते, साधु कदाचित् भी करते।।3।।

मलिन देह न स्नान करें, रत्नत्रय से शुद्धि धरें।
साधु अमल गुणधारी हैं, ज्ञानगंग अवगाही हैं।।4।।

अति अपवित्र इसी तन से, जप तप ज्ञान शील व्रत से।
शुचि पवित्र आत्मा प्रगटे, परमात्मा होकर चमके।।5।।

ऐसे पावन शौच धर्म को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
स्वात्मविशुद्धि हेतु भक्ति से, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमशौच-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नितप्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम संयम रत्न प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।1।।

त्रस स्थावर जीव कहे, ये षट् जीव निकाय रहें।
इनकी रक्षा करना ही, प्राणी संयम धरना ही।।2।।

पंचेन्द्रिय मन वश करना, इन्द्रिय संयम चित धरना।
यह बारह विध संयम है, मुनिगण का ही जीवन है।।3।।

जीव भरें इस तिहुंजग में, सावधान मुनि नहिं बंधते।
श्रावक एकदेश पालें, संकल्पी त्रसवध टालें।।4।।

नरगति में ही संयम है, नरभव सफल करो जन है।
चिन्मय ज्योति प्रगट करें, पूर्ण ज्ञान आनंद भरे।।5।।

संयम चिंतामणि रत्न को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
तीर्थंकर भी धरें इसे, हम हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमसंयम-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नितप्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम बारह तप प्रगटित हों, यही भावना भाते हैं।।1।।

अनशन आदि बाह्य तप षट्, अंतरंग तप भी हैं षट्।
ये कर्मेंधन भस्म करें, स्वर्ग मोक्ष के सौख्य भरें।।2।।

सुरगण नरभव को तरसें, तप को चाहें शिवरुचि से।
नरक स्वर्ग तिर्यग्गति में, तप नहिं यह तप नरभव में।।3।।

तप से काय भले कृश हो, आत्मशक्ति बढ़ जाय अहो।
ऋद्धि सिद्धियाँ प्रगटित हों, तीर्थंकर भी धरें अहो।।4।।

नरक निगोदों का यदि भय, संयम तप धारो निर्भय।
श्रावक भी तप करते हैं, भववारिधि से तरते हैं।।5।।

ऐसे पावन उत्तमतप को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
कर्मनिर्जरा हेतू तप को, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमतपो-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नितप्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम त्याग धर्म प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।1।।

मुनिरत्नत्रय दान करें, प्रासुक त्याग इसे उचरें।
इससे ही शिवमार्ग चले, चतुः संघ हों भले भले।।2।।

दान चतुर्विध माना है, श्रावकधर्म बखाना है।
त्रिविध पात्र हित दान कहा, औषधि शास्त्र आहार महा।।3।।

अभयदान जिनवर करते, मुनि-श्रावक भी तो करते।
जीवनदान महाना है, आर्षग्रंथ में माना है।।4।।

निज को निज में पा करके, ज्ञान निधी को ला करके।
सब विभाव का त्याग करो, निजस्वभाव को प्राप्त करो।।5।।

चउविध उत्तमत्याग धर्म को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
रत्नत्रय निधि पूर्ण प्राप्त हित, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमत्याग-धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नितप्रति शीश नमाते हैं।
आकिंचन्य धर्म प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।1।।

किंचित् मेरा नहीं यही, आकिंचन्य धर्म शुभ ही।
चौबिस भेद परिग्रह हैं, पूर्ण त्यागते मुनिवर हैं।।2।।

श्रावक धन परिमाण करें, अणुव्रत धर सुर सौख्य भरें।
नग्न दिगम्बर मुनि ज्ञानी, नग पर तिष्ठें शुचि ध्यानी।।3।।
समरस सौख्य सुधास्वादी, हरते जनम मरण व्याधी।
जिनकल्पी मुनि एकाकी, शुद्धात्मा के अनुरागी।।4।।
आज मुनी संघ में रहते, ज्ञान ध्यान तपरत रहते।
इन्हें स्थविरकल्पि मानों, धन्य दिगम्बर गुरु जानो।।5।।
उत्तम आकिंचन्य धर्म को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
पूर्ण अकिंचन बनें इसी से, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमआकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणमय सार्वधर्म को, नितप्रति शीश नमाते हैं।
उत्तम ब्रह्मचर्य प्रगटित हो, यही भावना भाते हैं।।1।।
ब्रह्मचर्य व्रत तिहुं जग में, सुरनर पूजित है सच में।
एक अंक बिन बिंदू की, नहिं गणना कुछ हो सकती।।2।।
एक अंक पर बिंदु अनेक, कोटि अरब संख्या के हेतु।
ब्रह्मचर्य व्रत ऐसा है, गुण अनंत भर देता है।।3।।
मुनिगण पूर्ण ब्रह्मचारी, मुक्ति वधू के भरतारी।
श्रावक एकदेश पालें, शीलव्रती बन यश पालें।।4।।
सीता के व्रत शील भले, अग्नि हुई जल कमल खिले।
सेठ सुदर्शन शीलव्रती, शूली से सिंहासन भी।।5।।
स्वात्मसौख्यकृत ब्रह्मचर्य को, हृदय कमल में ध्याते हैं।
परमानंद मोक्ष पद हेतू, हर्षित अर्घ चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य (नरेन्द्रछंद)-

स्वात्मशांति कर सर्वहितंकर, ये दशधर्म कहाते हैं।
मुनिगण इन पर क्रम से चढ़कर, परमामृत सुख पाते हैं।।
श्रावक एकदेश पालन कर, बहुविध सुख भंडार भरें।
पूरण अर्घ चढ़ाकर पूजें, सब दुख शोक दरिद्र हरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-**ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमादिदशधर्मेभ्यो नमः।**

जयमाला

-दोहा-

दशलक्षणवृष कल्पतरु, सब कुछ देन समर्थ।
गाऊँ गुणमणिमालिका, फलें सर्व इष्टार्थ।।1।।

-शंभुछंद-

जय उत्तम क्षमा शांतिकरणी,
निज आत्मसुधानिर्झरणी है।
जय उत्तम मार्दव स्वाभिमान,
समरस परमामृत सरणी है।।
जय उत्तम आर्जव मन वच तन,
एकाग्ररूप निजध्यानमयी।
जय उत्तम सत्य दिव्यध्वनि का,
हेतू है भविजन सौख्यमयी।।2।।
जय उत्तम शौच निजात्मा को,
शुचि पावन कर शिवधाम धरे।
जय उत्तम संयम गुणरत्नों से,
पूर्ण परमनिजधाम करे।।
जय उत्तम तप आत्मा को नित्य,
निरंजन अनुपम पद देता।
जय उत्तम त्याग रत्नत्रय निधि से,
निज आत्मा को भर देता।।3।।
जय उत्तम आकिंचन आत्मा को,
त्रिभुवनपति पद देता है।
जय उत्तम ब्रह्मचर्य निज में,
निज को स्थिर कर देता है।।
जय जय दशलक्षण धर्म,
निजात्मा के अनंतगुण देते हैं।
चौरासी लाख योनियों के,
परिभ्रमण दूर कर देते हैं।।4।।
निश्चयनय से यह आत्मा तो,
रस-गंध-वर्ण-स्पर्श रहित।
नर-नारक आदि गती विरहित,
संस्थान गुणस्थानादि रहित।।
यद्यपि भव पंच परावर्तन यह,
काल अनंतों से करता।
फिर भी निश्चय से यह आत्मा,
है सिद्ध समान सौख्य भरता।।5।।

व्यवहार नयाश्रित आत्मा तो,
कर्मों से युत संसारी है।
शारीरिक मानस आगंतुक,
नाना दुःखों का धारी है।।
भव-भव के जन्म-मरण दुःखों को,
व्याकुल होकर भोग रहा।
फिर भी यह चिच्चैतन्यमयी,
आत्मा के गुण को खोज रहा।।6।।
हे नाथ! आपके चरणों में,
हम यही प्रार्थना करते हैं।
समकित निधि संयमनिधी मिले,
बस यही याचना करते हैं।।
व्यवहार नयाश्रित भक्ती से,
दशधर्म कमल विकसित कीजे।
निश्चयनय से निज में तिष्ठूँ,
ऐसी शक्ती मुझको दीजे।।7।।

-दोहा-

गुण अनंत मंडित प्रभो! करो हृदय में वास।
केवल ज्ञानमती मिले, जो अनंतगुण राशि।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्गत उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

दशलक्षण वरधर्म को, जो पूजें धर प्रीति।
आत्यंतिक सुख शांति लें, यही जिनागम रीति।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(10) तीन चौबीसी पूजा

स्थापना – गीता छंद

मंगलमयी सब लोक में, उत्तम शरण दाता तुम्हीं।
वर तीन चौबीसी जिनेश्वर, तीर्थकर्ता मान्य ही।।
इस भरत में ये भूत संप्रति, भावि तीर्थंकर कहे।
आह्वान करके जो जजें, वे स्वात्मसुख संपति लहें।।1।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक – स्रग्विणी छंद

नीर सरयू नदी का भरा लायके।
धार देऊँ प्रभो पाद में आयके।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।1।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सौगंध कर्पूर केशर मिली।
पाद चर्चंत सम्यक्त्व कलिका खिली।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।2।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्ध के फेन सम स्वच्छ अक्षत लिये।
पुंज को धारते स्वात्म संपत लिये।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।3।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

केवड़ा मोगरा पुष्प अरविंद है।
नाथ पद पूजते कामशर भंग है।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।4।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग लाडू इमरती कनक थाल में।
पूजते भूख व्याधी हरूँ हाल में।।

तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।5।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण के पात्र में ज्योति कर्पूर की।
नाथ की आरती मोह को चूरती।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।6।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते।
कर्म की भस्म हो नाथ पद सेवते।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।7।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर केला अनंनास ले।
नाथ पद अर्चते मुक्तिकांता मिले।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।8।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि वसु द्रव्य ले थाल में।
अर्घ्य अर्पण करूँ नाथ के भाल में।।
तीन चौबीसी तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुःख से बचूँ।।9।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—सोरठा—

तीर्थंकर परमेश, त्रिभुवन शांतीकर सदा।
त्रिकरण शुद्धी हेत, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पदपद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—**ॐ ह्रीं त्रैकालिकद्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

—दोहा—

तीर्थंकर के जन्म से, नगरि अयोध्या वंद्य।
गाऊँ गुणमाला अबे, पाऊँ सौख्य अनिंद्य।।1।।

—शेरछंद—

जैवंत मुक्तिकान्त देव देव हमारे।
जैवंत भक्तवृन्द भवोदधि से उबारें।।
जैवंत तीन काल के तीर्थेश बहत्तर।
जैवंत तीस चौबिस के सर्व तीर्थंकर।।2।।

जय भूतकाल के अनंतानंत तीर्थंकर।
जय जय भविष्य के अनंतानंत तीर्थंकर।।
इन भूत भावि जिनकी जन्मभूमि अयोध्या।
शाश्वत त्रिलोक वंद्य महातीर्थ अयोध्या।।3।।

जय पंचकल्याणक पति जिनराज को नमूँ।
जय दो या तीन कल्याणक पती नमूँ।।
हे नाथ! आप जन्म के छह माह ही पहले।
धनराज रत्नवृष्टि करें मात के महले।।4।।

जब आप मात गर्भ में अवतार धारते।
तब इन्द्र सपरिवार आय भक्ति भाव से।।
प्रभु गर्भ कल्याणक महाउत्सव विधी करें।
माता पिता की भक्ति से पूजन विधी करें।।5।।

हे नाथ! आप जन्मते सुरलोक हिल उठे।
इन्द्रासनों के कंप से आश्चर्य हो उठे।।
भेरी करा सब देव का आह्वान करे हैं।
जन्माभिषेक करने का उत्साह भरे हैं।।6।।

सुरराज आ जिनराज को सुरशैल ले जाते।
सुरगण असंख्य मिलके महोत्सव को मनाते।।
जब आप हो विरक्त देव सर्व आवते।
दीक्षा विधी उत्सव महामुद से मनावते।।7।।

जब घातिया को घात ज्ञानसंपदा भरें।
तब इन्द्र आ अद्भुत समवसरण विभव करें।।
जब आप मृत्यु जीत मुक्तिधाम में बसें।
सिद्ध्यंगना के साथ परमानंद सुख चखें।।8।।

सब इन्द्र आ निर्वाण महोत्सव मनावते।
प्रभु पंचकल्याणकपती को शीश नवाते।।

मैं आप शरण पायके सचमुच कृतार्थ हूँ।
बस ''ज्ञानमती'' पूर्ण होने तक ही दास हूँ।।9।।

ॐ ह्रीं भूतवर्तमानभविष्यत्-द्वासप्ततितीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

पंचमगति के हेतु मैं, नमन करूँ पंचांग।
परमानंद अमृत अतुल, मिले सौख्य सर्वांग।।10।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(11) पंचमेरु पूजा

–अडिल्ल छंद–

सुरनर वंदित पंचमेरु नरलोक में।
ऋषिगण जहँ विचरण करते निज शोध में।।
दुषमकाल में वहाँ गमन की शक्ति ना।
पूजूँ भक्ति समेत यहीं कर थापना।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयस्थसर्वजिन-बिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयस्थसर्वजिन-बिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयस्थसर्वजिन-बिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं (चाल - नंदीश्वर श्रीजिनधाम.....)

सुरसरिता का जल स्वच्छ, बाहर मल धोवे।
जल से ही जिनपद पूज, अन्तर्मल खोवे।।
पाँचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूँ भाव समेत, पाऊँ निज महिमा।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन द्रव सम वर गंध, चंदन दाह हरे।
चंदन से जजत जिनेश, भव भव दाह हरे।।
पाँचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूँ भाव समेत, पाऊँ निज महिमा।।2।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि द्युति सम उज्ज्वल धौत, अक्षत थाल भरें।
अक्षय अखंड सुख हेतु, जिन ढिग पुंज धरें।।
पाँचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूँ भाव समेत, पाऊँ निज महिमा।।3।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं वकुल कमल कुसुमादि, सुरभित मनहारी।
भवविजयी जिनवर पाद, पूजत दुःखहारी।।
पाँचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूँ भाव समेत, पाऊँ निज महिमा।।4।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत शर्कर युत पकवान, लेकर थाल भरें।
निज क्षुधा रोग की हान, हेतू यजन करें।।
पाँचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूँ भाव समेत, पाऊँ निज महिमा।।5।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीपक कर्पूर, ज्योती तिमिर हरे।
प्रभु पद पूजत ही शीघ्र, ज्ञान उद्योत करे।।
पाँचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूँ भाव समेत, पाऊँ निज महिमा।।6।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध सुगंधित धूप, खेवत अग्नी में।
कर अष्टकर्मचकचूर, पाऊँ निजसुख मैं।।
पाँचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूँ भाव समेत, पाऊँ निज महिमा।।7।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़िम केला अंगूर, उत्तम फल लाऊँ।
शिव फलहित फल से पूज, स्वातम निधि पाऊँ।।
पाँचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूँ भाव समेत, पाऊँ निज महिमा।।8।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से युक्त, अर्घ समर्प किया।।
पाँचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूँ भाव समेत, पाऊँ निज महिमा।।9।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

परम शांति सुख हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल जगत में शांति, सकलसंघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुःख दरिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - **ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयेभ्यः नमः।**
(लवंग या पुष्पों से)

जयमाला

–दोहा–

परमानंद जिनेन्द्र की, शाश्वत मूर्ति अनूप।
परम सुखालय जिनभवन, नमूँ नमूँ चिद्रूप।।1।।

चौबोल छंद-(मेरी भावना की चाल)

मेरु सुदर्शन विजय अचल, मंदर विद्युन्माली जग में।
पूज्य पवित्र परमसुखदाता, अनुपम सुरपर्वत सच में।।
अहो अचेतन होकर भी ये, चेतन को सुख देते हैं।
दर्शन पूजन वंदन करते, भव भव दुःख हर लेते हैं।।2।।

अनादि अनिधन पृथ्वीमय ये, सर्वरत्न से स्वयं बने।
भद्रसाल नंदन सुमनस वन, पांडुकवन से युक्त घने।।
सुरपति सुरगण सुरवनितायें, सुरपुर में आते रहते।
पंचम स्वर से जिनगुण गाते, भक्ति सहित नर्तन करते।।3।।

विद्याधरियाँ विद्याधर गण सब, जिनवंदन को आते हैं।
कर्मभूमि के नरनारी भी, विद्या बल से जाते हैं।।
चारण ऋषिगण नित्य विचरते, स्वात्म सुधारस पीते हैं।
निज शुद्धातम को ध्याध्याकर, कर्म अरी को जीते हैं।।4।।

मैं भी वंदन पूजन अर्चन करके भव का नाश करूँ।
मेरे शिवपथ के विघ्नों को, हरो नाथ! यम त्रास हरूँ।।
बस प्रभु केवल 'ज्ञानमती' ही, देवो इक ही आश धरूँ।
तुम पद भक्ति मिले भव भव में, जिससे स्वात्म विकास करूँ।।5।।

–दोहा–

श्री जिनवर जिनभवन अरु, जिनवर बिंब महान्।
जो जन अर्चे भाव से, पावें निजसुख थान।।6।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। परिपुष्पांजलिः।

–दोहा–

पंचमेरु की अर्चना, हरे सकल जग त्रास।
मेरु सदृश उत्तुंग फल, फले सकल गुणराशि।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(12) श्री सुमतिनाथ जिनपूजा

–अथस्थापना –गीता छंद –

श्रीसुमति तीर्थंकर जगत में, शुद्धमति दाता कहे।
निज आतमा को शुद्ध करके, लोक मस्तक पर रहें।।
मुनि चार ज्ञानी भी सतत, वंदन करें संस्तवन करें।
हम भक्ति से थापें यहाँ, प्रभु पद कमल अर्चन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –गीता छंद

प्रभु चार गतियों में बहुत ही, घूमकर अब थक चुका।
इस हेतु तुम पद शरण लेकर, नीर से पूजूँ मुदा।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन्द्रियादिक देह में, दुःख दाव से संतप्त हो।
प्रभु गंध से पद चर्चते, तुम पाद छाया सुलभ हो।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिन्द्र से भि निगोद तक, सुख दुःखमयी सब पद धरे।
अक्षय सुपद के हेतु भगवन्! पुंज अक्षत के धरे।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध अयश से खिन्न हो, नहिं स्वात्मगुण यश पा सका।
बहुविध महकते पुष्प सुंदर, अतः चरणों में रखा।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू इमरती पूरियाँ, फेनी मलाई खीर से।
नहिं तृप्ति पाई इसलिए, नेवज चढ़ाऊँ प्रीति से।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक अंधेरा दूर करता, एक कोठे का अरे।
तुम आरती करते सकल, अज्ञानतम हरता खरे।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वरधूप खेते अग्नि में, सब कर्म भस्मीभूत हों।
निज आत्म समरस प्राप्त हो, फिर मोह बैरी दूर हों।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम पिस्ता सेव केला, आम दाड़िम फल लिया।
बस मोक्षफल की आश लेकर, आपको अर्पण किया।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प में, बहुरत्न आदि मिलाय के।
मैं अर्घ अर्पण करूँ प्रभु को, 'ज्ञानमति' हर्षाय के।।
हे सुमति जिन! तुम पाद पंकज, की करूँ मैं अर्चना।
सद्बुद्धि पाऊँ नाथ! अब मैं, करूँ यम की तर्जना।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

श्री जिनवर पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुखसद्म, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमानंद सुख लाभ, मिले सर्वसुख सम्पदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

—नरेन्द्र छंद —

पुरी अयोध्या पिता मेघरथ, सती मंगला माता।
श्रावण शुक्ल द्वितीया तिथि में, गर्भ बसे जग त्राता।।
इन्द्र स्वयं सुरगण सह आये, मात पिता को पूजें।
पुनर्जन्म के नाश हेतु हम, गर्भकल्याणक पूजें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाद्वितीयायां श्रीसुमतिनाथजिन-गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल एकादशि तिथि में, जन्म लिया तीर्थेश्वर।
सुरपति जिन बालक को लेकर, बैठे ऐरावत पर।।
सुरगिरि पहुँचे जन्म महोत्सव, किया इन्द्रगण मिलकर।
जन्म कल्याणक मैं नित पूजूँ, मिले जन्म अविनश्वर।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्रीसुमतिनाथजिन-जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण पाय विरती हो, इन्द्र सभी मिल आये।
सुदि नवमी वैशाख तिथी, अभयंकरि पालकि लाये।।
प्रभू सहेतुक वन में पहुँचे, बेला कर दीक्षा ली।
दीक्षा कल्याणक जजते ही, मिले स्वात्मगुणशैली।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लानवम्यां श्रीसुमतिनाथजिन-दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र सुदी ग्यारस उद्यान, सहेतुक में प्रभु पहुँचे।
तरु प्रियंगु के नीचे तिष्ठे, केवल रवि बन चमके।।
धनपति समवसरण रच करके, ज्ञानकल्याणक पूजें।
गंधकुटी में सुमति जिनेश्वर, पूजत भव से छूटें।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्रीसुमतिनाथजिन-केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल ग्यारस अपराण्हे, सम्मेदाचल से ही।
मृत्युनाश मृत्युंजय होकर, स्वात्मा में तिष्ठे ही।।
सुमतिनाथ का मोक्षकल्याणक, इन्द्र जजें भक्ती से।
मैं पूजूँ इस कल्याणक को, नशें कर्म युक्ती से।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्रीसुमतिनाथजिन-मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य— ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

—दोहा —

चिन्मूरति परमात्मा, चिदानंद चिद्रूप।
गाऊँ गुणमाला अबे, स्वल्पज्ञान अनुरूप।।1।।

—नाराचछंद —

नमो नमो जिनेन्द्रदेव! आपको सुभक्ति से।
मुनीन्द्रवृंद आप ध्याय कर्मशत्रु से छुटें।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।2।।

अनंतदर्श ज्ञान वीर्य सौख्य से सनाथ हो।
अनादि हो अनंत हो जिनेश सिद्धिनाथ हो।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।3।।

अनादिमोह वृक्ष मूल को उखाड़ आपने।
प्रधान राग द्वेष शत्रु को हना सु आपने।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।4।।

महान रोग शोक कष्ट हेतु औषधी कहे।
अनिष्ट योग इष्ट का वियोग दुःख को दहे।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।5।।

अपूर्व चालिसे हि लाख पूर्व वर्ष आयु है।
सुतीन सौ धनुष प्रमाण तुंग देह आप हैं।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।6।।

सुचक्रवाक चिन्ह देह स्वर्ण के समान है।
तनू विहीन ज्ञानदेह सिद्ध शक्तिमान हैं।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।7।।

शतेन्द्र वृंद आपको सदैव शीश नावते।
गणीन्द्र वृंद आप को निजात्मा में ध्यावते।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।8।।

गणेश चामरादि एक सौ सुसोलहों सभी।
समस्त ऋद्धियों समेत आप भक्ति लीन ही।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।9।।

समस्त साधु तीन लाख बीस सहस संयमी।
निजात्म सौख्य हेतु नित्य स्वात्मध्यान लीन ही।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।10।।

प्रधान आर्यिका अनंतमत्ति नाम धारती।
सुतीन लाख तीस सहस आर्यिका महाव्रती।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।11।।

जिनेश भक्त तीन लाख श्रावकों कि भीड़ है।
सुपाँच लाख श्राविका मिथ्यात्व से विहीन हैं।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।12।।

असंख्य देव देवियाँ जिनेन्द्र अर्चना करें।
वहाँ तिर्यंच संख्य सर्व वैरभाव को हरें।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।13।।

सुनी सुकीर्ति आपकी अतेव संस्तुती करूँ।
अनंत जन्म के अनंत पापपुंज को हरूँ।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।14।।

जिनेन्द्र आप भक्ति से सदैव साम्य भावना।
सदैव स्वात्म ब्रह्म तत्त्व की करूँ उपासना।।
अनाथ नाथ! भक्त पे दया की दृष्टि कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से निकाल सौख्य दीजिए।।15।।

—दोहा—

सुमतिनाथ! तुम भक्ति से, मिले निजातम शक्ति।
रत्नत्रय युक्ती मिले, पुनः शीघ्र हो मुक्ति।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—सोरठा—

जो जन करते सेव, हरें कुमति कुज्ञान को।
बनें देव के देव, पावें अविचल संपदा।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(13) श्री शांतिनाथ जिनपूजा

स्थापना—गीता छंद

हे शांतिजिन! तुम शांति के, दाता जगत् विख्यात हो।
इस हेतु मुनिगण आपके, पद में नमाते माथ को।।
निज आत्मसुखपीयूष को, आस्वादते वे आप में।
इस हेतु प्रभु आह्वान विधि से, पूजहूँ नत माथ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक—गीता छंद

चिरकाल से बहुप्यास लागी, नाथ! अब तक ना बुझी।
इस हेतु जल से तुम चरण युग, जजन की मनसा जगी।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप शीतल हेतु भगवन्! बहुत का शरणा लिया।
फिर भी न शीतलता मिली, अब गंध से पद पूजिया।।

श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुबार मैं जन्मा मरा, अब तक न पाया पार है।
अक्षय सुपद के हेतु अक्षत, से जजूँ तुम सार है।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली बकुल आदिक, पुष्प ले पूजा करूँ।
मनसिजविजेता तुम जजत, निज आत्मगुणपरिचय करूँ।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भूख व्याधी पिंड लागी, किस विधी मैं छूटहूँ।
पकवान नानाविध लिये, इस हेतु ही तुम पूजहूँ।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानतम दृष्टी हरे, निज ज्ञान होने दे नहीं।
इस हेतु दीपक से जजूँ, मन में उजेला हो सही।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्मबैरी संग लागे, एक क्षण ना छोड़ते।
वर धूप अग्नी संग खेते, दूर से मुख मोड़ते।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल मोक्ष की अभिलाष लागी, किस तरह अब पूर्ण हो।
इस हेतु फल से तुम जजूँ, सब विघ्न बैरी चूर्ण हों।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल रत्नत्रय निधी की, मैं करूँ अब याचना।
तुम अर्घ्य लेकर पूजते ही, पूर्ण होगी कामना।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

शांतिनाथ पदकंज में, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा मैं करूँ, मिटे सकल भव खेद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

लाल कमल नीले कमल, पुष्प सुगंधित सार।
जिनपद पुष्पांजलि करूँ, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

– रोला छंद –

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हरषाई।।
इन्द्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, जिनवर पद सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां श्रीशांतिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, ज्येष्ठवदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने।।
शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जग में।
हम नावें निज माथ, जिनवर चरणकमल में।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु आप, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तप कल्याणक करते।
हम पूजें नत माथ, सब दुख संकट हरते।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।।
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्य धुनी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां श्रीशांतिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त किया निर्वाण, ज्येष्ठ वदी चौदश में।
आत्यंतिक सुखशांति, प्राप्त किया उस क्षण में।।
महामहोत्सव इंद्र, करते बहुवैभव से।
हम पूजें तुम पाद, छुटें सभी भवदुःख से।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

—दोहा—

हस्तिनागपुर में हुये, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
सम्मेदाचल मोक्ष थल, गाऊँ प्रभु गुणगान।।1।।

—स्रग्विणी छंद—

मैं नमूँ मैं नमूँ शांति तीर्थेश को।
नाथ मेरे हरो सर्व भवक्लेश को।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।2।।

विश्वसेन प्रिया मात ऐरावती।
वर्ष इक लाख आयू कनक वर्ण ही।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।3।।

देह चालीस धनु चिन्ह मृग ख्यात है।
जन्म भू हस्तिनापूरि विख्यात है।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।4।।

नाथ के समवसृति में सभा मध्य ये।
साधु बासठ सहस मूलगुणधारि थे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।5।।

चक्र आयुध प्रमुख गणपती श्रेष्ठ थे।
ऋद्धि संयुक्त छत्तीस मुनिज्येष्ठ थे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।6।।

आर्यिका हरीषेणा प्रधाना तथा।
साठ हज्जार त्रय सौ सभी आर्यिका।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।7।।

दोय लक्षा सुश्रावक प्रभू भाक्तिका।
चार लक्षा कहीं श्राविका सद्व्रता।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।8।।

सौख्य हेतू भटकता फिरा विश्व में।
किंतु पाई न साता कहीं रंच मैं।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।9।।

नाथ ऐसी कृपा कीजिए भक्त पे।
शुद्ध सम्यक्त्व की प्राप्ति होवे अबे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।10।।

स्वात्म पर का मुझे भेद विज्ञान हो।
पूर्ण चारित्र धारूँ जो निष्काम हो।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।11।।

पूर्ण शांती जहाँ पे वहीं वास हो।
भक्त ये आपका आपके पास हो।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।12।।

—दोहा—

तीर्थंकर चक्री मदन, तीनों पद के ईश।
पूर्ण "ज्ञानमति" हेतु मैं, नमूँ नमूँ नतशीश।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—दोहा—

शांतिनाथ की अर्चना, हरे सकल दुःख दोष।
सर्व अमंगल दूर कर, भरे स्वात्मसुखतोष।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(14) श्री शीतलनाथ जिनपूजा

–अथ स्थापना (शंभुछंद)–

हे शीतल तीर्थंकर भगवन्! त्रिभुवन में शीतलता कीजे।
मानस शारीरिक आगंतुक, त्रय ताप दूर कर सुख दीजे।।
चारण ऋद्धीधारी ऋषिगण, निज हृदय कमल में ध्याते हैं।
हम भी प्रभु का आह्वानन कर, सम्यक्त्व सुधारस पाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (शंभु छंद)–

भर जावे पूरा त्रिभुवन भी, प्रभु इतना नीर पिया मैंने।
फिर भी नहिं प्यास बुझी अब तक, इसलिए नीर से पूजूँ मैं।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
वच शीतल हों सब व्याधि नशें, तनु में शीतलता आ जावे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु त्रिभुवन में भी घूम घूम, शीतलता चाही चंदन से।
प्रभु अब शीतलता होवेगी, चंदन तुम पद में चर्चन से।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
वच शीतल हों सब व्याधि नशें, तनु में शीतलता आ जावे।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में सब पद प्राप्त किया, वे खंड खंड हो बिखर गये।
अक्षत से पूजूँ पद पंकज, हो मुझ अखंड पद इसीलिए।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
वच शीतल हों सब व्याधि नशें, तनु में शीतलता आ जावे।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम कीर्ति सुगंधी त्रिभुवन में, प्रभु फैल रही गणधर गायें।
इसलिए सुगंधित कुसुम लिये, तुमपद पूजें निज यश पायें।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
वच शीतल हों सब व्याधि नशें, तनु में शीतलता आ जावे।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तीनलोक से अधिक अन्न, पकवान खा चुका मैं जगमें।
फिर भी नहिं भूख मिटी इनसे, अतएव चरू से पूजूँ मैं।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
वच शीतल हों सब व्याधि नशें, तनु में शीतलता आ जावे।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा त्रिभुवन में, नहिं देख सका निज आत्मा को।
इसलिए दीप से मैं पूजूँ, निज ज्ञान ज्योति मुझ प्रगटित हो।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
वच शीतल हों सब व्याधि नशें, तनु में शीतलता आ जावे।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्म त्रिजग में दुःख देते, इनको अब शीघ्र जलाने को।
मैं धूप अग्नि में खेऊँ अब, प्रभु पूजा यश फैलाने को।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
वच शीतल हों सब व्याधि नशें, तनु में शीतलता आ जावे।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध फल की प्राप्ति हेतु, मैं घूम चुका प्रभु त्रिभुवन में।
अब एक मोक्ष फल प्राप्ति हेतु, फल मधुर चढ़ाऊँ तुम पद में।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
वच शीतल हों सब व्याधि नशें, तनु में शीतलता आ जावे।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मनिधी को भूल गया, बस मूल्य विषय सुख का आंका।
कर 'ज्ञानमती' हित अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु पाऊँ रत्नत्रय सांचा।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
वच शीतल हों सब व्याधि नशें, तनु में शीतलता आ जावे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

प्रभु त्रयधारा करूँ, त्रिभुवन शांती हेतु।
शीतल जिन की भक्ति है, भवि को भवदधि सेतु।।10।।

शांतये शांतिधारा।

शीतल जिन पदकमल में, पुष्पांजलि विकिरंत।
तिहुंजग यश विस्तारके, त्रिभुवन सौख्य भरंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद –

शीतल प्रभू अच्युत सुरग से, भद्रिकापुरि आ गये।
दृढ़रथ पिता माता सुनंदा, के गरभ में आ गये।।
तिथि चैत्र कृष्णा अष्टमी, धनपति रतन बरसा रहा।
इन्द्रादि गर्भोत्सव किया, पूजत गरभ के दुख दहा।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअष्टम्यां श्रीशीतलनाथजिन-गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि माघ कृष्णा द्वादशी, प्रभु जन्मते बाजे बजे।
देवों के आसन कंप उठे, सुर इन्द्र थे हर्षित तबे।।
सुरशैल पर पांडुकशिला पे, जन्म अभिषव था हुआ।
जिन जन्म कल्याणक जजत, मेरा जनम पावन हुआ।।2।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां श्रीशीतलनाथजिन-जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिमनाश देखा नाथ के, मन में विरक्ती छा गई।
वदि माघ बारस पालकी, शुक्रप्रभा तब आ गई।।
सुरपति सहेतुक बाग में, लेकर गये प्रभु चौक पे।
सिद्धं नमः कह लोच कर, दीक्षा ग्रही पूजूँ अबे।।3।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां श्रीशीतलनाथजिन-दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष वदि चौदश जिनेश्वर, शुक्ल ध्यानी हो गये।
तब बेलतरु तल में त्रिलोकी, सूर्य केवल पा गये।।
सुंदर समवसृति में अधर, तिष्ठे असंख्यों भव्य को।
संबोध वचपीयूष से, तारा जजूँ जिनसूर्य को।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशीतलनाथजिन-केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन सुदी अष्टम तिथी, सम्मेदगिरि पे जा बसे।
इक सहस साधू साथ ले, मुक्तीनगर में जा बसे।।
अतिशय अतीन्द्रिय सौख्य, परमानंद अमृत पा लिया।
शीतल प्रभू का मोक्षकल्याणक, जजत निजसुख लिया।।5।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाअष्टम्यां श्रीशीतलनाथजिन-मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–दोहा –

अति अद्भुत लक्ष्मी धरें, समवसरण प्रभु आप।
तुम ध्वनि सुन भविवृंद नित, हरें सकल संताप।।1।।

– शंभु छंद –

जय जय शीतल जिन का वैभव, अंतर का अनुपम गुणमय है।
जो दर्शज्ञान सुख वीर्यरूप, आनन्त्य चतुष्टय गुणमय है।।
बाहर का वैभव समवसरण, जिसमें असंख्य रचना मानी।
गुरु गणधर भी वर्णन करते, थक जाते मनपर्यय ज्ञानी।।2।।

यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
सीढ़ी से ऊपर अधर भूमि, यह तीस कोश की गोल दिखे।।
यह भूमि कमल आकार कही, जो इन्द्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है।।3।।

पंकज के दल सम बाह्य भूमि, जो अनुपम शोभा धारे है।
इस समवसरण का बाह्य भाग, दर्पण तल सम रुचि धारे है।।
यह बीस हजार हाथ ऊँचा, शुभ समवसरण अतिशय शोभे।
एकेक हाथ ऊँची सीढ़ी, सब बीस हजार प्रमित शोभें।।4।।

अंधे पंगू रोगी बालक, औ वृद्ध सभी जन चढ़ जाते।
अंतर्मुहूर्त के भीतर ही, यह अतिशय जिन आगम गाते।।
इसमें शुभ चार दिशाओं में, अति विस्तृत महा वीथियाँ हैं।
वीथी में मानस्तंभ कहे, जिनकी कलधौत पीठिका हैं।।5।।

जिनवर से बारह गुणे तुंग, बारह योजन से दिखते हैं।
इनमें हैं दो हजार पहलू, स्फटिक मणी के चमके हैं।।
उनमें चारों दिश में ऊपर, सिद्धों की प्रतिमाएँ राजें।
मानस्तंभों की सीढ़ी पर, लक्ष्मी की मूर्ति अतुल राजें।।6।।

ये दूर-दूर तक गाँवों में, अपना प्रकाश फैलाते हैं।
जो इनका दर्शन करते हैं, वे निज अभिमान गलाते हैं।।
मानस्तंभों के चारों दिश, जलपूरित स्वच्छ सरोवर हैं।
जिनमें अतिसुंदर कमल खिले, हंसादि रवों से मनहर हैं।।7।।

प्रभु समवसरण में इक्यासी, गणधर सप्तर्द्धि समन्वित हैं।
सब एक लाख मुनिराज वहाँ, मूलोत्तर गुण से मंडित हैं।।
गणिनी धरणाश्री तीन लाख, अस्सी हजार आर्यिका कहीं।
श्रावक दो लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख भक्ति में लीन रहीं।।8।।

नब्बे धनु तुंग देह स्वर्णिम, इक लाख पूर्व वर्षायू थी।
है कल्पवृक्ष का चिन्ह प्रभो! दशवें तीर्थंकर शीतल जी।।
चिंतित फलदाता चिंतामणि, वांछित फलदाता कल्पतरू।
मैं पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ, निज आत्म सुधा का पान करूँ।।9।।

हे नाथ! कामना पूर्ण करो, निज चरणों में आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तब तक ही शरण मुझे लेवो।।
तब तक तुम चरण कमल मेरे, मन में नित सुस्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल 'ज्ञानमती', तब तक मम वच तुम गुण गावें।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—सोरठा—

गिनत न पावें पार, प्रभू आप गुणरत्न को।
नमूँ नमूँ शत बार, तीन रत्न के हेतु ही।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(15) अनन्त चतुर्दशी व्रत पूजा

(इसमें संस्कृत के 14 अर्घ्य और 14-14 मंत्र अनन्तव्रत कथा मराठी पुस्तक से उद्धृत हैं)

अथ स्थापना—नरेन्द्र छंद

श्री अनंत जिनराज आपने, भव का अंत किया है।
दर्शन ज्ञान सौख्य वीरजगुण, को आनन्त्य किया है।।
अंतक का भी अंत करें हम, इसीलिए मुनि ध्याते।
आह्वानन कर पूजा करके, प्रभु तुम गुण हम गाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक—अडिल्ल छंद

सरयूनदि को नीर कलश भर लाइये।
जिनवर पद पंकज में धार कराइये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन गंध सुगंधित लाइये।
तीर्थंकर पद पंकज अग्र चढ़ाइये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत मुक्ता फल सम लाइये।
जिनवर आगे पुंज चढ़ा सुख पाइये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुल कमल बेला चंपक सुमनादि ले।
मदनजयी जिनपाद पद्म पूजूँ भले।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद मोदक घृतमालपुआ लिये।
क्षुधाव्याधि क्षय हेतू आज चढ़ा दिये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीपक की ज्योति जले जगमग करे।
तुम पूजा तत्काल मोहतम क्षय करे।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर सित चंदन आदि मिलाय के।
अग्नि पात्र में खेऊँ भाव बढ़ाय के।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अंगूर आम आदिक लिये।
महामोक्षफल हेतु तुम्हें अर्पण किये।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य, लिया भर थाल में।
रत्नत्रय निधि हेतु जजूँ त्रयकाल में।।
भव अंतक श्री जिन अनंत पद को जजूँ।
रोग शोक भय नाश सहज निज सुख भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

श्री अनंत जिनराज के, चरणों धार करंत।
चउसंघ में भी शांति हो, समकित निधि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब ले, पुष्पांजली करंत।
मिले आत्म सुख संपदा, कटें जगत दुःख फंद।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– सखी छंद –

सिंहसेन अयोध्यापति थे, जयश्यामा गर्भ बसे थे।
कार्तिक वदि एकम तिथि में, प्रभु गर्भकल्याणक प्रणमें।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाप्रतिपदायां श्रीअनंतनाथगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि ज्येष्ठ वदी बारस में, सुर मुकुट हिले जिन जन्में।
अठ एक हजार कलश से, जिन न्हवन किया सुर हरसें।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां श्रीअनंतनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि ज्येष्ठ वदी बारस थी, उल्का गिरते प्रभु विरती।
तप लिया सहेतुक वन में, पूजत मिल जावे तप मे।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां श्रीअनंतनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि चैत अमावस्या के, पीपल तरु तल जिन तिष्ठे।
केवल रवि उगा प्रभू के, मैं जजूँ त्रिजग भी चमके।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अमावस्यायां श्रीअनंतनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत आमावसी यम नाशा, शिवनारि वरी निज भासा।
सम्मेद शिखर को जजते, निर्वाण जजत सुख प्रगटे।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण अमावस्यायां श्रीअनंतनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

चौदह अर्घ्य

सुरनरपतिपूज्यान् बोधसंबोधितार्थान्।
त्रिगुणित - वसुसंख्यान्[1] धर्मचक्राधिनाथान्।।
[2]वसुपरिमितभास्वत्प्रातिहार्यैः समेतान्।
यजत भजत भव्याः स्वर्घ्यदानेन भक्त्या।।
इति जिनवृषभादिचतुर्दश। परमकेवलबोधविजृंभिताः।
वरविनेयजनौघनुतास्तु ते। शिवसुखाय भवंतु मयार्चिताः।।

ॐ ह्रीं वृषभादि अनंतनाथपर्यंतचतुर्दशतीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

नव सुलक्षशराहतयोजनैः। परिमितं वरलोकसुमूर्द्धजं।
परमश्रेष्ठसुसिद्धगुणाः स्थिताः। वरमहार्घ्यमहं वितरामि तान्।
इति भवोदधिपापपराश्रिताः। परमसिद्ध गणा विविधासनाः।
अपरिमाणसुखालयतां गताः। मम दिशंतु शिवं सुखमर्चिताः।

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणपूरितसिद्धेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

वरविदेहनरोत्तमजन्मनि। प्रबलशुद्धसुक्षायिकभावतः।
नरभवं प्रतिबध्य भवंति ते। कुलकरा जगदुद्धरणे क्षमाः।

---

1. त्रि–3 × वसु–8=24। 2. वसु=8

मुनिवराय सुभोजनदानतः। सकलजंतुदयाप्रविधानतः।
श्रुतिविभावितनिर्मलमानसान्। सुखमवाप्य शिवं प्रतियांति ते।

ॐ ह्रीं चतुर्दशकुलकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

स्वतिशयाः सुरनाथकृताः पराः। परमपुण्यप्रकर्षभवाश्च ते।
विमलतीर्थकरेषु लसंति तान्, जिनपतीन् प्रणमामि तदाप्तये।
प्रथमजन्मनि षोडश भावनां। परिविभाव्य सुक्षायिकदृष्टिनः।
परमवाप्य कुलं जिनसंभव। स्वतिशयान्परिप्राप्य विभांति ते।

ॐ ह्रीं चतुर्दशातिशयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

भुवि चतुर्दश पूर्वतपोमहान्। मुनिमनोवनयोधकरान् परान्।
विपुलमुक्तिविमार्गप्रकाशकान्। जिनमुखांबुजजान् प्रयजेऽत्र तान्।
समयसारपयोनिधिपारगो। वरविनेयजनोत्करतारकः।
विगतसंख्यसुरार्चितपंकजो। जिनवरो जयतीह शिवप्रदः।

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

देवेन्द्रवृंदेन समर्चिता ये। ते देवदेवा जितमोहमल्लाः।
स्वर्मुक्तिपंक्तिगुणस्थानकानां। भेदप्रभेदान् प्रवदंति संतः।
श्री शांतिनाथोऽत्र शिवं क्रियात् वः।
सभास्थितान् भव्यजनान् चिरं यः।।
अर्थेन सम्यक् प्रकटीप्रकुर्वन्।
दिव्येन ध्वनिना गुणस्थानकानां।

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थानोपदेशकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

गतिचतुर्विधजन्मपराङ्मुखान्। विभवपंचमसद्गतिजान् वरान्।
जननमृत्युजराभयहानये। जिनपतीन् प्रयजेऽर्घ्यभरेण तान्।
इति जिनागमवर्णितमार्गणाः। परम-देवमुखाब्जविनिर्गताः।
गणधरैर्वरविस्तरिताश्च ताः। शिवसुखाय भवंतु भवान् नृणां।

ॐ ह्रीं चतुर्दशमार्गणोपदेशकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

भुवि चतुर्दश जीवसमासकाः, समभिवाप्य समं भुवने स्थिताः।
विमलबोधविलोचनसाधुभिः, समधिपश्य हितान् समताधृतान्।
श्रीमज्जिनानां चरणाब्जयुग्मं। संप्रार्चयंति प्रणमंति ये ते।
राज्यं च भुक्त्वा नरनाकलोके। कर्माणि हत्वा शिवमाप्नुवंति।

ॐ ह्रीं चतुर्दशजीवसमासरक्षकमुनिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

भुवि चतुर्दशधा परमापगाः। परमसिद्धसुक्षेत्र-प्रतिष्ठिताः।
वसुविधोत्तमवस्तुमहार्घ्यकैः। परियजे शिवसंततिशर्मणे।
गंगादिसंज्ञाः सरितश्चतुर्दश। कुलाद्रिनिर्गत्य समुद्रमागताः।
मुनीन्द्रपादाब्जकरैः पवित्रिताः। अनादिसत्तीर्थजलं वहंति ताः।

ॐ ह्रीं गंगादिचतुर्दशनदीस्थितजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

त्रिभुवनमिदमुच्चैर्जैनचैत्याभिराम ।
विपुलतरमधस्तात् यावदूर्ध्वं च भास्वत्।
जलधिमपतिरज्जूनां यः सो भवेच्चक्रवर्ती।
यजति जिनपतिं यः सो भवेच्चक्रवर्ती।
श्री शीतलेशैस्त्रसनालिमानं। प्रोक्तं तदूर्वं नवमं च रज्जूं।
रज्वैकमानं समविस्तरेण। जीवास्त्रसास्तत्र वसंति सर्वे।

ॐ ह्रीं चतुर्दशरज्जुप्रमाणलोकस्थितजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

[1]मुनिहतयुगरत्नाधीश्वरान् नम्रपादान्।
विजितनिविडघातीन् देवदेवेन्द्रवंद्यान्।।
सलिलमलयजाद्यैर्मोक्षसंप्राप्तिहेतोः।
विमलतरमहार्घ्यैः पूजयाम्यर्हदीशान्।।
सेनापतिस्थपति हर्म्यपति द्विपार्श्व-।
स्त्री-चक्र-चर्म-मणि-काकिणिका-पुरोधाः।
छत्रासिदंडपतयः प्रणमंति यस्य।
श्रेयं जिनं तमहमत्र विधौ नमामि।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशरत्नाधिपतिचक्रवर्ति वंदित जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

कोटीशतं द्वादशं चैव कोट्यो। लक्षाण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यं। पंचाधिकं ग्रंथसमूहमर्च्चे।
अ इ उ ऋ लृ समानाः शब्दशास्त्रे निबद्धाः।
अपरगुरुभिरर्घ्यास्ते दश स्युः सवर्णाः।
परमजलधि [2]दीर्घास्ते स्वरा सप्त[3]द्विघ्नाः।
जगति सकलशास्त्रे सूत्रितास्तान् भजामि।

ॐ ह्रीं चतुर्दशस्वरप्रकाशकवृषभादिजिनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

भुवि चतुर्दशधा तिथिदेवताः। व्रततपोमुनिदानपवित्रिताः।
जिनवरोद्भवमंगलभाविताः। प्रवियजे जिनयज्ञशताप्तये।

---

1. मुनि=7 युग=(7×2=14 रत्न)। 2. जलधि (समुद्र)=4 दीर्घस्वर (ए ऐ ओ औ)। 3. सप्त-द्वि-घ्ना=(7×2=14 स्वर)।

विमल तीर्थंकरं वरपुण्यदं। यजत भव्यजना शिवसौख्यदं।
सकलकर्मविदाहनदक्षकं। अखिलजीवदयाप्रतिपालकं।।

ॐ ह्रीं धर्मकार्यप्रसिद्ध-चतुर्दशतिथिप्रतिपादकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

श्रीमन्मुनीद्रा बलिनस्तपोभिराभ्यंतरीकोपधिभिर्विमुक्ताः।
बाह्यौपधौ मानसवृत्यभावास्तेषां पदाब्जान् सततं स्तुवेऽहम्।
समस्तोपधीभिर्विमुक्ता मुनीन्द्रा। यथाख्यात नाम्ना गुणस्थानकस्थाः।
सुनिर्ग्रंथिता-सत्पद-स्थाह्वयास्ते। मया संस्तुताः शर्मदाः संभवंतु।

ॐ ह्रीं चतुर्दशमलत्यक्ताहार ग्राहक मुनिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

पुनः क्रम से 196 गुणों का उच्चारण करते हुए पुष्प, लवंग या पीले चावल चढ़ावें।

14 तीर्थंकर के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ तीर्थंकराय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकराय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकराय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकराय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकराय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ तीर्थंकराय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत तीर्थंकराय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ तीर्थंकराय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकराय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य तीर्थंकराय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ तीर्थंकराय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ तीर्थंकराय नमः।।14।।

14 प्रकार के सिद्धों के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं तपः सिद्धेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं नयसिद्धेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं संयमसिद्धेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं चरित्रसिद्धेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं श्रुताभ्याससिद्धेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं निश्चयात्मक भावसिद्धेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसंपन्न सिद्धेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणसम्पन्न सिद्धेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं दर्शनगुणोपेत सिद्धेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं अनंतवीर्यसम्पन्न सिद्धेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणोपेत सिद्धेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं अवगाहनगुणसमेत सिद्धेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणगरिष्ठ सिद्धेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणसमृद्ध सिद्धेभ्यो नमः।।14।।

14 कुलकरों के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं श्री प्रतिश्रुति मनवे नमः।।1।।
ॐ ह्रीं श्री सन्मति मनवे नमः।।2।।
ॐ ह्रीं श्री क्षेमंकर मनवे नमः।।3।।
ॐ ह्रीं श्री क्षेमंधर मनवे नमः।।4।।
ॐ ह्रीं श्री शीमंकर मनवे नमः।।5।।
ॐ ह्रीं श्री सीमंधर मनवे नमः।।6।।
ॐ ह्रीं श्री विमलवाहन मनवे नमः।।7।।
ॐ ह्रीं श्री चक्षुष्मान मनवे नमः।।8।।
ॐ ह्रीं श्री यशस्वी मनवे नमः।।9।।
ॐ ह्रीं श्री अभिचंद्र मनवे नमः।।10।।
ॐ ह्रीं श्री चंद्राभ मनवे नमः।।11।।
ॐ ह्रीं श्री मरुद्देव मनवे नमः।।12।।
ॐ ह्रीं श्री प्रसन्नजित् मनवे नमः।।13।।
ॐ ह्रीं श्री नाभिराज मनवे नमः।।14।।

देवकृत 14 अतिशय के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं मागधी भाषातिशयाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं सर्वजीव मैत्रीभावातिशयाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं सर्वर्तु फलपुष्प प्रकाशातिशयाय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं आदर्शतलसम मही मनोज्ञातिशयाय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं वायुना शोधिता मही मयातिशयाय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं विहरणे मंद-अनिलो वहति महातिशाय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं विहरणे सर्वजीवानामानंदो भवतीति महतिशाय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधांबुवृष्टि मयातिशयाय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं पादन्यासे देवाः पद्मानि कल्पते अतिशयाय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालिशोभिता मही जायते अतिशयाय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं जिनोपरिमगगनं निर्मलं भवतीति महातिशयाय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं दिवि देवा परस्परमाव्हाननं कुर्वंति महातिशयाय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं सर्वाण्हमस्तकोपरि धर्मचक्रं स्फुरतीति महातिशयाय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं समीपे अष्टमंगल द्रव्यमहातिशयाय नमः।।14।।

14 पूर्वों के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं श्री उत्पाद पूर्वाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं श्री अग्रायणी पूर्वाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं श्री वीर्यानुवाद पूर्वाय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं श्री अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्वाय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानप्रवाद पूर्वाय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं श्री सत्यप्रवाद पूर्वाय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं श्री आत्मप्रवाद पूर्वाय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं श्री कर्मप्रवाद पूर्वाय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान पूर्वाय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं श्री विद्यानुवाद पूर्वाय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं श्री कल्याणप्रवाद पूर्वाय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं श्री प्राणानुवाद पूर्वाय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं श्री क्रियाविशाल प्रवाद पूर्वाय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकबिंदुसार प्रवाद पूर्वाय नमः।।14।।

14 गुणस्थान संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं सासादन गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं मिश्र गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं सम्यक्त्व गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं देशविरत गुणस्थान ज्ञापकेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं प्रमत्तगुणस्थानवर्ति मुनिभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं अप्रमत्तगुणस्थानवर्ति योगीद्रेंभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ति मुनिभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रींअनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ति योगिराजेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मलोभ गुणस्थानवर्ति मुनीन्द्रेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं उपशांतकषाय गुणस्थानवर्ति योगिनरेद्रेंभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं क्षीणमोह गुणस्थानवर्ति मुनिसंघेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं सयोग गुणस्थानवर्ति केवलिभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं अयोग गुणस्थानवर्ति केवलिभ्यो नमः।।14।।

14 मार्गणा संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं गतिमार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं इंद्रियमार्गणा प्रकाशकेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपकेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं योगमार्गणा देशकेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं वेदमार्गणा मृग्यकेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं कषायमार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्रकाशकेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं संयममार्गणा पालकेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं दर्शनमार्गणा वक्तृभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं लेश्यामार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं भव्यमार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वमार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं संज्ञिमार्गणा प्रतिबोधाकेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं आहारमार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः।।14।।

14 जीवसमास संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं सूक्ष्मैकेन्द्रिय पर्याप्त जीवसंख्या ज्ञापकेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मैकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवसंख्या ज्ञापकेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रिय पर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवदया प्रतिपालकेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवदयापालकेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवदयापालकेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीव प्रतिपालकेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवरक्षकेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवदया धारकेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव प्रतिपालकेभ्यो नमः।।14।।

14 नदी संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता गंगा महानदी सत्तीर्थाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता सिंधु महानदी सत्तीर्थाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता रोहित् महानदी सत्तीर्थाय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता रोहितास्या महानदी सत्तीर्थाय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता हरित् महानदी सत्तीर्थाय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता हरिकांता महानदी सत्तीर्थाय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता सीता महानदी सत्तीर्थाय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता सीतोदा महानदी सत्तीर्थाय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता नारी महानदी सत्तीर्थाय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता नरकांता महानदी सत्तीर्थाय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता सुवर्णकूला महानदी सत्तीर्थाय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता रूप्यकूला महानदी सत्तीर्थाय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता रक्ता महानदी सत्तीर्थाय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं जिनबिंबसमन्विता रक्तोदा महानदी सत्तीर्थाय नमः।।14।।

14 लोक संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं निगोदस्थान प्रकाशकेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं सप्तमनरक स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं षष्ठ नरक प्रकाशकेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं पंचम नरक प्रकाशकेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं चतुर्थ नरक प्रकाशकेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं तृतीय नरक प्रकाशकेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं नरकद्वययुत भावनालय स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं ज्योतिष्कलोक स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मलोक पद स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं स्वर्ग स्वरूप कथकेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं तदुपरि स्वर्गलोक प्रकाशकेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं षड्युग्म स्वर्ग स्वरूप प्रकाशकेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं ग्रैवेयकादि मुक्तिपर्यंत स्वरूप ज्ञापकेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं सिद्धावगाहकेभ्यो नमः।।14।।

चक्रवर्ती के 14 रत्न संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं सेनापति रत्नस्वामिना सेवित जिनेभ्यो नमः।।1।।
ॐ ह्रीं स्थपति रत्नस्वामिना सेवित जिनेभ्यो नमः।।2।।
ॐ ह्रीं गृहपति रत्नस्वामिना सेवित जिनेभ्यो नमः।।3।।
ॐ ह्रीं गज रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं हय रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं नारी रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं पुरोहित रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं चर्म रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं सुदर्शन रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं मणि रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं काकिणी रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं छत्र रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं खड्ग रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं दंड रत्नपति सेवित जिनेभ्यो नमः।।14।।

14 स्वरों के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं अकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं आकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं लघु इकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं गुरु ईकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।4।।
ॐ ह्रीं लघु उकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।5।।
ॐ ह्रीं दीर्घ ऊकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।6।।
ॐ ह्रीं लघु ऋकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।7।।
ॐ ह्रीं गुरु ॠकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।8।।
ॐ ह्रीं लघु लृकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।9।।
ॐ ह्रीं दीर्घ लृकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।10।।
ॐ ह्रीं एकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।11।।
ॐ ह्रीं ऐकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।12।।
ॐ ह्रीं ओकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।13।।
ॐ ह्रीं औकार स्वरवादिने वृषभाय नमः।।14।।

14 तिथि संबंधी 14 मंत्र

ॐ ह्रीं प्रतिपदा स्वरूप निरूपक अष्टादश दोषरहिताय जिनाय नमः।।1।।
ॐ ह्रीं द्वितीया तिथिमाश्रित्य सागारानगार धर्मनिरूपकाय नमः।।2।।
ॐ ह्रीं तृतीया तिथिमाश्रित्य दर्शनादिरत्नत्रयाय नमः।।3।।
ॐ ह्रीं चतुर्थी तिथिमाश्रित्य प्रथमानुयोगादि विद्भ्यो नमः।।4।।
ॐ ह्रीं पंचमी तिथिमुद्दिश्य पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः।।5।।
ॐ ह्रीं षष्ठी तिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोदितषड्द्रव्यनिरूपकेभ्यो नमः।।6।।
ॐ ह्रीं सप्तमी तिथिमुद्दिश्य सामायिकादि संयमधारकेभ्यो नमः।।7।।
ॐ ह्रीं अष्टमी तिथिमाश्रित्य सिद्धाष्टगुणेभ्यो नमः।।8।।
ॐ ह्रीं नवमी तिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोक्त नवनयनिरूपकेभ्यो नमः।।9।।
ॐ ह्रीं दशमी तिथिमाश्रित दशलाक्षणिक धर्मेभ्यो नमः।।10।।
ॐ ह्रीं एकादशी तिथिमाश्रित्य एकादशांगनिरूपकेभ्यो नमः।।11।।
ॐ ह्रीं द्वादशी तिथिमुद्दिश्य द्वादशविध तपोधारकेभ्यो नमः।।12।।
ॐ ह्रीं त्रयोदशी तिथिमाश्रित्य त्रयोदशप्रकार चारित्रेभ्यो नमः।।13।।
ॐ ह्रीं चतुर्दशी तिथिमाश्रित्य अनंत तीर्थंकराय नमः।।14।।

आहार के 14 मलदोष रहित 14 मंत्र

ॐ ह्रीं पूय मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।1।।
ॐ ह्रीं अस्त्र मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।2।।
ॐ ह्रीं पल मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।3।।
ॐ ह्रीं अस्थि मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।4।।
ॐ ह्रीं चर्म मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।5।।

ॐ ह्रीं नख मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।6।।
ॐ ह्रीं कच मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।7।।
ॐ ह्रीं मृत विकलत्रिक मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।8।।
ॐ ह्रीं सूरणादि कंद त्यक्त पिंडविशुद्धये नमः।।9।।
ॐ ह्रीं मूलमलरहित पिंडविशुद्धयै नमः।।10।।
ॐ ह्रीं यव गोधूमादि बीज मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।11।।
ॐ ह्रीं बदर्यादि फल मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।12।।
ॐ ह्रीं तुषकण मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।13।।
ॐ ह्रीं कुड्मलरहित पिंडविशुद्धये नमः।।14।।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हं हं सः अनंतकेवलिने नमः।

2. ॐ नमोऽर्हते भगवते अणंताणंतसिज्झधम्मे भगवदो महाविज्जा महाविज्जा अणंताणंतकेवलिए अणंतकेवलणाणे अणंतकेवलदंसणे अणुपुज्जवासणे अणंते अणंतागमकेवली स्वाहा।

जयमाला

—बसंततिलका छंद—

देवाधिदेव तुम लोक शिखामणी हो।
त्रैलोक्य भव्यजन कंज विभामणी हो।।
सौ इन्द्र आप पद पंकज में नमे हैं।
साधू समूह गुण वर्णन में रमे हैं।।1।।

जो भक्त नित्य तुम पूजन को रचावें।
आनंद कंद गुणवृंद सदैव ध्यावें।।
वे शीघ्र दर्शन विशुद्धि निधान पावें।
पच्चीस दोष मल वर्जित स्वात्म ध्यावें।।2।।

निःशंकितादि गुण आठ मिले उन्हीं को।
जो स्वप्न में भि हैं संस्मरते तुम्हीं को।।
शंका कभी नहिं करें जिनवाक्य में वो।
कांक्षे न ऐहिक सुखादिक को कभी वो।।3।।

ग्लानी मुनी तनु मलीन विषे नहीं है।
नाना चमत्कृति विलोक न मूढ़ता है।।
सम्यक्चरित्र व्रत से डिगते जनों को।
सुस्थिर करें पुनरपी उसमें उन्हीं को।।4।।

अज्ञान आदि वश दोष हुए किसी के।
अच्छी तरह ढक रहें न कहें किसी से।।
वात्सल्य भाव रखते जिनधर्मियों में।
सद्धर्म द्योतित करें रुचि से सभी में।।5।।

वे द्वादशांग श्रुत सम्यग्ज्ञान पावें।
चारित्रपूर्ण धर मनपर्यय उपावें।।
वे भक्त अंत बस केवलज्ञान पावें।
मुक्त्यंगना सह रमें शिवलोक जावें।।6।।

गणधर जयादिक पचास समोसृती में।
छ्यासठ हजार मुनि संयमलीन भी थे।।
थी सर्वश्री प्रमुख संयतिका वहाँ पे।
जो एक लाख अरु आठ हजार प्रमिते।।7।।

दो लाख श्रावक चतुर्लख श्राविकाएँ।
संख्यात तिर्यक् सुरादि असंख्य गाएँ।।
उत्तुंग देह पच्चास धनू बताया।
है तीस लाख वर्षायु मुनीश गाया।।8।।

''सेही'' सुचिन्ह तनु स्वर्णिम कांति धारें।
वंदूँ अनंत जिन को बहु भक्ति धारें।।
पूजूँ नमूँ सतत ध्यान धरूँ तुम्हारा।
संपूर्ण दुःख हरिये भगवन्! हमारा।।9।।

हे नाथ! कीर्ति सुन के तुम पास आया।
पूरो मनोरथ सभी जो साथ लाया।।
सम्यक्त्व क्षायिक करो सुचरित्र पूरो।
कैवल्य 'ज्ञानमति' दे, यम पाश चूरो।।10।।

—दोहा—

तुम पद आश्रय जो लिया, सो पहुँचे शिवधाम।
इसीलिए तुम चरण में, करूँ अनंत प्रणाम।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—सोरठा—

श्री अनंत भगवंत, नमूँ नमूँ तुम पदकमल।
मिले भवोदधि अंत, क्रम से निजसुख संपदा।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(16) रत्नत्रय पूजा

–अथ स्थापना (गीता छंद) –

वर रत्नत्रय जिनधर्म हैं, सम्यक्त्वरत्न प्रधान है।
अष्टांगयुत सम्यक्त्व है, सम्पूर्ण गुण की खान है।।
आचार आठ समेत सम्यग्ज्ञान रत्न महान है।
तेरह विधों युत रत्न सम्यक्-चरित पूज्य निधान है।।

–दोहा –

भरतैरावत क्षेत्र में, चौथे पाँचवें काल।
शाश्वत रहे विदेह में, धर्म जगत प्रतिपाल।।2।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मक धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मक धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मक धर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –

चाल-नन्दीश्वर पूजा

रेवानदि को जल लाय, कंचन भृंग भरूँ।
त्रयधार करूँ सुखदाय, आतम शुद्ध करूँ।।
जिनधर्म विश्व का धर्म, सर्व सुखाकर है।
मैं जजूँ सार्वहित धर्म, गुण रत्नाकर है।।1।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन गंध, घिस कर्पूर मिला।
जजते ही धर्म अमंद, निज मन कमल खिला।।
जिनधर्म विश्व का धर्म, सर्व सुखाकर है।
मैं जजूँ सार्वहित धर्म, गुण रत्नाकर है।।2।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिकर सम तंदुल श्वेत, खंड विवर्जित हैं।
शिवरमणी परिणय हेत, पुंज समर्पित हैं।।
जिनधर्म विश्व का धर्म, सर्व सुखाकर है।
मैं जजूँ सार्वहित धर्म, गुण रत्नाकर है।।3।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सित कुमुद नील अरविंद, लाल कमल प्यारे।
मदनारि विजयहित धर्म, पूजूँ सुखकारे।।
जिनधर्म विश्व का धर्म, सर्व सुखाकर है।
मैं जजूँ सार्वहित धर्म, गुण रत्नाकर है।।4।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली पयसार[1], पायस[2] मालपुआ।
जिनधर्म अमृतसम पूज, आतम सौख्य हुआ।।
जिनधर्म विश्व का धर्म, सर्व सुखाकर है।
मैं जजूँ सार्वहित धर्म, गुण रत्नाकर है।।5।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि दीप कपूर प्रजाल, ज्योति उद्योत करे।
अंतर में भेद विज्ञान, प्रगटे मोह हरे।।
जिनधर्म विश्व का धर्म, सर्व सुखाकर है।
मैं जजूँ सार्वहित धर्म, गुण रत्नाकर है।।6।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध अग्नि में जार, सुरभित गंध करे।
नित आतम अनुभवसार, कर्म कलंक हरे।।
जिनधर्म विश्व का धर्म, सर्व सुखाकर है।
मैं जजूँ सार्वहित धर्म, गुण रत्नाकर है।।7।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला फल आम्र, जंबू निंबु हरे।
शिवकांता संगम हेतु, तुम ढिग भेंट करे।।
जिनधर्म विश्व का धर्म, सर्व सुखाकर है।
मैं जजूँ सार्वहित धर्म, गुण रत्नाकर है।।8।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिलादिक द्रव्य मिलाय, कंचनपात्र भरें।
जिनवृष[3] को अर्घ चढ़ाय, शिवसाम्राज्य वरें।।
जिनधर्म विश्व का धर्म, सर्व सुखाकर है।
मैं जजूँ सार्वहित धर्म, गुण रत्नाकर है।।9।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. मलाई। 2. खीर। 3. धर्म।

–दोहा–

शांतिधारा मैं करूँ, जैनधर्म हितकार।
चउसंघ में शांति करो, हरो सर्व दुख भार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि से पूजहूँ, श्री जिनधर्म महान्।
दुख दारिद संकट टले, बनूँ आत्मनिधिमान।।11।।

पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

मंगल रूप महान्, जग में लोकोत्तम कहा।
श्री केवलि भगवान्, कथित धर्म सबको शरण।।1।।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–रोलाछंद–

सम्यग्दर्शन रत्न आठ अंग युत माना।
मोक्षमार्ग का मूल मुनियों ने है जाना।।
निःशंकित है अंग जिन वच में नहिं शंका।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय निज में हो दृढ़ श्रद्धा।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनस्य निःशंकितअंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इह भव में विभवादि, आगे चक्री आदिक।
नाना सुख की चाह, अथवा अन्य मतादिक।।
जो नहिं करते भव्य, निःकांक्षित है उनके।
पूजूँ अंग द्वितीय, मिले आत्म सुख जिससे।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनस्य निःकांक्षितअंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय से पूत, मुनियों का तन मानो।
मलमूत्रादिक वस्तु, भरित घिनावन जानो।।
ग्लानि न करके भव्य, गुण में प्रीत बढ़ावें।
निर्विचिकित्सा अंग, इसे जजत सुख पावें।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनस्य निर्विचिकित्साअंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुत्सित मार्ग कुधर्म, कुपथ लीन जन बहुते।
इनको माने मूढ़, सम्यग्दृष्टी बचते।।
चौथा अंग अमूढ़-दृष्टि कहा जाता है।
इसे पूजते भव्य, उनने भव नाशा है।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनस्य अमूढ़दृष्टिअंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा शुद्ध शिव मार्ग, अज्ञानी जन आश्रय।
दोष कदाचित् होंय, उन्हें ढकें शुभ आशय।।
निज आत्मा के धर्म, मार्दव आदि बढ़ावें।
उपगूहन यह अंग, इसे जजत सुख पावें।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनस्य उपगूहनअंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् या चरित से, जो च्युत हो जावे।
उसमें सुस्थिर कर दे, युक्ति आदि उपाये।।
निज को भी शिव मार्ग, में ही दृढ़ रक्खे जो।
स्थितिकरण यह अंग, इसे जजें सुख लें वो।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनस्य स्थितिकरणअंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सह धर्मी जन संघ, कपट रहित हो प्रीती।
यथा योग्य सत्कार, यह वात्सल की रीती।।
गाय वत्सवत्प्रेम, वात्सल्य गुण माना।
सम्यग्दर्शन अंग, इसे जजत सुख पाना।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनस्य वात्सल्यअंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज प्रभावना करे, निज गुण तेज बढ़ावे।
पूजा दान तपादिक, से जिनधर्म दिपावे।।
यह प्रभावना अंग, तम अज्ञान हटावे।
इनको पूजें भव्य, धर्म महात्म्य दिखावें।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनस्य प्रभावनाअंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा (पूर्णार्घ्य)–

अष्ट अंगयुत दृष्टि यह, दोष पच्चीस विहीन।
परमानन्द अमृत भरे, करे दोष सब क्षीण।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

समकित होते ही हुआ, सम्यग्ज्ञान अपूर्व।
फिर भी ज्ञानाराधना, करो अष्टविध पूर्व।।

–नरेन्द्र छंद–

स्वर व्यंजन से शुद्ध पूर्ण जो, करे प्रगट उच्चारण।
शब्दाचार करे वृद्धिंगत, शुद्ध ज्ञान आराधन।।

स्वपर भेद विज्ञान प्रकट हो, परमाल्हाद विधाता।
अर्घ चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, मिले सर्वसुख साता।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानस्य शब्दाचाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र आदि का अर्थ शुद्ध हो, गुरु की परम्परा से।
पूर्वापर संबंध जुड़ा हो, नहिं अनर्थ हो जिससे।।
स्वपर भेद विज्ञान प्रकट हो, परमाल्हाद विधाता।
अर्घ चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, मिले सर्वसुख साता।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानस्य अर्थाचाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द अर्थ की पूर्ण शुद्धि हो, उभयाचार कहावे।
उभय नयों से भी सापेक्षित, ज्ञान ज्योति प्रगटावे।।
स्वपर भेद विज्ञान प्रकट हो, परमाल्हाद विधाता।
अर्घ चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, मिले सर्वसुख साता।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानस्य उभयाचाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय संध्या उल्का ग्रहणादिक, बहुत अकाल बखाने।
इन्हें छोड़ सिद्धान्त ग्रंथ को, पढ़े जिनाज्ञा मानें।।
स्वपर भेद विज्ञान प्रकट हो, परमाल्हाद विधाता।
अर्घ चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, मिले सर्वसुख साता।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानस्य कालाचाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाथ पैर आदि धोकर के, शुभ स्थान में पढ़ते।
हाथ जोड़ श्रुत भक्ति आदिकर, विनय बहुत विध धरते।।
स्वपर भेद विज्ञान प्रकट हो, परमाल्हाद विधाता।
अर्घ चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, मिले सर्वसुख साता।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानस्य विनयाचाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ रस आदि त्याग कर श्रुत को, पढ़े नियम धर रुचि से।
यह उपधान सहित आराधन, ज्ञान बढ़े नित इससे।।
स्वपर भेद विज्ञान प्रकट हो, परमाल्हाद विधाता।
अर्घ चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, मिले सर्वसुख साता।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानस्य उपधानाचाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रंथ और गुरुजन का आदर, पूजा भक्ति करें जो।
यह बहुमान भावश्रुत करके, केवलज्ञान करे वो।।
स्वपर भेद विज्ञान प्रकट हो, परमाल्हाद विधाता।
अर्घ चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, मिले सर्वसुख साता।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानस्य बहुमानाचाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस गुरु से या जिन शास्त्रों से, ज्ञान प्राप्त हो जाता।
उनका नाम छिपावे नहिं, वह कहा अनिह्नव जाता।।
स्वपर भेद विज्ञान प्रकट हो, परमाल्हाद विधाता।
अर्घ चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, मिले सर्वसुख साता।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानस्य अनिन्हवाचाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा (पूर्णार्घ्य)—

ज्ञान अष्टविध धारते, प्रगटे केवलज्ञान।
अर्घ चढ़ाकर मैं करूँ, स्वात्म सुधारस पान।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

सकल-विकल के भेद से, चारित द्विविध महान्।
विकल चरित श्रावक धरें, बनें शील गुणवान्।।

—पद्धड़ि छंद—

सम्यक्त्व सहित अणुव्रत सुपांच, गुणव्रत शिक्षाव्रत कहे सात।
ये बारहव्रत हैं गृहीधर्म, इनको पूजें वो लहें शर्म।।1।।

ॐ ह्रीं विकलचारित्रस्य सम्यक्त्वसहितअणुव्रतादि-द्वादशविधश्रावकधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दर्शन व्रत सामायिकादि, ग्यारह प्रतिमा व्रत हैं अनादि।
इनसे श्रावक बनते महान्, यह प्रथम धर्म पूजें सुजान।।2।।

ॐ ह्रीं विकलचारित्रस्य दर्शनव्रतादिएकादश-प्रतिमारूपश्रावकधर्मेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—सोरठा—

मुनीधर्म के भेद, तेरह विध श्रुत में कहे।
उन्हें धरें बिन खेद, वे साधु भवदधि तिरें।।

—भुजंगप्रयात छंद—

महाव्रत अहिंसा प्रथम है जगत में।
सभी प्राणियों की दया है प्रगट में।।

दिगम्बर मुनी ही इसे पालते हैं।
जजें जो अहिंसा वो अघ टालते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सकलचारित्रस्य अहिंसामहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असत् अप्रशस्ते वचन जो न बोलें।
हितंकर मधुर मित सदा सत्य बोलें।।
यही सत्य व्रत दूसरा व्रत कहाता।
इसे पूजहूँ ये वचनसिद्धि दाता।।2।।

ॐ ह्रीं सकलचारित्रस्य सत्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पराया धनं शिष्य आदी न लेना।
महाव्रत अचौर्य निधी वो बखाना।।
इसे पूजते स्वात्म संपत्ति मिलती।
जिसे प्राप्त करते महासाधु गण ही।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य अचौर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुता मात भगिनी सदृश सर्व महिला।
महाव्रत सुबह्मचर धरे कोई विरला।।
त्रिजग पूज्य इंद्रादिवंदित ये व्रत है।
इसी से परमब्रह्म होता प्रगट है।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य ब्रह्मचर्यमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह सभी मुक्ति जाने में बाधे।
दिगम्बर मुनी ही सभी वस्तु त्यागें।।
जगत भार से छूटते ही विदेही।
जजूँ पाँचवाँ व्रत बनूँ मुक्तिगेही।।5।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य अपरिग्रहमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्युग प्रमाणे धरा देख चलना।
बिना कार्य के एक भी पग न धरना।।
सुगुरुदेव तीर्थादिवंदन निमित्त से।
गमन हो समिति ईरिया को जजूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य ईर्यासमित्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपर हित व मित मिष्ट वच नित्य भाषें।
सुभाषासमिति को मुनीगण प्रकाशें।।
इसे धारते मुक्तिकन्या भि हो वश।
जजूँ भक्ति से प्राप्त निर्दोष हों वच।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य भाषासमित्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतादी रहित अन्न प्रासुक स्वहितकर।
गृहस्थी के द्वारा दिया लेवें मुनिवर।।
स्वकर पात्र में लें खड़े एक बारे।
यही एषणा समिति क्षुध व्याधि टारे।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य एषणासमित्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमंडलु व शास्त्रादि जो वस्तु धरना।
उठाना यदी प्राणियों पे हो करुणा।।
प्रथम चक्षु से देख पिच्छी से शोधें।
ये आदान निक्षेप समिति सपूजें।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य आदाननिक्षेपणसमित्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरितकाय जंतू रहित भूमि पर जो।
स्वमलमूत्र आदी विकृति को तजें वो।।
विउत्सर्ग समिति धरें जैन साधू।
जजूँ मैं इसे फिर स्वशुद्धात्म साधूँ।।10।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य व्युत्सर्गसमित्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महादोष रागादि से चित्त दूरा।
मनोगुप्ति ये पालते साधु शूरा।।
पुनः शुभ अशुभ भाव दोनों निरोधें।
निजानंद रसलीन गुप्ती सूपूजें।।11।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य मनोगुप्त्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनगुप्ति आगम के अनुकूल बोलें।
पुनः मौन धर मुक्ति का द्वार खोलें।।
इसी से वचनसिद्धि दिव्य ध्वनी भी।
मिलेगी अतः पूजहूँ धार भक्ती।।12।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य वचोगुप्त्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वतन की क्रिया सर्व शुभ ही करें जो।
पुनः काय से मोह तज सुस्थिरी हों।।

उभय कायगुप्ती शुकल ध्यान पूरे।
जजूँ मैं इसे नंतबल मुझ प्रपूरे।।13।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्य कायगुप्त्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—चौबोल छंद (पूर्णार्घ्य) —

पाँच महाव्रत पाँच समिति औ, तीन गुप्ति ये तेरह विध।
सम्यक् चारित मुक्ति प्रदायक, अठबिस मूलगुणों से युत।।
द्वादश तप बाईस परीषह, चौंतिस उत्तर गुण जानों।
लाख चौरासी गुण सर्वाधिक, पूजत ही भव दुख हानो।।14।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसर्वोत्कृष्टचतुरशीतिलक्षगुणयुत-सम्यक्चारित्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र— **ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो नमः।**
(9, 27 या 108 बार)

जयमाला

—शंभु छंद —

तीर्थंकर प्रभु के श्रीविहार में, धर्मचक्र आगे-आगे।
चलता रहता जिससे भू पर, जीवों के दुख दारिद भागे।।
सर्वाण्ह यक्ष चारों दिशि में, यह धर्मचक्र शिर पर धारें।
जिनधर्म अनादी औ अनंत, इसकी जयमाला भव टारें।।1।।

—पंचचामर छंद —

जयो जिनेन्द्र धर्म जीव की दया प्रधानमय।
जयो जिनेन्द्र धर्म वस्तु का स्वभाव शुद्धमय।।
जयो जिनेन्द्र धर्म जो क्षमादि दश प्रकार है।
जाये जिनेन्द्र धर्म रत्न तीन रूप सार है।।1।।

इसे धरें स्वयंवरा अनंत ऋद्धियाँ वरें।
हितंकरा अनंत सिद्धियाँ स्वयं पगे परें।।
शुभंकरा ध्वनी अनंत भव्य को सुखी करे।
समस्त जीव राशि को प्रियंवदा सुखी करे।।2।।

गणेश धारते इसे महा प्रमोद भाव से।
मुनीश धारते इसे बचें विभाव भाव से।।
सुरेश नित्य चाहते मनुष्य जन्म में मिले।
नरेश नित्य गावते यही धरम हमें मिले।।3।।

महान धर्म इन्द्रवंद्य केवली प्रणीत है।
महान धर्म चक्रिवंद्य सर्व मंगलीक है।।
महान धर्म साधु पूज्य लोक में सुश्रेष्ठ है।
महान धर्म भव्य को सदैव शर्ण देत है।।4।।

अनादि जैन धर्म ये समस्त सौख्य खान ही।
अनादि जैनधर्म को मनीषि धारते यहीं।।
अनादि जैनधर्म से विनाशते करम सभी।
अनादि जैनधर्म के लिए नमोऽस्तु हो अभी।।5।।

अनादि जैनधर्म से बड़ा न कोई मित्र है।
अनादि जैनधर्म का दया हि मूल इष्ट है।।
अनादि जैनधर्म में सदैव चित्त को धरो।
अहो अनादि जैनधर्म! मुझपे नित कृपा करो।।6।।

जिनेन्द्र धर्म से सुचक्रवर्ति संपदा मिले।
जिनेन्द्र धर्म से सुरें की भि संपदा मिले।।
जिनेन्द्र धर्म से हि तीर्थनाथ संपदा मिले।
जिनेन्द्र धर्म से हि शीघ्र मुक्ति वल्लभा मिले।।7।।

—दोहा —

जन्म मरण व्याधी महा, उसके नाशन हेत।
रत्नत्रय औषधि महा, नमूँ नमूँ शिव हेत।।8।।

ॐ ह्रीं हैं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकधर्माय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—दोहा —

रत्नत्रय वर धर्म है, मोक्षमार्ग जग वंद्य।
केवल "ज्ञानमती" करे, हरे सर्वदुख द्वंद।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(17) श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा

–अथ स्थापना –

(तर्ज- गोमटेश जय गोमटेश मम हृदय विराजो........)

पार्श्वनाथ जय पार्श्वनाथ, मम हृदय विराजो-2
हम यही भावना भाते हैं, प्रतिक्षण ऐसी रुचि बनी रहे।
हो रसना में प्रभु नाममंत्र, पूजा में प्रीती घनी रहे।।हम0।।

हे पार्श्वनाथ आवो आवो, आह्वान आपका करते हैं।
हम भक्ति आपकी कर करके, सब दुख संकट को हरते हैं।।
प्रभु ऐसी शक्ती दे दीजे, गुण कीर्तन में मति बनी रहे।।हम0।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

सुरगंगा का उज्ज्वल जल ले, प्रभु चरणों त्रयधार करूँ।
पुनर्जन्म का त्रास दूर हो, इसीलिए प्रभु ध्यान धरूँ।।
भव भव तृषा मिटाने वाली, पूजा जिन भगवान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरम्-4।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

मलयागिरि का शीतल चंदन, केशर संग घिसाया है।
प्रभु के चरण कमल में चर्चित, भव संताप मिटाया है।।
तन मन को शीतल कर देती, अर्चा जिन भगवान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरं-4।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

चिन्मय परमानंद आतमा, नहीं मिला इन्द्रिय सुख में।
प्रभु को अक्षत पुंज चढ़ाते, सौख्य अखंडित हो क्षण में।।
इन्द्र सभी मिल करें वंदना, प्रभु के अक्षयज्ञान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरं-4।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

रतिपति विजयी पार्श्वनाथ को, पुष्प चढ़ाऊँ भक्ती से।
निज आत्मा की सुरभि प्राप्त हो, निजगुण प्रगटे युक्ती से।।
ब्रह्मर्षीसुर स्तुति करते, चिच्चैतन्य महान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरम्-4।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

मालपुआ रसगुल्ला बरफी, जिनवर निकट चढ़ाते ही।
नाना उदर व्याधि विघटित हो, समरस तृप्ती प्रगटे ही।।
गणधर मुनिवर भी गुण गाते, महिमा जिन भगवान की।।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

केवलज्ञान सूर्य हो भगवन् ! मुझ अज्ञान हटा दीजे।
दीपक से मैं करूँ आरती, ज्ञान ज्योति प्रगटित कीजे।।

चक्रवर्ति भी करें वंदना, अतिशय ज्योतिर्मान की।।
।।जिनकी.।।वंदे जिनवरम्-4।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

सुरभित धूप धूपघट में मैं, खेऊँ सुरभि गगन फैले।
कर्म भस्म हो जाएं शीघ्र ही, जो हैं अशुभ अशुचि मैले।।
सम्यग्दर्शन क्षायिक होवे, मिले राह उत्थान की।।
।।जिनकी.।।वंदे जिनवरम्-4।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

अनंनास मोसम्मी नींबू, सेव संतरा फल ताजे।
प्रभु के सन्मुख अर्पण करते, मिले मोक्षफल भव भाजें।।
जिनवंदन से निजगुण प्रगटे, मिले युक्ति शिवधाम की।।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

जल गंधादिक अर्घ्य सजाकर, जिनवर चरण चढ़ा करके।
केवल ''ज्ञानमती'' सुख पाकर, बसूँ मोक्ष में जा करके।।
इसी हेतु त्रिभुवन जनता भी, भक्ति करे भगवान् की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरम्-4।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

कनक भृंग में मिष्ट जल, सुरगंगा सम श्वेत।
जिनपद धारा करत ही, भवजल को जल देत।।10।।
शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल चंपा सुरभि, पुष्पांजलि विकिरंत।
मिले निजातम संपदा, होवे भव दुःख अंत।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका गर्भ कल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।टेक0।।

अश्वसेन पितु वामा माता, तुमको पाकर धन्य हुए।
तिथि वैशाख वदी द्वितीया को, गर्भ बसे जगवंद्य हुए।।
प्रभु का गर्भकल्याणक पूजत, मिले निजातम सार है।।
पार्श्वनाथ.।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां श्रीपार्श्वनाथजिनगर्भ-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका जन्मकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि उत्तम, वाराणसि में जन्म हुआ।
श्री सुमेरु की पांडुशिला पर, इन्द्रों ने जिन न्हवन किया।।
जो ऐसे जिनवर को जजते, हो जाते भव पार हैं।।
पार्श्वनाथ.।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनजन्म-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका तपकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

पौषवदी ग्यारस जाति स्मृति, से बारह भावन भाया।
विमलाभा पालकि में प्रभु को, बिठा अश्ववन पहुँचाया।।
स्वयं प्रभू ने दीक्षा ली थी, जजत मिले भव पार है।।
पार्श्वनाथ.।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनदीक्षा-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।

जिनका ज्ञानकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

चैत्रवदी सुच[1]तुर्थी प्रातः, देवदारु तरु के नीचे।
कमठ किया उपसर्ग घोर तब, फणपति पद्मावति पहुँचे।।
जित उपसर्ग केवली प्रभु का, समवसरण हितकार है।।
पार्श्वनाथ.।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीपार्श्वनाथजिनकेवलज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका मोक्षकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

श्रावण शुक्ल सप्तमी पारस, सम्मेदाचल पर तिष्ठे।
मृत्युजीत शिवकांता पायी, लोकशिखर पर जा तिष्ठे।।
सौ इन्द्रों ने पूजा करके, लिया आत्म सुखसार है।।
पार्श्वनाथ.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां श्रीपार्श्वनाथजिनमोक्ष-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– **ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय नमः।**

जयमाला

(शंभु छंद-तर्ज-चंदन सा वदन..........)

जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।
जय जय प्रभु के श्री चरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।।टेक.।।
नाना महिपाल तपस्वी बन, पंचाग्नी तप कर रहा जभी।
प्रभु पार्श्वनाथ को देख क्रोधवश, लकड़ी फरसे से काटी।।
तब सर्प युगल उपदेश सुना, मर कर सुर पद को पाये हैं।।
जय.।।1।।

यह सर्प सर्पिणी धरणीपति, पद्मावति यक्षी हुए अहो।
नाना मर शंबर ज्योतिष सुर, समकित बिन ऐसी गती अहो।।
नहिं ब्याह किया प्रभु दीक्षा ली, सुर नर पशु भी हर्षाये हैं।।
जय.।।2।।

प्रभु अश्वबाग में ध्यान लीन, कमठासुर शंबर आ पहुँचा।
क्रोधित हो सात दिनों तक बहु, उपसर्ग किया पत्थर वर्षा।।
प्रभु स्वात्म ध्यान में अविचल थे, आसन कंपते सुर आये हैं।।
जय.।।3।।

धरणेंद्र व पद्मावति ने फण पर, लेकर प्रभु की भक्ती की।
रवि केवलज्ञान उगा तत्क्षण, सुर समवसरण की रचना की।।
अहिच्छत्र नाम से तीर्थ बना, अगणित सुरगण हर्षाए हैं।।
जय.।।4।।

यह देख कमठचर शत्रू भी, सम्यक्त्वी बन प्रभु भक्त बने।
मुनिनाथ स्वयंभू आदिक दश, गणधर थे ऋद्धीवंत घने।।
सोलह हजार मुनिराज प्रभू के, चरणों में शिर नाये हैं।।
जय.।।5।।

गणिनी सुलोचना प्रमुख आर्यिका, छत्तिस सहस धर्मरत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकायें, त्रय लाख वहाँ जिन भाक्तिक थीं।।
प्रभु सर्प चिन्ह तनु हरित वर्ण, लखकर रवि शशि शर्माये हैं।।
जय.।।6।।

नव हाथ तुंग सौ वर्ष आयु, प्रभु उग्र वंश के भास्कर हो।
उपसर्ग जयी संकट मोचन, भक्तों के हित करुणाकर हो।।
प्रभु महा सहिष्णू क्षमासिंधु, हम भक्ती करने आये हैं।।
जय.।।7।।

चौंतिस अतिशय के स्वामी हो, वर प्रातिहार्य हैं आठ कहे।
आनन्त्य चतुष्टय गुण छ्यालिस, फिर भी सब गुण आनन्त्य कहे।।
बस केवल 'ज्ञानमती' हेतू, प्रभु तुम गुण गाने आये हैं।।
जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।।
जय.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

जो पूजें नित भक्ति से, पार्श्वनाथ पदपद्म।
शक्ति मिले सर्वसहा, होवे परमानंद।।1।।

।। इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिः ।।

1. उत्तरपुराण में भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान कल्याणक तिथि चैत्र कृष्णा चतुर्दशी है।

(18) सप्तपरमस्थान पूजा

–गीता छंद –

श्री वीतराग जिनेन्द्र को, प्रणमूँ सदा वर भाव से।
श्री सप्तपरमस्थान पूजूँ, प्राप्ति हेतू चाव से।।
आह्वान थापन सन्निधापन, भक्ति श्रद्धा से करूँ।
सज्जाति से निर्वाण तक, पद सप्त की अर्चा करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक – (चाल- नंदीश्वर श्रीजिनधाम)

जल शीतल निर्मल शुद्ध, केशर मिश्र करूँ।
अंतर्मल क्षालन हेतु, शुभ त्रय धार करूँ।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित अलिचुंबित गंध, कुंकुम संग मिला।
भव दाह निकंदन हेतु, चर्चत सौख्य मिला।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल सम वर शुभ्र, तंदुल धोय धरूँ।
वर पुंज चढ़ाऊँ आन, उत्तम सौख्य वरूँ।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार वकुल मचकुंद, सुरभित पुष्प लिया।
मदनारि विनाशन हेतु, अर्चूं खोल हिया।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध उत्तम पकवान, घृत से पूर्ण भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, अर्चूं भक्ति भरे।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक ज्योति प्रकाश, जगमग ज्योति करे।
दीपक से पूजा सत्य, ज्ञान उद्योत करे।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत पाप जरें।
वर सप्त पदों को पूज, उत्तम सौख्य वरें।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम सुपारी दाख, एला थाल भरे।
फल से पूजत शिव सौख्य, अनुपम प्राप्त करें।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से युक्त, उत्तम अर्घ्य किया।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, परमस्थान जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

शांतीधारा देय, सप्तपरमपद को जजूँ।
परम शांति सुख हेतु, सब जग शांती हेतु मैं।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित लायके।
सप्तपरमपद हेतु, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– नरेन्द्र छंद –

मात-पिता कुल उभय पक्ष की, शुद्धी सज्जाती है।
सम्यग्दर्शन सहित भव्य को, निश्चित मिल जाती है।।
जल गंधादिक अष्टद्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
सज्जाति स्थान परम को, पूजत सौख्य भजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं सज्जातिपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वजनों से मान्य जगत में, सद्‍गृहस्थ पद माना।
धर्म-अर्थ अरु काम-मोक्ष का, आकर [1]श्रेष्ठ बखाना।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
सद्‍गार्हस्थ परम पद पूजत, उत्तम सौख्य भजूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं सद्‍गृहस्थत्वपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमहाव्रत पंचसमिति, त्रय गुप्ति सहित जो माना।
वरचारितमय परीव्राज्य पद, जग में सर्व प्रधाना।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
परिव्राज्य पद परम पूज कर, उत्तम सौख्य भजूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं प्राव्राज्यपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि कोटि सुर सहित महर्द्धी, गुण सम्पन्न कहाता।
सुरपति पद सब देवगणों में, आज्ञा नित्य चलाता।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
वर सुरेन्द्र पद पूजन करके, उत्तम सौख्य भजूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्‍खंडाधिप चक्रवर्ति पद, वैभव पूर्ण जगत में।
सम्यग्दर्शन शून्यजनों को, मिलना दुष्कर सच में।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
शुभ साम्राज्य परम पद पूजत, उत्तम सौख्य भजूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं साम्राज्यपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्निकाय देवगण पूजित, महामहोत्सवकारी।
तीर्थंकर पद सर्वोत्तम पद, त्रिभुवन जन सुखकारी।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
तीर्थंकर स्थान परम पद, पूजत सौख्य भजूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं आर्हंत्यपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. खजाना।

घाति अघाती कर्म घातकर, हुए निकल परमात्मा।
शुद्ध सिद्ध कृतकृत्य निरंजन, लोक शिखर गत आत्मा।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।
परिनिर्वाण परमपद पूजत, निरुपम सौख्य भजूँ मैं।।7।।

ॐ ह्रीं निर्वाणपरमस्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य –

सज्जाती सद्‍गृहस्थ पद अरु, पारिव्राज्य सुरनाथा।
वर साम्राज्य परम अर्हत्पद परिनिर्वाण विधाता।।
सप्त परमस्थान भुवन में, सर्वोत्तम कहलाते।
पूर्ण अर्घ्य ले इन्हें जजूँ मैं, निज पद पूरण वास्ते।।8।।

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य – **ॐ ह्रीं परब्रह्मणे सप्तपरमस्थानाय नमः।**

जयमाला

– दोहा –

गुणरत्नाकर वृषभजिन, भव्यकुमुद भास्वान।
सप्तपरमपद पाय के, भोगें सुख निर्वाण।।1।।

चाल-श्रीपति जिनवर........

शुभजाति गोत्र वरवंश तिलक, जो सज्जाती के जन्मे हैं।
जो उभय पक्ष की शुद्धि सहित, औ उच्चगोत्र में जन्मे हैं।।
वे प्रथम परम पद सज्जाती, पाकर छहपद के अधिकारी।
वह सज्जाती स्थान सदा, भव भव में होवे गुणकारी।।2।।

धर्मार्थ काम त्रय वर्गों को, जो बाधा रहित सदा सेते।
पंचाणुव्रत औ सप्तशील, धारण कर सद्‍गृहस्थ होते।।
वे ही भव भोगों से विरक्त, जिनदीक्षा धर मुनि बनते हैं।
प्राव्राज्य तृतीय परम पद पा, निज आतम अनुभव करते हैं।।3।।

विधिवत् सन्यास मरण करके, देवेन्द्र परम पद पाते हैं।
स्वर्गों के अनुपम भोग-भोग, फिर चक्रीश्वर बन जाते हैं।।
सोलह कारण भावन भाकर, तीर्थंकर पद को पाते हैं।
छठवें आर्हन्त्य परम पद को, पाकर शिवमार्ग चलाते हैं।।4।।

सब कर्म अघाती भी विनाश, निर्वाण रमापति हो जाते।
जो काल अनन्तानन्तों तक, सुखसागर में गोते खाते।।
इन सप्त परमस्थानों को, क्रम से भविजन पा लेते हैं।
जो सप्तपरमपद व्रत करते, वे अंतिमपद वर लेते हैं।।5।।

–घत्ता–

जय सप्तपरमपद, त्रिभुवन सुखप्रद,
जय जिनवर पद नित्य नमूँ।
'सज्ज्ञानमतीवर', शिव लक्ष्मीकर,
जिनगुण सम्पत्ती परणूँ।।6।।

ॐ ह्रीं सप्तपरमस्थानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जो सम्यक्‌विधि सप्तपरमस्थान सुव्रत करते हैं।
भक्ती से जिनराज चरण का, नित अर्चन करते हैं।।
वे क्रम से इन परम पदों को, पाकर सुख भजते हैं।
स्वर्ग सौख्य भज कर्म विलय कर, परम सिद्ध बनते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

(19) भगवान ऋषभदेव पूजा

स्थापना–गीता छंद

हे आदिब्रह्मा! युगपुरुष! पुरुदेव! युगस्रष्टा तुम्हीं।
युग आदि में इस कर्मभूमी, के प्रभो! कर्ता तुम्हीं।।
तुम ही प्रजापतिनाथ! मुक्ती, के विधाता हो तुम्हीं।
मैं आपका आह्वान करता, नाथ! अब तिष्ठो यहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक – चाल – नंदीश्वर पूजा

जिनवच सम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
जिन चरणांबुज में धार, दे जगद्वंद्व हरूँ।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनतनु सम सुरभित गंध, सुवरण पात्र भरूँ।
जिनचरण सरोरुह चर्च, भव संताप हरूँ।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन गुणसम उज्ज्वल धौत, अक्षत थाल भरे।
जिन चरण निकट धर पुंज, अक्षय सौख्य भरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनयशसम सुरभित श्वेत, कुंद गुलाब लिये।
मदनारिजयी जिनपाद, पूजूँ हर्ष हिये।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवचनामृत सम शुद्ध, व्यंजन थाल भरे।
परमामृत तृप्त जिनेन्द्र, पूजत भूख टरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरभेद ज्ञान सम ज्योति,जगमग दीप लिये।
जिनपद पूजत ही होत, ज्ञान उद्योत हिये।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत कर्म जरे।
निज आतम गुण सौगंध्य, दश दिश माहिं भरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ध्वनिसम मधुर रसाल, आम अनार भले।
जिनपद पूजत तत्काल, फल सर्वोच्च मिले।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से युक्त, अर्घ समर्प्य किया।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

सरयूनदी सुनीर, जिनपद पंकज धार दे।
शीघ्र हरो भव पीर, शांतीधारा शांतिकर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, चंप चमेली ले घने।
आदीश्वर पादाब्ज, पूजत ही सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

– शंभु छंद –

यह पुरी अयोध्या इंद्र रचित, चौदहवें कुलकर नाभिराज।
माता मरुदेवी के आँगन, बहु रत्न वृष्टि की धनदराज।।
आषाढ़ वदी द्वितीया सर्वारथ, सिद्धी से अहमिंद्र देव।
माता के गर्भ बसे आकर, इंद्रों ने की पितु मात सेव।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां श्रीआदिनाथजिनगर्भ-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता की सेवा भक्ती की।
नाना विध गूढ़ प्रश्न करके, माता की अतिशय तृप्ती की।।
शुभ चैत्र वदी नवमी जन्में, प्रभु त्रिभुवन में अति हर्ष हुआ।
इन्द्रों ने आ प्रभु को लेकर, मेरू पर अतिशय न्हवन किया।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां श्रीआदिनाथजिनजन्म-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव निलांजना नृत्य देख, वैराग्यभाव मन में लाये।
लौकांतिक सुर स्तुति करते, सुर सुदर्शना पालकि लाये।।
नक्षत्र उत्तराषाढ़ चैत वदि, नवमी प्रभु सिद्धार्थ वन में।
छह मास योग ले दीक्षा ली, मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ प्रभु पद में।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां श्रीआदिनाथजिनदीक्षा-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह मास योग के बाद प्रभू, मुनिचर्या बतलाने निकले।
गजपुर में अक्षयतृतिया को, आहार दिया श्रेयांस मिले।।
इक सहस वर्ष तप तपने से, केवलज्ञानी होकर चमके।
दिव्यध्वनि से जग संबोधा, फाल्गुन वदि एकादशि तिथि के।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीआदिनाथजिन-केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह विध सभा बनी सुंदर, मुनि आर्या सुरनर पशुगण थे।
प्रभु समवसरण में वृषभसेन, आदिक चौरासी गणधर थे।।
तीजे युग में त्रय वर्ष सार्ध, अरु मासशेष अष्टापद से।
चौदह दिन योग निरुद्ध माघ वदि, चौदश के प्रभु मुक्ति बसे।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीआदिनाथजिनमोक्ष-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

– दोहा –

तीर्थंकर गुण रत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।1।।

– शंभु छंद –

श्री वृषभसेन आदिक चौरासी, गणधर मुनि चौरासि सहस।
ब्राह्मी गणिनी त्रय लाख पचास, हजार आर्यिका व्रतसंयुत।।
त्रय लाख सुश्रावक पाँच लाख, श्राविका प्रभू का चउ संघ था।
आयू चौरासी लाख पूर्व, वत्सर व पाँच सौ धनु तनु था।।2।।

– अनंग शेखर छंद –

जयो जिनेन्द्र! आपके महान दिव्य ज्ञान में,
त्रिलोक और त्रिकाल एक साथ भासते रहे।

जयो जिनेन्द्र! आपका अपूर्व तेज देखके,
असंख्य सूर्य और चंद्रमा भि लाजते रहे।।
जयो जिनेन्द्र! आपकी ध्वनी अनच्छरी खिरे,
तथापि संख्य भाषियों को बोध है करा रही।
जयो जिनेन्द्र! आपका अचिन्त्य ये महात्म्य देख,
सुभक्ति से प्रजा समस्त आप आप आ रही।।3।।

जिनेश! आपकी सभा असंख्य जीव से भरी,
अनंत वैभवों समेत भव्य चित्त मोहती।
जिनेश! आपके समीप साधु वृंद औ गणीन्द्र,
केवली मुनीन्द्र और आर्यिकायें शोभतीं।।
सुरेन्द्र देवियों की टोलियाँ असंख्य आ रहीं,
खगेश्वरों की पंक्तियाँ अनेक गीत गा रहीं।
सुभूमि गोचरी मनुष्य नारियाँ तमाम हैं,
पशू तथैव पक्षियों कि टोलियाँ भी आ रहीं।।4।।

सुबारहों सभा स्वकीय ही स्वकीय में रहें,
असंख्य भव्य बैठ के जिनेश देशना सुनें।
सुतत्त्व सात नौ पदार्थ पाँच अस्तिकाय और,
द्रव्य छह स्वरूप को भले प्रकार से गुनें।।
निजात्म तत्त्व को संभाल तीन रत्न से निहाल,
बार-बार भक्ति से मुनीश हाथ जोड़ते।
अनंत सौख्य में निमित्त आपको विचार के,
अनंत दुःख हेतु जान कर्मबंध तोड़ते।।5।।

स्वमोह बेल को उखाड़ मृत्युमल्ल को पछाड़,
मुक्ति अंगना निमित्त लोक शीश जा बसें।
प्रसाद से हि आपके अनंत भव्य जीव राशि,
आपके समान होय आप पास आ लसें।।
असंख्य जीव मात्र दृष्टि समीचीन पायके,
अनंतकाल रूप पंच परावर्त मेटते।
सुभक्ति के प्रभाव से असंख्य कर्म निर्जरा,
करें अनंत शुद्धि से निजात्म सौख्य सेवते।।6।।

—दोहा—

वृषभ चिह्न स्वर्णिम तनू, प्रथम तीर्थंकर आप।
'ज्ञानमती' सुख शांति दे, करो हमें निष्पाप।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

—दोहा—

नाथ! आप गुणसिंधु हैं, को कहि पावे पार।
नाममंत्र ही आपका, करे भवोदधि पार।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(20) विमलनाथ जिनपूजा (मंगल त्रयोदशी पूजा)

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

अमल विमल पद पाकर स्वामी, विमलनाथ कहलाये।
भाव-द्रव्य-नोकर्म मलों से, रहित शुद्ध कहलाये।।
आत्मा के संपूर्ण मलों को, धोने हेतु जजूँ मैं।
आह्वानन स्थापन करके, पूजा करूँ भजूँ मैं।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथ अष्टक-दोहा—

पद्मसरोवर नीर शुचि, जिनपद धार करंत।
जन्म जरा मृति नाश हो, आतम सुख विलसंत।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन सुरभि, जिनपद में चर्चंत।
मिले आत्मसुख संपदा, निजगुण कीर्ति लसंत।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम तंदुल धवल, पुंज चढ़ाऊँ नित्य।
नव निधि अक्षय संपदा, मिले आत्मसुख नित्य।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हरसिंगार प्रसून की, माल चढ़ाऊँ आज।
सर्वसौख्य आनंद हो, मिले स्वात्म साम्राज।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली इमरती, चरू चढ़ाऊँ भक्ति।
मिले आत्म पीयूष रस, मोक्ष प्राप्ति की शक्ति।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक से आरती, करूँ तिमिर परिहार।
जगे ज्ञान की भारती, भरें सुगुण भंडार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेवते हो सुरभि, आतम सुख विलसंत।
कर्म जलें शक्ती बढ़े, मिले निजात्म अनंत।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब आम अंगूर ले, फल से पूजूँ आज।
मिले मोक्षफल आश यह, सफल करो मम काज।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य ले, रजत पुष्प विलसंत।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति से, मिले सुगुण सुखकंद।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

मौलसिरी बेला जुही, पुष्पांजलि विकिरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निज निधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

—रोला छंद—

पुरी कंपिला नाम, पितु कृतवर्मा गृह में।
जयश्यामा वर मात, गर्भ बसे शुभ तिथि में।।
ज्येष्ठ वदी दश श्रेष्ठ, सुरपति नरपति पूजें।
नमूँ आज शिर टेक, जजूँ कर्म अरि धूजें।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णादशम्यां श्रीविमलनाथगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में त्रिभुवननाथ, चौथ माघ सुदि तिथि में।
सुरनर हुये सनाथ, शांति हुई तिहुँजग में।।
मेरु शिखर ले जाय, इन्द्र किया जन्मोत्सव।
पूजूँ शीश झुकाय, जन्मकल्याण महोत्सव।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां श्रीविमलनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बर्फ विनशती देख, चित वैराग्य समाया।
माघ चतुर्थी शुक्ल, सुरगण शीश नमाया।।
गये सहेतुक बाग, देवदत्त पालकि में।
नमूँ-नमूँ नत माथ, तपकल्याणक प्रभु मैं।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां श्रीविमलनाथतपःकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ श्रेष्ठ, जामुनतरु के नीचे।
नशा घाति का क्लेश, केवलज्ञान उदय से।।
समवसरण प्रभु आप, गगनांगण में शोभे।
ज्ञानकल्याणक नाथ, जजत भावश्रुत दीपे।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्यां श्रीविमलनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ जिनराज, श्रीसम्मेदशिखर से।
कर्म अघाति विनाश, मुक्तिधाम में पहुँचे।।
वदि अष्टमि आषाढ़, मोक्षकल्याणक तिथि है।
मोहारि को पछाड़, जजत लहूँ निज सुख है।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाअष्टम्यां श्रीविमलनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य— **ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

—दोहा—

पूरब भव में आपने, सोलहकारण भाय।
तीर्थंकर पद पाय के, तीर्थ चलाया आय।।1।।

–रोला छंद–

दर्श विशुद्धि प्रधान, नित्यप्रती प्रभु ध्याके।
अष्ट अंग से शुद्ध, दोष पच्चीस हटाके।।
मन-वच-काय समेत, विनय भावना भायी।
मुक्ति महल का द्वार, भविजन को सुखदायी।।2।।

व्रतशीलों में आप, नहिं अतिचार लगाया।
संतत ज्ञानाभ्यास, करके कर्म खपाया।।
भवतन भोग विरक्त, मन संवेग बढ़ाया।
शक्ती के अनुसार, चउविध दान रचाया।।3।।

बारहविध तपधार, आतम शक्ति बढ़ाई।
धर्मशुक्ल से सिद्ध, साधु समाधि कराई।।
दशविध मुनि की नित्य, वैयावृत्य किया था।
सर्व शक्ति से पूर्ण, बहु उपकार किया था।।4।।

श्री अर्हंत जिनेन्द्र, भक्ति हृदय में धरके।
सूरि परम परमेश, गुण संस्तवन उचरके।।
उपाध्याय गुरुदेव, शिवपथ के उपदेष्टा।
प्रवचन भक्ति समेत, गुणगण भजा हमेशा।।5।।

षट् आवश्यक नित्य, करके दोष नशाया।
हानिरहित परिपूर्ण, निज कर्तव्य निभाया।।
मार्ग प्रभावन पाय, धर्म महत्त्व बढ़ाया।
प्रवचन में वात्सल्य, कर निज गुण प्रगटाया।।6।।

सोलहकारण भाय, पंचकल्याणक पाया।
दिव्यध्वनी से नित्य, धर्म सुतीर्थ चलाया।।
भव्य अनंतानंत, जग से पार किया है।
सौ इन्द्रों से वंद्य, निज सुख सार लिया है।।7।।

मंदर आदि गणीश, पचपन समवसरण में।
अड़सठ सहस मुनीश, गुणमणियुत तुम प्रणमें।।
गणिनी पद्मा आदि, तीन सहस इक लक्षा।
श्रमणी महाव्रतादि, गुण मणिभूषित दक्षा।।8।।

श्रावक थे दो लाख, धर्मध्यान में तत्पर।
कहीं श्राविका चार, लाख भक्ति में तत्पर।।
साठ धनुष तनु तुंग, साठ लाख वर्षायू।
घृष्टी[1] चिन्ह सुवर्ण, वर्ण देह गुण गाऊँ।।9।।

चिच्चैतन्य स्वरूप, चिन्मय ज्योति जलाऊँ।
पूर्ण ज्ञानमति रूप, परम ज्योति प्रगटाऊँ।।
तुम प्रसाद जिन विमल! पूरी हो मम आशा।
इसीलिए पदकमल, नमूँ नमूँ धर आशा।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–सोरठा–

विमलनाथ जिनदेव! तुम पद पंकज जो जजें।
लहें स्वपद स्वयमेव, नर सुर के सुख भोग के।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(21) जिनगुण संपत्ति पूजा

–स्थापना-गीता छंद–

जैनेन्द्र गुण की संपदा के, नाम त्रेसठ मुख्य हैं।
सोलह सुकारण भावना, वर प्रातिहार्य जु अष्ट हैं।।
चौंतीस अतिशय पंचकल्याणक सुत्रेसठ जानिये।
श्री जिनगुणों की थापना कर, पूजते सुख मानिए।।1।।

ॐ ह्रीं जिनगुणसंपत्तिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जिनगुणसंपत्तिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जिनगुणसंपत्तिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(चाल-पूजो पूजो श्री अरिहंत देवा)

नीर गंगानदी का लाऊँ, हेम झारी से धारा कराऊँ।
मैल आतम का शीघ्र हटाऊँ, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सूकर।

श्वेत चंदन सुकेशर लाऊँ, नाथ के गुण की पूजा रचाऊँ।
ताप संसार का सब मिटाऊँ, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँमन लाके।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द रश्मि सदृश अक्षत हैं, पुंज धरते नशत सब अघ हैं।
मिले आतम की सब संपद है, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँमन लाके।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद मंदार चंपक मल्ली, पूजते ही कटे भव वल्ली।
फैले जग में भक्ति यश वल्ली, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँमन लाके।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी घेवर कलाकंद लाके, व्याधि विरहित प्रभू गुण गाके।
भूख बाधा को पूर्ण मिटाके, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँमन लाके।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में शुद्ध गौघृत जलाऊँ, ज्योति से पूजते भ्रम भगाऊँ।
चित्त में ज्ञान ज्योति जगाऊँ, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँमन लाके।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप कृष्णागरू चंदन है, खेवते पापराशी दहन है।
आत्म पीयूष वर्षा सघन है, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँमन लाके।।7।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर अमरूद फल हैं, पूजते विघ्नराशी विफल है।
शीघ्र मिलता निजातम फल है, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँमन लाके।।8।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि अर्घ्य बनाऊँ, आपकी नित्य पूजा रचाऊँ।
अनमोल रतन तीन पाऊँ, जिनेंद्र गुण संपद जजूँ मन लाके।।
तीर्थंकर गुणों की सम्पत, पूजते क्षीण होती विपद सब।
शीघ्र मिलती निजातम संपत, जिनेन्द्र गुण संपद जजूँमन लाके।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा करत ही, त्रिभुवन में हो शांति।
जिनगुण संपद अर्चना, करे निजातम शांति।।10।।

शांतये शांतिधारा।

–दोहा–

कमल केतकी मालती, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि कर पूजते, सुख संपति अधिकाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः नमः।
(108 सुगंधित पुष्प अथवा लवंग से जाप्य करें)

जयमाला

–सोरठा–

मिले मुक्ति साम्राज्य, जिनगुण संपति पूजते।
तुम गुणमणि की माल, धारूँ कंठ विषै सदा।।1।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणायतनं)

जय जय जिनगुण संपत जग में, मुक्ती पद कारण मानी है।
जय जय तीर्थंकर प्रकृतिबंध की, सोलह भावन भानी है।।
जय जय दर्शन सुविशुद्धि आदि, गुण निधि को जो जन पाते हैं।
सोलह कारण भावन भाके, तीर्थंकर पद पा जाते हैं।।1।।

गर्भावतार जिनगुण संपत, जन्माभिषेक कल्याण महा।
दीक्षा-केवल-निर्वाणरूप, कल्याणक होते पाँच अहा।।
जो भविजन इनको पा लेते, वे धर्मचक्र नेता होते।
भवपंच परावर्तन तजकर, तीर्थंकर जगवेत्ता होते।।2।।

वे आठ प्रातिहार्यों से नित, भूषित अगणित महिमा धारी।
तरूवर अशोक सुर पुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि चामर सुखकारी।।
सिंहासन भामंडल शोभे, त्रय छत्र त्रिजग वैभव गाते।
प्रभु समवसरण लक्ष्मी भर्ता, त्रिभुवन के गुरु माने जाते।।3।।

वे जन्म समय के दश अतिशय, पाकर के अतिशय शाली हैं।
कैवल्यरमापति होते ही, दश अतिशय गुणमणिमाली हैं।।
देवों के द्वारा किये गये, चौदह अतिशय भी गाए हैं।
चौंतीसों अतिशय सहित हुए, अर्हंत प्रभू कहलाये हैं।।4।।

इस विध त्रेसठ जिनगुण संपत, व्रत का भवि पालन करते हैं।
सोलह प्रतिपद के सोलह अरु, पंचमि के पाँच उचरते हैं।।
अष्टमि तिथि के व्रत आठ गिने, दशमी के बीस कहाये हैं।
चौदश के चौदह व्रत करके, त्रेसठ जिनगुण व्रत पाये हैं।।5।।

इस विधि से जो नर-नारीगण, उपवास सहित व्रत करते हैं।
अथवा एकाशन से करके, जिनगुण संपत भी वरते हैं।।
धनधान्य समृद्धी सुख पाते, चक्री की पदवी पाते हैं।
देवेन्द्र सुखों को भोग-भोग, तीर्थंकर भी हो जाते हैं।।6।।

मैं भी श्रद्धा से जिनगुण में, नितप्रति ही भाव लगाता हूँ।
प्रत्येक भावना पुनः पुनः, अनुरागी होके भाता हूँ।।
निज आत्म गुणों की संपत्ती, पाने हेतू ही आया हूँ।
रागादिक दोष मिटा दीजे, यह आश हृदय में लाया हूँ।।7।।

हे देव! कृपा ऐसी करिये, मेरे दुःखों का क्षय होवे।
कर्मों का क्षय हो बोधि लाभ, होवे अरु सुगति गमन होवे।।
होवे समाधि से मरण नाथ! मुझ को जिनगुण संपति होवे।
"कैवल्य ज्ञानमति" हो करके, निज मुक्तिरमा में रति होवे।।8।।

–दोहा–

गुण अनंत सागर प्रभो! कोई न पावें पार।
किंचित् गुणमणि गूंथ के, धरूँ कंठ में हार।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिजिनगुणसंपद्भ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

गणपति गुण गणना करें, निज आतम गुण हेतु।
जो नर-नारी भी गिनें, शीघ्र लहें भव सेतु।।10।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(22) रोहिणी व्रत पूजा (वासुपूज्य जिनपूजा)

–गीताछंद–

वासवगणों से पूज्य भगवन्! वासुपूज्य महान हो।
तीर्थंकरों में बारहवें, वर तीर्थकर्ता मान्य हो।।
वर भक्ति श्रद्धाभाव से, प्रभु आप आह्वानन करें।
पूजा रचाकर आपकी, निज आत्म आराधन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-(नाराच छंद)–

सिंधु नीर स्वच्छ शुद्ध स्वर्ण कुंभ में भरूँ।
आप पाद पूजते हि कर्मकालिका हरूँ।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि[1] कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगंध गंधपूर्ण नाथपाद पूजिए।
राग आग दाह नाश पूर्ण शांत हूजिए।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र चन्द्रिका समान श्वेत शालि लाइये।
नाथ पाद पूजते अखंड सौख्य पाइये।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

1. उपवास आदि।

पारिजात मालती गुलाब पुष्प लाइये।
काम मल्ल जीतने जिनेश को चढ़ाइये।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग लड्डुकादि पायसादि थाल में भरे।
भूख व्याधि नाशने जिनेन्द्र अर्चना करें।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप में कपूर ज्वालते शिखा बढ़े।
आप पूजते सुज्ञान ज्योति चित्त में बढ़े।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्त चंदनादि मिश्र धूप अग्नि में जलें।
आप पास में समस्त कर्म भस्म हो चलें।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम दाडिमादि खारिकादि थाल में भरे।
आप चर्ण पूजते अनन्त सिद्धि को वरें।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तोय गंध शालि पुष्प अन्न दीप धूप हैं।
सत्फलों से युक्त अर्घ्य से जजूँ अनूप है।।
रोहिणी नक्षत्र में उपोषणादि कीजिए।
वासुपूज्य देव पूज शोक दूर कीजिए।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

शांतीधारा मैं करूँ, जिनपदपंकज मांहि।
शांति करो सब लोक में, कर्मकीच धुल जांहि।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल वकुल मल्ली कुसुम, सुरतरु के उनहार।
पुष्पांजलि करते प्रभू, मिले सकल सुखसार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

– स्रग्विणी छंद –

मात विजयावती गर्भ में आवते,
मास आषाढ़ षष्ठी वदी थी जबे।
इन्द्र आ गर्भकल्याण पूजा करें,
अर्चते पाप सब एक क्षण में टरें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुनी कृष्ण चौदश जनम आपका,
इन्द्र कीना न्हवन मेरु पे आपका।
जन्म कल्याण उत्सव शचीपति करें,
नित्य पूजें तुम्हें विघ्न बाधा टरें।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्ण फाल्गुन सुचौदस दिगम्बर हुए,
बाह्य अंतर परिग्रह सभी तज दिये।
देव दीक्षा सुकल्याण पूजा करें,
आज हम पूजते सर्व पीड़ा हरें।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ला द्वितीया तिथी जो भली,
घात के घातिया तुम हुए केवली।
इन्द्र ने ज्ञान कल्याण पूजा करी,
पूजते ज्ञान ज्योती मेरे अंतरी।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाद्रपद शुक्ल चौदस प्रभू शिव गये,
देव निर्वाण कल्याण पूजत भये।

भक्ति से मोक्ष कल्याण पूजा करें,
पंचकल्याण लक्ष्मी तुरंते वरें।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - **ॐ ह्रीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।**
(108 लवंग या पुष्पों से)

जयमाला

–दोहा–

वासुपूज्य वसुपूज्यसुत, वासवगण से वंद्य।
तुम गुणमणिमाला धरूँ, कंठ मांहि सुखकंद।।1।।

चाल-हे दीनबंधु.......

जय वासुपूज्य देव तीन लोक वंद्य हो।
जय जय अनंत सुगुण रत्न के करंड हो।।
हे नाथ! भक्ति भाव से मैं वंदना करूँ।
अनंत सौख्य सिंधु नाथ अर्चना करूँ।।1।।

चंपापुरी को धन्य आप जन्म से किया।
माता जयावती की कुक्षि से जनम लिया।।
आयू है बाहत्तर सुलक्ष वर्ष की कही।
तन की ऊँचाई दो सौ असी हाथ प्रम कही।।2।।

तनकांति पद्मरागमणी के समान है।
है चिन्ह महिष का कहा जाने जहान है।।
कल्याणकों पाँचों की भू पवित्र कही है।
चंपापुरी निर्वाणभूमि सौख्य मही है।।3।।

जो वासुपूज्य देव की आराधना करें।
सम्यक्त्वशुद्ध तीन रत्न साधना करें।।
जो रोहिणी नक्षत्र दिवस व्रत विधी करें।
तुम नाम मंत्र जाप से भव जल निधी तरें।।4।।

वह हस्तिनापुरी नरेश जो कि अशोक था।
उसकी प्रिया थी रोहिणी जिसको न शोक था।।
इक बार वक्ष कूटती रोती थी भामिनी।
तब रोहिणी ने प्रश्न किया धाय सामनी।।5।।

हे मात! कहो कौन-सी ये नृत्य कला है।
तब धाय कहे तू हुई उन्मत्त भला है।।
यह देख के आश्चर्य नृपति पुत्र उठाया।
ऊँचे महल की छत से उसे भू पे गिराया।।6।।

तत्क्षण सुरों ने पुत्र को आसन पे बिठाया।
ढोरे चंवर यह आश्चर्य सबको दिखाया।।
राजा मुनी से एक बात पूछता सही।
क्यों नाथ! रोहिणी को रुदन ज्ञान भी नहीं।।7।।

मुनि ने कहा यह रोहिणी व्रत का माहात्म्य है।
रोना किसे कहते हैं जो इसको न ज्ञान है।।
यह फल तो है मनाक् क्रम से मोक्ष मिले है।
संसार के सुख भोग बोध कमल खिले हैं।।8।।

–घत्ता–

जय जय तीर्थंकर, भव संकट हर, विघ्न अद्रि को चूर्ण करें।
जो तुम पद ध्यावें, शिवसुख पावें, ''ज्ञानमती' को पूर्ण करें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

धर्मचक्र को धारते, तीर्थंकर जिनदेव।
''ज्ञानमती' लक्ष्मी सहित, तुरत सिद्ध पद देव।।10।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(23) चारित्रशुद्धि व्रत पूजा
(बारह सौ चौंतिस व्रत पूजा)

–स्थापना-शंभुछंद –

सम्यक्चारित्र त्रयोदशविध, ये परमानंद प्रदाता हैं।
इनके बारह सौ चौंतिस व्रत, ये परमसिद्धि के दाता हैं।।
इनका वन्दन पूजन करके, विधिवत् आराधन करते हैं।
निज हृदय कमल में धारण कर, हम स्वात्म सुधारस भरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –(चाल-नंदीश्वर पूजा)

गंगानदि को जल लाय, कंचन भृंग भरूँ।
त्रयधार करूँ सुखदाय, आतम शुद्ध करूँ।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।1।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन गंध, घिस कर्पूर मिला।
जजते चारित्र अमंद, निज मन कमल खिला।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।2।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिकर समतंदुल श्वेत, खंड विवर्जित हैं।
शिवरमणी परिणय हेत, पुंज समर्पित हैं।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।3।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सित कुमुद नील अरविंद, लाल कमल प्यारे।
मदनारि विजय के हेतु, पूजूँ सुखकारे।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।4।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली पयसार, पायस मालपुआ।
चारित्र रत्न को ध्याय, आतम सौख्य हुआ।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।5।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप कपूर प्रजाल, ज्योति उद्योत करे।
अंतर में भेद विज्ञान, प्रगटे मोह हरे।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।6।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध अग्नि में ज्वाल, सुरभित गंध करे।
निज आतम अनुभव सार, कर्म कलंक हरे।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।7।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला फलसार, जंबू निंबु हरे।
शिवकांता संगम हेत, तुम ढिग भेंट करे।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।8।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिलादिक द्रव्य मिलाय, कंचन पात्र भरे।
चारित को अर्घ्य चढ़ाय, शिव साम्राज्य वरें।।
बारह सौ चौंतिस मंत्र, पूजूँ मन लाके।
पाऊँ निज सौख्य स्वतंत्र, चारितनिधि पाके।।9।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्रद्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

शांतीधारा मैं करूँ, चरित मंत्र हितकार।
चउसंघ में शांती करो, हरो सर्व दुख भार।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि से पूजहूँ, चारित्र मंत्र महान।
दुःख दरिद्र संकट टले, बनूँ आत्मनिधिमान।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– 1. ॐ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः।

अथवा

2. ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशशतचतुस्त्रिंशद्व्रतेभ्यो नमः।

जयमाला

– शंभु छंद –

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, प्रभु धर्मचक्र के कर्ता हो।
जय जय अनंत दर्शन सुज्ञान, सुख वीर्य चतुष्टय भर्ता हो।।
जय अंतरंग लक्ष्मी अनंत गुण, धृत् त्रैलोक्य शिखामणि हो।
जय समवसरण वैभव धारी, जय दिव्यध्वनी के स्वामी हो।।1।।

तीर्थंकर परम्परा शाश्वत, यह शाश्वत धर्म सौख्यकारी।
तीर्थंकर शासन सार्वभौम, यह जिनशासन भवदुखहारी।।
जो 'तीर्थ' चलाते तीर्थंकर, यह 'तीर्थ' धर्म ही माना है।
यह धर्म 'रत्नत्रयमय' माना, 'चारित्ररूप' भी माना है।।2।।

जो भवदधि से तारे सबको, सब जन को पूर्ण पवित्र करे।
सब कर्म मैल को धो करके, आत्मा को पावन शुद्ध करे।।
बस वही तीर्थ सच्चा जग में, इसके कर्ता तीर्थंकर हैं।
इनके आश्रय से सब भविजन, भववारिधि तिरते सुखकर हैं।।3।।

जय जय चारित्र त्रयोदश विध, जो भववारिधि में नौका है।
जय पाँच महाव्रत पाँच समिति, त्रयगुप्ति कर्मनग भेत्ता हैं।।
जय इनके भेद एक सौ सैंतिस, मोक्षमार्ग के नेता हैं।
इनको नव कोटी से गुणिये, बारह सौ चौंतीस भेद कहें।।4।।

जय जयतु अहिंसा प्रथम महाव्रत, चौदह भेद रूप मानो।
मन वच तन को कृत कारित अनुमति, से गुणिते विधिवत् जानो।।
तब इक सौ छब्बिस भेद मंत्र, जपने से चारित शुद्धी हो।
इनके व्रत करने से महाव्रत, पालन करने की शक्ती हो।।5।।

जब सत्य, अचौर्य महाव्रत को, अठ आठ भेद से सरधानो।
ब्रह्मचर्य महाव्रत बीस भेद, परिग्रह विरती चौबिस जानो।।
ये नव से गुणित बहत्तर पुनः, बहत्तर की संख्या करिये।
ब्रह्मचर्य के एक सौ अस्सी परिग्रह-त्याग द्विशत सोलह गिनिये।।6।।

छठा अणुव्रत रात्री भोजन, विरती दश भेद सहित वर्णित।
ईर्या समिती नवकोटि सहित, मुनिगण पालें आगम भाषित।।
भाषा समिती के दशों भेद, नवकोटि-गुणित नब्बे विध हैं।
एषण समिती छ्यालीस भेद, नवगुणित चार सौ चौदह हैं।।7।।

आदान निक्षेप, उत्सर्ग समिति, नव नव भेदों से भाषित हैं।
मन वचन काय की त्रय गुप्ती, नव से गुणिते सत्ताइस हैं।।
ये भेद-प्रभेद सभी मिलकर, बारह सौ चौंतिस व्रत मानें।
इनका जो विधिवत् व्रत करते, और मंत्र जपें श्रुत वच जानें।।8।।

वे भव्य नियम से महाव्रती, बनकर संसार जलधि तिरते।
निज परम अतीन्द्रिय सौख्य पाय, त्रिभुवन साम्राज्य तुरत लभते।।
मैं सम्यग्दर्शन ज्ञान सहित, व्यवहार चरित्र पूर्ण पाऊँ।
फिर निश्चय रत्नत्रय परिणत, निज आत्म ध्यान में रम जाऊँ।।9।।

हे भगवन्! ऐसा दिन कब हो, जब परम अतीन्द्रिय सुख पाऊँ।
भव पंच परावर्तन छूटें, कैवल्य ज्ञानमति प्रगटाऊँ।।
त्रैलोक्य शिखर पर जा करके, तिष्ठूँ शाश्वत विश्राम करूँ।
हे नाथ! मुझे ऐसी मति दो, तुम चरणों में ही वास करूँ।।10।।

– दोहा –

सम्यक्चारित रत्न यह, जिनगुणसंपति हेतु।
नमूँ-नमूँ नित भाव से, पाऊँ भवदधि सेतु।।11।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशचारित्रभेदस्वरूप-एकसहस्र-द्विशत-चतुस्त्रिंशन्मंत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

बारह सौ चौंतीस व्रत, मंत्र जपें जो भव्य।
सम्यग्ज्ञानमती सहित, वे पावें सुख नव्य।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(24) श्री कर्मदहन व्रत पूजा

–अथ स्थापना (शंभु छंद) –

हे सिद्ध प्रभो! तुम आठ कर्म, विरहित गुण आठ समन्वित हो।
अष्टमि पृथिवी पर तिष्ठ रहे, ज्ञानाम्बुधि सिद्धरमापति हो।।
समतारस आस्वादी मुनिगण, नित सिद्ध गुणों को ध्याते हैं।
हम पूजें तुम आह्वानन कर, जिससे सब कर्म नशाते हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-शंभु छंद –

श्री सिद्धसुयश सम उज्ज्वल जल, लेकर झारी भर लाये हैं।
निज समरस सुख पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों सम अति शीतल, चंदन घिसकर ले आये हैं।
निज की शीतलता पाने को, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध सौख्य सम खंडरहित, उज्ज्वल तंदुल ले आये हैं।
निज आत्म सौख्य पाने हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्धगुणों सम अति सुगंध, पुष्पों को चुनकर लाये हैं।
निज गुण सुगंध पाने हेतू, प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध पुष्टि सम नानाविध, पकवान बनाकर लाये हैं।
निज आत्म तृप्ति पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध ज्ञान सम ज्योतिर्मय, कर्पूर जलाकर लाये हैं।
निज ज्ञानज्योति पाने हेतू, हम आरति करने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों की सुरभि सदृश, वर धूप सुगंधित लाये हैं।
निज आत्म सुरभि पाने हेतू, अग्नी में धूप जलाये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध सुखामृत सदृश मधुर, रस भरे बहुत फल लाये हैं।
निज मोक्ष सुफल हेतू भगवन्! फल आज चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों के सम अनर्घ्य, यह अर्घ्य सजाकर लाये हैं।
निज तीन रत्न पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री सिद्ध चरणाब्ज, मन से जलधारा करूँ।
पूर्ण शांति साम्राज्य, मिले त्रिजग में शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्री सिद्ध चरणाब्ज, पुष्पांजलि मन से करूँ।
मिले सिद्धि साम्राज्य, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतानंतप्रमसिद्धेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

शंभुछंद (तर्ज - यह नंदनवन..........)

जय जय जिनमणि, जग चूड़ामणि, तुम कर्मरहित सिद्धीपति हो।
मन वच तन से, सब सिद्धों के, चरणों में मेरी प्रणती हो।।
जय.।।

प्रभु चार अनंतानूबंधी, त्रय दर्शन मोह विनाश किया।
क्षायिक सम्यक्त्वी मुनी बने, फिर क्षपक श्रेणि को मांड लिया।।
गुणस्थान नवम में छत्तिस प्रकृती, नाश आप मुनिगणपति हो।।
जय.।।1।।

दशवें में सूक्ष्म लोभ नाशा, नर आयु बिना त्रय आयू नहिं।
बारहवें में सोलह प्रकृती, कर नाश केवली हुये यहीं।।
इन त्रेसठ प्रकृती के क्षय से, परमात्मा नव लब्धीपति हो।।
जय.।।2।।

ज्ञानावरणी दर्शनावरण, मोहनीय व अंतराय घाती।
पण नव अट्ठाइस पाँच कहीं, त्रय आयु नाम की तेरह ही।।
इन कर्म रहित धनपति विरचित, प्रभु समवसरण लक्ष्मीपति हो।।
जय.।।3।।

गुणस्थान चौदवें में द्विचरम, के समय बहत्तर प्रकृति हनी।
फिर अंतसमय तेरह प्रकृती, नाशा शिवतिय से प्रीति घनी।।
प्रभु गुणस्थान से रहित हुये, शिवधाम गये त्रिभुवनपति हो।।
जय.।।4।।

इन इक सौ अड़तालिस प्रकृती के, भेद असंख्य अनंत कहे।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म नाश, यमराज शत्रु का अंत किये।।
सुख ज्ञान दर्श वीरज आदिक, निज के अनंत गुण निधिपति हो।।
जय.।।5।।

प्रभु मोह नाश क्षायिक समकित, ज्ञानावरणी हन पूर्णज्ञान।
दर्शनरज नाश पूर्ण दर्शन, हन अंतराय वीरज अमान।।
हन नामकर्म सूक्ष्मत्व लिया, हन गोत्र अगुरुलघु गुणयुत हो।।
जय.।।6।।

हन आयू अवगाहन गुणधृत, हन वेदनीय अव्याबाधी।
सुख लिया अनंत अतीन्द्रिय प्रभु, नाशी सब जन्म मरण व्याधी।।
प्रभु आठकर्म से रहित आठगुण सहित मोक्षनगराधिप हो।।
जय.।।7।।

जो भव्य आपकी भक्ति करें, द्वयविध रत्नत्रय युक्ति धरें।
निज शक्ति प्रगट कर मुक्ति वरें, गुणरत्नों का भंडार भरें।।
तुम भक्तों को निज सम करते, इससे अद्भुत पारसमणि हो।।
जय.।।8।।

इस ढ़ाईद्वीप में कर्मभूमि, इक सौ सत्तर बतलाई हैं।
उनसे तीर्थंकर आदि नरों ने, मुक्तिवल्लभा पाई है।।
तीर्थंकर होकर शिव पाते, उन सबको मेरी शिरनति हो।।
जय.।।9।।

बिन तीर्थंकर भी चक्रवर्ति, बलभद्र कामदेवादि पुरुष।
बिन पदवी के सामान्य मनुष, शिवपद पा लेते कर्मवियुत।।
उपसर्ग बिना उपसर्ग सहित, अगणित नरपुंगव शिवपति हों।।
जय.।।10।।

जल से, थल से, नभ से भी तो, शिव गये अनंतानंत मनुज।
सुर या खेचर उपसर्ग किया, जल या नभ में छोड़ा दुखप्रद।।
धर शुक्लध्यान तत्क्षण कर्मों को, नाश अंतकृत केवलि हों।।
जय.।।11।।

जो द्रव्यपुरुष वेदी भावों से, हुये नपुंसक वेदी भी।
या भावों से स्त्रीवेदी, मुक्ती पा जाते हैं ये भी।।
ये भाव भेद त्रयविध मुनिगण, शिव गये उन्हें नित शिरनति हो।।
जय.।।12।।

जो सिद्ध हुये हैं, होते हैं, होवेंगे ये त्रय कालों के।
इनको शत शत वंदन मेरा, ये मेरे अघ को नाशेंगे।।
कैवल्य 'ज्ञानमति' हेतु आज, सिद्धों को नमते शिवगति हो।।
जय.।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त अनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेरछंद–

जो भव्य कर्मदहन की पूजा को करेंगे।
वे भाव कर्म द्रव्यकर्म दहन करेंगे।।
निज का परम अतीन्द्रिय सुख प्राप्त करेंगे।
रवि 'ज्ञानमती' से यहाँ प्रकाश भरेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(25) णमोकार महामंत्र पूजा

– स्थापना-गीता छंद –

अनुपम अनादि अनंत है, यह मंत्रराज महान है।
सब मंगलों में प्रथम मंगल, करत अघ की हान है।।
अर्हंत सिद्धाचार्य पाठक, साधुओं की वंदना।
इन शब्दमय परब्रह्म को, थापूँ करूँ नित अर्चना।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथाष्टक-भुजंगप्रयाग छंद –

महातीर्थ गंगानदी नीर लाऊँ।
महामंत्र की नित्य पूजा रचाऊँ।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूरादिचंदन महागंध लाके।
परं शब्द ब्रह्मा की पूजा रचाके।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पयोसिंधु के फेन सम अक्षतों को।
लिया थाल में पुँज से पूजने को।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही कुंद अरविंद मंदार माला।
चढ़ाऊँ तुम्हें काम को मार डाला।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद लड्डू इमरती बनाऊँ।
तुम्हें पूजते भूख व्याधी नशाऊँ।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की ज्योति विस्तारती है।
महामोह अंधेर संहारती है।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधी बढ़े धूप खेते अगनि में।
सभी कर्म की भस्म हो एक क्षण में।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।7।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अंगूर अमरूद लाया।
महामोक्षसंपत्ति हेतू चढ़ाया।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक गंध आदि मिला अर्घ्य लाया।
महामंत्र नवकार को मैं चढ़ाया।।
णमोकार मंत्राक्षरों को जजूँ मैं।
महाघोर संसार दुःख से बचूँ मैं।।9।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

शांतीधारा मैं करूँ, तिहुँ जग शांती हेत।
भव-भव आतप शांत हो, पूजूँ भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मल्लिका पुष्प ले, पूजूँ मंत्र महान।
पुष्पांजलि से पूजते, सकलसौख्य करदान।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं। ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं। ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं।**

(108 सुगंधित श्वेत पुष्पों से या लवंग अथवा पीले तंदुलों से जाप्य करना)

जयमाला

–सोरठा–

पंचपरमगुरुदेव, नमूँ नमूँ नत शीश मैं।
करो अमंगलछेव, गाऊँ तुम गुणमालिका।।1।।

चाल–हे दीनबंधु.....

जैवंत महामंत्र मूर्तिमंत धरा में।
जैवंत परमब्रह्म शब्दब्रह्म धरा में।।
जैवंत सर्वमंगलों में मंगलीक हो।
जैवंत सर्वलोक में तुम सर्वश्रेष्ठ हो।।1।।

त्रैलोक्य में हो एक तुम्हीं शरण हमारे।
माँ शारदा भी नित्य ही तुम कीर्ति उचारे।।
विघ्नों का नाश होता है तुम नाम जाप से।
सम्पूर्ण उपद्रव नशे हैं तुम प्रताप से।।2।।

छ्यालीस सुगुण को धरें अरिहंत जिनेशा।
सब दोष अट्ठारह से रहित त्रिजग महेशा।।
ये घातिया को घात के परमात्मा हुए।
सर्वज्ञ वीतराग औ निर्दोष गुरु हुए।।3।।

जो अष्ट कर्म नाश के ही सिद्ध हुए हैं।
वे अष्ट गुणों से सदा विशिष्ट हुए हैं।।
लोकाग्र में हैं राजते वे सिद्ध अनन्ता।
सर्वार्थसिद्धि देते हैं वे सिद्ध महन्ता।।4।।

छत्तीस गुण को धारते आचार्य हमारे।
चउसंघ के नायक हमें भवसिंधु से तारें।।
पच्चीस गुणों युक्त उपाध्याय कहाते।
भव्यों को मोक्षमार्ग का उपदेश पढ़ाते।।5।।

जो साधु अट्ठाईस मूलगुण को धारते।
वे आत्म साधना से साधु नाम धारते।।
ये पंचपरमदेव भूतकाल में हुए।
होते हैं वर्तमान में भी पंचगुरु ये।।6।।

होंगे भविष्य काल में भी सुगुरु अनन्ते।
ये तीन लोक तीन काल के हैं अनन्ते।।
इन सब अनन्तानन्त की मैं वंदना करूँ।
शिवपथ के विघ्न पर्वतों की खण्डना करूँ।।7।।

इक ओर तराजू पे अखिल गुण को चढ़ाऊँ।
इक ओर महामंत्र अक्षरों को धराऊँ।।
इस मंत्र के पलड़े को उठा ना सके कोई।
महिमा अनन्त यह धरे ना इस सदृश कोई।।8।।

इस मंत्र के प्रभाव श्वान देव हो गया।
इस मंत्र से अनन्त का उद्धार हो गया।।
इस मंत्र की महिमा को कोई गा नहीं सके।
इसमें अनन्त शक्ति पार पा नहीं सके।।9।।

पाँचों पदों से युक्त मंत्र सारभूत है।
पैंतीस अक्षरों से मंत्र परमभूत है।।
पैंतीस अक्षरों के जो पैंतीस व्रत करें।
उपवास या एकाशना से सौख्य को भरें।।10।।

तिथि सप्तमी के सात पंचमी के पाँच हैं।
चौदश के चौदह नवमी के भी नव विख्यात हैं।।
इस विधि से महामंत्र की आराधना करें।
वे मुक्ति वल्लभा पती निज कामना वरें।।11।।

–दोहा–

यह विष को अमृत करे, भव-भव पाप विदूर।
पूर्ण ''ज्ञानमति'' हेतु मैं, जजूँ भरो सुख पूर।।12।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधान-पंचनमस्कारमंत्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

मंत्रराज सुखकार, आतम अनुभव देत है।
जो पूजें रुचिधार, स्वर्ग मोक्ष के सुख लहें।।13।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

।।इत्याशीर्वादः।।

(26) जिनसहस्रनाम पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

जिनवर की प्रथम दिव्य देशना, नंतर सुरपति अति भक्ती से।
निज विकसित नेत्र हजार बना, प्रभु को अवलोकें विक्रिय से।।
प्रभु एक हजार आठ लक्षणधारी सब भाषा के स्वामी।
शुभ एक हजार आठ नामों से, स्तुति करता वह शिवगामी।।

—दोहा—

एक हजार सु आठ ये, श्री जिननाम महान्।
उनकी मैं पूजा करूँ, करते इत आह्वान।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-चाल नंदीश्वर पूजा

सरयू नदि का शुचिनीर, सुवरण भृंग भरूँ।
मिल जावे भवदधि तीर, जिनपद धार करूँ।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर शुद्ध, चंदन संग घिसूँ।
जिनपद चर्चत अविरुद्ध, भव संताप नशूँ।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्जवल धौत, तंदुल पुंज धरूँ।
मिल जावे अक्षय सौख्य, प्रभु पद पूज करूँ।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जूही केवड़ा गुलाब, सुरभित सुमनों से।
पूजत छुट जाऊँ नाथ, भव भव भ्रमणों से।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरण पोली घृतपूर, हलुवा भर थाली।
पूजत हो अमृतपूर, मनरथ नहिं खाली।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, आरति करते ही।
भगता मन का तम जाल, ज्योती प्रगटे ही।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दस गंधी धूप सुगंध, खेऊँ अगनी में।
सब जलते कर्म प्रबंध, पाऊँ निजसुख मैं।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम फल सेब, अर्पण करते ही।
निज आतम सम्पत्ति लेव, फल से जजते ही।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत आदि, अर्घ्य बनाऊँ मैं।
अर्पण करते भव व्याधि, सर्व नशाऊँ मैं।।
शुभ एक हजार सु आठ, जिनवर नाम जजूँ।
कर कर नामावलि पाठ, सुखप्रद स्वात्म भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

सहस्र नाम को पूजहूँ, शांतीधारा देय।
सर्वसौख्य सम्पति मिले, आत्मसुधा बरसेय।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पारिजात के पुष्प बहु, सुरभित दिक् महकंत।
पुष्पांजलि अर्पण किये, आतम सुख विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - **ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारक चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा –

महातेज के धाम प्रभु, नमूँ नमूँ त्रयकाल।
एक हजार सु आठ तुम, नाममंत्र जयमाल।।1।।

चाल-शेर हे दीनबंधु......

जय जय जिनेन्द्र! तुम असंख्य नाम गुण भरें।
जय जय जिनेन्द्र! तुम अनंत सौख्य गुण भरें।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।2।।

हे नाथ! यद्यपि आप नाम वचन से कहें।
फिर भी वचन अगोचर मुनिगण तुम्हें कहें।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।3।।

तुम नाम संस्तवन सदा अभीष्ट को फले।
भगवन् तुम्हीं तो भक्तों के बंधु हो भले।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।4।।

स्वामिन्! जगत्प्रकाशी हो 'एक' ही तुम्हीं।
हो ज्ञान दर्श गुण से 'दोरूप' भी तुम्हीं।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।5।।

रत्नत्रयी शिवमार्ग से प्रभु 'तीनरूप' हो।
आनन्त्य चतुष्टय से प्रभु 'चाररूप' हो।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।6।।

हो पंच परमेष्ठी स्वरूप 'पाँचरूप' भी।
प्रभु पंचकल्याणक से भी 'पाँचरूप' ही।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।7।।

जीवादि छहों द्रव्य जानते 'छहरूप' हो।
प्रभु सात नयों को निरूप 'सातरूप' हो।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।8।।

सम्यक्त्व आदि आठ गुण से 'आठरूप' हो।
नव केवली लब्धी से आप 'नवस्वरूप' हो।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।9।।

अवतार दश महाबलादि दशस्वरूप हो।
हे ईश! दया कीजिए त्रैलोक्य भूप हो।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।10।।

मैं आप विविध नाम पुष्प गूँथ-गूँथ के।
स्तोत्र की माला बनाई पूजहूँ उससे।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।11।।

भगवन् प्रसन्न होय अनुग्रह करो मुझपे।
स्तोत्र से वच हों पवित्र शीश नमें से।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।12।।

प्रभु नाम स्मृतिमात्र से भाक्तिक पवित्र हों।
जो भक्ति से पूजा करें कल्याण पात्र हों।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।13।।

इस विध समवसरण में इंद्र ने स्तुति किया।
फिर श्रीविहार हेतु प्रभु से प्रार्थना किया।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।14।।

हे नाथ! भव्य धान्य पाप अनावृष्टि से।
सूखें उन्हें सींचो सुधर्म सुधावृष्टि से।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।15।।

भगवंत! आप विजय की उद्योग सूचना।
ये धर्मचक्र है तैयार शोभता घना।।

हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।16।।

हे देव! आप मोह शत्रु पे विजय किया।
शिवमार्ग के उपदेश का अवसर ये आ गया।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।17।।

जिनवर स्वयं तैयार श्रीविहार के लिए।
बस इंद्र की ये प्रार्थना नियोग के लिए।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।18।।

तत्क्षण समवसरण सभी विलीन हो गया।
इंद्रों ने प्रभु विहार का उत्सव महा किया।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।19।।

जय जय ध्वनी ऊँची उठी बाजे बजे घने।
संगीत गीत नृत्य करें देवगण घने।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।20।।

आकाश में अधर सुवर्ण कमल रच दिए।
सुरभित कमल पे नाथ चरण धरत चल दिए।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।21।।

गंधोद वृष्टि, पुष्पवृष्टि मंद पवन है।
अतिशय विभूति आप के विहार समय है।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।22।।

आरे हजार धर्मचक्र चमचमा रहा।
जिनराज आगे-आगे चले शोभता महा।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।23।।

हे देव! मेरी प्रार्थना को पूर्ण कीजिए।
'कैवल्यज्ञानमती' नाथ! तूर्ण[1] दीजिए।।
हे नाथ! तुम सहस्रनाम नित्य जो पढ़ें।
वे हों पवित्र बुद्धि मोक्षमहल में चढ़ें।।24।।

—घत्ता—

जय जिन नामावलि, स्तुति हारावलि,
जो भविजन कंठे धरहीं।
उन स्मृति शक्ती, क्षण क्षण बढ़ती,
'अतिशय ज्ञान करें सबहीं।।25।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकराणां अष्टोत्तरसहस्रनाममंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—गीताछंद—

जो भव्य श्रेष्ठ सहस्रनाम, सुअर्चना विधि व्रत करें।
वे पापकर्म सहस्र नाशें, सहस मंगल विस्तरें।।
'सज्ज्ञानमति' भास्कर उदित हो, हृदय की कलिका खिले।
बस भक्त के मन की सहस्रों, कामनाएँ भी फलें।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(27) चौंसठ ऋद्धि पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

चौबीस तीर्थंकर जगत में, सर्व का मंगल करें।
गुणरत्न गुरु गुण ऋद्धिधर, नित सर्व मंगल विस्तरें।।
गुणरत्न चौंसठ ऋद्धियाँ, मंगल करें निज सुख भरें।
मैं पूजहूँ आह्वान कर, मेरे अमंगल दुख हरें।।1।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-वसंततिलका छंद

रेवा नदी जल भराकर शुद्ध लाऊँ।
संपूर्ण कर्ममल दूर करो चढ़ाऊँ।।
बुद्धयादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।1।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरि केशर घिसूँ भरके कटोरी।
चर्चूं मिटे हृदय ताप सुआश पूरी।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।2।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान धवलाक्षत थाल में हैं।
धारूँ सुपुंज जिन सौख्य अखंड हो हैं।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।3।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला जुही कमल फूल खिले खिले हैं।
पूजूँ सदा सुयश सौख्य मिले भले हैं।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू पुआ घृत भरे पकवान लाऊँ।
क्षुद व्याधि नष्ट करने हित मैं चढ़ाऊँ।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।5।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जलती करती उजाला।
ज्ञानैक ज्योति भरती भ्रमतम निकाला।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।6।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ सुगंध वर धूप सुअग्नि संगी।
दुष्टाष्ट कर्म जलते करते सुगंधी।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।7।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अनार फल आम्र भराय थाली।
अर्पूं तुम्हें नहिं मनोरथ जाय खाली।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।8।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ कर स्वर्णिम पुष्प लेऊँ।
अर्घावतार करके निज रत्न लेऊँ।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।9।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

चौंसठ ऋद्धि समूह को, जलधारा से नित्य।
पूजत ही शांती मिले, चहुँसंघ में भी इत्य।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - **ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यो नमः।**

जयमाला

– सोरठा –

ऋद्धि उन्हीं के होय, यथाजात मुद्रा धरें।
नमूँ नमूँ नत होय, जिनमुद्रा की शक्ति हो।।1।।

– स्रग्विणी छंद –

धन्य हैं धन्य हैं धन्य हैं ऋद्धियाँ।
वंदते ही फलें ये सभी सिद्धियाँ।।
मैं नमूँ मैं नमूँ सर्व ऋद्धीधरा।
ऋद्धियों को नमूँ मैं नमूँ गणधरा।।2।।

बुद्धि ऋद्धी कही हैं अठारा विधा।
विक्रिया ऋद्धियाँ हैं सुग्यारा विधा।।
है क्रियाचारणा ऋद्धि नौभेद में।
ऋद्धि तप सात विध दीप्त तप आदि में।।3।।

ऋद्धि बल तीन विध शक्ति वर्धन करे।
औषधी आठ विध स्वास्थ्य वर्धन करे।।

ऋद्धि रस षट्विधा क्षीर अमृत स्रवे।
ऋद्धि अक्षीण दो भेद अक्षय धरें।।4।।

आठ विध ये महा ऋद्धि चौंसठ विधा।
भेद संख्यात होते सु अंतर्गता।।
बुद्धि ऋद्धी जजें बुद्धि अतिशय धरें।
विक्रिया पूजते विक्रिया बहु करें।।5।।

चारणी ऋद्धि आकाशगामी करे।
पुष्प जल पर चलें जीव भी ना मरें।।
दीप्ततप आदि ऋद्धी धरें जो मुनी।
कांति आहार बिन भी रहे उन घनी।।6।।

तप्ततप से कभी भी न नीहार हो।
शक्ति ऐसी जगत् सौख्य करतार जो।।
क्षीरस्रावी मधुस्रावी अमृतस्रवी।
इन वचो भी बने क्षीर अमृतस्रवी।।7।।

औषधी ऋद्धि से रुग्ण नीरोग हों।
साधु तनवायु से विष रहित स्वस्थ हों।।
ऋद्धि अक्षीण से अन्न अक्षय करें।
पूजते साधु को पुण्य अक्षय भरें।।8।।

—घत्ता—

जय जय सब ऋद्धी, गुणमणिनिद्धी,
पूजत ही सुखसिद्धि करें।
जय ''ज्ञानमती'' धर, नमें मुनीश्वर,
निज शिवपद सुख शीघ्र भरें।।9।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धीभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—चौबोल छंद—

जो भविजन श्रद्धा भक्ती से, चौंसठ ऋद्धी व्रत करते।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य संपति भरते।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवलज्ञानमती रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(28) तीर्थंकर पंचकल्याणक पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

वर पंचकल्याणक जगत् में, सर्वजन से वंद्य हैं।
त्रैलोक्य में अति क्षोभ कर, सुर इन्द्रगण अभिनंद्य हैं।।
मैं पंचमी गति प्राप्त हेतू, पंचकल्याणक जजूँ।
आह्वाननादी विधि करूँ, संपूर्ण कल्याणक भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-भुजंगप्रयात छंद

पयो सिंधु को नीर झारी भराऊँ।
प्रभो आपके पाद धारा कराऊँ।।
महा पंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंच संसार दुख से बचूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधीत चंदन कपूरादि वासा।
चढ़ाते तुम्हें सर्व संताप नाशा।।
महा पंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंच संसार दुख से बचूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पयोराशि के फेन सम तंदुलों को।
चढ़ाऊँ तुम्हें सौख्य अक्षय मिले जो।।
महा पंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंच संसार दुख से बचूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही केवड़ा चंपकादी सुमन हैं।
तुम्हें पूजते काम व्याधी शमन है।।
महा पंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंच संसार दुख से बचूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद लाडू भरा थाल लाऊँ।
क्षुधा डाकिनी नाश हेतू चढ़ाऊँ।।
महा पंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंच संसार दुख से बचूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणी दीप ज्योती भुवन को प्रकाशे।
करूँ आरती ज्ञान ज्योती प्रकाशे।।
महा पंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंच संसार दुख से बचूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनिपात्र में धूप खेऊँ दशांगी।
करम धूम्र फैले चहूँ दिक् सुगंधी।।
महा पंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंच संसार दुख से बचूँ मैं।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नरंगी मुसम्बी अनन्नास लाऊँ।
महा मोक्षफल हेतु आगे चढ़ाऊँ।।
महा पंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंच संसार दुख से बचूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादी वसू द्रव्य से थाल भर के।
चढ़ाऊँ तुम्हें अर्घ्य रत्नादि धर के।।
महा पंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंच संसार दुख से बचूँ मैं।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।
जिनपद में धारा करूँ, सकल संघ हितकार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य दुख अंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं पंचकल्याणकसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

तीन लोक की सम्पदा, करे हस्तगत भव्य।
तुम जयमाला कंठधर, पूरे सब कर्तव्य।।1।।

चाल-हे दीनबंधु......

जैवंत मुक्तिकन्त देवदेव हमारे।
जैवंत भक्त जन्तु भवोदधि से उबारे।।
हे नाथ! आप जन्म के छह मास ही पहले।
धनराज रत्नवृष्टि करें मातु के पहले।।1।।

माता की सेव करतीं श्री आदि देवियाँ।
अद्भुत अपूर्व भाव धरें सर्व देवियाँ।।
जब आप मात गर्भ में अवतार धारते।
तब इन्द्र सपरिवार आय भक्ति भार से।।2।।

प्रभु गर्भ कल्याणक महा उत्सव विधी करें।
माता-पिता की भक्ति से पूजन विधी करें।।
हे नाथ! आप जन्मते सुरलोक हिल उठे।
इन्द्रासनों के कम्प से आश्चर्य हो उठे।।3।।

इन्द्रों के मुकुट आप से ही आप झुके हैं।।
सुरकल्पवृक्ष हर्ष से ही फूल उठे हैं।।
वे सुरतरू स्वयमेव सुमन वृष्टि करे हैं।
तब इन्द्र आप जन्म जान हर्ष भरे हैं।।4।।

तत्काल इन्द्र सिंहपीठ से उतर पड़े।
प्रभु को प्रणाम करके बार-बार पग पड़ें।।
भेरी करा सब देव का आह्वान करे हैं।
जन्माभिषेक करने का उत्साह भरे हैं।।5।।

सुरराज आ जिनराज को सुरशैल ले जाते।
सुरगण असंख्य मिलके महोत्सव को मनाते।।

जब आप हो विरक्त देव सर्व आवते।
दीक्षा विधी उत्सव महामुद से मनावते।।6।।

जब घातिया को घात ज्ञान सम्पदा भरें।
तब इन्द्र आ अद्भुत समवसरण विभव करें।।
तुम दिव्य वच पियूष को पीते असंख्यजन।
क्रम से करें वे मुक्तिवल्लभा का आलिंगन।।7।।

जब आप मृत्यु जीत मुक्तिधाम में बसे।
सिद्ध्यंगना के साथ परमानन्द सुख चखें।।
सब इन्द्र आ निर्वाण महोत्सव मनावते।
प्रभु पंचकल्याणकपती को शीश नावते।।8।।

हे नाथ! आप कीर्ति कोटि ग्रंथ गा रहे।
इस हेतु से ही भव्य आप शरण आ रहे।।
मैं आप शरण पायके सचमुच कृतार्थ हूँ।
बस 'ज्ञानमती' पूर्ण होने तक ही दास हूँ।।9।।

–दोहा –

पाँच कल्याणक पुण्यमह, हुये आपके नाथ।
बस एकहि कल्याण मुझ, कर दीजे हे नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो पंचकल्याणक महापूजा महोत्सव को करें।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर, पंच लब्धी को धरें।।
फिर पंचकल्याणक अधिप हो, मुक्तिकन्या वश करें।
"सुज्ञानमति" रविकिरण से, भविजन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(29) नवदेवता पूजन

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिन-धर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

–सोरठा–

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति......)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारें।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।

कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

–दोहा –

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं......।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(30) नवग्रह शांति पूजा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

(स्थापना)-कुसुमलता छंद

काल अनादी से कर्मों के, ग्रह ने मुझे सताया है।
उनका निग्रह करने का अब, भाव हृदय में आया है।।
इसीलिए ग्रह शान्ती हेतू, पूजा पाठ रचाया है।
तीर्थंकर प्रभु के अर्चन को, मैंने थाल सजाया है।।1।।

–दोहा –

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण महान।
अष्टद्रव्य से पूर्व है, यह विधि हुई प्रधान।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीनवतीर्थंकर जिनाः! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीनवतीर्थंकर जिनाः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीनवतीर्थंकर जिनाः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक-शंभु छंद

मुनिमनसम निर्मल जल लेकर, प्रभु पद में धारा करना है।
जर जन्म मरण को निर्बल कर, अब आत्मचिन्तवन करना है।।
नव तीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहार सिद्धि के साथ-साथ, परमार्थ सिद्धि भी करना है।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीनवतीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रकर केशर की, सुरभी को और बढ़ाना है।
श्रद्धा से उसको जिनवर के, चरणों में आज चढ़ाना है।।
नव तीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहार सिद्धि के साथ-साथ, परमार्थ सिद्धि भी करना है।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्री नवतीर्थंकरेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम श्वेत तंदुलों को, गजमोती समझ चढ़ाना है।
अपने आतम के छिपे गुणों के, मोती अब प्रगटाना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहार सिद्धि के साथ-साथ, परमार्थ सिद्धि भी करना है।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरकल्पवृक्ष के पुष्प समझ, यह पुष्प अंजली भरना है।
जिनवर के सम्मुख श्रद्धा से, अब इन्हें समर्पित करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी करना है।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतमय इन पकवानों में, दिव्यामृत अनुभव करना है।
जिनवर चरणों में भेंट चढ़ा, क्षुधरोग निवारण करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी करना है।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के लघु दीपक में रत्नों का, दीप प्रकल्पित करना है।
प्रभु की आरति करके अन्तर का, दीप प्रज्वलित करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी करना है।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन अगरू की धूप में मलयागिरि का अनुभव करना है।
प्रभु सम्मुख अग्नी में खेकर, अब नष्ट कर्म सब करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी करना है।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम आदि, फल से प्रभु अर्चन करना है।
इनमें ही कल्पतरू के सच्चे, फल का अनुभव करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी करना है।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अष्ट द्रव्य का थाल प्रभू को, अर्घ्य समर्पित करना है।
''चन्दनामती'' नवग्रह शांती के, लिए अर्चना करना है।।
नवतीर्थंकर की पूजन कर, नवग्रह का निग्रह करना है।
व्यवहारसिद्धि के साथ-साथ, परमार्थसिद्धि भी करना है।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

नवग्रहों की तपन से, है संतप्त शरीर।
शांतीधारा करन से, बनूँ शीघ्र अशरीर।।

शांतये शांतिधारा।

आत्मसुरभि के हेतु ले, पुष्पांजलि का थाल।
पुष्प बिखेरूँ प्रभु निकट, ग्रह हों मेरे शांत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

तर्ज-बाबुल की दुआएँ...............

हे नाथ! आपके चरणों में, जयमाल गूँथकर लाए हम।
ग्रह शांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।टेक.।।

कभी तन में व्याधि हुई मेरे, सिर आँख कान में दर्द हुआ।
कभी उदर में शूल उठी मेरे, कभी हाथ पैर में दर्द हुआ।।
उस बेचैनी में भी प्रभुवर, तुमको नहिं कभी भुलाएँ हम।
ग्रह शांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।1।।

व्यापार में हानी हुई कभी, कभि चोरों ने धन लूट लिया।
कभी छापा पड़ने के कारण, मन में संताप व शोक हुआ।।
इन हानि-लाभ के क्षण में भी, जिनधर्म में ध्यान लगाएँ हम।
ग्रह शांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।2।।

कुल पाँच करोड़ व अड़सठ लाख, निन्यानवे सहसरु पाँच शतक।
इक्यासी रोगों की संख्या, हो सकती तन में सर्वाधिक।।
नरकों में प्रगट होते ये सब, उस नर्क में कभी न जाएँ हम।
ग्रह शांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।3।।

नभ में रहने वाले नवग्रह, मानव के संग जब लग जाते।
तब कर्म असाता के कारण, वे मानव नाना दुःख पाते।।
तुम पूजन फल से उन सबको, शुभरूप सहज कर पाएँ हम।
ग्रहशांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।4।।

रवि, शशि, मंगल, बुध, गुरु एवं, वे शुक्र, शनी कहलाते हैं।
राहू, केतू मिल नवग्रह ये, ज्योतिष का चक्र चलाते हैं।।
इनमें से अशुभ ग्रहों से प्रभु!, नहिं कभी सताए जाएँ हम।
ग्रहशांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।5।।

''चन्दनामती'' बस इसीलिए, यह पूजा पाठ रचाया है।
पूजा के माध्यम से प्रभुवर, भावों को शुद्ध बनाया है।।
हो चरम लक्ष्य की सिद्धि नाथ! पूजन फल ऐसा पाएँ हम।
ग्रहशांति हेतु पदकमलों में, इक थाल अर्घ्य का लाए हम।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारकश्रीनवतीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

नवग्रह पूजन से सभी, ग्रह हो जाते शांत।
करो अर्चना से सभी, भव की व्यथा समाप्त।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः ।।

(31) तीस चौबीसी पूजा

–गीता छंद –

मंगलमयी सब लोक में, उत्तम शरण दाता तुम्हीं।
वर तीस चौबीसी जिनेश्वर, सात शत औ बीस ही।।
नरलोक में ये भूत संप्रति, भावि तीर्थंकर कहे।
पण भरत पण ऐरावतों में, पंच कल्याणक लहे।।1।।

–दोहा –

आवो आवो नाथ! अब, यहाँ विराजो आन।
आह्वानन विधि से सदा, मैं पूजूँ अघ हान।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं-स्रग्विणी छंद –

सिंधु को नीर भृंगार में लायके।
धार देऊँ प्रभो पाद में आयके।।
तीस चौबीस तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सौगंध कर्पूर केशर मिली।
पाद चर्चत सम्यक्त्व कलिका खिली।।
तीस चौबीस तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्ध के फेन सम स्वच्छ अक्षत लिये।
पुंज को धारते स्वात्म संपत लिये।।
तीस चौबीस तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

केवड़ा मोगरा पुष्प अरविंद हैं।
नाथ पद पूजते कामशर भंग है।।
तीस चौबीस तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग लाडू इमरती कनक थाल में।
पूजते भूख व्याधी हरूँ हाल में।।
तीस चौबीस तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण के पात्र में ज्योति कर्पूर की।
नाथ की आरती मोह को चूरती।।
तीस चौबीस तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते।
कर्म की भस्म हो नाथ पद सेवते।।
तीस चौबीस तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।7।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर केला अनंनास ले।
नाथ पद अर्चते मुक्तिकांता मिले।।
तीस चौबीस तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।8।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि वसु द्रव्य ले थाल में।
अर्घ्य अर्पण करूँ नाय के भाल मैं।।
तीस चौबीस तीर्थंकरों को जजूँ।
जन्म व्याधी हरूँ सर्व दुख से बचूँ।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

तीर्थंकर परमेश, तिहुंजग शांतीकर सदा।
चउसंघ शांती हेत, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते दश दिशा।
तीर्थंकर पदपद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

– दोहा –

अनंत दर्शन ज्ञान औ, सुख औ वीर्य अनंत।
अनंत गुण के तुम धनी, नमूँ नमूँ भगवंत।।1।।

(चाल-हे दीनबंधु......)

जैवंत तीर्थंकर अनंत सर्वकाल के।
जैवंत धर्मवंत न हों वश्य काल के।।
जै पाँच भरत पाँच ऐरावत में हो रहे।
जै भूत वर्तमान औ भविष्य के कहे।।1।।

इस जंबूद्वीप में हैं भरत और ऐरावत।
इन दो ही क्षेत्र में सदा हो काल परावृत।।
जो पूर्व धातकी औ अपर धातकी कहे।
इन दोनों में भी भरत ऐरावत सदा कहे।।2।।

वर पुष्करार्ध पूर्व अपर में भी दोय दो।
हैं क्षेत्र भरत और ऐरावत प्रसिद्ध जो।।
इस ढाई द्वीप में प्रधान क्षेत्र दश कहे।
षट्काल परावर्तनों से चक्रवत् रहें।।3।।

इनके चतुर्थकाल में तीर्थेश जन्मते।
जो भूत वर्तमान भावि काल धरंते।।
इस विध से तीस बार हों चौबीस जिनेश्वर।
ये सात सौ हैं बीस कहे धर्म के ईश्वर।।4।।

इनकी त्रिकाल बार-बार वंदना करूँ।
मैं भक्तिभाव से सदैव अर्चना करूँ।।
संपूर्ण कर्मपर्वतों की खण्डना करूँ।
निज 'ज्ञानमती' पाय फेर जन्म ना धरूँ।।5।।

– घत्ता –

जय जय तीर्थंकर, धर्मचक्रधर,
भवसंकट हर तुमहिं भजूँ।
जय तीन रतनधर, निजसंपतिवर,
अनुपम सुख को नित्य चखूँ।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

– गीता छंद –

जो तीस चौबीसी महा-पूजा महोत्सव को करें।
वर पंचकल्याणक अधिप, जिननाथ के गुण उच्चरें।।
वे पंचपरिवर्तन मिटाकर, पंचकल्याणक भरें।
निर्वाणलक्ष्मी 'ज्ञानमति' युत, पाय निजसंपति वरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(32) बीस तीर्थंकर पूजा

– स्थापना–गीताछंद –

सीमंधरादिक बीस तीर्थंकर विदेहों में रहें।
जिनकी सभा में आज भी, भविवृंद निज कल्मष दहें।।
उन विद्यमान जिनेश की, मैं नित करूँ आराधना।
पूजन करूँ अतिभक्ति से, निजतत्त्व की ही साधना।।1।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं – स्रग्विणी छंद

पद्मद्रह का सलिल गंधवासित लिया।
नाथ चरणाब्ज में तीन धारा किया।।

बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध कर्पूर चंदन घिसा के लिया।
आप पादाब्ज में चर्च के अर्चिया।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कौमुदी धौत तंदुल लिये थाल में।
आप पादाग्र में पुंज को धार मैं।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मौलसिरि मालती पुष्प ताजे लिये।
कामशर के जयी आपको अर्पिये।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूड़ियाँ लड्डुकादी भरे थाल में।
पूजते भूख व्याधी नशे हाल में।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति कर्पूर की ध्वांतहर जगमगे।
दीप से अर्चते ज्ञान ज्योती जगे।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध खेऊं सदा अग्नि में।
कर्म संपूर्ण हों भस्म तुम भक्ति में।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर नींबू बिजौरा लिया।
मोक्षफलहेतु प्रभु आपको अर्पिया।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य में रत्न सुंदर मिले हैं भले।
पूजते आपको स्वात्म निधियाँ मिलें।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतीधारा करूँ, नाथ पादाब्ज में।
शांति आत्यंतिकी, शीघ्र हो नाथ में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कुंद कल्हार जूही, चमेली खिले।
पुष्प अंजलि करूँ, सौख्य संपत मिले।।11।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य-कुसुमलता छंद–

ढाई द्वीप में पाँच मेरु, संबंधित पाँच विदेह महान।
प्रत्येक में चार चार तीर्थंकर विद्यमान सुखखान।।
पंचकल्याणक के सब स्वामी, पंचपरावर्तन से दूर।
मैं पंचांग नमूँ प्रभु करिये, पंचमगति के सुख भरपूर।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभु-ऋषभानन-अनंतवीर्य-सूरिप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधार-चंद्रानन-चंद्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमीप्रभु-वीरसेन-महाभद्र-देवयश-अजितवीर्यपर्यंतविंशति-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीसीमंधरादिविद्यमान-विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–पंच चामर छंद–

जयो जयो जयो जिनेंद्र इंद्रवृंद बोलते।
त्रिलोक में महागुरु सु आप नाम तोलते।।
सुधन्य धन्य धन्य आप साधुवृंद बोलते।
जिनेश आप भक्त ही तो निज किवाड़ खोलते।।1।।

समोसरण में आपके महाविभूतियाँ भरी।
अनेक ऋद्धि सिद्धियाँ सुआप पास में खड़ीं।।
अनंत अंतरंग गुण समूह आप में भरे।
गणीन्द्र औ सुरेंद्र चक्रि आप संस्तुती करें।।2।।

हरिन्मणी के पत्र पद्मराग के सुपुष्प हैं।
अशोक वृक्ष देखते समस्त शोक अस्त हैं।।
अनेक देववृंद पुष्पवृष्टि आप पे करें।
सुगंध वर्ण वर्ण के सुमन खिले खिले गिरें।।3।।

जिनेश आपकी ध्वनी अनक्षरी सुदिव्य है।
समस्त भव्य कर्ण में करे सुअर्थ व्यक्त है।।
न देशना कि चाह है न तालु ओंठ पुट हिलें।
असंख्य जीव के धुनी से चित्तपद्मिनी खिलें।।4।।

सुचामरों कि पंक्तियाँ ढुरें सुसूचना करें।
नमें तुम्हें सुभक्त वे हि ऊर्ध्व में गमन करें।।
सुसिंहपीठ आपका अनेक रत्न से जड़ा।
विराजते सुआप हैं अतः महत्त्व है बढ़ा।।5।।

प्रभासुचक्र कोटि सूर्य से अधिक प्रभा धरे।
समस्त भव्य के उसी में सात भव दिखा करें।।
सु देवदुंदुभी सदा गंभीर नाद को करे।
असंख्य जीव का सुचित्त खींच के वहाँ करे।।6।।

सफेद छत्र तीन जो जिनेश शीश पे फिरें।
प्रभो त्रिलोकनाथ आप सूचना यही करें।।
सुप्रातिहार्य आठ ये हि बाह्य की विभूतियाँ।
सुरेश ने रचे तथापि आप पुण्य राशियाँ।।7।।

प्रभो तुम्हीं महान मुक्ति बल्लभापती कहे।
प्रभो तुम्हीं प्रधान ईश सर्व विश्व के कहे।।
प्रभो तुम्हें सदा नमें सु भक्ति आप में धरें।
अनंतकाल तक वहीं अनंत सौख्य को भरें।।8।।

–दोहा–

तुम गुण सूत्र पिरोय स्रज, विविध वर्णमय फूल।
धरें कंठ उन 'ज्ञानमति', लक्ष्मी हो अनुकूल।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो विहरमाण जिनेन्द्र बीसों, का सदा अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का, नित्य संवर्द्धन करें।।
इस लोक के सुख भोग के, फिर सर्वकल्याणक धरें।
स्वयमेव केवल 'ज्ञानमति' हो, मुक्तिलक्ष्मी वश करें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(33) सम्मेदशिखर पूजन

–अथ स्थापना- शंभु छन्द –

गिरिवर सम्मेदशिखर पावन, श्रीसिद्धक्षेत्र मुनिगण वंदित।
सब तीर्थंकर इस ही गिरि से, होते हैं मुक्तिवधू अधिपति।।
मुनिगण असंख्य इस पर्वत से, निर्वाण धाम को प्राप्त हुये।
आगे भी तीर्थंकर मुनिगण का, शिवथल यह मुनिनाथ कहें।।1।।

–दोहा –

सिद्धिवधू प्रिय तीर्थंकर, मुनिगण तीरथराज।
आह्वानन कर मैं जजूँ, मिले सिद्धिसाम्राज्य।।2।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

चाल-नन्दीश्वर पूजा

भव भव में शीतल नीर, जी भर खूब पिया।
नहिं मिटी तृषा की पीर, आखिर ऊब गया।।

सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।1।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भव में त्रयविध ताप, अतिशय दाह करे।
चंदन से पूजत आप, अतिशय शांति भरे।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।2।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! सर्वसुखहेतु, सबकी शरण लिया।
अब अक्षय सुख के हेतु, तुम पद पुंज किया।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।3।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु वर्ण वर्ण के फूल, चरण चढ़ाऊँ मैं।
मिल जाये भवदधिकूल, समसुख पाऊँ मैं।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।4।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी पेड़ा पकवान, नित्य चढ़ाऊँ मैं।
हो क्षुधा व्याधि की हान, निजसुख पाऊँ मैं।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।5।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरज्योति उद्योत, आरति करते ही।
हो ज्ञानज्योति उद्योत, भ्रम तम विनशे ही।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।6।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप अग्नि में खेय, कर्म जलाऊँ मैं।
जिनपद पंकज को सेय, सौख्य बढ़ाऊँ मैं।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।7।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लेकर बहुफल की आश, बहुत कुदेव जजे।
अब एक मोक्षफल आश, फल से तीर्थ जजें।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।8।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अर्घ रजत के फूल, लेकर नित्य जजूँ।
होवे त्रिभुवन अनुकूल, तीरथराज जजूँ।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लाके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।9।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

झरने का अतिशीत जल, शांतीधार करंत।
त्रिभुवन में हो सुख अमल, सर्वशांति विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब ले, तीर्थराज को नित्य।
पुष्पांजली चढ़ावते, मिले सर्वसुख इत्य।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक टोंक अर्घ

–सोरठा–

तीर्थराज सुर वंद्य, पूजत निज सुख संपदा।
मिले ज्ञान आनंद, पुष्पांजलि कर मैं जजूँ।।1।।

(इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन

सिद्धवर कूट नं. 1

–शंभु छंद–

श्री अजितनाथ जिन कूट सिद्धवर से निर्वाण पधारे हैं।
उन संघ हजार महामुनिगण, हन मृत्यू मोक्ष सिधारे हैं।।
इससे ही एक अरब अस्सी, कोटी अरु चौवन लाख मुनी।
निर्वाण गये सबको पूजूँ, मैं पाऊँ निज चैतन्य मणी।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
बत्तिस कोटि उपवास फल, अनुक्रम से निज राज्य।।1।।

ॐ ह्रीं सिद्धवरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल कूट नं. 2

श्री संभव जिनवर धवलकूट से, हजार मुनिसह मोक्ष गये।
इससे नौ कोड़िकोड़ि बाहत्तर, लाख बियालिस हजार ये।।
मुनि पाँच शतक मुनिराज सर्व, निर्वाण धाम को प्राप्त किये।
इन सबके चरण कमल पूजूँ, निजज्ञान ज्योति हो प्रगट हिये।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
ब्यालिस लाख उपवास फल, अनुक्रम से शिवराज्य।।2।।

ॐ ह्रीं धवलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित सम्भव नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द कूट नं. 3

अभिनंदन जिन आनंद कूट से, हजार मुनिसह सिद्ध बने।
बाहत्तर कोड़िकोड़ि सत्तर, कोटि मुनि सत्तर लाख बने।।
ब्यालीस सहस अरु सातशतक, मुनि यहाँ से मोक्ष पधारे हैं।
इन सबके चरण कमल वंदूँ, ये सबको भवदधि तारे हैं।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक लाख उपवास फल, मिले स्वात्म सुख नित्य।।3।।

ॐ ह्रीं आनन्दकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल कूट नं. 4

श्री सुमतिनाथ अविचल सुकूट से, सहस साधु सह मोक्ष गये।
इक कोड़ि कोड़ि चौरासि कोटि, बाहत्तर लाख महामुनि ये।।
इक्यासी सहस सात सौ, इक्यासी मुनि इससे मोक्ष गये।
इन सबके चरण कमल पूजूँ, हो शांति अलौकिक प्रभो! हिये।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि बत्तीस लख, मिले सुफल उपवास।।4।।

ॐ ह्रीं अविचलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहन कूट नं. 5

श्री पद्म प्रभू मोहन सुकूट से, तीन शतक चौबिस मुनिसह।
निर्वाण पधारे आत्मसुधारस, पीते मुक्ति वल्लभा सह।।
इससे निन्यानवे कोटि सत्यासी, लाख तेतालिस सहस तथा।
मुनि सातशतक सत्ताइस सब, शिव पहुँचे पूजत हरूँ व्यथा।।

–दोहा –

जो वंदे इस टोंक को, स्वर्ग मोक्ष फल लेय।
एक कोटि उपवास फल, तत्क्षण उन्हें मिलेय।।5।।

ॐ ह्रीं मोहनकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभास कूट नं. 6

जिनवर सुपार्श्व सुप्रभासकूट से, पाँच शतक मुनि साथ लिये।
उनचास कोटिकोटि चौरासी, कोटि सुबत्तिस लाखसु ये।।
मुनि सात सहस सात सौ ब्यालिस, कर्मनाश शिवनारि वरी।
मैं सबके चरण कमल पूजूँ, मेरी होवे शुभ पुण्य घड़ी।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
बत्तिस कोटि उपवास फल, मिले मोक्ष सुख राज्य।।6।।

ॐ ह्रीं प्रभासकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललित कूट नं. 7

श्री चंद्रनाथ निज ललितकूट से, सहस मुनी सह मोक्ष गये।
इससे नव सौ चौरासि अरब, बाहत्तर कोटि अस्सि लख ये।।
चौरासि हजार पाँच सौ पंचानवे, साधुगण सिद्ध हुये।
इनके चरणों में बार-बार, प्रणमूँ शिव सुख की आश लिये।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
छ्यानवे लाख उपवास फल, मिले सरें सब काज।।7।।

ॐ ह्रीं ललितकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनि-सहितचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ कूट नं. 8

श्री पुष्पदंत सुप्रभ सुकूट से, सहस साधु सह सिद्ध हुये।
इससे ही इक कोड़ाकोड़ी, निन्यानवे लाख महामुनि ये।।
पुनि सात सहस चार सौ अस्सी, मुनी मोक्ष को पाये हैं।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकर के, ये गुण अनंत निज पाये हैं।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक को, जो वंदे कर जोड़।
एक कोटि उपवास फल, लहें विघ्न घनतोड़।।8।।

ॐ ह्रीं सुप्रभकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-पुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत्वर कूट नं. 9

श्री शीतलजिन विद्युत सुकूट से, सहस साधुसह मोक्ष गये।
इससे अठरा कोड़ाकोड़ी, ब्यालीस कोटि साधुगण ये।।
बत्तीस लाख ब्यालिस हजार, नव शतक पाँच मुनि मोक्ष गये।
इनके चरणारविंद पूजूँ, परमानंद सुख की आश लिये।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से निज साम्राज्य।।9।।

ॐ ह्रीं विद्युत्वरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकुल कूट नं. 10

श्रेयांस प्रभू संकुल सुकूट से, एक सहस मुनि के साथे।
निर्वाण पधारे परम सौख्य को, प्राप्त किया भवरिपु घाते।।
इससे छ्यानवे कोटिकोटि, छ्यानवे कोटि छ्यानवे लक्ष।
नव सहस पाँच सौ ब्यालिस मुनि, शिव गये जजूँ कर चित्त स्वच्छ।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, मिले पुनः शिवराज।।10।।

ॐ ह्रीं संकुलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवीर कूट नं. 11

श्री विमल जिनेंद्र सुवीर कूट से, छह सौ मुनि सह सिद्ध हुये।
इससे सत्तर कोड़ा कोड़ी अरु, साठ लाख छह सहस हुये।।
मुनि सात शतक ब्यालिस मुनी, सब कर्मनाश शिवधाम गये।
उन सबके चरण कमल पूजूँ, मेरे सब कारज सिद्ध भये।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से शिव साम्राज्य।।11।।

ॐ ह्रीं सुवीरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभू कूट नं. 12

वर कूट स्वयंभू से अनंत जिन, निज अनंत पद प्राप्त किया।
उन साथ सात हज्जार साधु ने, कर्मनाश निज राज्य लिया।।
इससे छ्यानवे कोटिकोटि, सत्तर करोड़ मुनि मोक्ष गये।
पुनि सत्तर लाख सत्तर हजार, अरु सात शतक मुनि मुक्त भये।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
नव करोड़ उपवास फल, क्रम से शिव साम्राज्य।।12।।

ॐ ह्रीं स्वयंभूकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-अनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदत्त कूट नं. 13

श्री धर्मनाथ जिन सुदत्त कूट से, कर्मनाश कर मोक्ष गये।
उनके साथ आठ सौ इक मुनि, पूर्ण सौख्य पा मुक्त भये।।
उससे उनतिस कोड़ा कोड़ी, उन्निस कोटी साधू पूजूँ।
नौ लाख नौ सहस सात शतक, पंचानवे मुक्त गये पूजूँ।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से अनुपम सिद्धि।।13।।

ॐ ह्रीं सुदत्तकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंदप्रभ कूट नं. 14

श्री शांतिनाथ जिन कुंद कूट से, नव सौ मुनि सह मुक्ति गये।
नव कोटि कोटि नव लाख तथा, नव सहस व नौ सौ निन्यानवे।।
इस ही सुकूट से मोक्ष गये, इन सबके चरण कमल वंदूँ।
प्रभु दीजे परम शांति मुझको, मैं शीघ्र कर्म अरि को खंडूँ।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक कोटि उपवास फल, मिले ज्ञान सुख नित्य।।14।।

ॐ ह्रीं कुंदप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानधर कूट नं. 15

–शंभु छन्द –

श्री कुंथुनाथ जिन कूट ज्ञानधर, से निर्वाण पधारे हैं।
उन साथ में इक हजार साधू, सब कर्मनाश गुणधारे हैं।।
इससे छ्यानवे कोड़ा कोड़ी, छ्यानवे कोटि बत्तीस लाख।
छ्यानवे सहस सात सौ ब्यालिस, शिव पहुँचे मुनि पूजूँ आज।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक को, जो वंदे सिर नाय।
एक कोटि उपवास फल, लहे स्वात्मनिधि पाय।।15।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाटक कूट नं. 16

श्री अरहनाथ नाटक सुकूट से, सहस साधु सह मुक्ति गये।
इस ही से निन्यानवे कोटि, निन्यानवे लाख महामुनि ये।।
नव सौ निन्यानवे सर्व साधु, निर्वाण पधारे पूजूँ मैं।
सम्यक्त्व कली को विकसित कर, संपूर्ण दुःखों से छूटूँ मैं।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
छ्यानवे कोटि उपवास फल, पाय लहूँ निजराज।।16।।

ॐ ह्रीं नाटककूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-अरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संबल कूट नं. 17

श्री मल्लिनाथ संबल सुकूट से, मोक्ष गये सब कर्म हने।
मुनि पाँच शतक प्रभु साथ मुक्ति को, प्राप्त किया गुण पाय घने।।
इस ही से छ्यानवे कोटि महामुनि, सर्व अघाती घाता था।
मैं परमानंदामृत हेतू इन पूजूँ गाऊँ गुण गाथा।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक को, वंदूँ बारंबार।
एक कोटि प्रोषधमयी, फल उपवास जु सार।।17।।

ॐ ह्रीं संबलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-मल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जर कूट नं. 18

श्री मुनिसुव्रत निर्जरसुकूट से, सहस साधु सह मुक्ति गये।
इससे निन्यानवे कोटिकोटि, सत्यानवे कोटि महामुनि ये।।
नौ लाख नौ सौ निन्यानवे सब, मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुये।
हम इनके चरणों को पूजें, निज समतारस पीयूष पियें।।

–दोहा –

कोटि प्रोषध उपवास फल, टोंक वंदते जान।
क्रम से सब सुख पायके, अंत लहें निर्वाण।।18।।

ॐ ह्रीं निर्जरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मित्रधर कूट नं. 19

–दोहा –

नमिजिनवर कूट मित्रधर से, इक सहस साधु सहमुक्ति गये।
इससे नव सौ कोड़ाकोड़ी, इक अरब लाख पैंतालिस ये।।
मुनि सात सहस नौ सौ ब्यालिस, सब सिद्ध हुए उनको पूजूँ।
निज आत्म सुधारस पान करूँ, दुःख दारिद संकट से छूटूँ।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक की, करें वंदना भव्य।
एक कोटि उपवास फल, लहें नित्य सुख नव्य।।19।।

ॐ ह्रीं मित्रधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवर्णभद्र कूट नं. 20

श्री पार्श्व सुवर्णभद्र कूट से, छत्तिस मुनि सह मुक्ति गये।
इससे ही ब्यासी कोटि चुरासी, लाख सहस पैंतालिस ये।।
पुनि सात शतक ब्यालीस मुनी, सब कर्मनाश शिवधाम गये।
उन सबको पूजूँ भक्ती से, इससे मनवांछित पूर्ण भये।।

–दोहा –

भाव सहित इस टोंक को, वंदूँ बारंबार।
सोलह कोटि उपवास फल, मिले भवोदधि पार।।20।।

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभदेव भगवान की टोंक नं. 21

–शेर छन्द –

कैलाशगिरि से ऋषभदेव मुक्ति पधारे।
उन साथ मुनि दस हजार मोक्ष सिधारे।।
मैं बार बार प्रभूपाद वंदना करूँ।
निजात्म तत्त्व ज्ञानज्योति से हृदय भरूँ।।21।।

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य भगवान की टोंक नं. 22

चंपापुरी से वासुपूज्य मोक्ष गये हैं।
उन साथ छह सौ एक साधु मुक्त भये हैं।।
इनके पदारविंद को मैं भक्ति से नमूँ।
निज सौख्य अतीन्द्रिय लहूँ संसार सुख वमूँ।।22।।

ॐ ह्रीं चंपापुरीक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित-वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ भगवान की टोंक नं. 23

गिरनार से नेमी प्रभू निर्वाण गये हैं।
शंबू प्रद्युम्न आदि मुनि मुक्त भये हैं।।
ये कोटि बाहत्तर व सात सौ मुनी कहे।
इन सबकी वंदना करूँ ये सौख्यप्रदकहे।।23।।

ॐ ह्रीं ऊर्जयंतगिरिक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितनेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान महावीर की टोंक नं. 24

पावापुरी सरोवर से वीरप्रभू जी।
निज आत्म सौख्य पाया निर्वाण गये जी।।
इनके चरण कमल की मैं वंदना करूँ।
संपूर्ण रोग दुःख की मैं खंडना करूँ।।24।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर कूट नं. 25

चौबीस जिनेश्वर के गणीश्वर उन्हें जजूँ।
चौदह शतक उनसठ[1] कहे उन सबको मैं भजूँ।।
ये सर्व ऋद्धिनाथ रिद्धि सिद्धि प्रदाता।
मैं अर्घ चढ़ाके जजूँ ये मुक्ति प्रदाता।।25।।

ॐ ह्रीं वृषभसेनादिगौतमान्त्य सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शंभु छन्द—

नंदीश्वर द्वीप बना कृत्रिम, उसमें बावन जिनमंदिर हैं।
इनमें जिनप्रतिमाएँ मनहर, उनकी पूजा सब सुखकर हैं।।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, संसार भ्रमण का नाश करूँ।
निज आत्म सुधारस पीकरके, निज में ही स्वस्थ निवास करूँ।।26।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर का शुभ समवसरण, अतिशायी सुंदर शोभ रहा।
श्री गंधकुटी में तीर्थंकर प्रभु, राज रहें मन मोह रहा।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, तीर्थंकर को जिनबिंबों को।
सब रोग शोक दारिद्र हरूँ, पा जाऊँ निज गुणरत्नों को।।27।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितसर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ-शंभु छन्द—

गिरिवर सम्मेदशिखर से ही, अजितादि बीस तीर्थंकर जिन।
निज के अनन्त गुण प्राप्त किये, मैं उन्हें नमूँ पूजूँ निशदिन।।
यह ही अनादि अनिधन चौबीसों, जिनवर की निर्वाणभूमि।
मुनि संख्यातीत मुक्तिथल हैं, पूजत मिलती निर्वाणभूमि।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिक सर्वतीर्थंकरमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

जयमाला

—दोहा—

चिन्मूरति चिंतामणि, चिन्मय ज्योतीपुंज।
गाऊँ गुणमणिमालिका, चिन्मय आतमकुंज।।1।।

—शंभु छन्द—

जय जय सम्मेदशिखर पर्वत, जय जय अतिशय महिमाशाली।
जय अनुपम तीर्थराज पर्वत, जय भव्य कमल दीधित[1] माली।।
जय कूट सिद्धवर धवलकूट, आनंदकूट अविचलसुकूट।
जय मोहनकूट प्रभासकूट, जय ललितकूट जय सुप्रभकूट।।2।।

जय विद्युत संकुलकूट सुवीरकूट स्वयंभूकूट वंद्य।
जय जय सुदत्तकूट शांतिप्रभ, कूट ज्ञानधरकूट वंद्य।।
जय नाटक संबलकूट व निर्जर, कूट मित्रधरकूट वंद्य।
जय पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि, जयसुवरणभद्रसुकूट वंद्य।।3।।

जय अजितनाथ संभव अभिनंदन, सुमति पद्मप्रभ जिन सुपार्श्व।
चंदाप्रभु पुष्पदंत शीतल, श्रेयांस विमल व अनंतनाथ।।
जय धर्म शांति कुंथू अरजिन, जय मल्लिनाथ मुनिसुव्रत जी।
जय नमि जिन पार्श्वनाथ स्वामी, इस गिरि से पाई शिवपदवी।।4।।

कैलाशगिरी से ऋषभदेव, श्री वासुपूज्य चंपापुरि से।
गिरनारगिरी से नेमिनाथ, महावीर प्रभू पावापुरि से।।
निर्वाण पधारे चउ जिनवर, ये तीर्थ सुरासुर वंद्य हुए।
हुंडावसर्पिणी के निमित्त ये, अन्यस्थल से मुक्त हुए।।5।।

जय जय कैलाशगिरी चंपा, पावापुरि ऊर्जयंत पर्वत।
जय जय तीर्थंकर के निर्वाणों, से पवित्र यतिनुत पर्वत।।
जय जय चौबीस जिनेश्वर के, चौदह सौ उनसठ गुरु गणधर।
जय जय जय वृषभसेन आदी, जय जय गौतम स्वामी गुरुवर।।6।।

---

1. तिलोयपण्णत्ति के आधार से।

सम्मेदशिखर पर्वत उत्तम, मुनिवृंद वंदना करते हैं।
सुरपति नरपति खगपति पूजें, भविवृंद अर्चना करते हैं।।
पर्वत पर चढ़कर टोंक-टोंक पर, शीश झुकाकर नमते हैं।
मिथ्यात्व अचल शतखंड करें, सम्यक्त्वरत्न को लभते हैं।।7।।

इस पर्वत की महिमा अचिन्त्य, भव्यों को ही दर्शन मिलते।
जो वंदन करते भक्ती से, कुछ भव में ही शिवसुख लभते।।
बस अधिक उनंचास भव धर, निश्चित ही मुक्ती पाते हैं।
वंदन से नरक पशूगति से, बचते निगोद नहिं जाते हैं।।8।।

दस लाख व्यंतरों का अधिपति, भूतकसुर इस गिरि का रक्षक।
यह यक्षदेव जिनभाक्तिकजन, वत्सल है जिनवृष का रक्षक।।
जो जन अभव्य हैं इस पर्वत का, वंदन नहिं कर सकते हैं।
मुक्तीगामी निजसुख इच्छुक, जन ही दर्शन कर सकते हैं।।9।।

यह कल्पवृक्ष सम वांछितप्रद, चिंतामणि चिंतित फल देता।
पारसमणि भविजन लोहे को, कंचन क्या पारस कर देता।।
यह आत्म सुधारस गंगा है, समरससुखमय शीतल जलयुत।
यह परमानंद सौख्य सागर, यह गुण अनंतप्रद त्रिभुवन नुत।।10।।

मैं नमूँ नमूँ इस पर्वत को, यह तीर्थराज है त्रिभुवन में।
इसकी भक्ती निर्झरणी में, स्नान करूँ अघ धो लूँ मैं।।
अद्भुत अनंत निज शांती को, पाकर निज में विश्राम करूँ।
निज 'ज्ञानमती' ज्योतीपाकर, अज्ञान तिमिर अवसान करूँ।।11।।

–दोहा –

नमूँ नमूँ सम्मेद गिरि, करूँ मोह अरि विद्ध।
मृत्युंजय पद प्राप्त कर, वरूँ सर्वसुख सिद्धि।।12।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वत-सिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद –

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं नमूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना भ्रमूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(34) भक्तामर पूजन

– स्थापना–

अर्चन करो रे,
श्री आदिनाथ के चरण कमल का, अर्चन करो रे।
अर्चन करो, पूजन करो, वंदन करो रे,
श्री ऋषभदेव के चरण कमल में, वन्दन करो रे।।
भक्त अमर भी जिन चरणों में, आकर शीश झुकाते हैं।
निज मुकुटों की मणियों से, अद्भुत प्रकाश फैलाते हैं।।
युग के प्रथम जिनेश्वर की वे, पूजा करने आते हैं।
हम भी आह्वानन स्थापन, सन्निधिकरण रचाते हैं।
सन्निधिकरण रचाते हैं।
अर्चन करो रे,
श्री आदिनाथ के चरण कमल का, अर्चन करो रे।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिन् श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिन् श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिन् श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

तर्ज –नाम तिहारा तारनहारा........

युग के प्रथम जिनेश्वर को हम, शत-शत वन्दन करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक, प्रभु का हम अर्चन करते हैं।।
प्रभु के जन्म कल्याणक में, इन्द्रों ने न्हवन रचाया था।
क्षीरोदधि का पावन जल, जन्माभिषेक में आया था।।
पूजक के जन्मादि रोग भी, नाश प्रभू वे करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य सुगंधित द्रव्यों से, शचि ने प्रभु को महकाया था।
उनकी अतुलित काया ने तो, सारा जग महकाया था।।

भव आताप शमन हेतू हम, गन्ध विलेपन करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में रहकर जग के वैभव, में भव को नहिं बिता दिया।
नीलांजना का नृत्य देखते, ही मन में वैराग्य हुआ।।
अक्षय पद को प्राप्त प्रभू को, हम अक्षत से जजते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पद तल स्वर्णकमल की, रचना इन्द्र रचाते हैं।
लेकिन कमल पुष्प के ऊपर, प्रभु के चरण न आते हैं।।
विषयवासना शमन हेतु हम, पुष्प समर्पण करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य भोज्य सामग्री प्रभु की, स्वर्गलोक से आती है।
दीक्षा के पश्चात् प्रभू की, जिनचर्या कहलाती है।।
प्रभु सम भोजन प्राप्ति हेतु, नैवेद्य समर्पण करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की केवलज्ञान ज्योति से, जले असंख्यों दीप जहाँ।
मेरा इक छोटा सा दीपक, कर न सके सामीप्य वहाँ।।
फिर भी भक्त पुजारी दीपक, ले तव आरति करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधाकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय भोग में धूप जलाने, से कर्मों का बंध कहा।
प्रभु के सम्मुख धूप जलाते, जल जाते हैं कर्म महा।।
अग्निघटों में धूप जलाकर, प्रभु का पूजन करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कई भवों की पुण्य प्रकृतियों, से तीर्थंकर पद पाया।
आदिपुरुष आदीश रूप में, जग ने तुमको अपनाया।।
भक्त इसी फल की आशा ले, फल से पूजन करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा सिद्धशिला पर, जा प्रभु ने विश्राम किया।
अष्टकर्म को नष्ट किया, अष्टापद से निर्वाण लिया।।
अष्टद्रव्य युत स्वर्णथाल प्रभु, पद में अर्पण करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज–हे दीनबंधु..........

प्रभु तेरे ज्ञान की अजस्र धार जो बही।
उससे पवित्र हो गई युगादि में मही।।
उस ज्ञान की इच्छा से ही जलधार मैं करूँ।
भक्तामराधिपति का दिव्यज्ञान मैं भरूँ।।1।।

शांतये शांतिधारा।

प्रभु पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य से सहित हुए।
उस दिव्य पुष्पवृष्टि से प्रभु जगप्रथित हुए।।
सुरपुष्पवृष्टिप्रातिहार्य को भी मैं वरूँ।
पुष्पों की अंजली से पुष्पवृष्टि मैं करूँ।।2।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र– **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीऋषभनाथतीर्थंकराय नमः।**

अथवा– **ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री ऋषभनाथतीर्थंकराय नमः।**

(इस मंत्र को 108 बार पढ़ते हुए पुष्प या लवंग चढ़ावें।)

जयमाला

भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।
पुरुदेव युगादिपुरुष के अर्चन, से सुख का भंडार मिले।।
गर्भागम के छह मास पूर्व, रत्नों की वृष्टि हुई नभ से।
माता मरुदेवी नाभिराय भी, अपना जन्म धन्य समझे।।
जनता ने जयजयकार किया, साकेतपुरी के भाग्य खिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।1।।

प्रभु गर्भ-जन्म-दीक्षा व ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणपती।
इक बार मेरा कल्याण करो, मेरी सम्यक् हो जाय मती।।
प्रभु ने जो मार्ग प्रवाह किया, उससे जन-जन के भाग्य खिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।2।।

इस कलियुग में यति मानतुंग ने, उन्हीं प्रथम परमेश्वर की।
भक्तामर की रचना करके, संस्तुति कर ली वृषभेश्वर की।।
उस भक्तामर के माध्यम से, सब जन के हृदय विकार धुले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।3।।

इकबार भोज नृप ने मुनिवर श्री, मानतुंग को बुलवाया।
उपसर्ग समझ यति मौन हुए, तब कवि ने नृप को समझाया।।
हे राजन्! यह अपमान तेरा, करता मुनि इसे प्रहार मिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।4।।

क्रोधित राजा ने मुनिवर को, बन्दीगृह का मुख दिखा दिया।
अड़तालिस तालों के भीतर, ले जाकर उनको बिठा दिया।।
बन्दीगृह महल समान जिन्हें, उनको क्या कारावास मिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।5।।

भक्तामर स्तुति रचते ही, अड़तालिस ताले टूट गए।
मुनि को बन्दीगृह से बाहर, लख नृप के छक्के छूट गए।।
मुनिवर का अतिशय देख नृपति सह, जनता के अरमान खिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।6।।

भक्तामर की पूजा करने, हम द्वार तिहारे आए हैं।
आदीश्वर! तेरे चरणों में, यह इच्छा लेकर आए हैं।।
मेरा मन तुममें लीन रहे, मुझको ऐसा वरदान मिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।7।।

बीजाक्षर क्लीं सहित भक्तामर, यंत्र बनाया जाता है।
अड़तालिस कोठों से संयुत, मंडल रचवाया जाता है।।
आठों द्रव्यों से पूजा कर, भक्तों को सौख्य अपार मिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।8।।

भक्तामर का स्तोत्र आज भी, श्रद्धा से जो पढ़ते हैं।
बन्दीगृह के ताले ही क्या, कर्मों के ताले खुलते हैं।।
प्रभु भक्ती से "चन्दनामती", हमको भी सुख का सार मिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।9।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जो भविजन भक्तामर का, आराधन करते रहते हैं।
अड़तालिस मंत्रों से युत जिनवर का अर्चन करते हैं।।
वे जग के सुख भोग अनुक्रम से शिवपद को लभते हैं।
कहे "चन्दनामती" उन्हों के, सर्वमनोरथ फलते हैं।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः ।।

(35) षट्खण्डागम पूजा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–स्थापना (शंभु छंद)–

जिनशासन का प्राचीन ग्रंथ, षट्खंडागम माना जाता।
प्रभु महावीर की दिव्यध्वनि से, है इसका सीधा नाता।।
जब द्वादशांग का ज्ञान धरा पर, विस्मृत होने वाला था।
तब पुष्पदंत अरु भूतबली ने, आगम यह रच डाला था।।1।।

–दोहा–

षट्खंडागम ग्रंथ की, पूजन करूँ महान।
मन में श्रुत को धार कर, पा जाऊँ श्रुतज्ञान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

–अष्टक–

(तर्ज–मैं चंदन बनकर........)

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
ज्ञानामृत पीने से, भव बाधा नशती है।
हम जल की झारी लाए, त्रयधारा करने को।।हम.।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।

चन्दन की शीतलता तो, कुछ क्षण ही रहती है।
शाश्वत शीतलता हेतू, श्रुतपूजन कर लूँ मैं।।हम.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
श्रुतवारिधि में रमने से, अक्षय पद मिलता है।
हम अक्षत लेकर आए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
स्वाध्याय परमतप द्वारा, विषयाशा नशती है।
हम पुष्पों को ले आए, पुष्पांजलि करने को।।हम.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
ज्ञानामृत का आस्वादन, ही सच्चा भोजन है।
नैवेद्य थाल ले आए, श्रुत अर्चन करने को।।हम.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
सम्यग्दर्शन का दीपक, मन का मिथ्यात्व भगाता।
इक दीप जलाकर लाए, श्रुत अर्चन करने को।।हम.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धांतिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
कर्मों की धूप जलाऊँ, निज ध्यान की अग्नी में।
हम धूप सुगंधित लाए, श्रुत अर्चन करने को।।हम.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
फल के स्वादों में फँसकर, नहिं मुक्ति सुफल को पाया।
अब थाल फलों का लाए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
कोमल मृदु वस्त्रों द्वारा, निज तन को सदा ढका है।
अब वस्त्र बनाकर लाए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
जिनवाणी के अध्ययन से, इक दिन अनर्घ्य पद मिलता।
"चंदना" अर्घ्य ले आए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

षट्खंडागम ग्रंथ के, सम्मुख कर जलधार।
ज्ञान और चारित्र से, करूँ भवाम्बुधि पार।।10।।

शान्तये शांतिधारा।

विविध पुष्प की वाटिका, से पुष्पों को लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, श्रुत समुद्र के मांहि।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

—शंभु छंद—

पहला है जीवस्थान खण्ड, छह पुस्तक की टीका इसमें।
दो सहस तीन सौ पिचहत्तर, सूत्रों का सार भरा इसमें।।
अनुयोग आठ नव चूलिकाओं में, सत्प्ररूपणा आदि कथन।
यह ज्ञान मुझे भी मिल जावे, इस हेतु करूँ श्रुत का अर्चन।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टअनुयोगनवचूलिकासमन्वितजीवस्थान-नामप्रथमखण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्खण्डागम का दुतिय खण्ड है, क्षुद्रकबंध कहा जाता।
पन्द्रह सौ चौरानवे सूत्र से, सहित ग्रंथ यह कहलाता।।
सप्तम पुस्तक में है निबद्ध, यह बंध का प्रकरण बतलाता।
इस श्रुत का अर्चन करूँ कर्म, ज्ञानावरणी तब नश जाता।।2।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधप्रकरणसमन्वितक्षुद्रकबंधनामद्वितीय-खण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है तृतियबंधस्वामित्वविचय का, खण्ड आठवीं पुस्तक में।
त्रय शतक व चौबिस सूत्रों के, द्वारा सिद्धान्त कथन इसमें।।
जो मन वच तन की शुद्धि सहित, इस आगम का अध्ययन करें।
वे कर्मबंध से छुट जाते, हम अर्घ्य चढ़ाकर नमन करें।।3।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधादिसिद्धान्तकथनसमन्वितबंधस्वामित्वविचयनामतृतीयखण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनाखण्ड नामक चतुर्थ है, खण्ड चार पुस्तक निबद्ध।
नौ से बारह तक चारों में, पन्द्रह सौ चौदह सूत्र बद्ध।।
इन शास्त्रों की पूजन से मन का, कर्म असाता नश जाता।
गौतमगणधर विरचित मंगल-सूत्रों की है इसमें गाथा।।4।।

ॐ ह्रीं ऋद्ध्यादिवर्णनसमन्वितवेदनाखण्डनामचतुर्थखण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्खण्डागम का पंचम है, वर्गणा खण्ड आचार्य ग्रथित।
हैं एक सहस तेईस सूत्र, तेरह से सोलह तक पुस्तक।।
धरसेनसूरि सम गिरि से गिरती, गंगा मानो प्रगट हुई।
श्री पुष्पदंत अरु भूतबली के, अन्तस्तल से उदित हुई।।5।।

ॐ ह्रीं गणितादिनानाविषयसमन्वितवर्गणाखण्डनामपंचमखण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्खण्डागम के छठे खण्ड में, महाबंध का नाम सुना।
है महाधवल टीका उस पर, श्रीवीरसेनस्वामी ने रचा।।
इस तरह बना षट्खण्डागम, महावीर दिव्यध्वनि अंश कहा।
ये सूत्र ग्रंथ कहलाते हैं, इनकी पूजन से सौख्य महा।।6।।

ॐ ह्रीं महाधवल टीकासमन्वितमहाबंधनामषष्ठखण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंत अरु भूतबली, गुरु की कृति षट्खण्डागम है।
नौ हजार सूत्रों से युत, इस युग का यह श्रुत अनुपम है।।
बानवे सहस्र श्लोकों प्रमाण, टीका भी इसकी लिखी गई।
श्रीवीरसेन स्वामी कृत धवला, टीका को मैं जजूँ यहीं।।7।।

ॐ ह्रीं धवलामहाधवलाटीकासमन्वित षट्खंडागम जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीगुणधर भट्टारक विरचित है, कषायप्राभृत ग्रंथ कहा।
जयधवला टीका संयुत सोलह, पुस्तक में उपलब्ध यहाँ।।
है द्वादशांग का पूर्ण सार, इन सब ग्रंथों में भरा हुआ।
इनके अतिरिक्त न सार कोई, अर्चन का मन इसलिए हुआ।।8।।

ॐ ह्रीं जयधवला टीकासमन्वितकषायप्राभृत जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्खण्डागम के सूत्रों पर, गणिनी श्री ज्ञानमती जी ने।
संस्कृत टीका सिद्धान्तसुचिन्तामणि रचकर दी इस युग में।।
श्रीवीरसेन आचार्य सदृश यह, टीका भी निधि इस युग की।
चिन्तामणि सम फल दात्री उस, टीकायुत ग्रंथ को करूँ नती।।9।।

ॐ ह्रीं सिद्धान्तचिन्तामणिटीकासमन्वितषट्खण्डागम जिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र –ॐ ह्रीं सिद्धान्तज्ञानप्राप्तये षट्खण्डागम जिनागमाय नमः।

जयमाला

–शेर छंद –

जैवन्त हो महावीर दिव्यध्वनि जगत में।
जैवन्त हो गौतम गणीश ज्ञान जगत में।।
जैवन्त हो उन रचित द्वादशांग जगत में।
जैवन्त हो उपलब्ध शास्त्र अंश जगत में।।1।।

गौतम ने अपना ज्ञान फिर लोहार्य को दिया।
लोहार्य स्वामी से वो जम्बूस्वामी ने लिया।।
क्रमबद्ध ये त्रय केवली निर्वाण को गये।
फिर पाँच मुनी चौदह पूर्व धारी हो गये।।2।।

नंतर विशाखाचार्य आदि ग्यारह मुनि हुए।
एकादशांग पूर्व दश के पूर्ण ज्ञानी थे।।
अरु शेष चार पूर्व का इक देश ज्ञान पा।
परिपाटी क्रम से उसको जगत में भी दिया था।।3।।

नक्षत्राचार्य आदि पाँच मुनियों ने क्रम से।
पाया था वही ज्ञान एक देश अंश में।।
नंतर सुभद्र आदि चार मुनियों ने पाया।
इक अंग ज्ञान देश अंश ज्ञान भी पाया।।4।।

यह ज्ञान पुनः क्रम से श्रीधरसेन को मिला।
अतएव वर्तमान में श्रुत का कमल खिला।।
इस श्रुत की कहानी सुन रोमांच होता है।
शिष्यों के समर्पण का परिज्ञान होता है।।5।।

निज आयु अल्प जान दो मुनियों को बुलाया।
निज ज्ञान उन्हें सौंप मन में हर्ष समाया।।
मुनिराज नरवाहन तथा सुबुद्धि ने सोचा।
गुरु ज्ञानवाटिका की मैं समृद्धि करूँगा।।6।।

तब संघ चतुर्विध ने श्रुत की अर्चना कर ली।
देवों ने भी आकर गुरु की वंदना कर ली।।
मुनिवर सुबुद्धि जी की दंतपंक्ति बनाई।
कह पुष्पदंत उनकी महापूजा रचाई।।7।।

गुजरात अंकलेश्वर में चौमासा रचाया।
फिर ज्ञान को लिपिबद्ध करना मन में था आया।
मुनिवर सुबुद्धि जी ने सत्प्ररूपणा रची।
मुनिराज नरवाहन के पास उसे भेज दी।।8।।

आगे उन्होंने द्रव्यप्रमाणानुगम आदी।
षट्खण्डों में छह सहस सूत्रों की भी रचना की।
फिर ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी की तिथि आ गई।
आगम की रचना पूर्ण कर संतुष्टि छा गई।।9।।

मुनिराज नरवाहन को पूजा भूत सुरों ने।
बलिविधि के साथ भूतबली कहा उन्होंने।।
वे इस प्रकार पुष्पदंत भूतबलि बने।
षट्खंड जिनागम को जीत चक्रपति बने।।10।।

सिद्धांतचक्रवर्ती थे धरसेन जी सचमुच।
श्री पुष्पदंत भूतबली में भी थे ये गुण।।
पश्चात्वर्ति मुनि भी उनके अंशरूप हैं।
जिनको मिला सिद्धान्त ज्ञान साररूप है।।11।।

त्रयखण्ड पे परिकर्म टीका कुन्दकुन्द की।
थी पद्धति द्वितीय टीका शामकुण्ड की।।
श्रीतुम्बुलूर सूरि ने टीका की पंचिका।
स्वामी समन्तभद्र ने चौथी रची टीका।।12।।

श्री बप्पदेव गुरु ने लिखी व्याख्याप्रज्ञप्ती।
धवलादि टीकाओं के कर्ता वीरसेन जी।।
इन छह में मात्र धवला उपलब्ध आज है।
पाँचों ही शेष टीका के नाम मात्र हैं।।13।।

सदि बीसवीं में भी मिले सिद्धान्त ग्रंथ ये।
चारित्रचक्रवर्ति शांतिसिंधु कृपा से।।
इन सबको ताम्रपत्र पे उत्कीर्ण कराया।
विद्वानों से टीकाओं का अनुवाद कराया।।14।।

संस्कृत तथा प्राकृत में मिश्र है धवल टीका।
अतएव मणिप्रवालन्याय युक्त है टीका।।
इसका ही ले आधार ज्ञानमती मात ने।
टीका रची सिद्धान्तचिन्तामणि नाम से।।15।।

इन सबकी टीकाओं को बार-बार मैं नमूँ।
षट्खण्ड जिनागम में मूलग्रंथ को प्रणमूँ।।
मुझको भी इन्हें पढ़ने की शक्ति प्राप्त हो।
माता सरस्वती मुझे तव भक्ति प्राप्त हो।।16।।

षट्खण्ड धरा जीत चक्रवर्ति ज्यों बनें।
षट्खंडजिनागम को भी त्यों ही जो पढ़ें।।
सिद्धान्तचक्रवर्ति वे हों 'चन्दनामती'।
पूर्णार्घ्य चढ़ाऊँ करूँ मैं वंदना-भक्ती।।17।।

—दोहा—

षट्खण्डागम ग्रंथ को, वंदन बारम्बार।
अर्घ्य समर्पण कर लहूँ, जिनवाणी का सार।।18।।

ॐ ह्रीं षट्खण्डागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—सोरठा—

जो पूजें चितलाय, षट्खंडागम शास्त्र को।
निज अज्ञान नशाय, वे पावें श्रुतसार को।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(36) गणधरवलय पूजा

तर्ज–आवो बच्चों तुम्हें दिखायें.......

आवो हम सब करें अर्चना, गणधर देव प्रधान की।
जिनवर दिव्यध्वनी को झेलें, द्वादशांग श्रुतवान की।।
वंदे गणधरम्-4।।
अड़तालिस ऋद्धी को धारें, द्वादशगण के ईश्वर हैं।
यंत्ररूप हैं मंत्ररूप हैं, तंत्ररूप भी परिणत हैं।।
ऐसे गुरु को वंदन करते, मिले राह कल्याण की।।आवो.।।
श्री गणधर गुरु की पूजा से, सर्वविघ्न संहार करें।
ज्वर अतिसार आदि रोगों का, क्षण भर में परिहार करें।।
आह्वानन कर जजते इनको, मिले ज्योति निज ज्ञान की।।
आवो.।।

ॐ ह्रीं श्रीगणधरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीगणधरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीगणधरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

तर्ज–मेरे देश की धरती....

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में, शांति सुधा बरसाये।
गणधर की......
अगणित नदियों का नीर पिया, नहिं अब तक प्यास बुझा पाये।
इस हेतु आपकी पूजा को, कंचन झारी में जल लाये।।
गुरुपद में धारा करते ही...सब मन की प्यास बुझाएँ।।
गणधर की......

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में, शांति सुधा बरसाये।
गणधर की......
भव-भव में रोग शोक संकट, मानस देहज दुख पाये हैं।।
इसलिये आपकी पूजा को, चंदन केशर घिस लाये हैं।।
गुरु पद में चर्चन करते ही....तन मन शीतल हो जाये।।
गणधर की......

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में, शांति सुधा बरसाये।
गणधर की......
नश्वर सुख पाने की इच्छा से, दुःख अनंत उठाये हैं।
सरसों सम सुख नहिं मिला किंतु, भवदधि में गोते खाये हैं।।
इसलिये धौत सित अक्षत ले...हम पुंज चढ़ाने आये।।
गणधर की......

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में, शांति सुधा बरसाये।
गणधर की......
मकरध्वज ने तीनों जग में, निज शर से जन को वश्य किया।
प्रभु के चरणाम्बुज में आकर, वह भी तो क्षण में वश्य हुआ।
इसलिए तुम्हारे चरणों में....हम पुष्प चढ़ा सुख पायें।।
गणधर की......

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में, शांति सुधा बरसाये।
गणधर की......
यह क्षुधा पिशाची पिंड लगी, हम कैसे छुटकारा पाएँ।
तुम परमानंदामृत पीते, इसलिये प्रभो! शरणे आये।।
नैवेद्य चढ़ाकर तुम सन्मुख....हम परम तृप्ति को पाएँ।।
गणधर की......

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में, शांति सुधा बरसाये।
गणधर की......
मिथ्यात्व अंधेरे में हमने, नहिं निज को किंचित् पहिचाना।
प्रभु तुम हो केवलज्ञान सूर्य, इसलिये उचित समझा आना।।
दीपक से तुम आरति करते....मन का अंधेर मिटाएँ।।
गणधर की......

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में, शांति सुधा बरसाये।
गणधर की......
शाश्वत जिनमंदिर में असंख्य भी, धूप घड़ों में अग्नि जले।
नित सुरगण सुरभि धूप खेते, तब धूम्र दशों दिश में फैले।।

हम धूपायन में धूप खेय.....निज के सब कर्म जलाएँ।।
गणधर की......

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में, शांति सुधा बरसाये।
गणधर की......
अंगूर अनार आम केला, फल अनंनास ले आये हैं।
वर मोक्ष महा फल पाने को, तुम निकट चढ़ाने आये हैं।।
फल से पूजा करके भगवन्.....रत्नत्रय निधि पा जाएँ।।
गणधर की......

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर की अर्चा, सकल विश्व में, शांति सुधा बरसाये।
गणधर की......
जल गंधादिक वसु अर्घ्य लिये, उसमें नवरत्न मिलाये हैं।
निज भाव अपूर्व-अपूर्व मिले, यह आशा लेकर आये हैं।।
चरणों में अर्घ्य चढ़ा करके.....नवनिद्धि ऋद्धि पा जाएँ।।
गणधर की......

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

नाथ पदकंज में शांतिधारा करूँ।
विश्व में शांति होवे यही कामना।।
आधि सब दूर हों चित्त में शांति हो।
भक्ति से प्राप्त हो शांति आत्यंतिकी।।1।।
शांतये शांतिधारा।

नाथ के गुण सुमन आज चुन के लिये।
विश्व में यश सुरभि फैलती है प्रभो!।।
पुष्प अंजलि समर्पण करूँ प्रेम से।
पुण्य संपत्ति पाऊँ सुयश वृद्धि हो।।2।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

धुन– नागिन-मेरा मन डोले.....

जय जय गणधर, गुण ऋद्धीश्वर, हम गाएँ तुम जयमाल को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।
नग्न दिगम्बर वेष धार के, पिच्छी कमंडलु धारा।
मूलोत्तर गुण अगणित उत्तम, धर के स्वात्म संवारा।।
प्रभू जी.।।
पर्वत पर चढ़, निज में अति दृढ़, नित ध्याते आतमराम को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।1।।

ग्रीष्म ऋतू में पर्वत ऊपर, वर्षा में तरु नीचे।
शीतकाल में नदी किनारे, आत्मध्यान में तिष्ठे।।
प्रभू जी.।।
पद्मासन से, खड्गासन से, ध्यावें पहनें गुणमाल को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।2।।

तीर्थंकर की दिव्यध्वनी सुन, द्वादशांग में गूंथें।
भव्य असंख्यों को संबोधें, चतुर्गती से छूटें।।
प्रभू जी.।।
निज रागद्वेष, हरकर अशेष, नित चखते साम्यरसाल को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।3।।

सूरी के छत्तीस मूलगुण, उपाध्याय के पच्चिस।
साधू के अट्ठाइस मानें, तीनों में ये निश्चित।।
प्रभू जी.।।
गुरु गणधर के, सब गुण चमकें, इनसे हैं मालामाल वो,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।4।।

दर्शमोह का मूलनाश कर, क्षायिक सम्यग्दृष्टी।
छठे सातवें गुणस्थान में, करें धर्म की वृष्टी।।
प्रभू जी.।।
श्रेणी पे चढ़े, चउ घाति हने, फिर पाते केवलज्ञान को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।5।।

मोक्षमार्ग में विघ्न असंख्ये, किस विध मार्ग सरल हो।
गणधर गुरु की पूजा करते, सर्व विघ्न निष्फल हों।।
प्रभू जी.।।
गुरु भक्ती से, सब पाप नशें, सब कार्य सिद्धि तत्काल हो,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।6।।

बहुविध रोग शोक दुख दारिद, मानस ताप असंख्ये।
इष्टवियोग अनिष्ट योग के, आर्तध्यान दुखकंदे।।
प्रभू जी.।।
गुरुवंदन से, अभिनंदन से, नश जाते दुख दुर्वार जो,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।7।।

गणधर गुरु के सर्व ऋद्धियाँ, प्रगट हुईं श्रुत गाएँ।,
अन्य तपस्वी ऋषियों के भी, कतिपय ऋद्धि कहाएँ।।
प्रभू जी.।।

रस त्याग करें, रस ऋद्धि वरें, ये करें स्वपर कल्याण को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।8।।

उग्र उग्र तप करके साधू, दीप्ततपो ऋद्धीयुत।
नहिं आहार करें फिर भी ये, काय दीप्ति वृद्धीयुत।।
प्रभू जी.।।
इन चरण नमें, भव में न भ्रमें, पा लेते निज गुणमाल को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।9।।

वीरप्रभू के समवसरण में, गौतम ब्राह्मण आये।
तत्क्षण मुनिदीक्षा ले करके, गणधर प्रथम कहाये।।
प्रभू जी.।।
जिन भक्ती से, वर मंत्र रचे, अड़तालिस ऋद्धीमान को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।10।।

हे भगवन् हम शरण में आये, एक याचना पूरो।
केवल 'ज्ञानमती' बस एकहि, ऋद्धी दे यम चूरो।।
प्रभू जी.।।
कर जोड़ खड़े, तुम चरण पड़े, दे दो रत्नत्रय माल को,
वसु द्रव्य सजाकर लाये हैं।।11।।

–दोहा–

अड़तालिस गणधर वलय, मंत्र नमूँ तिहुँकाल।
श्री गणधर गुरुदेव को, नमूँ नमूँ नतभाल।।12।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद–

जो भव्यजन गुरुभक्ति से, 'गणधरवलय' पूजा करें।
सब रोग शोक दरिद्र संकट, मानसिक पीड़ा हरें।।
दीर्घायु स्वास्थ्य सुकीर्ति वैभव, सौख्य संपति विस्तरें।
रवि 'ज्ञानमति' के उदय से जन, मन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(37) पद्मावती पूजा

रचयित्री–श्रीमती त्रिशला जैन, लखनऊ

जग के जीवों के शरणागत, मिथ्यात्व तिमिर हरने वाले।
तुम कर्मदली तुम महाबली, शिवरमणी को वरने वाले।।
हे पार्श्वनाथ! तेरी महिमा, सारे ही जग से न्यारी है।
तब ही तो पद्मावति माता, तव चरणों में बलिहारी है।।
ऐसी माता का आह्वानन, स्थापन करने आयी हूँ।
पुष्पों को अंजलि में भरकर, पुष्पांजलि करने आयी हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्या श्री पद्मावती महादेव्यै! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्या श्री पद्मावती महादेव्यै! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्या श्री पद्मावती महादेव्यै! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(तर्ज-देखा एक ख्वाब तो ये.......)

रत्नों की झारि में मैं नीर भर के लाई माँ।
अपनी तृषा बुझाने तेरे पास आई माँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै जलं निर्वपामति स्वाहा।

धन धान्यसुत की चाह से तृप्ति हुई नहीं।
चंदन चरण में चर्चते ही तृप्ति हो गयी।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै चंदनं निर्वपामति स्वाहा।

तंदुल धवल के पुंज तव चरण में चढ़ाऊँ।
सौभाग्य हो अखण्ड यही भावना भाऊँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै अक्षतं निर्वपामति स्वाहा।

चंपा चमेली केतकी पुष्पों को मंगाऊँ।
हर्षित-मना होकर तेरे चरणों में चढ़ाऊँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनंद हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै पुष्पं निर्वपामति स्वाहा।

नैवेद्य सब तरह के बना करके मैं लाऊँ।
रत्नों के थाल में सजा सजा के चढ़ाऊँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै नैवेद्यं निर्वपामति स्वाहा।

दीपक जला के मैं तुम्हारी आरती करूँ।
दे दो सुज्ञान माँ यही मैं याचना करूँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै दीपं निर्वपामति स्वाहा।

चंदन अगरु कपूर युक्त धूप जलाऊँ।
सुरभित दशों दिशाएँ हो मन भावना भाऊँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै धूपं निर्वपामति स्वाहा।

अंगूर आम्र आदि फल के थाल सजाके।
हो आश पूरी आये जो चरणों में आपके।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै फलं निर्वपामति स्वाहा।

जलगंध पुष्प फल चरुवर सबको मिलाके।
पूजा करे जो अर्घ्य से मनकंज खिला के।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्रीपार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्यायै श्रीपद्मावत्यै महादेव्यै अर्घ्यं निर्वपामति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-**ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय फणामणिमंडिताय कमठ-मानविध्वंसनाय सर्वग्रहोच्चाटनाय सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।**

अथ जयमाला

पद्मावती माता तुम्हारे गुण अनेक हैं।
पारसप्रभु की गाथा भी इसमें विशेष है।।
सुनिए प्रभु की गौरवगाथा हम सुनाते हैं।
पूजन करने के बाद अब जयमाला गाते हैं।।

(तर्ज-तुम्हारी हूँ तुम्हारी भक्ति)

वंदन श्री पार्श्व प्रभु का स्वीकार करो ना।
हम दर पर तेरे आए भव से पार करो ना।।
हे पारस प्रभु जी.।।

इकदिन कुमारावस्था में पारस प्रभू चले।
लेकर सखागण साथ में थे घूमने चले।।
गंगातट पर एक तापसी खोटे तप कर रहा।
जलती लकड़ी के अन्दर नागयुगल झुलस रहा।।
हे पारस प्रभु जी.।।

पारस प्रभु उसके निकट आये जब देखने।
अन्दर की बातें जानकर उनसे लगे कहने।।
दुर्गति में जायेगा ऐसा मिथ्यातप करने से।
दिखलाया नागयुगल को जो मरणासन्न जलने से।।
हे पारस प्रभु जी.।।

पारस प्रभू ने करुणाकर उपदेश जब दिया।
संन्यास धारकर मरने से उत्तमगति बंध किया।।
धरणेन्द्र और पद्मावती दोनों बने जाकर।
पारस प्रभु का वंदन किया फौरन यहाँ आकर।।
हे पारस प्रभु जी.।।

ऐसी माता पद्मावती की वंदना करूँ।
जल आदिक आठों द्रव्यों से मैं अर्चना करूँ।।
बहुतों पे माता आपने उपकार है किया।
अब हम पर भी हे माता! दिखला दो अपनी दया।
हे पारस प्रभु जी.।।

''त्रिशला'' ने यह पूजा रची भक्ति को मन में धार।
उसका फल बस ये चाहती कर दो मुझे भव से पार।।
वंदन श्री पार्श्वप्रभु का.............।

दोहा–हे माता मम हृदय में, संपूर्णरूप से आप।
त्रुटि कहीं जो रह गई, कर दो मुझ को माफ।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(38) कवलचान्द्रायण पूजा

रचयिता–भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति

सकलगुणसमुद्रं देवदेवेन्द्रवंद्यम्।
विमलवपुषि पीठे तीर्थतोयैश्च धौते।।
वसुमितजिनदेवं चंद्रधौतं नमामि।
सकलदुरतिव्यूहं हर्तुकामो भजेऽहम्।।1।।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्र श्री चंद्रप्रभदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्र श्री चंद्रप्रभदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्र श्री चंद्रप्रभदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

गंगादि तीर्थोद्भवनीरपूरैः, काश्मीरकर्पूरसुगन्धमिश्रैः।
ग्रासादिद्वीपोद्गमपूजनार्थं, चंद्रेशदेवं सततं यजामि।।1।।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्राय श्री चंद्रप्रभदेवाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखंड काश्मीर सुगंध मिश्रैः, सौगंध्यसंवासितदिग्विभागैः।
ग्रासादिद्वीपोद्गमपूजनार्थं, चंद्रेशदेवं सततं यजामि।।2।।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्राय श्री चंद्रप्रभदेवाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रांशुगौरैः सदकैर्मनोज्ञै, हृद्घ्राणनेत्रप्रियदैः समक्षतैः।
ग्रासादिद्वीपोद्गमपूजनार्थं, चंद्रेशदेवं सततं यजामि।।3।।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्राय श्री चंद्रप्रभदेवाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदारजाती बकुलादिपुष्पैः, सौगंधिकैः कृष्टमधुव्रतौघैः।
ग्रासादिद्वीपोद्गमपूजनार्थं, चंद्रेशदेवं सततं यजामि।।4।।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्राय श्री चंद्रप्रभदेवाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्पिः पयोजन्यसुभक्ष्यजातैः, शाल्यादिपूपप्रमुखैर्निवेद्यैः।
ग्रासादिद्वीपोद्गमपूजनार्थं, चंद्रेशदेवं सततं यजामि।।5।।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्राय श्री चंद्रप्रभदेवाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपोत्करैर्ध्वस्ततमोवितानैः, कर्पूरजैर्मोहविनाशनाय।
ग्रासादिद्वीपोद्गमपूजनार्थं, चंद्रेशदेवं सततं यजामि।।6।।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्राय श्री चंद्रप्रभदेवाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सिल्हारकृष्णागरुधूपवर्गैः, संवासिताशेषनभोविभागैः।
ग्रासादिद्वीपोद्गमपूजनार्थं, चंद्रेशदेवं सततं यजामि।।7।।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्राय श्री चंद्रप्रभदेवाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारंगपूगादिफलैर्मनोज्ञैर्जंबीरजातीफलकेलिजातैः।
ग्रासादिद्वीपोद्गमपूजनार्थं, चंद्रेशदेवं सततं यजामि।।8।।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्राय श्री चंद्रप्रभदेवाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिद्रव्याष्टकदर्भदूर्वा-सिद्धार्थमांगल्यवरप्रदानैः।
अर्घ्यं ददेऽभीष्टफलाय नित्यं, चंद्राभदेवाय सुशर्मदाय।।9।।

ॐ ह्रीं शशांकगोक्षीरधवलगात्राय श्री चंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक पूजा

एकात्मध्यानसंलीनं,सर्वदोषविवर्जितम्।
चंद्रप्रभं प्रभुं चाये, सर्वदोषप्रशांतये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री एकात्मध्यानसंलीन श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागद्वेषविनिर्मुक्तं, मुक्ति श्री संगतत्परम्।
सर्वकामप्रदं नित्यं, चर्चे तीर्थकरं विभुम्।।2।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषरहित श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयमयं शुद्धं, तद्गुणप्राप्तयेऽनिशम्।
मनोवाक्काय संशुद्ध्या, भजे चंद्रप्रभं विभुम्।।3।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयरूपाय श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुःकषायनिर्मुक्तं, संसारांभोधिपारगम्।
चतुरास्रवहंतारं, सेवे दुःखौघहानये।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःकषायरहित श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रतधरं धीरं, पंचसमितिराजितम्।
भवाब्धेः पारगं वंदे, लोकशिखरवासिनम्।।5।।

ॐ ह्रीं पंचसमितिधारकाय श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्द्रव्याणां तु ज्ञातारं, षट्कायरक्षणोद्यतं।
चंद्रप्रभजिनं चर्चे, भावशुद्ध्या निरंतरं।।6।।

ॐ ह्रीं षट्द्रव्यप्रकाशकाय श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भयसप्तक निर्मुक्त, सप्त तत्त्वप्रकाशकं।
दीपधूपफलग्रास-व्रतोद्योताय संयजे।।7।।

ॐ ह्रीं सप्ततत्त्वप्रकाशकाय श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जात्यादिमदसंत्यक्तं, गुणाष्टकविभूषितं।
श्रीजिनं प्रत्यहं वंदे, पापशत्रुप्रहाणये।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टमदवर्जिताय श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नयानां भेदवक्तारं, पदार्थनवसूचकं।
संसारदुःखनाशाय, चर्चेऽहं सारवस्तुभिः।।9।।

ॐ ह्रीं नवतत्त्वप्रकाशकाय श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्म युतं धर्म-ध्यानदशकख्यापकं।
मोहमल्ल-विजेतारं, पूजयामि जिनेश्वरं।।10।।

ॐ ह्रीं दशधर्मप्रकाशकाय श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशांग वक्तारं, नेतारं श्रावकाय च।
एकादश प्रमाणायाः, प्रतिमायास्तमर्चये।।11।।

ॐ ह्रीं एकादशांगप्ररूपकाय श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपो द्वादशधा प्रोक्तं, येन तीर्थेन स्वामिना।
तं चाये श्रीप्रभुं नित्य-मष्टमं श्रीसुखाकरम्।।12।।

ॐ ह्रीं द्वादशविधतपख्यापकाय श्रीचंद्रजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरितं येन चारित्रम्, त्रयोदशविधं शुभम्।
तं जिनं प्रत्यहं वंदे, मृगांकतनुसन्निभं।।13।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश चारित्र-चरिताय श्रीचंद्रप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्गणाख्यापकं धीरं, गुणस्थान-प्ररूपकम्।
जलगंधादिभिश्चर्चे, श्रीजिनं सुदयापरम्।।14।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशगुणस्थान निरूपकाय श्रीचंद्रप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यैः प्रमादैरहो जन्तुः, संसारे भ्रमति स्वयं।
तैस्त्यक्तं श्रीजिनं वंदे, मोहमल्लविमर्दकं।।15।।

ॐ ह्रीं पंचदशप्रमादरहिताय श्रीचंद्रप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्ट्यादिभावनाः पूर्वं, जन्मनि भाविताः स्फुटं।
येन भव्येन जीवेन, तं जिनं प्रार्चयेऽनिशम्।।16।।

ॐ ह्रीं षोडशभावना भावितात्मने श्रीचंद्रप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकारैः सप्तदशकैः, संयमः प्रतिपालितः।
तं ध्यायामि प्रभुं नित्यं, मोक्षसौख्याभिलाषुकः।।17।।

ॐ ह्रीं सप्तदशविधसंयमपालकाय श्रीचंद्रप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधादिदोषकैरष्टादशभिरनुपद्रुतं ।
नवलब्धियुतं सार्वं सर्वज्ञं संस्तुवे सदा।।18।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषनिवारकाय श्रीचंद्रप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकोनविंश प्रमित-समासानां प्रभेदकाः।
ख्यापिता येन तीर्थेन, तं ध्यायामि निरंतरम्।।19।।

ॐ ह्रीं एकोनविंशति जीवसमासप्ररूपकाय श्रीचंद्रप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशद्विगुणिताः ख्याताः, प्ररूपणा जिनैः स्मृताः।
जानन्नपि स संयाति, मोक्षं तद्वचसा ननु।।20।।

ॐ ह्रीं विंशतिप्ररूपणाप्ररूपकाय श्रीचंद्रप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसादि पंचदुरित-प्रमुखा विंशकाधिकाः।
चंद्रेण दोषाः संत्यक्तास्तं विभुं नित्यमर्चये।।21।।

ॐ ह्रीं हिंसादिएकविंशतिदोषरहिताय श्रीजिनचंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परीषहा द्वाविंशतिर्मर्षिता येन स्वामिना।
तं देवं प्रत्यहं वंदे, मनोवाक्कायशुद्धितः।।22।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशतिपरीषहमर्षिताय श्रीचंद्रप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयोविंशप्रमाः प्रोक्ता, जिनेन पुद्गलाणवः।
येन देवेशचंद्रेण, तं ध्यायामि निरंतरं।।23।।

ॐ ह्रीं त्रयोविंशति पुद्गलाणुप्रकाशकाय श्रीचंद्रप्रभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्विंशप्रमाः ख्याताः, सिद्धांते च परिग्रहाः।
येन त्यक्ताः प्रभुं तं च, भजे शुद्धैकचेतसा।।24।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिपरिग्रहरहिताय श्रीचंद्रप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रतानां भावनाः प्रोक्ताः, पंचविंशति सम्मिताः।
भाविता ध्यानसमये, तं देवं सततं स्तुवे।।25।।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिभावनाभाविताय श्रीचंद्रप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्ट्यादिभावनाः सप्त-नवभिरधिका वराः।
वृषा दश स्फुटं येन, प्रणीतास्तं स्तुवे जिनं।।26।।

ॐ ह्रीं षड्विंशतिवृषभावनाप्ररूपकाय श्रीचंद्रप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिधा त्रियोजितैः ख्यातास्तास्त्यक्ताः शुद्धभावतः।
मनोवाक्काययोगेन कृतकारितसम्मतैः।।27।।

ॐ ह्रीं मनोवाक्कायादिसप्तविंशतिदोषनिवारकाय श्रीचंद्रप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनीनां ध्यानलीनानामष्टाविंशतिसम्मिता।
प्रोक्ता मूलगुणा येन, तमधीशं स्तुवेऽनिशम्।।28।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणप्रकाशकाय श्रीचंद्रप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयगुणाः प्रोक्ता येन तीर्थेशिना वराः।
एकोनत्रिंशत्प्रमितास्तं ध्याये सततं हृदि।।29।।

ॐ ह्रीं एकोनत्रिंशद्रत्नत्रयगुणप्रख्यापकाय श्रीजिनचंद्रप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशभिः सहिताः पंचद्विगुणाः परिकीर्तिताः।
समासाः सर्वसत्वानां, येन तं चर्चये जिनं।।30।

ॐ ह्रीं त्रिंशत्जीवसमास प्रकाशकाय श्रीचंद्रप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमितगुणयुतानां श्रीजिनानां पुरस्ता-
द्बहुविधबहुभक्त्या स्वर्णपात्रे निधाय।
कलरववर-तूर्यैर्गीतनृत्यादि युक्तै-
र्वसुमितवरद्रव्यैश्चार्घ्यमुत्तारयामि।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

यख्यामले ज्ञानमये सुदर्शे, प्रकाशतामेति जगत्स्वरूपं।
चराचराख्यं क्षितिपैर्नतं तं, चंद्रप्रभं देवमहं स्तवीमि।।1।।

सतो गुणांस्तस्य प्रभुर्न वक्तुं, क्षोणीतले कोऽपि नरोऽमरो वा।
चतुष्टयानंतसमुद्भवं तं, चंद्रप्रभं देवमहं स्तवीमि।।2।।

देवा असंख्यातमिता जगत्यां, संतीह ये दोषशतैरुपेताः।
न ते नृणां मोदकरा अतस्तं, चंद्रप्रभं देवमहं स्तवीमि।।3।।

क्षमो भवान्काममतंगजस्य, मदं प्रमार्ष्टुं सकलावशस्य।
अपूर्वकंठीरवतां दधानं, चंद्रप्रभं देवमहं स्तवीमि।।4।।

अमेय सद्बोध कलासु भासुरं, दयोदयोद्भूतकलंकवर्जितं।
चंद्रोऽप्यभद्रस्तुलयेत्कथं त्वां, चंद्रप्रभं देवमहं स्तवीमि।।5।।

नागेन्द्र-देवेन्द्र-नरेन्द्र-मुख्यै, र्दक्षैरलक्ष्योऽसि गुणान्गुणद्भिः।
अतो गुणातीतमतः समेषां, तमष्टमं तीर्थकरं प्रवंदे।।6।।

सद्भक्तियुक्ता मनुजा गुणाढ्या, यमर्चयन्त्यष्टविधोपचारैः।
ते प्राप्नुवंतीह सुखानि नित्यं, वंदेऽहकं कांतगुणं जिनेशं।।7।।

विशुद्धबोधं दृढभक्तिकाय, प्रदेहि मे त्वद्गुणरंजिताय।
कारुण्यबुद्ध्या प्रभुणा हि भाव्यं, विश्वेषु मत्वेति जिनेशदेवम्।।8।।

–घत्ता–

अमितगुणगरिष्ठं नष्टकर्मारिकष्टं।
सकलभुवननाथं सर्वदोषप्रमाथं।।
सुरवरपतिसेव्यं चाष्टमं श्री जिनेशं।
प्रणयचयनियुक्तः स्तौति देवेंद्रकीर्तिः।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभदेवाय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। इति श्री चंद्रप्रभजिन जयमाला समाप्ता ।।

(39) चौबीस तीर्थंकर गणधर पूजा

–अथ स्थापना-गीता छंद–

गणधर बिना तीर्थेश की, वाणी न खिर सकती कभी।
निज पास में दीक्षा ग्रहें, गणधर भि बन सकते वही।।
तीर्थेश की ध्वनि श्रवणकर, उन बीज पद के अर्थ को।
जो ग्रथें द्वादश अंगमय, मैं जजूँ उन गणनाथ को।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–भुजंगप्रयात

पयोराशि का नीर निर्मल भराऊँ।
गुरू के चरण तीन धारा कराऊँ।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि[1] को मैं।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधीत चंदन लिये भर कटोरी।
जगत्तापहर चर्चहूँ हाथ जोरी।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले श्वेत अक्षत लिये थाल भरके।
धरूँ पुंज तुम पास बहु आशधर के।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही केतकी पुष्प की माल लाऊँ।
सभी व्याधिहर आप चरणों चढ़ाऊँ।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मिष्ट पक्वान्न अमृत सदृश ले।
परमतृप्ति हेतू चढ़ाऊँ तुम्हें मैं।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की जगमगाती भली है।
जजत ही तुम्हें ज्ञानज्योती जली है।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरु धूप खेते उड़े धूम्र नभ में।
दुरित कर्म जलते गुरूभक्ति वशतें।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्नास नींबू बिजौरा लिये हैं।
तुम्हें अर्पते सर्व वांछित लिये हैं।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

लिये थाल में अर्घ है भक्ति भारी।
गुरू अर्चना है सदा सौख्यकारी।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---
1. समुद्र।

–दोहा–

गणधर पदधारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यांतिक सुख देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

स्वानुभूति से आप, नित आतम अनुभव करें।
द्वादश गण के नाथ, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–गीता छंद–

श्री ऋषभदेव जिनेन्द्र के, चौरासि गणधर मान्य हैं।
गुरु 'ऋषभसेन' प्रधान इनमें, सर्व रिद्धि निधान हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरस्य ऋषभसेनप्रमुखचतुरशीतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ जिनेन्द्र के, नब्बे गणाधिप मान्य हैं।
'केशरीसेन' प्रधान इनमें, सर्व ऋद्धि निधान हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य केशरिसेनप्रमुखनवतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनेश्वरके सु इक सौ, पाँच गणधर ख्यात हैं।
गुरु 'चारुदत्त' प्रधान इनमें, सर्व ऋद्धि सनाथ हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य चारुदत्तप्रमुखपंचाधिकशतगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अभिनंदन के गणाधिप, एक सौ त्रय ख्यात हैं।
गुरु 'वज्रचमर' प्रधान इसमें, सर्व ऋद्धि सनाथ हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य वज्रचमरप्रमुखत्रयाधिकशतगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमति जिनके एक सौ, सोलह गणाधिप मान्य हैं।
'श्रीवज्र' गणधर मुख्य इनमें, सर्वऋद्धि खान हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथतीर्थंकरस्य वज्रप्रमुखषोडशोत्तरएकशतगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीपद्मप्रभ के एक सौ, ग्यारह गणाधिप ख्यात हैं।
'श्रीचमर' गणधर मुख्य उनमें, सर्वरिद्धि सनाथ हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकरस्य चमरप्रमुखएकादशोत्तरएकशतगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सुपारस के गणीश्वर ख्यात पंचानवे हैं।
'बलदत्त' गणधर हैं प्रमुख, सब ऋद्धियों से भरे हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकरस्य बलदत्तप्रमुखपंचनवतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ के गणपती, तेरानवे गणपूज्य हैं।
'वैदर्भ' गणधर प्रमुख उनमें, सर्व ऋद्धी सूर्य हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभतीर्थंकरस्य वैदर्भप्रमुखत्रिनवतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंत जिनेश के, गणधर अठासी मान्य हैं।
'श्रीनाग' मुनि गणधर प्रमुख, सब ऋद्धियों की खान हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंततीर्थंकरस्य नागमुनिप्रमुखअष्टाशीतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनेश्वर के सत्यासी, गणधरा जग वंद्य हैं।
'श्री कुंथु' गणधर प्रमुख इनमें, सर्वरिद्धी कंद हैं।।

द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलतीर्थंकरस्य कुंथुप्रमुखसप्ताशीति-गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांस जिनके पास सत्तत्तर गणाधिप श्रेष्ठ हैं।
'श्रीधर्मगुरु' गणधर प्रमुख, सबऋद्धि गुण में ज्येष्ठ हैं।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसतीर्थंकरस्य धर्मप्रमुखसप्तति-गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र के, छ्यासठ गणाधिप गण धरें।
'मंदर' मुनी गणधर प्रमुख, ये सर्व रिद्धी गुण भरें।।
द्वादश गणों के नाथ द्वादश-अंग के कर्ता तुम्हीं।
मैं पूजहूँ नित भक्ति से, गुरुभक्ति भवदधि तारहीं।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकरस्य मंदरप्रमुखषट्षष्टि-गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—नरेन्द्र छंद—

विमलनाथ के गणधर पचपन, सब ऋद्धि से पावन।
'जयमुनि' प्रमुख उन्हों में गणधर, भव सागर से तारन।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकरस्य जयमुनिप्रमुखपंच-पंचाशत्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनंत जिनवर के गणधर, हैं पचास गुण आकर।
'श्री अरिष्ट' गणधर प्रमुख्य हैं, ऋद्धि सिद्धि रत्नाकर।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथतीर्थंकरस्य अरिष्टप्रमुख-पंचाशत्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ के गणधर सब, ऋद्धी से पूर्ण तितालिस।
'श्री अरिष्टसेन' उनमें गुरु, ज्ञानज्योति से भासित।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरस्य अरिष्टसेनप्रमुखत्रि-चत्वारिंशत्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के छत्तिस गणधर, चौंसठ ऋद्धि समन्वित।
'चक्रायुध' गणधर उनमें गुरु, सर्व गुणों से मंडित।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथतीर्थंकरस्य चक्रायुप्रमुखषट्-त्रिंशत्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ के पैंतिस गणधर, शिवपथ विघ्न विनाशें।
प्रमुख 'स्वयंभू' गणधर उनमें, भविमन कुमुद विकासें।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकरस्य स्वयंभूप्रमुखपंच-त्रिंशद्गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर जिनवर के तीस गणाधिप, सर्वऋद्धि के धारी।
'कुंभ' प्रमुख हैं गणधर सबमें, परमानंद सुखकारी।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथतीर्थंकरस्य कुंभप्रमुखत्रिंशद्-गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के अट्ठाइस गण-नायक गुणमणि धारें।
'श्री विशाख' गणधर गुरु उनमें, भक्त विघन परिहारें।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथतीर्थंकरस्य विशाखप्रमुख-अष्टाविंशतिगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के अठरह गणधर, व्रत गुण शील समन्वित।
'मल्लि' प्रमुख हैं गणधर उनमें, सब श्रुत ज्ञान समन्वित।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रततीर्थंकरस्य मल्लिप्रमुख-अष्टादशगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिनवर के सत्रह गणधर, यम नियमों के सागर।
'सुप्रभ' प्रमुख गणाधिप उनमें, करते ज्ञान उजागर।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकरस्य सुप्रभप्रमुखसप्त-दशगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ के ग्यारह गणधर, ऋद्धि सिद्धि गुण धारें।
'श्री वरदत्त' प्रमुख गणधर हैं, गुणमणि माला धारें।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकरस्य वरदत्तप्रमुखएकादशगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ के दश गणधर गुरु, चौंसठ ऋद्धि धरे हैं।
'प्रमुख स्वयंभू' गणधर उनमें, स्वात्मपियूष भरे हैं।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरस्य स्वयंभूप्रमुखदशगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर प्रभु के गणधर हैं, ग्यारह सब गुण पूरे।
'इंद्रभूति गौतम' स्वामी हैं, यम की समरथ चूरें।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकरस्य इंद्रभूतिप्रमुखएकादशगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

चौबिस जिनके सब गणधर गुरु, चौंसठ ऋद्धी को धारे हैं।
ये चौदह सौ उनसठ[1] मानें, भक्तों को भव से तारे हैं।।
सर्वौषधि आदिक ऋद्धी से, सब रोग शोक दुःख हरण करें।
हम इनको पूजें भक्ती से, ये मुझमें समरस सुधा भरें।।25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरऋषभसेनादिएकोनषष्ट्यधिकचतुर्दशशतगणधरचरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं समवसरणपद्मसूर्यवृषभादिवर्द्धमानान्तेभ्यो नमः।**

जयमाला

–त्रिभंगी छंद–

जय जय श्री गणधर, धर्म धुरंधर, जिनवर दिव्यध्वनी धारें।
द्वादश अंगों में, अंग बाह्य में, गूँथे ग्रन्थ रचें सारे।।
गुरु नग्न दिगंबर, सर्व हितंकर, तीर्थंकर के शिष्य खरे।
मैं नमूँ भक्ति धर, ऋद्धि निधीश्वर, मुझ शिवपथ निर्विघ्न करें।।1।।

–स्रग्विणी छंद–

मैं नमूँ मैं नमूँ नाथ गणधार को।
शील संयम गुणों के सुभंडार को।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।2।।

ऋद्धियाँ सर्व तेरे पगों के तले।
सर्व ही सिद्धियाँ आप चरणों भले।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।3।।

हलाहल विष कभी पाणि में आवता।
शीघ्र अमृत बने ऋद्धि गुण गावता।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।4।।

दीप्ततप ऋद्धि से नित्य[1] उपवास है।
देह की कांति फिर भी द्युतीमान है।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।5।।

सर्व चौंसठ ऋद्धी धरें गुण भरें।
भक्तगण की सभी आश पूरी करें।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।6।।

विघ्न बाधा हरो सर्व सम्पत भरो।
स्वात्मपीयूष दे नाथ तृप्ती करो।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।7।।

मोह का नाशकर क्रोध शत्रू हरो।
मृत्यु को मार दूँ ऐसी शक्ती भरो।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।8।।

चार ज्ञानी प्रभो! चारगति भय हरो।
दे चतुष्टय अनंती सदा सुख करो ।।

---

1. तिलोयपण्णत्ति में 1459 माने हैं, कहीं पर 1452 संख्या भी मानी है।

1. दीप्ततप ऋद्धि से सदाकाल आहार बिना भी शरीर का तेज बढ़ता ही रहता है। धवला पु. (पृ.127)

नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।9।।

इन्द्रभूती महाज्ञान मद से भरे।
पास आते हि सम्यक्त्व निधि को धरें।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।10।।

शिष्य होके दिगम्बर मुनी बन गये।
चार ज्ञानी हुये गणपती बन गये।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।11।।

वीर की ध्वनि छियासठ दिनों में खिरी।
इंद्र का हर्ष ना मावता उस घरी।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।12।।

श्रावणी प्रतिपदा दिन प्रथम वर्ष का।
वीर शासन दिवस आज भी शर्मदा।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।13।।

बारहों अंग पूर्वों कि रचना करी।
आज तक भी वही सार[1] में है भरी।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।14।।

गणधरों के बिना दिव्यध्वनि ना खिरे।
पद उन्हें जो प्रभू पास दीक्षा धरें।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।15।।

गणधरों का सुमाहात्म्य मुनि गावते।
कीर्ति गाके कोई पार ना पावते।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।16।।

धन्य मैं धन्य मैं धन्य मैं हो गया।
धन्य जीवन सफल आज मुझ हो गया।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।17।।

आप गणइंद्र की भक्ति शोकापहा[2]।
आप की भक्ति ही सर्वसौख्यावहा[3]।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।18।।

पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
'ज्ञानमती' पूर्ण हो सुख असाधारणा।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।19।।

–दोहा–

चौबीसों तीर्थेश के, गणधर गुण आधार।
नमूँ नमूँ उनके चरण, मिले स्वात्मनिधिसार।।20।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवानां वृषभसेनादि-एकोनषष्टिअधिक-चतुर्दशशतगणधरचरणेभ्यः जयमाला-पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, गणधर गुरू पूजा करें।
माँगे बिना ही वे नवों निधि, रत्न चौदह वश करें।।
फिर पंचकल्याणक अधिप हो, धर्मचक्र चलावते।
निज 'ज्ञानमति' केवल करें, निजगुण अनंतों पावते।।

।।इत्याशीर्वादः।।

1. अंगपूर्व के अंश के साररूप में आज जैन ग्रंथ हैं।

1. शोकनाशिनी। 2. सुख देने वाली।

(40) चौबीस तीर्थंकर गणिनी पूजा

–अथ स्थापना-गीता छंद–

तीर्थंकरों के समवसृति में, आर्यिकाएँ मान्य हैं।
ब्राह्मी प्रभृति से चंदना तक, सर्व में हि प्रधान हैं।।
व्रतशील गुण से मंडिता, इंद्रादि से पूज्या इन्हें।
आह्वान करके पूजहूँ, त्रयरत्न से युक्ता तुम्हें।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–गीता छंद

गंगा नदी का नीर शीतल, स्वर्ण झारी में भरूँ।
निज कर्ममल को धोवने हित, मात पद धारा करूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी चंदन सुगंधित, घिस कटोरी में भरूँ।
तुम पाद पंकज चर्चते भवताप की बाधा हरूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अखंडित शालि तंदुल, धोय थाली में भरूँ।
तुम पाद सन्निध पुंज धरते, सर्व दुख का क्षय करूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली केवड़ा, अरविंद सुरभित पुष्प से।
तुम पाद कुसुमावलि किये, यश सुरभि फैले चहुँदिशे।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक इमरती सेमई, पायस पुआ पकवान से।
तुम पाद पंकज पूजते, क्षुध रोग मुझ तुरतहिं नशे।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती रजत दीपक, में जला आरति करूँ।
अज्ञानतम को दूर कर, निज ज्ञान की ज्योती भरूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध धूप सुगंध खेकर, कर्म अरि भस्मी करूँ।
तुम पाद पंकज पूजते, निज आत्म की शुद्धी करूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव अनार केला, आम फल को अर्पते।
निज आत्म अनुभव सुख सरस फल, प्राप्त हो तुम पूजते।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं, की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ, निज आत्म की रक्षा करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध तंदुल पुष्प नेवज, दीप धूप फलादि से।
मैं अर्घ अर्पण करूँ माता! आपको अति भक्ति से।।

सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ निज आत्म की रक्षा करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितगणिनी-ब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

व्रत गुण मंडित मात के, चरणों में त्रयबार।
शांतीधारा मैं करूँ, होवे शांति अपार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मल्लिका केवड़ा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि चरणों करूँ, करूँ स्वात्म शृंगार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा–

महाव्रतादी श्रेष्ठ, गुण भूषण को धारतीं।
पूजूँ भक्ति समेत, पुष्पांजलि करके यहाँ।।1।।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

ऋषभदेव के समवसरण में, 'ब्राह्मी' गणिनी मानी हैं।
सर्व आर्यिका तीन लाख, पच्चास हजार बखानी हैं।।
रत्नत्रय गुणमणि से भूषित, शुभ्र वस्त्र को धारे हैं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती, भवि को भवदधि से तारे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखत्रयलक्ष-पंचाशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के धर्मतीर्थ में, व्रत समिती गुप्ती धारें।
सर्व आर्यिका तीन लाख, अरु बीस हजार धर्म धारें।।
मात 'प्रकुब्जा' गणिनी इनमें, धर्म धुरंधर नारी हैं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती, सब जन-जन को सुखकारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथस्य गणिनीप्रकुब्जाप्रमुखत्रय-लक्षविंशतिसहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिन के समवसरण में, महाव्रतों से भूषित हैं।
तीन लाख अरु तीस हजार, आर्यिकायें गुण पूरित हैं।।
इनमें गणिनी 'धर्म श्री' माँ, धर्मवत्सला सुरवंद्या।
इनकी पूजा वंदन भक्ती, देती सुख परमानंदा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथस्य गणिनीधर्मश्रीप्रमुखत्रय-लक्षत्रिंशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन प्रभु धर्म सभा में, सर्व आर्यिकायें पूज्या।
तीन लाख अरु तीस सहस, छह सौ सब शील नियम युक्ता।।
इन सबकी 'मेरुषेणा' मां, गणिनी वत्सल गुणधारी।
इन सबकी पूजा भक्ती से, तरें भवोदधि नरनारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथस्य गणिनीमेरुषेणा-प्रमुखत्रयलक्षत्रिंशत्सहस्रषट्शत-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति जिनेश्वर समवसरण में, तीन लाख अरु तीस सहस।
इन सब व्रतमंडितआर्या में, मात 'अनंता' प्रमुख बसत।।
लज्जा शील गुणों से पूरित, एकशाटिका धारी हैं।
ध्यान अध्ययन तपस्या में रत, इन पूजा गुणकारी हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य गणिनीअनंताप्रमुखत्रय-लक्षत्रिंशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभू के धर्म तीर्थ में, धर्म मूर्तियाँ शोभे हैं।
चार लाख अरु बीस सहस, ये व्रती आर्यिकायें सब हैं।।
'रतिषेणा' माँ गणिनी इनमें, मानों जिनवर कन्या हैं।
जाती कुल से शुद्ध शील से, शुद्ध आर्यिका धन्या हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभनाथस्य गणिनीरतिषेणाप्रमुख-चतुर्लक्षविंशतिसहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व जिन समवसरण में, तीन लाख अरु तीस सहस।
'मीना' गणिनी सहित आर्यिका, सब सद्धर्म सुता सदृश।।
संयमशील समिति गुणमंडित, समकित रत्न धरें शोभें।
इनकी पूजा करते सुर नर, पुनः न दुर्गति दुख भोगें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य गणिनीमीनाप्रमुखत्रय-लक्षत्रिंशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रनाथ के समवसरण में, श्वेत वस्त्रधारी आर्या।
तीन लाख अस्सी हजार ये, इनमें 'वरुणा' प्रमुखार्या।।
लेश्या शुक्ल धरें ये श्रमणी, शुक्लगुणों से मंडित हैं।
जो भविजन इन पूजा करते, वे पद लहें अखंडित हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभनाथस्य गणिनीवरुणाप्रमुखत्रय-लक्षअशीतिसहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविधिनाथ के समवसरण में, 'घोषा' प्रमुख आर्यिका हैं।
तीन लाख अस्सी हजार, सब महाव्रतादि धारिका हैं।।
धर्म वत्सला धर्म मूर्तियाँ, धर्म ध्यान में तत्पर हैं।
धर्म प्राण जन इनको पूजें, सब सुख लहें निरंतर हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य गणिनीघोषाप्रमुखत्रय-लक्षअशीतिसहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतल जिन समवसरण में, प्रमुख आर्यिका 'धरणा' हैं।
ये तीन लाख अस्सी हजार, इनके वच अमृत झरना हैं।।
सब क्षमा मार्दव आर्जवादि, दश धर्मों को धारण करतीं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती, सब तन मन की व्याधी हरती।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथस्य गणिनीधारणाप्रमुखत्रयलक्षअशीतिसहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ के यहाँ एक लख, तीस सहस्र आर्यिका हैं।
इनमें गणिनी 'धारणीमात', ये रत्नत्रय त्रितय साधिका हैं।।
इस भव में स्त्रीलिंग छेद, इंद्रों का वैभव पाती हैं।
फिर आकर शिवपद प्राप्त करें, इन पूजा भव दुख घाती हैं।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथस्य गणिनीधारणीप्रमुखएकलक्षत्रिंशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य के यहाँ साध्वियाँ, एक लाख छह सहस कहीं।
इनमें 'वरसेना' गणिनी हैं, सब महाव्रतों को पाल रहीं।।
ये ग्यारह अंग पढ़ें रुचि से, शिष्याओं को शिक्षा देतीं।
जिनवर भक्ती में नित तत्पर, इनकी पूजा दुःख हर लेती।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य गणिनीवरसेनाप्रमुखएकलक्षषट्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ के निकट साध्वियाँ, एक लाख त्रय सहस कहीं।
ये 'पद्मा' गणिनी आज्ञा में, निज आत्म तत्त्व में लीन रहीं।।
सोलह कारण भावना भाय, तीर्थंकर पुण्य कमाती हैं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती, भव्यों के कर्म जलाती हैं।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथस्य गणिनीपद्माप्रमुखएकलक्षत्रयसहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अनंत के यहाँ आर्यिका, एक लाख अठ सहस कहीं।
गणिनी माँ 'सर्वश्री' उनमें, सब शील गुणों की खान कहीं।।
इनको पूजें सुर नर किन्नर, वीणादिक वाद्य बजा करके।
अप्सरियाँ नृत्य करें सुंदर, इनके गुण मणि गा गा करके।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथस्य गणिनीसर्वश्रीप्रमुखएकलक्षअष्टसहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ के निकट 'सुव्रता', गणिनी के अनुशासन में।
बासठ हजार चउशतक आर्यिका, नित तत्पर व्रत पालन में।।
तप त्याग अकिंचन ब्रह्मचर्य, धर्मों से शक्ति बढ़ाती हैं।
निज पाणि पात्र में लें आहार, मुनिवत् चर्या सु निभाती हैं।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथस्य गणिनीसुव्रताप्रमुखद्विषष्टिसहस्रचतुःशतआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ के समवसरण में, साठ हजार तीन सौ हैं।
गणिनी 'हरिषेणा' माता भी, निज गुण से सुर नर मन मोहें।।
ये परमशांति पाने हेतू, निज समतारस को चखती हैं।
इनकी आहारदान पूजा, भक्तों में समरस भरती हैं।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य गणिनीहरिषेणाप्रमुखषष्टिसहस्रत्रयशतआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ के यहाँ साठ, हजार तीन सौ पचास हैं।
आर्यिका 'भाविता' प्रमुख मान्य, निजगुण से भविजन मन मोहें।।
उपचार महाव्रत हैं इनके, इक साड़ी मात्र परिग्रह से।
गुणस्थान पाँचवाँ देशविरत, होता है पूजूँ भक्ती से।।17।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथस्य गणिनीभाविताप्रमुखषष्टिसहस्रत्रयशतपंचाशत-आर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर जिन के यहाँ आर्यिकाएँ, सब साठ हजार बखानी हैं।
'कुंथुसेना' गणिनी इनकी, ये उज्ज्वल गुणरजधानी हैं।।
इनके वचनामृत भविजन को, पुष्टी तुष्टी शांती देते।
जो इनकी पूजा करते हैं, उनके सब पातक हर लेते।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथस्य गणिनीकुंथुसेनाप्रमुखषष्टिसहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ के तीरथ में, पचपन हजार साध्वी मानीं।
गणिनी 'बंधुसेना' उनमें, सबको शिक्षा दें कुशलानी।।
ये सम्यग्दर्शन से विशुद्ध, निज पर भेद ज्ञान धारें।
चारित निर्दोष पालती हैं, इन पूजत रोग शोक टारें।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य गणिनीबंधुसेनाप्रमुखपंचपंचाशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिन के सभा बीच, पच्चास हजार आर्यिका हैं।
उनमें सु 'पुष्पदत्ता' प्रधान, सब निज शुद्धात्म साधिका हैं।।
रस रूप गंध स्पर्श शून्य, निज आत्मा का चिंतन करतीं।
इनके गुण गाते चक्रवर्ति, ये भक्तों के भवभय हरतीं।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य गणिनीपुष्पदत्ताप्रमुखपंचाशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिन के समवसरण में ये, साध्वी पैंतालिस सहस कहीं।
गणिनी 'मार्गिणी' मान्य उनमें, ये निजानंद सुख मग्न कहीं।।
भक्तों को शिवपथ दिखलातीं, पापों से रक्षा करती हैं।
वात्सल्यमयी माता सच्ची, इन पूजा नवनिधि भरती हैं।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य गणिनीमार्गिणीप्रमुखपंचचत्वारिंशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमीप्रभु समवसरण में ये, चालीस हजार बखानी हैं।
उनकी गणिनी 'राजुलदेवी', पातिव्रत धर्म निशानी हैं।।
हलधर नारायण चक्रवर्ती, इंद्रादिक इनको नमते हैं।
महिलाओं में ये चूड़ामणि, इनका हम वंदन करते हैं।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य गणिनीराजमतीप्रमुख-चत्वारिंशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ के निकट आर्यिका, अड़तिस सहस मान लीजे।
उनमें 'सुलोचना' गणिनी हैं, स्तुति से मन पवित्र कीजे।।
इनके गुण अमलवस्त्र उज्ज्वल, मन धवल शुक्ल लेश्या शोभें।
इनकी पूजा भक्ती करके, हम शिवपुर के सब सुख भोगें।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य गणिनीसुलोचनाप्रमुखअष्ट-त्रिंशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वीरप्रभू की सभा बीच, छत्तीस हजार आर्यिका हैं।
मां सती 'चंदना' गणिनी हैं, सब संयम रत्न साधिका हैं।।
इनको वंदामी कर करके, मैं शिवपथ प्रशस्त कर लेऊँ।
मेरा संयम निर्दोष पले, गुरुचरण हृदय में रख लेऊँ।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः गणिनीचंदनाप्रमुखषट्-त्रिंशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

लाख पचास छप्पन सहस, दो सौ तथा पचास।
समवसरण की साध्वियाँ, और अन्य भी खास।।
अट्ठाइसों मूलगुण, उत्तर गुण बहुतेक।
धारें सबहीं आर्यिका, नमूँ नमूँ शिर टेक।।25।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थित-गणिनीब्राह्मीप्रमुखपंचाशल्लक्षषट्-पंचाशत्सहस्रद्वयशत-पंचाशत्आर्यिकाचरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य– **ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख सर्वार्यिकाभ्यो नमः।**

जयमाला

–त्रिभंगी छंद–

जय जय जिन श्रमणी, गुणमणि धरणी, नारि शिरोमणि सुरवंद्या।
जय रत्नत्रयधनि, परम तपस्विनि, स्वात्मचिंतवनि त्रय संध्या।।
मुनि सामाचारी, सर्व प्रकारी, पालनहारी अहर्निशी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, तुम गुण गाऊँ, निजपद पाऊँ ऊर्ध्वदिशी।।1।।

–स्रग्विणी छंद–

धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।
आप सम्यक्त्व से शुद्ध निर्दोष हो।
शास्त्र के ज्ञान से पूर्ण उद्योत हो।।2।।

शुद्ध चारित्र संयम धरा आपने।
श्रेष्ठ बारह विधा तप चरा आपने।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।3।।

एक साड़ी परिग्रह रहा शेष है।
केश लुंचन करो आर्यिका वेष है।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।4।।

आतपन आदि बहु योग को धारतीं।
क्रोध कामारि शत्रू सदा मारतीं।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।5।।

अंग ग्यारह सभी ज्ञान को धारतीं।
मात! हो आप ही ज्ञान की भारती।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।6।।

भक्तजनवत्सला धर्म की मूर्ति हो।
जो जजें आपको आश की पूर्ति हो।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।7।।

मात ब्राह्मी प्रभृति चंदना साध्वियाँ।
अन्य भी जो हुई हैं महासाध्वियाँ।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।8।।

मात सीतासती सुलोचना द्रौपदी।
रामचंद्रादि इंद्रादि से वंद्य भी।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।9।।

चंद्र समकीर्ति उज्ज्वल दिशा व्यापती।
सूर्य सम तेज से पाप तम नाशतीं।।

धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।10।।

सिंधुसम आप गांभीर्य गुण से भरीं।
मेरु सम धैर्य भू-सम क्षमा गुण भरीं।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।11।।

बर्फ सम स्वच्छ शीतलवचन आपके।
श्रेष्ठ लज्जादि गुण यश कहें आपके।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।12।।

आर्यिका वेष से मुक्ति होवे नहीं।
संहनन श्रेष्ठ बिन कर्म नशते नहीं।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।13।।

सोलवें स्वर्ग तक इंद्र पद को लहें।
फेर नर तन धरें साधु हों शिव लहें।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।14।।

जैन सिद्धांत की मान्यता है यही।
संहनन श्रेष्ठ बिन शुक्ल ध्यानी नहीं।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।15।।

अंबिके! आपके नाम की भक्ति से।
शील सम्यक्त्व संयम पलें शक्ति से।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।16।।

आत्मगुण पूर्ति हेतू जजूँ मैं सदा।
नित्य वंदामि करके नमूँ मैं मुदा।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।17।।

'ज्ञानमति' पूर्ण हो याचना एक ही।
अंब! पूरो अबे देर कीजे नहीं।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।18।।

—घत्ता—

जय जय जिन साध्वी, समरस माध्वी,
तुममें गुणमणि रत्न भरें।
तुम अतुलित महिमा, पुण्य सुगरिमा,
हम पूजें निज सौख्य भरें।।19।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थित-सर्वार्यिकाचरणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

—दोहा—

भूत भविष्यत् संप्रती, आर्यिकाएँ त्रयकाल।
हुईं होयंगी हो रहीं, नमूँ नमूँ नतभाल।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(41) त्रैलोक्य जिनालय पूजा

स्थापना-नरेन्द्र छंद

त्रिभुवन के जिनमंदिर शाश्वत, आठ कोटि सुखराशी।
छप्पन लाख हजार सत्यानवे, चार शतक इक्यासी।।
प्रति जिनगृह में मणिमय प्रतिमा, इक सौ आठ विराजें।
आह्वानन कर जजूँ यहाँ मैं, जन्म-मरण दुःख भाजें।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक—स्रग्विणी छन्द

स्वर्ग[1] गंगानदी नीर झारी भरूँ।
नाथ के पाद में तीन धारा करूँ।।
सर्वशाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्त-नवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

1. आकाश।

गंध चंदन घिसाके कटोरी भरूं।
नाथ पादाब्ज अर्चूं सभी दुःख हरूँ।।
सर्वशाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धौत तंदुल शशी रश्मि सम श्वेत हैं।
नाथ के अग्र में पुंज सुख हेतु हैं।।
सर्वशाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद बेला सुगंधित कुसुम ले लिये।
नाथ पादाब्ज में आज अर्पण किये।।
सर्वशाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर बरफी अंदरसा पुआ लायके।
नाथ के सामने चरु चढ़ाऊँ अबे।।
सर्वशाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप ज्योती लिये आरती मैं करूँ।
मोह हर ज्ञान की भारती मैं भरूँ।।
सर्वशाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ अबे धूपघट में जले।
कर्म निर्मूल हो देहकांती मिले।।
सर्वशाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।7।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र अंगूर केला चढ़ाऊँ भले।
मोक्ष की आश सह सर्व वांछित फले।।
सर्वशाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।8।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ में स्वर्ण चाँदी कुसुम ले लिये।
नाथ को अर्पहूँ रत्नत्रय के लिये।।
सर्वशाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े चाव से।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा–

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्मसाम्राज, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– **ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यशाश्वतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

जयमाला

– दोहा–

जय त्रिभुवन के जिनभवन, जिनप्रतिमा जिनसूर्य।
नमूँ अनंतों बार मैं, भव्य कमलिनी सूर्य।।1।।

– शंभू छंद–

जय अधोलोक के जिनगृह सात-करोड़ बहत्तर लाख नमूँ।
जय मध्यलोक के चार शतक, अट्ठावन जिनगृह नित्य नमूँ।
जय व्यंतरसुर ज्योतिष सुर के, जिनगेह असंख्याते प्रणमूँ।
जय ऊरध के चौरासि लाख, सत्यानवे सहस तेईस नमूँ।।1।।

कोट्यष्ट सुछप्पन लाख सत्यानवे, सहस चार सौ इक्यासी।
जिनधाम अकृत्रिम नमूँ नमूँ, ये कल्पवृक्षसम सुख राशी।।
नव सौ पचीस कोटी त्रेपन्न, लाख सत्ताइस सहस तथा।
नव्सौ अड़तालिस जिनप्रतिमा, मैं नमूँ हरो भवव्याधि व्यथा।।2।।

जिनमंदिर लंबे सौ योजन, पचहत्तर तुंग विस्तृत पचास।
उत्कृष्ट प्रभाव कहा श्रुत में, मध्यम लंबे योजन पचास।।
चौड़े पचीस ऊँचे साढ़े-सैंतिस जघन्य लंबे पचीस।
चौड़े साढ़े बारह योजन, ऊँचे योजन पौने उनीस।।3।।

मेरू में भद्रसाल नंदन-वन के वर द्वीप नंदीश्वर के।
उत्कृष्ट जिनालय मुनि कहते, मैं नमूँ नमूँ अंजलि करके।।
सौमनस रुचकगिरि कुंडलगिरि, वक्षार कुलाचल के मंदिर।
मनुजोत्तर इष्वाकार अचल, मध्यम प्रमाण के जिनमंदिर।।4।।

पांडुकवन के जिनगृह जघन्य, मैं नमूँ नमूँ शिर नत करके।
रजताचल जंबू शाल्मलि तरु, इनके मंदिर सबसे छोटे।।
ये एक कोस लंबे आधे, चौड़े पौने कोस ऊँचे हैं।
सर्वत्र लघू जिनमंदिर का, परिमाण यही मुनि गाते हैं।।5।।

जिनगृह को बेढ़े तीन कोटे, चहुँदिश में गोपुर द्वार कहे।
प्रतिवीथी मानस्तंभ बने, प्रतिवीथी नव नव स्तूप कहें।।
मणिकोट प्रथम के अंतराल, वनभूमि लतायें मनहरतीं।
परकोट द्वितिय के अंतराल, दशविधी ध्वजायें फरहरतीं।।6।।

परकोट तृतिय के बीच चैत्य-भूमी अतिशायि शोभती है।
सिद्धार्थवृक्ष अरु चैत्यवृक्ष, बिंबों से चित्त मोहती है।।
प्रतिमंदिर मध्य गर्भगृह इक सौ आठ-आठ अतिसुंदर हैं।
इन गर्भगृह में सिंहासन पर, जिनवर बिंब मनोहर हैं।।7।।

ये बिंब पाँच सौ धनुष तुंग, पद्मासन राजें मणिमय हैं।
बत्तीस युगल यक्ष दोनों, बाजू में चंवर ढुराते हैं।।
जिनप्रतिमा निकट श्रीदेवी, श्रुतदेवी की मूर्ती शोभें।
सानत्कुमार सर्वाण्हयक्ष की, मूर्ति भव्य जन मन लोभें।।8।।

प्रत्येक बिंब के पास सुमंगल, द्रव्य एक सौ आठ-आठ।
भृंगार कलश दर्पण चामर, ध्वज छत्र व्यजन अरु सुप्रतिष्ठ।।
श्री मंडप आगे स्वर्ण कलश, शोभें बहु धूप घड़े सोहें।
मणिमय सुवर्णमय मालायें, चारण ऋषि का भी मन मोहें।।9।।

मुखमंडप प्रेक्षामंडप अरु, वंदन अभिषेक मंडपादी।
क्रीड़ा नर्तन संगीत गुणनगृह, चित्रभवन विस्तृत अनादि।।
बहुविध रचना इन मंदिर में, गणधर भी नहिं कह सकते हैं।
माँ सरस्वती नित गुण गाते, मुनिगण अतृप्त ही रहते हैं।।10।।

मैं नित्य जिनालय को वंदूँ, नित शीश झुकाऊँ गुण गाऊँ।
जिनप्रतिमा के पद कमलों में, बहु बार नमूँ नित शिर नाऊँ।।
प्रत्यक्षदर्श मिल जाय प्रभो! इसलिये परोक्ष करूँ वंदन।
निज 'ज्ञानमती' ज्योती प्रगटे, इस हेतु करूँ शत-शत वंदन।।11।।

–दोहा–

चिंतामणि जिनमूर्तियाँ, चिंतित फलदातार।
चिच्चैतन्य जिनेन्द्र को, नमूँ नमूँ शत बार।।12।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भविजन श्रद्धा भक्ती से, तीन लोक जिनयज्ञ रचावें।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, वे नित-नित नव मंगल पावें।।
तीन लोक का भ्रमण मिटाकर, निज के तीन रत्न को पाके।
'केवलज्ञानमती' प्रकटित कर, बसें त्रिलोक शिखर पर जाके।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(42) श्री वासुपूज्य जिनपूजा

–अथ स्थापना –गीता छंद –

श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र वासव-गणों से पूजित सदा।
इक्ष्वाकुवंश दिनेश काश्यप-गोत्र पुंगव शर्मदा।।
सप्तर्द्धिभूषित गणधरों से, पूज्य त्रिभुवन वंद्य हैं।
आह्वान कर पूजूँ यहाँ, मिट जायेगा भव फंद है।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –गीता छंद –

हे नाथ! जग में जन्म व्याधी, बहुत ही दुख दे रही।
अब मेट दीजे इसलिए, त्रयधार दे पूजूँ यहीं।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! इस यमराज का, संताप अब नहिं सहन है।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, चर्चूं सुगंधित गंध है।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे ज्ञान के, बहु खंड-खंड हुए यहाँ।
कर दो अखंडित ज्ञान तंदुल, पुंज से पूजूँ यहाँ।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! भवशर विश्वजेता, आप ही इसके जयी।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, बहु पुष्प अर्पूं मैं यहीं।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! त्रिभुवन अन्न खाया, भूख अब तक ना मिटी।
प्रभु भूख व्याधी मेट दो, इस हेतु चरु अर्पूं अभी।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्न दीपक से कभी, मन का अंधेरा ना भागा।
हे नाथ! तुम आरति करत ही, ज्ञान का सूरज उगा।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे कर्म कैसे, भस्म हों यह युक्ति दो।
मैं धूप खेऊँ अग्नि में, ये कर्म बैरी भस्म हों।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! चाहा बहुत फल, बहुते चरण में नत हुआ।
नहिं तृप्ति पायी इसलिए, फल सरस तुम अर्पण किया।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! निज के रत्नत्रय, अनमोल श्रेष्ठ अनर्घ हैं।
मुझको दिलावो "ज्ञानमति", इस हेतु अर्घ्य समर्प्य है।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

वासुपूज्य चरणाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम स्वाद, तिहुँजग में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार, जिनपद पुष्पांजलि करूँ।
भरें सौख्य भंडार, रोग शोक संकट टलें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

—गीताछंद—

दिव महाशुक्र विमान से, च्युत हो प्रभू चंपापुरी।
वसुपूज्य पितु माता जयावति, गर्भ आये शुभ घरी।।
आषाढ़ कृष्णा छठ तिथी, सुरवृंद माँ पितु को जजें।
हम गर्भ कल्याणक जजत, संपूर्ण दुःखों से छुटें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां श्रीवासुपूज्यजिनगर्भ-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश तिथी, सुरगृह स्वयं बाजे बजे।
जन्में जिनेश्वर उसी क्षण, सुरपति मुकुट भी थे झुके।।
माँ के प्रसूती सद्म जा, शचि ने शिशू को ले लिया।
सुर शैल पर अभिषव हुआ, पूजत जगत भव कम किया।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिन-जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश तिथी, वैराग्य मन में आ गया।
सुर पालकी पे प्रभु चढ़े, लौकांतिसुर स्तुति किया।।
इन्द्राणि निर्मित चौक पर, तिष्ठे स्वयं दीक्षा लिया।
प्रभु तप कल्याणक पूजते, मिल जाय जिन दीक्षा प्रिया।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिन-दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन मनोहर में तरु कदंबक, तले प्रभु थे ध्यान में।
शुभ माघ शुक्ला द्वितीया, प्रभु केवली भास्कर बनें।।
धनदेव निर्मित समवसृति में, गंधकुटि में शोभते।
द्वादशसभा में भव्य नमते, हम प्रभू को पूजते।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां श्रीवासुपूज्यजिनज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदी चौदश तिथी, चंपापुरी से नाथ ने।
संपूर्ण कर्म विनाश कर, शिव वल्लभा के पति बने।।
सौधर्म इन्द्र सुरादिगण, हर्षित हुए वंदन करें।
हम वासुपूज्य जिनेन्द्र की, निर्वाण पूजा को करें।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिन-मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य— **ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

—दोहा—

घाति चतुष्टय घात कर, प्रभु तुम हुये कृतार्थ।
नव केवल लब्धी रमा, रमणी किया सनाथ।।1।।

—शेरछंद—

प्रभु दर्शमोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकाख्य को परिपूर्ण किया है।।
चारित्र मोहनीय का विनाश जब किया।
क्षायिक चरित्र नाम यथाख्यात को लिया।।3।।

संपूर्ण ज्ञानावर्ण का जब आप क्षय किया।
कैवल्य ज्ञान से त्रिलोक जान सब लिया।।
प्रभु दर्शनावरण के क्षय से दर्श अनंता।
सब लोक औ अलोक देखते हो तुरंता।।3।।

दानांतराय नाश के अनंत प्राणि को।
देते अभय उपदेश तुम शिवपथ का दान जो।।
लाभान्तराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंतलाभ का तब लाभ प्रभु लिया।।4।।

जिससे परमशुभ सूक्ष्म दिव्य नंत वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना।।
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
शिवप्राप्त होने तक शरीर भी टिका रहे।।5।।

भोगांतराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध उदकवृष्टि शोभ हैं।।
पग के तले वरपद्म रचें देवगण सदा।
सौगंध्य शीतपवन आदि सौख्य शर्मदा।।6।।

उपभोग अन्तराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी।।
सिंहासनादि छत्र चंवर तरु अशोक हैं।
सुर दुंदुभी भाचक्र दिव्यध्वनि मनोज्ञ हैं।।7।।

वीर्यान्तराय नाश से आनन्त्य वीर्य है।
होते न कभी श्रांत आप धीर वीर हैं।।
प्रभु चार घाति नाश के नव लब्धि पा लिया।
आनन्त्य ज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया।।8।।

श्रीधर्म आदि छ्यासठ गणधर गुरू रहें।
मुनिराज बाहत्तर हजार ध्यानरत कहें।।

इक लाख छह हजार 'सेना' आदि आर्यिका।
दो लाख कहें श्रावक चउलाख श्राविका।।9।।

सत्तर धनुष उत्तुंग देह महिष चिह्न है।
आयू बहत्तर लाख वर्ष लाल वर्ण है।।
फिर भी तो निराकार वर्ण आदि शून्य हो।
आनन्त्य काल तक तो सिद्ध क्षेत्र में रहो।।10।।

प्रभु आप सर्व शक्तिमान कीर्ति को सुना।
इस हेतु से ही आज यहाँ मैं दिया धरना।।
अब तारिये न तारिये यह आपकी मरजी।
बस "ज्ञानमती" पूरिये यदि मानिये अरजी।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

वासुपूज्य भगवंत के, गुण अनंत अविकार।
जजते ही भव अंत हो, मिले आत्म गुण सार।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(43) ज्येष्ठ जिनवर पूजा

नाभिराय कुल मण्डन मरुदेवी उर जननं।
प्रथम तीर्थंकर गाये सु स्वामी आदि जिनं।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।1।।

जुगला धर्म निवारण स्वामी ऋषभ जिनम्।
संसार सागर तारण सेविय सुर गहनं।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।2।।

इन्द्र इन्द्रानी देवा देवी बहु मिलनी।
मेरु जिनेन्द्र न्हवायो महोत्सव जै करनी।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।3।।

गणधर, ऋषिवर, यतिवर, मुनिवर ध्यान धरं।
आर्यिका, श्रावक, श्राविका, पूजत चरण करं।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

निर्मल शीतल नीर उदक यह पूजरयं।
कर्म मलय सब टारी आतम निर्मलयं।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।5।।

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशरि चंदन कर्पूर विलेपन पूजरयं।
सुगंध शरीर लहे करि आतम निर्मलयं।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।6।।

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल सम उज्ज्वल अक्षत पूजरयं।
अक्षय पद सु लहै करि आतम निर्मलयम्।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।7।।

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जाही जुही मच कुन्द सेवती पूजरयं।
पूजा पद सु लहे करि आतम निर्मलयम्।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।8।।

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अन्न बहु आनि सु पक्वान्न पूजरयं।
वेदनीय कर्म विनाशी आतम निर्मलयं।।

ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।9।।

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर तनी बहु ज्योति सु आरति पूजरयं।
केवलज्ञान लहे करि आतम निर्मलयम्।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।10।।

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर लोबान कृष्णागर धूप सो पूजरयं।
घाती कर्म प्रजाली आतम निर्मलयम्।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।11।।

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र नीबू जंभीर नारियल पूजरयम्।
मन वांछित फल पायमि आतम निर्मलयम्।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।12।।

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मंगल गीत महोत्सव पूजरयम्।
मोक्ष सौख्य पद पायमि आतम निर्मलयम्।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।13।।

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकलकीर्ति गुरु प्रणमों जिनवर पूजरयम्।
ब्रह्म मनै 'जिनदास' सु आतम निर्मलयम्।।
ज्येष्ठ जिनेन्द्र न्हवाऊँ सूरज उग्र भणी।
सुवरण कलशा भराऊँ क्षीरसमुद्र भरणी।।14।।

ॐ ह्रीं आदिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

–दोहा –

आदि प्रभो जिन आदि गुरु, आदि नमो अर्हंत।
आदि समय सुमिरण करौं, भय भंजन भगवंत।।1।।

– छंद –

अमर नयर सम नयर अयोध्या।
नाभि सुरेन्द्र बसै जु सु बुध्या।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।1।।

तसु पटरानी मरुदेवी माया।
युगपति आदि जिनेश्वर जाया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।2।।

ज्येष्ठ मास अभिषेक सु करिया।
अष्ठोत्तर शत कुम्भ सु भरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।3।।

भभकत जल धारा संचरिया।
ललित कल्लोल धरनि उत्तरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।4।।

जै जै कार असुर उच्चरिया।
इन्द्र इन्द्राणी सिंहासन धरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।5।।

अंग अंग नव भूषण हरिया।
कुण्डल हार हरित मणि जरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।6।।

वृषभ नाथ सत नाथ सु सहिया।
कमल नयन कमलापति कहिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।7।।

जुगला धर्म निवारण वरिया।
सुर नर किंनर गंधोदक सरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।8।।

हिम हिमांसु चन्दन घन सरिया।
भूरि सुगंध गंध परि सरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।9।।

रतन कचोल कुमारनि भरिया।
जिन चरणांबुज पूजत हरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।10।।

अक्षत अक्षत वास लहरिया।
रोहिनी कंत किरन सम सरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।11।।

देखत रुचिकर अमर निकरिया।
पंच मुष्ठि आगे जिन धरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।12।।

सुन्दर पारिजात मोगरिया।
कमल वकुल पाटल कुमुदरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।13।।

चरु वर दीप धूप फल फलिया।
फल सु रसाल मधुर रस भरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।14।।

कुसुमांजलि सांजलि समु जलिया।
पंडित राज आम्र बच कलिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।15।।

त्रिभुवन कीर्ति पद पंकज वरिया।
रत्नभूषण सूरि महापद करिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।16।।

जै जै कार असुर उच्चरिया।
ब्रह्म कृष्ण जिनराजस्तविया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।17।।

कुम्भकलश भर जो जन ढरिया।
शाश्वत धर्म सदा अनुसरिया।।
सुरपति मेरु शिखर लै धरिया।
कनक कलश क्षीरोदधि भरिया।।18।।

—अनुष्टुप्—

यावंति जिनचैत्यानि, विद्यंते भुवनत्रये।
तावंति सततं भक्त्या, त्रिःपरीत्य नमाम्यहं।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।इत्याशीर्वादः।।

(44) सिद्ध परमेष्ठी पूजा

—स्थापना-गीता छन्द —

श्री सिद्ध परमेष्ठी अनन्तानन्त त्रैकालिक कहे।
त्रिभुवन शिखर पर राजते, वह सासते स्थिर रहें।।
वे कर्म आठों नाश कर, गुण आठ धर कृतकृत्य हैं।
कर थापना मैं पूजहूँ, उनको नमें नित भव्य हैं।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-पंचचामर छंद

अनादि से तृषा लगी न नीर से बुझी कभी।
अतः प्रभो त्रिधार देय, नीर से जजूँ अभी।।
अनन्त सिद्धचक्र की, सदा उपासना करूँ।
स्व जन्म मृत्यु मल्ल जीत, सिद्धि अंगना वरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत काल राग आग, दाह में जला दिया।
उसी कि शांति हेतु गंध, लाय चर्ण चर्चिया।।

अनन्त सिद्धचक्र की, सदा उपासना करूँ।
स्व जन्म मृत्यु मल्ल जीत, सिद्धि अंगना वरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणेक सुक्ख हेतु मैं, नमा सभी कुदेव को।
अखंड सौख्य हेतु शालि से जजूँ सुदेव को।।
अनन्त सिद्धचक्र की, सदा उपासना करूँ।
स्व जन्म मृत्यु मल्ल जीत, सिद्धि अंगना वरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्ध पुष्पहार ले, जजूँ समस्त सिद्ध को।
रतीश मल्ल जीत के, लहूँ निजात्म सिद्धि को।।
अनन्त सिद्धचक्र की, सदा उपासना करूँ।
स्व जन्म मृत्यु मल्ल जीत, सिद्धि अंगना वरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पियूष पिंड के समान, मोदकादि लेय के।
निजात्म सौख्य हेतु मैं, जजूँ प्रमाद खोय के।।
अनन्त सिद्धचक्र की, सदा उपासना करूँ।
स्व जन्म मृत्यु मल्ल जीत, सिद्धि अंगना वरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवर्ण दीप लेय नाथ, पाद अर्चना करूँ।
समस्त मोह ध्वांत नाश, ज्ञान ज्योति को भरूँ।।
अनन्त सिद्धचक्र की, सदा उपासना करूँ।
स्व जन्म मृत्यु मल्ल जीत, सिद्धि अंगना वरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्ध धूप लेय अग्नि-पात्र में प्रजालिये।
कलंक पंक ज्वाल के, निजात्म को उजालिये।।
अनन्त सिद्धचक्र की, सदा उपासना करूँ।
स्व जन्म मृत्यु मल्ल जीत, सिद्धि अंगना वरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनार सेब संतरादि, सत्फलों को लाइये।
स्व तीन रत्न हेतु नाथ, पाद में चढ़ाइये।।
अनन्त सिद्धचक्र की, सदा उपासना करूँ।
स्व जन्म मृत्यु मल्ल जीत, सिद्धि अंगना वरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरत्न को मिलाय अर्घ, लेय थाल में भरे।
अनन्त शक्ति हेतु आप, चर्ण अर्चना करे।।
अनन्त सिद्धचक्र की, सदा उपासना करूँ।
स्व जन्म मृत्यु मल्ल जीत, सिद्धि अंगना वरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

प्रभु पद में धारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।।
शांतीधारा जगत में, आत्यंतिक सुख हेतु।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगन्धित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—**ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।**

जयमाला

—दोहा—

पुद्गल के संबंध से, हीन स्वयं स्वाधीन।
नमूँ नमूँ सब सिद्ध को, तिन पद भक्ति अधीन।।1।।

चाल-हे दीन................

जय जय अनंत सिद्ध वृंद मुक्ति के कंता।
जय जय अनंत भव्यवृंद सिद्धि करंता।।
जय जय त्रिलोक अग्रभाग ऊर्ध्व राजते।
जय नाथ! आप में हि आप नित्य राजते।।1।।

ज्ञानावरण के पाँच भेद को विनाशिया।
नव भेद दर्शनावरण को सर्व नाशिया।।
दो वेदनीय आठ बीस मोहनी हने।
चउ आयु नामकर्म सब तिरानवे हने।।2।।

दो गोत्र अंतराय पाँच सर्व नाशिया।
सब इक सौ अड़तालीस कर्म प्रकृति नाशिया।।
ये आठ कर्मनाश मुख्य आठ गुण लिये।
फिर भी अनंतानंत सुगुणवृंद भर लिये।।3।।

इन ढाई द्वीप मध्य से ही मुक्ति पद मिले।
अन्यत्र तीन लोक में ना पूर्ण सुख खिले।।

सब ही मनुष्य मुक्त होते कर्मभूमि से।
अन्यत्र से भी मुक्त हों उपसर्ग निमित्त से।।4।।

पर्वत-नदी-समुद्र-गुफा-कंदराओं से।
वन-भोगभूमि-कर्मभू औ वेदिकाओं से।।
जो मुक्त हुए हो रहे औ होएंगे आगे।
उन सर्व सिद्ध को नमूँ मैं शीश झुका के।।5।।

नर लोक पैंतालीस लाख योजनों कहा।
उतना प्रमाण सिद्धलोक का भी है रहा।।
अणुमात्र भी जगह न जहाँ मुक्त ना हुए।
अतएव सिद्धलोक सिद्धगण से भर रहे।।6।।

उत्कृष्ट सवा पाँच सौ धनु का प्रमाण है।
जघन्य साढ़े तीन हाथ का ही मान है।।
मध्यम अनेक भेद से अवगाहना कही।
उन सर्व सिद्ध को नमूँ वे सौख्य की मही।।7।।

निज आत्मजन्य निराबाध सौख्य भोगते।
निज ज्ञान से ही लोकालोक को विलोकते।।
निज में सदैव तृप्त सदाकाल रहेंगे।
आगे कभी भी वे न पुनर्जन्म लहेंगे।।8।।

उन सर्व सिद्ध की मैं सदा वंदना करूँ।
सर्वार्थसिद्धि हेतु सदा अर्चना करूँ।।
तुम नाममात्र भी निमित्त सर्व सिद्धि में।
अतएव नमूँ बार-बार सर्व सिद्ध मैं।।9।।

—दोहा—

भूत भविष्यत संप्रती, तीन काल के सिद्ध।
उनकी पूजा जो करें, लहें 'ज्ञानमति' निद्ध।।10।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसर्वसिद्धपरमेष्ठिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेरछन्द—

जो भक्ति से श्री सिद्धप्रभु का यजन करेंगे।
वे भव्य नवो निधि से भंडार भरेंगे।।
कैवल्य 'ज्ञानमति' से नवलब्धि वरेंगे।
फिर मोक्षमहल में अनंतसौख्य भरेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(45) रक्षाबंधन पूजा

(उपसर्ग विजेता अकम्पनाचार्यादि सात सौ मुनियों की पूजन)

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

—स्थापना—

तर्ज - धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले........

सात शतक मुनिवरों की अर्चना करूँ, अर्चना करूँ इनकी वंदना करूँ।
ये अकम्पनाचार्यादि थे, उपसर्गजयी मुनिराज थे।।सात शतक.।।टेक.।।
हस्तिनागपुर नगरी के उद्यान में,
एक बार इन मुनि के चातुर्मास थे।
अग्नी का उपसर्ग किया बलि आदि ने,
दूर किया उपसर्ग विष्णु मुनिराज ने।।
वे सब मुनी, ध्यानस्थ थे, जिन आत्म में, अनुरक्त थे, उनके पद में वन्दन करूँ, उन मुनियों का अर्चन करूँ।।सात.।।1।।
रक्षाबंधन पर्व तभी से चल गया,
यति रक्षा का भाव हृदय में भर गया।

उनकी पूजन हेतू स्थापन किया,
पुष्प हाथ में लेकर आह्वानन किया।।
वे सब मुनी, ध्यानस्थ थे, निज आत्म में, अनुरक्त थे, उनके पद में वंदन करूँ, उन मुनियों का अर्चन करूँ।।सात.।।2।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतकमुनिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतकमुनिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतकमुनिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –

सात शतक मुनिवरों की अर्चना करूँ, अर्चना करूँ इनकी वंदना करूँ।
ये अकम्पनाचार्यादि थे, उपसर्गजयी मुनिराज थे।।सात शतक.।।टेक.।।

हस्तिनापुर में गंगा नदी है बह रही,
उस जल से गुरुपद में जल धारा करी।
जन्म जरा मृत्यू मेरा भी नाश हो,
ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।
अर्चन करूँ, वन्दन करूँ, रक्षाबंधन सुमिरन करूँ, गुरुचरणों में प्रणमन करूँ।।सात शतक.।।1।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन सा शीतल स्वभाव मुनि का कहा,
चन्दन ले गुरुचरणों में चर्चन किया।
मेरा भव आताप शीघ्र ही नाश हो,
ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।
अर्चन करूँ, वन्दन करूँ, रक्षाबंधन सुमिरन करूँ, गुरुचरणों में प्रणमन करूँ।।सात शतक.।।2।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद प्राप्ति में मुनिवर रत रहें,
इसीलिए अक्षत से गुरु पूजन करें।
शीघ्र मुझे भी अक्षय पद की प्राप्ति हो,
ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।
अर्चन करूँ, वन्दन करूँ, रक्षाबंधन सुमिरन करूँ, गुरुचरणों में प्रणमन करूँ।।सात शतक.।।3।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों सी मृदुता मुनिवर मन की कही,
फूलों को ले गुरुपद की पूजा करी।
काम व्यथा मेरी भी शीघ्र विनाश हो,
ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।
अर्चन करूँ, वन्दन करूँ, रक्षाबंधन सुमिरन करूँ, गुरुचरणों में प्रणमन करूँ।।सात शतक.।।4।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि क्षुधरोग विनाशन पथ पर चल रहे,
उनकी पूजन अतः करूँ नैवेद्य से।
क्षुधारोग मेरा भी शीघ्र विनाश हो,
ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।
अर्चन करूँ, वन्दन करूँ, रक्षाबंधन सुमिरन करूँ, गुरुचरणों में प्रणमन करूँ।।सात शतक.।।5।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनाश की युक्ति मुनीजन कर रहे,
इसीलिए उन पूजन में दीपक जले।।
मोह तिमिर मेरा भी शीघ्र विनाश हो,
ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।
अर्चन करूँ, वन्दन करूँ, रक्षाबंधन सुमिरन करूँ, गुरुचरणों में प्रणमन करूँ।।सात शतक.।।6।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मनाश की युक्ति मुनीजन कर रहे,
इसीलिए पूजन में धूप दहन करें।
मेरे आठों कर्म शीघ्र ही नाश हों,
ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।
अर्चन करूँ, वन्दन करूँ, रक्षाबंधन सुमिरन करूँ, गुरुचरणों में प्रणमन करूँ।।सात शतक.।।7।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फल की आश में यतिगण लग रहे,
मैंने उन पूजन में फल अर्पण किये।
मुझे शीघ्र ही मोक्ष महाफल प्राप्त हो,
ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।
अर्चन करूँ, वन्दन करूँ, रक्षाबंधन सुमिरन करूँ, गुरुचरणों में प्रणमन करूँ।।सात शतक.।।8।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य का यत्न मुनीजन कर रहे,
अर्घ्य थाल में अष्टद्रव्य मैंने लिए।
मुझे 'चंदनामती' अनघ पद प्राप्त हो,
ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।
अर्चन करूँ, वन्दन करूँ, रक्षाबंधन सुमिरन करूँ, गुरुचरणों में प्रणमन करूँ।।सात शतक.।।9।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण कलश में शुद्ध नीर भर कर लिया, शांतीधारा सप्त शतक मुनि पद किया।
मुझ मन में आत्यंतिक शांती प्राप्त हो, ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।10।।

शांतये शांतिधारा

हस्तिनापुर के उपवन में जो फूल हैं, उनसे पुष्पांजलि करना अनुकूल है।
पुष्प सदृश सुरभी मुझ मन को प्राप्त हो, ऐसी शक्ति मिले निज ज्ञान विकास हो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

जयमाला

तर्ज-सपने में.........

यह सात शतक मुनि पूजन की जयमाला है। गुरुभक्ति सहित चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।
गुरुभक्ति सहित चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।टेक.।। यह सात शतक.।।1।।

इक कथा सुनी है पुरानी, हस्तिनापुरी की निशानी। इक बार सात सौ मुनिवर, आए थे हस्तिनापुरिवर।
नृप पद्म की थी रजधानी, रोमांचक जिनकी कहानी।। उद्यान में ठहरा था संघ, गये दर्शन को राजा तब।।
उनके मंत्रियों के छल का राज बताना है।

गुरु दर्शन से निज मन को शान्त बनाना है।
गुरुभक्ति सहित चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।
यह सात शतक.।।2।।

बलि आदि राजमंत्री वे, जिनधर्म के विद्वेषी थे।
अपमान किया था मुनि का, उसका फल उन्हें मिला था।।
अब फिर मुनि से बदला लेने को ठाना है।
गुरु भक्ति सहित चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।
यह सात शतक.।।3।।

वरदान धरोहर में था, नृप से मांगा उनने था।
बस सात दिवस तक हमको, निज राज्य हस्तिनापुर दो।।
मंत्री को राज्य दे नृप को वचन निभाना है।
गुरुभक्ति सहित चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।
यह सात शतक.।।4।।

राजा से राज्य को पाकर, उपसर्ग किया मुनियों पर।
चहुँ ओर अग्नि जलवाई, देकर के यज्ञ दुहाई।।
मुनियों ने सोचा आतम ध्यान लगाना है।
गुरुभक्ति सहित चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।
यह सात शतक.।।5।।

मचा हाहाकार धरा पर, तब आए विष्णु मुनीश्वर।
निज वामन वेष बनाकर, विक्रिया ऋद्धि फैलाकर।।
उपसर्ग दूर कर दिया जगत ने जाना है।
गुरुभक्ति सहित चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।
यह सात शतक.।।6।।

चला रक्षाबंधन तब से, श्रावणी पूर्णिमा तिथि से।
वात्सल्यपर्व कहलाया, सबने इसको अपनाया।।
बलि आदि मंत्रियों ने गुरुमहिमा जाना है।
गुरु भक्ति सहित चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।
यह सात शतक.।।7।।

उपसर्ग समाप्त हुआ जब, मुनि का आहार हुआ तब।
चौके में खीर बनी थी, हर मन में भक्ति घनी थी।।
वह क्षण सुमिरन कर सबको हर्ष मनाना है।
गुरुभक्ति सहित चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।
यह सात शतक.।।8।।

करूँ भक्ति सात सौ मुनि की, अरु विष्णु महामुनिवर की।
उपसर्गविजय भूमी की, हस्तिनापुरी नगरी की।।
''चन्दनामती'' सबको पूर्णार्घ्य चढ़ाना है।
गुरु भक्ति सहित चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।।
यह सात शतक.।।9।।

ॐ ह्रीं उपसर्गविजेता अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक मुनीन्द्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

सात शतक मुनि अर्चना, देवे धैर्य व शक्ति।
रक्षाबंधन के दिवस, करो सदा गुरुभक्ति।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(46) भगवान महावीर जिनपूजा

(तर्ज-तुमसे लागी लगन......)

आपके श्रीचरण, हम करें नित नमन, शरण दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।टेक.।।
वीर सन्मति महावीर भगवन् !
आवो आवो यहाँ नाथ! श्रीमन्!
आप पूजा करें, शुद्ध समकित धरें, शक्ति दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक–

(तर्ज-चंदन सा बदन.......)

–शंभु छंद–

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।

गंगानदि का शुचि जल लेकर, तुम चरण चढ़ाने आये हैं।
भव भव का कलिमल धोने को,श्रद्धा से अति हरषाये हैं।।
हे वीरप्रभो! महावीर प्रभो! त्रयधारा दें तव चरणों में।।
त्रि..........।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
हरिचंदन कुंकुम गंध लिये, जिनचरण चढ़ाने आये हैं।
मोहारिताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! चंदन लेकर, चर्चन करते तव चरणों में।।
त्रि..........।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
क्षीराम्बुधि फेन सदृश उज्ज्वल, अक्षत धोकर ले आये हैं।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! हम पुंज चढ़ा, अर्चन करते तव चरणों में।।
त्रि..........।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाये हैं।
मदनारिजयी तव चरणों में, हम अर्पण करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! पुष्पों को ले, पूजा करते तव चरणों में।।
त्रि..........।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
पूरणपोली खाजा गूझा, मोदक आदिक बहु लाये हैं।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! चरु अर्पण कर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रि..........।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञानज्योति निज में भासे।।
हे वीरप्रभो! तुम आरति कर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रि..........।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटु कर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।
हे वीर प्रभो! हम धूप जला, अर्चन करते तव चरणों में।।
त्रि..........।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
एला केला अंगूरों के, गुच्छे अतिसरस मधुर लाये।
परमानंदामृत चखने हित, फल से पूजन कर हर्षाये।।
हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रि..........।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाये हैं।
निजगुण अनंत की प्राप्ति हेतु, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
हे वीर प्रभो! हम अर्घ्य चढ़ा कर, नमन करें तव चरणों में।।
त्रि..........।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–उपेंद्रवज्रा छंद–

त्रैलोक्य शांती कर शांतिधारा, श्री सन्मती के पदकंज धारा।
निजस्वांत शांतीहित शांतिधारा, करते मिले हैं भवदधि किनारा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरकल्पतरु के वर पुष्प लाऊँ, पुष्पांजलि कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधीभय को भगाऊँ, शोकादि हर के सब सिद्धि पाऊँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद–

सिद्धार्थ नृप कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़ शुक्ला छठ तिथि, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सितचैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर वदी दशमी तिथि, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीमहावीरजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा, कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी, केवलरमा परिणय किया।।
श्रावण वदी एकम तिथि, गौतम मुनी गणधर बनें।
तव दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित तुम्हें।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।
निर्वाण लक्ष्मी वरणकर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां श्रीमहावीरजिननिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–दोहा–

चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूँ, सुखसंपति साकार।।1।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणा......)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर! महावीर! वीर! अतिवीर! प्रभो!
जय जय गुणसागर वर्धमान! जय त्रिशलानंदन! धीर प्रभो!।।
जय नाथवंश अवतंस नाथ! जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थतनुज फिर भी, तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो।।2।।

जिस वन में ध्यान धरा तुमने, उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर, सब फूल रहीं क्यारी क्यारी।।
जहँ शीतल मंद पवन चलती, जल भरे सरोवर लहरायें।।
सब जात विरोधी जन्तूगण, आपस में मिलकर हरषायें।।3।।

चहुँ ओर सुभिक्ष सुखद शांती, दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर, सब जन मन हर्ष अपार सही।।
कंचन छवि देह दिपे सुंदर, दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे, निरखे पर तृप्ति नहीं होती।।4।।

श्री इन्द्रभूति आदिक ग्यारह, गणधर सातों ऋद्धीयुत थे।
चौदह हजार मुनि अवधिज्ञानी, आदिक सब सात भेदयुत थे।।
चंदना प्रमुख छत्तीस सहस, संयतिकायें सुरनरनुत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकाएं, त्रय लाख चतुःसंघ संख्या थी।।5।।

प्रभु सात हाथ, उत्तुंग आप, मृगपति लांछन से जग जाने।
आयू बाहत्तर वर्ष कही, तुम लोकालोक सकल जाने।।
भविजन खेती को धर्मामृत, वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्षमार्ग अक्षुण्ण किया, यति श्रावक धर्म बता करके।।6।।

मैं भी अब आप शरण आया, करुणाकर जी करुणा कीजे।
निज आत्म सुधारस पान करा, सम्यक्त्व निधी पूर्णा कीजे।।
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर, अपने ही पास बुला लीजे।
"सज्ज्ञानमती" निर्वाणश्री, साम्राज्य मुझे दिलवा दीजे।।7।।

–घत्ता–

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति, जय जिनगुणसंपत्ति दाता।
तुम पूजूँ ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पाऊँ निजगुण विख्याता।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद–

महावीर की निर्वाण बेला, में भविक शुचि भाव से।
निर्वाण लक्ष्मीपति जिनेश्वर,पूजते अति चाव से।।
वे भव्य नर सुर के अतुल, संपत्ति सुख पाते घने।
फिर अन्त में शुचि "ज्ञानमति", निर्वाण लक्ष्मीपति बने।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(47) मनोकामनासिद्धि महावीर पूजा

–स्थापना - गीता छंद–

प्रभुवीर का छब्बीस सौवां, जन्म उत्सव जग प्रथित।
सब विश्व में लहरा रहा, महावीर प्रभु का धर्मध्वज।।
इन महावीर जिनेन्द्र की, स्थापना विधि हम करें।
निज सौख्य हेतू भक्ति से, अर्चें जनम दुख परिहरें।।1।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

–अथ अष्टक - चौबोलछंद–

गंगा यमुना सरस्वती के, संगम का जल लाया हूँ।
महावीर प्रभु के पद में, त्रयधारा देने आया हूँ।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।1।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर सुरभित घिसकर, प्रभु चरणों में चर्चूं मैं।
जग संताप दूर करने को, प्रभु चरणों में प्रणमूँ मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।2।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्जवल शालि सुगंधित लेकर, पुंज चढ़ाऊं प्रभु आगे।
अक्षयपद की प्राप्ति सुखद हो, पुनर्जन्म के दुख भागें।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।3।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला जुही चमेली सुरभित, पुष्प चढ़ाऊँ चरणों में।
कामदेवमदविजयी प्रभु की, पूजा कर लूँ सुखकर मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।4।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी गुझिया खाजे ताजे, भरकर थाल चढ़ाऊँ मैं।
क्षुधा वेदनी दूर करो प्रभु, भक्ती से गुण गाऊँ मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।5।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भक्ती से।
निज घट का अज्ञान दूर हो, सम्यग्ज्ञान ज्योति प्रगटे।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।6।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित खेवूँ मैं।
अशुभ कर्म को भस्मसात् कर, आतम अनुभव लेवूँ मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।7।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरसफल, भर कर थाल चढ़ाऊँ मैं।
जिनवर सन्निध अर्पण करके, स्वात्मसुधारस पाऊँ मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ्य बनाऊँ मैं।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, निजगुण मणि को पाऊं मैं।।
वीर प्रभू का जन्मकल्याणक, जग में मंगलकारी है।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, सब जन को सुखकारी है।।9।।

ॐ ह्रीं अन्तिमतीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

महावीर अतिवीर, तुम पद पंकज में सदा।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, सुरभित करते दश दिशा।
महावीर पादाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरू कुरू ह्रीं नमः।**

(सुगन्धित पुष्प, लवंग या पीले चावल से 108 मंत्रों का जाप्य करें।)

जयमाला

– शेरछंद –

जय वीर महावीर आप जन्म जब लिया।
संपूर्ण लोक में महा आश्चर्य भर दिया।।
स्वर्गों में कल्पवृक्ष पुष्पवृष्टि कर झुकें।
इन्द्रों के सिंहासन भी आप-आप हिल उठें।।1।।

शीतल सुगंध वायु मंद मंद बही थी।
पृथ्वी भी तो आनंदभरी नाच रही थी।।
संपूर्ण दिशायें गगन भी स्वच्छ हुए थे।
सागर भी तो लहरा रहा हर्षातिरेक से।।2।।

व्यंतर गृहों से भेरियों के शब्द हो उठे।
भवनालयों में शंखनाद गूंजने लगे।।
ज्योतिष गृहों में सिंहनाद स्वयं हो उठा।
सुर कल्पवासि भवन में घंटा भी बज उठा।।3।।

इंद्रों के मुकुट अग्र भी स्वयमेव झुक गये।
जिन जन्म जान आसनों से सब उतर गये।।
तब इन्द्र के आदेश से सुरपंक्ति चल पड़ी।
सबके हृदय में हर्ष की नदियां उमड़ पड़ीं।।4।।

सुरपति प्रभु को गोद में ले गज पे चढ़े हैं।
ईशान इंद्र प्रभु पे छत्र तान खड़े हैं।।
सानत्कुमार औ महेन्द्र चंवर ढोरते।
सब देव देवियां बहुत भक्ती विभोर थे।।5।।

क्षण में सुमेरूगिरि पे जाके प्रभु को बिठाया।
पांडुकशिला पे नाथ का अभिषेक रचाया।।
सौधर्म इन्द्र ने हजार हाथ बनाये।
संपूर्ण स्वर्ण कलश एक साथ उठाये।।6।।

उनसे प्रभू का न्हवन एक साथ कर दिया।
जय जय ध्वनी से देवों ने आकाश भर दिया।।
सब इन्द्र औ इंद्राणियों ने न्हवन किया था।
सब देव औ देवांगनाओं ने भी किया था।।7।।

अभिषेक जल से क्षण में पयोसिंधु बना था।
देवों की सेना डूब रही हर्ष घना था।।
जन्माभिषेक जिन का स्वयं इंद्र कर रहे।
उत्सव विशेष और की फिर बात क्या कहें।।8।।

सुरपति ने पुनः प्रभू को लाके जनक को दिया।
बहु देव और देवियां सेवा में रख दिया।।
सुर धन्य वे जो नाथ संग खेल खेलते।
संसार के दुःख संकटों को वे न झेलते।।9।।

मैं भी करूँ सेवा प्रभु की भक्ति भाव से।
मिथ्यात्व का निर्मूल हो समकित प्रभाव से।।
बस एक प्रार्थना पे नाथ ! ध्यान दीजिये।
सज्ज्ञानमती पूर्ण हो ये दान दीजिये।।10।।

– दोहा –

वर्धमान गुणरत्न को, गिनत न पावहिं पार।
तीन रत्न के हेतु में, नमूं अनंतों बार।।11।।

ॐ ह्रीं अंतिमतीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा– वर्द्धमान जिन वीरप्रभु , श्रीसन्मति महावीर।
महति महावीर आपको, जजत मिले भवतीर।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(48) कल्याणमंदिर पूजा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–स्थापना-शंभु छंद–

हे प्रभुवर पारस नाथ! तुम्हीं, कल्याण के मंदिर कहलाते।
सब कार्यों की सिद्धी हेतु, सब भव्य तुम्हारे गुण गाते।।
श्री कुमुदचन्द्र आचार्य रचित, स्तोत्र पाठ का अर्चन है।
सबसे पहले निज हृदय महल में, आह्वानन स्थापन है।।1।।

–दोहा–

निज आतम का ध्यान कर, किया स्व पर कल्याण।
बने पंचकल्याणपति, पार्श्वनाथ भगवान।।2।।
हम भी निज कल्याण हित, करें स्तोत्र विधान।
पार्श्वनाथ को नमन कर, हम भी बनें महान।।3।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिर अधिनायक सर्वसिद्धिकारक! श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिर अधिनायक सर्वसिद्धिकारक! श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिर अधिनायक सर्वसिद्धिकारक! श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक–

तर्ज-ऐ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी..

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान......
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।

प्रभु ने तो जन्म लिया, पर बने अजन्मा हैं।
निज कर्मों से ही वे, बन गये अकर्मा हैं।।
प्रभु की इस मनहर मूरत को, हम आज निरखने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।

भव भव में प्रभु हमने, कितना जल पी डाला।
पर शान्त न हो पाई, मेरे मन की ज्वाला।।
भव भव के ताप मिटाने को, जलधारा करने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान......
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।

तुमने निज आतम का, क्रोधानल शान्त किया।
अज्ञान अमावस्या में, कैवल्य प्रकाश दिया।।
तेरा पावन आलोक प्रभो, हम मन में बसाने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।

मेरे चैतन्य सदन में, क्रोधाग्नी जलती है।
अज्ञान के अँचल में, छिप-छिप वह पलती है।।
हम इसीलिए चंदन लेकर, भवताप मिटाने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान.....
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।

अधिपति तुम धवल भवन के, है धवल तेरा दर्शन।
क्षत भी विक्षत होते हैं, सौंदर्य तेरा लखकर।।
तेरी सुन्दर आतमनिधि का, अवलोकन करने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।

मेरा जीवन खंडित है, मद मोह व माया में।
अब करना अखंडित है, तव शीतल छाया में।।

अतएव अखण्डित पुँजों से, अक्षयपद पाने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये है।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।

चैतन्य वाटिका में तुम, ज्ञानांजलि भरते हो।
आत्मा की सुरभि में तुम, पुष्पांजलि करते हो।।
निष्काम तुम्हारे यौवन को, हम वंदन करने आए हैं।।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।

कितने उद्यानों में जा, पुष्पों की गंध लिया।
कभी घर को सजाया मैंने, कभी निज श्रृँगार किया।
अब तेरे पावन चरणों में, हम पुष्प चढ़ाने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान......
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।

वेदनी कर्म पर प्रभु जी, तुमने आक्रमण किया।
भग गई क्षुधा तव तन की, आत्मा में रमण किया।।
परमौदारिक तन युक्त प्रभो की, कान्ति निरखने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।

हमने कितने भव-भव में, पकवान बहुत खाए।
लेकिन इस नश्वर तन की, नहिं भूख मिटा पाए।।
क्षुध रोग निवारण हेतु प्रभो! नैवेद्य थाल भर लाए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान......
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।

विज्ञान नगर में तुमने, निज ज्ञानालोक किया।
कैवल्य कला के द्वारा, जग को आलोक दिया।।
तेरी उस ज्ञान प्रभा को हम, शत वंदन करने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।

अज्ञान नगर में मेरा, चिरकाल से है रमना।
नृप मोह के बंधन में, नहिं पूर्ण हुआ सपना।।
अज्ञान अंधेर मिटाने को, हम दीप जलाकर लाए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान......
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।

कर्मों की धूप जलाकर, सुरभित निज महल किया।
नोकर्मों को भी गलाकर, विकसित गुणमहल किया।।
तेरा गुणमहल निरखने को, हम द्वार तिहारे आये हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।

हमने कर्मों में निज को, आनन्दित माना है।
अतएव निजातम सुख को, किंचित् नहिं जाना है।।
कर्मों के ज्वालन हेतु प्रभो, हम धूप जलाने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान.......
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।

भव भव की पुण्य प्रकृतियाँ, तीर्थंकर फल लाईं।
तेरी अर्चा के बहाने, तव शरण प्रभो आईं।।
तेरे वैभव अवलोकन को, हम समवसरण में आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।

मैं क्षणिक विनश्वर फल के, स्वादों में फँसा रहा।
जिव्हा की लोलुपता में, उत्तम फल को न लहा।।
तुम सम फल की प्राप्ती हेतू, फल थाल सजाकर लाए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्व तुम्हारी पूजा से, सब संकट हरने आये हैं।
भगवान........
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।टेक.।।
सब दोष रहित प्रभु पारस, जग पारस करते हो।
तुम निज में रम करके, ज्ञानामृत भरते हो।।
तेरा ज्ञानामृत चखने को, हम भक्ती करने आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।1।।
मैं अष्टद्रव्य लेकर के, तव सन्निध आया हूँ।
अष्टम वसुधा पाने को, मैं भी ललचाया हूँ।।
प्रभु सिद्धशिला की प्राप्ति हेतु, कुछ भक्त तेरे दर आए हैं।
भगवान तुम्हारी भक्ती से, सब सिद्धी करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिरअधिनायकसर्वसिद्धिकारक श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज-करती हूँ तुम्हारी भक्ति........

जब तक गंगा यमुना में, जलधार बहेगी।
पारस प्रभुवर के ज्ञान गंग की, धार रहेगी।।
हे पार्श्व प्रभू जी, हे पार्श्वप्रभू जी ।।टेक.।।
कंचनझारी से चरणों में, त्रयधारा करनी है।
सांसारिक जन्म जरा मृत्यू की बाधा हरनी है।।
मेरे आतम मंदिर में सुख का, सार भरेगी।
पारस प्रभुवर के ज्ञानगंग की, धार बहेगी।।
हे पार्श्व. ।।1।।

शांतये शांतिधारा।

जब तक स्वर्गों में कल्पवृक्ष का, वास रहेगा।
पारसप्रभु के गुणपुष्पों का, इतिहास रहेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा........
चंपा चमेली पुष्पों से, पुष्पांजलि करना है।
आध्यात्मिक गुण से अन्तर्मन को, सुरभित करना है।।
उस क्षमा पुष्प का जीवन में, संवास रहेगा।
पारस प्रभु के गुणपुष्पों का, इतिहास रहेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा।।2।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

तर्ज-आए महावीर भगवान, माता त्रिशला के आँगन में....

कर के पारस प्रभू का ध्यान, हम पारस बन जाएंगे।
हम पारस बन जाएंगे, मुक्तिश्री पा जाएंगे।।कर के.....।।
वैशाख कृष्ण दुतिया को, माता के गर्भ पधारे।
माता वामा ने सोलह, सुपने देखे थे प्यारे।।
कर के भक्ति गर्भकल्याण, हम पारस बन जाएंगे।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पौष कृष्ण ग्यारस को, तीर्थंकर बालक जन्मे।
शचि गई प्रभू को लेने, माता के प्रसूति गृह में।।
पूजा करके जन्मकल्याण, हम पारस बन जाएंगे।।2।।
कर के.....।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौषी कृष्णा एकम को, दीक्षाधारी जा वन में।
लौकान्तिक सुरगण आए, प्रभु की संस्तुति भी करने।।
जज के दीक्षा शुभकल्याण, हम पारस बन जाएंगे।।3।।
कर के....।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चैत्र चतुर्थी के दिन, प्रभु केवलज्ञान हुआ था।
सबने प्रभु समवसरण में, दिव्यध्वनि पान किया था।।
भज लें प्रभु का केवलज्ञान, हम पारस बन जाएंगे।।4।।
कर के....।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमि को, प्रभु का निर्वाण हुआ था।
सम्मेदशिखर पर्वत पर, इन्द्रों ने हवन किया था।।
पूजन करें मोक्षकल्याण, हम पारस बन जाएंगे।।5।।
कर के.....।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं क्रूरकमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय नमः**

अथवा

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्वनाथाय नमः।

जयमाला

तर्ज-तुमसे लागी लगन........

जय जय पारस प्रभो, भवदधितारक विभो, द्वार आया।
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।टेक.।।

गर्भ से मास छह पूर्व नगरी।
रत्नमय वह बनारसपुरी थी।।
इन्द्रगण आ गए, चक्रधर पा गए, तेरी छाया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।1।।

जन्म होते ही कंपित मुकुट थे।
दिव्य बाजे स्वयं बज उठे थे।।
जग चकित हो गया, मोह तम खो गया, प्रभु की माया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।2।।

वामानन्दन हो पारस प्रभो तुम।
अश्वसेन के प्रिय लाल हो तुम।।
धर्मामृत जो बहा, ज्ञानामृत को लहा, जो भी आया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।3।।

प्रभु तुम पंचकल्याणक के स्वामी।
हो गये तीनों लोकों में नामी।।
मोक्ष में रम गए, सिद्धिपति बन गये, नहिं है काया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।4।।

श्री कुमुदचंद्र ने तुमको ध्याया।
एक स्तोत्र सुंदर बनाया।।
संकटमोचन बने, खुद करम सब हने, छोड़ी माया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।5।।

नाथ कल्याणमंदिर हो तुम ही।
जग का कल्याण करते हो प्रभु जी।।
विघ्नविजयी बने, मृत्युविजयी बने, सिद्धि पाया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।6।।

तेरी भक्ती का फल मैं ये चाहूँ।
भावना आत्म पद की ही भाऊँ।।
''चन्दनामति'' प्रभो, मांगते सब विभो, तेरी छाया,
अर्घ्य का थाल मैंने सजाया।।7।।

ॐ ह्रीं कल्याणमंदिर अधिनायक सर्वसिद्धिकारक श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

पार्श्वनाथ की भक्ति में, जो होते लवलीन।
ऋद्धि सिद्धि सुख पूर्ण कर, हों निज के आधीन।।8।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

(49) तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ पूजा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–शंभु छंद–

श्री ऋषभदेव से महावीर तक, चौबिस तीर्थंकर प्रभु हैं।
इन सबके पंचकल्याणक से, पावन तेईस तीर्थ भू हैं।।
मेरा भी हो कल्याण प्रभो! मैं पंचकल्याणक तीर्थ नमूँ।
आह्वानन स्थापन एवं, सन्निधीकरण विधि से प्रणमूँ।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणाम् पंचकल्याणक तीर्थसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणाम् पंचकल्याणक तीर्थसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणाम् पंचकल्याणक तीर्थसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (शंभु छंद)–

इस जग में काल अनादी से, हर प्राणी तृषा समन्वित है।
तीरथ पद में जलधारा कर, हो सकती तृष्णा विस्मृत है।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीरथ यात्रा से सचमुच ही, आत्मा में परमशांति मिलती।
चन्दन पूजा संसार ताप को, दूर हटा सब सुख भरती।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद पाकर जिनवर ने, आत्मा को तीर्थ बना डाला।
अक्षत ले शुभ्र धवल मुट्ठी में, मैंने पुंज चढ़ा डाला।।

जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणांपंचकल्याणकतीर्थेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ तीर्थंकर ने ब्याह किया, कुछ ने नहिं ब्याह रचाया है।
विषयों की इच्छा तजकर ही, सबने तप को अपनाया है।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणांपंचकल्याणकतीर्थेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों का भोजन भी तजकर, तीर्थंकर प्रभु ने दीक्षा ली।
हर प्राणी को दीक्षा लेने के, हेतु प्रभू ने शिक्षा दी।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।5।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणांपंचकल्याणकतीर्थेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान का दीप जलाकर प्रभु ने, जग को ज्ञान प्रकाश दिया।
हमने घृतदीप जला आरति, करके कुछ आत्मविकास किया।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।6।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शुक्लध्यान की अग्नी में, कर्मों की धूप दहन करके।
जिनवर ने शिवपद पाया हम भी, धूप अग्नि में दहन करें।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।7।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस मोक्षमहाफल के निमित्त, प्रभु ने उग्रोग्र तपस्या की।
उसकी अभिलाषा करके ही, हमने फल थाली अर्पित की।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।8।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध सुअक्षत पुष्प चरू, दीपक वर धूप फलादि लिया।
''चन्दनामती'' तीर्थंकर बनने, हेतु तीर्थ पद चढ़ा दिया।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।9।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शेरछंद—

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक की भूमियाँ।
पावन हैं सभी के लिए वे तीर्थभूमियाँ।।
तीर्थों की अर्चना में शांतिधार करूँ मैं।
निज शांति के संग विश्वशांति भाव धरूँ मैं।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिन उपवनों में जिनवरों ने की थी तपस्या।
सब ऋतु के फूल-फल से फलित वृक्ष थे वहाँ।।
इन पुष्पों में भी उन्हीं पुष्प की है कल्पना।
पुष्पांजली के द्वारा करूँ तीर्थ अर्चना।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

पंचकल्याणक तीर्थों के अर्घ्य

प्रभु ऋषभदेव की गर्भ जन्म-कल्याणक भूमि अयोध्या है।
अजितेश्वर अभिनंदन के गर्भ, जन्म तप ज्ञान हुए यहाँ हैं।।
श्री सुमतिनाथ व अनंतनाथ के, चार कल्याणक से पावन।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमूँ अयोध्या, तीर्थ सदा है मनभावन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्यतीर्थंकर गर्भजन्मकल्याणकपवित्र अजितनाथ अभिनंदननाथ सुमतिनाथ अनंतनाथतीर्थंकरा गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुः चतुःकल्याणकपवित्रशाश्वत जन्मभूमि अयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवजिन की गर्भजन्मतप-ज्ञानभूमि श्रावस्ती है।
जहाँ मात सुषेणा के आंगन में, हुई रत्न की वृष्टी है।।
उस श्रावस्ती तीरथ को अर्घ्य, चढ़ाकर पुण्य कमाना है।
उसकी यात्रा अरु पूजा कर, आत्मा को तीर्थ बनाना है।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथतीर्थंकर गर्भजन्मतपज्ञानचतुःकल्याणकपवित्र श्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब प्रभु मैंने अष्टद्रव्य का, स्वर्णिम थाल सजाया है।
तब-तब मैंने ''चन्दनामती'', लोकोत्तर वैभव पाया है।।

कौशाम्बी नगरी पद्मप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।
चार कल्याणक से सहित, पावन तीर्थ महान।
कौशाम्बी व प्रभासगिरि, को दूँ अर्घ्य महान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकर गर्भजन्मतपज्ञानचतुः-कल्याणकपवित्र कौशाम्बी-प्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ के, कल्याणक से पावन है।
उनके प्राचीन कथानक से, जो तीर्थ प्रसिद्ध बनारस है।।
उस तीरथ से प्रार्थना मेरी, आत्मा भी तीरथ बन जावे।
मैं अर्घ्य समर्पित करूँ प्रभो, मुझको अनर्घ्य पद मिल जावे।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकर गर्भजन्मतपज्ञानचतुः-कल्याणकपवित्र पार्श्वनाथस्य च गर्भजन्मतपत्रिकल्याणक पवित्र वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभ जी के चार कल्याणक, से पवित्र जो नगरी है।
चिरकाल बीत जाने पर वह, वीरान हो गई नगरी है।।
लेकिन प्रभु की रज लेने, चन्द्रपुरी में भक्त पहुँचते हैं।
उस तीरथ के दर्शन कर भाव से, अर्घ्य समर्पित करते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकर गर्भजन्मतपज्ञानचतुः-कल्याणक पवित्र चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शेरछंद—

श्री पुष्पदंत जिनवर के चार कल्याणक।
काकन्दि में हुए अतः वह तीर्थ नमूँ नित।।
देवों ने आकर के वहाँ उत्सव बहुत किया।
ले अर्घ्य थाल तीर्थ को मैंने चढ़ा दिया।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षा-ज्ञानचतुःकल्याणक पवित्र काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ पर श्री शीतलनाथ प्रभू के चार हुए कल्याणक हैं।
उस भद्दिलपुर का कण-कण भी, पावन व पूज्य अद्यावधि है।।
चारों कल्याणक से पवित्र, तीरथ को नमन हमारा है।
श्रद्धा भक्ती के साथ समर्पित, यह शुभ अर्घ्य हमारा है।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-चतुःकल्याणक पवित्र भद्दिलपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ के गर्भ जन्म तप, चार कल्याणक हुए जहाँ।
वह सिंहपुरी है सारनाथ, जो तीर्थ बनारस पास कहा।
चारों कल्याणक से पवित्र, श्री सिंहपुरी को वंदन है।
यह अर्घ्य समर्पित कर चाहूँ, तीरथ पूजन का शुभ फल मैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-चतुःकल्याणक पवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—शेरछंद—

चम्पापुरी इक मात्र ऐसा तीर्थ है पावन।
जहाँ वासुपूज्य प्रभु के हुए पाँचों कल्याणक।।
चम्पापुरी में ही कहा मंदारगिरि स्थल।
पूजूँ जहाँ प्रसिद्ध वासुपूज्य धर्मस्थल।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षा-केवलज्ञान-मोक्ष-पंचकल्याणक पवित्र चम्पापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ तेरहवें तीर्थंकर का अर्चन करना है।
उनके चारों कल्याणक से, पावन तीरथ को भजना है।।
उस कम्पिल जी में अद्यावधि, प्राचीन कथानक मिलता है।
उसको शुभ अर्घ्य चढ़ाने से, निज मन का उपवन खिलता है।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षाकेवल-ज्ञान-चतुःकल्याणक पवित्र कम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रहवें जिनवर धर्मनाथ के, जहाँ चार कल्याण हुए।
जिनधर्मतीर्थ संचालित करके, वे तिहुं जग में मान्य हुए।।
मैं उन चारों कल्याणक से, पावन धरती को नमन करूँ।
ले अष्टद्रव्य का थाल रत्नपुरि, तीरथ का मैं यजन करूँ।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकर गर्भजन्मतपज्ञानचतुः-कल्याणक पवित्र रत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ तीर्थंकरत्रय कामदेव, चक्री पद के धारी जन्मे।
छह खंड जीतकर हस्तिनागपुर-नगरी के राजा वे बने।।
उस भू पर उनके चार-चार, कल्याणक इन्द्र मनाते थे।
वह तीर्थ जजूँ मैं अर्घ्य चढ़ा, जिसकी महिमा सुर गाते थे।।12।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकुंथुनाथअरनाथ-जिनेन्द्राणां गर्भजन्मतपज्ञान चतुःचतुःकल्याणकपवित्र हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिलापुरि की जिस धरती पर, श्री मल्लि व नमिप्रभु जन्मे हैं।
उन दोनों प्रभु के गर्भ जन्म, तप ज्ञान कल्याण वहीं पे हैं।।

उस नगरी को मैं अर्घ्य चढ़ाकर, एक यही प्रार्थना करूँ।
रत्नत्रय निधि हो पूर्ण मेरी, तब भव सन्तति खंडना करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथनमिनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षा-केवलज्ञान चतुःचतुःकल्याणकपवित्र मिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—रोला छंद—

मुनिसुव्रत भगवान, के चारों कल्याणक।
हुए राजगृह माँहि, अतः धरा वह पावन।।
ले पूर्णार्घ्य सुथाल, श्रद्धा सहित चढ़ाऊँ।
मन का मैल उतार, तीरथ का फल पाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक-पवित्र राजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

गर्भ जन्म प्रभु नेमि के, हुए जहाँ सुपवित्र।
अर्घ्य चढ़ा अर्चन करूँ, शौरीपुर की नित्य।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकर गर्भजन्मकल्याणकपवित्र-शौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस नगरी की रज महावीर के, तीन कल्याण से पावन है।
जहाँ इन्द्र-इन्द्राणी की भक्ती का, सदा महकता सावन है।।
उस कुण्डलपुर में नंद्यावर्त, महल का सुन्दर परिसर है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमूँ वहाँ, प्रभु वीर की प्रतिमा मनहर है।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्रगर्भजन्मदीक्षाकल्याणक-पवित्र कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(17)

प्रभु ऋषभदेव की दीक्षा एवं ज्ञानभूमि का अर्चन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।टेक.।।

युग की आदी में सर्वप्रथम, जब केशलोंच की क्रिया हुई।
उत्कृष्ट महाव्रत धारण करने, की पहली प्रक्रिया हुई।।
वह भूमि प्रयाग बनी तब से, उसको मेरा शत वन्दन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।1।।

वहीं पुरिमतालपुर उपवन में, जिनवर को केवलज्ञान हुआ।
इक सहस वर्ष तप करने के, पश्चात् उन्हें यह लाभ हुआ।।
देवों ने समवसरण रचना में, बैठ किया प्रभु अर्चन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।2।।

त्याग प्रकृष्ट हुआ जहाँ, वह है तीर्थ प्रयाग।
उस तीरथ की अर्चना, भरे धर्म अनुराग।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकर दीक्षाकल्याणककेवलज्ञान-कल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्वनाथ पर जहाँ कमठचर, देव ने आ उपसर्ग किया।
धरणेन्द्र व पद्मावती ने प्रभु को, उठा शीश पर छत्र किया।।
उस केवलज्ञान कल्याणक तीरथ, अहिच्छत्र को वन्दन है।
भूगर्भ से निकली पार्श्वनाथ, प्रतिमा को अर्घ्य समर्पण है।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर केवलज्ञानकल्याणकपवित्र अहिच्छत्र-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(19)

कुण्डलपुर निकट जृंभिका में, ऋजुकूला तट पर ज्ञान हुआ।
उसके ऊपर गगनांगण में, प्रभु समवसरण निर्माण हुआ।।
मैं केवलज्ञान कल्याणक की, भूमी का नित्य यजन कर लूँ।
सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हेतु, प्रभु वीर को मैं वंदन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर केवलज्ञानकल्याणक-पवित्र जृंभिकातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(20)

ऋषभदेव निर्वाणभूमि, कैलाशगिरी को नम लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय.।।टेक.।।
भरतचक्रवर्ती निर्मित, जहाँ है त्रिकाल चौबीसी।
उस गिरिवर के अष्टापद से, पाई प्रभु ने सिद्धी।।
अर्घ्य थाल उस गिरि के सम्मुख, सब मिल अर्पण कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु को सुमिरन कर लो।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकर निर्वाणभूमि कैलाशपर्वत-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(21)

सिद्धक्षेत्र गिरनारगिरी, गुजरात प्रान्त का तीरथ है।
प्रभु नेमिनाथ के मोक्षगमन से, पावन उसकी कीरत है।।
तप, ज्ञान और निर्वाण तीन, कल्याणक स्थल को वंदूँ।
राजुलमति की भी तपोभूमि, सिरसा वन का अर्चन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकर दीक्षाकेवलज्ञानमोक्ष-कल्याणकपवित्र गिरनारगिरि सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(22)

जिस वसुधा से प्रभु महावीर ने, अष्टम वसुधा प्राप्त किया।
"चन्दनामती" उस वसुधा को, दे अर्घ्य सहज सुख प्राप्त हुआ।।

निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर निर्वाणकल्याणकपवित्र पावापुरी सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(23)

तीर्थराज सम्मेदशिखर है, शाश्वत सिद्धक्षेत्र जग में।
एक बार जो करे वंदना, वह भी पुण्यवान सच में।।
ऊँचा पर्वत पार्श्वनाथ हिल, नाम से जाना जाता है।
जिनशासन का सबसे पावन, तीरथ माना जाता है।।1।।
बीस तीर्थंकर इस पर्वत से, कर्म नाशकर मोक्ष गये।
लेकिन इससे पूर्व अनंतानंत, जिनेश्वर मोक्ष गये।।
इसीलिए यह अनादि अनिधन, तीर्थ पूज्य कहलाता है।
इस गिरि के वंदन-अर्चन से ही, स्वर्ग-मोक्ष मिल जाता है।।2।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन विंशतितीर्थंकराणां निर्वाण-कल्याणकपवित्रशाश्वततीर्थसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मांगीतुंगी आदि सिद्ध-क्षेत्रों को नमन हमारा है।
श्री महावीर जी महावीर प्रभु के अतिशय से प्यारा है।।
ऐसे ही पदमपुरा आदिक, अतिशय क्षेत्रों को वंदन है।
इन सबको अर्घ्य चढ़ाकरके, कर्मों का कर लूँ खंडन मैं।।24।।

ॐ ह्रीं मांगीतुंगीआदि सिद्धक्षेत्र-महावीरजीपदमपुरा आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य –

सोलह जन्मभूमि त्रय दीक्षा-केवलज्ञान के तीरथ हैं।
निर्वाणभूमि के चार पृथक् ही, सिद्धक्षेत्र के तीरथ हैं।।
चौबीसों तीर्थंकर के पंचकल्याणक तीर्थों को वंदूँ।
कुछ सिद्धक्षेत्र अतिशय क्षेत्रों को, नमन करूँ भवदुख खंडूं।।25।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन चतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थ अन्यसिद्धक्षेत्रअतिशयक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य मंत्र - **ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक-पवित्रअयोध्यादिपावापुरीपर्यंततीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।**

(108 बार पीले पुष्प या लवंग से)

जयमाला

जो भवसमुद्र से तिरवाता, वह तीर्थ कहा जाता जग में।
वह द्रव्य तीर्थ औ भावतीर्थ, दो रूप कहा जिन आगम में।।
तीर्थंकर के जन्मादिक से, पावन हैं द्रव्यतीर्थ सच में।
हर प्राणी की आत्मा परमात्मा, भावतीर्थ मानी जग में।।1।।

जय जय तीर्थंकर तीर्थनाथ, तुम धर्मतीर्थ के कर्ता हो।
जय जय चौबीस जिनेश्वर तुम, त्रिभुवन गुणमणि के भर्ता हो।।
जय ऋषभदेव से वीर प्रभू तक, सबकी महिमा न्यारी है।
इन पंचकल्याणक के तीर्थों को, नितप्रति धोक हमारी है।।2।।

चौबीसों जिन की जन्मभूमि का, अतिशय ग्रंथों में आया।
जहाँ पन्द्रह-पन्द्रह मास रतन-वृष्टी सुरेन्द्र ने करवाया।।
वह तीर्थ अयोध्या प्रथम तथा, कुण्डलपुर जन्मभूमि अन्तिम।
जहाँ तीर्थंकर माताओं ने, देखे सोलह सपने स्वर्णिम।।3।।

यूँ तो सब तीर्थंकर की शाश्वत-जन्मभूमि है अवधपुरी।
लेकिन हुण्डावसर्पिणी में, हो गई पृथक् ये जन्मथली।।
इस कारण तीजे काल में ही, हुई कर्मभूमि प्रारंभ यहाँ।
तब नगरि अयोध्या धन्य हुई, हुआ प्रथम प्रभू का जन्म जहाँ।।4।।

उस शाश्वत तीर्थ अयोध्या में, इस युग के पाँच प्रभू जन्में।
ऋषभेश अजित अभिनंदन एवं, सुमति अनंत उन्हें प्रणमें।।
गणधर मुनि एवं इन्द्र आदि से, वंद्य अयोध्या नगरी है।
वृषभेश्वर की ऊँची प्रतिमा, जहाँ तीर्थ की महिमा कहती है।।5।।

इन जन्मभूमियों की श्रेणी में, श्रावस्ती संभव प्रभु की।
कौशाम्बी पद्मप्रभ की वाराणसि, सुपार्श्व पारस प्रभु की।।
चन्द्रप्रभ जन्में चन्द्रपुरी में, पुष्पदन्त काकन्दी में।
भद्रिकापुरी में शीतल जिन, जन्मे श्रेयाँस सिंहपुरि में।।6।।

चम्पापुर नगरी वासुपूज्य की, जन्मभूमि से पावन है।
पाँचों कल्याणक से केवल, चम्पापुर ही मनभावन है।।
कम्पिलापुरी में विमलनाथ, है धर्मनाथ की रत्नपुरी।
श्रीशांति कुंथु अरनाथ तीन की, जन्मभूमि हस्तिनापुरी।।7।।

मिथिलानगरी में मल्लिनाथ, नमिनाथ जिनेश्वर जन्मे हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर राजगृही, नेमी प्रभु शौरीपुर में हैं।।
कुण्डलपुर में महावीर प्रभू का, नंद्यावर्त महल सुन्दर।
प्राचीन छवी के ही प्रतीक में, ऊँचा बना सात मंजिल।।8।।

ये सोलह तीर्थ सभी तीर्थंकर, के जन्मों से पावन हैं।
ये गर्भ जन्म तप ज्ञान चार, कल्याणक से भी पावन हैं।।
इनके वन्दन से निज घर में, लक्ष्मी का वास हुआ करता।
इनके वन्दन से आतम में, सुख शांती लाभ हुआ करता।।9।।

पूर्णार्घ्य महार्घ्य समर्पण कर, सब तीर्थ भाव से नमन करो।
पूजन का फल पाने हेतू, सब राग द्वेष को शमन करो।।

ज्यों राजहंस से मानसरोवर, की पहचान कही जाती।
त्यों ही जिनवर जन्मों से धरती, पावन पूज्य कही जाती।।10।।

तीरथ प्रयाग में ऋषभदेव के, दीक्षाज्ञान कल्याणक हैं।
अहिछत्र तीर्थ पर पार्श्वनाथ का, हुआ ज्ञानकल्याणक है।।
जृंभिका ग्राम में ऋजुकूला, नदि के तट पर महावीर प्रभू।
कैवल्यधाम को प्राप्त हुए, कर घातिकर्म का नाश प्रभू।।11।।

कैलाशगिरी से ऋषभदेव ने, मुक्तिश्री का वरण किया।
चम्पापुर से प्रभु वासुपूज्य ने, मोक्षधाम में गमन किया।।
गिरनार तीर्थ से नेमिनाथ, पावापुरि से महावीर प्रभू।
सम्मेदशिखर पर तप करके, निर्वाण गये हैं बीस प्रभू।।12।।

यूँ तो जिनआगम में केवल, दो ही माने शाश्वत तीरथ।
शुभतीर्थ अयोध्या जन्मभूमि, निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर।
पहले के सब तीर्थंकर नगरि-अयोध्या में ही जनमते थे।
फिर कर्मनाश सम्मेदशिखर से, मुक्तिप्रिया को वरते थे।।13।।

निज जन्मभूमि से अलग ऋषभ, प्रभु नेमिनाथ ने दीक्षा ली।
बाकी बाइस तीर्थंकर ने, निज जन्मभूमि में दीक्षा ली।।
ऐसे ही तीन जिनेश्वर को, अन्यत्र सु केवलज्ञान हुआ।
श्री ऋषभ-पार्श्व-महावीर प्रभू का, समवसरण निर्माण हुआ।।14।।

इन पंचकल्याणक तीर्थों को है, मेरा बारम्बार नमन।
कुछ सिद्धक्षेत्र अतिशयक्षेत्रों को, भी मेरा शत-शत वन्दन।।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, मैं तीर्थंकर पद को पाऊँ।
कर धर्मतीर्थ का वर्तन मैं, शाश्वत सुख में बस रम जाऊँ।।15।।

इस युग की गणिनीप्रमुख ज्ञानमति माता की प्रेरणा मिली।
कल्याणक तीर्थों का विकास, करने की नव चेतना मिली।।
उनकी शिष्या आर्यिका ''चन्दनामति'' की है याचना यही।
शिवपद पाने तक तीर्थों के, प्रति भक्ति रहे भावना यही।।16।।

–दोहा–

शब्दों की जयमाल यह, अर्पूं जिनपद मांहि।
अष्टद्रव्य का थाल ले, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।17।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं जजूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना फंसूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(50) जम्बूद्वीप पूजा

–दोहा–

स्वयंसिद्ध यह द्वीप है, जंबूद्वीप महान।
सब द्वीपों में है प्रथम, अनुपम रत्न निधान।।1।।

इसमें शाश्वत जिनभवन, अट्ठत्तर अभिराम।
तीर्थंकर जिन केवली, साधु शील गुणखान।।2।।

इन सब की पूजा करूँ, आत्मशुद्धि के हेतु।
जिन पूजा चिंतामणी, मन चिंतित फल देत।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकर-केवलिसर्वसाधु समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक–शंभु छंद

सुर सरिता का उज्ज्वल जल ले, कंचन झारी भर लाया हूँ।
भव भव की तृषा बुझाने को, त्रय धारा देने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अष्ट गंध सुरभित लेकर, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव भव संताप मिटाने औ, समता रस पीने आया हूँ।।

इस जंबूद्वीप में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि किरणों सम उज्ज्वल तंदुल, धोकर थाली भर लाया हूँ।
निज आतम गुण के पुंज हेतु, यह पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुवलय बेला वर मौलसिरी, मचकुन्द कमल ले आया हूँ।
श्रृंगार हार कामारिजयी, जिनवर पद भजने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिन-बिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर ताजे, पकवान बनाकर लाया हूँ।
निज आतम अनुभव चखने को, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिन-बिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योती के जलते ही, अज्ञान अंधेरा भगता है।
इस हेतू से दीपक पूजा , करते ही ज्ञान चमकता है।।
इस जंबूद्वीप में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिन-बिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन में वर धूप खेय, दशदिश में धूम उठे भारी।
बहु जनम जनम के संचित भी, दुःखकर सब कर्म जलें भारी।।
इस जंबूद्वीप में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिन-बिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर आम्र बिजौरा नींबू औ, गन्ना मीठा ले आया हूँ।
शिवकांता सत्वर वरने की, बस आशा लेकर आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिन-बिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत फूल चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
तुम चरणों अर्घ चढ़ा करके, भव संकट हरने आया हूँ।।
इस जंबूद्वीप में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिन-बिम्बतीर्थंकरकेवलि-सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

क्षीरोदधि समश्वेत, उज्ज्वल जल ले भृंग में।
श्री जिनचरण सरोज, धारा देते भव मिटे।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

सुरतरु के सुम लाय, प्रभु पद में अर्पण करूँ।
काम देव मद नाश, पाऊँ आनन्द धाम मैं।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जयमाला

परम ज्योति परमात्मा, सकल विमल चिद्रूप।
जिनवर गणधर साधुगण, नमूँ नमूँ निजरूप।।1।।

–शंभु छंद–

जय जय सुमेरुगिरि के जिनगृह, सोलह शाश्वत हैं रत्नमयी।
जय जय जिनमंदिर चारों ही, गजदंतगिरी के स्वर्णमयी।।
जय जय जंबूतरु शाल्मलि के, दो जिनमंदिर महिमाशाली।
जय जय वक्षारगिरी के भी, सोलह जिनगृह गरिमाशाली।।2।।

जय जय चौंतिस विजयारध के, चौंतिस जिनमंदिर सुखकारी।
जय जय छह कुल पर्वत के भी छह, जिनगृह भव भव दुःखहारी।।
ये जंबूद्वीप के अठत्तर, जिनमंदिर अकृत्रिम सुन्दर।
प्रतिजिनगृह में जिनप्रतिमाएँ हैं, इक सौ आठ कहीं मनहर।।3।।

मेरू के पांडुक वन में चउ, विदिशा में चार शिलाएँ हैं।
तीर्थंकर के जन्माभिषेक से, पावन पूज्य शिलाएँ हैं।।
इस भरत और ऐरावत में, होते हैं चौबिस तीर्थंकर।
केवलि श्रुतकेवलि गणधर मुनि, साधूगण होते क्षेमंकर।।4।।

उनके कल्याणक से पवित्र, पृथिवी पर्वत भी तीर्थ बने।
जो उनकी पूजा करते हैं, उनके मनवांछित कार्य बनें।।

बत्तिस विदेह के तीर्थंकर, सीमंधर युगमंधर स्वामी।
बाहू सुबाहु जिन विहरमाण, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।।5।।

उन सर्व विदेहों में संतत, तीर्थंकर होते रहते हैं।
केवलज्ञानी चारणऋद्धी, मुनिगण वहाँ विचरण करते हैं।।
आकाशगमन करने वाले, ऋषिगण मेरू पर जाते हैं।
निज आत्म सुधारस स्वादी भी, जिनवंदन कर हर्षाते हैं।।6।।

इस जंबूद्वीप के अठहत्तर, शाश्वत जिनमंदिर को वंदन।
जितने भी कृत्रिम जिनगृह हों, उन सबको भी शत शत वंदन।।
जितने तीर्थंकर हुए यहाँ, हो रहे और भी होवेंगे।
उन सबको मेरा वंदन है, वे मेरा कलिमल धोवेंगे।।7।।

आचार्य उपाध्याय साधूगण, जो भी इन कर्मभूमियों में।
चिन्मय आत्मा को ध्याते हैं, सुस्थिर होकर निज आत्मा में।।
वे घाति चतुष्टय घात पुनः, अर्हंत अवस्था पाते हैं।
इस कर्मभूमि से ही फिर वे, भगवान सिद्ध बन जाते हैं।।8।।

—दोहा—

पंच परम गुरु जिनधरम, जिनवाणी जिन गेह।
जिन प्रतिमा को नित नमूँ, 'ज्ञानमती' धर नेह।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिन-बिम्बतीर्थंकर-केवलिसाधुभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—दोहा—

जंबूद्वीप की अर्चना, करे विघ्न घन चूर।
सर्व अमंगल दूर कर, भरे सौख्य भरपूर।।10।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(51) साधु परमेष्ठी पूजा (अट्ठाईस मूलगुण पूजा)

—गीता छंद—

जो नग्न मुद्रा धारते, दिग्वस्त्रधारी मान्य हैं।
निज मूलगुण उत्तरगुणों से, युक्त पूज्य प्रधान हैं।।
सुर-असुर मुकुटों को झुकाकर, अर्चते हैं भाव से।
मैं भी यहाँ आह्वान कर, पूजूँ उन्हें अति चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-सोरठा

सिंधुनदी को नीर, बाहर का मल नाशता।
मिले भवोदधि तीर, जल से गुरुपद पूजिये।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध वर गंध, तन की ताप हरे सदा।
मनस्ताप क्षयहेतु, चंदन से गुरुपद जजों।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल सम धौत, अक्षत पुंज रचाइये।
आतम संपति हेतु, सर्वसाधु पद पूजिये।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हरसिंगार सरोज, सुरभित ले अर्पण करूँ।
भवशर नाशन हेतु, गुरुपदपंकज पूजिये।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू मोतीचूर, नानाविध पकवान से।
भूख व्याधिहर हेतु, चरु से गुरुपद पूजिए।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतभर दीपक ज्योति, बाह्य तिमिर नाशे सही।
अन्तर ज्योती हेतु, दीपक से पूजा करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगरु तगर वरधूप, अग्नि पात्र में खेइये।
अशुभ कर्मक्षय हेतु, साधु पदाम्बुज पूजिये।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता द्राक्ष बदाम, एला केला फल भले।
सरस मोक्षफल हेतु, फल से गुरुपद पूजिये।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन शाल्यादि, अष्ट द्रव्य ले थाल में।
फल सर्वोत्तम हेतु, अर्घ्य चढ़ा गुरु पद जजों।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर पदपंकेज, जग में शांतीकर सदा।
चउसंघ शांतीहेतु, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के पुष्प, सुरभित करते दश दिशा।
सर्वसाधु पादाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

—नाराच छंद—

नमूँ नमूँ मुनीश! आप पाद पद्म भक्ति से।
भवीक वृंद आप ध्याय कर्म पंक धोवते।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिए।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिए।।1।।

अठाइसों हि मूलगुण धरें दयानिधान हैं।
अठारहों सहस्र शील धारतें महान हैं।।
चुरासि लाख उत्तरी गुणों कि आप खान हैं।
समस्त योग साधते अनेक रिद्धिमान हैं।।2।।

समस्त अंगपूर्व ज्ञान सिंधु में नहावते।
निजात्म सौख्य अमृतैक पूर स्वाद पावते।।
अनेक विध तपश्चरण करो न खेद है तुम्हें।
अनन्त ज्ञानदर्श वीर्य प्राप्ति कामना तुम्हें।।3।।

सुतीन रत्न से महान आप रत्न खान हैं।
अनेक रिद्धि सिद्धि से सनाथ पुण्यवान हैं।।
परीषहादि आप से टरें न पास आवते।
तुम्हीं समर्थ काम मोह मृत्युमल्ल मारते।।4।।

विहार हो जहाँ-जहाँ सु आप तिष्ठते जहाँ।
सुभिक्ष क्षेम हो सदैव ईति भीति ना वहाँ।।
सुधन्य धन्य पुण्य भूमि आपसे हि तीर्थ हो।
सुरेन्द्र चक्रवर्ति वंद्य भूमि भी पवित्र हो।।5।।

जयो-जयो मुनीश! आप भक्ति मोह को हरे।
जयो मुनीश! आप भक्त आत्मशक्ति को धरें।।
अपूर्व मोक्षमार्ग युक्ति पाय मुक्ति को वरें।
पुनर्भवों से छूटके सु पंचमी गती धरें।।6।।

—दोहा—

नग्न दिगम्बर साधुगण, सर्वजगत् में मान्य।
नमूँ नमूँ तुमको सदा, मिले 'ज्ञानमति' साम्य।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—सोरठा—

द्विविध मोक्षपथ मूल, अट्ठाइस हैं मूलगुण।
जजत मिले भवकूल, इन गुणधारी साधु को।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(52) तेरहद्वीप पूजा

—दोहा—

स्वयंसिद्ध ये द्वीप हैं, तेरहद्वीप महान।
सब द्वीपों में जिनभवन, अनुपम रत्न निधान।।1।।
चउ शत अट्ठावन यहाँ, जिनमंदिर अभिराम।
तीर्थंकर जिन केवली, साधु शील गुण खान।।2।।
इन सब की पूजा करूँ, आत्मशुद्धि के हेतु।
जिन पूजा चिंतामणी, मन चिंतित फल देत।।3।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकरकेवलिसर्वसाधु समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकरकेवलिसर्वसाधु समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्ब-तीर्थंकरकेवलिसर्वसाधु समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक –शंभु छंद

सुर सरिता का उज्ज्वल जल ले, कंचन झारी भर लाया हूँ।
भव भव की तृषा बुझाने को, त्रय धारा देने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।1।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलिसर्वसाधुभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अष्ट गंध सुरभित लेकर, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव भव संताप मिटाने औ, समता रस पीने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।2।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलिसर्वसाधुभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि किरणों सम उज्ज्वल तंदुल, धोकर थाली भर लाया हूँ।
निज आतम गुण के पुंज हेतु, यह पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।3।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलिसर्वसाधुभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुवलय बेला वर मौलसिरी, मचकुन्द कमल ले आया हूँ।
श्रृंगार हार कामारिजयी, जिनवर पद यजने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।4।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलिसर्वसाधुभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर ताजे, पकवान बनाकर लाया हूँ।
निज आतम अनुभव चखने को, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।5।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलिसर्वसाधुभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योती के जलते ही, अज्ञान अंधेरा भगता है।
इस हेतू से दीपक पूजा, करते ही ज्ञान चमकता है।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।6।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलिसर्वसाधुभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन में वर धूप खेय, दशदिश में धूम उठे भारी।
बहु जनम जनम के संचित भी, दुःखकर सब कर्म जलें भारी।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।7।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलिसर्वसाधुभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर आम्र बिजौरा नींबू औ, गन्ना मीठा ले आया हूँ।
शिव कांता सत्वर वरने की, बस आशा लेकर आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।8।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलिसर्वसाधुभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत फूल चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
तुम चरणों अर्घ चढ़ा करके, भव संकट हरने आया हूँ।।
तेरहद्वीपों में जिनमंदिर, कृत्रिम अकृत्रिम जितने हैं।
तीर्थंकर केवलि सर्वसाधु, उन सबको मेरा वंदन है।।9।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलिसर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

क्षीरोदधि समश्वेत, उज्ज्वल जल ले भृंग में।
श्री जिनचरण सरोज, धारा देते भव मिटे।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

सुरतरु के सुम लाय, प्रभु पद में अर्पण करूँ।
कामदेव मद नाश, पाऊँ आनन्द धाम मैं।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

समुच्चय मंत्र-

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशद्वीपसंबंधिनवदेवताभ्यो नमः।

जयमाला

परम ज्योति परमात्मा, सकल विमल चिद्रूप।
जिनवर गणधर साधुगण, नमूँ नमूँ निजरूप।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय पाँचों मेरू के जिन-मंदिर हैं शाश्वत रत्नमयी।
जय जय जिनमंदिर बीसों ही, गजदंतगिरी के स्वर्णमयी।।
जय जय जंबूतरु शाल्मलि के, दश जिनमंदिर महिमाशाली।
जय जय वक्षारगिरी के भी, अस्सी जिनगृह गरिमाशाली।।2।।

जय इक सौ सत्तर विजयारध के, सब जिनमंदिर सुखकारी।
जय जय तीसों कुल पर्वत के, तीसों जिनगृह भव दुःखहारी।।
इष्वाकृति मनुजोत्तर पर्वत के, चार चार जिनमंदिर हैं।
नंदीश्वर के बावन अतिशय, शाश्वत जिनमंदिर मनहर हैं।।3।।

कुण्डलगिरि रुचकगिरी के भी, हैं चार-चार मंदिर सुंदर।
प्रतिजिनगृह में जिन प्रतिमाएँ हैं, इक सौ आठ कही मनहर।।
सब रत्नमयी जिनप्रतिमाएं, जिनवर भक्ती सम फल देतीं।
भक्तों की इच्छा पूर्तीकर, अंतिम शिव में पहुँचा देतीं।।4।।

पांचों मेरू के पांडुक वन, विदिशा में चार शिलाएँ हैं।
तीर्थंकर के जन्माभिषेक से, पावन पूज्य शिलाएँ हैं।।
पण भरत पाँच ऐरावत में, होते हैं चौबिस तीर्थंकर।
केवलि श्रुतकेवलि गणधर मुनि, साधूगण होते क्षेमंकर।।5।।

उनके कल्याणक से पवित्र, पृथिवी पर्वत भी तीर्थ बने।
जो उनकी पूजा करते हैं, उनके मनवांछित कार्य बनें।।
सब इक सौ साठ विदेहों में, सीमंधर युगमंधर स्वामी।
बाहू सुबाहु आदिक विहरें, केवलज्ञानी अन्तर्यामी।।6।।

उन सर्व विदेहों में संतत, तीर्थंकर होते रहते हैं।
केवलज्ञानी चारणऋद्धी, मुनिगण वहाँ विचरण करते हैं।।
आकाशगमन करने वाले, ऋषिगण मेरू पर जाते हैं।
निज आत्म सुधारस स्वादी भी, जिनवंदन कर हर्षाते हैं।।7।।

तेरहद्वीपों के चार शतक, अट्ठावन मंदिर को वंदन।
जितने भी कृत्रिम जिनगृह हों, उन सबको भी शत-शत वंदन।।
जितने तीर्थंकर हुए यहाँ, हो रहे और भी होवेंगे।
उन सबको मेरा वंदन है, वे मेरा कलिमल धोवेंगे।।8।।

आचार्य उपाध्याय साधूगण, जो भी इन कर्मभूमियों में।
चिन्मय आत्मा को ध्याते हैं, सुस्थिर होकर निज आत्मा में।।
वे घाति चतुष्टय घात पुनः, अरिहंत अवस्था पाते हैं।
इन कर्मभूमि से ही फिर वे, भगवान सिद्ध बन जाते हैं।।9।।

–दोहा –

पंच परमगुरु जिनधरम, जिनवाणी जिन गेह।
जिन प्रतिमा को नित नमूँ, 'ज्ञानमती' धर नेह।।10।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालय-जिनबिम्बतीर्थंकरकेवलिसर्वसाधुभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

तेरहद्वीपों का नमन, करे विघ्न घन चूर।
सर्व अमंगल दूर कर, भरे सौख्य भरपूर।।11।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(53) पुण्यास्रव पूजा

–अथ स्थापना (शंभु छंद) –

अर्हंत जिनेश्वर सांप्रायिक, आस्रव से रहित पूर्ण ज्ञानी।
ये पुण्य के फल हैं पुण्यराशि, पुण्यास्रव के कारण ज्ञानी।।
हम इनका आह्वानन करके, भक्ती से अर्चा करते हैं।
इनकी पूजन से पापास्रव, नहिं हो यह वांछा करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-शंभु छंद –

सरयू नदि का प्रासुक जल ले, कंचन झारी भर लाये हैं।
जिनवर पद में त्रयधारा कर, भव तृषा बुझाने आये हैं।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वराय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर संग, घिसकर कंचनद्रव सम लाये।
जिनवर पद चर्चत वात पित्त, कफ जनित रोग सब नश जायें।।

पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वराय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल शालि धुले, जिन सन्मुख पुंज चढ़ाते हैं।
सब द्रव्य भाव मल धुल जावें, शुद्धात्म भावना भाते हैं।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वराय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा बेला अरविंद वकुल, सुरभित पुष्पों को लाये हैं।
निज आत्म गुणों की सुरभि हेतु, जिनचरणों पुष्प चढ़ाये हैं।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वराय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली लाडू बरफी, सेमई खीर ले आये हैं।
सब उदर व्याधि प्रशमन हेतू, प्रभु सन्मुख चरू चढ़ाये हैं।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वराय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत पूरित कंचन दीप लिये, जगमग ज्योती सब ध्वांत हरे।
आरती करें जिनवर सन्मुख, अंतर में ज्ञान प्रकाश भरे।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वराय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप यहाँ, बस धूप घड़ों में खेते ही।
सब अशुभ कर्म जल जाते हैं, मन देह स्वस्थता प्रगटे ही।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वराय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला अंगूर आम, फल मधुर चढ़ाते हैं प्रभु को।
सब ईप्सित फल जाते तत्क्षण, रत्नत्रय फल भी दो मुझको।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वराय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत माला नेवज, वर दीप धूप फल अर्घ्य लिये।
प्रभु चरणों करें समर्पण हम, मिल जाय स्वात्मपद इसीलिए।।
पापास्रव पुण्यास्रव विरहित, ईर्यापथ आस्रव के स्वामी।
पुण्यास्रव सातिशयी होवे, तुम पूजत हों शिवपथगामी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहित-अर्हज्जिनेश्वराय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

अर्हत्प्रभु के चरण में, धारा तीन करंत।
मुझमें त्रिभुवन में प्रभो! कीजे शांति तुरंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार ले, पुष्पांजलि विकिरंत।
मेरा तन मन स्वस्थ हो, समकितनिधि विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य— **ॐ ह्रीं कर्मास्रवरहितअनंतकेवलिभ्यो नमः।**

जयमाला

—दोहा—

तीर्थंकर जिनकेवली, आस्रव बंध विमुक्त।
गाऊँ तुम गुणमालिका, मोक्ष तत्त्व से युक्त।।1।।

—गीता छंद—

जय जय जिनेश्वरदेव तीर्थंकर प्रभू जिनकेवली।
जय सिद्ध परमेष्ठी सकल, आस्रवरहित जिनकेवली।।
इसकी करूँ मैं वंदना, कर जोड़ नाऊँ शीश को।
इनकी करूँ मैं अर्चना, शत-शत झुकाऊँ शीश को।।2।।

साता करम ही आस्रवे, ईर्यापथास्रव नाम ही।
हो केवली के इक समय, झड़ जाय नहिं हो बंध भी।।
आस्रव कहा जो सांपरायिक, सर्व जीवों में यही।
ये कर्म आठों बांधता, इससे भ्रमण जग में सही।।3।।

ये तीव्र मंद व ज्ञात अरु, अज्ञात भावों से कहा।
निज शक्ति के कम या अधिक से, भेद नाना ले रहा।।
मिथ्यात्व पण पण अविरती, पंद्रह प्रमाद त्रियोग हैं।
चारों कषायों से सहित, भावास्रवों के भेद हैं।।4।।

आठों करम में दर्श मोहनि, चरित मोहनि दो प्रमुख।
सम्यक्त्व औ चारित्र को, नाशें अतः ये दुःखप्रद।।
सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान चारित्र, मोक्ष के कारण कहे।
अतएव दर्शनमोहनी, हेतू से हम बचना चहें।।5।।

जिनकेवली को रोग हो, आहार भी लेकर जिएँ।
श्रुत में कहा है माँस भक्षण, साधुगण निर्लज्ज हैं।।
जिनधर्म में कुछ गुण नहीं, सुर देविगण बलि मांगते।
इस विधि कहें जो मूढ़ जन वे, दर्शमोहनि बांधते।।6।।

जो केवली श्रुत संघ को, जिनधर्म सुर को दोष दें।
वे मोहनी दर्शन अशुभ को, बांध कर दुःख भोगते।।
ये सब असत अपवाद हैं, हे नाथ! मैं इनसे बचूँ।
सम्यक्त्व निधि रक्षित करूँ, हे नाथ! भव दुख से बचूँ।।7।।

क्रोधादि अशुभ कषाय का, उद्रेक जब अति तीव्र हो।
चारित्र मोहनि बंध हो, नहिं चरित धारण शक्ति हो।।
चारित्र मोह अनादि से, हे नाथ! निर्बल कर रहा।
मेरी अनंती आत्म शक्ती, छीनकर दुःख दे रहा।।8।।

करके कृपा हे नाथ! अब, चारित्रमोह निवारिये।
चारित्र संयम पूर्ण हो, भवसिंधु से अब तारिये।।
प्रभु आप ही पतवार हो, मुझ नाव भवदधि में फंसी।
अब हाथ का अवलंब दें, ना देर कीजे मैं दुखी।।9।।

इन आठ कर्मों में अधिक, बलवान एकहि मोह है।
इसके अट्ठाइस भेद हैं, बहु भेद सर्व असंख्य हैं।।
ये मोहनी ही स्थिती, अनुभाग बंध करे सदा।
ये मोहनी संसार का है, मूल कारण दुःखदा।।10।।

सब आस्रवों के भेद इक सौ आठ पापास्रव करें।
इस हेतु इक सौ आठ मणि की, जपसरा से जप करें।।
तुम नाम मंत्रों को सदा, जो भव्य जपते भाव से।
वे पाप आस्रव रोककर, नित पुण्य संचें चाव से।।11।।

व्रत पाँच समिती पाँच गुप्ती, तीन दशविध धर्म हैं।
बारह अनूप्रेक्षा परीषह-जय कहे बाईस हैं।।
ये कर्म आस्रव रोकते, संवर करें मुनिजन धरें।
हे नाथ! इनको दीजिए, हम कर्म आस्रव परिहरें।।12।।

जिनभक्ति पूजा मंत्र से, बहु पुण्य संपादन करें।
जिनभक्ति से बलभद्र चक्री, तीर्थंकर पद भी धरें।।
जिनभक्ति से सब ऋद्धि सिद्धी, पाय शिवललना वरें।
जिनभक्ति से ही भक्त निज, आनंद अमृत रस भरें।।13।।

हे नाथ! ऐसी शक्ति दो, मैं सर्व ममता छोड़ दूँ।
निज देह से भी होउं निर्मम, सब परिग्रह छोड़ दूँ।।
निज आत्म से ममता करूँ, निज आत्म की चर्चा करूँ।
निज आत्म में तल्लीन हो, परमात्म की अर्चा करूँ।।14।।

ऐसा समय तुरतहिं मिले, निजध्यान में सुस्थिर बनूँ।
उपसर्ग परिषह हों भले, निजतत्त्व में ही थिर बनूँ।।
निज आत्म अनुभव रस पियूँ, परमात्मपद की प्राप्ति हो।
निज 'ज्ञानमति' ज्योती दिपे, जो तीनलोक प्रकाशि हो।।15।।

–दोहा –

जब तक नहिं परमात्मपद, तुम पद में मन लीन।
एक घड़ी भी नहिं हटे, बनूँ आत्म लवलीन।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वास्रवविरहितअर्हज्जिनेश्वराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जो भव्य पुण्यास्रव की पूजा सतत करें।
वे पाप आस्रव का निरोध युक्ति से करें।।
संपूर्ण पुण्यास्रव मिले निज शक्ति को धरें।
कैवल्य 'ज्ञानमती' सहित मुक्ति को वरें।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(54) समवसरण पूजा

अथ स्थापना–गीता छंद

तीर्थंकरों की सभाभूमी, धनपती रचना करें।
है समवसरण सुनाम उसका, वह अतुल वैभव धरे।।
जो घातिया को घातते, कैवल्यज्ञान विकासते।
वे इस सभा के मध्य अधर, सुगंधकुटि पर राजते।।1।।

—दोहा —

अनंत चतुष्टय के धनी, तीर्थंकर चौबीस।
आह्वानन कर मैं जजूँ, नमूँ-नमूँ नत शीश।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–चाल-नंदीश्वर पूजा

जिनवचसम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
मैं पाऊँ भवदधि तीर, जिन पद धार करूँ।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तनु सम सुरभित गंध, कंचन पात्र भरूँ।
मैं चर्चूं जिनपद पद्म, भव संताप हरूँ।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ध्वनि सम अमल अखंड, तंदुल थाल भरूँ।
मैं पुंज धरूँ जिन अग्र, सौख्य अखंड भरूँ।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन यश सम सुरभित पुष्प, चुन चुन कर लाऊँ।
जिन आगे पुष्प समर्प्य, निजके गुण पाऊँ।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वच अमृत के पिंड, सदृश चरु लाऊँ।
जिनवर के निकट चढ़ाय, समरस सुख पाऊँ।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।5।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तनु की कांति समान, दीपक ज्योति धरे।
मैं करूँ आरती नाथ, मम सब आर्त हरे।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।6।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन यश सम सुरभित धूप, खेऊँ अग्नी में।
हों अशुभ कर्म सब भस्म, पाऊँ निज सुख मैं।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।7।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवच सम मधुर रसाल, श्रीफल फल बहुते।
जिन निकट चढ़ाऊँ आज, अतिशय भक्तियुते।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।8।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदि मिलाय, अर्घ बनाय लिया।
निज पद अनर्घ के हेतु, आप चढ़ाय दिया।।
जिन समवसरण की भूमि, अतिशय विभव धरे।
जो पूजें जिनपदपद्म, वे निज विभव भरें।।9।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।
आत्यंतिक शांती मिले, प्रगटे सौख्य अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

लाल श्वेत पीतादि बहु, सुरभित पुष्प गुलाब।
पुष्पांजलि से पूजते, हो निजात्म सुख लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं समवसरणस्थित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

चिन्मय चिंतामणि प्रभो, गुण अनंत की खान।
समवसरण वैभव सकल, वह लवमात्र समान।।1।।

–शंभुछंद–

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, तुम धर्मचक्र के कर्ता हो।
जय जय अनंतदर्शन सुज्ञान, सुखवीर्य चतुष्टय भर्त्ता हो।।
जय जय अनंत गुण के धारी, प्रभु तुम उपदेश सभा न्यारी।
सुरपति की आज्ञा से धनपति, रचता है त्रिभुवन मनहारी।।2।।

प्रभु समवसरण गगनांगण में, बस अधर बना महिमाशाली।
यह इंद्र नीलमणि रचित गोल, आकार बना गुणमणिमाली।।
सीढ़ी इक एक हाथ ऊँची, चौड़ी सब बीस हजार बनी।
नर बाल वृद्ध लूले लंगड़े, चढ़ जाते सब अतिशायि घनी।।3।।

पहला परकोटा धूलिसाल, बहुवर्ण रत्न निर्मित सुंदर।
कहिं पद्मराग कहिं मरकतमणि, कहिं इन्द्रनीलमणि से मनहर।।
इसके अभ्यंतर चारों दिश, हैं मानस्तंभ बने ऊँचे।
ये बारह योजन से दिखते, जिनवर से द्विदश गुणे ऊँचे।।4।।

इनमें चारों दिश जिनप्रतिमा, उनको सुरपति नरपति यजते।
ये सार्थक नाम धरें दर्शन से, मानो मान गलित करते।।
इस समवसरण में चार कोट, अरु पाँच वेदिकाएँ ऊँची।
इनके अंतर में आठ भूमि, फिर प्रभु की गंधकुटी ऊँची।।5।।

इस धूलिसाल अभ्यंतर में है, भूमि चैत्य प्रासाद प्रथम।
एकेक जैन मंदिर अंतर से, पाँच पाँच प्रासाद सुगम।।
चारों गलियों में उभय तरफ, दो दोय नाट्यशालाएँ हैं।
अभिनय करतीं जिनगुण गातीं, सुर भवनवासि कन्याएं हैं।।6।।

फिर वेदी वेढ़ रही ऊँची, गोपुर द्वारों से युक्त वहाँ।
द्वारों पर मंगलद्रव्य निधी, ध्वज तोरण घंटा ध्वनी महा।।
फिर आगे खाई स्वच्छ नीर से, भरी दूसरी भूमी है।
फूले कुवलय कमलों से युत, हंसों के कलरव की ध्वनि है।।7।।

फिर दूजी वेदी के आगे, तीजी है लताभूमि सुन्दर।
बहुरंग बिरंगे पुष्प खिले, जो पुष्पवृष्टि करते मनहर।।
फिर दूजा कोट बना स्वर्णिम, गोपुर द्वारों से मन हरता।
नवनिधि मंगल घट धूप घटों युत, में प्रवेश करती जनता।।8।।

आगे उद्यान भूमि चौथी, चारों दिश बने बगीचे हैं।
क्रम से अशोक वन सप्तपर्ण, चंपक अरु आम्र तरू के हैं।।
प्रत्येक दिशा में एक-एक, तरु चैत्य वृक्ष अतिशय ऊँचे।
इनमें जिनप्रतिमा प्रातिहार्ययुत, चार-चार मणिमय दीखें।।9।।

इसके आगे वेदी सुन्दर, फिर ध्वजाभूमि ध्वज से शोभे।
फिर रजतवर्णमय परकोटा, गोपुर द्वारों से युत शोभे।।
फिर कल्पवृक्ष भूमी छट्ठी, दशविध के कल्पवृक्ष इसमें।
प्रतिदिश सिद्धार्थ वृक्ष चारों हैं, सिद्धों की प्रतिमा उनमें।।10।।

चौथी वेदी के बाद भवन-भूमी सप्तमि के उभय तरफ।
नव नव स्तूप रत्न निर्मित, उनमें जिनवर प्रतिमा सुखप्रद।।
परकोटा स्फटिकमयी चौथा, मरकत मणि गोपुर से सुन्दर।
उस आगे श्रीमंडप भूमी, बारह कोठों से जनमनहर।।11।।

फिर पंचम वेदी के आगे, त्रय कटनी सुन्दर दिखती हैं।
पहली कटनी पर यक्ष शीश पर, धर्मचक्र चारों दिश हैं।।
दूजी कटनी पर आठ महाध्वज, नवविधि मंगल द्रव्य धरे।
तीजी कटनी पर गंधकुटी पर, जिनवर दर्शन पाप हरें।।12।।

जय जय जिनवर सिंहासन पर, चतुरंगुल अधर विराज रहे।
जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी, सुनकर सब भविजन तृप्त भये।।
सब जातविरोधी प्राणीगण, आपस में मैत्री भाव धरें।
जो पूजें ध्यावें गुण गावें, वे 'ज्ञानमती कैवल्य' करें।।13।।

–दोहा–

चतुर्मुखी ब्रह्मा तुम्हीं, ज्ञान व्याप्त जग विष्णु।
देवों के भी देव हो, महादेव अरि जिष्णु।।14।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो समवसरण यजें सदा, उत्कृष्ट भव्य श्रद्धा भाव से।
तीर्थंकरों की बाह्य लक्ष्मी, पूजते अति चाव से।।
फिर अंतरंग अनन्त लक्ष्मी, को जजें गुण प्रीति से।
निज 'ज्ञानमती' कैवल्य कर, वे मोक्षलक्ष्मी सुख भजें।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(55) नव केवललब्धि पूजा
(अर्हंत पूजा)

—स्थापना-गीताछन्द—

अरिहंत प्रभु ने घातिया को, घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह, दोष का सब क्षय किया।।
शत इन्द्र नित पूजें उन्हें, गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के, हेतु अभिनंदन करें।।1।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठि समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्थापनं।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठि समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-स्रग्विणी छंद

साधु के चित्त सम स्वच्छ जल ले लिया।
कर्ममल क्षालने तीन धारा किया।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सौगंध्य से नाथ को पूजते।
सर्व संताप से भव्यजन छूटते।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धौत अक्षत लिये स्वर्ण के थाल में।
पुंज धर के जजूँ नाथ के भाल मैं।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।3।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

केतकी कुंद मचकुंद बेला लिये।
कामहर नाथ के पाद अर्पण किये।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग मोदक इमरती भरे थाल में।
आत्म सुख हेतु मैं अर्पिहूँ हाल में।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।5।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण के दीप में ज्योति कर्पूर की।
नाथ पाद पूजते मोह तम चूरती।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।6।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो मोहान्धाकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को अग्नि में खेवते शीघ्र ही।
कर्म शत्रू जलें सौख्य हो शीघ्र ही।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।7।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव अँगूर दाड़िम अनन्नास ले।
मोक्ष फल हेतु जिन पाद पूजूँ भले।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य लेकर जजूँ नाथ को आज मैं।
स्वात्म संपत्ति का पाऊँ साम्राज मैं।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।9।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

जिन पद में धारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यन्तिक सुख देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

—दोहा—

घाति चतुष्टय घात कर, प्रभु तुम हुये कृतार्थ।
नव केवल लब्धी रमा, रमणी किया सनाथ।।1।।

—शेरछंद—

प्रभु दर्शमोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकाख्य को परिपूर्ण किया है।।
चारित्र मोहनीय का विनाश जब किया।
क्षायिक चरित्र नाम यथाख्यात को लिया।।3।।

संपूर्ण ज्ञानावर्ण का जब आप क्षय किया।
कैवल्य ज्ञान से त्रिलोक जान सब लिया।।
प्रभु दर्शनावरण के क्षय से दर्श अनंता।
सब लोक औ अलोक देखते हो तुरंता।।3।।

दानांतराय नाश के अनंत प्राणि को।
देते अभय उपदेश तुम शिवपथ का दान जो।।
लाभान्तराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंतलाभ का तब लाभ प्रभु लिया।।4।।

जिससे परमशुभ सूक्ष्म दिव्य नंत वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना।।
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
शिवप्राप्त होने तक शरीर भी टिका रहे।।5।।

भोगांतराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध उदकवृष्टि शोभ हैं।।
पग के तले वरपद्म रचें देवगण सदा।
सौगंध्य शीतपवन आदि सौख्य शर्मदा।।6।।

उपभोग अन्तराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी।।
सिंहासनादि छत्र चंवर तरु अशोक हैं।
सुर दुंदुभी भाचक्र दिव्यध्वनि मनोज्ञ हैं।।7।।

वीर्यान्तराय नाश से आनत्य वीर्य है।
होते न कभी श्रांत आप धीर वीर हैं।।
प्रभु चार घाति नाश के नव लब्धि पा लिया।
आनन्त्य ज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया।।9।।

प्रभु आप सर्व शक्तिमान कीर्ति को सुना।
इस हेतु से ही आज यहाँ मैं दिया धरना।।
अब तारिये न तारिये यह आपकी मरजी।
बस ''ज्ञानमती'' पूरिये यदि मानिये अरजी।।10।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठियो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री अरिहंत जिनेश के, गुण अनंत अविकार।
जजते ही भव अंत हो, मिले स्वात्म गुण सार।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(56) भगवान शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर पूजा

स्थापना – नरेन्द्र छंद

श्रीमन् शांति कुंथु अर जिनवर, तीर्थंकर पदधारी।
चक्रवर्ति सम्राट् हुए ये, कामदेव पदधारी।।
तिहुँजग भ्रमण विनाशन हेतू, इनका यजन करूँ मैं।
आह्वानन स्थापन करके, सन्निधिकरण करूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वराः! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वराः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वराः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक – नरेन्द्र छंद

तीनलोक भर जाय नाथ मैं, इतना नीर पिया है।
फिर भी तृप्ति न हुई अतः अब, जल से धार दिया है।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में बहु देह धरे मैं, उनसे शांति न पाई।
इसी हेतु चंदन से पूजूँ, मिले शांति सुखदाई।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने आत्मसौख्य मुझ, खंड खंड कर रक्खा।
शालि पुंज से जजूँ अखंडित, सौख्य मिले यह इच्छा।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने तीनजगत को, निज के वश्य किया है।
उसके जेता आप अतः मैं, अर्पण पुष्प किया है।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादी से क्षुध व्याधी, भोजन से नहिं मिटती।
व्यंजन सरस बनाकर जिनपद, अर्पण से वह नशती।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहतिमिर ने तीन जगत को, अंध समान किये हैं।
दीपक से तुम आरति करके, ज्ञान उद्योत हिये हैं।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ये संग लगे हैं, इनका नाश करूँ मैं।
तुम सन्निधि में धूप जलाकर, सुरभित धूम्र करूँ मैं।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत कुदेव नमन कर मैंने, अविनश्वर फल चाहा।
फिर भी आश हुई नहिं पूरी, अतः आप ढिग आया।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, स्वर्णथाल भर लाया।
सर्वोत्तम फल पाने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने आया।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

शांति कुंथु अर नाथ के, चरणों में त्रय बार।
शांतीधारा मैं करूँ, मिले शांति भंडार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल कमल चंपा जुही, सुरभित हरसिंगार।
तुम पद पुष्पांजलि करूँ, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

तीर्थक्षेत्र को अर्घ

–दोहा –

शांति कुंथु अरनाथ के, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
हस्तिनागपुर में हुए, चार कल्याण महान ।।1।।

ॐ ह्रीं हस्तिनागपुरे गर्भजन्मतपोज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति कुंथु अरनाथ ने, पाया पद निर्वाण।
श्री सम्मेदाचल जजूँ, सिद्धक्षेत्र सुखदान।।2।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरात् निर्वाणपदप्राप्तेभ्यः श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

–दोहा –

हस्तिनागपुर में हुये, काश्यप गोत्र ललाम।
नमूँ नमूँ नत शीश मैं, शांति कुंथु अर नाम।।1।।

–शंभु छंद –

जय शांतिनाथ तुम तीर्थंकर, चक्री औ कामदेव जग में।
माता ऐरावति धन्य हुईं, पितु विश्वसेन भी धन्य बने।।
भादों वदि सप्तमि गर्भ बसे, जन्में वदि ज्येष्ठ चतुर्दशि में।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, सित पौष दशमि केवली बने।।2।।

शुभ ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि में, शिवपद साम्राज्य लिया उत्तम।
इक लाख वर्ष आयू चालिस धनु, तुंग चिह्नमृग तनु स्वर्णिम।।
हे शांतिनाथ! तीनों जग में, इक शांती के दाता तुमही।
इसलिये भव्यजन तुम पद का, आश्रय लेते रहते नितही।।3।।

श्री कुंथुनाथ पितु सूरसेन, माँ श्रीकांता के पुत्र हुए।
श्रावणवदि दशमी गर्भ बसे, वैशाख सितैकम जन्म लिये।।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, सित चैत्र तीज केवलज्ञानी।
वैशाख सितैकम मुक्ति बसे, पैंतिस धनु तुंग देह नामी।।4।।

पंचानवे सहसवर्ष आयू, स्वर्णिम तनु छाग चिह्न प्रभु को।
सत्रहवें तीर्थंकर छट्ठे, चक्रेश्वर कामदेव तनु हो।।
तुम पदपंकज का आश्रय ले, भविजन भववारिधि तरते हैं।
निज आत्मसौख्य अमृत पीकर, अविनश्वर तृप्ती लभते हैं।।5।।

अरनाथ! सुदर्शन पिता आप, माँ ख्यात मित्रसेना जग में।
फाल्गुन सित तीज गर्भ आये, मगसिर सित चौदश को जन्में।।
मगसिर सित दशमी दीक्षा ले, कार्तिक सित बारस ज्ञान उदय।
प्रभु चैत्र अमावस्या शिवपद, धनु तीस तुंग तनु सुवरणमय।।6।।

चौरासी सहसवर्ष आयू, प्रभु चिह्न मीन से जग जाने।
हम भी तुम पद पंकज में नत, सब रोग शोक संकट हानें।।
जय जय रत्नत्रय तीर्थंकर, जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर।
जय जय मंगलकर लोकोत्तम, जय शरणभूत हे परमेश्वर।।7।।

मैं शुद्ध बुद्ध हूँ सिद्ध सदृश, मैं गुण अनंत के पुञ्जरूप।
मैं नित्य निरंजन अविकारी, चिच्चिंतामणि चैतन्यरूप।।
निश्चयनय से प्रभु आप सदृश, व्यवहार नयाश्रित संसारी।
तुम भक्ती से यह शक्ति मिले, निज संपत्ति प्राप्त करूँ सारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा –

तुम पद भक्ति प्रसाद से, मिले यही वरदान।
'ज्ञानमती' निधि पूर्ण हो, मिले अंत निर्वाण।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(57) श्री सप्तऋषि पूजा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–स्थापना-(अडिल्ल छंद) –

सुरमन्यू श्रीमन्यु आदि ऋषि सात हैं।
चारण ऋद्धि समन्वित जो विख्यात हैं।।
मथुरापुरि में चमत्कार इनका हुआ।
रोग महामारी इन तप से भग गया।।1।।

–दोहा –

इन सातों ऋषिराज की, पूजा करें महान।
रोग शोक की शांति हित, करें प्रथम आह्वान।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्रनाम-सप्तऋषिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्रनाम-सप्तऋषिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्रनाम-सप्तऋषिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अष्टक-शंभु छंद –

गंगा यमुना अरु सरस्वती, नदियों का जल भर लाए हैं।
हो जन्म जरा मृत्यू का क्षय, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धिधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।1।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर विमिश्रित केशर घिसकर, स्वर्ण कटोरी लाए हैं।
संसार ताप हो जाए नष्ट, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धिधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम उज्वल तंदुल की, थाली भर के ले आए हैं।
हो अक्षय पद की प्राप्ति हमें, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धिधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।3।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा गुलाब आदि पुष्पों का, थाल सजाकर लाए हैं।
निज कामबाण विध्वंस हेतु, गुरुचरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धिधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।4।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी घेवर आदि व्यंजन का, थाल सजाकर लाए हैं।
निज क्षुधारोग के नाश हेतु, गुरु चरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धिधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।5।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक कंचन थाली में ले, आरति करने आए हैं।
निज मोह तिमिर के नाश हेतु, गुरु चरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धिधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।6।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कपूर की धूप दहन, अग्नी में करने आए हैं।
निज अष्ट कर्म के नाश हेतु, गुरु चरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धिधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है।।7।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम्र फल आदि विविध, फल थाल सजाकर लाए हैं।
शिवपद की केवल प्राप्ति हेतु, गुरु चरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धिधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है। ।8।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध सुअक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाए हैं।
''चन्दनामती'' इक अर्घ्य थाल, गुरु चरण चढ़ाने आए हैं।।
सुरमन्यु आदि ऋद्धिधारी, सातों ऋषियों को वन्दन है।
आरोग्य प्राप्ति के हेतु सभी, मुनियों के पद में प्रणमन है। ।9।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वित श्रीसुरमन्युआदि सप्तऋषिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

कंचन झारी में भरा, यमुना सरिता नीर।
शांतीधारा हम करें, सप्तऋषी पद तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

विविध पुष्प की वाटिका, से पुष्पों को लाय।
सप्तऋषी के पदनिकट, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा –

सप्तऋषी मण्डल रचा, पूजा हेतु महान।
पुष्पांजलि करके वहाँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– शंभु छंद –

राजा श्री नन्दन की रानी, धारिणी पुत्र सुरमन्यु कहे।
प्रीतिंकर जिनवर के समीप, दीक्षा ले तपकर ऋद्धि लहे।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी। ।1।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसुरमन्युमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने पितु के संग दीक्षा ले, श्रीमन्यु पुत्र भी मुनी बने।
निज आत्मा में तन्मय होकर, तप कर ऋद्धी के स्वामि बने।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।2।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीमन्युमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री निचय मुनी के तन में भी, तप से ऐसी शक्ती आई।
अपने भ्राताओं के संग उनने, भी चारणऋद्धी पाई।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।3।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीनिचयमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से सुन्दर मन से सुन्दर था, रूप सर्वसुन्दर ऋषि का।
इसलिए दूर कर सके घोर-उपसर्ग वे मथुरा नगरी का।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।4।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसर्वसुन्दरमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रुघ्न ने मथुरा के राजा, मधुसुन्दर को जब मार दिया।
तब देव विक्रिया को जयवान, सहित सब ऋषि ने शांत किया।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।5।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीजयवानमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अत्यन्त विनयवृत्ती वाले, मुनिराज विनयलालस जी थे।
अपने पितु मुनिवर श्रीनंदन के, साथ तपस्या में रत थे।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।6।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीविनयलालसमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम थे श्रीजयमित्र महर्षि, मित्रभावना से संयुत।
उग्रोग्र तपस्या करने से, हो गये सर्वऋद्धी संयुत।।
उन चारणादि ऋद्धीधारी, मुनिवर की पूजा सुखकारी।
उनकी ऋद्धी से मिल जाती, भौतिक आत्मिक संपति सारी।।7।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीजयमित्रमहर्षये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य –

श्रीसुरमन्यू श्रीमन्यू अरु, श्रीनिचय सर्वसुन्दर मुनिवर।
जयवान विनयलालस एवं, जयमित्र ऋद्धिसंयुत ऋषिवर।।
ये सातों भाई सप्तऋषी, कहलाए हैं जिनशासन में।
इनके चरणों में अर्घ्य चढ़ाकर, पा जाऊँ शिवसाधन मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्र नाम सप्तर्षिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मथुरा नगरी की पावन भू को, अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।
चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।टेक.।।

राजा मधुसुन्दर मथुरा में, सुखपूर्वक राज्य चलाते थे।
वे लंकापति रावण के जामाता प्रसिद्ध कहलाते थे।।
रामायण के इक सत्य कथानक को बतलाने आए हैं।
चारणऋद्धीयुत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।1।।

अपने भाई शत्रुघ्न से इक दिन, रामचन्द्र ने पूछ लिया।
किस नगरी का तुम राज्य चाहते हो बोलो मेरे भैय्या।।
मथुरा नगरी का राज्य सुनो, शत्रुघ्न माँग हर्षाए हैं।
चारणऋद्धी युत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।2।।

समझाया राम व लक्ष्मण ने, हे भ्रात! वहाँ तुम मत जाओ।
हम सबके शत्रू मधुसुन्दर, राजा को तुम मत भड़काओ।।
फिर भी शत्रुघ्न जबर्दस्ती, मथुरा नगरी में आए हैं।
चारणऋद्धी युत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।3।।

रात्री में कर आक्रमण उन्होंने, मधुसुन्दर को घेर लिया।
मधुसुन्दर ने रणभूमि में ही, वैराग्य भाव को धार लिया।।
यह दृश्य देख देवों ने नभ से, पुष्प रतन बरसाए हैं।
चारणऋद्धी युत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।4।।

मधुसुन्दर नृप का शूलरत्न, निष्फल हो करके चला गया।
चमरेन्द्र ने क्रोधित हो मथुरा को, महामारियुत बना दिया।।
ऐसे संकट में सप्तऋषी, मथुरानगरी में आए हैं।
चारणऋद्धी युत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।5।।

उनकी ऋद्धी बल से मथुरा का, संकट सारा भाग गया।
मथुरा की सारी जनता ने, गुरु का प्रभाव स्वीकार किया।।
गुरु आज्ञा से शत्रुघ्न ने वहाँ, जिनमंदिर खूब बनाये हैं।
चारणऋद्धी युत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।6।।

इस घटना के पश्चात् वहाँ, जम्बूस्वामी को मोक्ष हुआ।
''चन्दनामती'' मथुरा चौरासी, नाम से तीर्थ प्रसिद्ध हुआ।।
उस पावन तीर्थ धरा को हम, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए हैं।
चारणऋद्धी युत सप्तऋषी को, शीश झुकाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं महामारीरोगनिवारणस्थलमथुरापुर तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

मंत्र जाप्य – **ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसुरमन्यु-आदिसप्तऋषिभ्यो नमः।**

जयमाला

– शेरछंद –

जय सप्तऋषी चारणादि ऋद्धि के धारी।
जय सप्तऋषी सब हुए हैं गगन विहारी।।
जय सप्तऋषी रोग शोक दुख हरें सारे।
जय सप्तऋषी सुख समृद्धि देते हैं सारे।।1।।

नौ लाख वर्ष पूर्व की सच्ची है कहानी।
इन सात सगे भाइयों की कथा पुरानी।।
जन्मे थे प्रभापुरि में श्रीनन्दन नृपति के घर।
अपने पिता के साथ सबने दीक्षा ग्रहण कर।।2।।

तप करके चारणऋद्धी को प्राप्त कर लिया।
भव भोग तजके आत्म सौख्य प्राप्त कर लिया।।
तब इक नये इतिहास से संबंध जुड़ गया।
इनकी तपो शक्ती का परिज्ञान मिल गया।।3।।

दशरथ के पुत्र रामचन्द्र अवध के राजा।
लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न के सबसे बड़े भ्राता।।
इनमें से जब शत्रुघ्न बने मथुरा के राजा।
मथुरा में फैला महामारी रोग असाता।।4।।

मरने लगी जनता तो त्राहि माम् मच गया।
शत्रुघ्न का मन देख यह विचलित सा हो गया।।
कुछ पुण्य से सप्तर्षि का चौमास हो गया।
उन तप से महामारि रोग नाश हो गया।।5।।

वे वर्षायोग में भी श्रीविहार करते थे।
क्योंकी वे ऋद्धि से धरा पे पग न रखते थे।।
जिनकल्पि मुनिश्रृँखला में गणना है उनकी।
शिवधाम प्राप्त सिद्धप्रभु में गणना है उनकी।।6।।

मथुरा में उनके तप का चमत्कार हो गया।
हर व्यक्ति उनके आगमन से स्वस्थ हो गया।।
सातों मुनी निज आत्म में निमग्न रहते थे।
राजा प्रजा उन भक्ति में संलग्न रहते थे।।7।।

मथुरा से वे मुनी विहार करने लगे जब।
शत्रुघ्न ने उनसे विनीत वचन कहे तब।।
गुरुदेव! आप यहीं पर निवास कीजिए।
फिर से न फैले रोग आशिर्वाद दीजिए।।8।।

गुरु ने कहा घर घर में जिनालय बनाइये।
गुरु भक्ति करके सर्वसुख समृद्धि पाइए।।
उनके प्रभाव से सदा सुभिक्ष रहेगा।
जिनधर्म से हि सर्वदा दुर्भिक्ष टलेगा।।9।।

मुनि तो वहाँ से बात बताके चले गये।
शत्रुघ्न ने घर-घर में जिनालय बना दिये।।
घर-घर में सप्तऋषियों की मूर्ति बिठाई।
भक्तों ने इनकी भक्ति करके स्वस्थता पाई।।10।।

यह भक्तिसुमन थाल है जयमाल के लिए।
पूर्णार्घ्य भरा थाल है शिवधाम के लिए।।
मुझ मन वचन व तन को अब पवित्र कीजिए।
बस ''चन्दनामती'' मुझे भी ऋद्धि दीजिए।।11।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिसमन्वितश्रीसुरमन्युआदिसप्तऋषिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

सप्तऋषी की अर्चना, देवे सौख्य महान।
इनके पद की वंदना, करे कष्ट की हान।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(58) तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ पूजा

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

–स्थापना (शंभु छन्द)–

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव से, महावीर तक करूँ नमन।
चौबीसों जिनवर की पावन, जन्मभूमियों को वन्दन।।
जैनी संस्कृति के दिग्दर्शक, इन तीर्थों का करूँ यजन।
मेरी आत्मा बने अजन्मा, जन्मभूमि का कर पूजन।।1।।

–दोहा–

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
पूजन के प्रारंभ में, है यह विधी महान।।2।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–(अष्टक) शंभु छन्द–

गंगा में डुबकी लगा-लगा, मैंने निज को पावन माना।
अब भावकर्ममल धोने को, पूजन में जलधारा डाला।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।1।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

निज आत्मशांति पाने हेतू, तीरथ वंदन अवलंबन है।
उनके अर्चन के लिए घिसा, मैंने मलयागिरि चंदन है।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।2।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

अक्षयपद की प्राप्ती हेतू, जहाँ से जिनवर के कदम बढ़े।
उन जन्मक्षेत्र के परमाणू को, मेरे अक्षतपुंज चढ़े।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।3।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

जहाँ विषयभोग का सारा सुख, क्षणभर में प्रभु ने त्याग दिया।
उन पावन पूज्य नगरियों को, मैंने पुष्पांजलि चढ़ा दिया।।

तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।4।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

जहाँ स्वर्ग का भोजन आता था, फिर भी प्रभु उसको छोड़ चले।
अब मेरा यह नैवेद्य थाल, अर्पित है उन तीर्थों के लिए।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।5।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

जहाँ मोह राग का बंधन भी, जिनवर को नहीं लुभा पाया।
उन जन्मभूमियों की आरति, करने को दीप जला लाया।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।6।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

कर्मों को शीघ्र जलाने का, जिनवर ने जहाँ पुरुषार्थ किया।
मैंने भी धूप जला तीरथ की, पूजन का पुरुषार्थ किया।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।7।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

संसार सुखों को भोग जहाँ, मुक्तीफल की अभिलाषा थी।
फल से पूजा करते-करते, मैंने भी यह अभिलाषा की।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।8।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

जल गंध व अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल आदि सहित।
''चन्दनामती'' ये अष्ट द्रव्य, प्रभु जन्मभूमियों को अर्पित।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।9।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

–दोहा–

कंचन झारी में भरा, प्रासुक निर्मल नीर।
शांतीधारा कर प्रभो, पाऊँ भवदधि तीर।।

शांतये शांतिधारा

भाँति-भाँति के पुष्प को, अंजलि में भर लाय।
पुष्पांजलि करते हृदय, की कलिका खिल जाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–शंभु छन्द–

इस भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में, शाश्वत तीर्थ अयोध्या है।
जहाँ सदा जन्मते तीर्थंकर, इन्द्रों से पूज्य सर्वदा है।।
लेकिन हुण्डावसर्पिणी में, कुछ कालदोष का कारण है।
उन्नीस प्रभू के जन्म हुए, अन्यत्र तभी वे पावन हैं।।

–दोहा–

तीर्थंकर अरु तीर्थ को, नमन करूँ शत बार।
जन्मभूमियों को सभी, प्रणमूँ बारम्बार।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पहले तीर्थंकर ऋषभदेव, फिर हुए अजित अभिनन्दन हैं।
फिर सुमतिनाथ एवं अनन्त, इन पाँच प्रभू को वन्दन है।।
इस युग में तीर्थ अयोध्या में, जन्मे ये पाँच जिनेश्वर हैं।
अतएव अयोध्या नगरी के प्रति, मेरा अर्घ्य समर्पित है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर ऋषभदेव अजितनाथ अभिनन्दननाथ सुमतिनाथ अनंतनाथ पंचतीर्थंकराणां जन्मभूमि अयोध्या तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर संभवनाथ तृतिय, श्रावस्ती नगरी में जन्में।
कार्तिक सुदि पूनो तिथि के दिन, मेला लगता प्रति वर्षों में।।
उत्तुंग जिनालय जहाँ तीर्थ की, महिमा को बतलाता है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ नित, प्रभु दर्शन की अभिलाषा है।।2।।

ॐ ह्रीं तृतीय तीर्थंकर श्री संभवनाथ जिनेन्द्रस्य जन्मभूमि श्रावस्ती तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छट्ठे तीर्थंकर पदम प्रभू से, कौशाम्बी नगरी पावन।
जिन जन्म समय में इन्द्रों ने भी, आकर उसको किया नमन।।
प्राचीन जिनालय उस भूमी की, गौरव गाथा कहता है।
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु, आतमसुख की बस इच्छा है।।3।।

ॐ ह्रीं षष्ठतीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि कौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि नगरी में सुपार्श्व अरु, पारस तीर्थंकर जन्मे।
पन्द्रह-पन्द्रह महिने जहाँ बरसे, रत्न मात के आँगन में।।
वाराणसि का वह क्षेत्र आज भी, पावन माना जाता है।
उस तीरथ का कण-कण पूजूँ, वहाँ जिनमंदिर सुखदाता है।।4।।

ॐ ह्रीं सप्तमतीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ त्रयोविंशतितम तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम तीर्थंकर चन्द्रप्रभु की, जन्मभूमि है चन्द्रपुरी।
जहाँ जिनवर के जन्मोत्सव में, आई थी पूरी स्वर्गपुरी।।
वाराणसि नगरी के समीप, निर्मित प्राचीन जिनालय है।
उस चन्द्रपुरी को अर्घ्य चढ़ा, मैं चाहूँ निज सुख आलय है।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टमतीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि चन्द्रपुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

काकन्दी में प्रभु पुष्पदन्त, नवमें तीर्थंकर जन्मे थे।
वहाँ पन्द्रह महिने तक कुबेर के, द्वारा रत्न बरसते थे।।
सौधर्म इन्द्र शचि इन्द्राणी के, साथ जहाँ पर था आया।
उस पुण्य तीर्थ काकन्दी की, पूजन करने मैं भी आया।।6।।

ॐ ह्रीं नवमतीर्थंकर श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्रस्य जन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशवें तीर्थंकर शीतलप्रभु, भद्रिकापुरी जन्मस्थल है।
जहाँ खेले वे जिनराज, देवताओं के संग बालकपन में।।
जिनवर के पुण्य प्रभावों से, वह नगरी अब भी वंद्य कही।
उस भद्दिलपुर को अर्घ्य चढ़ा, मैं पाना चाहूँ पुण्यमही।।7।।

ॐ ह्रीं दशमतीर्थंकर श्रीशीतलजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि भद्रिकापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांस-नाथ जन्मे थे सिंहपुरी।
जो सारनाथ से है प्रसिद्ध, निकटस्थ है वाराणसि नगरी।।
प्रभु की अतिशयकारी विशाल, प्रतिमा वहाँ सुखद विराज रहीं।
उस तीरथ सिंहपुरी की रज को, वंदूँ पाऊँ जन्म वहीं।।8।।

ॐ ह्रीं एकादशमतीर्थंकर श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि सिंहपुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपापुर में प्रभु वासुपूज्य, तीर्थंकर जन्मे सुखदाता।
उनके पाँचों कल्याणक से, वह सिद्धक्षेत्र भी कहलाता।।
उस चम्पापुर की अष्टद्रव्य ले, पूजन करने को आया।
तीरथ वन्दन का पुण्य मिले, बस यही आश मन में लाया।।9।।

ॐ ह्रीं द्वादशमतीर्थंकर श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि चम्पापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कम्पिलापुरी में तेरहवें, तीर्थंकर विमलनाथ जन्मे।
इक भव्य जिनालय बना हुआ, है कम्पिल जी के परिसर में।।
भगवान विमल प्रभु तीर्थंकर की, प्रतिमा भी मनहारी है।
आत्मा को तीर्थ बनाने हेतू, पूजन यह सुखकारी है।।10।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशम तीर्थंकर श्री विमलनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि कम्पिलतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जन्मस्थल रत्नपुरी।
इस नगरी से अतिशयकारी, गजमोती की इक कथा जुड़ी।।
दो सत्य कथानक कहने वाली, रत्नपुरी को वंदन है।
श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के, चरणों में अर्घ्य समर्पण है।।11।।

ॐ ह्रीं पञ्चदशम तीर्थंकर श्रीधर्मनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमिरत्नपुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिकुंथु अरनाथ प्रभू की, जन्मभूमि हस्तिनापुरी।
सोलहवें सत्रहवें अट्ठारहवें, तीर्थंकर त्रय की।।
तीरथ प्राचीन कहा ही है, वहाँ जम्बूद्वीप बना प्यारा।
उस जन्मभूमि का अर्चन कर, मैं सफल करूँ जीवन सारा।।12।।

ॐ ह्रीं षोडशम सप्तदशम अष्टादशम तीर्थंकरत्रय-श्रीशांतिकुंथ्वरजिनेन्द्राणां जन्मभूमि हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिलानगरी श्री मल्लिनाथ, नमिनाथ की जन्मस्थली कही।
दोनों तीर्थंकर के युग में, वहाँ रत्नवृष्टि भी खूब हुई।।
इन्द्रों द्वारा यह वंदित है, इस नगरी का वन्दन कर लो।
ले अष्टद्रव्य का थाल प्रभू की, जन्मभूमि अर्चन कर लो।।13।।

ॐ ह्रीं एकोनविंशतितम एकविंशतितमद्वयतीर्थंकर श्री मल्लिनाथनमिनाथ जिनेन्द्रयोः जन्मभूमि मिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर मुनिसुव्रत प्रभु जी, जन्मे राजगृह नगरी में।
वहाँ खड्गासन मुनिसुव्रत प्रभु की, प्रतिमा अतिशय सुन्दर है।।

महावीर प्रभू की प्रथम दिव्यध्वनि, वहीं खिरी विपुलाचल पर।
उस पंचपहाड़ी से शोभित, राजगृहि को पूजूँ रुचिधर।।14।।

ॐ ह्रीं विंशतितम तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्रस्य जन्मभूमि राजगृही तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शौरीपुर नगरी है प्रसिद्ध, नेमिप्रभु के जन्मस्थल से।
राजुल को ब्याहन चले जहाँ से, नेमिनाथ जूनागढ़ में।।
नहिं ब्याह किया लेकिन वे तो, चल दिये मुक्तिकन्या वरने।
उस शौरीपुर को नमन करूँ, औ अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ती से।।15।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशतितम तीर्थंकर श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि शौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिसवें अंतिम तीर्थंकर का, जन्म हुआ कुण्डलपुर में।
जो नालंदा औ राजगृही के, निकट बसा अद्यावधि है।।
वहाँ नंद्यावर्त महल परिसर में, महावीर प्रभु मंदिर है।
उस प्रान्त बिहार का कुण्डलपुर, सचमुच जिनशासन का दिल है।।16।।

ॐ ह्रीं अंतिम तीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—पूर्णार्घ्य—

चौबिस तीर्थंकर भगवन्तों की, सोलह जन्मभूमियाँ हैं।
है प्रथम अयोध्या एवं अंतिम, कुण्डलपुर की महिमा है।।
जिनवर के जन्मों से पावन, भारतभूमि का कण-कण है।
इस भरतक्षेत्र के भारत को, इसलिए मेरा शत वंदन है।।17।।

ॐ ह्रीं अयोध्याप्रभृति कुण्डलपुर पर्यन्त वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकराणां समस्त जन्मभूमितीर्थक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र - **ॐ ह्रीं षोडशजन्मभूमिपवित्रीकृतश्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

—शेर छन्द —

जय जय जिनेन्द्र जन्मभूमियाँ प्रधान हैं।
जय जय जिनेन्द्र धर्म की महिमा महान है।।
जय जय सुरेन्द्रवंद्य ये धरा पवित्र हैं।
जय जय नरेन्द्र वंद्य ये तीरथ प्रसिद्ध हैं।।1।।

मिश्री से जैसे अन्न में मिठास आती है।
वैसे ही पवित्रात्मा तीरथ बनाती हैं।।
हो गर्भ जन्म दीक्षा व ज्ञान जहाँ पर।
वे तीर्थ कहे जाते हैं आज धरा पर।।2।।

जिनवर जनम से पहले वहाँ इन्द्र आते हैं।
नगरी को सुसज्जित कर उत्सव मनाते हैं।।
सुंदर महल सजाया जाता है वहाँ पर।
जिनवर के पिता-माता रहते हैं वहाँ पर।।3।।

पहली जनमभूमि तो नगरी है अयोध्या।
तीर्थंकरों की शाश्वत जननी है अयोध्या।।
इस युग में किन्तु पाँच जिनेश्वर वहाँ जन्मे।
वृषभाजित अभीनंदन सुमति अनंत हैं।।4।।

श्रावस्ती ने संभव जिनेन्द्र को जनम दिया।
कौशाम्बी में श्रीपद्मप्रभू ने जनम लिया।।
वाराणसी सुपार्श्व पार्श्व से पवित्र है।
श्रीचन्द्रपुरी चन्द्रप्रभू से प्रसिद्ध है।।5।।

काकन्दी को सौभाग्य मिला पुष्पदंत का।
है भद्रपुरी जन्मस्थल शीतल जिनेन्द्र का।।
श्रेयाँसनाथ से पवित्र सारनाथ है।
जिनशास्त्रों में जो सिंहपुरी से विख्यात है।।6।।

श्रीवासुपूज्य जन्मभूमि चम्पापुरी है।
कम्पिल जी विमलनाथ जिनकी जन्मस्थली है।।
तीरथ रतनपुरी है धर्मनाथ की भूमी।
रौनाही से प्रसिद्ध है वह आज भी भूमी।।7।।

श्रीशांति कुंथु अरहनाथ हस्तिनापुर में।
जन्मे जिनेन्द्र तीनों त्रयलोक भी हरषे।।
मिथिलापुरी में मल्लि व नमिनाथ जी जन्मे।
तीर्थेश मुनिसुव्रत जी राजगृही में।।8।।

है जन्मभूमि शौरीपुर नेमिनाथ की।
महावीर से कुण्डलपुरी नगरी सनाथ थी।।
चौबीस जिनवरों की जन्मभूमि को नमूँ।
कर बार-बार वंदना सार्थक जनम करूँ।।9।।

श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
कई जन्मभूमियों में नई ज्योति तब जली।।
उन प्रेरणा से ही यह पूजा रची गई।
तीरथ की भक्ति मेरे मन में बसी हुई।।10।।

प्रभु बार-बार मैं जगत में जन्म ना धरूँ।
इक बार जन्मधार बस जीवन सफल करूँ।।
इस भाव से ही जन्मभूमि अर्चना करूँ।
निज भाव तीर्थ प्राप्ति की अभ्यर्थना करूँ।।11।।

बस ''चन्दनामती'' की इक आश है यही।
संयम की ही परिपूर्णता जीवन की हो निधी।।
यह भक्तिसुमन थाल है जयमाल का प्रभु जी।
अर्पण करूँ है भावना यात्रा करूँ सभी।।12।।

–दोहा –

जन्मकल्याणक तीर्थ की, पूजन है सुखकार।
जो कर ले श्रद्धा सहित, वह हो भव से पार ।।13।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मकल्याणकतीर्थक्षेत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छन्द –

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएँगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएँगे।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

(59) गौतम स्वामी पूजा

–गीता छंद –

गणपति गणीश गणेश गण-नायक गणीश्वर नाम हैं।
गणनाथ गणस्वामी गणाधिप, आदि नाम प्रधान हैं।।
उन इंद्रभूति गणीन्द्र गौतम-स्वामि गणधर को जजूँ।
स्थापना करके यहाँ सब, कार्य में मंगल भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-नन्दीश्वर पूजन चाल –

रेवानदि का शुचि नीर, बाहर मल धोवे।
तुम चरणन धारा देत, अंतर्मल खोवे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन घनसार, तन का ताप हरे।
तुम पद पूजा तत्काल, अंतर्ताप हरे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित मुक्तारूप, धोकर भर लीने।
तुम पद आगे धर पुंज, आतम गुण चीन्हे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक वर हरसिंगार, सुरतरु सुमन लिया।
तुम कामजयी पद पूज, निजमन सुमन किया।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू बरफी पकवान, सुवरण थाल भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, तुम पद पूज करें।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर शिखा प्रज्वाल, दीपक ज्योति जले।
तुम पद पूजत तत्काल, अंतर ज्योति जले।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत धूम्र उड़े।
निज अशुभ करम हों भस्म, उसकी धूम्र उड़े।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम सुपारी सेव, उत्तम फल लाऊँ।
गणनाथ चरणयुग पूज, वांछित फल पाऊँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।8।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक वसु द्रव्य, लेकर अर्घ्य करूँ।
अनुपम निजपद के हेतु, तुम पद भक्ति करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु चरणन जल की धार, देकर शांति करूँ।
सब जग में शांती हेतु, शांतीधार करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुलादिक कुसुम मंगाय, पुष्पांजलि कर मैं।
सब विघ्न अमंगल दोष, नाशूँ इक पल में।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-**ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने नमः** (108 या 9 बार)।

जयमाला

–दोहा–

परमब्रह्म परमात्मा, परमानंद निलीन।
गाऊँ तुम गुणमालिका, होवे भवदुखक्षीण।।1।।

–रोला छंद–

जय जय गणधर देव, जय जय गुण गण स्वामी।
महावीर जिनदेव, समवसरण में नामी।।
जय जय विघ्न समूह, नाशक विश्व प्रसिद्धा।
सप्तऋद्धि परिपूर्ण, चार विज्ञान समृद्धा।।2।।

इन्द्रभूति तुम नाम, महाविभूति प्रदाता।
ब्राह्मण कुल अवतंस, गौतम गोत्र विख्याता।।
शास्त्र महोदधि तीर्ण, पांच शतक तुम छात्रा।
तुम सम ही दो भ्रात, गर्वित सहित सुछात्रा।।3।।

छ्यासठ दिन पर्यंत, प्रभु की खिरी न वाणी।
सौधर्मेंद्र उपाय, कीनो अति सुखठानी।।
गौतमशाला माहिं, वृद्धरूप धर आया।
तुम सब विद्याधीश, इससे तुम तक आया।।4।।

मेरे गुरु महावीर, आतम ध्यान लगाये।
भूल गया मैं अर्थ, जो जो श्लोक पढ़ाये।।
यदि दो अर्थ बताय, तो तुम शिष्य बनूँ मैं।
नहिं तो होवो शिष्य, मुझ गुरु के ये चहूँ मैं।।5।।

त्रैकाल्यं इत्यादि, जब यह श्लोक पढ़ा है।
अर्थ बोध से हीन, मन आश्चर्य बढ़ा है।।
चलो गुरू के पास, मैं शास्त्रार्थ करूँगा।
तुम हो छात्र अजान, गुरु से अर्थ कहूँगा।।6।।

उभय भ्रात के साथ, सब शिष्यों को लेके।
चले इंद्र के साथ, समवसरण अवलोके।।
मानस्तंभ निहार, मान गलित हुआ सारा।
वचन ''जयतु भगवान्'' स्तुति रूप उचारा।।7।।

निज मिथ्यात्व विनाश, जिनदीक्षा को लीना।
दिव्यध्वनि तत्काल, प्रगटी भवि सुख दीना।।
द्वादशांग मय ग्रंथ, गौतम गुरु ने कीने।
गणधर पद को पाय, सब ऋद्धी धर लीने।।8।।

वीर प्रभू निर्वाण, के दिन केवल पायो।
इन्द्र सभी मिल आय, गंधकुटी रचवायो।।
केवलज्ञान कल्याण, पूजा इन्द्र रचे हैं।
केवलज्ञान महान, लक्ष्मी को भी जजे हैं।।9।।

इसी हेतु सब लोग, दीपावली निशा में।
गणपति लक्ष्मी देवि, पूजें धनरुचि मन में।।
बारह वर्ष विहार, भवि उपदेश दिया है।
पुनः अघाति विनाश, मोक्ष प्रवेश किया है।।10।।

गणधर पूजा सत्य, सर्वसंपदा देवे।
धनधान्यादिक पूर, मोक्ष संपदा देवे।।
इस हेतू हम आज, गणधर चरण जजे हैं।
''केवलज्ञान'' प्रकाश, हेतू आप भजे हैं।।11।।

—दोहा—

चौबीसों जिनराज की, गणधर गणना जान।
चौदह सौ बावन कही, तिनपद जजूँ महान् ।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

जो पूजें गणधर चरण, करें विघ्नघन हान।
जग के सब सुख भोग के, क्रम से लें निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(60) चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की पूजन

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

—स्थापना—

पूजन करो रे,
श्रीशान्तिसिन्धु आचार्य प्रवर की, पूजन करो रे-2।
भारतवसुन्धरा ने जब, मुनियों के दर्श नहिं पाये।
सदी बीसवीं में तब श्री, चारित्रचक्रवर्ती आए।।
दक्षिण भारत भोजग्राम ने, एक लाल को जन्म दिया।
उसने ही सबसे पहले, मुनिपरम्परा जीवन्त किया।।
मुनिपरम्परा जीवन्त किया।।
पूजन करो रे,
श्रीशान्तिसिन्धु आचार्य प्रवर की, पूजन करो रे-।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीश्रीशान्तिसागरप्रथमाचार्यवर्य! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीश्रीशान्तिसागरप्रथमाचार्यवर्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीश्रीशान्तिसागरप्रथमाचार्यवर्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

(तर्ज-तीरथ करने चली सती.......)

दीक्षा लेकर बने मुनि, निज कर्मकलंक जलाने को।
कैसे होते हैं मुनिवर, यह बतला दिया जमाने को।।बतला....
सागर सम गंभीर तथा, गंगा जल सम शीतल वाणी।
जीवन में साकार किया, प्रभु कुंदकुंद की जिनवाणी।।
ऐसे गुरु के पद में आए, हम जलधार चढ़ाने को,
हम जलधार चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीप्रथमाचार्यश्रीशान्तिसागराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन का शीतलता गुण, तुम आगे मानो व्यर्थ हुआ।
विषधर का विष भी तुम पर, चढ़ भक्ति भाव कर उतर गया।।
हम भी निज शीतलता हेतू, लाए गंध चढ़ाने को।
लाए गंध चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीप्रथमाचार्यश्रीशान्तिसागराय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयवासना के बंधन, जग को निज वश में करते हैं।
तुम जैसे मुनिगण तप करके, मोक्षमार्ग को वरते हैं।
शुभ्र धवल अक्षत ले आए, तुम पद पुंज चढ़ाने को।
तुम पद पुंज चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीप्रथमाचार्यश्रीशान्तिसागराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बालविवाह हुआ फिर भी, ब्रह्मचारी जीवन बीता था।
सत्यवती माँ ने अपनी, ममता से तुमको सींचा था।।
कामदेव वश करने हेतू, आए पुष्प चढ़ाने को,
आए पुष्प चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीप्रथमाचार्यश्रीशान्तिसागराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पैंतिस वर्षों तक दीक्षित, जीवन में घोर तपस्या की।
साढ़े पच्चिस वर्ष तुम्हारे, उपवासों की संख्या थी।।
मिले हमें भी तपशक्ती, आए नैवेद्य चढ़ाने को।
आए नैवद्य चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीप्रथमाचार्यश्रीशान्तिसागराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण से उत्तर में आकर, ज्ञान का दीप जलाया था।
नग्न दिगम्बर वेष मुनी का, सब जग को दिखलाया था।।
घृत दीपक ले हम भी आए, मोह अन्धेर नशाने को।
मोह अन्धेर नशाने को।। दीक्षा लेकर......

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीप्रथमाचार्यश्रीशान्तिसागराय मोहांधाकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों को कृश करने वाले, वीर पुरुष कहलाते हैं।
तुम जैसा सुसमाधिमरण, बिरले साधू कर पाते हैं।
धूप जलाकर चाह रहे हम, कर्म समूह जलाने को।
कर्म समूह जलाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीप्रथमाचार्यश्रीशान्तिसागराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फल की चाह में तुमने, नग्न दिगम्बर व्रत धारा।
जिनवर के लघुनन्दन बनकर, मोक्षमार्ग को साकारा।।
फल का थाल चढ़ाने आए, तुम जैसा फल पाने को।
तुम जैसा फल पाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीप्रथमाचार्यश्रीशान्तिसागराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु अवस्था धारण कर, क्रम-क्रम से श्रेणी बढ़ती है।
कर्म निर्जरा के बल पर, अरिहन्त अवस्था मिलती है।।
गुरु चरणों में इसीलिए हम, आए अर्घ्य चढ़ाने को।
आए अर्घ्य चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर......

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीप्रथमाचार्यश्रीशान्तिसागराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छन्द–

सागर जहाँ गंभीरता में सुप्रसिद्ध है।
गुरु शान्तिसिन्धु के समक्ष वह भी तुच्छ है।।
जहाँ शांति का जल सर्वदा कल्लोल करे है।
उन गुरु चरण में हम भी शांतिधार करे हैं।।1।।

शान्तये शान्तिधारा।

स्याद्वाद के पुष्पों से तव उद्यान खिल रहा।
तुमसे ही आज मुनिवरों का दर्श मिल रहा।।
उपकार तुम्हारा न धरा भूल सकेगी।
खुद पुष्प अंजली से पुष्प वृष्टि करेगी।।2।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

तर्ज–बाबुल की......

गुरु शान्तिसिन्धु की पूजन से, आतम सुख का भण्डार मिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।टेक.।।

आषाढ़ असित षष्ठी इसवी सन्, अट्ठारह सौ बहत्तर में।
पितु भीमगौंड़ माँ सत्यवती से, जन्म लिया इक बालक ने।।
शुभ नाम सातगौंडा पाया, तब भोज ग्राम के भाग्य खिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।1।।

ईस्वी सन् उन्निस सौ चौदह, शुक्ला तेरस शुभ ज्येष्ठ तिथी।
देवेन्द्रकीर्ति मुनिवर से "उत्तूर", में क्षुल्लक व्रत दीक्षा ली।।
निज पर कल्याण भावना ले, गुरु शांतिसिन्धु शिवद्वार चले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।2।।

सन् उन्निस सौ बीस में फिर, देवेन्द्रकीर्ति मुनिवर से ही।
यरनाल पंचकल्याणक में, श्रीशान्तिसिन्ध मुनि बने वहीं।।
उस फाल्गुन शुक्ला चौदश को, उनके अन्तर्मन द्वार खुले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।3।।

अट्ठाइस मूलगुणों में रत, मुनिवर की ख्याती फैल रही।
आचार्य बने वे सर्वप्रथम, समडोली धरा पवित्र हुई।।
गुरुओं के गुरु वे बने स्वयं, निज में जब मूलाचार पले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।4।।

तव कृपा प्रसाद से ताम्रपट्ट पर, धवल ग्रन्थ उत्कीर्ण हुआ।
तव चरणों में नास्तिक जीवों का, अहंकार निर्जीर्ण हुआ।।
मुनि श्रावक के व्रत ले लेकर, तुम वृक्ष में पुष्प हजार खिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।5।।

सन् पचपन कुंथलगिरि पर द्वादश, वर्ष सल्लेखना पूर्ण किया।
भादों सुदि दुतिया को नश्वर, काया को तुमने त्याग दिया।।
लाखों जनता के नेत्रों से, तब अश्रूधार अपार चले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।6।।

युगपुरुष! तेरे उपकारों का, बदला न चुकाया जा सकता।
तेरी श्रेणी में और किसी, साधू का त्याग न आ सकता।।
तू तो तुझमें ही समा गया, बस आज तेरी जयकार मिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।7।।

चारित्रचक्रवर्ती गुरु की, जयमाल गूंथ कर लाए हैं।
बीसवीं सदी के प्रथम सूरि, के चरण चढ़ाने आए हैं।
''चन्दनामती'' मुझको भी तुम सम, गुण के कुछ संस्कार मिलें।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।8।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

शांतिसिन्धु आचार्य की, पूजन यह सुखकार।
जो करते श्रद्धा सहित, होते भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः।।

(61) आचार्य श्रीवीरसागर महाराज की पूजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना-(नरेन्द्र छन्द)

महावीर पथ के अनुयायी, वीरसिन्धु आचार्यप्रवर।
शान्ति सिन्धु के प्रथम शिष्य, आर्यिका ज्ञानमति के गुरुवर।।
उन गुरू शिष्य की गरिमा से, लगता है यह अनुमान सहज।
तुम थे असली रत्नपारखी, दृष्टि तुम्हारी सदा सजग।।1।।

उन आचार्य वीरसागर की, पूजा आज रचाऊँ मैं।
आह्वानन स्थापन करके, अपने निकट बुलाऊँ मैं।।
हे गुरुवर! मम हृदय विराजो, अभिलाषा यह है मेरी।
पुष्पों की अंजलि भरकर के, करूँ थापना मैं तेरी।।2।।

–दोहा–

गुरुपूजा बस एकली, गुरुपद देन समर्थ।
भवदधि नौका सम यही, शेष सभी कुछ व्यर्थ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवीरसागराचार्यवर्य ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीवीरसागराचार्यवर्य ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीवीरसागराचार्यवर्य ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक–

जग के शीतल स्वादिष्ट पेय से, प्यास नहीं बुझ पाई है।
अतएव वीतरागी गुरु के, चरणों की स्मृति आई है।।
जलधारा करने से शायद, इच्छाओं की उपशान्ती हो।
उन तृषा परीषहजयी गुरु की, पूजा से सुख प्राप्ती हो।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन गुलाबजल इत्रादिक से, कायउष्णता शांत हुई।
पर कर्मों की जलती ज्वाला से, आत्मा नहिं उपशांत हुई।।
चन्दन गुरु पद में लेपन से, भवताप की उपशान्ती होगी।
उन उष्णपरीषहविजयी की, पूजन से सुखप्राप्ती होगी।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में क्षत विक्षत, कायों में भी मैं पड़ा रहा।
अक्षय आतम नहिं पहचाना, भव चतुष्पथों पर खड़ा रहा।।
अब अक्षतपुंज सुगुरु चरणों में, अर्पण करने आया हूँ।
अक्षय सुख पाने हेतु दिगम्बर, मुनि को नमने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मकरध्वज ने सारे जग को, निज के आधीन बनाया है।
पर बालब्रह्मचारी के सम्मुख, वह न कभी टिक पाया है।।
अब पुष्प चढ़ाऊँ गुरु चरणों में, काम व्यथा नश जाएगी।
उन नग्न परीषह विजयी गुरु की, पूजा शान्ति दिलाएगी।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना इन्द्रिय की लोलुपता, कितने ही पाप कराती है।
भोजन करने के बाद भी वह, लम्पटता नहिं मिट पाती है।।
अब इस नैवेद्य थाल से गुरु, पूजन कर क्षुधा शांत होगी।
उन क्षुधा परीषह विजयी मुनि, वन्दन से परमशांति होगी।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब तरह तरह के फानूसों से, महल सजाए जाते हैं।
चंचल विद्युत के नवप्रकाश, आतम के दीप बुझाते हैं।।
अब घृत के लघु दीपक से भी, गुरु आरति मोह नशाएगी।
उन प्रज्ञापरिषह विजयी गुरु की, पूजन शांति दिलाएगी।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर नहिं सृष्टि का कर्त्ता, यह जैनागम बतलाते हैं।
सब जीवों के ही कर्म स्वयं, उनको सुख दुख दिलवाते हैं।।
उन कर्मों के नाशन हेतू, गुरुवर ने मुनिपथ अपनाया।
मैं भी अब धूप जलाकर चाहूँ, निज गुरु की शाश्वत छाया।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की इच्छा से ही सुभौम, चक्री की बुद्धी भ्रष्ट हुई।
नश्वर फल खाने में ही उसकी, जीवन लीला नष्ट हुई।।
मैं अविनश्वर फल हेतू अब, फल का यह थाल सजा लाया।
गुरु चरणों में फलथाल चढ़ाकर, तजूँ जगत ममता माया।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्टद्रव्य की सामग्री, मेरी पूजा का साधन है।
गुरु भक्ती ही कर सकती बस, दुर्गति का सहज निवारण है।।
आचार्य वीरसागर गुरु की, जो पूजा निशदिन करते हैं।
वे पूजक भी पुण्यास्रव कर, इक दिन अनर्घ्य पद वरते हैं।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—दोहा—

रत्नत्रय धारक मुनी, के पद में त्रय बार।
त्रयधारा जल से करूँ, मिले रत्नत्रय सार।।

शान्तये शान्तिधारा।

गुरुवर के उद्यान से, ज्ञान पुष्प को लाय।
पुष्पांजलि पद में करूँ, ज्ञान मुझे मिल जाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

हे मुनिवर! तुम कुछ बोले बिन, भी मोक्षमार्ग दरशाते हो।
बिन वस्त्राभूषण के भी तुम, सुन्दर स्वरूप दरशाते हो।।
तुम ब्रह्मचर्य की महिमा का, पावन दर्शन करवाते हो।
शिशु सम अविकारी नग्न रूपधर, सबके मित्र कहाते हो।।1।।

महाराष्ट्र प्रान्त में ईर ग्राम, माँ भाग्यवती जी कहलाई।
इक दिन सुन्दर सपना देखा, तब उनकी बगिया लहराई।।
थे पिता रामसुख हुये सुखी, आषाढ़ शुक्ल पूनम तिथि में।
वह तिथी गुरुपूर्णिमा बनी, सन् अट्ठारह सौ छियत्तर में।।2।।

बचपन में हीरालाल नाम, पाया हीरा सम चमक उठे।
कचनेर में विद्याध्ययन करा, पहले ही गुरु बन दमक उठे।।
चारित्रचक्रवर्ती गुरु को, परखा फिर गुरू बनाया था।
उनकी ही प्रथम शिष्यता का, सौभाग्य तुम्हीं ने पाया था।।3।।

गुरु ने समाधि से पूर्व तुम्हें, निज पट्टाचार्य बनाया था।
सन् उन्निस सौ पचपन जयपुर में, प्रथम पट्ट अपनाया था।।
जैसे तव गुरु ने मुनि पथ को, बीसवीं सदी में दरशाया।
वैसे ही ज्ञानमती शिष्या ने, ब्राह्मी का पथ दिखलाया।।4।।

मुनि समन्तभद्राचार्य सदृश, तुम हुए परीक्षा में प्रधान।
गुरु मर्यादा की रक्षा कर, शिष्यों का रक्खा सदा ध्यान।।
तुमने इक बार कर्मप्रकृती, चिन्तन में निज को रमा दिया।
फोड़ा अदीठ का वैद्यराज, आप्रेशन करके चला गया।।5।।

सोचो तो रोम सिहरते हैं, क्या तुम पत्थर की मूरत थे।
मानव की काया में सचमुच, महावीर की सच्ची सूरत थे।।
गुरुदेव मुझे भी शक्ती दो, तन से ममता को छोड़ सकूँ।
संकट चाहे जितने आवें, सबसे मैं नाता तोड़ सकूँ।।6।।

सन् सत्तावन में आश्विन कृष्णा, मावस को तुम चले गये।
अपने शिष्यों को छोड़ समाधी, लिया स्वर्ग में चले गये।।

अब नहीं तुम्हारी काया है, लेकिन यशकाया जीवित है।
हम सभी तुम्हारी वंशावलि के, पत्र पुष्पमय कीरत हैं।।7।।

हे शांति सिन्धु के प्रथम शिष्य! तुमको युग का शत बार नमन।
तुम पहले पट्टाचार्य तुम्हारे, चरणों में चउसंघ नमन।।
गुणमाल आपकी पढ़कर के, मेरा मन आज हुआ पावन।
''चन्दनामती'' तुम चरणों में, धरती अम्बर भी करे नमन।।8।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा, पुष्पांजलिः

—गीता छन्द —

मुनि वीरसागर के चरण में, जो सतत वन्दन करें।
निज आत्मनिधि को प्राप्त कर, वे भी रत्नत्रय निधि वरें।।
निज आत्मरस के स्वाद में हो, मग्न यदि समता धरें।
तब ''चन्दनामती'' उभय लोकों, में वही सब सुख भरें।।

।। इत्याशीर्वादः।।